श्री महावीर ग्रंथ अकादमी–अष्टम पुष्प

मुनि सभाचन्द एवम् उनका पद्मपुराण

(जैन रामायण)

(संवत १७११ में मुनि सभाचन्द द्वारा छन्दोबद्ध हिन्दी का प्रथम जैन पद्मपुराण—विस्तृत प्रस्तावना सहित)

लेखक एवं सम्पादक

डॉ० कस्तूरचन्द कासलीवाल

एम ए, पी-एच डी,

प्रकाशक

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी, जयपुर

प्रथम संस्करण–अक्टूबर १९८४ (वीर निर्वाण सं २५१०) [मूल्य–८०.००

प्रकाशक— श्री महावीर ग्रंथ अकादमी
८६७, अमृत कलश, बरकत नगर
किसान मार्ग, टोंक फाटक, जयपुर-१५

प्रतियां— ११००
मूल्य — ८० रुपये

मुद्रक—मनोज प्रिन्टर्स, जयपुर-३ फोन : ६७६६७

अकादमी--प्रगति पथ पर

'मुनि सभाचन्द एव उनका पद्मपुराण' को पाठको एवं माननीय सदस्यो के हाथो मे देते हुए अकादमी के निदेशक मडल को अत्यधिक प्रसन्नता है। अकादमी का यह आठवा पुष्प है और इसी के साथ सम्पूर्ण योजना की क्रियान्विति मे ४० प्रतिशत सफलता प्राप्त कर ली गयी है। यद्यपि अभी ६० प्रतिशत कार्य बाकी है लेकिन अगले पाच वर्षो मे हमारी योजना पूर्ण हो जावेगी ऐसा हमारा पूर्ण विश्वास है।

वैसे सभी हिन्दी जैन कवियो के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को 20 भागो मे पुस्तक बद्ध कर लेना अत्यधिक कठिन कार्य है क्योकि खोज एव शोध मे नये-नये कवि मिलते रहते हैं जिन्होने हिन्दी साहित्य के विकास मे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। ऐसे कवियो को हम इस योजना मे प्रथम स्थान देना चाहते हैं। मुनि सभाचन्द, बाई अजीतमति, छत्रपाल, भ महेन्द्रकीर्ति, सागु, बुलाखीचन्द, गारवदास, चतुरूमल, ब्रह्म यशोधर आदि कुछ ऐसे ही कवि है जिनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनो ही सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य की थाती है।

अष्टम पुष्प मे केवल एक ही कवि एव उसके पद्मपुराण को ही दे सके है लेकिन यह एक ही कवि कितने ही कवियो के बराबर है और उसका पद्मपुराण हिन्दी की अमूल्य कृति है। अब तक हिन्दी पद्मपुराण का इतिहास प. खुशालचन्द काला से प्रारम्भ होता था जिन्होने सवत १७८३ मे पद्यबद्ध पद्मपुराण की रचना की थी लेकिन प्रस्तुत पद्मपुराण के प्रकाशन से उसका इतिहास ७२ वर्ष पूर्व चला जाता है। जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

सप्तम पुष्प का विमोचन अहमदाबाद नगर मे अप्रैल ८४ मे पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव पर आयोजित समारोह मे वहा के प्रमुख व्यवसायी एव धर्मनिष्ठ श्री राधेश्यामजी सरावगी द्वारा किया गया था। इसके लिये हम आपके एव महोत्सव के सयोजक डा शेखर जैन के आभारी है। विमोचन के अवसर पर अकादमी के सरक्षक एव अ भा दि जैन महासभा के अध्यक्ष माननीय श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने अकादमी को अपनी शुभकामनाएं देते हुए महासभा की ओर से ५००० रु. की

आर्थिक सहायता की भी घोषणा की थी। सेठी सा. की प्रेरणा से ही कलकत्ता के प्रमुख व्यवसायी श्री शांतिलाल जी जैन ने अकादमी के अध्यक्ष पद को स्वीकारा है। अकादमी के प्रति सेठी सा. के महत्वपूर्ण सहयोग के लिए हम आभारी है। इसके पूर्व अकादमी का छठा पुष्प "बुलाखीचन्द बुलाकीदास एव हेमराज" महामहिम राष्ट्र पति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी द्वारा विमोचित हुआ था जो सस्था के इतिहास मे एक महत्वपूर्ण आलेख रहेगा।

नये सदस्यों का स्वागत

सप्तम भाग के विमोचन के पश्चात् जयपुर के प्रसिद्ध रत्न व्यवसायी श्री **नानगराम जी जैन** जौहरी अकादमी के सहसरक्षक बने हैं। श्री जैन नगर के प्रसिद्ध समाज सेवी, उदारमना एवं धर्मनिष्ठ व्यक्ति है। जैनाचार्य मुनि श्री विद्यानन्द जी महाराज के संघ को देहली से जयपुर लाने, जयपुर मे चातुर्मास की व्यवस्था करने मे आपने यशस्वी कार्य किया था। आपकी पत्नी एव सभी पुत्र आपके पदचिह्नो पर चलने वाले हैं। अकादमी के सहसरक्षक के रूप मे हम आपका हार्दिक स्वागत करते है।

अकादमी के सह सरक्षक सदस्य बनने वालो मे जयपुर के ही **श्री कपूरचन्दजी भौंसा** के हम पूर्ण आभारी है तथा अकादमी परिवार के रूप मे हम उनका हार्दिक स्वागत करते हैं। श्री कपूरचन्दजी भौंसा नगर के सम्माननीय व्यक्ति हैं तथा सभी सामाजिक सस्थाओ को अपना सक्रिय सहयोग देते रहते हैं। सह सरक्षक सदस्यो मे **आदरणीया पद्मश्री पंडिता सुमति बाईजी** शहा का हम किन शब्दो मे धन्यवाद ज्ञापित करें। **पंडिता सुमति बाईजी** महाराष्ट्र की ही नही समस्त देश की गौरव शालिनी महिलारत्न हैं जिन्होने अपना समस्त जीवन शिक्षा प्रसार समाज एव साहित्य सवा मे समर्पित कर रखा है। आप जैन समाज मे एक मात्र महिला है जिनको सरकार ने पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित किया है। हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।

अकादमी के उपाध्यक्ष के रूप मे हम देहली के माननीय श्री **मदनलालजी जैन घण्टेवाला** का स्वागत करते है। श्री मदनलाल जी देहली के प्रसिद्ध समाज सेवी एवं धर्मप्रेमी महानुभाव है तथा घण्टेवाला के नाम मे देहली मे ही नही सर्वत्र प्रसिद्ध है। आपकी माताजी का धर्म-प्रेम दर्शनीय एव अनुकरणीय था। ६५ वर्ष की वृद्धा होने पर भी आप नियमित मन्दिर जाती थी एव जिन भक्ति मे अपने आपको समर्पित कर देती थी।

अकादमी के सम्माननीय सदस्यों में सर्व श्री शीलचन्द जी वृन्दावनदास जी

अहमदाबाद, मुलायमचन्द जी जैन जबलपुर, सिंघई शीलचन्द जी जैन जबलपुर, माणकचन्द जी वेताला मद्रास, पंडिता विद्युल्लता जी शहा सोलापुर, डा. वी जे. कासलीवाल सोलापुर, पंडिता गजा बहिन बाहुबली, माणकचन्द जयकुमार जी चंवरे शान्तिनाथ पाटील जयसिंगपुर, स्वस्ति श्री भट्टारक लक्ष्मीसेनजी कोल्हापुर, एम बाई निरखी चिक्कोड़ी, स्वस्ति श्री देवेन्द्रकीर्त्ति जी भट्टारक स्वामी जी हुम्मच, कपूरचन्द जी जैन डोड्या जयपुर एवं विमल चन्द जी बैनाडा आगरा का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। आशा है समाज का हमे और भी अधिक सहयोग प्राप्त होगा।

सहयोग—अकादमी के सदस्य बनाने मे राजस्थानी भाषा के कवि श्री राजमल जी बेगस्या, श्री माणकचन्दजी सा. कसेरा, डा. हरीन्द्र भूषण जी जैन बाहुबली, पं. माणिकचन्दजी चवरे कारजा प्रमुलालजी काला एवं उनकी श्रीमती स्नेहप्रभा जी से जो सहयोग मिला है उसके लिये हम उनके पूर्ण आभारी हैं।

अमृत कलश में विद्वानों का स्वागत

सप्तम भाग के प्रकाशन के पश्चात् अर्थात् अप्रेल १९८४ से सितम्बर ८४ तक हमारे अमृत कलश मे स्थित अकादमी कार्यालय मे जिन विद्वानों ने पधार कर हमारे खोज शोध के कार्य को देखा तथा देखकर शुभकामनाए एव शुभार्शीवाद दिया उनमे रूपायन सस्था बरुंदा के निदेशक श्री कोमल कोठारी, जैन वाङ्मय के मनीषी डा दरबारीलाल जी कोठिया, बम्बई के प्रसिद्ध लेखक एवं साहित्यकार डा. जगदीश जैन, साहू रिसर्च इन्स्टीट्यूट कोल्हापुर के निदेशक डा. विलास सगवे, अकादमी के सरक्षक माननीय श्री डालचन्दजी सा. जैन सागर, कुचामन के श्री राजमल जी छाबडा श्रीचन्दजी जैन सोनगढ, श्री नन्दलाल जैन दिवाकर एडवोकेट गंज बासोदा, भगवान दास जी जैन अध्यक्ष अखिल विश्व जैन मिशन गज बासोदा, प सत्यन्धर कुमार जी सेठी उज्जैन एवं श्री निर्मल कुमार जी सेनानी विदिशा के नाम उल्लेखनीय है। हम अमृत कलश मे पधारने के लिये सबके आभारी है।

८६७ अमृत कलश
बरकत नगर, किसान मार्ग
टोंक फाटक, जयपुर,

डा. कस्तूरचन्द कासलीवाल
निदेशक एव प्रधान सम्पादक

संरक्षक की कलम से

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी के अष्टम पुष्प "मुनि सभाचन्द एवं उनका पद्मपुराण" को पाठकों के हाथों मे देते हुए मुझे अतीव प्रसन्नता है। सप्तम पुष्प के प्रकाशन के छह महिने पश्चात् अष्टम पुष्प का प्रकाशित होना निश्चय ही स्वागत योग्य है। प्रस्तुत पुष्प मे प्रथम बार हिन्दी भाषा मे निबद्ध पद्मपुराण का पूरा पाठ एवं उसका सम्यक् अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। पद्मपुराण जैन समाज मे अत्यधिक लोकप्रिय ग्रंथ माना जाता है। इसलिये प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत एवं हिन्दी सभी भाषाओं मे विभिन्न आचार्यों ने पुराण ग्रंथ निबद्ध किये हैं। प्रस्तुत पद्मपुराण जैन सन्त मुनि सभाचन्द की कृति है जिसको खोज निकालने का श्रेय डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल को है। जिन्होंने इसे सम्यक् रूप से सम्पादित करके प्रकाशित भी किया है। वस्तुतः डा० कासलीवाल ने अब तक पचासों अज्ञात एवं अचर्चित ग्रंथों को प्रकाश मे लाने का जो यशस्वी कार्य किया है उसके सम्पूर्ण साहित्यिक समाज उनका सदैव आभारी रहेगा।

अकादमी की हिन्दी के जैन कवियों को उनका ऐतिहासिक अध्ययन के आधार पर बीस भागों मे प्रकाशित करने की योजना एक ऐसी योजना है जिसकी किसी से तुलना नहीं जा सकती। जैन कवियों द्वारा निबद्ध हिन्दी का विशाल साहित्य है जिसका अन्त पता पाना भी दुष्कर कार्य है। आरम्भ मे जब डा० कासलीवाल ने मुझे अकादमी का परिचय कराया तथा अपनी योजना रखी तो मुझे स्वयं को विश्वास नहीं हो रहा था कि उन्हें इतनी सफलता मिल जावेगी और एक के पश्चात् दूसरा भाग प्रकाशित होता रहेगा लेकिन जब अष्टम भाग पर दो शब्द मुझसे लिखने के लिये कहा गया तो स्वतः ही मन प्रसन्नता से भर गया। वास्तव मे जैसा कि गत १५–२० वर्षों मे मैंने डा० कासलीवाल को देखा है उन्हें एक समर्पित सेवाभावी लेखक एवं सम्पादक के रूप मे पाया है। साहित्य सेवा एवं इतिहास की खोज ही उनके जीवन का एक मात्र मिशन है जिसका मूर्त्त रूप अब तक प्रकाशित उनकी ५० से भी अधिक पुस्तकें एवं विभिन्न पत्र पत्रिकाओं मे प्रकाशित उनके सैंकड़ों खोज पूर्ण लेखों मे देखा जा सकता है।

डा कासलीवाल द्वारा स्थापित श्री महावीर ग्रंथ अकादमी का संरक्षक बनने मे मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है। मैं चाहता हूं कि अकादमी द्वारा जैन हिन्दी कृतियों को 20 भागों मे प्रकाशित कराने के पश्चात् अथवा उसके पूर्व ही जैन

कथाओं पर आधारित अथवा जैन सिद्धान्तो एवं शिक्षा पर आधारित सामान्य पाठकों के लिए सीरीज मे साहित्य का प्रकाशन कार्य प्रारम्भ हो जो हजारो की संख्या मे छप कर सभी के हाथो मे पहुंचे। आज इस प्रकार की पुस्तकों की बहुत अधिक मांग है। आशा है डा० कासलीवाल एवं अकादमी का निदेशक मडल इस योजना पर भी ध्यान देगा।

अकादमी की पुस्तकें सभी पाठको के हाथो मे पहुंचे इसके लिए यह आवश्यक है कि हम उसके प्रकाशन को खरीदे अथवा उसके सदस्य बनकर प्राप्त करे। यद्यपि समाज का अकादमी को आवश्यक सहयोग मिल रहा है लेकिन अभी इसकी वृद्धि मे पर्याप्त स्थान है। आशा है अकादमी को समाज का अधिक से अधिक सहयोग प्राप्त होगा।

अन्त मे मैं प्रस्तुत प्रकाशन का स्वागत करता हूं। साथ ही मे मैं डा० कासलीवाल का भी आभारी हू जिन्होने मुझे प्रस्तुत पुस्तक पर दो शब्द लिखने का अवसर प्रदान किया है।

कमलचन्द कासलीवाल

लाल कोठी,
टोंक रोड, जयपुर।

दो शब्द

श्री दि जैन अ. क्षेत्र श्रीमहावीरजी पर आयोजित पञ्च कल्याणक महोत्सव के अवसर पर अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष माननीय श्री निर्मल कुमार जी सा. सेठी ने श्री महावीर ग्रथ अकादमी एव उसके निदेशक डा. कस्तूरचन्द जी कासलीवाल का परिचय कराया। यद्यपि डा. कासलीवाल जी का नाम एव ख्याति तो बहुत पहिले से ही सुन रखी थी लेकिन उनसे भेंट करने का यह मेरा प्रथम अवसर था। इसी अवसर पर सेठी सा. ने मुझसे अकादमी का अध्यक्ष पद स्वीकार करने का आग्रह किया तथा डा कासलीवालजी ने कुछ पुस्तकें भी मुझे भेंट की। यद्यपि साहित्य मे मेरी विशेष गति नहीं है फिर भी माननीय सेठी सा. का प्रस्ताव मुझे स्वीकार करना पडा। लेकिन मैं अध्यक्ष पद के उत्तरदायित्व को कितना निभा सकूंगा यह मैं स्वय नही जानता।

श्री महावीर ग्रथ अकादमी एक साहित्यक सस्था है। साहित्य निर्माण एव प्रकाशन उसका प्रमुख उद्देश्य है। समस्त हिन्दी जैन साहित्य को 20 भागो मेप्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना उसकी मूलभूत योजना है। जिसमे वह बराबर प्रयत्नशील है और अब तक उसके द्वारा आठ भाग प्रकाशित भी हो चुके है। जो अपने आप मे महत्त्वपूर्ण सफलता है। किसी एक भाषा के साहित्य को योजना बनाकर प्रकाशित करने वाली श्री महावीर ग्रंथ अकादमी सम्भवत: प्रथम सस्था है ऐसा मेरा अपना विचार है यही नही इसके ५०१) तक के सदस्यो को अपनी सदस्यता शुल्क से अधिक मूल्य की पुस्तकें प्राप्त हो जावेगी जो अपने आप में एक प्रशसनीय सेवा है।

मुझे ऐसी सस्था का अध्यक्ष बनने का जो सम्मान मिलाहै इसके लिए मै अकादमी के सभी सदस्यो का आभारी हू। इस अवसर पर मैं निदेशक मंडल के सभी सदस्यो, सम्माननीय सदस्यो, एव विशिष्ट सदस्यो सभी का हार्दिक स्वागत करता हू तथा उनसे विशेष सहयोग की आशा रखता हूं। मैं अकादमी के निदेशक डा. कासलीवाल जी का भी आभारी हूं जिन्होने ऐसी सस्था की स्थापना करके सम्पूर्ण हिन्दी जैन साहित्य की खोज एव प्रकाशन जैसी साहित्य सेवा का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है।

Shanti Lal Patodi
(शान्तिलाल पाटोदी)
अध्यक्ष

कलकत्ता
दिनाक ३१-७-८४

सम्पादकीय

देश के जैन ग्रंथागार हिन्दी ग्रंथो की पाण्डुलिपियो के लिए जितने समृद्ध भण्डार हैं उतने दूसरे ग्रथागार नही है। इन ग्रंथालयो में ५० प्रतिशत से भी अधिक संग्रह हिन्दी ग्रंथो का रहता है जो विगत ४००–५०० वर्षो मे लिखा गया है इसीलिए किसी भी ग्रंथ भण्डार की शोध खोज एव सूचीकरण का परिणाम अर्चचित एवं अज्ञात कृतियो की प्राप्ति होती है। मैने अभी विगत वर्ष एवं इस वर्ष मे जितने शास्त्र भण्डार देखे हैं उनमे प्रत्येक मे हिन्दी की अर्चचित कृतियां अवश्य मिली है।

प्रस्तुत पद्मपुराण की उपलब्धि भी सन् १९८३ मे डिग्गी (राजस्थान) के शास्त्र भण्डार को देखते समय हुई थी। जब पद्मपुराण की पाण्डुलिपि मिली तो आनन्द से मन उछल पडा और अपूर्व प्रसन्नता छा गयी। पाण्डुलिपि की बहुत समय तक देखता रहा कि कहीं देखने में भ्रम तो नहीं हो रहा है। इसी शास्त्र भण्डार मे मुझे धनपाल कवि के ऐतिहासिक गीत, भ महेन्द्रकीत्ति के आध्यात्मिक पद भी उपलब्ध हुए है जो इसके पूर्व अज्ञात एव अनुपलब्ध माने जाते थे। वास्तव मे राजस्थान, देहली एवं आगरा मंडल के जैन कवियो ने हिन्दी की जितनी सेवा की है वह साहित्यिक इतिहास में स्वर्ण अक्षरो से लिखने योग्य है लेकिन उनकी शुद्ध साहित्यिक सेवाओ को भी साम्प्रदायिक नाम देकर उसे हिन्दी साहित्य के इतिहास मे अविवेच्य घोषित कर दिया गया जिसका परिणाम जैन कवियो द्वारा निबद्ध हिन्दी साहित्य के साथ उपेक्षा का व्यवहार होता रहा है। श्री महावीर ग्रंथ अकादमी की स्थापना के पीछे यही एक भावना रही है कि शास्त्र भण्डारों में संग्रहीत रचनाओ को प्रकाश मे लाया जावे और उनमे भी अब तक अज्ञात एवं अर्चचित कवियो एव उनकी रचनाओ को प्रमुखता दी जावे। मुझे यह लिखते हुए प्रसन्नता है कि अब तक प्रकाशित आठ भागो मे आये हुए अधिकांश कवि अज्ञात एव अर्चचित हैं जिनमे ब्रह्म रायमल्ल, भट्टारक त्रिभुवनकीत्ति, बूचराज, छीहल, ठक्कुरसी, गारवदास, चतुरूमल ब्र जिनदास, भ. रत्नकीर्ति, कुमुदचन्द्र,आ. सोमकीर्ति,ब्र. यशोधर, स्व. बुलाखीचन्द, बुलाकीदास,हेमराज, बाई अजीतमति, धनपाल, देवेन्द्र व महेन्द्रकीत्ति एव मुनि सभाचन्द के नाम विशेषतः उल्लेखनीय है। लेकिन निरन्तर खोज एव शोध के कारण हिन्दी भाषा के जैनकवियो

की सख्या मे निरन्तर वृद्धि हो रही है जो वस्तुत स्वागत योग्य है लेकिन संख्या मे वृद्धि के कारण उन्हे २० भागो मे समेटना कठिन प्रतीत होने लगा है।

पद्मपुराण कथानक एव भाषा की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। हिन्दी मे मुनि सभाचन्द्र द्वारा विरचित प्रस्तुत पद्मपुराण पुराणसज्ञक प्रथम कृति है इसलिये इस पुराण कृति का महत्त्व और भी बढ गया है। पद्मपुराण-पउमचरिय-- पउमचरिउ--पद्मचरित--पद्मपुराण सज्ञक कितनी ही कृतिया विभिन्न विद्वानो ने लिखी है। वैष्णव धम के १८ पुराणो मे पद्मपुराण भी एक पुराण है। आचार्य रविषेण प्रथम जैनाचार्य है जिन्होने ७वी शताब्दि मे ही पद्पुराण जैसा ग्रथ निबद्ध करने का गौरव प्राप्त किया जिसका अनुसरण आगे होने वाले कितने ही कवियों ने किया और विभिन्न नामो से पद्मपुराण के कथानक को छन्दोबद्ध किया।

प्रस्तुत पद्मपुराण पर राजस्थानी भाषा का सबसे अधिक पुट है। सामाजिक रीति-रिवाजो के विशेष अवसरो पर मिष्ठान्न एवं खाद्य सामग्री के नामो का उल्लेख, जोधपुर एव उदयपुर जैसे नगरो के उल्लेख इस बात का द्योतक है कि कवि का राजस्थान वासियो से अधिक सम्पर्क था। यह भी सम्भव है कि वह स्वय भी इन नगरों मे जाकर शोभा बढायी हो।

पद्मपुराण एक कोश ग्रंथ के समान है जिसमे विभिन्न शब्दावलियो के अतिरिक्त वनस्पतियो, विभिन्न प्रकार के फूलो, ग्राम एव नगरो के नामो का जो उल्लेख हुआ है वह अपने आप मे अद्वितीय है। पुराण मे विभिन्न पात्रों के इतने अधिक नाम हो गये हैं कि उनको याद रखना भी कठिन प्रतीत होता है लेकिन सभी पात्र इतने आवश्यक भी हैं कि उनके बिना कथानक अधूरा ही प्रतीत होने लगता है। पुराण मे ऋषभदेव एव महावीर के जीवन पर अच्छा इतिवृत्त दिया गया है। २०वें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ का जीवनवृत्त तो पद्मपुराण कथानक का एक भाग ही है क्योकि पुराण के नायक राम, लक्ष्मण, सीता हनुमान, राजा जनक, सुग्रीव एवं प्रति नायक रावण, कुम्भकरण, खरदूषण तथा अजना, पवनंजय, लव कुश सभी उन्ही के शासन काल मे हुये थे। सगर चक्रवर्ती एव भरत बाहुबली का व्यक्तित्व भी पद्मपुराण मे अकित है। जिसके अभाव मे पद्मपुराण का इतिवृत्त पूरा भी नही हो पाता।

पद्मपुराण मे विद्याओ के सहारे अधिक लडाई होती है और बिना विद्याओ की सहायता के निर्णायक युद्ध नही लडा जा सकता है। रावण को अपनी विद्याओ पर बडा गर्व था किन्तु यही गर्व उसे ले बैठता है क्योकि यह भी सही है कि पुण्यशाली व्यक्तियो पर विद्याओ का कोई असर नही होता है। सबुक को १२ वर्ष की साधना के पश्चात् भी सूरजहास प्राप्त नही हो सका जबकि लक्ष्मण को वह स्वत ही प्राप्त हो गया। रावण के साथ युद्ध के उत्कर्ष काल मे राम लक्ष्मण को

देवो ने दिव्य वस्त्र प्रदान किये। रावण द्वारा चलाया गया चक्र लक्ष्मण के हाथ मे आ गया और फिर उसी से रावण की मृत्यु हुई।

पद्मपुराण जैन धर्म का प्रमुख कथानक पुराण है जिसका विगत १२००-१३०० वर्षों से अत्यधिक स्वाध्याय होता रहा है। पद्मपुराण के पश्चात् हरिवंश-पुराण एव महापुराण की रचनाएं हुई जो प्रथमानुयोग ग्रंथों के विषय विवेचना का आधार बना। इन ग्रथो के अध्ययन से श्रावकों को त्रेसठ शलाका पुरुषों के जीवन की एवं दूसरे पुण्यशील व्यक्तियो के जीवन की जानकारी मिलती है जो जीवन को नया मोड देने मे समर्थ है

प्रस्तुत भाग मे पद्मपुराण की एक मात्र पाण्डुलिपि के आधार पर ही मूल पाठ दिया गया है। पाठ भेद अन्य प्रतियों के अभाव मे नही दिये जा सके लेकिन एक मात्र उपलब्ध पाण्डुलिपि बहुत ही स्पष्ट एवं शुद्ध लिखी हुई है। इस पुराण के रचयिता मुनि सभाचन्द काष्ठासंघ भट्टारक पराम्परा के सन्त थे। वे काव्य रचना मे अत्यधिक कुशल थे इसलिये पद्मपुराण जैसे महाग्रथ के कथानक को अपने पद्म-पुराण मे समेट लिया। उन्होने दोहा, चौपई, सोरठा जैसे लोकप्रिय छन्दो का प्रयोग करके अपनी कृति को और भी जन-जन की कृति बना दी।

पद्मपुराण के सभी प्रमुख पात्रो के पूर्वभव का भी वर्णन किया गया है जिसका प्रमुख उद्देश्य पूर्वकृत कर्मों के प्रभाव को बतलाना है। यही नही विशिष्ट वर्तमान जीवन मे शुभ अशुभ अथवा इष्ट वियोग एव अनिष्ट का सयोग बिना कर्मफल के नही होता। राम, लक्ष्मण, सभी प्रमुख पात्रो के पूर्व भवों का वर्णन किया है जिसके कारण उन्हे वर्तमान जीवन मे विभिन्न कष्टो का सामना करना पडा है। इस प्रकार के प्रसगो से पाठको के मन पर गहरी चोट लगती है और वे शुभ कार्यों की ओर प्रवृत्त होते हैं।

अन्त मे कविवर कविवर सभाचन्द ने पद्मपुराण की प्रशसा करते हुये लिखा है जो कोई भी पद्मपुराण को पढेगा उसके मिथ्यात्व का नाश होगा और अन्त मे स्वर्गलाभ होगा।

> ऐसा है यह पदम चरित्र, मिथ्या मोह मिटै भव सत्र।
> पढं पढावे कहैं बखान, पावै स्वर्गा देव विमान ।। ५७४६ ।।

पद्मपुराण की पाण्डुलिपि को प्रकाशन के लिए देने हेतु मै दिगम्बर जैन मन्दिर डिग्गी के व्यवस्थापको का एव विशेषतः श्री माणकचन्दजी सेठी का आभारी हूं आशा है अन्य शास्त्र भण्डारो के व्यवस्थापको का भी इसी प्रकार सहयोग मिलता रहेगा जिससे साहित्य प्रकाशन का कार्य अव्यवस्थित रूप से होता रहे।

अन्त मे मैं अकादमी के संरक्षक माननीय श्री कमलचन्दजी सा कासलीवाल का आभारी हू जिन्होंने पुस्तक पर एवं अकादमी की योजना पर दो शब्द लिखे है । श्री कासलीवाल जी नगर के उद्योगपति ही नहीं है किन्तु प्रमुख समाज सेवी भी है । इसी तरह मै अकादमी के अध्यक्ष माननीय श्री शांतिलाल जी जैन कलकत्ता का भी आभारी हूं जिन्होने अपना सक्षिप्त वक्तव्य लिखा है । आप युवा व्यवसायी हैं तथा धार्मिक एव साहित्यिक क्षेत्र मे बराबर योगदान देते रहते है ।

जयपुर
२ अक्टूबर १९८४

डा. कस्तूरचन्द कासलीवाल

प्रस्तावना

जैन ग्रन्थागार हिन्दी साहित्य के विशाल भण्डार हैं। इनमें संग्रहीत पाण्डुलिपियों की खोज अभी आधी भी नहीं हो सकी है। राजस्थान के प्रमुख शास्त्र भण्डारों की यद्यपि पाच भागो मे सूची प्रकाशित हो चुकी है लेकिन अभी तक राजस्थान मे भी कितने ही ऐसे भण्डार हैं जिन्हें कभी देखा नही जा सका। ऐसे ही भण्डारो मे एक टोक जिले मे स्थित डिग्गी कस्बे के दिगम्बर जैन मन्दिर का शास्त्र भण्डार है जिसको देखने का मुझे गत वर्ष अगस्त८३ मे सौभाग्य मिला और उसी समय कितनी ही अचर्चित कृतियो की प्राप्ति हुई। ऐसी अचर्चित कृतियों मे मुनि सभाचन्द्र विरचित हिन्दी पद्म पुराण का नाम विशेषत उल्लेखनीय है।

जैन साहित्य मे राम के जीवन पर सभी राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक भाषाओ मे विशाल साहित्य मिलता है। वस्तुतः राम जिस प्रकार महाकवि वाल्मीकि एव तुलसीदास के आराध्य रहे है उसी प्रकार वे विमलसूरि, स्वयमू, रविषेणाचार्य एव पुष्पदन्त जैसे महाकवियो के काव्यो के नायक है। राम ६३ शलाका महापुरूषो मे ८ वें बलभद्र हैं जो उसी भव से मोक्ष जाते हैं।

रामकथा का उद्भव एवं विकास :—

वेदों मे रामकथा का कोई महत्वपूर्ण स्रोत अथवा उल्लेख नहीं मिलता नहीं मिलता। ऋग्वेद में इक्ष्वाकु (१०।६०।४) एवं दशरथ (१।१२६।४) नामो का उल्लेख अवश्य मिलता है लेकिन वे रामकथा के अंगभूत नही है। इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण (१०।६।१।२) तैत्तरीय ब्राह्मण (३।१०।६) जैमनीय ब्राह्मण (१।१६।२।६३) छन्दोग्योपनिषद (५।११।४) वृहदारण्यकोपनिषद (३।१।१) मे जनक का जो उल्लेख मिलता है वह रामकथा के उत्स फूटने भर मालूम पडते है। संस्कृत भाषा में वाल्मीकि रामायण का जो वर्तमान रूप उपलब्ध है वह सभी उपलब्ध राम कथा काव्यो में प्राचीनतम है। लेकिन विदेशी विद्वान् डा० वेबर के मत में राम कथा का मूल रूप दशरथ जातक मे सुरक्षित है[1] इसी तरह डा० सेन के

---

१. ए. वेबर—आन दि रामायण पृष्ठ ११

मतानुसार राम कथा के मुख्य स्रोत दशरथ जातक एवं रावण सम्बन्धी आख्यान है।[2]

लेकिन राम कथा को जितनी लोकप्रियता वाल्मीकि रामायण ने प्रदान की उतनी लोकप्रियता इसके पूर्व कभी प्राप्त नही हुई। वाल्मीकि रामायण के रचनाकाल पर विद्वानो के विभिन्न विचार हैं उनमें वेल्वलकर ई० पू० २०० तक, चिन्तामणि विनायक वैद्य ने ईसा पूर्व १२०० में २०० ईस्वी पश्चात् तक, फादर बुल्के ने ६०० ईसा पूर्व तक, कीथ ने ४०० ई० पूर्व तक, विंटरनिट्ज ने ३०० ईसा पूर्व तक, बलदेव उपाध्याय ने ५०० ईसा पूर्व तक तथा महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने १५० से २०० ईसा पूर्व तक माना है। राम कथा के विद्वानो के मतानुसार इतना अवश्य कहा जा सकता है कि महर्षि वाल्मीकि की रामायण ईसा के ४००-५०० वर्ष पूर्व ही लोकप्रिय बन चुकी थी लेकिन उनकी इस रामायण के वर्तमान रूप को प्राप्त करने मे उसे अवश्य ही ७००-८०० वर्ष लगे होगे और ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दि तक उसे वर्तमान स्वरूप प्राप्त हो गया होगा।

जैन धर्म में राम का स्थान :—

भगवान राम आठवें बलभद्र है जो २० वें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ के शासनकाल मे हुए थे। लेकिन राम का जीवन मुनिसुव्रतनाथ के शासन काल से लेकर भगवान महावीर तक मौखिक रूप से ही चलता रहा और किसी ने लिपिबद्ध किया भी हो तो उसका कोई उल्लेख नही मिलता। भगवान महावीर के निर्वाण के बाद जब ग्रन्थो के लिपिबद्ध करने का निर्णय लिया गया और प्राकृत भाषा मे सिद्धान्त ग्रन्थो को सूत्र रूप मे लेखबद्ध किया जाने लगा। लेकिन रामकथा का प्राकृत भाषा में पउमचरिय के रूप मे काव्यबद्ध करने का श्रेय आचार्य विमल सूरी ने प्राप्त किया। पउमचरिय महाराष्ट्री प्राकृत का सुन्दरतम महाकाव्य है जिसकी रचना वीर निर्वाण संवत् ५३० मे हुई थी। पूरा काव्य ११८ संधियो मे विभक्त है।

पंचवे वासमया दुसमाए तीस वरस संजुत्ता।
वीरे सिद्ध मवगये तओ निबद्धं इमं चरियं॥

तिलोयपण्णत्ति प्राकृत भाषा का महान ग्रंथ है इसमें २४ तीर्थंकरों ९ नारायण, ९ प्रतिनारायण, ९ बलभद्र एव १२ चक्रवर्तियो के जीवन के प्रमुख

१. दिनेसचन्द्रसेन—द० बगाली रामायण पृष्ठ ३, ७, २६-४१ आदि

तथ्य संग्रहीत हैं ।उन्हीं के आधार पर एवं गुरु परम्परा से प्राप्त कथानकों के आधार पर जैन पुराणो की रचना की गई है। नवीं शताब्दि में शीलंकाचार्य ने चउपन्न महापुरिस चरिय लिखा जिसमे राम लक्खण चरिय भी दिया हुआ है। यह कथा विमलसूरि के पउमचरिय से प्रभावित है इसी तरह भद्रेश्वरकृत कहावली के अन्तर्गत रामायणम एवं भुवनतुंग सूरि कृत सीया चरिय तथा राम लक्खण चरिय कथाये प्राप्त होती हैं।

संस्कृत भाषा मे आचार्य रविषेण का पद्मचरितम् (पद्मपुराण) रामकथा से सम्बन्धित प्राचीनतम रचना है जिसकी रचना वीरनिर्वाण संवत् १२०४ तथा विक्रम संवत् ७३४ मे की गई थी। यह पुराण १२३ पर्वो मे विभक्त है तथा१८००० श्लोक प्रमाण की बड़ी भारी कृति है। रामकथा का ऐसा सुन्दरतम वर्णन सस्कृत भाषा मे प्रथम बार किया गया है। १२ वी शताब्दि में आचार्य हेमचन्द्र ने त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में रामकथा का अच्छा वर्णन किया है। १५ वी शताब्दि मे ब्रह्म जिनदास ने पद्मपुराण की रचना करने का गौरव प्राप्त किया। यह पुराण ८३ सर्गों मे विभक्त है तथा १५००० श्लोक प्रमाण हैं। पुराण की भाषा सरल एव आकर्षक है। १६ वीं शताब्दि मे भट्टारक सोमसेन ने बैराट नगर (राजस्थान) मे रामपुराण की रचना समाप्त की थी तथा १७ वीं शताब्दि भट्टारक धर्मकीर्ति ने पद्मपुराण की 1612A D. में रचना करके रामकथा को और भी लोकप्रियता प्रदान की। मुनि चन्द्रकीर्ति द्वारा रचित पद्मपुराण की रचना आमेर शास्त्र भण्डार मे संग्रहीत है। अपभ्रंश भाषा में महाकवि स्वयम्भू ने पउमचरिउ की रचना करने का यशस्वी कार्य किया। पउमचरिउ एक विशाल महाकाव्य है जो पाच काण्डो—विद्याधर काण्ड, अयोध्या काण्ड, सुन्दर काण्ड, युद्ध काण्ड एव उत्तर काण्ड में विभक्त है। पांच काण्ड एवं ९०सधियो में काव्य बद्ध है। स्वयम्भू ८ वी ९ वी शताब्दि के महान् कवि थे जिसे महा पण्डित राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी का प्रथम कवि स्वीकार किया है। १५ वी शताब्दि मे महाकवि रइधू हुए जिन्होने अपभ्रंश मे विशाल काव्यो एवं पुराणो की रचना की। इन्होने बलभद्रपुराण (पद्मपुराण) की रचना करने का गौरव प्राप्त किया था।[1]

लेकिन जब हिन्दी का युग प्रारम्भ हुआ तो जैन कवि इस भाषा मे भी रामकथा को काव्य रूप में निबद्ध करने मे सबसे आगे रहे। सर्वप्रथम

१. प्रशस्ति सग्रह—संपादक डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल पृष्ठ संख्या ३०

२. वही पृष्ठ संख्या ११६

महाकवि ब्रह्मजिनदास ने राम सीतारास (रामरास) की रचना करके रामकथा को लोकप्रिय बनाने मे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। रामरास की रचना संवत् १५०८ (सन् १४५१) मे की गई थी।[1] रामरास विशाल महाकाव्य है जिसकी पाण्डुलिपि मे ३०० से भी अधिक पत्र है। ब्रह्म जिनदास के समान ही उनके शिष्य ब्र० गुणकीर्ति ने भी रामसीताराम की रचना करने का श्रेय प्राप्त किया।[2] लेकिन ब्र० गुणकीर्ति के पश्चात् करीब २०० वर्षों तक किसी भी भट्टारक अथवा विद्वान ने राम कथा पर लेखनी नही चलायी। यह आश्चर्य की बात है। इसके पश्चात् अब तक जिन कवियो की रचनाओ की खोज हो चुकी है उनमे निम्न रचनाओ के नाम उल्लेखनीय है :—

रचना	लेखक	रचनाकाल
सीताचरित्र[3]	रामचन्द्र अपरनाम बालक	सवत् १७१३
सीता हरण[4]	ब्रह्म जयसागर	संवत् १७३२
पद्मपुराण भाषा (पद्य)[5]	पं खुशालचन्द काला	संवत् १७८३
पद्मपुराण भाषा (गद्य)[6]	पं०दौलतराम कासलीवाल	संवत् १८२३
पद्मपुराण भाषा	भगवानदास	सवत् १७५५

उक्त कृतियो में पं० दौलतराम कासलीवाल द्वारा निबद्ध पद्मपुराण भाषा सबसे अधिक लोकप्रिय माना जाता हैं। इसी का समाज में सबसे अधिक स्वाध्याय हुआ हैं और आज भी यह पुराण सर्वत्र पढा जाता है। दौलतराम ने इसकी जयपुर मे रचना की थी। इसकी भाषा एव शैली दोनो ही आकर्षक है। इसके अतिरिक्त शेष सभी राम काव्य अभी तक अपने प्रकाशन की प्रतीक्षा में खडे है।

---

१ सवत पन्नर अठोतरा मागसिर मास विशाल।
शुक्ल पक्ष चउदसि दिनी रास कियो गुणमाल।।

२ राजस्थान के जैन सन्त – व्यक्तित्व एवं कृतित्व पृष्ठ सख्या १८६

३ प्रशस्ति सग्रह — पृष्ठ सख्या २६६

४ वही २६७

५. राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारो की ग्रन्थ सूची द्वितीय भाग पृ सं २१५

६. वही २१५

७. वही २१६

लेकिन अभी गत वर्ष सन् १९८३ में ही मुझे एक और पद्मपुराण की खोज करने में सफलता प्राप्त हुयी है। प्रस्तुत पद्मपुराण महाकवि ब्रह्मजिनदास एवं ब्र गुणकीर्ति के बाद की रचना है लेकिन उक्त पांचों कृतियों से प्राचीन है। इस प्रकार पद्मपुराण नाम से निबद्ध हिन्दी की सभी रचनाओं मे प्रस्तुत पद्म-पुराण सर्वाधिक प्राचीन है जिसका विस्तृत परिचय निम्न प्रकार है—

ग्रन्थकर्त्ता— प्रस्तुत पद्मपुराण के रचियता मुनि सभाचन्द है जिनका पुराण के प्रारम्भ मे निम्न प्रकार उल्लेख हुआ है—

सभाचन्द मुनि भया आनन्द, भाषा करि चौपई छन्द।
मुनि पुराण कीना मडान, मुनि जन लोक सुनु दे कान ।।३५।।

पुराण की समाप्ति पर लिखी गयी प्रशस्ति मे उन्होंने सुभचन्द सेन के नाम का प्रयोग किया है जो उनके सेन गणीय भट्टारक परम्परा के मुनि होने का सकेत है। वे दिल्ली मडल के मुनि थे जिनके पट्ट मे और बहुत से मुनि हुए। ये कवि भी उसी परम्परा के मुनि थे। वे कुमारसेन भट्टारक मुनि के शिष्य थे। कवि ने ने अपनी गुरू परम्परा का निम्न प्रकार उल्लेख किया है।—

दिल्ली मडल का मुनि राई, जिसके पट्ट भया बहु ठाई।
धरम उपदेस घणा कु भया, पूजा प्रतिष्ठा जामै नया ।।४१।।

पडित पट धारी मुनि भए, ग्यानवत करुणा उर थए।
मलयकीर्त्ति मुनिवर गुणवंत, तिनकै हिये ध्यान भगवंत ।।४२।।

गुणकीर्त्ति अर गुणभद्रसेन, गुणावाद प्रकासै जैन।
भानकीरति महिमा अति घणी, विद्यावंत तपसी मुनि ।।४३।।

कुमरसेन भट्टारक जती, क्रिया श्रेष्ठ उजल मती।
उनके पट सुभचन्द्रसुसेन, धरम बखान सुणावै बैन ।।४४।।

इस प्रकार मुनि मलयकीर्त्ति, गुणकीर्त्ति, गुणभद्रसेन, भानुकीर्ति, कुमरसेन मुनि भट्टारक उसकी गुरू परम्परा थी। पद्मपुराण समाप्ति के पश्चात कवि ने अपना नाम मुनि सभाचन्द इस प्रकार उल्लेख किया है—

इति श्री पद्मपुराण सभाचन्द्र कृत सपूरन।

रचना स्थान

इस प्रकार सभाचन्द कवि मुनि थे तथा वे काष्ठासंघीय सेन गण के मुनि थे। दिल्ली मंडल उनका केन्द्र था इसलिए ऐसा भी प्रतीत होता है कि सभाचन्द मुनि

देहली मे ही रहते थे और उन्होने पद्मपुराण की रचना भी देहली में रहते हुये की थी।

कवि के समय मे देहली में मूलसंघी भट्टारकों की भी गादी थी। इस गादी के भट्टारक मुनि रत्नकीर्त्ति थे जो गंभीर ज्ञान के धारक थे। तपस्वी थे तथा इन्द्रियों का निग्रह करने वाले थे। उन्ही के पट्ट मे रामचन्द्र मुनि हुए जो पण्डिताचार्य थे जो सूक्ष्म व्याख्याता थे तथा रामकथा सुनने मे रुचि रखते थे।

श्री मूलसघ सरस्वती गच्छ, रत्नकीरत मुनि धरम का पच्छ।
तारन तरण ग्यान गभीर, जाणं सहु प्राणी की पीर ॥४५॥

तप संयम तै आतम ग्यान, धरम जिनेस्वर कहै बखान।
छुटै मिथ्यात उपजै ग्यान, जे निसचै धरि मनमै आन ॥४६॥

गुरु के वचन सुणि निसचै धरै ते जीव भवसागर को तिरै।
श्री रत्नकीर्त्ति तज्या ससार, पहुचे स्वर्ग लोक तिह बार ॥४७॥

उनके पट्ट रामचन्द्र मुनि आचारिज पण्डित बहु गुनी।
कहै ग्यान के सूक्ष्म अंग भई बुधि उनकै प्रसग ॥४८॥

रामकथा के विचित्र रूपः—

जैन साहित्य मे राम कथा की दो धारायें मिलती हैं एक आचार्य रविषेण के पद्मपुराण की तथा दूसरी गुणभद्र के उत्तरपुराण की। आचार्य रविषेण की राम कथा विमलसूरि के पउमचरिय एव स्वयम्भू के पउमचरिउ पर आधारित है। लेकिन गुणभद्राचार्य की राम कथा आचार्य रविषेण के कथानक से भिन्न है। हिन्दू धर्म की राम कथाओ मे वाल्मीकि रामायण सबसे प्राचीन है जिसका प्रभाव उत्तरकालीन सभी राम कथाओ पर पड़ा है। महाभारत ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण अग्निपुराण, वायुपुराण आदि सभी मे कुछ सामान्य परिवर्तन के साथ राम कथा को लिपिबद्ध किया गया है। इसके अतिरिक्त अध्यात्म-रामायण, अद्‌भुतरामायण आनन्दरामायण के नाम से भी कई रामकाव्य लिखे गये हैं। इन्ही के आधार पर तिब्बती तथा खेतानी रामायण, हिन्देशिया की रामायण काकाबिन जावा का आधुनिक "सेरतराम" तथा हिन्द चीन श्याम, ब्रह्मदेश, तथा सिंहल आदि देशों की रामकथाए मिलती हैं। बौद्ध जातक 'जातकट्ठवण्णना" मे रामकथा मिलती हैं। जो सक्षेप मे निम्न प्रकार है —

दशरथ महाराज वाराणसी मे धर्म पूर्वक राज्य करते थे। इनकी ज्येष्ठा महीषी के तीन सतान थी— दो पुत्र (राम पण्डित और लक्खण) और एक पुत्री

(सीता देवी)। इस महीषी की मृत्यु के पश्चात् दूसरी को ज्येष्ठ महिषी के पद पर नियुक्त किया। उसके भी एक पुत्र (भरत) उत्पन्न हुआ। राजा ने उसी अवसर पर उसको एक वर दिया। जब भरत की अवस्था सात वर्ष की थी तब रानी ने अपने पुत्र के लिए राज्य मांगा। राजा ने स्पष्ट इन्कार कर दिया। लेकिन जब रानी अन्य दिनों में भी पुनः पुनः इसके लिए अनुरोध करने लगी तब राजा ने उसके षड्यंत्रों के भय से दोनों पुत्रों को बुलाकर कहा "यहा रहने से तुम्हारा अनिष्ट होने की सम्भावना है इसलिए किसी अन्य राज्य या वन में जाकर रहो और मेरे मरने के बाद लौट कर राज्य पर अधिकार प्राप्त करो"। उसी समय राजा ने ज्योतिषियों को बुलाकर उनसे अपने मरने की अवधि पूछी। बारह वर्ष का का उत्तर पाकर उन्होने कहा—"हे पुत्रो! बारह वर्ष के बाद आकर छत्र उठाना" पिता की वन्दना कर दोनो भाई चलने वाले थे सीतादेवी पिता से विदा लेकर उनके साथ हो गयी। तीनों के साथ बहुत से अन्य लोग भी चल दिये उनको लौटाकर तीनो हिमालय पहुच गये और वहां आश्रम बना कर रहने लगे। नौ वर्ष के पश्चात् दशरथ पुत्र शोक के कारण मृत्यु की प्राप्त हो गये। रानी ने भरत को राजा बनाने प्रयास किया। स्वयं भरत एवं अामात्यो के विरोध के कारण वह भरत को राजा बनाने में सफल नहीं हो सकी। तब भरत चतुरंगिनी सेना लेकर राम को ले आने के उद्देश्य से वन मे चले जाते है। उस समय राम अकेले ही है। भरत उनमे पिता के देहान्त का सारा वृतान्त कह कर रोने लगते है परन्तु राम पण्डित न तो शोक करते है और न रोते है।

सध्या समय लक्खण और सीता लौटते है। पिता का देहान्त सुनकर दोनो अत्यन्त शोक करते है। इस पर राम पण्डित उनको धैर्य देने के लिए अनित्यता का धर्मोपदेश सुनाते है। उसे सुनकर सब शोक रहित हो जाते है। बाद मे भरत के बहुत अनुरोध करने पर भी राम पण्डित यह कह कर वन में रहने का निश्चय कहते है—"मेरे पिता ने मुझे बारह वर्ष की अवधि के अन्त मे राज्य करने का आदेश दिया है अतः अभी लौट कर मैं उनकी आज्ञा का पालन न कर सकूंगा। मै तीन वर्ष बाद लौट आऊंगा।"

जब भरत भी शासनाधिकार अस्वीकार करते है तब राम पण्डित अपनी तिण्णपादुका (तृण पादुका) देकर कहते है कि मेरे आने तक ये शासन करेगी तृणपादुकाओ को लेकर भरत, लक्ष्मण सीता तथा अन्य लोगो के साथ वाराणसी लौटते है। अमात्य इन पादुकाओ के सामने राजकार्य करते हैं। अन्याय होते ही वे पादुकाएं एक दूसरे पर आघात करती और ठीक निर्णय होते पर शान्त होती थी।

तीन वर्ष व्यतीत होने पर राम पण्डित लौटकर अपनी बहिन सीता से विवाह करते हैं। सोलह सहस्र वर्ष तक राज्य करने के पश्चात् वे स्वर्ग चले जाते

हैं। जातक के अन्त मे महात्मा बुद्ध जातक का सामंजस्य इस प्रकार बैठाते हैं— उस समय महाराजा शुद्धोदन महाराज दशरथ थे। महामाया (बुद्ध की माता) राम की माता, यशोधर (राहुल की माँ) सीता, आनन्द भरत थे और मैं राम पण्डित था।"[1]

इसी तरह "अनामकं जातकम्" में राम के जीवन वृत्त से सम्बन्धित कथा मिलती है। चीनी त्रिपिटक के अन्तर्गत "त्सा-पौ-त्सिंग-किंग में १२१ अवदानों का संग्रह मिलता है। यह संग्रह ४७२ई. मे चीनी भाषा में अनूदित हुआथा इसमें एक 'दशरथ कथानम्" भी मिलता है जिसमें राम कथा का उल्लेख किया गया है। इसकी विशेषता यह है कि इसमे सीता या किसी अन्य राजकुमारी का उल्लेख नहीं हुआ है। दशरथ की चार रानियो का वर्णन आता है उनमें प्रधान महिषी के राम, दूसरी रानी के रामन (रोमण-लक्ष्मण) तीसरी रानी के भरत और चौथी रानी के शत्रुघ्न उत्पन्न हुये थे।

अद्भुत रामायण में रामकथा का दूसरा ही रूप मिलता है जिसमे सीता को मन्दोदरी द्वारा अपने गर्भ को जमीन मे गाड दिए जाने के पश्चात् उत्पन्न हुआ माना गया है जो हल जोतते समय वह गर्भजात कन्या राजा जनक को मिली और उन्होने उसका लालन पालन किया। लेकिन राम कथा का व्यापक एव लोकप्रिय रूप बाल्मीकि रामायण का रहा जो सर्वत्र समादृत है।

जैन कथा के दो रूप

जैन साहित्य मे रामकथा के जो रूप मिलते है उनमे गुणभद्राचार्य द्वारा रचित उत्तरपुराण एवं रविषेण के पद्मपुराण मे सुरक्षित है। दोनों ही आचार्य जैनधर्म के अधिकृत विद्वान थे। आचार्य रविषेण ने विक्रम सवत् ७३४ (६७७ ई) मे पद्मपुराण की रचना समाप्त की थी जबकि आचार्य गुणभद्र ने ९ वी शताब्दि के अन्त में उत्तर पुराण की रचना करने का गौरव प्राप्त किया था। इस प्रकार आचार्य रविषेण का पद्मपुराण आचार्य गुणभद्र के समक्ष रहा होगा ऐसा अनुमान किया जा सकता है क्योंकि ऐसा महापुराण लिखने वाले आचार्य जिनसेन एव गुणभद्र अपने पूर्वाचार्यो की अधिकृत ग्रथो को ओझल अथवा अनदेखा नही कर सकते। गुणभद्र आचार्य जिनसेन के शिष्य थे। जिनसेन आदि पुराण की रचना करने से पूर्व ही स्वर्गवासी हो गये इसलिए आदिपुराण के अवशिष्ट भाग एव उत्तरपुराण की रचना करने का कार्य उनके सुयोग्य शिष्य गुणभद्र ने ही किया। उनके द्वारा उत्तरपुराण मे प्रतिपादित रामकथा आचार्य रविषेण से भिन्न है जिसमें सीता को जनक की पुत्री न मानकर रावण,-मन्दोदरी की पुत्री माना है।

पं० पन्नालाल जी साहित्याचार्य ने उत्तरपुराण का संक्षिप्त कथानक अपने पद्म पुराण की प्रस्तावना मे निम्न प्रकार दिया है।

"वाराणसी के राजा दशरथ के चार पुत्र उत्पन्न होते हैं–राम सुबाला के गर्भ से,लक्ष्मण कैकयी के गर्भ से और बाद में जब दशरथ अपनी राजधानी साकेत मे स्थापित करते हैं तब भरत और शत्रुघ्न भी किसी अन्य रानी के गर्भ से उत्पन्न होते हैं। यहां भरत एवं शत्रुघ्न की माता का नाम नही दिया गया है दशानन विनमि विद्याधर वंश के पुलस्त्य का पुत्र है। किसी दिन वह अमित वेग की पुत्री मणीमति को तपस्या करते देखता है और उस पर आसक्त होकर उसकी साधना मे विघ्न डालने का प्रयत्न करता है। मणिमति निदान करती है कि मैं उसकी पुत्री होकर उसे मारूंगी"। मृत्यु के बाद वह रावण की रानी मन्दोदरी के गर्भ मे आती है। उसके जन्म के बाद ज्योतिषी रावण से कहते हैं कि यह पुत्री आपका नाश करेगी अत रावण ने भयभीत होकर मारीच को आज्ञा दी कि वह उसे कही छोड दे। कन्या को एक मन्जूषा मे रख कर मारीच उसे मिथिला देश में गाड आता है। हल की नोक से उलझ जाने के कारण वह मन्जूषा दिखाई देती है और लोगो के द्वारा जनक के पास पहुचाई जाती हैं। जनक मन्जूषा को खोलकर देखते है और उसका सीता नाम रख कर पुत्री की तरह पालन करते हैं। बहुत समय बाद जनक अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण को बुलाते है। युद्ध के समाप्त होने पर राम और सीता का विवाह होता है। इसके बाद राम अन्य सात कुमारियो के साथ विवाह करते है और लक्ष्मण पृथ्वी आदि १६ राजकन्याओ से। दोनों दशरथ की आज्ञा लेकर वाराणसी मे रहने लगते हैं।

नारद से सीता के सौन्दर्य का वर्णन सुनकर रावण उसे हर लाने का संकल्प करता है। सीता का मन जाचने के लिए शूर्पणखा भेजी जाती है लेकिन सीता का सतीत्व देख कर वह रावण से यह कह कर लौटती है कि सीता का मन चलायमान करना असम्भव है। जब राम और सीता वाराणसी के निकट चित्रकूट वाटिका में विहार करते है तब मारीच स्वर्णमृग का रूप धारण कर राम को दूर ले जाता है। इतने मे रावण राम का रूप धारण करके सीता से कहता है कि मैंने स्वर्णमृग महल भेजा है। और उसको पालकी पर चढने की आज्ञा देता है। यह पालकी वास्तव में पुष्पक विमान है जो सीता को लंका ले जाता है। रावण सीता का स्पर्श नही करता है क्योंकि पतिव्रता के स्पर्श करने से उसकी आकाशगामिनी विद्या नष्ट हो जाती।

दशरथ को स्वप्न द्वारा मालूम हुआ कि रावण ने सीता का हरण किया और वह राम के पास यह समाचार भेजते हैं। इतने मे सुग्रीव और हनुमान बालि

के विरुद्ध सहायता मांगने के लिए पहुंचते हैं। हनुमान लंका जाते हैं और सीता को सान्त्वना देकर लौटते हैं (लका दहन का कोई उल्लेख नही मिलता) इसके बाद लक्ष्मण द्वारा बालि का वध होता है और सुग्रीव अपने राज्य पर अधिकार प्राप्त करता है। अब वानरो की सेना राम की सेना के साथ लका की ओर प्रस्थान करती है। युद्ध के विस्तृत वर्णन के अन्त मे लक्ष्मण चक्र से रावण का सिर काट देते हैं। इसके बाद लक्ष्मण दिग्विजय करके और अर्धचक्री नारायण बनकर अयोध्या लौटते है। लक्ष्मण की सौलह हजार रानिया और राम की आठ हजार रानिया है। सीता के आठ पुत्र होते है (सीता त्याग का उल्लेख नही मिलता) लक्ष्मण एक असाध्य रोग से मर कर रावण वध के कारण नरक में जाते हैं। राम लक्ष्मण के पुत्र पृथ्वी सुन्दर को राज पद पर और सीता के पुत्र अजीतंजय को युवराज पद पर अभिषिक्त करके दीक्षा लेते हैं और मुक्ति पाते हैं। सीता भी अनेक रानियो के साथ दीक्षा लेती है और अच्युत स्वर्ग मे जाती है।[1]

हिन्दी में राम काव्य—

प्राकृत संस्कृत एव अपभ्रंश पुराण रचनाओं के पश्चात् जब हिन्दी राजस्थानी मे ग्रन्थ रचना होने लगी तो जैन कवियो द्वारा इन भाषाओ मे सभी तरह के ग्रन्थो का गद्य एव पद्य मे लिखा जाने लगा या फिर मूल ग्रथ के भावो को लेकर स्वतत्र रूप से भी काव्य लिखे गये। हिन्दी-राजस्थानी में रामकथा को काव्य रूप मे निबद्ध करने का सर्व प्रथम श्रेय महाकवि ब्रह्म जिनदास को दिया जा सकता है क्योंकि उन्होंने सवत् १५०८ मे ही विशाल काव्य 'रामरास' की रचना करने का गौरव प्राप्त किया। 'रामरास' यद्यपि रविषेणाचार्य के पद्मपुराण के आधार पर निबद्ध किया गया है लेकिन वह कवि की मौलिक एव स्वतत्र रचना के रूप मे है। सवत् १७२८ मे देउल ग्राम मे लिपिबद्ध इस काव्य की एक प्रति डूगरपुर के भट्टारकीय शास्त्र भण्डार मे संग्रहीत है इस पाण्डुलिपि मे १२"×६" आकार वाले ४०५ पत्र हैं। कवि ने अपने काव्य के रचना काल का निम्न पद्य मे उल्लेख किया है—

संवत पन्नर अठोत्तरा, मागसिर मास विशाल।
शुक्ल पक्ष चउदिसी दिनी, राम कियो गुणमाल।।

पद्मपुराण संरचना

विक्रम की १७ वी शताब्दि के तृतीय/चतुर्थ चरण मे मुनि सभाचन्द हुए। उनके समय मे तुलसी का रामचरितमानस (रामायण) लोकप्रियता प्राप्त करने लगा था और उत्तर भारत की अधिकाश जनता मे उसे पढने की और रुचि बढ रही थी। वैष्णव धर्म मे फैल रही रामायण के प्रति आसक्ति को देख कर

---

१ पद्मपुराण भूमिका पृष्ठ संख्या १७–१८

सभाचन्द मुनि को भी आचार्य रविषेण कृत संस्कृत भाषा के पद्मपुराण को सुनने की रुचि पैदा हुई। पद्मपुराण को सुन कर मुनिश्री के हृदय में आचार्य रविषेण के प्रति गहरी श्रद्धा जाग्रत हुई। अपनी रचना पद्मपुराण के आरम्भ में इन्होंने रविषेणाचार्य के प्रति जो श्रद्धा एवं भक्ति प्रदर्शित की है वह अत्यधिक संवेदनशील है। इन्होंने रविषेणाचार्य को मति श्रुति एवं अवधि ज्ञान का धारक महामुनीश्वर निर्ग्रंथाचार्य एवं क्रोध मान माया आदि कषायों से रहित होना लिखा है। इन्ही भावों को कवि के शब्दों में देखिये—

> केवल वाणी सुण्यां बखांन, पढित मुनिवर रच्या पुराण।
> आचार्य रविषेण महंत, संस्कृत मैं कीनौ ग्रन्थ ॥३०॥
> महा मुनीश्वर ग्यांनी गुनी, मति श्रुति अवधि ग्यांनी मुनी ॥
> महा निग्रंथ तपस्वी जति, क्रोध भाव माया नही रती ॥३१॥
> आरिषो वाणी शास्त्र किया, धर्म उपदेश बहुविध दिया।
> जिसके भेवा भेद अपार, महामुनीश्वर कहैं विचार ॥३२॥

आचार्य रविषेण के पद्मपुराण को सुनने एव उसका स्वाध्याय करने के पश्चात् मुनि सभाचन्द के हृदय मे उसके हिन्दी रूपान्तर करने के भाव जाग्रत हुये और उन्होने संवत् १७११ मे फाल्गुन शुक्ला पचमी को हिन्दी मे पद्मपुराण जैसे महान् ग्रथ को छन्दोबद्ध करने का यशस्वी कार्य कर डाला।

> संवत सत्रहसै ग्यारह वरस, सुण्यां भेद जिनवाणी सरस।
> फाल्गुण मास पचमी स्वेत, गुरुवार मन मै धरि हेत ॥३३॥
> सभाचन्द मुनि भया आनन्द, भाषा करि चोपई छन्द।
> सुनि पुरान कीनां मंडान सुनि जन लोक सुनु दे कान ॥३४॥

सर्व प्रथम गौतम स्वामी ने राम कथा को सबको सुनायी। उसके पश्चात् जगसेन केवली ने इसे मौखिक रूप से कहा। फिर कृतातसेन ने एक करोड श्लोक प्रमाण ग्रथ निबद्ध किया। इसके पश्चात् दूसरे आचार्यों ने पुराणो की रचना करके उन्हे पढा। उनके सबदन मुनि शिष्य हुए। फिर अरहसेन एवं लक्ष्मनसेन मुनि हुए जिन्होने साठ हजार श्लोक प्रमाण पद्मपुराण लिखा। उसी पुराण को आचार्य रविषेण ने अठारह हजार श्लोक प्रमाण पद्मपुराण नाम सेनिबद्ध किया। कवि ने इनका रचना काल का निम्न प्रकार वर्णन किया हैं—

> सहैंस एक अक दोई से बरस, छह महीने बीते कछु सरस।
> महावीर निरवाण कल्याण, इस अंतर है रच्या पुराण ॥

अर्थात् भगवान महावीर के निर्वाण के १२०० वर्ष और ६ महिने व्यतीत होने पर रविषेण ने पद्मपुराण की रचना समाप्त की थी। किन्तु स्वयं रविषेण ने वीर निर्वाण संवत् १२०४ एवं विक्रम सवत् ७३४ मे पद्मपुराण की रचना करना लिखा है। इसलिये मुनि सभाचन्द ने अपने रचना काल मे ४ वर्ष का अन्तर क्यो कर लिखा इसका कोई औचित्य नही बतलाया।

मुनि सभाचन्द भट्टारक कुंवरसेन के शिष्य थे। जो काष्ठा सघ—माथुर गच्छ-सेन गणीय भट्टारक थे। भ० कमलकीर्त्ति के दो शुभचन्द और कुमारसेन ये दो पट्ट शिष्य हुए।[1] इनके शिष्य थे सभाचन्द जो मुनि अवस्था मे रहते थे। कुमारसेन का उल्लेख आमेर शास्त्र जयपुर की एक प्रशस्ति मे भी आता है जो हेमकीर्त्ति के शिष्य एव भ० हेमचन्द के गुरु थे।[2] मुनि सभाचन्द के नाम का कोई उल्लेख नही मिलता है। फिर भी ये भट्टारकीय परम्परा के मुनि थे इसमे कोई सन्देह नही है।

जीवन परिचय

मुनि सभाचन्द की गृहस्थावस्था का क्या नाम था। उनके माता पिता कौन थे। उनका जन्म कहा हुआ तथा उन्होने किस अवस्था मुनि दीक्षा प्राप्त की इसका कोई उल्लेख नही मिलता है। सभाचन्द पद्मपुराण (हिन्दी) के अतिरिक्त और कौन २ से ग्रथो के रचयिता बने इसका भी कोई उल्लेख नही मिलता। लेकिन इतना अवश्य कहा जा सकता है कि सभाचन्द अपनी गृहस्थावस्था मे अग्रवाल जैन होगे क्योकि आपने ग्रंथ प्रशस्ति मे अग्रवाल जैनो की उत्पत्ति का वर्णन किया है। कवि के अनुसार अग्रवाल जैन जाति की उत्पत्ति निम्न प्रकार हुई है -

एक बार लोहाचार्य ने अग्रोहा के निकट आकर योग धारण कर लिया। अग्रोहा के सभी नगरवासी उनकी वदना करने लगे। वहा उन्होने अग्रवाल श्रावको को प्रतिबोधित किया और श्रावको की ५३ क्रियाओ को पालने का उपदेश दिया। पञ्च अणुव्रत, चार शिक्षाव्रत एव तीन गुणव्रतो के महत्त्व को समझाया। नगर मे व्याप्त मिथ्यात्व को दूर किया और जैनधर्म के स्वरूप को सबको बताया। लोहाचार्य के उपदेश से सबने दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय एव व्रत विधान को अंगीकार किया। जीव दया का पालन होने लगा तथा सबने रात्रि भोजन न करने का नियम ले लिया और चउघडिया मे अणवेउ (ब्यालु) की जाने लगी।

---

१ देखिये भट्टारक सम्प्रदाय—पृष्ठ सख्या २४

२ देखिये प्रशस्ति संग्रह—पृष्ठ सख्या ८५

मुनि सभाचन्द्र काष्ठासंघी साधु थे। उस समय देहली मे मूलसंघ एवं काष्ठासंघ दोनो की गादिया थी। अधिकांश अग्रवाल जैन समाज काष्ठासंघी भट्टारको के आम्नाय मे था। मुनि सभाचन्द अपने समय के प्रमुख सन्त थे। साहित्य सर्जन की ओर इनका विशेष झुकाव था।

छन्दों का प्रयोग—पद्मपुराण विशालकाय ग्रन्थ है जिसमे ११५ विधानक है। तथा दोहा, चोपई एवं सोरठा छन्दो की संख्या ६६०६ है। जैन कवियो ने हिन्दी पद्य मे इतना विशाल ग्रन्थ बहुत कम निबद्ध किया है। पुराण में छन्दों की सख्या निम्न प्रकार है—

प्रथम सधि (विधानक)	४६३ पद्य
द्वितीय सधि (विधानक)	७७ पद्य
तृतीय सधि (विधानक)	२११ पद्य
चतुर्थ सधि (विधानक)	८५ पद्य
पचम विधानक से ११५ विधानक तक	५७७० पद्य
योग	६६०६

उक्त पद्यो में छन्दानुसार सख्या निम्न प्रकार है—

दोहा (दूहा)	१३६
सोरठा	३६
अडिल्ल	३४
कवित्त	२
चौपई	६३९२

विधानक की समाप्ति दोहा, सोरठा, कवित्त एव अडिल्ल इन चार छन्दो मे से किसी एक के साथ की गयी है। लेकिन कही-कही इसका अपवाद भी है और विधानक की समाप्ति चौपई के साथ भी कर दी गयी है।

भाषा—पद्मपुराण की रचना देहली मे की गयी थी इसलिए पुराण की मूल

1. अग्रोहे निकट प्रभु ठाढे जोग, करे वन्दना सब ही लोग।
अग्रवाल श्रावक प्रतिबोध, त्रेपन क्रिया बताई सोध।।३५।।
पच अणुव्रत सिख्याच्यारि, गुनव्रत तीन कहे उरधारि।
बारहै व्रत बारहै तप कहै, भवि जीव सुणि चित्त में गहे।।३६।।
मिथ्या धरम कियो तहा दूरि, जैन धरम प्रकास्या पुरि।
चिधसो दान देई सब कोई, सासत्र भेद सुणि समकिती होई।।३७।।

भाषा खडी बोली है जिस पर प्रमुख रूप से राजस्थानी भाषा का प्रभाव दिखाई देता है। कही-कहीं उर्दू के शब्द भी आ गये है जो उस समय बोलचाल की भाषा में प्रचलित थे। वैसे पुराण की भाषा शुद्ध एवं परिमार्जित है। शब्दों को बिगाड करके प्रयोग करने का कवि स्वभाव नहीं है। १७वी शताब्दी में जैन कवियों ने अपने काव्यों को खडी बोली मे लिखना प्रारम्भ कर दिया था। प्रस्तुत पद्मपुराण इस धारणा का स्पष्ट प्रमाण है। उन्होंने प्रान्तीयता अथवा भाषावाद के मोह मे न पडकर सदैव प्रदेश मे प्रचलित भाषा मे काव्य रचना की है।

पुराण की भाषा पर राजस्थानी का पुट है। कहीं-कहीं क्रिया पदों मे मे राजस्थानी क्रिया पदों का प्रयोग किया गया है तो कही-कहीं राजस्थानी शब्दो का प्रयोग बहुतायत से हुआ है।

क्रियापद—(1) पहली दुःख प्रजा कूं द्यूं, मधुसूदन का वैर हूं ल्यूं
३८४/४३३२

यहां द्य एव ल्यूं क्रियायें राजस्थानी भाषा की हैं।

(2) लोग खदाया उसकै पास (१०४/६२१) इसमे खदाया क्रिया पद ठेठ राजस्थानी भाषा का हैं जिसका अर्थ भेजा होता है। क्रिया पदो की तरह शब्दो का और भी अधिक प्रयोग हुआ है। राजस्थानी शब्दों मे से कुछ शब्द निम्न प्रकार हैं—

ज्यौणार (३२/४४१) आग्योणी (४२/६६) जनवासा (५८/६८) बीजणा (२०७/२००४), तिसाया (२२६/२२७४) लेणकुं (२०६/२२७४), पाणी (२०६/१९९०), भाजी (१९४/१८७), जान (बरात) (५८/६८), जिनावर (जानवर १५८/१३५०) ब्याहण (१७१/१५७८)।

राजस्थानी शब्दो के प्रयोग की तरह उर्दू शब्दो का भी पुराण मे यत्र-तत्र प्रयोग हुआ है जिसका प्रमुख कारण सभाचन्द मुनि का जन सम्पर्क ही कहा जा सकता है। वकील (२७/२८३), फरमान (६१/४५५), दिलगीर (२०७/२०१३), फरमावो/सलाम (११२/१८०४) जैसे शब्दो का प्रयोग प्रस्तुत काव्य मे देखा जा सकता है। कही-कही उर्दू के शब्दो का सरलीकरण भी कर दिया है। 'मलहम' शब्द का ह निकालकर मलम (८४/३५४) से काम चला लिया है।

इसके अतिरिक्त ब्रजभाषा का भी पुराण पर स्पष्ट प्रभाव है। तोकूं, मोकूं शब्दो के प्रयोग के अतिरिक्त शब्दों के आगे 'कू' प्रत्यय शब्द जोड़कर प्रयोग करने की ओर कवि की अधिक रुचि रही है। जैसे—समुद्र कू (३६२६) मोकूं (३६२८) भानकूं (३६३०), रामकू (३६३७) शब्दों की पुराण में बहुतायत है।

लेकिन विभिन्न भाषाओं का प्रभाव होते हुए भी पद्मपुराण मुख्यत. खड़ी

बोली की महान् कृति है जो कवि के अगाध भाषा ज्ञान की द्योतक है। हिन्दी भाषा मे १७वीं शताब्दी में ही खड़ी बोली की परिस्कृत रचना मिलना भाषा साहित्य के अध्ययन की दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

रस एवं अलंकार—

पद्मपुराण शुद्ध सात्विक कृति है जिसका पर्यवसान शान्त रस प्रधान है। इसके प्रमुख पात्र, राम, लक्ष्मण, रावण, हनुमान, विभीषण, सुग्रीव, सीता आदि हैं जिनके जीवनवृत्त के चारों ओर पुराण का कथानक घूमता है। प्रारम्भ मे कवि ने भगवान महावीर के पञ्चकल्याणक एव उनकी दिव्यध्वनि द्वारा निर्गत प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर २०वें तीर्थंकर मुनिसुव्रत नाथ के पावन जीवन का वर्णन किया गया है जो एक भूमिका के रूप मे है एव राम के जन्म के पूर्व में होने वाले महापुरुषो की स्मृति मात्र है। इसके अतिरिक्त वानर वश की उत्पत्ति, हनुमान का जीवन, उनके पिता पवनंजय एवं अंजना का विवाह, विरह एवं मिलन, राक्षस वश, रावण का जन्म, लका की स्थिति, रावण का पराक्रमी एवं धार्मिक जीवन, रावण द्वारा लका की प्राप्ति, वैभव, अपार शक्ति एव विशाल साम्राज्य आदि का वर्णन भी रामकथा के लिये पूर्व पीठिका का कार्य करते हैं। इसलिये पद्मपुराण की रचना समग्र दृष्टि से पूर्ण है उसमे कही पर भी न कोई अश छूट सका है और न किसी अश को अनावश्यक महत्त्व दिया गया है। इसलिए पद्मपुराण में कभी तीर्थंकरो का जन्म होता है, कभी भरत बाहुबलीयुद्ध, माली द्वारा लका पर आक्रमण, वैश्रवन द्वारा युद्ध, इन्द्र और रावण के मध्य युद्ध और अन्त में राम रावण युद्ध होता है जहा वीररस एव दूसरे रसो का खुल कर प्रयोग हुआ है वहीं दूसरी ओर ससारस्वरूप वर्णन (पृष्ठ ४७), तत्त्ववर्णन (४३३), राम की तपस्या (५५६६) जैसे वर्णन वैराग्य प्रधान वर्णन हैं जिसमें शान्त रस का प्रवाह होता है।

पद्मपुराण मे शृंगार रस का भी बहुत प्रयोग हुआ है। पद्मोत्तर की सुन्दरता, मन्दोदरी का सौदर्य वर्णन, आदि ऐसे कितने ही स्थल है जिनमे सौंदर्य का मुक्त हस्त से वर्णन हुआ है। श्रीकठ की पुत्री की सुन्दरता का वर्णन देखिए—

रुपवंत ज्यू पुन्यू चंद, घटे बढ़ै यह सदा अनन्त।
दीरघ नयन श्रवण सो लगे, देख कुरग बन माहि भगे ॥५५/१३
दन्त चिमके ज्यो हीरो की ज्योत, मस्तक कपोल पृथ्वी उद्योत।
नासा भौह बनी छवि घनी, वेनी कीर्त न जाये गिनी ॥५५/१४

रावण की रानी मन्दोदरी की सुन्दरता भी देखिये—

कैसे कवि चन्द्रमुखी कहै, वह घटै बधै या समनित रहै।
किम कविराज कहै मृग नैन, अई भय दायक सुख की देन ॥७८/२६८॥

इसी तरह वीर रस से तो पद्मपुराण भरा पड़ा है। पुराण मे स्थान स्थान पर युद्ध होते है जो वीर रस से पूर्ण है। राम रावण युद्ध का एक वर्णन देखिये—

घोडा से घाडा तव लडै मैंगल सौं मैंगल प्रति भिडै।
रथ को रथ पर दिया हिया पेल, ग्रैसै भिडै ज्यौं खेलत ह्वै मल्ल ॥३२९९॥
दोउधा नरखै विद्या बाण, गोला गोली करै घमसान।
मारै खडग टूक ह्वै होइ, पीछा पाव न हटिहै कोइ ॥३३००॥

विभीत्स रस—

युद्ध मे योद्धाश्रो के सिर, हाथ, पाव, कट कट कर गिरने लगे। रक्त की धारा बहने लगी और सारा दृश्य भयानक लगने लगा। इसी का एक वर्णन देखिये—

परवत मुड भुजा का भया, पडी लोथ पग जाई न दिया।
सोनत नदी बहै तिहा लोथ, हाथी घोडे रथ सूर बहोत ॥३७३१॥
जैसे मगरमच्छ जल तिरै, ग्रैसै लोथ रकत मै फिरै।
जेता रण भुभा दोउ सेन, तिनका कहि न सकै कोइ बैन ॥३७३२॥

शान्त रस—पुराण मे यत्र तत्र ससार के विरक्तता, असारता, तप का महत्व एव तत्वो का वर्णन मिलता है जिसको पढ कर मन को शान्ति मिलती है तथा मन रागादि भावो से दूर हटता है।

जे जीव दृढ समकित धरै, मिथ्या धरम निवार।
निसचै पावै परम पद, भुगतै सुख अपार ॥४९९१॥
जीव तत्व ससारी दोइ, भव्य अभव्य उभय विध होइ।
अभव्य तपस्या करै अनेक, काया कष्ट विना विवेक ॥४९९२॥

रस विधान के समान अलकारो का भी अच्छा उपयोग हुआ है। इसलिये उपमा, उत्प्रेक्षा जैसे कुछ अलकार तो यत्र तत्र मिलते है।

पुराण का समीक्षात्मक अध्ययन—

पद्मपुराण भारतीय सस्कृति का कोश ग्रथ है। उसमे सस्कृति एवं समाज का अच्छा वर्णन हुआ है। उसके नायक राम है जो भारतीय सस्कृति के प्रेरणा स्रोत है। राम की भक्ति एव उनका गुणानुवाद पुण्य बध का कारण है। पापो से मुक्ति दिलाने वाला है। राम के गुण अथाह है जिनका वर्णन करना भी साधारण कार्य नही है—

राम नाम गुन अगम अथाह, ते गुन किस पं वरने जाय।
जा मुख राम नाम नीसरै, सो सकट मै बहुरि न परै ॥२३॥

जा घट राम नाम का वास, ताकै पाप न आवै पास ।
जिन श्रवणन राम जस सुने, देवलोक सुख पावै घने ।।२४।।

इसलिये कवि पद्मपुराण के अन्त मे लिखा है कि जो व्यक्ति इस राम काव्य पद्मपुराण को पढ़ेगा, स्वाध्याय करेगा, उसे तीनों लोको का यश, सम्पत्ति एवं वैभव प्राप्त होगा—

जो कोई सुणे धरम के काज, पावै तीन लोक का राज
धरम ध्यान सु पाप न रहै, केवल ज्ञान जीव वह लहै।

१. राम

राम स्वभाव से सरल, उदार, दयालु हैं । माता पीता के पूरे आज्ञाकारी हैं अपने भाइयों से स्नेह रखने वाले हैं । शक्ति बाण द्वारा लक्ष्मण के मूच्छित होने पर वे जिस तरह विलाप करते हैं वह उनके भ्रातृ प्रेम का अनूठा उदाहरण है—

मै देख्या भाई का मरण, अवर भया सीता का हरण,
काठ सकेल अगनि मे जरू, लक्ष्मण का कैसे दुख भरू ।।३३१–१।।

राम प्रजावत्सल हैं । प्रजा के दुख मे दुखी एव सुख में सुखी होने वाले हैं । प्रजा असन्तोष अथवा सीता के प्रति गलत धारणा के कारण वे गर्भवती होने पर भी सीता का परित्याग करने मे किञ्चित् भी नही घबराते । इसके अतिरिक्त अग्नि परीक्षा लेते समय भी कठोर हृदय वाले बन जाते हैं इसलिए उन्हें हम उन्हे "वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसमादपि" वाले स्वभाव का कह सकते हैं । राम पद्मपुराण के नायक है । पुराण का सम्पूर्ण कथानक उनके पीछे चलता है ।

राम शक्ति के पुन्ज भी है । युद्ध में विजय प्राप्त करना ही उनका स्वभाव था । रावण जैसे शक्तिशाली शासक से युद्ध करने में वे जरा भी पीछे नही हटे और अन्त मे उस पर विजय प्राप्त करके ही लौटे । लेकिन अकारण युद्ध करना उनका स्वभाव नही नही था । वे रावण को अन्त तक समझाते रहे और युद्ध को टालते रहे । राम दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी हैं । जो भी उनकी शरण मे आ गया वह उनका होकर रह गया । सुग्रीव, हनुमान, नल नील जैसे योद्धाओ को उन्होने सहज ही अपनी ओर मिला लिया । विभीषण जब प्रथम बार ही उनकी शरण मे आया तभी उसे लकाधिपति कह कर सहज ही मे उसे भी अपने पक्ष मे कर लिया ।

राम जिन भक्त हैं । जहा भी अवसर मिला इन्होने जिन मन्दिर के दर्शन किये । देशभूषण एवं कुलभूषण जैसे महामुनियो को आहार देने में कभी पीछे नहीं रहे । वे अनेक विद्याओं के धारी हैं ।

राम जीवन के अन्तिम समय मे दीक्षा लेते हैं तथा घोर तपस्या करते हैं ।

वे जब आहार के निमित्त जाते है तो लोग द्वारापेक्षण करते हैं और उनको आहार देने मे अपना अहोभाग्य समझते हैं।

आतम ध्यान करे रामचन्द्र, वाणी सुनत होई आनन्द।
इनके गुण अति अगम अपार, राम नाम त्रिभुवन आधार ॥५५६६॥
रसना कोटिक करे बखान, उनके गुण का अन्त न आन।
इन्द्र धरणेन्द्र जो अस्तुति करे, ते नही वोड अन्त निखरे ॥५५६७॥

राम को केवल ज्ञान होता है और निर्वाण प्राप्त करते हैं।

२ लक्ष्मण

राम के लघु भ्राता है लेकिन आठवें नारायण है। छाया की तरह राम की सेवा मे रहते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक वे अपने बडे भाई का कभी साथ नही छोडते है। यद्यपि वे नारायण हैं, शक्तिशाली हैं, अनेक विद्याओ के अधिपति है लेकिन अपने बडे भाई को देवता तुल्य मानते हैं और उनकी सेवा करने मे ही अपने जीवन की सार्थकता समझते हैं। वे चक्रधारी है। रावण के चलाए हुए चक्र को वे ग्रहण करते हैं और उसी चक्र से रावण का सिर काट देते हैं लेकिन इसका उन्हे किञ्चित् भी अभिमान नही है लेकिन शत्रुओ के लिये वे यम के समान है। लक्ष्मण की मृत्यु देखकर राम विलाप ही नही करते किन्तु अपने भाई का मृतक शरीर लिये फिरते है।

रामचन्द्र देखे निरताइ, पीत वरण देखै सब काइ।
किह कारण रूठा इह भ्रात, मुखसो कबहु न बोलै बात ॥५४४२॥
अन्य दिवस मोहि आवत देखि, आदर करता पटाभिषेक।
मेरे साथ बहुत दुख सहे, दण्डक वन माही जब हम रहे ॥५४४३॥
रावण मारे मेरे काज, रघुवसी की राखी लाज।
तुम बिन कैसे जीउ आप, कैसे इह मेटो सताप ॥५४४४॥

३. सीता

जनक सुता सीता राम की आदर्श पत्नी है। वह अपने शील के लिये सर्वत्र प्रसिद्ध है। वह भारतीय सस्कृति की जीती जागती मूर्ति है। पति की अनुगामिनी है तथा उनकी आज्ञा पालन ही उनके जीवन की उपलब्धि है। बनवास मे वह उनकी छाया की तरह सेवा करती है। अपहरण के पश्चात् वह रावण की अशोक वाटिका मे रहती है। रावण उसे फुसलाने का भरसक प्रयत्न करता है लेकिन उसके पतिव्रत के कारण किसी की नही चलती। वह हनुमान की बातो पर तब तक विश्वास नहीं करती जब तक वह स्वय आश्वस्त नहीं हो जाती।

सीता कहै सुणु हणुमान, तुम अन राम कद की पहचान।
मैं तुमकू नही देख्या सुण्या, किस विध उणसो सनबध बण्या।

तनु के कारण आये लंक, मन में कछु मत आणी संक ।।३०६८।।
ब्यौरा सूं समझाओ बात, मिटै संदेह सुणि विरतांत ।
लक्ष्मण तणी कहो कुसलात, छाप एह पाई किण भांति ।।३०६९।।

सीता को राम वन मे छुड़ा देते हैं और अपने भाग्य भरोसे जीने को मजबूर करते हैं फिर भी सीता अपने ही भाग्य को कोसती है और राम को कभी दोष नहीं देती ।

ऐसा कर्म उदय हुआ आय, वे सुख खोसि भेजी इस ठाय ।
कै मैं बच्छ बिछोहा गाय, कै मैं बाल बिछोह माय ।
कै सरवर नै बिछोहा हंस, कै परबोनीका राख्या अंस ।।४५६७।।

राम सीता की अग्नि परीक्षा लेते हैं और उसमे वह खरी उतरती है । वास्तव मे विश्व मे यही एकमात्र उदाहरण है—

पचनाम हिरदै संभाल, जिन बीसौं सुमरे तिहकाल ।
सरव भूषण को करी नमस्कार, मन वच काय सत रहै हमार ।।४६२५।।
अगनि मांझ तै जो ऊबरुं झूठ कहै तो त्रिणां परिजलूं ।
पच नाम पढि चिता मै पड़ी, सीतल भई अगनि तिह घड़ी ।।४६२६।।

४. रावण

रावण प्रति नारायण है । वह बाल्य अवस्था से ही शूरवीर एवं युद्धप्रिय है । कुंभकर्ण एवं विभीषण उसके लघु भ्राता हैं तथा चन्द्रनखा उसकी बहिन है । जब उसे मालूम पड़ता है कि पहिले उसके पिता लंका के राजा थे जो उनसे छीन ली गयी है तो माता को अपना पौरुष दिखलाता है और फिर विद्याएं सिद्ध करने बैठ जाता है और एक साथ ग्यारहसै विद्याए प्राप्त करने मे सफलता प्राप्त करता है ।

दसानन ग्यारहसै विद्या लई, जिनके गुण का पार न कही ।२३४/७५

विद्याए सिद्ध करने के पश्चात् वह सहज ही लका पर विजय प्राप्त कर लेता है । उसके दस सिर एवं बीस भुजाए हैं । वह महान् बलवान है जिसे देखते ही बड़े-बड़े योद्धाओ के प्राण सूख जाते हैं । लेकिन वह जिनेन्द्र का भक्त है । जिन पूजा में उसका पूरा विश्वास है । युद्ध के समय भी वह पूजा करना नहीं छोड़ता ।

श्री जिन धरम प्रसाद, वृद्धि भई परिवार की ।
पायो लंका राज, राक्षसबंसी जग तिलक ।।४६५।।

रावण इन्द्र पर विजय प्राप्त करता है तथा अर्धचक्री बन कर समस्त पृथ्वी पर राज्य करता है । वह व्रत नियमों का पालन करता है और उन्हीं के नियमों के पालन में उसमें अपार शक्ति उत्पन्न होती है । वह अनन्तवीर्य मुनि के पास निम्न प्रकार व्रत पालन करने का निश्चय लेता है—

एक भांति व्रत पालौ सही, जे नारी मुझ इच्छे नहीं।
ताको सील न खडउ जाई, इहै वरत मुख बोलवं राई ॥१०६३१॥

रावण जीवन मे सीता हरण जैसी एक ही गल्ती करता है लेकिन इस एक ही गल्ती ने उसकी सारी कीर्ति धो डाली और वह सदा के लिए कलंकित बन गया। लेकिन हरण के उपरान्त भी वह उससे दूर से ही बात करता है। स्पर्श तक नही करता क्योंकि स्पर्श करने से सतित्व भंग होने का डर है। सीता को वापिस करने मे उसे अपयश का डर लगता है इसके अतिरिक्त वह अपनी सामर्थ्य के सामने औरो को तुच्छ समझता है।

मेरा बल है प्रगट तिहू लोक, तू काई चितवे मन सोक।
कहा राम है भूमिगोचरी, जिसका भय तू चित्त मे धरी।
उनकी सेना दहबट करु, राम है बाधि बंदि मैं धरु।
जे मै आणी सीता नारि, फेर सकू कैसे इणबार ॥३६४०॥

लेकिन राम के समक्ष रावण का पौरुष समाप्त हो जाता है। उसका चक्र उसके हाथ से छूट कर लक्ष्मण के हाथ चला जाता है और उसकी इहलीला समाप्त हो जाती है अनेक विद्याये भी उसका साथ नही देती।

५. हनुमान—

हनुमान वानर वंशी विद्याधर है। उसके पिता पवनजय एव माता अंजना का चरित्र लोक मे प्रसिद्ध है। हनुमान प्रारम्भ मे ही वीरता के धनी है पहिले वह रावण का साथ देते है लेकिन राम मिलन के पश्चात् वह रावण का विरोधी बन जाते है। हनुमान राम का सन्देश लेकर लंका मे जाता है। सीता से भेंट करता है। राम के समाचार कहता है। वह पकडा जाता है और रावण के समक्ष उपस्थित होता है। लेकिन अपने विद्याबल से मुक्त होकर लंका का दाह करता है। राम लंका पर आक्रमण करते है तो वह सेनापति के रूप मे अगली पंक्ति मे रहते है। लक्ष्मण के मूर्छित होने पर वह अयोध्या जाकर विशल्या को लाते हैं। जीवन के अन्त तक वह राम के साथ रहते है तथा अन्त मे तपस्या करते हुए मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त करते है। हनुमान का जीवन जैन साहित्य मे बहुत लोकप्रिय रहा है इसीलिए सभी भाषाओं मे उनके जीवन के सम्बन्ध मे कितनी ही कृतिया लिखी गयी है।

पद्मपुराण का सामाजिक जीवन—

पद्मपुराण में देव, विद्याधर, भूमिगोचरी, म्लेच्छ जाति के प्राणियो का वर्णन आता है और इन्ही में से पुराण के प्रमुख पात्र बनते हैं :

देव—देवगति के धारक देव स्वर्ग मे रहने वाले होते है। कभी वे तीर्थंकरो के पंच कल्याणको में आते हैं तो कभी युद्ध भूमि में वृष्टि करते हैं। यक्ष एव यक्षिणी देव जाति मे ही गिनी जाती है। देवो के विक्रिया ऋद्धि होती है जिससे वे अपना कुछ भी रूप बना सकते है।

विद्याधर—मनुष्य जाति में ये विद्याधर विशेष जाति के होते हैं जो आकाशचारी होते हैं। विमानों के द्वारा ये आकाश में चलते हैं। अंजना, पवनंजय, हनुमान सभी विद्याधर जाति के मनुष्य थे। इनको विद्यायें स्वतः ही प्राप्त हो जाती है। विद्याओं के धारक होने के कारण इन्हें विद्याधर कहा जाता है। भरत की राजसभा मे विद्याधर नरेश भी थे। अंजना को पुत्र के साथ विद्याधर नगर ले जाया गया था।

अंजनी मति बिवाण बैठाई, बसंतमाला सग लई चढाइ।
विद्याधर ले निजपुर चल्या, सुगन मुहूरत साध्या भला।
बैठा बिवाण चले आकास, देख्या रवि बालक आकाश ॥१३२६॥

भूमिगोचरी—भूमिगोचरी का अर्थ मनुष्यों से है जो केवल भूमि पर ही चलते है। राम, सीता, लक्ष्मण, जनक, दशरथ आदि सभी भूमिगोचरी कहलाते थे। रावण अपनी शक्ति के सामने भूमिगोचरियों की शक्ति को कुछ नहीं समझता था।

म्लेच्छ—म्लेच्छ खण्ड मे रहने वालो को म्लेच्छ कहा जाता था। रावण का प्रदेश म्लेच्छ खण्ड मे गिना जाता था। ये म्लेच्छ बडी दुष्ट प्रकृति के होते थे और सत्पुरुषो को तंग किया करते थे। रावण यद्यपि राक्षस वंशी था लेकिन उसकी गिनती भी म्लेच्छो मे आती थी ये अतिशय शक्तिशाली होते थे। राजा जनक ने दशरथ से म्लेच्छो से छुटकारा पाने के लिए ही राम लक्ष्मण को आमन्त्रित किया था।

म्लेच्छ मोहि घेरया है आय, थाणा मेरा दिया उठाय।
पीड़ा परजा कुं दे हैं घनी, देवल ढाहि पउ तिहां हणी
साधा कू देहै उपसर्ग, जिसकू तिसकूं मारेख इग ॥१८००॥

विवाह वर्णन

पुराण युग मे पति पत्नि के रूप मे रहने के लिए विवाह बन्धन आवश्यक माना जाता था। पद्मपुराण मे विवाह के दो रूप सामने आते है एक स्वयवर द्वारा, दूसरा सप्तपदी द्वारा बारात लेकर कन्या के पिता के घर जाकर। दोनो प्रकार के विवाह जन समाज द्वारा मान्य थे। अमरप्रभ विवाह के लिए बारात लेकर गये थे। नगर के पास बारात आने पर अगवानी की गयी थी (४८/६७) बारात ने जनवासा किया था। विवाह में कपड़े, गहने, हाथी एव घोडे दिये गये थे। बारात को जीमनवार देकर सन्मान किया था।

श्रीमाला का स्वयवर रखा गया था। कन्या ने अपने पसन्द के वर के गले मे माला पहिनायी थी। रावण ने शुभ मुहूर्त मे मन्दोदरी के साथ विवाह किया था। (७४/२८८) सीता ने स्वयवर मे राम के गले में माला डाली थी।

जीमनवार

विवाह लगन के पश्चात् विशाल रूप में जीमनवार होता था। पूरे नगर/गांव को जीमनवार दी जाती थी। सीता के स्वयंवर के पश्चात् एक बहुत बड़ी जीमनवार की गयी थी। सोने के थालो में खाना, चांदी के कटोरे मे दूध पीना उस समय साधारण बात थी। मिष्ठानो का विवरण पढ़ने योग्य है—

फीणा फीणी ग्ररु बरफी स्वेत, घेवर लाडू पुरुस्या हेत।
खुरमे मीरा पूरी घनी, बहुत सुवास तनोकी बनी ॥१६४१॥
घोल बड़े व्यजन बहु भाँति, हरे जरद बहु गणे न जात।
भात दाल ग्रतिग्रत सुवास सिखरण का दौना धरि पाति ॥
तामे बूरा लायची लोग, मेवा मेल्या तिहां मोहनभोग।
मीठा मिरच जीरो का मिल्या, लूण सघातै तिहां घिल्यां ॥१६४३॥

जीमने के पश्चात् पान, लौग, केशर, जावत्री दी जाती थी। विभीषण ने जब राम के स्वागत में विविध पक्वान्न बनाये थे लेकिन उनमें भात दाल दही दूध ग्रादि की रसोई प्रमुख थी—

बहु पकवान ग्रर व्यंजन घने, भात दाल सामग्री मिले।
कनकतवाई सोवन थाल, बैठा जिमै सब भूपाल ॥३६२६॥
निरमल जल सौं भारी भरी, पीवैं भूपति मानैं रली।
दूध दही जीमैं सब भूप, षट्रस व्यजन बर्णं ग्रनूप ॥३६३०॥

स्वप्न दर्शन और स्वप्न फल—

स्वप्न दर्शन भावी घटना के सूचक होते हैं। तीर्थंकर की माता को जो सोलह स्वप्न ग्राते हैं उनसे माता के उदर से तीर्थंकर पुत्र जन्म के साथ उसके दूसरे लक्षण भी प्रकट होने लगते हैं।

होय पुत्र फल मन ग्रानन्द, जानहूं पूरनवासी चन्द।
सुर नर इन्द्र करेगे सेव, तीन लोक के दानव देव।६/७७।
भव सागर का तोडै जाल, धर्म सरीर धर्म प्रतिपाल।
विद्याधर नृपति पसुपती, इनमें बहोत चढावे रती ॥७८॥

राजा श्रेणिक को पद्मपुराण के कथानक के प्रति ग्राश्चर्य एव जिज्ञासा स्वप्न मे ही प्रतिभाषित हो गयी थी जिसका समाधान भगवान महावीर की दिव्यध्वनि द्वारा हो सका था (१२/१६८-१७८)। मरुदेवी को भी सोलह स्वप्न ग्राये थे जिनका फल तीर्थंकर ऋषभदेव के रूप मे पुत्र उत्पन्न होना था। कैकेयी ने पुत्र जन्म के पूर्व तीन स्वप्न देखे थे—

प्रथम सिंघ गर्जा रव करै, हस्ती हर्ष बहुत मन धरै।
दूजे मंगल देख्या बली, सरोवर मे वह करता रली ॥७१/१८०॥

कमल उखारि लिया मुख मांहि, मानू मेरे मन्दिर जांहि ।
तीजे देख्यो पूरण चन्द्र, सुपने देख भया आनन्द ।।७१/१८१।।

इसी तरह लवकुश होने के पूर्व सीता ने भी स्वप्न में निम्न प्रकार देखा था—

रात पाछली घटिका च्यार, सुपिनां निश पाई तिह बार ।
दोई केहरी गर्जत देखे, सायर जल निर्मल पेखे ।।४४८५।।
देव विमाण आवता जाणि, जाणुं मुख में धसैं आण ।
भए प्रभात जागण के बेर, गावैं गुणीजन मधुरी टेर ।।४४८६।।

उसी तरह राम की माता अपराजिता एवं लक्ष्मण की माता सुमित्रा ने भी स्वप्न देखे थे जिनका फल राम और लक्ष्मण जैसे महापुरुष पुत्र के रूप में उत्पन्न होना था ।

शकुन एवं शकुन फल

स्वप्न स्वयं व्यक्ति को आते है जबकि शकुन अन्यत्र होते हैं जो शुभ शकुन एवं अपशकुन दोनों तरह के होते हैं । जैसे ही अयोध्या में राम और लक्ष्मण का जन्म होता है रावण के यहां अपशकुन होते है—

रावण के घर उलकापात, बिजली परी कांगिर ढह जात ।
रात दिवस रोवैं मजार, कूकर रोवैं बारम्बार ।।१७११।।
मंगल चारि सुपने मांझि, बोलै काग होइ जब सांझ ।
उल्लू बोलै दिन तिहां घणे, ऐसी चिंता मन रावण तणे ।।१७१२।।

इसी तरह युद्ध के अन्तिम दिन जब रावण आयुधशाला में शस्त्र लेने पहुँचता है तो उसे फिर कुछ अपशकुन होते हैं जिससे उसको बडी चिन्ता होती है ।

रावण आवधसाला चल्या, तिहां सुगन खोट सहुँ मिल्या ।
छड सो छत्र पड्यो भूमि, टूटी धुरी आया रथ झूमि ।।३६२०।।
आगैं होइ निकल्या मांजार, स्वान कान झाड्या तिन बार ।
खोट सुगन रावण को भये, मंदोदरी सोचै निज हिये ।।३६२१।।

राम द्वारा गर्भवती सीता को वन में एकाकी छोड़ने से पूर्व उसकी भी दाहिनी आंख फड़कने लगी थी तब उसने निम्न प्रकार विचार भी किया था—

दक्षण आंखि फरकै सिया, पश्चाताप मन मैं करै सिया ।
करम उदै कन बेहड़ फिरी, वन मांहि ते रावण अपहरी ।।४५०५।।

युद्ध वर्णन

पद्मपुराण में युद्धों का वर्णन विस्तृत रूप से हुआ है । यह युद्ध राम रावण के मध्य होने वाला तो लोक चर्चित है लेकिन भरत बाहुबली युद्ध, माली द्वारा लंका पर आक्रमण, वैश्रवन राजा द्वारा युद्ध, इन्द्र और रावण के मध्य युद्ध वर्णन भी

पठनीय है। ऐसा लगता है वह युग भी युद्धों का युग था और बिना हार जीत के कोई समस्या नहीं सुलझती थी। लेकिन भरत बाहुबली युद्ध दोनो भाईयों के मध्य होता है इसमें सेना तो खडी-खडी तमाशा देखती रहती है व्यर्थ के खून बहाने के यह अच्छी चाल थी। इन युद्धों में नेजा, बरछी, धनुष, तलवार, चक्र, गदा जैसे हथियारो के अतिरिक्त अग्निबाण, मेघबाण, धुंआबाण, अंधकार बाण, प्रकाश बाण जैसे हथियारो का प्रयोग होता है। युद्ध में नागपासनी विद्या, शक्तिबाण जैसी विद्याओं का भी खुलकर प्रयोग किया जाता था। रावण के अकेले के पास ग्यारह सौ विद्याए थी और बहुरूपणी विद्या उसने बाद में प्राप्त की थी। कभी-कभी बडे भयंकर युद्ध होते थे जिनमें जन हानि बहुत हुआ करती थी। ऐसे ही एक युद्ध का वर्णन देखिये—

> परबत मुंड मुजा का भया, पडी लोथ पग जाई न दिया।
> सोनत नदी बहै तिहां लोथ, हाथी घोड रथ सूर बहोत ।।३७३१।।
> जैसे मगर मच्छ जल तिरै, ग्रैसे लोथ रकत में फिरै।
> जेता रण झूझा दोउ सेन, तिनका कहि न सकै कोइ बैन ।।३७३२।।

रावण को नलकूबड से युद्ध करने में विमान से गोलियां, गोले बरसाना पडा था। चार योजन (कोश) तक गोलों की मार होती थी। कवि सभाचन्द के समय मे तोप और गोलो से युद्ध होने लगा था। इसलिये उसने इस युद्ध में भी उनका वर्णन कर दिया जो तत्कालीन युद्ध कौशल का परिचायक है। युद्ध में विमानो का प्रयोग होता था। विद्याधर तो विमान से ही आते जाते थे। रावण का पुष्पक विमान का नाम तो सर्वत्र प्रसिद्ध है।

नगरों का वर्णन

पद्मपुराण मे अनेक नगरो का उल्लेख आया है। इनमे से कुछ पौराणिक हैं तथा कुछ ऐतिहासिक। वैसे सभी राजाओ के अपने-अपने नगर थे जहां से वे अपने देश का शासन करते थे। सर्वप्रथम कवि ने राजगृही नगरी का वर्णन किया है जहां सात मन्जिले महल थे जिनमें भित्ति चित्रो की भरमार थी। चौडे-चौडे बाजार एव चौपड थी। नगर के चारो ओर से चौडी एवं गहरी खाई थी यही नहीं नगर का व्यापार भी खूब तगडा था। जहा सराफी, वस्त्र व्यवसाय, लेन-देन आदि होता रहता था।

> ऊंचे मन्दिर हैं सत खिने, सबते सरस राय के बने
> बसै सघन दीसै नहीं मग, मिले चित्र जिम भले सुरग ।।
> उज्जल वरण धवल हर किये, छत्री कलस कनक के दिये ।।१/३७।।

\+ + + +

वहां सराफ सराफी करै, बोलै सति झूठ परिहरै।
कसै कसौटी परखै दाम, लेवा देई सहज विश्राम ।।

कुंडलपुर नगर तो स्वर्ग के समान था जहां न कोई दुखी व्यक्ति था और न दरिद्रता से घिरा हुआ। महलों के पास बाग बगीचे बने हुए थे। यही नहीं झरनों मे जल भी बहता रहता था।

कुंडलपुर सिद्धारथ राव, महापुनीत जगत मैं नाउ।
सोभा नगर ना जाइ गिनी, सुरगपुरी की सोभा बनी ।।२/५६।।
दुःखी दलिद्रि न कोई दीन, पंडित गुनी सकल परबीन।
हाट बाजार चौहटे बने, सोभा सकल कहां लौ भनें ।।५/६०।।

बाहुबली की राजधानी पोदनपुर की सोभा तो और भी निराली थी जहां सभी मकान समान थे। घरो मे रहने वाली स्त्रिया अप्सराओ से कम नही लगती थी। बडी कठिनता से भरत के वकील को बाहुबली का राजमहल मिला था।

ऊचे मन्दिर सब इकसार, ढूंढता पहुचा राजदरबार ।।३८४/८७।।
घर-घर नारी जाणि अपछरा, राजमहल सब सेती खरा ।।

इसी तरह मिथला नगरी, उज्जयिनी, महेन्द्रपुर नगर,[1] लंका,[2] अयोध्या[3] आदि का पद्मपुराण मे वर्णन आया है वह पढने योग्य है।

महावीरवाणी

पद्मपुराण मे यत्र तत्र तीर्थंकरो के मुख से एव मुनियों के द्वारा धार्मिक उपदेश दिया गया है। जीवन पालने के नियम बताए गए हैं तथा चरित्र-निर्माण के कुछ सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये है इसलिए पद्मपुराण केवल कथानक मात्र न रहकर जीवन-निर्माण का ग्रन्थ भी बन गया है। सामान्य व्यक्ति के लिए निम्न क्रियाओ को आवश्यक बतलाया गया है—

तिहुं काल सामायक करै, सात बिसन आठौं मद हरे।
सोलहकारन का व्रत धरै, दया धर्म दस विध बिस्तरे ।।१०/१३७।।
च्यार दान दे वित्त समान, औषद अभय अहार समान।
सास्त्र दिया पावै बहु ग्यान, बिनयवत होई तजि अभिराम ।।१०/१३८।।

कवि ने दान पर बहुत जोर दिया है तथा धन होने पर भी दान नही देने को अपयश एवं पापबंध का कारण बतलाया है—

---

१. देखिये पद्य सख्या २९८३
२. ,, ,, ३९०५
३. ,, ,, ४०६२

देइ चउविध दान, अर्थ पाय धर्महि करै ।
ते पावै निरवान, जस प्रगटै तिहुं लोक मे ।।११/१५३।।
चउपइ—धन पाया कछु पुन्य न किया, अपजस पोट अपने सिर लिया ।
आपै खाय न खुवावे और, सदा बहै चिंता की ढोर ।।१५४।।
जोडि द्रव्य धरती तल दियो, कैले काहू ने सौंपियो ।
कै वह धन लेवै हर चोर, कै खोया जुवा की ठौर ।।१५६।।
कै वह सात विसन सो गया, कै रिए दिया तिहा थकी रह्या ।
कैइ राजि नें लीया दण्ड, किरपन भया जगत मे भड ।।१५७।।

ऐसे लगता है कि कवि के समय मे रात्रि भोजन त्याग का नियम कुछ शिथिल हो गया था तथा पानी को छानकर पीने की प्रवृत्ति भी कुछ कम हो रही थी। इसलिए इन दोनो नियमो को दृढता से पालन करने पर जोर दिया है तथा नियमो को नहीं पालन करने वाले की खूब भर्त्सना की गयी है।

भोजन रयरए तजै तिहुं बात, ते कहीए मानुस की जात ।
जे नर रयण भोजन खाहि, राक्यस सम जाणिये ताहि ।

दोहा

जे नर निसी भोजन करै, कंद मूल फल खाइ ।
ते चिहुंगति भ्रमते फिरै, मोक्षपथ तिहा नाहि ।।१०५१।।

इसी तरह बिना छना पानी सेवन करने का निषेध किया है—
अणछाण्या जो पीवै नीर, करै स्नान मजन सरीर ।
कदमूलादिक सब फल खाय, सत सयम पाल्यो नही जाय ।।१४३।।
ऐसे जे सेवे मिथ्यात्व, ते नर मर करि नरके जात ।।

लेकिन भूखे को भोजन देने एव प्यासे को पानी पिलाने मे अपार पुण्य बतलाया है तथा सरल चित्त रख कर दूसरे के दु ख को दूर करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

भूखा भोजन प्यासा नीर, सरल चित्त जानें पर पीर ।
पुन्नि संयोग लहै गति देव, नरपति खगपति उत्तम कुल भेव ।।१६१।।११

पराधीनता

कवि ने पराधीनता को बहुत बुरा बतलाया है।

पराधीन कछु बोल न सके, जिहा भेजे तिहा पल नही टिकै ।
जैसी आज्ञा सोई होय, ताको वरज सकै नही कोइ ।।४५८७।।

सुभाषित एवं सूक्तियां

पुराण मे विविध कथानक आये हैं इन कथानको के प्रसग में कही कहीं कवि ने बहुत सुन्दर सुभाषित एव सूक्तिया कही है जो सदैव मनन चिन्तन एव जीवन मे

उतारने योग्य है। इन सुभाषितों से काव्य सौष्ठव बढा है तथा वर्णन में मधुरता आयी है। कुछ उदाहरण निम्न प्रकार है—

(१) किसकी पृथ्वी किसका राज, मौ सम बहुत कर गये राज (३०/४२३)
ये शब्द भरत ने ध्यानस्थ बाहुबली को कहे थे जिनके हृदय में एक शल्य था कि वह भरत की पृथ्वी पर तपस्या कर रहा है।

(२) भागे को पीछा न कीजे तात (६५/८६)
युद्ध में जान बचाकर भागने वाले का पीछा नहीं करना चाहिए।

(३) ऐसा यह संसार स्वरूप, नटवत भेष करै बहुरूप (६६/५५५)
संसार की वास्तविक स्थिति बतलायी है जिसमें यह प्राणी नट के समान विचित्र रूप धारण करता रहता है।

(४) जो नारी परपुरुष को रमै, सो नारी नीची गति भ्रमै (११८/८१६)

(५) ज्यौं पकडे तीतर नै बाज (१२४/८६३)

(६) सोग बिजोग रहट की घडी, कबही रीती कबही भरी (१७२/१५३१)

(७) होणहार टार्यो किम टरै (१८१/१६६१)

(८) होणहार कैसे टलै, बहुविध करै उपाय।
अणहोणी होणी नहीं, इह निमित्त का भाव ।।१८१/१६६२

(९) बेटी किसके घरै समाय (२०९/२०३५)

(१०) दिन सेती ज्यु भोजन खाय (२२३/२२३४)

(११) जती सन्यासी बिप्र अतीव, बाल वृद्ध नारी पसु जीव।
पसु अपाहज मत मारो भूल, इनकी हत्या है अघमूल ।।२२६/२३२१

इस प्रकार और भी बहुत सी सूक्तियां एवं सुभाषित पुराण में से एकत्रित की जा सकती हैं वास्तव में ने कवि पुराण काव्य को सरस एव रोचक तथा प्रभावी बनाने के लिए इस प्रकार की रचना का अच्छा सहारा लिया है।

पाण्डुलिपि परिचय—

पद्मपुराण की एक मात्र पाण्डुलिपि डिग्गी (राजस्थान) के दि० जैन मन्दिर में संग्रहीत हैं। इस पाण्डुलिपि में ११८ पत्र हैं जो १२।। × ९ इंच साइज के हैं। प्रत्येक पृष्ठ मे २८ पक्तियां हैं। पाण्डुलिपि संवत् १८५६ मिति अषाढ़ बदि १४ सोमवार की लिखी हुई है। लिपिकार प्रशस्ति निम्न प्रकार से है—

इति श्री पद्मपुराण सभाचन्द्र कृत सपूरन। संवत १८ सै ५६ मिति आषाढ बदि १४ वार सोमवासरे लिखितं पण्डित मोतीराम लिखायत साहजी श्री गंगाराम जी की बहु जाति बोरावा मांडलगढ़ की उतराव अठाई का व्रत मैं पण्डित मोतीरामेन दीयो। ग्रथ संख्या ११ हजार रुपया ७ दीया निजराना का शुभ भवतु।। पाण्डुलिपि की प्राप्ति श्री माणकचन्द जी सेठी डिग्गी के माध्यम से हुई है। वैसे

मैं एवं श्री हरकचन्दजी चोधरी भूतपूर्व समाज कल्याण अधिकारी राजस्थान अगस्त ८२ मे डिग्गी के शास्त्र भण्डार की खोज मे गये थे तब मुझे यह पाण्डुलिपि ग्रन्थो की सूची बनाते समय प्राप्त हुई थी। पद्मपुराण की अभी तक यही एक मात्र पाण्डुलिपि प्राप्त हुई है। हो सकता है राजस्थान अथवा देहली आदि के और भी शास्त्र भण्डारो मे पाण्डुलिपि मिल जावे। मै श्री हरकचन्दजी चोधरी का भी आभारी हूँ जिन्होने दो दिन तक ठहर कर ग्रन्थो की सूची बनाने मे सहयोग दिया था।

पद्मपुराण का सार—

चौबीस तीर्थंकरो के मगलमय स्तवन से पद्मपुराण प्रारम्भ होता है। इसके पश्चात् जिनवाणी के स्वरूप का कथन एव राम नाम के महात्म्य का वर्णन किया गया है। कवि ने अपने पूर्ववर्त्ती आचार्य रविषेण के स्मरण के पश्चात् राजगृही नगरी की सुन्दरता, कुण्डलपुर के राजा सिद्धार्थ के यशोगान के साथ ही त्रिशला माता द्वारा सोलह स्वप्न, भगवान महावीर का जन्म, तप, कैवल्य एव समवसरण का वर्णन मिलता है। महाराजा श्रेणिक रघुवश की कथा जानने की इच्छा प्रकट करते हैं। भगवान महावीर की दिव्य ध्वनि खिरती है और गौतम गणधर द्वारा जिनवाणी के अनुसार रघुवश की कथा का वर्णन किया जाता है।

गौतम गणधर रामकथा कहने के पूर्व भोगभूमि एवं चोदह कुलकरो के उल्लख के पश्चात् प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पिता महाराजा नाभिराय एव महारानी मरुदेवी के गर्भ से ऋषभदेव का जन्म, देवो द्वारा जन्मोत्सव का आयोजन, ऋषभदेव का बाल्यकाल, शारीरिक सुन्दरता, विवाह व सन्तानोत्पत्ति, राज्य प्राप्ति व उनके द्वारा तीन वर्णो (क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) की स्थापना का वर्णन करते है। दीर्घकाल तक राज्य सुख भोगने के पश्चात् ऋषभदेव तपस्वी बनकर कैवल्य प्राप्त करते है। धर्मोपदेश देते है और अन्त मे निर्वाण प्राप्त करते हैं। ऋषभदेव के १०१ पुत्र एव २ पुत्रिया होती है। भरत का दिग्विजय के पश्चात् अपने छोटे भाई बाहुबली से युद्ध होता है। युद्ध मे यद्यपि बाहुबली की विजय होती है लेकिन उन्हे वैराग्य हो जाता है। भरत सम्राट बनते हैं। भरत द्वारा ब्राह्मण वर्ग की स्थापना की जाती है और उन्हे "सबसे उत्तम बांभण भने" के रूप मे स्वीकार किया जाता है।

सम्राट भरत पर्याप्त समय तक राज्य सुख भोगते है और अन्त मे आदित-जस को राज्य भार सौंपकर स्वय वैराग्य धारण कर लेते है। इस कथानक मे विद्याधर वश का वर्णन एवं सत्यघोष की कथा कही गयी है। तृतीय कथानक मे अजितनाथ तीर्थकर के वर्णन के पश्चात् सगर की उत्पत्ति, उसके साठ हजार पुत्रो द्वारा कैलाश पर जाकर गगा को खोदना, धरणेन्द्र द्वारा भीम एव भागीरथ को छोडकर सभी पुत्रो को अपनी फुकार से भस्म करना, पिता द्वारा पुत्रो की मृत्यु पर दु:ख प्रकट करने के पश्चात् भागीरथ को राज्य सौंपकर स्वय जिन दीक्षा ले लेने

है इसी मे लका के राजा महाराक्षस एवं उसके पुत्र अमर राक्षस आदि का वर्णन भी आता है।

चतुर्थ कथानक में श्रेणिक द्वारा वानर वंश की कथा जानने की इच्छा, उसकी उत्पत्ति, मेघपुर नगर मे राजा अतेन्द्र अपने पुत्र श्रीकठ के साथ राज्य करता है। उसकी एक सुन्दर पुत्री को रत्नपुरी के राजा अपने पुत्र पद्मोत्तर के लिये मांगता है लेकिन उसे वह नही मिलती है। एक बार जब विद्याधर सुमेरू पर्वत पर जाता है तो पुष्पोत्तर की लडकी की सुन्दरता देख कर मुग्ध हो जाते है। पुष्पोत्तर श्रीकठ का पीछा करता हैं वह भाग कर लका चला जाता हैं। फिर पद्मावती से उसका विवाह हो जाता है। लका नरेश कीर्तिधवल श्रीकंठ को किंधपुर का राजा बना देता है। वहा वह वर्षों तक राज्य करता है। एक बार उसने अपने पूरे परिवार के साथ मानुषोत्तर पर्वत की यात्रा की तथा वहा देव बनकर नन्दीश्वर द्वीप की यात्रा करने की इच्छा प्रकट की फिर अपने पुत्र वज्रकंठ को राज्य भार सौपकर स्वय ने जिन दीक्षा धारण करली। श्रीकंठ राज्य करने लगा। एक बार उसने एक चारण ऋद्धि धारी मुनि से अपने पूर्व भव पूछे। पूर्व भव सुनने के पश्चात् उसे वैराग्य हो गया और अपने पुत्र को राज्य देकर स्वयं मुनि बन गया। इसके पश्चात् कितने ही राजा हुये। इसी परम्परा मे होने वाले अमरप्रभ राजा का गुणवती से विवाह हुआ। कवि ने बारात एव जीमनवार का अच्छा वर्णन किया है। अमरप्रभ श्रेयास तीर्थ कर के शासन काल मे हुए थे। इसके पश्चात् जब वासुपूज्य स्वामी का शासन काल आया तो तीन तीन सागर की लम्बी अवधि व्यतीत होने के पश्चात् अमरप्रभ का फिर जन्म होता है।

लका के राजा विद्युतवेग की श्रीचन्द पटरानी थी। एक बार वे दोनो जगल मे गये हुए थे तो एक बन्दर ने राणी के फूल की दे मारी। राजा ने बाण से बन्दर का वध कर दिया। वानर मरने के पूर्व मुनि के चरणो मे आ गिरा। इससे वह मर कर देव हो गया। देव ने मायामयी सेना बना कर विद्युतवेग पर चढ़ाई कर दी। लेकिन दोनो मे मित्रता हो गयी। आदितपुर की रानी वेगवती की पुत्री श्रीमाला का स्वयवर रचा गया। अस्ववेग ने श्रीमाला से गुप्त विवाह करके उसे विमान मे बैठाकर ले गया।

माली राजा ने लका पर चढ़ाई करके उसको ले लिया। वह लंका पर राज्य करने लगा। कुछ समय पश्चात् इन्द्रकुमार ने लंका पर चढाई करके और युद्ध के पश्चात् वह लका का स्वामी बन गया। माली मारा गया। सुमाली की पत्नी कैकसी ने तीन स्वप्न देखे। उसके तीन पुत्र उत्पन्न हुए जो रावण, कुंभकर्ण एवं बिभीषण कहलाये। उधर इन्द्र को रावण के जन्म लेते ही दुस्वप्न आने लगे। वह

चिन्तित हो गया। एक दिन रावण अपनी मां के साथ जा रहा था। तब उसने अपनी मां से राजा और उसके नगर के बारे मे पूछा। मां ने लंका के बारे में रावण को सब कुछ बता दिया। इससे रावण को बड़ा क्रोध आया और लंका जीतने का निश्चय किया। उसने मा के सामने ही अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। फिर तीनों भाईयो ने विद्या प्राप्ति के लिए तपस्या करना प्रारम्भ किया। यक्ष ने बहुत प्रकार के विघ्न उपस्थित किये। देवांगना का रूप धारण करके उन्हें अपने ध्यान से डिगाना चाहा लेकिन कोई भी अपनी साधना से नही डिगे। रावण ने एक साथ ग्यारह सौ विद्याएं प्राप्त कीं।

रावण ने विद्या प्राप्ति के पश्चात् पहिले मन्दोदरी से विवाह किया और फिर लका को वैश्रवन राजा से छीन ली। लका विजय के पूर्व दशानन को मन्दोदरी से इन्द्रजीत की प्राप्ति हुई। लका राक्षस वंसी रावण की हो गयी। रावण एक बार कैलाश पर जिन वन्दना के लिये गया। मार्ग मे उसे बालि मुनि तपस्या करते हुए मिले। रावण ने अपने विद्याबल द्वारा अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। तपस्या करते हुए बालि ने अपना अगूठा टेक दिया। रावण उसके भार को नहीं सह सका और चिल्लाने लगा। बालि मुनि को दया आयी तब कहीं जाकर रावण की प्राण रक्षा हो सकी। रावण ने बालि की स्तुति की तथा वैराग्य लेने की इच्छा प्रकट की। तभी धरणेन्द्र ने रावण को वृद्धावस्था मे साधु जीवन अपनाने की बात कही तथा रावण को एक शक्तिबाण देकर उसे और भी बलशाली बना दिया। इसके पश्चात् रावण ने सहस्ररश्मि राजा पर विजय प्राप्त की।

इसके पश्चात् वसु राजा की कथा आती है। नारद एव पर्वत के मध्य चर्चा छिड जाती है। पर्वत "अज्ञ किया बैकुंठा जाई" मे विश्वास करता है। नारद इस विचार का खण्डन करता है। 'अज' शब्द पर दोनो मे बहस होती है। वे वसु राजा के पास निर्णय के लिये जाते है। वसु राजा पर्वत की पक्ष लेकर अज शब्द का अर्थ बकरा बताता है। इस असत्य निर्णय से वह सिंहासन सहित नरक मे जाता है। पर्वत की जब चारो ओर से निन्दा होने लगी तो वह सन्यासी बन जाता है और राजा मारुत को यज्ञ करने का परामर्श देता है। जब रावण को यज्ञ का पता चलता है तो वह राजा मारुत एव सभी विप्रो को बांध लेता है लेकिन अन्त मे नारद दया करके उन्हे छुड़ा देते हैं।

रावण का एक विवाह कनकप्रभा से होता है। उसकी एक कन्या मधु का विवाह मथुरा के राजा हरिवाहन के पुत्र मधु के साथ होता है। रावण के कैलाश पर्वत पर जाने की सूचना पाकर इन्द्र ने नलकूबड़ राजा के भय से मुक्त करने की प्रार्थना की। रावण सहायता के लिए दौड़ा लेकिन नलकूबड ने गढ़ के किंवाड़

बन्द कर दिये। लेकिन रावण की वीरता एवं अजेयता को सुनकर नलकूबड़ की पत्नी उपारम्भा उस पर आसक्त हो गयी। उसने अपनी दूती को भेजा और सुदर्शन चक्र होने की बात कही। पहिले तो रावण परस्त्री से बात करने के लिए ही मना कर देता है लेकिन वह विद्या प्राप्ति के लोभ में रानी के पास चला जाता है और उससे विद्या प्राप्त कर लेता है और नलकूबड़ पर विजय प्राप्त करता है। नलकूबड इन्द्र की सहायता करता है। इन्द्र और रावण में भयंकर युद्ध होता है इन्द्र को अपने बल पौरुष पर गर्व है। रावण त्रिहुरथ पर सवार होकर लड़ता है तो इन्द्र हाथी पर लड़ता है। दोनो विभिन्न विद्याओं का उपयोग करते हैं। अन्त में दोनो मे मल्ल युद्ध होता है और उसमे रावण की विजय होती है। रावण इन्द्र को दण्ड देता है। इन्द्र के पिता सहस्रार द्वारा इन्द्र को छोड़ने की प्रार्थना करने पर रावण इन्द्र को छोड देता है इन्द्र को अपनी हार से बहुत पीड़ा होती है। इतने मे मुनिचन्द्र का वहाँ आगमन होता है अपने पूर्व भव का वृत्तान्त जानने के पश्चात् उसे वैराग्य हो जाता है और अन्त मे मुनि दीक्षा लेकर निर्वाण प्राप्त करते हैं।

धातकी द्वीप मे अनन्तवीर्य मुनि को कैवल्य होता है। देवता गण वहां वन्दना के लिए आते हैं। रावण भी वन्दना के लिए पहुँचता है। भगवान की वाणी खिरती है। छह द्रव्य, सात तत्त्व एव नव पदार्थों पर प्रवचन होता है। अणुव्रत, महाव्रत, दश धर्म आदि के पालन के साथ रात्रि भोजन-निषेध का भी उपदेश होता है। लोभदत्त सेठ की कथा भी कही जाती है जिसके अनुसार लोभदत्त नरक एव सेठ भद्रदत्त अपनी ईमानदारी से जगत मे सम्मान प्राप्त करता है। कुम्भकरण रावण आदि सभी व्रत ग्रहण करते हैं। रावण व्रत लेता है कि जो स्त्री उसको नही चाहेगी उसका वह शील कभी खण्डित नही करेगा।

राजा श्रेणिक ने इसके पश्चात् हनुमान के बारे मे जानना चाहा। भगवान की फिर दिव्यध्वनि खिरी और गौतम गणधर ने उसका वर्णन किया। आदित्पुर के राजा प्रहलाद एवं रानी केतुकी थे। उनके पुत्र का नाम पवनजय था। उधर बंसपुर देश के राजा महेन्द्र एव उसकी रानी हृदयवेगा थी। अन्जना उनकी पुत्री थी। अन्जना जब विवाह योग्य हुई तो उसके सम्बन्ध की बात चली। महेन्द्र के एक मत्री ने रावण का नाम सुझाया और उसके वैभव का वर्णन किया। दूसरे मन्त्री ने श्रीषेण राजा का नाम बताया। तीसरे मंत्री ने पवनंजय के लिए अनुशंसा की। राजा को पवनंजय का नाम पसन्द आया और प्रहलाद के सामने अंजना पवनंजय के सामने प्रशंसा की तो उससे उसका मन खट्टा हो गया। इससे अंजना को भी भारी दुःख हुआ फिर भी दोनों का विवाह हो गया।

उधर रत्नदीप के राजा के साथ रावण का युद्ध छिड़ गया। रावण ने

सहायतार्थ राजा प्रह्लाद को निमन्त्रण भेजा। पवनंजय ने युद्ध मे जाने का प्रस्ताव रखा और सेना लेकर वह रवाना हुआ। मार्ग मे उसे एक नदी के किनारे चकवा चकवी के विरह को देखकर अजना की याद आयी। वह सेना वहीं छोडकर एक रात्रि के लिए अजना से मिलने चला गया। दोनो में मिलन हुआ। अंजना गर्भवती हो गयी। जब पवनजय की माता को उसके गर्भ का मालूम पडा तो उस पर पुरुष के साथ गमन का दोष लगा कर उसे घर से निकाल दिया। अंजना रोती बिलखती अपने पिता के घर पहुँची लेकिन वहा भी उसे कोई आश्रय नहीं मिला।

कवि ने अंजना का चारो ओर से तिरस्कृत होने का रोमाञ्चकारी वर्णन किया है। इसे अपने पिता के यहा से भी "ढेला ईंट पत्थर की मार, नगर माहि तैं दई निकार" से तिरस्कृत होना पडा। अन्त मे अपनी दासी के साथ सघन एवं भयानक वन मे एक गुफा मे जाकर शरण ली। वहीं उसे एक ध्यानस्थ मुनि के दर्शन हुए। मुनि ने उसे पूर्व भव का स्मरण कराया तथा पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद दिया। उसी समय रत्नचूल राजा का हाथी की खोज मे वहा आना हुआ। अजना ने पुत्र को जन्म दिया लेकिन दुर्भाग्य से शिशु हनुमान विमान से गिर गया लेकिन हनुमान का कुछ भी नही बिगडा। यह घटना उसके भविष्य मे अतिशय शक्तिशाली होने का सकेत मात्र थी।

उधर पवनजय जब युद्ध से लौटा तब अजना को न पाकर बहुत दुःखी हुआ। इसके निष्कासन के समाचारो से वह पागल जैसे हो गया। वह तत्काल अंजना को ढूढने निकला। अजना के विरह मे उसकी दशा दयनीय हो जाती है लेकिन अन्त मे दोनो का मिलन हो जाता है और वे सुखपूर्वक रहने लगते हैं। एक बार वरुण ने रावण पर आक्रमण कर दिया। पवनजय की सहायता मागी गयी। इस बार स्वयं हनुमान रावण की सहायतार्थ जाते है। रावण हनुमान को देखकर बहुत प्रसन्न होता है। वरुण एवं हनुमान मे घनघोर युद्ध होता है। रावण वरुण को पकड लेता है। कुम्भकरण विजय के पश्चात् लूट मार मचाता है तो रावण उसकी चिन्ता करता है। वरुण को छोड दिया जाता है। इस युद्ध मे हनुमान की वीरता का सबको पता लग जाता है। हनुमान को सुग्रीव अपनी कन्या देता है तथा वे सब सुख से राज्य करते हैं।

20 वें तीर्थंकर मुनिसुव्रत नाथ का माता पद्मा के उदर से जन्म होता है। उनका जन्म कल्याणक देवो द्वारा मनाया जाता है। युवा होने पर उनका यशोमति से विवाह होता है। बहुत वर्षों तक राज्य सुख भोगने के पश्चात् बिजली गिरने की घटना को देखकर उन्हें वैराग्य हो जाता है। तपस्या के पश्चात् पहले कैवल्य होता है और एक लम्बे समय तक धर्मोपदेश देने के पश्चात् निर्वाण प्राप्त करते हैं। वृषभ

नाथ से लेकर मुनिसुव्रत तक हजारों राजा होते हैं। अयोध्या में वज्रबाहु, कीर्तिधर हिरण्यनाभ, नहुष, स्योदास एवं अरुण आदि एक के बाद दूसरे राजा होते हैं अरुण राजा के अनन्तरथ एवं दशरथ दो पुत्र होते हैं लेकिन अपने पिता के साथ अनन्तरथ द्वारा दीक्षा लेने के कारण दशरथ राजा बनते हैं। दशरथ के तीन रानियां थी—अपराजिता, कैकयी एवं सुमित्रा।

एक दिन रावण के यहां नारद ऋषि का आगमन हुआ। रावण द्वारा अपने मारने वाले का नाम जानना चाहा तो नारद ने दशरथ के पुत्र लक्ष्मण का नाम बताया तथा जनक की लड़की सीता का कारण बताया। रावण ने तत्काल दशरथ एवं जनक को मारने के लिए दूत भेजे लेकिन वे दूसरो को मार कर उनके सिर रावण के सामने रख दिये। रावण अपने आपको अमर समझने लगा।

कैकयी का विवाह स्वयंबर द्वारा हुआ था। स्वयंबर के पश्चात् कैकयी ने दशरथ का पूरा साथ दिया। दशरथ की विजय हुई। राजा दशरथ ने प्रसन्न होकर कैकयी से यथेच्छ वर मांगने के लिए कहा लेकिन रानी ने भविष्य के लिए सुरक्षित रख लिया। दशरथ सानन्द राज्य करने लगे। अपराजिता, के राम, सुमित्रा के लक्ष्मण एव कैकयी के भरत का जन्म हुआ। सुमात्रा के शत्रुघ्न पैदा हुए। इनके जन्म होते ही रावण के घर अपशकुन होने लगे। चारों भाई विभिन्न विद्यायें सीखने लगे।

जनक के घर सीता एव भामण्डल का जन्म हुआ। भामण्डल के पूर्व भव के वैर के कारण जन्म होते ही देवतागण उसे उठा ले गये और रथनुपुर राजा के जिन मन्दिर मे बैठा गये। सुदरसणा रानी के कोई सन्तान नही होने के कारण उसका लालन पालन उसी ने किया। जनक एव दशरथ दोनो ने भामण्डल की बहुत तलाश की लेकिन कही पता नही चला। एक बार जनक की नगरी मिथिला पर म्लेच्छ राजा ने आक्रमण कर दिया। जनक ने दशरथ से सहायता की याचना की। दशरथ के स्थान पर राम लक्ष्मण जनक की सहायता के लिये गये। उन्होने युद्ध मे म्लेच्छों की सेना को भगा दिया। इससे जनक ने राम को सीता देने की इच्छा प्रकट की। इसी समय नारद ऋषि भी राम का पौरुष देखने आये। उन्होंने सीता का रूप देखना चाहा तो सीता नारद को देखकर डर गयी। इससे नारद ने जनक को करारा उत्तर देना चाहा। वह रथनुपुर के विद्याधर राजा प्रभामंडल के पास गये और सीता के चित्र को उसे दिखाया। प्रभामंडल चित्र को देखते ही उस पर आसक्त हो गया। विवाह के लिये जनक के सामने प्रस्ताव रखा गया। स्वयबर रचने का निर्णय लिया गया। सीता का स्वयंबर हुआ और राम के साथ सीता का विवाह हो गया। विवाह के अवसर पर जो मिष्ठान्न बने कवि ने उनका बहुत सुन्दर वर्णन किया है। स्वयंबर

के अवसर पर जब राम ने धनुष खेंचा तो एक मेघ के समान गर्जना हुई, एक भूचाल सा आया। देवताओ ने आकाश से जय जयकार किया। इसी समय भरत का लोक सुन्दरी से विवाह हुआ। दशरथ, राम आदि परिवार के सभी सदस्य जब अयोध्या लौट आये तो सबने जिन पूजा की और गन्धोदक को सिर पर चढा लिया।

उधर भामण्डल को सीता स विवाह करने की प्रबल इच्छा हुई लेकिन जब उसने सीता के विवाह की बात सुनी तो अपनी सेना लेकर विदेह देश की ओर चला। वहा जाने पर भामण्डल को जाति स्मरण हो गया। वह सीता की याद मे मूच्छित हो गया। इधर सीताजी को भी अपने भाई की याद आने लगी। दशरथ परिवार सहित मुनि के पास गये और भामडल के बिछुडने का कारण पूछा। विस्तृत वृतान्त जानकर उन्हे वैराग्य हो गया। वे चिन्तन करने लगे

शुभ अशुभ का भाव ए, देखो समभि विचार।
सुपना का सा सुख ए, जात न लागै बार ॥२११२॥

दशरथ ने राम को राज्य देने का निश्चय किया। इतने मे ही कैकेयी ने राजसभा मे आकर भरत को राज्य देने का वर माग लिया। कैकयी की बात सुनकर दशरथ बहुत दुखी हुए लेकिन कोई उपाय नहीं था। भरत ने प्रारम्भ मे राज्य लेने का घोर विरोध किया लेकिन राम स्वेच्छा से राज्य को त्याग कर सीता एव लक्ष्मण के साथ वन की ओर चले गये और अयोध्या मे भरत राज्य करने लगे। दशरथ ने वैराग्य धारण कर लिया।

राम का वन गमन—

राम अपने भाई एव पत्नी सहित सर्वप्रथम उज्जयिनी पहुचे। वहा सिहोदर राजा राज्य करता था। लक्ष्मण ने सहज ही उस पर विजय प्राप्त करली और वे तीनो आगे बढे। एक बार सीता की प्यास बुझाने के लिए गए हुए लक्ष्मण को विद्याधर राजा मिला। उसने तीनो का बहुत सम्मान किया। आगे चलकर उन्होने रुद्रभूत राजा से बालखिल्य को छुडवाया। वे सब कूबडपुर आये। वहां सिहोदर एव वज्रकरण राजा भी मिल गये। वहा से तीनो आगे बढे। मार्ग मे एक विप्र के घर पानी पिया। लेकिन विप्र ने बहुत क्रोध किया। लक्ष्मण उसे मारने दौड़े लेकिन राम ने उन्हे शान्त कर दिया। फिर तीनो ने एक बस्ती मे जाकर मन्दिर मे विश्राम किया। मन्दिर का देवता राम से बहुत प्रसन्न हुआ। इनके लिये उसने मायामयी नगरी की रचना की। तीनो ने प्रथम चातुर्मास वहीं व्यतीत किया।

चातुर्मास के पश्चात् वे विजयवन मे गये। वहा के राजा पृथ्वीधर की पुत्री वनमाला लक्ष्मण पर आसक्त हो गयी और लक्ष्मण के नहीं मिलने पर अपघात करने लगी। लक्ष्मण ने प्रकट होकर उसे बहुत समझाया और अन्त मे पत्नी के रूप

मे उसे स्वीकार कर लिया। इसी बीच अनन्तवीर्य राजा ने अयोध्या पर आक्रमण कर दिया। भरत की रक्षा के लिए पृथ्वीधर आदि राजा आ गये। दोनों में भयानक युद्ध हुआ। युद्ध के पश्चात् अनन्तवीर्य ने वैराग्य धारण कर लिया और तपस्या करने लगा।

वहां से सुलोचना नगर के वन मे गये। क्षेमांजलपुर मे विश्राम किया। यहां जितपद्मा पर लक्ष्मण ने विजय प्राप्त की। उसके साथ विवाह कर लिया। उसे वहीं छोड़कर वे वंसस्थल नगर पहुचे। वहां के वन मे चार अजगर देवता के रूप मे थे। इसी वन में देसभूषण कुलभूषण मुनि पर आये उपसर्ग को दूर किया। उन्हें वहीं कैवल्य हो गया। फिर वे रामगिरि पहुंचे। यहां दो चारण ऋद्धि धारी मासोपवासी मुनियो को आहार दिया। मार्ग और भी मुनियो के उपसर्ग दूर किये। मुनियों देख कर वृक्ष की डाल पर बैठे हुये गृद्ध पक्षी को पूर्व भव का ज्ञान हो गया। उसने व्रत धारण कर लिया।

राम लक्ष्मण आगे चले। दंडक वन मे उन्होने रहने का निश्चय किया। दंडक वन की विशालता एव सुन्दरता का कवि ने अच्छा वर्णन किया है। इसी वन मे खरदूषण का पुत्र संबुक सूरजहास खड्ग प्राप्ति के लिए घोर साधना कर रहा था। लक्ष्मण को खड्ग की गन्ध आने पर वह भी वहा चला गया। लक्ष्मण को सूरजहास सहज ही प्राप्त हो गया। जब उसने सूरजहास के सामर्थ्य की परीक्षा लेना चाहा तो सबुक का सर कट गया जो १२ वर्ष से उसको प्राप्त करने के लिए तपस्या कर रहा था। वही पर लक्ष्मण को देवोपनीत वस्त्रो की प्राप्ति हुई। उधर खरदूषण की पत्नी एव सबुक की माता चन्द्रनखा घोर विलाप करती हुई लक्ष्मण के पास आयी। पहले उसने लक्ष्मण से विवाह करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन उसमे सफलता नहीं मिलने के कारण वह खरदूषण के पास चली गयी।

सबुक के मारे जाने से खरदूषण को बहुत दुःख हुआ। उसने राम लक्ष्मण से युद्ध करना चाहा लेकिन अपने ही मन्त्रियो द्वारा युद्ध की सलाह नहीं देने के कारण वह रावण के पास गया। रावण ने सीता का सौन्दर्य देखकर उसे उठा लाने की ठान ली। करणगुप्ति विद्या द्वारा उपाय बतलाने पर रावण ने बाण द्वारा अंधकार कर दिया। शंखनाद किया जिसको सुनकर राम सीता को अकेली छोड़ कर लक्ष्मण की सहायतार्थ चले गये। इसी बीच रावण ने सोता का हरण कर लिया। और उसे पुष्पक विमान मे बिठा कर लका ले गया। सीता को जटायु पक्षी ने बचाने का प्रयास किया लेकिन रावण ने पक्षी के पंख काट कर उसे जमीन पर गिरा दिया। सीता का हृदय विदारक विलाप सुनकर रावण को भी दुःख हुआ। उसने निश्चय किया कि जब तक सीता उसे स्वयं नही चाहेगी वह उसका स्पर्श नही करेगा। उधर

लक्ष्मण ने खरदूषण को युद्ध मे जीत लिया और सूरजहास से उसका सिर काट दिया।

सीता हरण के कारण राम अत्यधिक विलाप करने लगे। लक्ष्मण भी रोने लगे। विद्याधरो के राजा रत्नजटी को सीता की तलाश करने भेजा। वह रावण के पास गया। उसे भला बुरा कहा। लेकिन रावण ने बाण मारा जिससे वह समुद्र मे जा गिरा। णमोकार मत्र के स्मरण से वह बाहर निकल आया। सीता को अशोक वाटिका मे रखा गया। रावण ने सीता को मनाने का बहुत प्रयास किया। रावण की दूतिया उसके पास पहु ची लेकिन सब व्यर्थ गया। रावण के मंत्री मण्डल ने सब परिस्थितियो पर विचार किया लेकिन वे निर्णय पर नही पहु च सके।

सर्वप्रथम राम से किष्कंध नगर के राजा सुग्रीव आकर मिला। सुग्रीव का राज्य चला गया था। राम ने उसको वापिस दिलाने का आश्वासन दिया लेकिन साथ मे सीता को ढू ढ कर लाने की भी बात कही। सुग्रीव ने सात दिन का वचन दिया। राम ने तत्काल सेना एकत्रित करके विट सुग्रीव पर आक्रमण कर दिया और उसे पराजित करके सुग्रीव को वापिस राजा बना दिया। राज्य प्राप्ति की खुशी मे सुग्रीव ने राम को कन्याये भेट की जो सब कलाओ मे निपुण थी।

चारो ओर सीता की खोज होने लगी। सुग्रीव विद्याधर रत्नजटी से मिले और उसे राम के पास ले आये। रत्नजटी ने रावण द्वारा सीता का हरण की बात कही तथा उसकी शक्ति, सेना एवं विद्यासिद्धि के सम्बन्ध मे बतलाया तथा कहा कि रावण को जीतना आसान नही है इसलिये वह दूसरा विवाह कर लेवें। जाबुनद मत्री ने भी इसका समर्थन किया। उसने कहा कि रावण ने तीन खण्ड पृथ्वी जीत लेने के पश्चात् अपनी मृत्यु के सम्बन्ध मे जानना चाहा। उस समय भविष्यवाणी हुई थी कि जो भी कोटिशिला को उठा लेगा उसी के हाथ से रावण की मृत्यु होगी। तत्काल राम लक्ष्मण सुग्रीव कोटिशिला उठाने चले। लक्ष्मण ने जाकर कोटिशिला को उठा लिया इससे सब यह जान गये कि लक्ष्मण नारायण है। प्रति नारायण रावण है जिसकी मृत्यु नारायण के हाथ से होगी। इससे राम लक्ष्मण के पुरुषार्थ की चारो ओर धाक जम गयी।

हनुमान को राम लक्ष्मण के बारे मे एव सुग्रीव को राज्य की प्राप्ति के बारे मे समाचार मिले तो वह भी राम की शरण मे चला आया। हनुमान ने राम की बन्दना की और राम ने भी उसे गले लगा लिया।

चरण कमल बन्दे हनुमत, रामचन्द्र भये कृपावन्त।
कंठ लगाई सन्मुख बैठाई, आदरि मनोहारी बहुभाय ॥२९६१-२॥

हनुमान ने सीता को लाने का वचन दिया और शीघ्र वहा से चल दिया।

उसने पहिले अपने ननिहाल के राजा महेन्द्र को आतंकित किया और अपनी सामर्थ्य का परिचय दिया। आगे चल कर दो मुनियों की अग्नि बुझा कर रक्षा की। हनुमान आगे चले। लंका सुन्दरी ने जब हनुमान को देखा तो लंका सुन्दरी उस पर मोहित हो गयी। उसने विवाह सूत्र में बंधना चाहा। हनुमान लंका के लिए आगे बढ़े और लंका मे पहुच गये। वहां सर्वप्रथम हनुमान ने विभीषण से भेंट की और सारी परिस्थिति समझायी। विभीषण ने रावण को समझाने का प्रयास किया लेकिन रावण क्रोधित होकर निम्न बात कही—

कहा करेगा तपसी राम, मोसु जीत सके संग्राम।
जीती है मैं सगली मही, मोकूं किस का ही डर नहीं ॥३०५२॥

हनुमान वानर का रूप धारण कर सीता के पास पहुंच गया और अपने आपको राम का सेवक के रूप मे प्रगट किया। सीता ने हनुमान से कितने ही प्रश्न किये। उनका सही उत्तर पाकर सीता को हनुमान पर विश्वास हो गया। इसके पश्चात् मन्दोदरी ने हनुमान को रावण की शक्ति के बारे में बतलाया। राम के तापसी जीवन के बारे मे भी कहा लेकिन हनुमान ने सबको निरुत्तर कर दिया। जब उसने मन्दोदरी की एक भी बात नही मानी तो उसने अपनी अन्य रानियों के साथ बुरी हालत करली और रावण के पास जाकर शिकायत की। रावण ने अपने सैनिकों से हनुमान को पककड़र लाने के लिए कहा लेकिन कोई भी हनुमान को नही पकड सका। अन्त मे इन्द्रजीत हनुमान को नागपाश में बाध लाया और रावण के समक्ष उपस्थित किया। रावण को हनुमान द्वारा किये गये सभी कार्यों का ब्यौरा दिया। रावण ने क्रोधित होकर हनुमान को बहुत फटकारा और उसकी गरदन काटने की बात कही लेकिन उसकी एक नहीं चली। हनुमान ने मायावी विद्या के द्वारा सोने की लका को भस्म कर दिया और फिर किष्किंधपुर नगर में वापिस आ गया।

हनुमान ने आकर राम से पूरी कहानी कही। सीता की चिन्ता, रात दिन राम का स्मरण आदि सभी बातें सुनायी। राम को हनुमान की बात सुनकर गहरी चिन्ता हुई। राम के साथी सभी राजाओं ने युद्ध में रावण को जीतने की बात कही। युद्ध की तैयारी होने लगी। सब विद्याधर राजा एकत्रित होने लगे। अन्त मे आसोज सुदी पचमी के दिन से सेना ने प्रयाण किया और हंस द्वीप जाकर विश्राम किया।

उधर रावण अपनी शक्ति मे अन्धा बना हुआ था। उसे अपनी विद्याओं पर गर्व था। राम लक्ष्मण को वह भूमिगोचरी कहता था। सोलह हजार मुकुटबद्ध राजा उसकी सेवा मे तत्पर रहते थे। लेकिन योद्धाओं ने रावण को सीता को लौटाने

के लिये समझाया। उसने किसी की नही सुनी। विभीषण ने इन्द्रजीत को राम की ताकत के बारे मे सावधान किया लेकिन रावण समझने की बजाय उसे मारने को दौडा और उसे लंका से निकाल दिया। विभीषण राम की सेवा मे चला गया यह राम की पहिली जीत थी। राम ने उसे लकाधिपति कह कर सम्मान दिया। धीरे-धीरे राम की सेना लका तक पहुच गयी।

राम की सेना मे अनेक सेनापति थे लेकिन सभी बनवास काल के साथी थे। दोनो की सेना एक दूसरे के सामने खडी हो गयी। युद्ध प्रारम्भ हो गया और प्रथम दिन की लडाई मे राम के सेनापति नल नील के हाथो से रावण के हस्त प्रहस्त ये दो सेनापति मारे गये। दूसरे दिन फिर घमासान युद्ध हुआ। गोलो एव गोली की वर्षा होने लगी। दोनों ही ओर के सैनिक मारे गये। तीसरे दिन फिर युद्ध प्रारम्भ हुआ। सुग्रीव आगे बढा लेकिन हनुमान ने उसे रोक कर स्वयं जूझने लगा। दूसरी ओर रावण बढने लगा तो उसके योद्धाओ ने उसे रोक दिया और स्वय जोर शोर मे लड़ने लगे। कुम्भकर्ण ने मूर्छा बाण छोडा लेकिन जब नल और नील गदा मारने लगे तो वह वहा से चला गया। इन्द्रजीत त्रैलोकसार हाथी पर चढकर लडने। मेघनाद और जबूमाली, कुम्भकरण और हनुमान, सुग्रीव और इन्द्रजीत, मेघवाहन और भामडल, बज्रकरण और विराधित परस्पर मे भिड़ गये। गोलिया चलने लगी। बरछी, गदा, चक्र जैसे शास्त्र काम मे लिये गये। हाथी से हाथी, घोड़ा से घोडा और पैदल से पैदल लडने लगे। इन्द्रजीत ने मेघ बाण छोडा उसके उत्तर मे सुग्रीव ने बाण छोडा। फिर इन्द्रजीत ने अ धकार बाण छोड़ा। नागपाश की विद्या को याद कर सुग्रीव को नागपाश मे बाँध लिया। भामडल को भी नागपाश से मूर्च्छित कर दिया। कुम्भकरण ने हनुमान को पकड लिया तथा दांतो से चबाने लगा। दोनो वीर मुर्दे के समान पड गये। तभी विभीषण ने आकर राम को दोनो के बारे मे बतलाया और तीनो की लाश को युद्ध भूमि मे जाकर उठा ले आये।

राम ने बड़े धैर्य से विभीषण को सुना। राम को देशभूषण-कुलभूषण केवली ने ऐसे समय देवो को स्मरण करने के लिए कहा था। राम ने वही किया। तत्काल देव प्रगट हुए और राम का कितनी ही प्रकार की विद्याए दी। राम और लक्ष्मण दोनों ने देव वस्त्र पहिन लिए। चन्द्रहास तलवार बाध ली और दूसरे अस्त्र शस्त्र सम्भाल लिये। आकाश गामिनी विद्या को स्मरण किया। रथ के स्पर्श से जो हवा चली उससे नागपाश बंधन टूट गया, अ धकार दूर हो गया तथा जो लोग मूर्च्छित हो गये थे वे सब जिन्दा हो गये। फिर युद्ध होने लगा। रावण और विभीषण परस्पर मे लड़ने लगे। बड़ा भयकर युद्ध हुआ। रावण ने खेंच कर धनुष बाण चलाया जो विभीषण के कठ पर लगा। धनुष टूट गया लेकिन विभीषण बच गया।

उधर राम और कुम्भकरण में, लक्ष्मण और इन्द्रजीत में युद्ध होने लगा। लक्ष्मण ने नागपाशनी विद्या से इन्द्रजीत को मूर्च्छित करके पकड़ लिया। इसी तरह राम ने कुम्भकरण को मूर्च्छित करके विराधित उसे उठा ले गया।

दूसरी ओर रावण और लक्ष्मण में युद्ध होने लगा। रावण ने लक्ष्मण को शक्तिबाण से मूर्च्छित कर दिया। राम रावण युद्ध हुआ लेकिन रावण बच के निकल गया। वह लंका में चला गया। उसे इस बात की प्रसन्नता थी कि उसने लक्ष्मण को मार दिया। लक्ष्मण को मूर्च्छित देख कर राम बिलाप करने लगे। उधर मन्दोदरी कुम्भकर्ण एवं इन्द्रजीत के मरने के कारण तथा सीता लक्ष्मण के मूर्च्छित होने के कारण रोने लगी। उसी समय भामण्डल चन्द्रप्रति नामक वैद्य को लाया जो शक्ति बाण की मूर्च्छा को दूर करने का उपाय जानता था। उसने कहा कि विशल्या के स्नान का यदि जल मिल जावे तो लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर हो सकती है। हनुमान एवं अंगद को तत्काल अयोध्या भेजा गया। वहां जाकर भरत की सहायता से विशल्या को साथ लिया। विशल्या लंका आयी और मूर्च्छित लक्ष्मण के शक्ति बाण के प्रभाव को दूर किया। लक्ष्मण को होश में आने पर मंत्रियों ने रावण को पुनः समझाया लेकिन उसने किसी की बात नहीं सुनी। रावण ने अपना दूत राम के पास भेजा तथा इन्द्रजीत एव कुम्भकरण को छोड़ने के लिए कहा। राम ने सीता को छोडने की बात दोहरायी। दूत ने सीता को भूल जाने को कहा इस पर राम ने दूत को धक्का देकर बाहर निकाल दिया।

रावण पूरा व्रती था। अष्टाह्निका मे युद्ध बन्द हो गया। वह विद्या सिद्धि के लिए चला गया और वह ध्यानारूढ हो गया। रावण के सामने जब विद्याएं प्रकट हुई तो उनसे राम लक्ष्मण को बांधने के लिए कहा लेकिन विद्याओ ने अपनी असमर्थता प्रगट कर दी। रावण रणवास मे वापिस आ गया। उसने समझा कि उसे विद्या सिद्ध हो गयी हैं। मन्त्रियों ने रावण से सीता को फिर छोड़ने के लिए समझाया लेकिन उसने एक भी नहीं सुनी।

रावण अपनी पूरी सेना के साथ फिर युद्ध के लिये उतर पड़ा। लक्ष्मण रावण मे युद्ध होने लगा। स्वर्ग के देवता गण भी दोनों के युद्ध देखने के लिए आ गये। रावण का एक सिर टूटता लेकिन उसकी जगह दूसरा लग जाता। जैसे-जैसे लक्ष्मण उन्हे काटता वे दूने हो जाते। आखिर रावण ने लक्ष्मण पर चक्र चला दिया। चक्र की प्रभा से चारो ओर प्रकाश हो गया। सभी योद्धा चकित रह गये लेकिन वह चक्र लक्ष्मण के हाथ आ गया। फिर लक्ष्मण ने उसी चक्र को रावण के ऊपर चला दिया जिससे रावण के हृदय के टुकडे-टुकडे हो गये और उसके प्राणों का अन्त हो गया।

विभीषण रावण के पास आकर बहुत रोया। यह कितनी ही बार मूच्छित भी हो गया। राम ने वैद्य को बुलाकर उसका उपचार करवाया। रानियां विलाप करने लगी। तथा छाती पीट-पीट कर रोने लगी। रावण का विभीषण ने दाह सस्कार किया। राम ने कुम्भकरण एव इन्द्रजीत को छोड़ दिया जिन्होने वैराग्य धारण कर लिया। उसके पश्चात् राम ने सेना के साथ लका मे प्रवेश किया जहा विभीषण नें उनका जोरदार स्वागत किया। राम सर्वप्रथम सीता के द्वार पर गये जहां सीता अपने दिन काट रही थी। वह दुर्बल देह हो गयी थी। मलिन केश थे। राम से बिछोह के पश्चात् उसने सब कुछ छोड दिया था। सीता ने आंखे खोली और राम के हाथ जोड कर दर्शन किये। लक्ष्मण ने सीता के चरण छुए। भामण्डल भाई ने सीता से कुशल क्षेम पूछी।

लका की शोभा निराली थी। वहां कितने ही जिन मन्दिर एव सहस्रकूट चैत्यालय थे। शातिनाथ स्वामी की जिन प्रतिमा विराजमान थी। मन्दिरो के सभी ने दर्शन किये। पूजा विधान किया। सभी राजाओ ने राम लक्ष्मण को अपना राजा स्वीकार किया। इसी समय नारद ऋषि का वहां आगमन हुआ। वे इससे पूर्व अयोध्या जाकर आये थे। नारद ऋषि ने राम से अपराजिता के दुःख एव अयोध्या मे उनकी प्रतीक्षा के समाचार सुने तो राम ने शीघ्र ही अयोध्या लौटने का निश्चय कर लिया। पहिले उन्होने अयोध्या मे अपना दूत भेजा जिससे लंका विजय एव अयोध्या आगमन का सबको समाचार मालूम हो सके। राम ने लका का राज्य विभीषण को देकर आप सब अयोध्या के लिए रवाना हो गये। वे सभी पुष्पक विमान द्वारा चले। मार्ग मे राम ने पुष्पक विमान से वे सब स्थान दिखलाये जहा वे ठहरे थे। अयोध्या मे पहुँचने पर उनका जोरदार स्वागत हुआ। भरत एवं शत्रुघ्न ने दोनो के पैर छुए। चारो ओर आनन्द छा गया।

कुछ समय पश्चात् भरत को जगत् से वैराग्य हो गया। परिवार के सभी सदस्यो ने उन्हे बहुत समझाया लेकिन उन्होंने जगत् की नश्वरता की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया। इतने मे एक उन्मत्त हाथी ने भरत के पास आकर और अपनी सूड उठाकर उन्हे नमस्कार किया। हाथी को जाति स्मरण हो गया था। भरत एव हाथी पूर्वभव मे साथी थे। हाथी पर चढकर भरत ने वैराग्य धारण कर लिया उधर हाथी भी भोजन पान छोड़कर खडे-खडे तपस्या करने लगा इतने में कुलभूषण देशभूषण मुनियो का वहां आगमन हुआ। लक्ष्मण ने हाथी के पूर्व भव के बारे मे उनसे जाना। इससे सभी को जगत् की नश्वरता के बारे मे और अधिक विश्वास हुआ।

राम एवं लक्ष्मण का विधिपूर्वक राज्याभिषेक सम्पन्न हुआ। राम ने सब

राजाओं को अलग-अलग देश दिया। सुग्रीव को किष्कंध नगर, नल नील को प्रति नगर, विभीषण को लंका राज्य, हनुमान को श्रीपुर का राज्य, रत्नजटी को किन्नर नगर एवं भावमंडल को रथनुपुर देश का राज्य दे दिया। शत्रुघ्न ने मथुरा का राज्य मांगा लेकिन राम ने कहा कि मथुरा पर रावण का जामाता मधु राज्य कर रहा है जो बहुत बलशाली है। लेकिन शत्रुघ्न नहीं माना। उसने मथुरा पर आक्रमण कर दिया। मधु ने बहुत भयकर युद्ध किया। उसे युद्ध के मध्य ही वैराग्य हो गया। वह आत्मचिंतन करने लगा तभी शत्रुघ्न ने उसकी गर्दन उड़ा दी लेकिन जब उसे मधु के वैराग्य का पता चला तो उसने हाथी से उतर कर मधु को नमस्कार किया। मधु मर कर पांचवें स्वर्ग में गया।

मधु के मरने के दुःख से उसके व्यंतर मित्रों ने शत्रुघ्न पर आक्रमण कर दिया। धरणेन्द्र ने उसे बहुत समझाया लेकिन उसने किसी की नहीं मानी। सर्वप्रथम उसने प्रजा को दुःख देना प्रारम्भ किया। शत्रुघ्न मथुरा छोड़कर अयोध्या लौट आया। कुछ समय पश्चात् वहां चारण ऋद्धिधारी मुनियों का आगमन हुआ। जिनके कारण नगर मे शान्ति हो गयी। शत्रुघ्न ने वहां राम लक्ष्मण के साथ आकर मुनि को आहार दिया। चारों ओर अपूर्व शान्ति एवं सुख चैन व्याप्त हो गया।

सीता ने एक रात्रि को दो गर्जन करते हुये सिंह, समुद्र एवं देव विमान देखे राम से स्वप्न फल पूछने पर उन्होंने बतलाया कि उसके दो यशस्वी पुत्र होंगे। सीता की प्रत्येक इच्छा पूरी की जाने लगी। एक दिन सीता का दाहिना नेत्र फडकने लगा। उससे सीता को बड़ी चिन्ता होने लगी। एक दिन नगर के व्यक्ति मिलकर राम के पास आये। वे कहने लगे कि हमारी पत्नियां बिना हमारी आज्ञा के इधर उधर जाने लगी हैं। यदि हम कहते हैं तो वे सीताजी का उदाहरण देती हैं जो रावण के घर रहकर आयी है। यह सुनकर राम को बहुत दुःख हुआ। उन्होंने तत्काल लक्ष्मण को बुलाया और पूरी बात कही।

राम ने कृतांतवक्र सेनापति को बुलाया और सीता को वन में छोड़ने का आदेश दिया। लक्ष्मण ने इसका घोर विरोध किया लेकिन राम ने किसी की नहीं सुनी। जब सीता को वास्तविकता का पता चला तो वह पछाड़ खाकर रोने लगी। उसने रोते हुए राम को निम्न सन्देश देने के लिये कहा—

परिजा नैं वे दुखि मत करो, यथा समकित चित्त मे धरो।
पूजा दान करो दिन राति, तुमारे सकरण मैं इह भांति ॥४५८६॥

सीता को अपने स्वयं पर बहुत दुख होने लगा। वह सोचने लगी कि किन पापों के कारण उसे इतना दुःख उठाना पड़ रहा है। कुछ ही समय पश्चात् उस वन में पुंडरीक नरेश वज्रजंघ का हाथी के कारण वहां आना हुआ। उसने सीता का

बिलाप सुना और उसके पास आकर जानकारी प्राप्त की। वज्रजंघ के अनुनय विनय करने पर सीता ने अपना परिचय दिया तथा उसे बहिन कहकर घर चलने को कहा। सीता वज्रजघ के साथ उसके घर चली गयी जहां पत्नि ने उसके चरण स्पर्श करके अपने भाग्य को सराहा। उधर कृतांतवक्र ने बहुत विलाप किया और राम के पास जाकर सब कुछ निवेदन किया। राम लक्ष्मण दोनो ही सीता के वियोग मे दुःखी रहने लगे।

सीता ने श्रावण सुदी पूर्णिमा को युगल पुत्रो को जन्म दिया। चारो ओर प्रसन्नता छा गयी। वज्रजघ ने खूब दान दिया। दोनो शिशु से बालक एव बालक से बड़े हुए। सीता भी अपने बच्चो को पालने मे सब दुःख भुला बैठी। शिशु घुटनो के बल चलने लगे। कुछ बड़े होकर गुरु के पास पढने लगे। सभी शास्त्र पढे। सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र के मर्म को जाना। धीरे-धीरे दोनो भाइयो ने यौवनावस्था मे प्रवेश किया। एक दिन वज्रजघ ने कुश के लिए पृथ्वीधर से कन्या मागी। उसके मना करने पर वज्रजघ ने पृथ्वीधर पर आक्रमण कर दिया। लव कुश भी अपनी माता से आज्ञा लेकर युद्ध के लिए चले गये। युद्ध में उन्हे पूर्ण विजय मिली।

राजा वज्रजघ की राज्य सभा मे नारद का आगमन हुआ। नारद से उनने तीनो लोको की बात सुनी। इसी बीच नारद ने सारी रामायण कह सुनायी। सीता का अकारण निष्कासन सुनकर लव कुश ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन दोनो भाइयो ने अपनी माता सीता से फिर सारी जानकारी प्राप्त की। लव कुश ने अयोध्या पर अपनी सेना लेकर आक्रमण कर दिया। आस-पास के गावो को लटने लगे। जब राम ने उनके बारे मे सुना तो उन्हे बहुत आश्चर्य हुआ। राम ने तत्काल अपने सेनापतियो को बुलाया। दोनों मे भयकर युद्ध होने लगा। इधर नारद के कहने से भामण्डल सीता से जाकर मिला। और पूरी कहानी सुनी। फिर दोनो सेनाओ मे घमासान युद्ध हुआ। लक्ष्मण ने चक्र चलाया लेकिन वह भी लव कुश के परिक्रमा देकर वापिस आ गया। इतने मे नारद ऋषि ने लव कुश का परिचय राम लक्ष्मण को दिया। दोनो भाइयो ने सीता के सतीत्व की प्रशंसा की और अपने द्वारा किये गये सीता निष्कासन की निन्दा की। जब राम लक्ष्मण लव कुश से मिले तो चारो ओर प्रसन्नता छा गयी।

पिता पुत्र सो जब मिले, हुआ अधिक उल्लास।
चैन भयो सब नगर मे, पूजी मन की आस ॥४८३८॥

राम ने सीता को लाने के लिए नल नील, एव रतनजटी को भेजा। सीता उनके साथ अयोध्या आ गयी। सबने उठ कर सीता का स्वागत किया। लेकिन राम ने

सीता को निष्कासन का कारण बताया । सीता ने अपने सतीत्व के बारे में बात दुहरायी और किसी भी परीक्षा में समर्पित करने की बात कही । सबने सीता के सतीत्व की प्रशंसा की ओर उसे निष्कलंक बताया । लेकिन राम के आदेश से पृथ्वी खोद कर अग्नि कुंड बनाया गया । भभकर अग्नि जलायी गयी जिसको देख कर स्वयं राम भी दुःखी हो गये । सीता से अग्नि कुण्ड में कूदने के लिए कहा गया । सीता पंच परमेष्ठी का स्मरण करके अग्निकुण्ड में कूद पड़ी । लोगों में हाहाकार छा गया । लेकिन जब अग्नि कुण्ड के स्थान पर सरोवर एवं उसमे रत्न सिंहासन पर बैठी हुई सीता को देखा तो सब आनन्द विभोर हो गये । देवताओं ने जय-जयकार की तथा आकाश से पुष्प वर्षा होने लगी । सीता को नया जीवन मिला । राम भी सीता की प्रशसा करने लगे तथा वापिस राजमहल में लौटने की प्रार्थना करने लगे ।

राम के आग्रह को सीता ने स्वीकार नही किया तथा जगत् की असारता एव राज्य वैभव के सुखों को धिक्कार दिया तथा पृथ्वीमती आर्यिका से आर्यिका दीक्षा ले ली । इसी अवसर पर मुनि सकल भूषण ने नरको के दुःखो का, द्वीप एवं समुद्रों का, छह द्रव्य एवं सात तत्वों का विस्तार से वर्णन किया । इस अवसर पर राम लक्ष्मण एव सीता के जीवन मे इतने संकट, युद्ध एव वियोग किन-किन पूर्व कृत कर्मो के कारण हुए यह जानना चाहा । इसका मुनि ने विस्तार से प्रत्येक के पूर्व भव का कथन किया ।

स्वयं राम को जगत् से वैराग्य हो गया । उन्होंने अन्त मे कैवल्य प्राप्त कर मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त किया । इस प्रकार पद्मपुराण महाग्रंथ पूर्ण हुआ । जो इस पद्मपुराण का स्वाध्याय करेगा उसे तीन लोक का सुख स्वयं प्राप्त हो जावेगा ।

पदमपुराण कुं जे पढ़े, बाच सुणावे और ।
तिहु लोक का सुख लहै, पावै निरभय ठौर ।।५७४६।।

सभाचन्द के समकालीन कवि

मुनि सभाचन्द का समय हिन्दी काव्य रचना का स्वर्णयुग था जबकि उस समय चारों ओर हिन्दी रचनायें लिखी जा रही थी । हिन्दी ग्रन्थों का पठन पाठन बढ़ रहा था तथा संस्कृत प्राकृत के ग्रन्थो का हिन्दीकरण हो रहा था । कवि के समकालीन कवियो मे आनन्दघन, जगजीवन, पाण्डे हेमराज, प. मनोहरदास, लालचन्द लब्धोदय, पं. हीरानन्द, पं.. रायचन्द (अपरनाम बालक), जिनहर्ष, अचलकीर्ति, जोधराज गोदीका आदि के नाम उल्लेखनीय हैं । इन कवियो मे प० रायचन्द का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिन्होंने संवत् १७१३ मे सीता चरित्र नामक एक स्वतन्त्र काव्य की रचना की थी । कवि का दूसरा नाम "बालक" भी था । इस काव्य मे ३६०० पद्य हैं । चरित्र की कितनी ही प्रतियां जयपुर एवं देहली के

शास्त्र भण्डारों मे उपलब्ध होती है। चरित्र का मूल आधार आचार्य रविषेण का पद्मपुराण है जिसका स्वय कवि ने निम्न शब्दों मे उल्लेख किया।

कीयो ग्रंथ रविसेण नें, रघुपुराण जिय जोय।
बहे अरथ इण में कह्यो, रामचन्द्र उर आण॥

राम सीता के जीवन पर आधारित एक और काव्य मिलता है जिसके कवि भट्टारक महीचन्द्र के शिष्य ब्रह्म जयसागर थे। इन्होने "सीता हरण" नामक काव्य के माध्यम से सीता के जीवन पर अच्छा काव्य लिखा है। सीता हरण की पाण्डुलिपि में ११४ पत्र हैं तथा जिसका रचना काल सवत् १७३२ है। प्रस्तुत पाण्डुलिपि आमेर शास्त्र भंडार जयपुर मे सग्रहीत है। कवि ने सीता के व्यक्तित्व एव जीवन पर अच्छा प्रकाश डाला है। पूरा काव्य ६ अधिकारों में विभक्त है।

गोर महीचन्द्र सीष जयसागर, रच्यो सीता हरण नो रास जी।
नर नारी जे भणे छे सुणे छे, तस घर जय जयकार जी॥
सवत सतरह बत्तीसा वरसे, वैसाख सुदी तीज सार जी।
बुधवारे परिपूर्ण ज रकयुं सूर तनय रयभार जी॥

इस प्रकार पचासो कवियो ने राम के जीवन पर अनेक विभिन्न सज्ञक रचनायें लिखी है जो हिन्दी की अमूल्य कृतियां हैं।

24-10-84

डा. कस्तूरचन्द कासलीवाल

विषय-सूची

क्रमांक

का बाल्यकाल १६ शारीरिक सुन्दरता १६ विवाह एवं सन्तान प्राप्ति १६ राज्य प्राप्ति २० तीन वर्णों की स्थापना २० नीलांजना द्वारा नृत्य २१ वैराग्य भाव २१ तपस्या २२ आहार क्रिया २३ कैलाश पर्वत पर ध्यानारूढ होना २३ कैवल्य प्राप्ति २५ उपदेश २५ सम्राट भरत द्वारा दिग्विजय २६ पोदनपुर का वैभव २७ भरत बाहुबली युद्ध २८ बाहुबली द्वारा विजय के पश्चात् वैराग्य लेना २६ ब्राह्मण वर्ग की स्थापना ३१

द्वितीय विधानक—भरत का वैराग्य ३३ भरत का परिवार ३३ सत्यघोष की कथा ३५ सत्यघोष के पास जाना ३६ राजा से निवेदन ३६ राणी द्वारा न्याय ३७।

तृतीय विधानक—इक्ष्वाक वश वर्णन ३८ द्वितीय तीर्थंकर अजितनाथ वर्णन ३६ नरको के दुःख ४२ सगर के भव ४३ चौबीस तीर्थंकर ४६ ससार का स्वरूप ४७ सगर चक्रवर्ती वर्णन ४८ राजा भागीरथ का वर्णन ५० लंका का राजा महाराक्षस ५० अमर राक्षस ५१ श्रुतसागर मुनि के पास गमन ५१।

चतुर्थ विधानक—वानर वश वर्णन ५४ कन्या की सुन्दरता ५४ वानर द्वीप किषलपुर नगर ५६।

पंचम विधानक—लका का राजा विद्युतवेग ५६ मुनि का उपदेश ६१ श्रीमाला का स्वयंबर ६३ माली राजा द्वारा लका पर आक्रमण ६७ तीन स्वप्न ७१ रावण का जन्म ७२ रावण की जिज्ञासा ७३ माता का उत्तर ७३ विद्या सिद्धि ७३ यक्ष द्वारा परीक्षा ७३ सुमाली एव मालिवान की कथा ७६ ८टरस व्यजन ७६ दशानन द्वारा लका राज्य प्राप्ति की इच्छा ७७।

षष्ट विधानक—मन्दोदरी की सुन्दरता ७७ विवाह के लिये विचार विमर्श ७८ पुहुपनगर के लिये प्रस्थान ७८ चन्द्रनखा से भेट ७८ रावण के दर्शन ७६ मन्दोदरी के साथ विवाह ७६ दशानन की वीरता ८० कुम्भकरण द्वारा उपद्रव ८१ वैश्रवण राजा के दूत का सुमाली के दरबार मे जाना ८१ दशानन का कोप ८२ वैश्रवण राजा द्वारा युद्ध ८३ युद्ध से वैराग्य ८३ दशानन द्वारा युद्ध करना ८४ वैश्रवण द्वारा दिगम्बर दीक्षा ग्रहण ८४ सुमाली द्वारा पुन. लंका की प्राप्ति ८४ हरिषेण चक्रवर्ती की कथा ८५ दशानन द्वारा जिन पूजा ८६ लका विजय ६० दशानन द्वारा युद्ध ६१।

सप्तम विधानक—बाली सुग्रीव वर्णन ६२ राज्य प्राप्ति ६३ युद्ध वर्णन ६४ बालि द्वारा दीक्षा ग्रहण ६५ दशानन की कैलास वन्दना ६६ बालि की तपस्या ६६ बालि द्वारा चिन्तन ६७ रावण द्वारा बालि की वन्दना ६८ दीक्षा लेने के भाव ६६ धरणेन्द्र द्वारा शिक्षा ६६।

१४वां विधानक—अंजना द्वारा गर्भ धारण करना १४६ केतुमति द्वारा पूछताछ १४६ अंजना द्वारा स्पष्टीकरण १४६ अंजना को ताडना १४७ अंजना का निष्कासन १४७ अंजना का महेन्द्रपुरी जाना १४८ पिता द्वारा निष्कासन १४८ सब ओर से तिरस्कृत १४६ गुफा मे शरण लेना १५० वन मे मुनि दर्शन एवं वंदना १५० बसंतमाला द्वारा पति वियोग का कारण पूछना १५१ मुनि द्वारा समाधान १५१ कनकोदरी द्वारा जिन प्रतिमा की चोरी १५२ प्रभु जन्म की भविष्य वाणी १५३ रत्नचूल का आगमन १५३ पुत्र जन्म १५४ खेचर के प्रश्न का उत्तर १५५ खेचर का परिचय १५५ अंजना का विद्याधर नगर जाना १५५ विमान से हनुमान का गिरना १५६।

१५वां विधानक—पवनंजय द्वारा रावण से विदा १५६ पवनंजय का आदित्यपुर आगमन, अंजना के निष्कासन के समाचारो से दुखित होना, ससुराल जाना १५७ अंजना की तलाश १५८ पवनजय का संदेश १५८ अंजना की चिन्ता, पवनजय की प्राप्ति १५६ अंजना पवनंजय मिलन १६०।

१६वां विधानक—वरुण द्वारा रावण से युद्ध १६१ हनुमान द्वारा युद्ध मे जाने की इच्छा १६१ कुंभकरण द्वारा लूटमार १६२ रावण द्वारा निन्दा १६२ वरुण को पुनः राज देना १६2, वानरवंशी राज वर्णन १६३।

१७वां विधानक—बीरकसेठ वनमाला वर्णन १६४ राजा की व्याकुलता १६५, पूर्व जन्म १६६ बीरकसेठ की तपस्या १६६ स्त्री को दुःख देना १६७ मुनि सुव्रतनाथ का जन्म १६८ जीवन १६६ हरिवंसी राजा १७० राजा वज्रबाहु वर्णन १७१, कीर्तिधर राजा वर्णन १७३।

१८वां विधानक—कीर्तिधर की तपस्या १७४ राजकुमार द्वारा वैराग्य १७४ कठोर तपस्या १७६ चित्रमाला को पुत्रोत्पत्ति १७७, नघुष राजकुमार को राजा बनाना १७७ स्योदास द्वारा जीव हिंसा पर प्रतिबन्ध १७७ राजा द्वारा मांस खाने की इच्छा १७८ सिद्धसेन का राजा बनना १७८ दशरथ का राजा बनना १७६।

१६वां विधानक—दशरथ वर्णन १८० नारद का आगमन १८० नारद द्वारा रावण की वार्ता १८०।

२०वां विधानक—कैकेयी वर्णन १८१ स्वयंवर रचना १८२ दशरथ द्वारा युद्ध।

२१वां विधानक—अपराजिता द्वारा स्वप्न दर्शन १८४ सुमित्रा द्वारा स्वप्न दर्शन १८४ लक्ष्मण जन्म १८५ भरत जन्म, राम जन्म १८५ चारो भाइयों द्वारा विद्या सीखने का वर्णन।

२२वां विधानक—विप्र द्वारा विलाप १८७, राजा द्वारा षड़यंत्र १८७, मुनि दीक्षा १८८, रत्नावली का राजा द्वारा युद्ध १८८, मंत्री द्वारा उपाय १८८, वैराग्य भाव १८९, उपदेश १८९, राजा द्वारा अणुव्रत ग्रहण करना १८९, चित्रोत्सवा द्वारा दीक्षा लेना १८९, सीता का गर्भमें आना १९०, सीता भामण्डल का जन्म १९०, देवता द्वारा बालक का अपहरण १९०, जनक राजा द्वारा विलाप १९१, दशरथ द्वारा खोज १९१, कन्या का नाम सीता रखना १९१।

२३वां विधानक—श्रेणिक द्वारा राम सीता विवाह जानने की इच्छा करना १९१, जनक की नगरी पर आक्रमण १९२, दशरथ के पास सन्देश १९२, दूत का अयोध्याजी आना १९२, रामचन्द्र की जाने की इच्छा प्रकट करना १९२, राम का मिथला गमन १९३, राम द्वारा युद्ध करना १९३।

२४वां विधानक—जनक की इच्छा १९४, नारद द्वारा सीता को देखना १९४, सीता का डरना १९४, नारद का विचार १९४, प्रभामडल की सीता को पाने की इच्छा १९५, चन्द्रमति द्वारा उपाय सोचना १७५, विद्याधर द्वारा मायामयी अश्व रचना १९६, चन्द्रगति द्वारा सीता के विवाह का प्रस्ताव १९७, जनक का उत्तर १९८, स्वयंबर रचने का प्रस्ताव १९९, मिथिला नगरी १९९, रणवास मे राजा जनक १९९, रानी द्वारा चिन्ता २००, सीता स्वयंबर २००, राम द्वारा धनुष खेंचना २०१, सीता द्वारा वरमाला डालना २०१, भरत का लोकसुन्दरी से विवाह २०२, मिष्ठानों का वर्णन २०२।

२५वां विधानक—अयोध्या आगमन, गंधोदक लेना २०१ सुप्रभा रानी की व्यथा, कंचुकी को नृत्य का आदेश, दशरथ पर प्रभाव २४० सर्व विभूति मुनि से, धर्मोपदेश श्रवण २०५

२६वां विधानक- भामंडल की चिन्ता २०६, जाति स्मरण २०६, सीता द्वारा पिता के नाम पर चिन्तन २०७, दशरथ का मुनि के पास जाना २०७, मुनि द्वारा कथन २०८, प्रभामंडल द्वारा प्रश्न करना २०८, भाई बहिन मिलन २१०,

२७वां विधानक—दशरथ द्वारा पूर्व भाव पूछना २१०, पूर्व भव कथन २११-१३ दशरथ का वापिस घर आना २१४ वैराग्य भाव-रामचन्द्र को राज सौंपना २१४ कैकयी का बर मांगना २१५ दशरथ द्वारा विचार २१५ भरत को आमंत्रण २१५ राम लक्ष्मण द्वारा प्रस्ताव २१६ माता के पास जाना २१६ राम का उत्तर २१६ लक्ष्मण द्वारा क्रोध करना २१६ राम का वनवास २१७

२८वां विधानक—वनवास की प्रथम रात्रि २१७ राजाओं का अनुगमन २१८ सबका वापिस आना २१५ दशरथ द्वारा रुदन २१९ भरत का राम

के पास जाना २१६ कैकयी का आगमन २२० राम का उज्जयिनी जाना २२० सिंघोदर मिलन २२० लक्ष्मण की वज्रकरण से भेंट २२२ लक्ष्मण का सिंघोदर के पास जाना २२२ लक्ष्मण सिंघोदर के मध्य झगडा २२३ सिंघोदर को बांधना २२५ राज्य का बंटवारा २२५

२६वां विधानक—लक्ष्मण विद्याधर मिलन २२६ लक्ष्मण द्वारा प्रश्न २२७ रुद्रदत्त राजा से युद्ध २२८ बालखिल्य को मुक्त करना २२८

३०वां विधानक—वन भ्रमण २३० सीता की प्यास बुझाना २२६ विप्र द्वारा क्रोध करना २२६ दया के पात्र २२६ बस्ती में जाने का त्याग २३० मन्दिर मे विश्राम २३० देव द्वारा मायामयी नगरी की रचना २३० कपिल ब्राह्मण की चिंता २३० धर्मोपदेश सुनना २३१

३१वां विधानक—चातुर्मास के पश्चात् गमन २३१ विजय वन मे गमन २३१ वनमाला का आसक्त होना २३१ लक्ष्मण का प्रगट होना २३२ सीता द्वारा उत्तर २३३ वनमाला की तलाश २३३

३२वां विधानक—अतीवीर्य राजा का अयोध्या पर आक्रमण २३४ लडाई के कारण २३४ दूत द्वारा सन्देश २३४ शत्रुघ्न का उत्तर २३४ दूत का उत्तर प्रत्युत्तर २३५ युद्ध की तैयारी २३५ पृथ्वीधर का निवेदन २३५ भरत शत्रुघ्न को आमत्रण २३६ भरत की सेना २३६ गणिका नृत्य २३६ नृत्य के भाव २३६ पातरी का उत्तर २३७ सीता की दया २३८ अतिवीर्य को अभयदान २३८ अतिवीर्य द्वारा वैराग्य २३८

३३वां विधानक—विजय राजा का विचार २३६ अतिवीर्य की तपस्या २३६ वनमाला को छोड कर आगे बढना २४० सुलोचना नगर, जितपद्मा की प्रतिज्ञा २४० लक्ष्मण का जितपद्मा के पास जाना, बरछी द्वारा वार, लक्ष्मण की विजय, दोनो का राम के पास आगमन २४१

३४वां विधानक—जितपद्मा को छोड कर आगे बढना, वंसस्थल गांव पहुचना पर्वत पर बाजा बजना २४२ राम द्वारा विचार, अजगरों का निकलना, देश भ्रमण कुल भूषण मुनि पर उपसर्ग, राम लक्ष्मण का मुनि के पास गमन २४३ व्यन्तरो के पूर्वभव, मतिवर्धन मुनि का आगमन, तपस्या २४४ उदित मुदित द्वारा वैराग्य, मलेच्छो द्वारा उपद्रव २४५ उदित मुदित द्वारा निर्वाण प्राप्ति, अनुरध राजा का मान भंग, देश भूषण कुल भूषण का जन्म, बन क्रीडा २४६ कमलोत्सवा का विचार, दोनो भाइयो का वैराग्य भाव, माता पिता द्वारा संताप २४७ नाग-

दशा का अनरथ तपस्वी के पास आना तपस्वी का कन्या के पास जाना २४८ अनन्तवीर्य मुनि के पास देवों का आना, दोनों मुनियों को केवल ज्ञान होना २४९।

३५वाँ विधानक—सूरजमल राजा द्वारा राम का स्वागत २४९ राजा राम का आगे गमन, वन जीवन चारण मुनियों को आहार २५० युद्ध की कथा, मुनि पर उपसर्ग २५१ मुनि के चारों ओर अग्नि जलाना, अचलराय एवं गिर देवी द्वारा मुनि को आहार, सुकेत और अग्निकेतु द्वारा दीक्षा लेना २५२ कन्या का भविष्य, कन्या का वैराग्य भाव २५३।

३६वाँ विधानक—दण्डक वन में पहुंचना, वन शोभा २५४।

३७वाँ विधानक—लक्ष्मण को सुगन्ध आना, पूर्व कथा २५५ सूरजहास खड्ग निमित्त से शबूक की तपस्या, लक्ष्मण द्वारा सूरजहास की प्राप्ति २५७ देव पुनीत आभूषणों की प्राप्ति, चन्द्रनखा द्वारा विलाप, राम लक्ष्मण से भेंट २५८।

३८वाँ विधानक—चन्द्रनखा का खरदूषण के पास जाना, खरदूषण का कुपित होना २५९ रावण के पास दूत भेजना, खरदूषण का दंडकवन पहुंचना लक्ष्मण द्वारा युद्ध रावण का आगमन २५९ सीता को देखना, करण गुप्ति विद्या का ध्यान करना, रावण द्वारा शंखनाद, राम का लक्ष्मण के पास जाना, सीताहरण सीता का विलाप, जटायु द्वारा आक्रमण २६० रावण द्वारा खेद, राम का विलाप २६१।

३९वाँ विधानक—लक्ष्मण खरदूषण युद्ध, लक्ष्मण की विजय २६२ लक्ष्मण का विलाप, विद्याधरो का आगमन, चारों ओर दूत भेजना, रावण के पास जाना २६३ कपि द्वारा देखना अलकागढ़ मे पहुंचना २६५।

४०वाँ विधानक—रावण की सीता के समक्ष गर्वोक्ति, सीता का करारा उत्तर अशोक वाटिका मे सीता को रखना २६६ चन्द्रनखा का रावण से निवेदन, मन्दोदरी रावण सवाद, दूती का सीता को समझाने का असफल प्रयास २६७ राम की व्याकुलता, मन्त्रियों द्वारा विचार २६८।

४१वाँ विधानक—राम सुग्रीव मिलन २६९ राम द्वारा सुग्रीव को राज्य देना, सुग्रीव की विजय २७० सुग्रीव द्वारा कन्याओं की भेंट २७१।

४२वाँ विधानक—कन्याओं के हाव भाव, जन्नदत्त द्वारा माता प्राप्ति की खोज २७२ सीता की खोज, रतनजटी सुग्रीव भेंट, रतनजटी द्वारा लंका परिचय २७३ जांबूनद मंत्री का कथन, बदर मोर कथा २७४ लक्ष्मण का क्रोधित होकर निश्चय करना २७५ रावण की मृत्यु के सम्बन्ध मे भविष्यवाणी, लक्ष्मण द्वारा शिला उठाना २७६।

४३वां विधानक—लंका से दूत का आगमन २७७ हनुमान द्वारा राम के दर्शन २७८ राम का हनुमान को गले लगाना, पवनपुत्र द्वारा स्तुति २७९ ।

४४वां विधानक—महेन्द्रपुर नगर २८० हनुमान द्वारा महेन्द्र सेन से बदला लेना, परस्पर मिलन २८१ ।

४५वां विधानक—तीन कन्याओ द्वारा तपस्या, हनुमान द्वारा दावानल बुझाना, विवाह की भविष्यवाणी २८३ ।

४६वां विधानक—वज्रमुख एव हनुमान की वार्ता २८४ लका सुन्दरी का प्रेम लकापति का प्रभाव २८४ हनुमान द्वारा समझाना २८४ ।

४७वां विधानक—हनुमान का लका मे पहुंचना, विभीषण से भेंट २८६ रावण का क्रोधित होना, हनुमान का वानर रूप मे सीता के पास पहुचना मन्दोदरी सीता की वार्तालाप २८६ सीता द्वारा राम के सेवक के रूप में प्रकट होने के लिये कहना, सीता के प्रश्न हनुमान का उत्तर २८७ मन्दोदरी का कथन २८३ हनुमान मन्दोदरी संवाद २८८ मन्दोदरी का नाटक, हनुमान का सीता से निवेदन, हनुमान द्वारा भोजन, सीता द्वारा आहार ग्रहण, सीता का चिन्तन २९० सीता के वचन हनुमान का प्रस्थान मन्दोदरी का रावण के पास जाना रावण का क्रोधित होना हनुमान का युद्ध कौशल २९१ इन्द्रजीत द्वारा हनुमान को पकडना, हनुमान का परिचय रावण का क्रोधित होना २९२ हनुमान का उत्तर हनुमान का मायावी विद्या द्वारा लका दहन २९३ ।

४८वां विधानक—हनुमान का राम के पास जाना, राम की चिन्ता २९४, राजाओ द्वारा निवेदन, युद्ध की तैयारी २९५ ।

४९वां विधानक—रावण का चिन्तन, युद्ध की तैयारी २९६ योद्धाओ द्वारा रावण को समझाना विभीषण का इन्द्रजीत से वचन २९७ रावण का विभीषण पर धावा, विभीषण का राम के पास जाना, विभीषण का द्वारपाल से निवेदन मन्त्रियो का परामर्श २९८ विभीषण द्वारा राम दर्शन, सेना के साथ लका द्वीप मे पहुंचना २९९ ।

५०वां विधानक—अक्षोहिणी सख्या, दोनो के सामर्थ्य की चर्चा ३०० ।

५१वां विधानक—युद्ध के लिये सैनिकों का प्रस्थान ३०१ ।

५२वां विधनक—राम की सेना, रावण के हस्त प्रहस्त योद्धाओं की हार ३०३ ।

५३वां विधानक—हस्त प्रहस्त कथा ३०४ ।

५४वां विधानक—दूसरे दिन का युद्ध ३०५, तीसरे दिन का युद्ध ३०६ विभीषण का राम को परामर्श, देवो द्वारा राम को विद्या प्रदान करना ३०८।

५५वां विधानक—राम रावण द्वारा युद्ध की तैयारी, विद्या द्वारा मूर्च्छितों की मूर्च्छा दूर करना ३०९।

५६वां विधानक—दोनों ओर योद्धाओं द्वारा युद्ध, विभीषण रावण युद्ध ३१० लक्ष्मण रावण युद्ध ३११।

५७वां विधानक—राम विलाप।

५८वां विधानक—मन्दोदरी सीता का विलाप, भामण्डल और चन्द्रमति का आगमन ३१३ वैद्य की जीवन कहानी विशल्या की कथा ३१४ वनवास के दुःख ३१५।

५९वां विधानक—हनुमान अंगद को अयोध्या भेजना ३१७ भामण्डल का उत्तर ३१८ विशल्या द्वारा मुर्च्छा दूर करना, लक्ष्मण का होश में आना ३१९।

६०वां विधानक—रावण को मन्त्रियों द्वारा समझाना ३१९, रावण का मन्तव्य ३२० रावण के दूत का राम के पास आगमन, राम का उत्तर, रावण के दूत का पुनः निवेदन ३२० राम का प्रत्युत्तर, दूत का रावण के पास आना ३२२।

६१वां विधानक—रावण द्वारा चैत्य वदना।

६२वां विधानक—अष्टाह्निका महोत्सव, रावण द्वारा विद्या सिद्धि का प्रयत्न ३२४।

६३वां विधानक—व्रत साधना के कारण युद्ध बन्द होना, बन्दरो द्वारा लका मे उपद्रव, क्षेत्रपाल द्वारा रक्षा ३२५।

६४वां विधानक—अगद का लका में जाकर स्थिति का अध्ययन, ध्यानारूढ रावण को देखना ३२६ रावण द्वारा विद्या सिद्धि, विद्या का रावण से निवेदन ३२८।

६५वां विधानक—रावण का गमन, रावण का मंत्रियो द्वारा पुनः निवेदन ३२९ रावण द्वारा पश्चाताप, रावण का पुनः युद्ध करने का निश्चय ३३०।

६६वां विधानक—रावण की दैनिक क्रिया, दरबार हाल ३३० अपशकुन होना, मन्दोदरी की चिन्ता, मंत्री का उत्तर, मन्दोदरी द्वारा रावण को समझाना ३३१ रावण का उत्तर, उत्तर प्रत्युत्तर ३३२ रावण का क्रोधित होना, मन्दोदरी का पुनः निवेदन, रावण का उत्तर, रावण की रात्रि, युद्ध के लिए प्रस्थान ३३५।

६७वां विधानक—मन्दोदरी से अन्तिम भेंट, राम द्वारा युद्ध की तैयारी ३३६ दोनों की सेनाओं मे युद्ध ३३७।

६८वाँ विधानक—देवताओं द्वारा आकाश से युद्ध का अवलोकन, रावण द्वारा चिन्ता करना ३३८ अनेक रूप मे रावण का लड़ना, रावण द्वारा चक्र चलाना ३३६ लक्ष्मण द्वारा चक्र प्राप्त करना ३४० ।

६६वाँ विधानक—रावण का पश्चाताप ३४० विभीषण द्वारा लक्ष्मण को परामर्श, रावण का क्रोधित होना, लक्ष्मण द्वारा चक्र से रावण का वध करना ३४१ ।

७०वाँ विधानक—विभीषण द्वारा विलाप, रावण की रानियो द्वारा विलाप, श्रेष्ठ मरन ३४३ अरिद्रम की कथा ३४४ ।

७१वाँ विधानक—रावण का दाह सस्कार ३४५ कुंभकर्ण एवं इन्द्रजीत को छोडना ३४६ मुनि का सघ सहित आगमन, केवल ज्ञान प्राप्ति, धरणेन्द्र का आसन कपित होना, र म द्वारा विचार करना ३४७ राम का मुनि के पास जाना, पूर्वभवो का वर्णन ३४८ ।

७२वाँ विधानक – राम लक्ष्मण का लका प्रवेश ३५० सीता की दशा, राम सीता मिलन ।

७३वाँ विधानक लंका की शोभा, विभीषण द्वारा राम का स्वागत ३५३ विविध व्यंजन, इन्द्रजीत मेघनाद द्वारा निर्वाण प्राप्ति ३५४ ।

७४वाँ विधानक—नारद का अयोध्या आगमन, अपराजिता से प्रश्न ३५८ राम कथा नारद का लका मे आगमन, राम द्वारा स्वागत ३५६ अयोध्या वर्णन, अयोध्या मे राम द्वारा दूत भेजना ।

७५वाँ विधानक—राम सीता का अयोध्या गमन, मार्ग परिचय, अयोध्या दर्शन, राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न मिलन ।

७६वाँ विधानक—अयोध्या वैभव, सीता की नगर मे चर्चा, भरत के मन मे वैराग्य ३६५ राम भरत वार्ता, ३६६ उन्मत्त हाथी का अकस्मात आगमन ३६७ ।

७७वाँ विधानक—भरत का हाथी पर चढ़ना, हाथी द्वारा तप साधना ३६८ ।

७८वाँ विधानक—देशभूषण कुलभूषण मुनि आगमन (३६६-७६) भरत के पूर्वभव ३७६ ।

७६वाँ विधानक—भरत द्वारा वैराग्य, कैकयी का विलाप, कैकयी का वैराग्य ३७७ ।

८०वाँ विधानक—राम लक्ष्मण द्वारा दु.ख प्रगट करना, राम का राज्याभिषेक ३७८ ।

६८वाँ विधानक—राम द्वारा पश्चाताप करना, अग्नि परीक्षा में सफलता ४२६ सीता का उत्तर ४३० नरकों के दुःख वर्णन ४३१ द्वीप समुद्र वर्णन ४३२ सुख की तरतमता तत्ववर्णन ४३३।

६६वाँ विधानक—विभीषण द्वारा प्रश्न, सर्वभूषण द्वारा वर्णन ४३५ मुनि के पास जाना ४४३६ तपस्वी जीवन ४४०।

१००वाँ विधानक—सीता प्रव्रज्या ४४५।

१०१वाँ विधानक—सीता की पूर्व कथा ४४८।

१०२वाँ विधानक—प्रद्युम्न सबुकुमार के पूर्वभव ४५२ मधु कीटक भव वर्णन ४५४।

१०३वाँ विधानक—लक्ष्मण पुत्र निष्क्रमण ४६०।

१०४वाँ विधानक—भाव मण्डल पर लोक गमन ४६२।

१०५वाँ विधानक—हनुमान निर्वाण ४६३।

१०६वाँ विधानक - संकर सुर सकर कथा ४६४।

१०७वाँ विधानक—लवकुश दीक्षा ४६५।

१०८वाँ विधानक—लक्ष्मण की मृत्यु पर राम का विलाप ४६७।

१०६वाँ विधानक—विभीषण द्वारा ससार स्वरूप वर्णन।

११०वाँ विधानक—राम का तीव्र मोह, अयोध्या पर आक्रमण, देव रूप जटायु द्वारा सहायता ४७१ कृतांतवक्र द्वारा राम को समझाने के लिए माया रचना ४७२ राम को वास्तविक ज्ञान प्राप्त होना ४७३।

१११वाँ विधानक—राम का वैराग्य ४७५ वैराग्य ४७६।

११२वाँ विधानक—राम की तपस्या ४७७ सीता के जीव सीतेन्द्र का राम के पास आगमन ४७६ राम को केवल ज्ञान प्राप्ति ४८०।

११३वाँ विधानक—बालुका पृथ्वी मे रावण, सबुकुमार की दशा वर्णन ४८३ राम केवली के पास देवों का आगमन ४८४ समवसरण ४८४ प्रश्न, राम की वाणी ४८५ लक्ष्मण के प्रति जिज्ञासा ४८७ पद्मपुराण की स्वाध्याय का महत्व ४८८ रविषेणाचार्य द्वारा पद्मपुराण की रचना ४८६।

११४वाँ विधानक—काष्ठासघ पट्टावली ४६०, मल सघ प्रशस्ति ४६१।

अनुक्रमणिका—४६३ से शुद्धि-पत्र ५०६ लेखक परिचय ५०७।

पद्मपुराण (हिन्दी)

चौपई

तीर्थंकरों का स्तवन

आदिनाथ बंदू जिनराय । चरण कमल सेऊं मन लाय ।।
जैनधर्म कीया परकास । भव्यजीव की पुंगी आस ।।१।।

अजित नाथ संसारउ जीत । मोक्ष पंथ की जाणी रीत ।।
संभव जिण भव भ्रमण निवार । उतरे भव सागर तैं पार ।।२।।

अभिनंदन भय कीने दूरि । सेवत सकल रिद्धि रहै पूरि ।।
सुमतिनाथ सुभ मति दातार । सेवत पावै सुष अपार ।।३।।

देव पदमप्रभु सेवा करौ । च्यारौं गति का दुख परिहरूं ।।
देव सुपास पूजो धरि भाव । पूजित उपजै मन कौ चाव ।।४।।

चन्दाप्रभु ज्यौं दुतिया चद । दिन दिन कला वधै आनंद ।।
पुष्पदत जिन पुष्पनि वास । तजि ससार मुगति किया वास ।।५।।

सीतल नाथ दया सौं ध्यान । सुमरत पावै मोक्ष सुथान ।।
श्रेयांसे स्वामी अरिहन्त । टूटे जनम जरा का अन्त ।।६।।

वासुपूज्य की पूजा करौ । भौसागर के दुख परिहरै ।।
विमलनाथ जिन धर्म महत । भविजन दरस भये भव अंत ।।७।।

अनतनाथ स्वामी अरिहत । दरसन पाये सुख अनत ।।
धर्मनाथ जिन धर्म महत । भविजन दरस भये भव अंत ।।८।।

सांतिनाथ सुमरौ दिन रैण । बाढै लछि होइ सुख चैन ।।
कुंथनाथ अरि कीने दूर । भये मुगति संसार कर जुध ।।९।।
अरहनाथ अरि कीने दूर । सुमिरत रहै सदा रिध पूर ।।
मल्लिनाथ महा सुभट सुवीर । अष्ट करम जीते धरि धीर ।।१०।।

मुनिसुव्रत पूजो परभात । असुभ करम का होवै घात ।।
नमि जिणद ध्यावो करि जोर । तूटै जनम जरा की डोर ।।११।।

अरिष्ट नेम जादूं जग धुनी । सेवत मतिश्रुत पावै घनी ।।
पार्श्वनाथ पूजौ धरि ध्याव । सुमरत पावै पूरन ग्यान ।।१२।।

वर्द्धमान पूजो सब कोइ । मनवछित फल बहुविध होइ ॥
आदि अत जे जिन चौवीस । पूजं सुरनर नावै सीस ॥१३॥
बदू मुनिवर मुद्ध केवली । कुमति कलेस सब जाए टली ॥
केवल वाणी सबा सहाय । सुणिवा तुर्क सुदूरि पलाय ॥१४॥
दीप अढाई मै जे साध । उसके गुन हिरदै मै बाध ॥
निस वासर सुमरण मै चित्त । ध्यावै श्री जिन चर्ण जु नित्त ॥१५॥
गणधर चर्ण सर्ण कौं गहौं । गुरु की सेवा भक्ति मैं रहूं ॥

जिनवाणी का स्वरुप

जिनवाणी मै अमरु सदा, मति श्रुति बुद्धि प्रकासै तदा ॥१६॥
उज्जल वर्ण गल मोतीहार । कवियना गुण अगम अपार ॥
सीसफूल दोइ कुडलकरण । रुणभरण नेवर बाजं चर्ण ॥१७॥
करकफूल अगुल मूदडी । मणिमाणिक हीरे सू जडी ॥
मोती माग बनी छवि घनी । हस चढी सोभा बहु बनी ॥१८॥
छह दरसन मुष मडन जान । सुमरत बहु विध पावै ग्यान ॥
मूरिषतै पढि होइ सुजान । ता कारण मेऊ धरि ध्यान ॥१९॥
श्री जिन मुष की वानी सही । सरस्वती सम को बीजो नही ॥
करि डडोत कवि करै प्रणाम । भूला अक्षर आणौ ठाम ॥२०॥

सोरठा

सुमरु जिण चऊवीस, सारद की सेवा करो ।
वे त्रिभुवन के ईश, इह दाता बुधि फल तनी ॥२१॥

चौपई

राम नाम का महात्म्य

रामचंद बदौ जगदीस । साहसवत महाबल ईस ॥
अनुज वीर लछिमन बलवान । तीन षड मे ताकी आन ॥२२॥
राम नाम गुन अगम अथाह । ते गुन किस पै वरने जांय ॥
जा मुख राम नाम नीसरै । सो सकट मे बहुरि न परै ॥२३॥
जा घट राम नाम का बास । ताकै पाप न आवै पास ॥
जिन श्रवणन राम जस सुने । देवलोक सुष पावैं घने ॥२४॥
सकट विपति पडै जे आय । राम नाम तिहा होइ सहाइ ॥
जल थल वन विहड ले नाम । मनवाछित सहु सीझै काम ॥२५॥
चलत विदेस नाम जो लेइ । रामचन्द्र ताकु फल देइ ॥
जे निश्चै सौं सुमरण करै । बहुरि न भवसागर मैं फिरै ॥२६॥

जो सहस्र रसना करि भर्णं । राम नाम गुण जाइ न गिने ।।
जैसें वृक्ष महा उत्तुंग । जाके फल दीसैं सुभरंग ।।२७।।
बौनो देखि देखि ललचाय । वे फल कैसे बौना खाय ।।
वह ऊंचा यह नीची देह । क्यों वा फल कूं पावै एह ।।२८।।
जे मंगल माने मयर्यत । उनौं उबारि डारे जु तुरंत ।।
वे फल बीन बौना नैं लिये । ऐसैं जिनगुण सुगम कर दिये ।।२९।।

आचार्य रविषेण का उल्लेख

केवल वाणी सुण्यां बखान । पंडित मुनीश्वर रच्या पुराण ।।
आचार्य रविषेण महत । संस्कृत मैं कीनौं ग्रन्थ ।।३०।।
महा मुनीस्वर ग्यांनी गुंनी । मति श्रुति अवधि ग्यांनी मुनी ।।
महा निर्ग्रन्थ तपस्वी जती । क्रोध मान माया नहीं रती ।।३१।।
आरिषो वानी शास्त्र किया । धर्म्म उपदेश बहु विध दिया ।।
जिसके भेदाभेद अपार । महा मुनीस्वर कहैं विचार ।।३२।।
जैसे रवि का होइ उदोत । भाजै तिमिर निर्म्मला होत ।।
इस विधि सुनिकै मिटै संदेह । मिथ्या तजि समकित सुं नेह ।।३३।।

रचना काल

संवत सत्रहसै ग्यारह वरस । सुन्या भेद जिनवाणी सरस ।।
फाल्गुन मास पंचमी स्वेत । गुरुवासर मनमैं धरि हेत ।।३४।।

कवि का नाम

सभाचन्द मुनि भया आनन्द । भाषा करि चौपई छंद ।।
सुनि पुरान कीनां मडान । गुनि जन लोक सुनुं दे कांन ।।३५।।

राजगृही नगरी की सुन्दरता

जंबूद्वीप मे भरत षंड । मगध देस राजग्रही प्रचंड ।।
ऊचे मंदिर हैं सत खिने । सब ते सरस राय के बने ।।३६।।
वसैं सघन दीसैं नहीं अंग । लिखे चित्र जिमै भले सुरंग ।।
उज्जल वरण धवल हर किये । छत्री कलस कनक के दिये ।।३७।।
बनी जु बैठक नाना भांति । जिनकी लोग गिनरहे जात ।।
अति उत्तुंग सवारी पौलि । लगे कवाड बीजौं सब ठौर ।।३८।।
झारि झरेखे सोभा भली । देखत उपजै मननी रली ।।
आगे सूत रच्या बाजार । चौडी नींव लई सुसंवारि ।।३९।।

व्यापार उद्योग

भले भले आये सुत्रधारि । मंदिर रचे बडे विस्तारि ।।
वहां सराफ सराफी करैं । बोलैं सत्ति झूठ परिहरैं ।।४०।।
कसैं कसौटी परखैं दाम । लेवा देई सहज विश्राम ।।
बीच बाजार रहैं जौंहरी । मणिमाणक हीरा लाल खरी ।।४१।।

मोती लाल पनां और चुनी । राजद्वार महिमां अति घनी ।।
भली वस्तु जो राज। लेई । मुह मांगिया दाम गिरण देइ ।।४२।।
कही बजाज बजाजी करैं । सत्य बचन मुष तैं उच्चरैं ।।
कही जरवा फजिरी सिकलात । नरमी नारग नाना भाति ।।४३।।
निरमंवत करै व्यापार । दर वेसुरी अर साहुकार ।।
कोठीवाल करै ब्योहार । जिनके वनिज बड़े विस्तार ।।४४।।
टापौं दिपं जाय जिहाज । ल्यावं दर्व धर्म के काज ।।
जेते किसबदार है और । बैठे सकल विराजै ठौर ।।४५।।
नगरी निकटैं उपवन घने । कूप वापिका जलहर घने ।।
अति रमणीक मनोहर खरे । जानूं गगा जल मौं भरे ।।४६।।
मदिर मांहि बैठिके बनी । झरणा झरै सीतलता घनी ।।
खलखलाट सौ जल नीसरै । उचई उछल भूमि पर परैं ।।४७।।
तिहां बाइठा राजकुमार । गुंनिजन गावै राग सवार ।।
अब जै सब ब्योरा सु कहु । बढे पुराण पार क्यौ लहूं ।।४८।।
किंचित् कहू वृक्ष के नाम । गुनि जन समझौ नाना भाव ।।
सघन रुष बहु फूले फले । जानू गूथ बनाये घने ।।४९।।
पत्र बध सौ सोमै केलि । पाडल चढ़ी चमेली बेलि ।।
अब बिजौरा निबू नरिंग । दाडिम दाख बेलि बहुचग ।।५०।।
फलै फूल उतरै अति घने । पछी खाय न बरजई जने ।।
सकल जाति के सौमैं रूख । वास सुगध लागैं भूष ।।५१।।

सोरठा

कमल सरोवर फूल, सबजी जात अनेक विष ।।
भ्रमर सुरग सुष मूल, राति दिवस निबसैं तिहां ।।५२।।
पछी तिहा अनेक, बोलै मबद सुहावने ।।
जहा तहा द्रुम बेल, आइ बसेरा लेत हैं ।।५३।।

चौपई

अैसा नगर बसं सुभ थान । श्रेणिक राय तपै ज्यौं भांन ।।
चेलणा दे रानी पटधनी । मानु कनक कांमनी बनी ।।५४।।
सीलवंत गुण लक्षण ईश । मानू इन्द्राणी जीत सचीश ।।
सम्यक् दृष्टि कोमल चित्त । देवगुरु शास्त्र सेवई नित्त ।।५५।।

परजा सुखी बसैं सब लोग । पान फूल रस गोरस भोग ॥
घरि घरि पूजा सुनैं पुराण । घरि घरि सुनिए अर्थ बखान ॥५६॥
श्री जिन मन्दिर बनै उतंग । फरहरैं धुजा गमन के रंग ॥
इन्द्र चन्द्र सुर वासा लेहि । सुरगपुरी सम सोभा देइ ॥५७॥

सोरठा

बार बार कर सोच करि, विचार राजा श्रेणिक रहै ॥
हुवैई जनम बहोरी, कथा सुनु रघुवंस की ॥५८॥

चौपाई

कुंडलपुर नगर

कुंडलपुर सिद्धारथ राव । महापुनीत जगत मे नाउ ॥
सोभा नगर न जाइ गिनी । सुरगपुरी की शोभा बनी ॥५६॥
दु:खी दलिद्री कोई न दीन । पंडित गुनी सकल परबीन ॥
हाट बाजार चौहटे बने । शोभा सकल कहां लौ भनैं ॥६०॥
बाग बगीचा महल आवास । दीसै सकल पास ही पास ॥
रितु रितु के फल लागे फूल । तातै रहै पथिक जन मूल ॥६१॥

उछलैं जल झरना झरैं । निर्मल नीर सुखै विस्तरैं ॥
बैठे राज सभा तहां ठोर । भूपति तहां विराजैं ओर ॥६२॥

सिद्धार्थ एवं त्रिसला रानी

महा सुभट छत्री हू सूर । ग्यानी गुनी ग्यान भरपूर ॥
नृप की आग्या सिर पर धरै । कोई नही उपद्रव करै ॥६३॥
प्रजा सुखी करैं बहु भोग । पुन्यवन्त निबसै सब लोग ॥
च्यार दान दे वित्त समाज । षट् दर्शन का राखै मान ॥६४॥
त्रिसला दे राणी गुणवंत । रूप लछिन सोमैं बहु भांति ॥
पतिव्रता आग्या मैं खरी । सील व्रत गुन लावण्य भरी ॥६५॥
वरनन करि गुन पार न लेइ । सामोद्रिक की सोभा देइ ॥
सुख मे सूती सेज मझार । सुपन सिध पाई एक बार ॥६६॥

माता द्वारा सोलह स्वप्न देखना

सोलह सुपनां नाना भांति । एक महूर्त पाछली रात ॥
प्रथम गयंद इक ऊंची देह । आवत देख्यो अपनो गेह ॥६७॥
दूजै सिंह गर्जना करैं । गज मयमंत देख बल हरैं ॥
लषमी देखि हरषत भांति । अनंत विभूति सोभै बहु भांति ॥६८॥

कंचन कलस षीर जल भरे। दोऊं पोर के भीतर धरे।।
देष्यो सरोवर निरमल नीर। छाया सघन विहंगम तीर ।।६९।।
अरु सूर्य देष्यो उद्योत। तासै तिमर निर्मला होत।।
देष्यौ पूरणमासी चन्द। सीतल वरतें मन आनन्द ।।७०।।
फूलमाल देषी विकसात। मन आश्चर्य करै बहु भाति।।
सिंघासरण मोती मणि जड्यौ। रत्नपुंज देषत मन भर्यौ ।।७१।।
देष्या मीन जुगल सर तिरै। ता चपलाई कौन सर करै।।
देव विमान देष गुनवंत। जात चल्या भव सागर अंत ।।७२।।
देषी अगनि धूम निरधूम। जानौं बनी रत्न की भूम।।
देष धवल धोरी धीरन धीर। पृथ्वी सग धरै बलवीर ।।७३।।
देष्यो वारिध ग्रीषम काल। अति गर्जित किल्लोल विसाल।।
देष्यो नाग भुवन गुन सही। रात पाछली किंचित रही ।।७४।।
स्वेत गयंद जु वन में गयो। चक्रत जागि अचंभा भयो।।
ए षोडस सुपने मनमांहि रहै। प्रिय समीप ब्यौरै सौं कहै ।।७५।।
सिद्धार्थ नृप सुंनि त्रिय वैन। हरषित अंतर विगसत नैन।।
मन वच क्रम सुपने कुं सुनें। निहचै अष्ट कर्म को हनें ।।७६।।

स्वपनों का फल

होय पुत्र फल मन आनंद। जानहुं पूरनवासी चंद।।
सुर नर इंद्र करैगे सेव। तीन लोक के दानव देव ।।७७।।
भव सागर का तोडै जाल। धर्म सगीर धर्म प्रतिपाल।।
विद्याधर नृपति पसुपती। इनमे बहोत चढावै रती ।।७८।।
जानहु पंचग्यान को धनी। सब परिवार चढावै मनी।।
सुन प्रिय वचन भया आनन्द। प्रभु के वयन गाठि सो वन्द ।।७९।।
सुदि असाढ छठि उत्तम घडी। प्रभु ने आइ ग्रभ थित करी।।
आसन कंपा सुर सुरपती। चिमक्या चित्त विचारी मती ।।८०।।
जिण चोईसमैं को अवतार। सिद्धारथ घर वीर कुमार।।
उतरि सिंहासन करि डंडोत। परंपराय ज्यौं पिछली होत ।।८१।।
मातंग जक्ष बुलाये टेर। जाउ कुंडलपुर इतनी वेर।।
और दैवी कुमारी छपनां। आइ पहुंची देवागना ।।८२।।

माता की सेवा

आदेश हुवा कुवेर भंडार। रतन वृष्टि करि वारंवार।।
दीये चितेरा देवकुमार। भले सुघर जु सूत्राधार ।।८३।।
रचना रचो मनोहर मही। चलती वेर सीष यौं कही।।
कहुं कहुं देव चितेरा करै। अनहद भांति सुरग की धरै ।।८४।।

विना जीव जानूं बोलै बैन । देषत होइ महा सुष चैन ॥
जा अन्तर घनहूर घनघोर । बरसै रतन डोढ है कोडि ॥८५॥
जय जय ध्वनि छायो आकास । बरषै पहुप सुगंध सुवास ॥
गर्जै पटृल बिजुली उद्योत । अंतर मनिक दिवस सा होत ॥८६॥
हरति भूमि जल उपरि तिरै । भरे तलाव मंडि करि फिरै ॥
किनर छपन अंत है पुर आइ । नमसकार कर लागी पाइ ॥८७॥
कोई करै वीजनां वाय । सेवा करै घेरे मनु न्याय ॥८८॥
तेल फलेल सवारैं केस । कोई सखी बनावै भेस ॥८९॥
कचन झारी जल भर ल्याइ । और दातण करावे आय ॥
कोई डबा धरे भरि पान । वीडी करि षुवावै आन ॥९०॥
और जे सेवग ताकी ठोर । सेवा करि बिराजै और ॥
जैसे कमल पत्र परि नीर । यौं विरधई सांहसै धीर ॥९१॥
जानुं भानु बदर छांड्यो । जानु सीप स्वाति जलदीयो ॥
इह विध सौं नगरी मैं गए । घर घर रली बधाई भए ॥९२॥
पूजा करै देह नित दान । असे भया गर्भ कल्याण ॥

महावीर जन्म

चैत्र सुदी तेरसि कौं रली । नक्षत्र चित्रा विरया भली ॥९३॥
भयो जनम जान्यौं जब इद्र । ऐरापति साजियो गयद ॥
आसण छोडि प्रदिक्षणा दई । चले मुकुटमणि नीची नई ॥९४॥
जै जै सबद करै कर जोर । किंनर चले सत्ताइस कोडि ॥
छाय रह्यो आकास विमाण । नृत्य करै गावै गुणगान ॥९५॥
बाजै पटह दुदुभी घोर । करि करना इन फेरी जोर ॥
मधुरी धुनि बाजैं मृदग । नृत्य करत मोडै बहुअंग ॥९६॥
भयो कउलांहल सुनै न कान । आए कुंडलपुरी मीलांन ॥
नृप की पौरि भीर बहु जुडी । इद्राणी अतहैपुर बढी ॥९७॥
माया का करि बालक धर्या । श्री जिनेंद्र इंद्रानी हर्या ॥
लींद उपाई लई चली चोर । बालके तिस्स डारि तोडि ॥९८॥
ह्वां तैं निकलि दियो पति गोद । निरखि रूप पावो मन मोद ॥
इद्राणी पुंनी मन रली । गावै मगल विरया भली ॥९९॥
बैठ गयद ले गये मेर । पंडुक सिला थापि तीह बेर ॥
षीर सुमुद्र इंद्र सुर गए । कचन कलस नीर भर लिए ॥१००॥
सहस अठोत्तर इंद्र के हाथ । और भर भर ले आए साथ ॥
दूध दही रस घृत की धार । श्री जिन पूज्या बारंबार ॥१०१॥

ले आए जहां बीर जिणद । ढारि कलस मन कीया आनंद ॥
वज्र सूई सौं छेदे कान । काजल नैन सहज मुख पान ॥१०२॥
देव पुनीत बस्त्र सुभ रग । पहिराये श्री जिनके अग ॥
रत्न जडित कु डल दोई कान । बाजु बध ताइत उर आन ॥१०३॥
माला और आभूषण बने । बहुत शृ गार श्री जिनवर वणे ॥
कटि करधनी पाए घुघरा । पहराये फूलो के सेहुरा ॥१०४॥
करि आरती स्तुति बहु पढै । दर्शन देख्या मन सुष बढै ॥
चले देव प्रभु कू घर लीयें । अति आनन्द परम सुष किये ॥१०५॥

सोरठा

राष्या सबका मान, जो गुन गावं जिन तणे ॥
कीयो जन्म कल्याण, सुरपति सुरथानक गये ॥१०६॥

दुहा

इन्द्राणी किंनर सहित, कीने बहुत आनंद ।
त्रिसला देई गोद मे, श्री दीना बीर जिणद ॥१०७॥

सोरठा

वर्ष बहत्तर आव, कही जोतिगी समझिकै ॥
सप्त हाथ समकाय, श्री जिण सब जग तिलक ॥१०८॥

चउपई

ज्यौं दुतिया शशि चढं काति । यौ दिन दिन बाढै जिननाथ ॥
सेवा करै देवता आइ । बालक रूप धरै बहु भाइ ॥१०९॥

महावीर द्वारा वैराग्य

अनुक्रम जोवन पदइ भई । पुन्य विभूति चौगुनी लई ॥
बरस तीस बीते बलवीर । सब गुंन बढै लेइ सरीर ॥११०॥
मना सिघासन कचन धाम । व्यापा सकल न व्यापा काम ॥
सहज विचार्यौ लोक स्वरूप । भम्यो जीव नाना धरि रूप ॥१११॥
अति वैराग चिमक चितकरी । सुर लोकातिक स्तुति करी ॥
धनि धनि करै वे जैजैकार । सिवका आन धरी तिण बार ॥११२॥
प्रभु आरूढ भए सुषपाल । छोडि दिया माया जंजाल ॥
सिवका चढि नदन वन गए । उतरि पालषी ठाढे भए ॥११३॥
सिद्ध नाम ले लुंचे केस । श्री जिन भए दिगम्बर भेस ॥
आए इंद्र अमरपति घने । नंदै विरधै जै जै धुनि भने ॥११४॥
कीने तप कल्याणक सार । मगसिर वदि दसमी सुभवार ॥
रत्न पिटारी केस उठाय । लए देवने समंद सिराय ॥११५॥

कलस पीर जल भर ले आई । ढारि नृत्य करि गाय बजाए ।।
अष्ट द्रव्य सौं पूजा करी । मांनू देव सफल श्रुत धरी ।।११६।।
पुष्प वृष्टि गंधोदिक करैं । सीतल पवन तापकौं हरैं ।।
वचन बीनती करैं डंडोत । नए मुकट ज्यौं पीछली होत ।।११७।।
यों करि देव गए फिर गेह । तपारूढ भए जिन देह ।।
बारह विध तप आतम ध्यान । वाहिज अभ्यंतर चित आंनि ।।११८।।
तेरह विध धांर्या चारित्र । रागद्वेष जीते छै सत्र ।।
द्वादस अनुप्रेक्षा चित ल्याइ । दोष अठारह दिया छुडाय ।।११६।।
दस विध पालै दया का अंग । छांड्या मोह माया का संग ।।
बारह बरस रह्या छदमस्त । धर्या ध्यान जिन नासा दृष्ट ।।१२०।।
आनंद चिदानदसौ चित्त । च्यारि कर्म त्रेसठि परकित ।।
टूटैं घातिया कर्म कठन । छुटी प्रकृति अैसी उतन ।।१२१।।

कैवल्य

वैसाख सुदि दसमी सुभजान । उपज्या प्रभु कुं केवल ग्यान ।।
इंद्रादिक च्यारौ विध देव । जै जै धुनि करि कारन सेव ।।१२२।।
पुहप वृष्टि फुलन की वास । गधोदिक सुर करैं उल्हास ।।
ऐरापति साज्यौ गयद । चली अपछरा सूरज चद ।।१२३।।
जोजन एक रच्यो समोसर्ण । गणधर ग्यारह बाणक वर्ण ।।
तीन घातिका गोपुर चारि । पदमाकरि पुहप कति वार ।।१२४।।
मच्छ कच्छ जलचर खग आदि । बैर भाव अतरि गतिवाद ।।
तीन कोट कचन के कीये । छत्री कलस रतन जड़ दीये ।।१२५।।
सुर सूत्रधार करे आरम्भ । रच्यो अगाउ मांनसथंभ ।।
देषत मांन प्रकृति को हरैं । निरमल मति अतरगति करैं ।।१२६।।
प्रथम असोक सोक कुं दहै । भविजन लोग तमासै रहै ।।
अग्रे भूमि रगि मन पची । बारह सभा मनोहर रची ।।१२७।।

समवसरण

तीन छत्र की महिमां कहै । तीन धर्म की सोभा लहै ।।
समोसरण थानक कल्यांण । चतुर वदन बइठइ भगवान ।।१२८।।
वीच सभा मंडप सुभ ठौर । सिंघासन कौ राची ठौर ।।
पच हजार दंड उच्चत । अंगुल च्यार रहैं जिन अत ।।१२६।।
विपुलाचल परबत सुभ थांन । समोसर्ण पहुंता तिहां आन ।।
सुनि श्रेणिक पूजा कौं गया । सह परिवार गमन तिम किया ।।१३०।।
दे प्रदक्षिणा नाम्या पाय । बहुत भांति बइठे सुषपाय ।।
वीनती सौं जौरे कर दोइ । कहिए धरम सुने सब कोइ ।।१३१।।

महावीर वाणी

श्री जिनवर की बानी होइ। बारह सभा सुने सब कोइ ॥
गौतम स्वामी कहै बषान। द्वादस सभा सुनै दे कान ॥१३२॥

सप्त तत्व अर पचास्तिकाय। षट द्रव्य नो पदारथ थाय ॥
जीव अजीव आश्रव बंध। सवर निर्जरा मोक्ष की रिध ॥१३३॥

जीव तत्व दोइ विध कहे। एक सिध एक संसारी रहे ॥
ता मई दोई भव्य अभव्य। बहु ससार रुलै ए सव्व ॥१३४॥

भव्यनिकर उतरै भव पार। अभव्य रुलै चिहु गति मझारि ॥
भग्म्यौ लष चौरासी जोनि। ते दुष बरन न सकै कवि कौन ॥१३५॥

जनम जरा दुष भुगते घने। श्री जिन वचन तन मन दे सुने ॥
भ्रमत भ्रमत नर देही धरी। साध सगति मति पाई खरी ॥
तीन रतन सो उपजी रुच। दर्शनग्यान चरित्र जु सच ॥१३६॥

तिहुं काल सामायक करे। सात विस्न आठौं मद हरे ॥
सोलह कारन का व्रत धरै। दया धर्म दस विध विस्तरै ॥१३७॥

च्यारदान दे वित्त समांन। औषद अभय अहार समान।
सास्त्र दीया पावै बहुग्यान। विनयव त होई तजि अभिराम ॥१३८॥

करमकाटि पहुंचे निरवान। सिवपद पावै सुख सुथान ॥
और जे अंधकूप मै जीव। तिनुले चिरकाल की नीव ॥१३९॥

दया धरम जिनकौ न सुहाय। पूजा दान नहि ठहराय ॥
सास्त्र सुनत उपहरो अकुलाइ। मिथ्यावाद करै वहु भाइ ॥१४०॥

जिहा होय जीव का बध। तिसकुं ध्यावै मुरिख अध ॥
नाचै कूदै करि मिथ्यात्व। भोजन करै दिवस ने राति ॥१४१॥

जे कछु करै कर्म अरु अकर्म। जासौ कहै हमारा धर्म ॥
मूंड हलावै पाषड करै। जीव दया का भेद न धरै ॥१४२॥

अणछाण्या जो पीवै नीर। करे स्नान मजन सरीर ॥
कदमूलादिक सब फल षाय। सत सयम पाल्यो नहि जाय ॥१४३॥

असौ जे सेवै मिथ्यात्व। ते नर मर करि नरकं जात ॥
भव भव सहैं ते दुष सताप। नर्क निगोद लहै विल्लाप ॥१४४॥

अइसी समझि मिथ्या परिहरौ। जैन धर्म निश्चै सौं करो।
सयम वर्त्त करो मन ल्याय। सुख सपति बाधै अधिकाय ॥१४५॥

जा प्रसाद बहु लछमी होइ । पूजा दान करौ सब कोइ ।।
सफल लछमी सोही जांन । दुखित दलिद्री कौं द्यो दान ।।१४६।।

पूजा दान प्रतिष्ठा करैं । देव शास्त्र गुरु मन मे धरैं ।।
धर्म तीर्थ को चलावै सग । विषसौं पालै धर्म के अंग ।।१४७।।

श्री जिन भवन संवारै भले । दया भाव के मारग चले ।।
पूजा रचना करैं सातीक । तातैं बढै धर्म की लीक ।।१४८।।

मंदिर कूप बगीचे वाय । जिहाँ पंथी बैठे सुष पाय ।।
वनवासी मुनि ले विश्राम । सुमरैं तिहा श्री जिन नांम ।।१४६।।

छह दर्शन कुं आश्रम देई । आदर भाव विशेष करेई ।।
सज्जन कुटब सु राखै भाव । दान देयण कौ मनमैं बहु चाव ।।१५०।।

भूषा भोजन प्यासा नीर । सरल चित्त जानें परपीर ।।
पुनि सयोग लहै गति देव । नरपति खगपति उत्तम कुल भेव ।।१५१।।

ऊचे कुल में पावै ठोर । ता सम सुषी न दूजा और ।।
कारण पाय जाय सिव पथ । धरैं भाव मुनिवर निर्ग्रन्थ ।।१५२।।

सोरठा

दान का फल

देइ चउविध दांन, अर्थ पाय धर्मंहि करैं ।
ते पावैं निरवांन, जस प्रगटै तिहुं लोक मैं ।।१५३।।

चउपई

धन पाया कछु पुन्य न कीया । अपजस पोट अपन सिर लिया ।
आपै खाय न खुवावै और । सदा बहै चिंता की ठोर ।।१५४।।

छह रूति कदे न मानै सुख । भली वस्तु नवि मेलहै मुख ।।
राति दिवस भ्रमतै ही जाय । आर्त्त रौद्र मे काल विहाय ।।१५५।।

जोडि द्रव्य धरती तल दीयौ । कैले काहूनें सौंपियो ।
कै वह धन लेवें हर चौर । कै खोया जुवा की ठौर ।।१५६।।

कै वह सात विसन सौं गया । कै रिण दिया तिहां थकी रह्या ।।
कैइ राजिनें लीया दंड । किरपन भया जगत मे भड ।।१५७।।

सब कोई बोलैं मुंह कै बार । पापी कीया पाप का भार ।।
पचि पचि जोड्या अर्थ भडार । ताकौ जात लगी न बार ।।१५८।।

तबै किरपन बहुते पिछताइ । तबै झुरया बनै न सुदाइ ॥
मरिकै भ्रमे चहुगति बीच । पावै गति जो नीच हि नीच ॥१५६॥

नरय तिरय गति भुगतै जाय । जहा न कोई होइ सहाय ॥
लछमी का फल सोई सही । तीन भुवन मे जस कीरति लही ॥१६०॥

सदावर्त्त दीना कर दिया । अपना कारज उनही किया ।
अपने सग सुजस को लिया । उसका नाम जगत मे भया ॥१६१॥

दोहा

जे लछमी बहुते जुडै, करै पुन्य नहि कोइ ॥
नरका का दुख बहु सहै, जाय भवांतर षोइ ॥१६२॥

चउपई

श्री जिनवाणी अगम अगाध । पूजित हैं प्राणी को साध ॥
रवि पुहता अस्ताचल ठौर । श्रेणिक आया अपनी ठौर ॥१६३॥

भई रयण ससि का उद्योत । पृथ्वी ऊपरिसो भई जोत ॥
उज्ज्वल वर्ण मदिर बहु भाति । छूटि रही ससि हर की क्राति ॥१६४॥
सोमवसी फूले बहु फूल । वने सरोवर सुष के मूल ॥
महा सुवास पवन की डोल । दपति रहै सुष करै किलोल ॥१६५॥

घर घर कामिन गावै गीत । तासु वयण सुभ उपजै प्रीत ॥
गोरी अबला तरनी नारी । सब सोहै ससि की उनहार ॥१६६॥
सौधा फूल पान सुषवास । रति रति भोग रमे अतिहास ॥
श्रेणिक राय सभा सयुक्त । जिनवाणी गण कहै बहुत ॥१६७॥
सुष सेज्या पोढे थे भूप । उत्तम वस्त्र सु महा सरूप ॥

श्रेणिक राजा द्वारा स्वप्न

सुपने माहि विचारै घ्यान । रामचद्र गुन का व्याख्यान ॥१६८॥

रामचद्र त्रिभुवन पति राय । लछमन के गुण कह्या न जाय ॥
लकापति रावन दस सीस । ताकै भुजा विराजै बीस ॥१६६॥

कु भकरण विभीषण है वीर । महावली कहिये रणधीर ॥
इन्द्रजीत रावण ना पूत । ताका बल कहैं बहूत ॥१७०॥

आचार्य रविषेण ने रावण के दस शीष नहीं माने हैं ।

कहै इन्द्र नें हम बसि कीया । ग्रागन्यां बांधी ग्रटक मैं दीया ।
नवग्रह बांधि कराई सेव । स्वर्ग लोक के जीते देव ।।१७१।।

इह ग्राश्चर्य मेरे मन धर्या । इसा वचन मिथ्यात का सुन्या ।।
इद्रदेव का स्वर्ग निवास । नवग्रह रहैं इन्द्र के पास ।।१७२।।

तिहां रांवन पहुचा किस रीत । इन्द्रजीत नें बांध्या जीत ।।
इह पृथ्वीपति भूवि परि रहै । किस विध जाय इन्द्र नें ग्रहैं ।।१७३।।

जो सुरपति कोपै मन माहि । रावण मे भसम करै छिन माहि ।।
जा के बल को ग्रत न पार । बातें कौंन बडे कुंभार ।।१७४।।

जे ते लरै ते सबहु मरै । तो इह सत्य वचन जिय धरै ।
नवग्रह काहै स्वर्ग विश्राम । वे केम करै ग्राइ इहां काम ।।१७५।।

कुंभकरण ने कहैं बहु सूर । नीद छमासी सोवै सूर ।।
बजै दमामा बहु सरणाय । कैसै नाव ऊपर ह्वै जाइ ।।१७६।।

तेल भरया कडाह ग्रवटाइ । दोहु कान में देहो ढुराय ।।
तोउ न जागे एण उपाइ । जे उह जागै किस है भाय ।।१७७।।

भूष षट्मासी कहियन जाय । जोकु दृष्टि पडै सो षाय ।
हाथी घोडे ऊट मिल जाय । तोउ न क्षुधा उदर की समाइ ।।१७८।।

इह संसै मेरे मन उचै । काचा मास बाहि किम रुचै ।।
काचा मास न षावै बिडाल । केम भषै प्रथ्वी भूपाल ।।१७९।।

जाग्यो राय विचारै एह । श्री जिन तैं भाजैं संदेह ।।
वीती निसा उदय भयो भान । बजे वाजित्र घुरै निसान ।।१८०।।

सकल लोग उठे प्रभात । करि सनांन सुमरण बहु भांति ।।
ग्रपने ग्रपने उद्दिम लगे । बाल वृद्ध सब ही जगे ।।१८१।।

श्रेणिक की राज सभा

भूपति ग्राभूषण सब साजि । पट्ट बैठा तबै श्रेणिक राज ।।
देस देस के भूपति ग्राइ । नमस्कार करि लाग्या पाउ ।।१८२।।

राजसभा मे भूपति घने । नामावली कहां लग गिने ।।
राजा वचन कहै सो प्रमाण । चलौ करन दरसन भगवान ।।१८३।।

समवसरण की ग्रोर प्रस्थान

सह परिवार गमन तब किया । ग्रस्व गयंद बहुत सा लिया ।।
के घोडा के रथ के सुषपाल । हस्ती पर बैठा भूपाल ।।१८४।।

आगे बठोतं किंकर चले । गली सकल समराई भले ।।
जिहा तिहा हुवा छिडकाउ । तायई वहुत विराजै ठांउ ।।१८५।।

कोईक आइ अटारी मारि । देषं झाक झरोखा द्वारि ।।
अग्रे नाद बाजै बहोत । हय गय रथ सोभा अति होत ।।१८६।।

सेना साथ राय अति घनी । जिसकी सोभा जाय न गिनी ।।
विन सोभा सोमै वहु भाति । सकल लोग आवै जिन जात ।।१८७।।

समोसर्ण देषियो नरिंद । उतरि भूप सुमरियो जिनेंद ।।
पहुता राय जाइ समोसरन । जीव जंत का पातिक हरन ।।१८८।।

दई प्रदक्षिणा करि डंडोत । श्रेणिक पूछी प्रश्न बहोत ।।

भगवान महावीर से रघुवश कथा को जानने की इच्छा प्रकट करना

स्वामी कहो कथा रघुबंस । क्यू सबूक कीया निरहंस ।।१८९।।
षडदूषण मारचा किह भाति । बिराधित आइ मिल्या रघुनाथ ।।
किम सीता का हुआ हरन । कइसै हुवा रावण मरन ।।१९०।।

कैसे आय मिल्या सुग्रीव । परपच मारि किया निरजीव ।।
वभीषण किम पायो राज । कुंभकर्ण किया मुक्ति का साज ।।१९१।।

इंद्रजीत अरु अन इद्रजीति । किम विध किया उसै भयभीत ।।
राजा पवन अजना विवाह । क्यू वियोग हुआ बहु ताहि ।।१९२।।

किम उपज्या हणौमान बलवान । कैसे सुधि सीता की आनि ।।
रामचद्र की कीनी सेव । कैसे लह्या समुद्र का छेह ।।१९३।।

सीता आणी दल मधार । किह कारण सा दई निकार ।
आदि अंत की पूछी बात । सब ही का ससा मिट जात ।।१९४।।

राम कथा का महत्व

श्री जिननाथ की वानी हुई । द्वादस सभा सुनै सहु कोई ।।
गौतम स्वामी कहैं बषान । सकल सुनेंहु तुम धरि ध्यान ।।१९५।।

स्वयंभू रमण सायर चहु ओर । वा सम समद नही को और ।।
ज्यौं कठवत्ती नीर सौं भरं । तामे एक कटोरा धरं ।।१९६।।

इस विध द्वीप समुद्र मझार । तिनका है बहुत विसतार ।।
तार्मै समु द सु लवणोदधि । जबुदीप हैं ताकं मधी ।।१९७।।

मेरु सुदर्शन जाके बीचि । वज्रमई है ताकैं नीच ॥
सो वनमई बहुत बिसतार । कहां कहां बहु रत्न अपार ॥१९८॥
ऊंचा सिखर अकास सुं लागि । अतर एक बाल सम षागि ॥
जोजन महा इक लाष प्रमाण । केवल वांणी सुण्यां बषांण ॥१९९॥
पंचमेरु अढाई द्वीप । दुगुणे दगुणे कहें समीप ॥
और कहे कुलाचल षटमेर । एक एक षड ताके बेर ॥२००॥
छह षड अमे एक तई एक । दीर्घ लीह विजयार्द्ध अनेक ॥
लघु विजयार्द्ध अनेक जु और । चउदह नदी त्रिकसी गिर फोर ॥२०१॥
अठसठ गुफा कही हैं तिहा । इक इक मेर कुलाचल तिहा ॥
अकृत्तम चैत्याला तिहा बने । उनके भेद पुराणन भने ॥२०२॥
सत्तरिसो षेत्र पचमेरु माझ । इह विध चित मे जानू साच ॥

भोगभूमि का वर्णन

सदा सास्वता इक सो साठ । विनासीक जानूं दोय आठ ॥२०३॥
सोवर्ण मई जानुं भोगभूमि । तामे कल्पवृक्ष रहे भूमि ॥
जब तैं जुगल हुवै उतपन्न । भुगते सुष जे वंछित मन ॥२०४॥
जैसे स्वर्ग लोक के देव । अइसै ही जुगलियां का भेव ॥
तो भी श्रेणिक पूछे कर जोडि ' किस पुन्य पावै अैसी ठौर ॥२०५॥
तबै भगवंत कहै समझाय । दान सुपात्र तणा फल राइ ॥
मन वच काय दीया जिन दान । तातै रिध लहै असमांन ॥२०६॥
ज्यूं वट वीज सुच्छ प्रमाण । उपज्या भया बडे उन्मान ॥
ताकी छाया सीतल घनी । बहुत विस्तार कहै क्या मुनी ॥२०७॥
इण परिवषे सुपात्रा दान । चौविह दोज्यौ चतुर सुजान ॥
दान कुपात्र तणा फल एह । बिनु विवेक जो कोई देई ॥२०८॥
सरस बीज बावै जो कोई । एक वालि एकेक ज होई ॥

चौदह कुलकर–

कुपात्र दान फल है यह तुछ । इह विध समझै चतुर्विचक्ष ॥२०९॥
चौदह कुलकर का व्याख्यान । सुणो गुणी जन्न सुघड सुजांन ॥
प्रथम प्रतिष्ठ १ दूजा सनमित्त२ । षेमकर ३ तीजा कुल थित्त । २१०॥
षेमंधर ४ सीमंधर ५ कुल कीया । सीमंकर षष्टम ६ कुल भया ॥
सप्तम विमल ७ बहु कुलवंत । अष्टम च चषमांन गुनवंत ॥२११॥
कल्पवृक्ष जोति घट गई । वा सुर रयण प्रगट तब भई ॥

तब वे प्रगटे चंदरभान । आश्चर्य भया सब के मन आंनि ॥२१२॥
बूझै वचन प्रमान सु वात । अवधि विचार कही बहु भांति ॥
पूरब भव देखि विदेह षेत्र । इनका प्रथमई परि उद्योत ॥
रवि प्रताप ग्रीषम बहु होई । निशा शीतल शशि ही की लोई ॥२१३॥
तब ते जानौं सूरज चन्द्र । समझ्या लोग भयौ आनन्द ॥
जसाधी नवमा ६ दसमा अभिचंद १०। एकादश चंद्रान कुलनंद २१४ ॥
मरुदेव १२ प्रसन्न सेनजित भेव १३। नाभिराय १४ चउदहा कुलदेव ॥
कोई कोई कलप वृक्ष रह्या । नबा नग्न सहज मे भया ॥२१५॥

अन्तिम कुलकर नाभिराजा

सोवन मिंदर सहु रत्ने जडे । देषत सुषसो गह भरे ॥
नाभिराय जगत भूपति । मरूदेवी राणी शुभमती ॥२१६॥
पंकज चरण अरुण छवि घनी । नष की कांति चंद्र दुति हूनी ॥
अति कोमल कदलीदल जंघ । मानो मकरध्वज के थभ ॥२१७॥
नेवर सबद हूंस की चाल । मोती जडित पदारथ लाल ॥
फुनि कटि षीन सिंघ केहरी । रहै षोह वन में मृग हरी ॥२१८॥
कंचुओ झलकित सोभई ठोर । तिन की पटेतर नाही और ॥
कंठ कपोल कंकन सु दरी । सु दर निमोलिक मणि जडी ॥२१९॥
कुंडल कर्ण जोति निर्मली । सभा सकल विराजै भली ॥
वदन पटंतर कोई नही चंद । दशन जोति जानू कलिकंद ॥२२०॥
अति सुरंग मुख बिना ताबोल । बानी सरस कोकिला बोल ॥
कीर नासिका बेसर चुंनी । मोतिन की सोभा छवि घनी ॥२२१॥
दीर्घ नयन कमल की भाति । तिनको सोभा कहै किस भाति ॥
सीस फूल सौमै बहु भाय । बेणी कौ छबी कही न जाय ॥२२२॥
वर्नै कबि गुन पार न लेई । सामुद्रक की सोभा देई ॥
छह मास अगाउ इह भेव । आसन कंप्यो सुरपति देव ॥२२३॥

मरुदेवी रानी की सेवा

अवधि विचारि समझियो इंद । ह्वै अवतार प्रथम जिणचंद ॥
सोलहै देवि कुमारी टेर । मरुदेवी पै जाऊ इह बेर ॥२२४॥
सेवा कीज्यो नाना भाति । गर्भ सोध कीजो दिन राति ॥

कोई मर्दन करावै अस्नान । केई आंणि खुवावैं पान ।।२२५।।
कंचन भारी भरिकै नीर । जानों भरचा समुद्र जल षीर ।
कोई तेल फुलेलहि आंन । कोई राग सुनावै तांन ।।२२७।।
केइक कन्या दाबै पाउ । सेवैं अपनी अपनी ठांउ ।।
केई दीवट नीरष बालि । केई आभूषण धरै सवारि ।।२२८।।
वारा भूषण सोलह सिगार । मांगें जब देवई तिण बारि ।।
निसवासर सेवा बहु करें । वचन वचन गुण हिरदै धरै ।।२२९।।
उत्तम सज्या करी सुबास । सेवा करैं सषी बहु पास ।।

सोलह स्वप्न

मरुदेवी सोवै सुख चैन । सुपना देखै पछिम रैन ।।२३०।।
हस्ती स्वेत देष्यो गुनवत । वृषभ एक देष्यो मयमंत ।।
दीख्यो स्यंघ गर्जना करंत । कचन कलस रत्ना जडंत ।।२३१।।
पुहपमाल देषी बिगसात । सूरज उदय देष्यो परभात ।।
दीठो पुरनवासी चंद । मीन जुगल सौं मन आनद ।।२३२।।
देष्यो समंद महा गंभीर । सिंहासन निरष्यो मणि हीर ।।
देष्यो सुमेर गिर लषमी सार । देव विमान देख्यो सुरकार ।।२३३।।
देख धरणेन्द्र रत्नमई भूमि । देषी अदषी अग्नि महा निधूंम ।।
अइरापति की उज्जल देह । आवत दीठा अपने गेह ।।२३४।।
ए सुपना सोलह गुणवत । उठि करि निज पति सुं पुछत ।।
नाभिराय सुणि तिय की बात । भयो आनंद सुष उपज्यो गात ।।२३५।।
मन वच काय सुपनि फल सुने । निहचैं सयल पाप नैं हने ।।

स्वप्न फल

हुवैगो पूत लक्षण संयुक्त । मानो पृथ्वी पर रवि उद्योत ।।२३६।।
अवर जे सुर अमर पद बसैं । तिनकी मणि चरननी घई घसैं ।।
तोडै भोसागर का जाल । चरम सरीर कनक की माल ।।२३७।।
विद्याधर नरपति पसुपति । इनमे बहुत बढावै रती ।।
इन्द्र फणीन्द्र करैगे सेव । तीन लोक के दानव देव ।।२३८।।
जानहूं पच ग्यांन का धनी । सुणि करि वचन उलसी धणी ।।
आषाढ बदि दोज सुभ घड़ी । प्रभू नै आइ गर्भ थिति करी ।।२३९।।
आसन कंपे सुरपति राय । समझ्या चित्त ग्यांन बहु भाय ।।
सिंघासन तजि नमणि करंत । धनद कुमार बुलायो तुरंत ।।२४०।।

नगर अजोध्या सवारो जाय । बारह जोजन की लम्बाइ ।।
चौडी नव जोजन कै भाय । कनक भूमि की करियो ताय ।।२४१।।

रतनवृष्टि फूलन की गिरेष्ट । बर्जे दुंदुभि महा सिरेष्ट ।।
कचन कोट रतनमई सार । मदिर सत्त भूमिए सवार ।।२४२।।

ऊची पउरी चित्र बहु बनें । रषवाले तिहा ठाडे घने ।।
चिहु अवर वापिका गंभीर । तामे भरया निरमला नीर ।।२४३।।

आगे सूत रचे बाजार । चौडी नींव बडे विस्तार ।।
सत्तषिणा मदिर सब किये । छत्री कलस रतन के दिये ।।२४४।।

करघो चितेरे देव कुमार । सुरग लोक की सी उनहार ।।
प्रजा सुषी बसें सब ठौर । जे ते किसबदार है और ।।२४५।।

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म

चैत्र वदी नौमी सुभ वार । उत्तराषाढ नक्षत्र सु सार ।।
भयो जन्म जब जान्यो इन्द्र । मनमे बहोत किया आनंद ।।२४६।।

आसन छोडि प्रदक्षणा दई । सबने मुकुट मणि नीची नई ।।
जै जै सबद भया जब षरा । सत्ताईस कोडि चली अपछरा ।।२४७।।

देव विमान छायो आकास । वरषं पुष्फ सुगध सुवास ।।
नृत्य करें बहु गावें गीत । बाजें पटह दुंदुभी रीत ।।२४८।।
ताल मृदंग बजावै बीन । गावें सुर जिन गुण परबीन ।
भयो कोलाहल सुणै न कान । आये नगर अजौध्या थान ।।२४९।।
नृप के द्वारैं भइ अति भीर । इन्द्रानी राज लोक कै तीर ।
माया का बालक रचकर राषि । श्री जिन लीया बीनती भाष ।।२५०।।

नीदउं धाई लीया चुराय । इद्रानी ले चली उठाय ।।
ह्वां तैं निकसि इन्द्र कौ दिया । देष वदन हर्षित अति हिया ।।२५१।।

जन्मोत्सव

सहस नयन करि देषै रूप । तोऊन त्रिपति सुरपति भूप ।।
बइठ गयद मेरु ले गये । पाडुक सिला महोछव भये ।।२५२।।
षीर समुद्र जल कचन कलस । भरे नीर जे प्रासुक सर्स ।।
सहस अठोत्तर इन्द्र जु भरे । अवर देव ले कचन घरे ।।२५३।।

आदिनाथ का बाल्यकाल

दूध दही घ्रत रस की धार। पुजा रचैं वे बारंबार ॥
ले आए जिहां आदि जिणंद। कलस ढालि मन भयो आनंद ॥२५४॥

वज्र सूई से छेदे करणं। पहिराये बहुते आभर्ण ॥
कज्जल नयन मुख दिया ताबूल। कुंडल रत्न धरा अनमोल ॥२५५॥

बाजूबंध माला ताईत। तातै होय दूरि भयभीत ॥
कटि करधनी पाय घुंघरा। पहराये पुहपई सेहरा ॥२५६॥

करि आरती असतुति घनी। ते गुण सोभा जांय न गिणी ॥
चले देव प्रभु कूं सिर लिये। बहुत आनंद प्रेम सुष किये ॥२५७॥
मरुदेवी नष दीया जिणंद। तिहु लोक मे भयो आणंद ॥
धनुष पंचसय कचन काय। लक्ष चौरासी पूरब आय ॥२५८॥
सुरपति करया जनम कल्यान। पहुचे सकल आपने थान ॥
दुतिया शशि कांति ज्यों चढै। यौ श्री जिनवर पल पल बढैं ॥२५६॥
जननी गोद जब ही लेइ। देष रूप मन सुष धरेइ ॥
लेकर पिता लगावें हियो। बहु आनद उपजत हिये ॥२६०॥

शारीरिक सुन्दरता

कनक वरन काया अतिबनी। नख की जोति कांति दुति हनी ॥
कोमल चरन केल सम जघ। कटि सोभै जिम के हरि सिंघ ॥२६१॥

कर पल्लव भुज बने अनूप। हृदै कंठ सोभा अति रूप ॥
दंत होठ रतन की जोति। सुभ्र कपोल सु अति उद्योत ॥२६२॥

नासा कीर नयन अति बढ़ै। मस्तक किरण जोति नित चढै ॥
कोटि भान जो करै उद्योत। तऊ न सर भर जिन की होत ॥२६३॥
स्याम केश लाबे सुष कर्ण। अति सुगंध नीलाजन वर्ण ॥
लक्षण सहस अठोत्तर बने। तो मुष गोचर जाहि न गिने ॥२६४॥
बालक रूप देव के पूत। ले ले प्रभु ज्यौ आये बहुत ॥
रत्न चूर अरगजा कपूर। क्रीडा करै उडावैं धूरि ॥२६५॥
बहुत भांति के फेरै भेष। ते खेलैं बहु युगति विसेष ॥
ऐसी जुगति बहुत दिन गए। श्री जिन जोवन पदई भए ॥२६६॥

आदिनाथ का विवाह एव सन्तान प्राप्ति

नंद सुनंदा व्याही नारि। रूप सुलक्षण शशि उनहार ॥
प्रथम पुत्र तातै उत्पन्न। ब्राह्मी भई भरत की बहन ॥२६७॥

बहुरयो दूजी नंद रूप सौ भरी । रूपवत गुन लावण्य धरी ।।
गर्भ ताहि पुत्र सौ भए । काटि करम सो मुकतिहि गये ।।२६८।।

प्रथम बाहुबलि पाछै और । ताथै सकल रिद्ध दई जोडि ।।
अवर भई पुत्री सुन्दरी । सील रूप अति शोभा भरी ।।२६९।।

राज्य प्राप्ति

नाभिराय प्रभू आयस किया । राजभार रिषभ नै सोपिया ।।
कलपवृक्ष सहु गए बिलाय । सहु लोक की खुध्या न जाय ।।२७०।।

ताका भेद न पावै कोइ । भूष प्यास दुष दूर ही होइ ।।
आये नाभिराय के द्वार । हम किम जीवे प्राण अधार ।।२७१।।

तब थे कलप वृक्ष संसार । मनसा भोजन करत आहार ।।
अब वे कलपवृक्ष है नाही । हमरा किम होवै निरवाह ।।२७२।।

नाभिराय की आग्या पाय । रिषभदेव पै बिनवै आइ ।।
मननी बात कहै सब लोग । कैसे जीव का मिटै वियोग ।।२७३।।

राजा ने सब लिये बुलाय । सकल लोक ने पूछै राय ।।
सुनि परजा दुष किया विचार । उदिम बताय किया उपगार ।।२७४।।

तीन वर्णों की स्थापना

महा सुभट ते क्षत्री किया । षडग बंधाय सूर व्रत दिया ।।
धरम दया कीज्यो मन लाय । पापी दुष्टै मारो धाय ।।२७५।।
रण संग्राम न दीजे पूठि । सनमुख झुझज्यौ डिगै न दीठ ।।
स्वामी कार्य को दीजे प्रान । ज्यू तुम पावो स्वर्ग विमान ।।२७६।।
जे क्षत्री रण मैं से भजै । कुल कलक लागै अनतजै ।।
जे छत्री सहु पुर रक्षा करै । रण साम्हौं जाय कै लरै ।।२७७।।
निज परजातै राषै सुषी । दया करै नर देषी दुषी ।।
धर्म दया करि यासौं ध्यान । भक्ष अभक्ष तजै धरि ध्यान ।।२७८।।
जिनकै हिये थी दयावी घनी । थापे वइस बनिक बुधि दिनी ।:
दया दान किरिया सौ सुधि । पाप कर्म सो करै न मनी ।।२७९।।
अवर जे नर थाई उत्तम भाव । जैसी ताहि बतावै ठाम ।।
अविवेकी जे अपर अयान । तिणनें थाप्पे कर्म्म किसान ।।२८०।।
हल जोति कर खेती करै । उपजै साप रासि तब करै ।।
होए अन्न भुगतै संसार । उनकौ दिया इसा उपगार ।।२८१।।

थापी सब छत्तीसौं पौंण । अपने अपने मारग गौण ।।
हुवा छत्री बैस सुद्र ए तीन । इह विधि समुझो चतुर प्रवीन ।।२८२।।
वरषै मेघ ऊपजै धान । गाडे पान फूल सब दान ।।
मेवा सब बिध उपजै जिहां । परजा सुखी विराजै तिहां ।।२८३।।
राजनीत सौं पावै चैन । दुखी न कोई दीखै नयन ।।
धर्मरीति सौं बीतै काल । दुषी दरिद्री नहीं दुकाल ।।२८४।।
राज करत पूरब गये बीत । लक्षतियासी इम भोग की रीत ।।
एक लक्ष पूरव रही आव । सुरपति मन है विचारै भाव ।।२८५।।
ए प्रथम भगवंत अवतार । इनते धरम चलै ससार ।।
ए माया मंहि रहै मुलाय । सवेगी ए किए पर थाय ।।२८६।।

नीलांजना द्वारा नृत्य

चैत्र बदी नवमी श्रेष्ठ घडी । नीलंजना पातर अवतरी ।।
आय राय की सभा मझार । नृत्य करै गावै गुए सार ।।२८७।।
दोय घडी आयुर्बल रही । पूर्ण भई गिरपडी जे मही ।।
नाचत नाचत तिन लई पछाडि । तब राजा बोलै हकार ।।२८८।।
वेग उठावै ठाड़ी करै । बेर बेर गिर गिर वह पडै ।।
तब मत्री बोले समझाय । याकी आयु पूरी इन ठाय ।।२८९।।

वैराग्य भाव

तब मनमे चेत्यो भूपाल । अचेत पणै बीता यह काल ।।
अब कछु करू धर्म की रीत । तातै पाप हुवै भयभीत ।।२९०।।
जाण्यौं इह ससार असार । बुडत जीव ना पावै पार ।।
राग द्वेष आरति मुई रहै । भ्रमत जीव विश्राम न लहै । २९१।।
कवही हुवै देवपति भूप । कबही दुखी दलिद्री रूप ।।
कबही नर कबही तिरयचं । कबही मर करै परपच ।।२९२।।
नट जिम भेष कीए तिन घने । दुष सुष और कहां लौं भने ।।
अब जो राखो आतम घ्यान । जीव मैं धरि देखु पहिचान ।।२९३।।
प्रगटै धरम समझै सब कोइ । क्षत्री रीत सुत कीने दोइ ।।
भरत नै सूप्यो पृथ्वी भार । बाहुबल पोदनपुर सार ।।२९४।।
निन्याणवै देस औरन कू दिया । भयो संतोष सबं कै हिया ।।
अपणै मनसौं बिचारा ग्यान । लोकांतिक सुर पहुता आंन ।।२९५।।

जय जय सबद भया चहु ओर । सिवका आनि धरी तिह ठौर ।।
धन्य धन्य वाणव सब को देव । चढे पालकी लख्या न छेव ।।२९६।।

सिवका चढिय पराग वन गये । उतरि सिंघासन ठाढे भए ।।
नाम सिध समरथा मन सौच । पचमुष्टी का कीना लोच ।।२९७।।

इन्द्रादिक आए सब देव । करि कल्याण चर्ण की सेव ।।
लीये केस ताईत मे डारि । अवर सिराये समद मझार ।।२९८।।

तप कल्याणक इन्द्रकरि गये । ध्यानारूढ श्रीजिनवर भए ।।
अर जे पाच हजार नरेस । तेभी भए दिगंबर भेस ।।२९९।।

तपस्या

प्रभु नै वरत धरया षट् मास । अवर सकल वइठे वनवास ।।
उनपै भुषा रह्या न जाय । अनपाणी बिन गए मुरझाय ।।३००।।

जो फिर जाय भरत तै डरै । तातै वे वन मे ई फिरै ।।
जैनधर्म की सहिय न आच । फाटा भेष तिहा पर पाच ।।३०१।।

कोई सन्यासी जटा बधाय । जोगी जगम भए कर्ण फटाय ।।
बारह बिघ तप श्रीजिन करै । चेतन चिदानद चित धरै ।।३०२।।

नासादृष्टि आतम ल्यो ल्याय । पदमासन बैठे जिनराय ।।
नमि विनमि तहा पहुता आइ । विनती करै नमणि कै भाइ ।।३०३।।

तुम तजि राज लिया है जोग । छाडि दिये संसारी भोग ।।
भरत बाहूबली राजा किए । हमारी सुध न बिचारी हिए ।।३०४।।

हमकु कोई बतावो देस । जहा जाय हम करै प्रवेस ।।
श्री जिनराय तिहा छदमस्त । मुष थी कहै न एको वस्त ।।३०५।।

नमि बिनमि छोडै नहि पास । राज्य भोग्य की छोडी आस ।।
तब **धरणेन्द्र** विद्या दो दई । असी रिध लई तब नई ।।३०६।।

विजयार्द्ध का दीना राज । दोहु का मन वाछित काज ।।
दस जोजन पर्यन्त उचत । मणि माणिक तहा घणे दिपंत ।।३०७।।

दक्षिण दिश रथनूपुर नगर । उत्तर दिसि अलिकाविल अगर ।।
सब संयुक्त विराजै गाव । लता लछमी नाना भाव ।।३०८।।

जैसी स्वर्वलोक की नारि । तइसी सबै नयर मझारि ।।
करै राज सुष भुगतै भोग । रिषभनाथ मन ल्याया जोग ।।३०९।।

बारा विध तप आतमध्यान । षष्टमास बिन अन्न न पान ।।
तब मनमे अइसी चित चीत । प्रगट करू भोजन की रीत ।।३१०।।

आहार क्रिया

हमकौं भोजन बिना विहाय । अग्रे ह्वै'गी सूक्षम काय ॥
बिना आहार तप करचा न जाय । ऐसी समझि उठे जिनराय ॥३११॥
भोजन की विध लहै न कोइ । जिहां जाय तिहा आदर होय ॥
लाल पदारथ हीरा भेट । मिलै भूप नगरी सहु नेट ॥३१२॥
कोई कन्यां कोई गयंद । कोई अस्व वार आनै नारिंद ॥
केई रथ केई सुषपाल । मननी बात न लहै भूपाल ॥३१३॥
ए सहु छोडि फिरे बहु मही । भोजन विधि को जाणै नही ॥
हथनापुर कुरुजांगल देश । राज करै श्रेयास नरेस ॥३१४॥
तिहा पहुचे बीते छह मास । एक बरस सही खुध्या प्यास ॥
श्रेयास सुभ सुपने पाई । मत्री पूछै तबै बुलाइ ॥३१५॥
कहै मत्री फल सुपना तणा । इष्ट पुरुष आवै कोई पाहुणा ॥
श्री भगवंत आवै तिह वार । राय आनंदित भया अपार ॥३१६॥
उतरि सिंहासन करि डंडोत । देइ प्रदक्षिणा करी नमोऽस्तु ॥
ज्यौ रवि फिरई मेर कै औरं । यू सोमैं नरपति तिह ठौर ॥३१७॥
धर्मवृद्धि इन मुख से कही । **श्रेयांस** सुष बहुतै लही ॥
वैठि सिंघासण गहि पडगाह । चरणोदक जल सीस चढाइ ॥३१८॥
साढा सातसैं कलस इक्षु रसी । स्वामी पिया देव सब खुसी ॥
अभयदान बोलै कर जोरि । वरषै रतन साढी आठ किरोड ॥३१९॥
पुष्प वृष्टि भई बहु भाति । पहुची सकल देस ए बात ॥
ठोर ठोर विधि लिष ले गये । दान तीर्थ आदीश्वर किये ॥३२०॥
ऐसी करि भोजन की रीत । अंतर है आतम सौ प्रीत ॥
सुनकर भरत मन मे उल्हास । आये श्रेयांस के पास ॥३२१॥
दहुत भाति कीनू सनमान । तो सम दाता और न जान ॥
दीये देस पुर पट्टन घने । आया भरत नगर आपने ॥३२२॥

कैलाश पर्वत पर ध्यानारूढ होना

श्री जिनराज गये कैलास । तिहा देवता करैं निवास ॥
ध्यान च्यार प्रानी नै धरे । ताम दोय षोटे दोय षरे ॥३२३॥
आरत रौद्र ध्यांन द्वै हीन । तिनकर लेस्या षोटी तीन ॥
नरना कृष्ण नील कापोत । देह दुष जा कीये हौत ॥३२४॥
आरति मैं तिरजच गति बंधै । तातै प्रानी एस न बधै ।
निसवासर षोटी चित गढै । रहई काल चिर वेली बढै ॥३२५॥

सूकर कूकर गैंडा रीछ । पदवी नीच बीत मैं तीछ ॥
जो तिरण चरई धरै जियसंक । एही पुर्व जनम के अंक ॥३२६॥
आरत ध्यान च्यार पद होय । इष्ट वियोग अनिष्ट सयोग ॥
पीडा चितवन भोग निदान । ए प्रानी को दुषकर जानि ॥३२७॥
अनबाछित आगै ही होय । इछा मन न धरै नही जोइ ॥
जे जोगीस्वर की व्रत धरै । छठे गुणथानक तै खरै ॥३२८॥
कुछित मरन सुरग गति रहै । मरकर तिरजच गति कौं लहैं ।
रौद्रध्यान ए पाये च्यार । लछिन किंचित कहु विवार ॥३२९॥
हिसानंद मिष चौर्या विषयानंद । करकस वचन अगति के वद ॥
रुद्र परिणाम रहै नर तास । मुषतै वुरी उपजै नित वास ॥३३०॥
निकल नरक तैं देही धरी । कै अच्या अधोगति पुरी ॥
अैसे चिह्न देषिए जिने । पडित वर्ग कहा लौ गिने ॥३३१॥
जे धरि भेष तपी तप बढै । गुणथानक पचम जो चढै ॥
रात दिवस मन षोटी धरै । मरकरि भ्रम अधोगति परै ॥३३२॥
षोटे ध्यान जिन के मन रहै । अैसे वचन ग्यान मे कहै ॥
ए दोइ ध्यान ग्यान आरूढ । धरम सुकल प्रानी कूं गूढ ॥३३३॥
धर्मध्यान के लक्षण कहै । प्रासुष क्षेत्र उपद्रव थी रहै ॥
दिव्य सगहन पूरी परजाय । चौथे काल मिलै बिध आइ ॥३३४॥
सीत उसन वरषा रित जोग । सुभ परणाम विवर्जित भोग ॥
नासादृष्टन मेरै अंग । इन्द्री वनज विसर्जित सग ॥३३५॥
प्राण संवर नाना भिन्न । नरि बाह्याभ्यंतर लक्षन चिह्न ॥
लोक स्वरूप विचारै नित्त । सातव गुणथानक की थित्ति ॥३३६॥
लेस्या पीत पद्म की ठोर । टूटै पासि करम की जोर ॥
कै देवत कै हो भूपति । कै सिवमारग जागै रती ॥३३७॥
सुकल ध्यान का सूक्ष्मभेद । उत्तम क्रिया भई सब छेद ॥
अंतर ध्यांन ग्यान दिढ धार । दया सर्व की चित्त विचार ॥३३८॥
आतम भाव दाब को चढै । जिन केवली ग्यान को बढै ॥
दसमे गु नस्थानक दोइ करै । उपसम सैणी चढै ते गिर्जै ॥३३९॥
दरमन ग्यान चरण चित दिया । दया धरम दस विध कर लिया ॥
आनद चिदानद सौं ध्यान । च्यार करम का करि अपमान ॥३४०॥
प्रकृति तिरेसठ टूटी जान । उपज्या प्रभु को केवल ग्यान ॥
वर्ष सहस्त्र रहै छदमस्त । फागणवदि ग्यारस लही सुभ वस्त ॥३४१॥

कैवल्य प्राप्ति

केवलग्यांन लबधि जब भई । बहुविध देव प्रदक्षिणा दई ।।
इन्द्रादिक किन्नर संयुक्त । जय जय सबद करैं बहु उक्त ।।३४२।।
बारह जोजन रच्यो समोसरण । प्राणी का मन संसाहरण ।।
बारह सभा मनोहर कही । तीन कोट कचन के मही ।।३४३।।
बनी खातिका जल भरपूर । वृक्ष अशोक सोक करैं दूरि ।।
कलपवृक्ष अवर बहु रूप । वासावली न लागैं भूख ।।३४४।।
छह रितु के फूले फल फूल । ऊंची पौरि बनी समतूल ।।
मानस्थंभ सबारखा और । सिंघासण की राखी ठौर ।।३४५।।
वृषभसेन गणधर गुणवंत । अपर तियासी अवर भगवंत ।।
पच सहस्र दड ऊचत । चारि अगुल अतर अरिहत ।।३४६।।
तीन छत्र कचन मणि बने । चौंसठि चबर देखैं सुष घने ।।
चौरासी गणधर जगदीस । च्यारि ग्यांन पचम जिणईस ।।३४७।।
समोसरण थानक सुभथान । चतुर बदन बैठे भगवान ।।
भइ चतुरमुख एकै धुनि । बारह सभा भव्य सब सुनी ।।३४८।।
वानी एक भेद नव सुनें । गणधर कहे लोग सब सुनै ।।

उपदेश

निश्चय एक आतमा सार । द्वै विध इह निश्चय व्यौहार ।।३४६।।
दरसन ग्यान चारित्र मे लीन । च्यारि बेद मे सुने प्रवीन ।।
परमेष्ठी पचम सुधि भई । अरु षट द्रव्य सर्व गुण मई ।।३५०।।
सप्त तत्त्व अष्टम गुण सिध । कहै पदारथ नवं निध ।।
इन गुंन मई गिरा सुनि भूप । है विदेह अर तत्त्व स्वरूप ।।३५१।।
कथन समर्थ अनत भवतनी । सिब कारन हित सब धनी ।।
पाप फेटनी पुण्य अनद । सिथल भये कर्मन के फद ।।३५२।।
द्यानी सब ही संबोधनी । प्राणी कुं आलस भेदनी ।।
जीवा सति जानें पर लोक । अमूरत भगतै सुभ सोक ।।३५३।।
अनुगुरु सकति रूप सब देह । चारू गति करि पूरन एह ।।
निश्चय सुद्ध नित्य जन जीव । अब संसारी गाढी नीव ।।३५४।।
षोटी क्रिया दुःख को मूल । रहै अनादि काल के भूलि ।।
आतम दरसन ग्यांन चरित्र । तत्त्व सबद है अतर नित्त ।।३५५।।
असरण सरण जाति जिय सार । धरम एक त्रिभुवन आधार ।।
बारह व्रत सुश्रावक धरई । ग्यौरासौं मनस सरधा करेई ।।३५६।।

हिंसा चौरी अनरत जानि । ब्रह्मचर्य परिग्रह परमांन ।।
गुणव्रत तीन धरै मनु भाव । दिगव्रत देसवरत मन चाउ ।।३५७।।
अदया का व्योहार न करै । शिक्षाव्रत च्यारु विध धरै ।।
सामायक पोसो बहु और । पूजा दान सुपात्र सुठौर ।।३५८।।
इरण विध परम सुश्रावक होइ । जती धरै तेरह विध सोइ ।।
पच महाव्रत साधै जोग । सुमति पच वर्जित सुभ भोग ।।३५६।।
तीन गुप्ति पालै दिन राति । मन वच काया सझ्या प्रात ।।
सहस्र अठारा अग समेत । सीलव्रत पालै बहु हेत ।।३६०।।
आपरण थकी बडी जो होइ । माता सम जाणइ सब कोइ ।।
जे अपनी सरभर की तिरी । जानहु वहनि धरम की धरी ।।३६१।।
आपरण सेती छोटी आन । पुत्री सम जाणै करि ज्ञान ।।
बहुत भाति के सुनि उपदेस । तिणउ धरथा मुनिवर का भेस ।।३६२।।
कोई सुनि श्रावक व्रत लेइ । बचन पयोग भाति वहु देइ ।।
कियो विहार दु दुभी ध्वनी । प्रानी आनदे गुन गनी ।।३६२।।
नृत्य करै गावै गुन गान । सुरवाजे सुर दुंदु प्रमान ।।
लोकपाल आगै पग धरै । सौ सौ कोस लगि सोभा करै ।।३६३।।
आगं धर्म चक्र सुभ मई । चले प्रभु जय जय धु नि भई ।।
वीणा वेण मृदंग झालरी । सष नफीरी वाजैं षरी ।।३६४।।
घनहर घमउ मदल धु नि घोर । हासि कुलाहल करई सुरसोर ।।
सावधान दसहु दिश पूर । करई दुष्ट पापी ने दूरि ।।३६५।।
आवै लोग पूछै विध धर्म । ह्लासै असुभ पाप के कर्म ।।
दरसन अंध पगु पग डोल । बहिर सुनै मू क मुष बोल ।।३६६।।
इरण अतिसय सौ करई विहार । पावै जीव वहुत आधार ।।
धरम प्रगट प्रतिबोधे देस । फिर आये कैलास जिनेस ।।३६७।।
समोसरण मे राजत धनी । च्यार ग्यान चौरासी गुनी ।।
मति श्रुति अवधि ग्यान के धनी । मनपर्यय केवल गुन गुनी ।।३६८।।

सम्राट भरत द्वारा दिग्विजय

भरत चक्र पाया सुभ ठोर । देव सहस्र सेवै कर जोर ।।
नवविध अष्ट सिद्धि सयुक्त । चौदह रतन सुलब्धि बहुत ।।३६६।।
हय गय वाहन अधिक असेस । सहस्र छयानवै नवै नरेस ।।
सहस्र छयानवै नारी भनी । ताकी उपमा जाय न गिनी ।।३७०।।

भरत भूप साधे छह षंड । देव दानव पैं कीया दंड ।।
आये अजोध्या देस सब जीत । चक्र न चले भई मन चित ।।३७१।।

कवरण देस स्याधौ बिन रह्या । तब मंत्री सब ब्योरा कह्या ।।
निन्याणवें तुम्हारे वीर । इतादेस भुगतैं बलवीर ।।३७२।।

रहई एकठा बहुत सनेह । रूपवत कंचन सम देह ।।
मानें नहीं तुम्हारी आंन । ताथी चक्र न आवे थान ।।३७३।।

ऐसी सुनिकर भेज्या दूत । उनकौ वह समझायौं बहूत ।।
सेवा करो मान मुझ आंन । मंत्री लिख भेज्या फरमान ।।३७४।।

गया दूत कागद दे हाथ । मुष सौं वचनं कहैं बहु भाति ।।
भरत चक्रव्रत बाहुबली । तुम सेवा करौं तास की भली ।।३७५।।

आग्या मांनहु लेवरी । तुम निचंत क्यू बैठे घरी ।।
अब तुम चलौ हमारे साथ । चलो वेग पगलावो माथ ।।३७६।।

इतनी सुणिते भणैं कुमार । भरत राज भुगतैं संसार ।।
हमने देस पिता जे दिये । ते भी चुभई भरत के हिये ।।३७७।।

जइवह अजहुम त्रिपत न भया । तो ए लेहुं सब एह हम दिया ।।
छाडि रिधि ते गए कविलास । दिक्षा लई पिता के पास ।।३७८।।

फिरया दूत भरत पै गया । सब ब्योरा सेती वरनया ।।
भरत सुण्यां वे हुवा जती । किया सोच मन मे बहु भती ।।३७९।।

दूत वयण बोलीया कठोर । उनकै मन कछु बैठी और ।।
वार वारि भरत पछताय । तोउ न चक्र गढ भीतर जाय ।।३८०।।

फिरि मंत्री पूछे सुबुलाय । कहै मंत्री सुनि पृथ्वीराय ।।
बाहुबलि पोदनपुर धनी । ताकै संग सेन्यां है घनी ।।३८१।।

वह आज्ञा मानत है नाहि । ताथी चक्र न बैठहि ठाम ।।
इतनी सु नि भेजीया वसीठ । सूरा सुभट वचना दीठ ।।३८२।।

पोदनपुर का वैभव

पत्री लेकर चाल्या वकील । गया पोयणपुर न लाई ढील ।।
देष्या नगर सुषी सब लोग । कीजे पान फूल को भोग ।।३८३।।

ऊचे मंदिर सब इकसार । ढूंढता पहुता राजदरबार ।।
सौंधा पांन घर घर के बीच । पीकतणी गलीयां मे कीच ।।३८४।।

घर घर नारी जांणि अपछरा । राजमहल सब सेती षरा ।।
पौलवान देष्या दरबार । ते सीमैं भूपति अनुहार ।।३८५।।

ताहि देष मन सोचै दूत । लषन दीसै राज सयुत्त ।।
जो इह बैठया कोई और । तउ टोकैगा जातै पौर ।।३८६।।
चल्या दूत तब पौरि मझार । तिहा पौलिया हुआ अडवार ।।
पूछै कौण किहां तू जात । वहु हमसौं समझावी बात ।।३८७।।
कहै दूत मो भेज्या भरत । राजा सौं पहुचावो तुरत ।।
गया पौलिया राजा पास । नमस्कार करि विनती भास ।।३८८।।
राजसभा सुरपति सी जुरी । को का दूत सौन्या तिह घरी ।।
राजसभा में आया दूत । नमस्कार तब करि बहुत ।।३८९।।
ठाडा भया दूत की ठोर । ठीक ठिकाने ठाडे और ।।
पूछै भूप भरत कुसलात । बोल्या दूत धरि मस्तक हाथ ।।३९०।।
भरत चक्रधारी बलवत । छहु षड जीते सामत ।।
नरपति खगपति माने सेव । छउ षडका रह्या न भेव ।।३९१।।
तुम भी उनकी सेवा करो । आज्ञा जाकी मत वीसरो ।।
इतनी सुनि कोप्या भूपति । अजहू वाके नाही थिति ।।३९२।।
जे वह करै चक्र की मनी । चक्रवर्त्ति कुंभारा भी भनी ।।
भरत नाम भीडे का कहै । इता गर्ब क्यो उसमे रहै ।।३९३।।
मी कौं दिया पिता ने राज । वह हम स्यौं क्या राषै काज ।।
जो वाकै मन होय सदेह । करो जुध आवो सु सनेह ।।३९४।।
इतनी सुणि फिर आया दूत । कही बात सुणि कोप्या बहुत ।।
सुतउ केहरि मारचउ ढेल । जानु पडया अगनि मे तेल ।।३९५ ।

भरत बाहुबली युद्ध

जानू सकती हिये मे लगी । राते नयन लहर सी लगी ।।
नगर माहि बाजै निसान । सेना बहुत जुरी तिहा आन ।।३९६।।
सुर सुभट निकसे वानेत । अगन मोडै जुडिमा षेत ।।
हय गय रथ पायक बहु चले । वाजै मारू बागे भले ।।३९७।।
सेना तिहा चली चतुरंग । पहर आभर्न खरे सुरंग ।।
उडियन छाया आसमान । ऊडल भया चंद अरु भान ।।३९८।।
थरहराट करै सब मही । कंपे गिरवर जलहर सही ।।
जिहा जाय सेना उतरई । प्रथिवी सही न रीती पिरई ।।३९९।।
सुरत सुनी बाहुबल बली । सूरवीर मानी बहु रली ।।
साजी सैन्य भया असवार । घेरचा आगै मारग अडवार ।।४००।।

मारयो खेत मुंह मिल गये । बजै भुंझार मारू कीये ॥
सुनै सुर नर भए अडोल । सिलहसौं भस भाले खोल ॥४०१॥
चहु धास छोडे अरु वांन । तुपक गोली भरि मारै तान ॥
बरछी खाडा लीन्हें हाथ । भूझै सूर पडै घरमांथ ॥४०२॥
दुहुवां सूर सुभट जो लरई । प्रायुध टूटै धरती परई ॥
जोधा सूर सुभट स्यौ जुटै । बाथौ बाथ प्रापस मे कढै ॥४०३॥
मैंगल सौं मैंगल भूभंत । परै लोथ लानो परबंत ॥
भुमैं स्वामि धरम के काज । जिरणकै छत्री कुल की लाज ॥४०४॥
धुमैं घायल धरती पडै । गीध्र लोथर गत मैं पडै ॥
दुहुवां जुध भया बहुभाति । हारिन न मानें दोऊं भ्रात ॥४०५॥
तबहू सोच किया भूपती । कहै प्रजा की यह कुंण गती ॥
प्रजा दुख देवैं बेकाज । हम तुम सनमुख भूझै आजि ॥४०६॥
सेना कौ दुख काहे देय । हम तुम जुध मनमान करेह ॥
दृष्टि जुध थाप्या दहु वोर । लगी दृष्टि ज्यौं चंद्र चकोर ॥४०७॥
भरत तै बाहुबलि धनुष पचीस । ऊंचा घरणां करै को रीस ॥
हारया भरत जब जल जुध होय । बाहुबल जीत्या बार दोय ॥४०८॥
मुष्टि जुध थापिया बहौरि । लथ पथ हारे माची रौर ॥
बलि लीया भरथ ऊचाइ । भरत मान भंग हुवा राइ ॥४०९॥
बाहुबलि करै मनौंहार । हम थे बाल तुम उठाए बहुवार ॥
इस कारण तुम लीए उठाय । चूलन लगी तुम्हारी काय ॥४१०॥
मुष्ट युद्ध फिर थापी बात । पहली भरत करीउ संघात ॥
पाछै बाहुबली सभारि । मुष्ठि उठाई उतनी बार ॥४११॥
तब मन मे आया इह ग्यान । बडा वीर ए पिता समान ॥
जो भाई पर कीजे चोट । तो सिर चढै पाप की पोट ॥४१२॥

बाहुबली द्वारा विजय केपश्चात् वैराग्यलेना

कर उठाए जो रीता पडै । सूरवरत अब मेरा टरै ॥
भरी मुष्ट कर लुंचे केस । बाहुबल भए दिगंबर भेस ॥४१३॥
एक अंगुठे के धरि जोग । अचिरज भए देख सब लोग ॥
सहैं परिस्या बावीस अंग । ध्यान लहर की उठै तरंग ॥४१४॥
बारह प्रेक्षा नौ सो चित । लोक सरूप बिचारै नित ॥
पंच महाव्रत समति जु पाच । मन वच इंद्री साधी सांचि ॥४१५॥

छह रित सहै परीसहै काय । स्याम भुयगम देह लपटाय ।।
रही वेल वन लपट सरीर । बाधा की तहँ लहै न पीर ।।४१६।।
बर्षा काल वृक्षतल जोग । सीयालै तरनी जल जोग ।।
उह्नालै परवत धरि ध्यान । तपै बहु था उपर भान ।।
अंतर चिदानद स्युं नेह । ममता रत्ती न राषी देह ।। ४१७।।

सोरठा

आतम सो ल्यौ ल्याइ, धरचो ध्यान चिद्रूप को ।
असुभ करम मिटाइ, केवलग्यान आया निकट ।।४१८।।

चौपई

भरत ब्राह्मी अर सुंदरी । समवरण पहुचे तिह घरी ।।
नमस्कार करि पूछैं बात । बाहूबल सहैं परीसह गात ।।४१६।।
अंगुष्ठासिउ ठाडा तप करइ । असुभ करम कब वाके षपई ।।
केवल लब्धि लहैसी कबै । मोस्युं प्रगट कहौ प्रभु अबै ।।४२०।।
श्री जिन बोले ग्यान विचार । उन राष्या मन मे अहकार ।।
दोनो चरण धरा जब धरै । अहंकार तब दूरै टरै ।।४२१।।
उपजै केवल ग्यांन तुरत । पामे भवसायरना अत ।।
प्रभू तणा साभल ए वैण । आत प्रतै समभावै अंन ।।४२२।।
मांन गयद थी उतरो वीर । क्रोध अगनि तजि हूजे नीर ।।
किसकी पृथ्वी किसका राज । मोसम बहुत कर गए राज ।।४२३।।
केते हुए होहि हैं घने । तिनकी गिनती कहा लौं गिने ।।
इह ससार सुपन की रिध । जाग्या कछुव न देख्या सिध ।।४२४।।
मन का ससय कीजे दूरि । पाव धरो धरती पर पूर ।।
इतनी सुनि मन उपसम किया । पाव धरत ही केवल लिया ।।४२५।।
टूटे असुभ करम तिह बार । पहुचे जाय सु मोक्ष मझारि ।।
जोतै जोति मिली तब जाय । अजर अमर पदई सुख पाय ।।४२६।।

दोहा

बाहुबलि सब विधि बली, यस प्रगटचा ससार ।
ग्यान सरीषी नाव चढि, पहुता भवदधि पार ।।४२७।।

चौपई

भरत राज भुगतै ससार । परथी भोग भूमि अनुहारि ।।
पुत्र पांचसै सोभा घनी । सूरवीर ग्यानी गुन घनी ।।४२८।।

ब्राह्मण वर्ग की उत्पत्ति

श्रेणिक बहुरि करी परसन्न । ब्राह्मण की कहिए उत्पन्न ॥
कैसे थाप्या चउथा वर्ण । कहो प्रभु मो संसय हर्ण ॥४२९॥
भरत भूमि निकंटक राज । पहली करै धरम का काज ॥
छहु षंड की लछमी जुरी । दान देण की इच्छा करी ॥४३०॥
बहु पकवान लक्ष्मी घनी । आभूषन सोभा अति घनी ॥
ले सब सौज गए कैलास । मन मे दान देण की आस ॥४३१॥
समोसरण पहुंच्या तिह बार । दई प्रदक्षिना करि नमस्कार ॥
प्रभूजी हम परि किरपा करो । दान देय मम पातिग हरो ॥४३२॥
रिषभदेव बोले समभाय । ये दान न लेहैं मुनिराय ॥
ए सब छोडि भए वैराग । इण कै कंचा की जैसी त्याग ॥४३३॥
देही ममता राषै नांहि । पाखण महीने भोजन षाइं ॥
जे तपसी हूं लछमी गहैं । नरक निगोद महादुष लहै ॥४३४॥
जनम अकारथ तिसका जाण । ले दिव्या जे होय अयाण ॥
माया वस्त्र जो राषै जोड । दरसन ले त्यावै वह षोडि ॥४३५॥
मर करि भ्रमै चतुरगति जीव । पाप पोट ले अपनी ग्रीव ॥
ताते ए तुम फेर ले जाउ । नहिं ए दान लेहिं मुनिनाह ॥४३६॥
तबैं भरत फिर आया गेह । दान जू काढया किस कौं देह ॥
बारबार करै नृप सोच । दान लेण की किसै नहीं रुच ॥४३७॥
सब ही सुखी दुखी नहि कोइ । किसके मन लेने की होइ ॥
दानसाला माडी बन बीच । बोए जव[1] तहा क्यारी सीच ॥४३८॥
नगर माहि बाज्या निसान । हाजर होय नृप तणी आन ॥
सब मिल आवो राजा पास । देस देस नरपति नर जास ॥४३९॥
कोई न षुदै क्यारी हरी । जिनके हिये ग्यान मति धरी ॥
जे मूरिषु ते खु दन चले । बिनु विवेक अग्यानी भले ॥४४०॥
चक्रवर्त्ति देउं नरनाय । जे ग्यानी ते जुदे बुलाय ॥
क्यारी खूदन आये लोग । जुदा थान दीना तिन जोग ॥४४१॥
अग्यानी विदा कर दिये । ग्यानी कु आदर बहु किये ॥
नरपति वचन वीनती कहै । इह इच्छा मेरे मनु रहै ॥४४२॥
मांगु वचन देहि जौ मोहि । पचो विनय सुनावैं तोहि ॥
वेग चलो जल भरकर लेहु । जो मैं चाहू सो मोहि देहु ॥४४ ॥

१–जौ

सोचैं सकल विचारैं चित्त । अैसो कहा है हम पर मित्त ॥
जाकूं चाहै पृथ्वीनाथ । सब ही नीर लिये निज हाथ ॥४४४॥
बोले भरत लेहु तुम दान । अैसी सुनि ठाडे धरि ध्यान ॥
तब बोले हम चाहैं कहा । करवो टइर दान ले तहां ।.४४५॥
तुम प्रसाद हम है सब सुषी । कोई नाहि बसै नरु दुषी ॥
अब तुम हम पैं बाचा मागि । दीया चाहो हमको त्याग ॥४४६॥
राज वचन अौ वाचा दई । तब ही दान विधि थापी सही ॥
हैम रतन के जज्ञन पवित्त । नव नव तार बनाई रीत ॥४४७॥
नो नो गुन का इक इक तार । गुन इक्यासी वडे विसतार ॥
धोवती मुद्रिका अौर जनेउ । नमस्कार करि कीनो सेउ ॥४४८॥
उत्तम रीति दइ ज्योणार । दक्षिणा दे कीनी मनुहार ॥
ये अपनेमे नगर वे घने । सबसे उत्तम बांभण भने ॥४४९॥
पूजनीक उत्तम कुल धरा । हम सब तुल्य न को अवतारा ॥
रावरक पूजैं सब कोइ । चौथा वरण ऐसी विधि होइ ॥४५०॥
भरत गया श्री जिन की जाति । नमस्कार करि जोरे हाथ ॥
बाभण थापि दान मे दीया । सब व्यवहार स्वामीस्यु कह्या ॥४५१॥
बानी तब भाषैं भगवंत । ए थापेंगे पाप महत ॥
हिंसा होम करेंगे घने । तिनके पाप कहा लौं भनें ॥४५२॥
च्यार वेद थापेगे अौर । तिनमे पाप अनत किरोड ॥
षोटे दान प्रकासैं वहु भाति । उलटी सब थापेंगे बात ॥४५३॥
धरती हल रगबु असमरी । हस्ती अौर तुरगम तिरी ॥
षोटे देंगे घणु उपदेस । क्रिया भ्रष्ट सुनि होंय नरेस ॥४५४॥
जैनधरम के निंदक होइ । असभव बात कहैंगे सोय ॥
अज गज गउ थापेगे भेद । असव अौर जीवो कौं षेद ॥४५५॥
इतनो सुनी भरत ने बात । मैं इह बुरी करी बहु भाति ॥
अब इह भेष करू जाय दूरि । इनकूं मारि गमाऊं मूर ॥४५६॥
तब स्वामी समझावै ग्यान । होय पाप जो हति हैं प्रान ॥
जीव हते भव भव दुंष लहैं । ऐसी बात जिनेसुर कहै ॥४५७॥
होणहार टारी नहीं जाय । अैसा धरउ न षोटा भाय ॥
राजा भरत रवि जेम प्रताप । पूंन्य करई सब टूटे पाप ॥४५८॥

परजा सुषी बसई ता सर्ण । परदुष भंजन दारिद्र हर्ण ।।
श्री भगवत धरम समभाय । मोक्ष मारग के भेद बताय ।।४५६।।

पुन्य विभूति सकल खिर गई । वानी जोत एक सम भई ।।
एक मास रहे इह भाति । ना कछु वानी ना कछु बात ।।४६०।।
माघव बदी चौदस परवान । श्री जिन पहुचे मुक्ति मिलान ।।
देह कपूर समान सब खिरी । बिज्वल धात चिमकसी करी ।।४६१।।
सूरपति आय किया कल्याण । पूजा रची भगवंतिसौं आणि ।।४६२।।

दूहा

श्री जिण धरम प्रगट किया, प्रतिबोधे बहु लोग ।।
आप मुक्ति रमणी वरी, तिहा सासते भोग ।।४६३।।

इति श्री पद्मपुराणे श्रेणिकप्रश्न श्री ऋषभ महातम विधानकं संधि ।।१।।

द्वितीय संधि

भरत का वैराग्य

चौपई

भरत भूप छह षड का धनी । राजसभा सोभा अति वनी ।।
छत्री सहसश्रो विद्याधर भूप । एते भुमिगोचरी अनूप ।।१।।
मुकट बध बत्तीस हजार । छयानवै सहस नारी भरतार ।।
दरपन देख धवल सिर केस । मनमे कपा भरत नरेस ।।२।।
मंत्री सो पूछी जब बात । कप्या भूप पसीना गात ।।
भोग भुगत मे बीती आव । धरम ध्यान सो धरचा न भाव ।।३।।
मोह माया में भया अचेत । जरा दूत कच आए स्वेत ।।
अब सब राज विभूति को त्याग । धरौं चारित्र मन बच वैराग ।।४।।
आदितजस को सौंप्या राज । आप सवारया आतम काज ।।
पालै प्रजा भोगवै भोग । साधै भरथ वनमे नित जोग ।।५।।

भरत का परिवार

उपज्या केवल भया निरवांन । सुरपति पूजि गये निजथांन ।।
आदितजस के सिदजस पूत । बल अकुस बल महाबल मूत ।।६।।
अतिबल अमरत सबद सुभद्र । महेन्द्र महोदर भीम सुरेन्द्र ।।
रवितेज प्रभतेज भूपती । परताप मनि अति बीर सुभमती ।।७।।
सुविरत उदत और बहुभूप । उनका बरनो कहा स्वरूप ।।
केइक तप करि भये केवली । गए मुक्ति पूजी मन रली ।।८।।

केई सुरग देवगति लही । इक्ष्वाकवस कुल उत्तम सही ।।
बाहुबलि के सोमप्रभ भया । महाबल सुबल धर्म धुर किया ।।६।।
भुजबल देवमादि अतिबली । इनकी कीरति जग मे भली ।।
केई मुक्त केई सुर भए । काटि कर्म ऊची गति गए ।।१०।।
सोमवस का किया बषान । नवि वंसी विद्याधर जानि ।।
विद्याधर परवत का भूप । **नमी** विद्याधर बहुत स्वरूप ।।११।।
ताकै **रत्नमाली** सुत एक । जाने राज काज की टेक ।।
रतनवीर्य रतनरथ और । रतनचित्र रथ सुष की ठौर ।।१२।।
बज्रजंघ वज्रसित दिष्ट । बज्रधुज वज्राधव जेष्ठ ।।
सुवजर अरु वज्राभृत राय । वज्रभान वज्रवाह गुनभाय ।।१३।।
वज्रवाक बज्रसिंध नरेस । वज्राष्ट साधे बहुदेश ।।
वज्ररतन भीम वज्रवान । विद्युन्मुष सवकच बलबान ।।१४।।
बज्रहस्त वदतांन विद्योत । **विद्युतद्दढ** कामनी सुहोत ।।
इकनिस पोढे दम्पति सग । सुष सज्या सोभै सुभ रग ।।१५।।
देश राज की महिमा कहैं । राणी का मन सुणि उमगहै ।।
मोहि दिषावौ वे सब ठाउ । कैसे द्वीप परवत अरु गाव ।।१६।।
इतनी सुणि साजिया विमान । दपति बैठ चले सुष मान ।।
पंचागिर परवत तर हान । सजै सुरति मुनि आतम ध्यान ।।१७।।
रुक्या विमान न आगे चलै । विद्याधर मन ज्वाला जलै ।।
कै कोई मित्र कै दुरजन ठाउ । कै कोई सिद्ध तपा कै भाउ ।।१८।।
असा चितवि गहि कमान । चारूं कूट चलाया बान ।।
दामिन चमकी उजयारा भया । मुनिवर देषि उपद्रव किया ।।१६।।
पापी दिया साधनें दुष । वह अपने मन माने सुष ।।
मुनिवर चित्त मे भय नवि घरी । असुभ करम टूटे तिह घरी ।।२०।।
सह परीसह अपने अग । उपज्या केवल लहर तुरत ।।
चउविध देव किया जयकार । कचन मढी बनी तिहवार ।।२१।।
विद्युतदृढ बाधिया धनेंद्र । विद्यालई छीन सब संघ ।।
मुनि बैठा आतम ल्यो लाइ । ते क्यु दुष दिया यहा आई ।।२२।।
तब विद्याधर विनती करै । ऐसे पाप टरै ना टरै ।
साधहै दुख दीया वेकाज । हरत परत षोई सब लाज ।।२३।।
कठिन पाप मैं कियो अथाय । अब मैं पाप टरै किह भाय ।।
बिन विद्या किम पहुचे गेह । चिंता व्यापी गगपति देह ।।२४।।

विद्याधर पावै जई मोहि । मारै प्रचुर करै जिय छोहि ।।
जो विद्या मोकुं फिर देइ । भूल न करूं पाप सौं नेह ।।२५।।
धरणेंद्र की तब आग्या भई । बारावरस कर तपस्या नई ।।
तबै पावसी विद्या सुध । फिर मत करै पाप की बुधि ।।२६।।
पूजै धरणेन्द्र मुनिवर सौ वात । इन तुमस्यौ क्यों किया धात ।।
क्यो इननें तुम कूं दुख दिया । कारन कौन उपद्रव किया ।।२७।।
व्योरो सकल कहो समझाव । ज्यूं मेरे मन संसा जाय ।।
मुनि बोले पुनि ग्यान विचारि । प्राणी पावै सकल आधार ।।२८।।

सत्यघोष की कथा

संकर ग्राम देस का नाम । सरव जीव सुखसौ विश्राम ।।
श्रीवरधन है तहा भूपती । ता पट राणी **कुसमावली** ।।२९।।
सोम सरमा ब्राह्मण तिहा बसै । महाकुचील देख सब हसै ।।
उन छोडी जीवन की आस । दिक्षा लई सन्यासी पास ।।३०।।
पच अगन तप साधै जोग । ताकी सेव करै बहु लोग ।।
अंतकाल उन छोडी देह । उपज्या जाय देव के गेह ।।३१।।
धूमकेतु नाम तिहा धरया । देखन मन भय उपजै खरा ।।
वहा भी आव वितीत सब गई । मनुष देह फिर पाई नई ।।३२।।
वाहन सिष्य ब्राह्मन के गेह । भया पुत्र अति सुन्दर देह ।।
सत्यघोष बालक का नाम । दिन दिन बढै विराजै ठाम ।।३३।।
पाईविरिध सब विद्या पढी । ज्योतिक ग्रंथ अति महा बढी ।।
व्याकर्ण का लह्या सब भेद । कहै पुराणरु च्यारू वेद ।।३४।।
वैदिक सामोद्रिक गुंण सार । ग्यान बाधि बढौ वुधि अपार ।।
छुरी कतरनी जनेउ राखै । झूठो वयण न मुख थी भाखै ।।३५।।
जो मुख असत्य वचन नीसरै । षंड जीभ तब पर ही करै ।।
कीरति प्रगटि जब सब संसार । ऐसी रीत सुंणी भूपार ।।३६।।
सत्यघोष प्रति लिया बुलाय । प्रोहित थाप्या आपणैं राइ ।।
आदर मान देइ सब कोई । दिन दिन कारण चौगुणा होइ ।।३७।।
नेमिदत्त वाणिक जौंहरी । लाद चल्या समंद की पुरी ।।
भरे जिहाज सौंज मन रोच । **नेमिदत्त** मन उपज्या सोच ।।३८।।
इतना द्रव्य लिया मैं संग । कुछ घर जाउं रहै अभंग ।।
चार रतन जे धरे अमोल । **सत्यघोष** नै सोपे तोल ।।३९।।

जब फिर ग्राउ तब मैं लेव । इनही तुम राखौ सत देव ।।
सत्यघोष कूं सौंपे लाल । विनज निमित्त किया उन चाल ।।४०।।
ताकू वीत गये दिन घने । **सत्यघोष** चित्त ग्रौरं बने ।।
विप्र विचारया मन मे खोट । खोया धरम लोभ की ग्रोट ।।४१।।
मदिर ग्रपने दिया ढहाय । ग्रौर भाति के फेर बनाय ।।
जो कोइ देखे सो भरमाय । च्यारि पौलिकी ग्रौरं भाइ ।।४२।।
नेमिदत्त के बहे जिहाज । फिरि ग्राये लालौ के काज ।।
डूबी सब कछु चित न करी । जाती सत्यघोष ने धरी ।।४३।।
लेय रतन फिर करू व्योपार । बढै लक्ष धन होय ग्रपार ।।
सत्यघोष सतधने ग्रावास । **नेमिदत्त** देख्या तट पास ।।४४।।
रूप दलिद्री फाटे चीर । ग्राय लग्या सागर के तीर ।।
सभा मे ग्राय चलायी बात । मैं सुपना देष्या इण भात ।।४५।।
एक रक मुझ सो यो कहै । मेरी थापना तो पै रहै ।।
मागे रतन सुपने मे ग्राय । तिसका फल तुम द्यो समझाय ।।४६।।

सत्यघोष के पास जाना

नेमिदत्त पहुच्या तिह ठोर । देखे मदिर ग्रौर ही ग्रौर ।।
पूछी **सत्यघोष** की पौरि । **नेमिदत्त** ग्रावियौ बहोरि ।।४७।।
सभा माहि **नेमिदत्त** गया । **सत्यघोष** ने वदत भया ।।
सत्यघोष देवै नहि ताहि । **नेमिदत्त** ताहि रह्यो लोभाइ ।।४८।।
कहै रतन मेरे तुम देहु । बोलै विप्र पचो सुणि लेहु ।।
मै सुपना देख्या जह जात । सो तुम देखो ग्रब ही वात ।।४६।।
राय सुहाती बोले सबै । धक्का दिये वणिक कु तबै ।।
नेमिदत्त पहुचो नृपद्वार । बे कर जोड करी पुकार ।।५०।।

राजा से निवेदन

च्यारि रतन प्रोहित कु दीये । कीजे न्याय तीन धरि हिये ।।
राय कहै इह गहिलो कोय । **सत्यघोष** थी ए मन होय ।।५१।।
दूरि किया धका दिव राय । वावरि मई को करै सहाये ।।
राज सभातैं भया निरास । बसती छोडि फिरै बनवास ।।५२।।
रात रहै वृक्षन मे जाय । च्यारि लाल निस दिन विललाय ।।
एक निस सुंणि राणी ए बात । बहोत दिन भए याहि विललात ।।५३।।

करो न्याव राजा प्रभूनाथ । यह तो है तुमरी सरणाय ।।
या को न्याव वेग तुम करो । यह भ्रमतो डोलै बावरो ।।५४।।
बोले राजा राणी सुणै । सत्यघोष क्यू कपटी घुणै ।।
बावला गहलावै क्या फिरै । ताको न्याव कवण विध करै ।।५५।।
राणी बोली सुणौं नरेस । इते तो भ्रमई तुम्हरे देस ।।
एक जीभ कूकै दिन रात । गहला कहिए किण भांति ।।५६।।

राणी द्वारा न्याय

जो तुम मोकूं आज्ञा देहु । याको न्याव तुम मो पै लेव ।।
नेमिदत्त तोडे तिह बार । राजा ने जाकर कियो जुहार ।।५७।।
राजा राणी मंदिर माहि । नेमिदत्त बैठा इक ठांह ।।
सत्यघोष को क्या तिंह घरी । चौपड खेलन बाजी धरी ।।५८।।
प्रोहित नें हारी मुंदडी । राणी जीत ले करमे धरी ।।
दई मुद्रिका दासी टेर । जाहु पंथडाणी पै इण बेर ।।५९।।
कहियो रतन मागै सतघोष । जैन पतीजे छाप हि पेषि ।।
मिश्रानी देवै नहि लाल : दासी आयी चतुर विसाल ।।६०।।
धोती पतरा जनेउ हार । दासी गई फेर तिह बार ।।
स्याम वस्त्र मे बाधे रत्न । जौ न पत्यातउ देखिए जतन ।।६१।।
पोथी जनेउ धोवती देष । दीए लाल ते च्यारू पेषि ।।
आण दिये राणी के हाथ । अचिरज भया पृथ्वी का नाथ ।।६२।।
राजा बहुत अचंभा करै । अैसे तै अैसी क्यो मरै ।।
औरहु रत्न भराए थाल । तिनमे डारे च्यारुं लाल ।।६३।।
नेमिदत्त बुलवाया वान । अपने रतन देहु पहिचान ।।
देखे सकल रत्न परिहरे । अपने थे सो लेकर धरे ।।६४।।
तव राजा प्रोहित सू कहै । काती छुरी जनेऊ सुरेहै ।।
अब क्यो जिम्या राषई मूढ । तू पाषंडी अतर गूढ ।।६५।।
मुंड मूंडि मुष काल कराय । सकल नगर मांही फेराय ।।
देस निकारो नाम न लेहु । अब देषू तो सूली देहु ।।६६।।
बाहन शिष्य जती पै जाय । दिक्षा लई कर मन बच काय ।।
नरपति ने भी दिक्षा लई । ब्रह्मविमान देव थिति भई ।।६७।।
आव मुंज करि षेत्र विदेह । सजै सुत राजा मभ देह ।।
सहज विचार किया मैं जोग । छोडि दिये संसारी भोग ।।६८।।

वा सबध जोग जो आय । सु नि बात मन ससा जाय ।।
नेमिदत्त ने दीक्षा धरी । धरणेंद्र पदवी पांई खरी ।।६६।।

विद्य तदृढ भी विद्या पाइ । फिर कर आवा अपनी ठाय ।।
राज करत बीते दिन घने । धरम विचारया अपने मने ।।७०।।

दिढधरपुत्र ने सौंप्या राज । आपन किया मुक्ति का साज ।।
अस्वधरम अस्वध्वज भये । **पदमनांभ पदमाली** थये ।।७१।।

दूहा

पद्मरथ भी सिद्ध जन, सिंघ जध मृग धर्ण ।।
मेघसूर सिंघ प्रभू सिंहकेतु मन हर्ण ।।७२।।

चौपई

शेशाक चन्द्र **श्री** चन्द्र शेष । उद्ररथ वक्रधर मे विसेष ।।
चका इन्द्र **चक्रघ्रत** मनगर्व । मनाक मनवास मन गुन सर्व ।।७३।।

मनोज समन समेद्र नेद्र । मन गोम विजइ सोट आनद ।।
लवात धर रक्तौं उष्ट भूप । हरिचद्र पुरचद्र सरूप ।।७४।।

पूरग चद्र भया काल इद्र । चद्रमा चंद्र चूरवाचे इन्द्र ।।
उरपान पक केस वरराय । वृचुर सचुर वजरचुर सुभकाय ।।७५।।

भर चुरा टका वाहन जटी । वाहन ते मन हरष घग वटी ।।
याही वस भूप अति घने । करि तपु अष्ट करम सब हने ।।७६।।

केई स्वर्ग देवता भए । केई मुक्ति रमरिण मे गए ।।
विद्याधर का वरण्या वम । वरण सुनाये तीन्यु अस ।।७७।।

इति श्री पद्मपुराणे विद्याधर वंस वर्णन सम्पूर्णम् ।।

तृतीय संधि

चौपई

इक्ष्वाक वंश वर्णन

इष्वाक वस बरनू बहोरि । सु नु बात चित्त मे राखो ठोर ।।
धरनीधर जगधारन धीर । तोत्रिदसंजपुत्र बल वीर ।।१।।

धरनीधर दिक्षा पद धरया । राजा **त्रिदसंज को** करया ।।
इन्द्ररेखा विवाह नारि । रूप लछिन शशि की उनहारि ।।२।।

तास गर्भ **जितसत्रु** भया । **बहुत** आनद भूप मन ठया ।।
पोयनपुर सोमवसी राय । वानेंद्र भूपति तिस आय ।।३।।

अभैमाला राणी ता गेह । विजया कन्या कंचन सम देह ॥
जितसत्रु सौं दई विवाह । भोग मगन नि करै उछाह ॥४॥
इक निस सुपने षोडस देषि । भली वस्तु पाई सुविशेष ॥
विजया देवी उठी प्रभात । पति सौं कहैं सुपन की बात ॥५॥
सुणि सपने मन हुआ उलास । सुख मानै करि भोग बिलास ॥
जेष्ठ वदि मावस्या शुभ वेर । भई गर्भ पूजै सुर पैर ॥६॥
जै जै कार सबद सुर करै । देवी छप्पन सेवा अनुसरै ॥
जैसे कमल पत्र जल बुंद । जैसे स्वाति जल सीप समंद ॥७॥

द्वितीय तीर्थंकर अजितनाथ वर्णन

माघ सुदि दसमी शुभ वार । श्री भगवत लिया अवतार ॥
नक्षत्र रोहणी वरिया भली । तीन लोक सुन मानें रली ॥८॥

जनम कल्याणक कर गये देव । रतन पुष्प वरषे बहु भेव ॥
दसहु दिसा दुंदुभी होय । भयौ जनम जानहु सहु कोइ ॥९॥
पूरब लाष बहत्तर आव । साढे चारसै धनुष की काय ॥
सुरपति कियो महोछव आन । रीति पाछली करी प्रमान ॥१०॥

अभयमाला व्याही सुंदरी । रूप लक्षण कर सीभै धरी ॥
राजा भोग वीते दिन घने । वन उपवन सोभा अति वने ॥११॥
जहा सरोवर निरमल नीर । छाया सघन बिहंगम तीर ॥
फूले कमल रविवंसी तिहा । चद्रवंसी मुरझाये जहा ॥१२॥
तब मन मान्या लोक सरूप । बूडे जीव मोह के कूप ॥
भोग भुगति की निंदा करी । जै जै सबदहु अति ही धरी ॥१३॥
माघ वदी नौमि सु जिनेश । शिवका चढि वन किया प्रवेश ॥
उतर पालकी लोचे केस । श्री जिन भए जती के भेस ॥१४॥
बारह विध तप आतम ध्यांन । सुर किया तहा तप कल्यान ॥
छह उवास कीये इकसार । ब्रह्मदत्त कै लिया आहार ॥१५॥
भोजन रीति इसी विधि करी । चिदानद ल्यौ लाई घरी ॥
बारह बरस रहे छदमस्त । चार करम जीते बहु कस्त ॥१६॥
पोस सुदि ग्यारस शुभ घरी । परकत त्रेसठि न्यारी करी ॥
पाया केवल ज्ञान जिनेन्द्र । सुर नर तीन लोक आनंद ॥१७॥

बाजै सुर दुंदुभी बहु भेर । रचियो समोसर्ण तिह वेर ।।
साढे ग्यारह जोजन समोसर्ण । गणरतवउ लागी छानिकर्ण ।।१८।।

दोष अठारह कीये दूर । बारह सभा रही भरपूर ।।
चोतिस अतिसय गुण छियालीस । तीन छत्र बिराजैं सीस ।।१९।।

चौंसठ चमर ढुरें इक बार । बानी हुई त्रिभुवन आधार ।।
विजयसागर त्रिदज सकावीर । **मंगला** राणी गुण गभीर ।।२०।।

ताको पुत्र **सगर** चक्रवर्त्ति । छ षड करि साधे सुरत्ति ।।
विजयारध दक्षिन दिस भूप । विद्या साधी नाना रूप ।।२१।।

आप तात दिक्षा पद लिया । **चक्रपाल** ने राजा किया ।।
पूरणघन पुत्र ता तनै । विद्या वल गिनती कौं गिनै ।।२२।।

चक्रपाल नै दीक्षा लई । राज विभूति **पूरणघन** दई ।।
उत्पन्न मति पुत्री ता तनी । रूपलक्षन सोभा अति बनी ।।२३।।

सुलोचन ने भेज्या दूत । **तिलकेसर** मेरे घर पूत ।।
अब तुम किरपा मौपै करउ । **उतपलमति** मम पुत्रै वरउ ।।२४।।

पूरणघन पूछ्या जोतगी । याकी लगन कौनसौं लगी ।
याह विवाहै राजा **सगर** । पटरानी होवैगी अगर ।।२५।।

इह निमत्त सौ कहै भूपाल । टीका भेज्या **सगर** कौ हाल ।।
सुलोचन सुनि कोप्यो राइ । जुद्ध हेत आपन चढि आइ ।।२६।।

लई खडी जोतिग गुन ग्यान । हौनी कही आगउ आनि ।।
पूरणघन के बजै निमान । सूरवीर सब पहुचे आन ।।२७।।

साजी सेन्या मुह मिल भए । दुहुधा बानी धारी ढए ।।
झुझै दोऊ सेना खरी । सहस्रनयन उलपल मति हरी ।।२८।।

दारुण जुध भया भयभीत । अंत भई पूरणघन जीत ।।
आया गेहन देषी सुता । पूरणघन कु वाढी चिता ।।२९।।

सुनी सहस्रनयन ले गया । उठ्या क्रोध दुचित्या भया ।।
सहस्रनयन पैं कीनी दोर । वाका चाचा मारया ठौर ।।३०।।

उतपलमति सहस्रनयन के संग । मैं हू सगर भूप की मग ।।
तो मैं हरी किया अति बुरा । चक्रवर्त्ति का डर नही करा ।।३१।।

अब जो चाहै अपनौं प्रान । लेचल **सगरराय** पै जाण ।।
सहस्रनयन डरप्या मनमाहि । **सगर पास** ले पहुंतो ताहि ।।३२।।

दई विवाह सगर सौं जाय । पटराणी थापी तब राय ।।
सहस्रनयन सुणी इह बात । पूरणघन किया चाचा घाति ।।३३।।
कोप्या भूप जुध कौं चल्या । पूरणघन फिर कै सांभला ।।
बहुत जुध हुवा दुहु वोर । पडै मार तिहा मांची रोर ।।३४।।
मेघवांहन पूरणघन पूत । पहुंता तिहा सैन संयुक्त ।।
बरषै बाण अषाढ सम मेह । सहस्रनयन भाग्या ले देह ।।३५।।
समोसरण मे आया भाजि । तिहां भया मनवांछित काज ।।
वैर भाव सब ही मिट गया । दया प्रणाम सकल मन भया ।।३६।।
वज्रधर देखा इन जुध । चक्रवर्ति सु कही यह सुध ।।
चाल्यो समोसरण भगवान । पूछै इनका वैर निदान ।।३७।।
राजा वज्रधर सगर ले साथ । आये समोसरण जिन नाथ ।।
मानस्तभ मान कौ हरै । देखत ही मति निरमल करै ।।३८।।
तीन प्रदक्षिण करि नमस्कार । डंडवता बहु वारंबार ।।
दो कर जोड करै प्रसन्न । इन्हैं बैर क्यो भया उत्पन्न ।।३९।।
अजितनाथ जिण बाणी सार । गणधर भेद कहै सुविचार ।।
संदनगर तिहा भावन सेठ । अति कीरत बहु क्रिया सरेष्ट ।।४०।।
ताकै अरहदास सुत भया । पाई बुधि मौ स्याणा थया ।।
आप सेठ चाल्यो व्योपार । पुत्रै सौप्या बहु दीनार ।।४१।।
चार कोड गिण सौपे ताहि । धरम दया राषो मनमाहि ।।
सज्जन कुटब की करज्यो काण । जिन पूजा मे दीज्यो दान ।।४२।।
लाद जिहाज दिशातर चल्या । अरहदास ज्वारया संग मिल्या ।।
खेलै जुवा हरावै द्रव्य । सात विसन तिन सेये सर्व ।।४३।।
वेस्या सगमादिक सौं हेत । लछमी बहु गणिका कु देत ।।
खोटे कारण कीने घने । विभचारी बाकौं सव भने ।।४४।।
सर्व दर्व षोया इण भाति चोरी कु निकस्या अधराति ।।
राज भंडारै किया प्रवेस । बाधि पोट ले चल्या असेस ।।४५।।
सुरग माहि ते आवै जाय । नित प्रति सात विसन सुंषाय ।।
प्रौण बूडि समद मे गए । पश्चाताप सेठ बहु कीये ।।४६।।
मेरे घर थी लछमी बहुत । ते मे सौंपी पूत कपूत ।।
मेरी बुधि हरी करतार । भ्रमता फिरधा देस ससार ।।४७।।
जे संतोष सो रहता बैठि । तो क्यो होती सुखसौं ग्रैंठ ।।
हुआ दलिद्री पहूच्यां गेह । रती न घर मे देषी षेह ।।४८ ।

साहुण कही पुत्र की बात । सुणि करि दोउं मीडे पछितात ।।
कही कैं वह क्या धधा करै । राज मडारै चोरी करै ।।४६।।
सुरग माहि ते पैठे साझ । चोरी करै भंडारा माझ ।।
दंपति मनह् विचारया एह । जो नृप सुणै तो सूली देइ ।।५०।।
इम विचार चिण लई सुरग । देख अरहदास भया मन भंग ।।
पिता पुत्र ने मारचा ठोर । भाज गया नगरी ने छोरि ।।५१।।
करम कुकर्म करै दिन रैन । कबही मनको हुवै न चैन ।।

नरको के दुःख

मरकर गया सातमी नर्क । छेदन भेदन काटन अर्क ।।५२।।
हु डक देह धरो उन जाय । भूख प्यास को अंत न आय ।।
जुंवा चौर कं काटै हाथ । फेर सवारै दुख के साथ ।।५३।।
जीवह तेरे मास कु खाय । लोह पिंड दीजे मुख माहि ।।
मास अहार कहैं ते सुष । अभक्ष खाये पावै दुख ।।५४।।
सुरा पान मादिक जे लेह । तपत राग ता मुख मे देह ।।
आहेटै मारे बहु जीव । सूला रोपन वैधै ग्रीव ।।५५।।
जो भुगते पर की असतरी । लोह तणी लावै पूतली ।।
दौरि भिडावै उनको धाइ । पारे ज्यो सरीर फट जाय ।।५६।।
दुख मे होय देह की देह । सात विसन फल लागै एह ।
वे दोन्यू कोली कै गेह । भए पुत्र तिहा नही संदेह ।।५७।।
लरि करि मुये नरक गति लही । भूष त्रिषा करि पीडा सही ।।
वहा ते मरि परवत के तट । भए साझ करै घन धुट ।।५८।।
दहा ते मुये मेष गति पाय । दोन्यो लरई बैर के भाब ।।
यो ही जौनि भ्रमे वे घनी । अनकाल तै भेटचा इक मुनी ।।५६।।
तिहां सुने पच प्रभू के नाम । तातै पायो उत्तम ठाम ।।
क्षेत्र विदेह **पुष्कलावती** देस । **पुंडरीक** तहा नगर नरेस ।।६०।।
सुण्या धरम श्री जिनवर पास । सतार स्वर्ग परि पाया वास ।।
वहा थी चैकरि नरपति भए । भावन जीव पुरन घन थये ।।६१।।
अरहदास जीव सुलोचन जान । ताथी जुद्ध भया बहु आन ।।
सगर भूप जोरे दोइ हाथ । **मेघवाहन सहस्रनयन** की पूछी बात ।।६२।।
पदमाक नगर तिहा संषक देस । सीस अवली मित्र कै भेस ।।
दोऊ रहैं एकही ठाउ । ससी गयो औरही के गाव ।।६३।।

अवलाचला जात हो नीर । शसिनै मारया भर कर तीर ।।
देही छोडि लही गति वहल । शशि कौ मारया सीग सौपैल ।।६४।।
वह तो मरि मूसा अवतार । अबली जीव भया मंजार ।।
बिलाव नें मूसे कूं मारि । यौंही भ्रमे तिरजंच मझारि ।।६५।।
स्यांम रांम की दासी गेह । ताकै गर्भ भई नर देह ।।
राजा प्रीछ तबै सुनि धर्म । दिक्षा ले काटे दुहु करम ।।६६।।
पाया सनत कुमार विमान । ह्वा थी चये धातकी श्रान ।।
जैंवती देस अरजय नगर । सहस्र सूर्य के सेवक अगर ।।६७।।

सगर के भव

तप करि गये स्वर्ग विमान । ह्वा तैं चइ पाया इह थान ।।
सगर नरेंद्र दोई करि जीरि । मेरे भव प्रभु कहो बहोर ।।६८।।
भोमर देस कु रग नरेस । मुनिकौं दान दिया बहु मेस ।।
पाया अंत सुधर्म विमान । ह्वा तैं चल्या चंद्रपुर आन ।।६९।।
दैत्यराय धारादे नारि । विर्ति कीर्त्ति तसु भयो कुमार ।।
आप तात दिक्षा पद लिया । वीर्त्ति कीर्त्ति कौं राजा किया ।।७०।।
तिन भी तप कर आतम ध्यान । पहुचा स्वर्ग लोक पुर थान ।।
रतनसंचय पुर षेत्र विदेह । महाघोष राजा के गेह ।।७१।।
चन्द्राननी उरलियो अवतार । अविचल भया सुभट की पार ।।
तप करि देव भया सुरलोक । पूरन आव भई मन सोक ।।७२।।
भरत क्षेत्र पृथ्वी पर बसैं । जसोधर राजा के मन हसैं ।।
जया नाम ताके घर प्रिया । जयकीर्त्ति पुत्र नाम कुल दिया ।।७३।।
गय यशोधर दिक्षा लई । राज रिध जैकीर्त्त ने दई ।।
सुख मे दिन बीते बहु ताहि । दिक्षा ली मुनिवर ढिग जाय ।।७४।।
पहुचा विजय स्वर्ग विमान । ह्वा ते सगर भया तू आनि ।।
सकल भवातर श्री जिन कहै । बारह सभा सुनत सुख लहे ।।७५।।

सोरठा

सुनि पिछला सबंध, मन संसय सब का गया ।।
सकल जीव आनंद । राति दिवस पालो दया ।।७६।।

चौपई

समोसरण मे सुख निधान । राक्षिस अधिपति द्वै पहुंचे आनि ।।
भीम सु भीम दुहुंन का नाम । राक्षस कुल आए इस ठाम ।।७७।।

दई प्रदिक्षन करै डडोत । श्री जिरण करी बहुत ग्रस्तुति ॥
पूरणघन मेघवाहन सौ कहै । जो तुम चलौ परम सुख लहै ॥७८॥
सागर तट जोजन सो मान । त्रिकुटाचल सुमेर परमान ॥
पचास जोजन है उच्चंत । **कचनगढ** नय जोयरण हु त ॥७६॥
जोजन तीम वसै वह नगर । सोवन घर चैत्यालय ग्रगर ॥
मोती लाल हीरे दवहु वरण । पन्ने चुन्नी जडे सुवरण ॥८०॥
फिये चितेरे रतन के घने । प्रतिमा सहित चैत्यालय बने ॥
वन उपवन बावडी कूप । सरोवर निरमल पाल ग्रनूप ॥८१॥
हम ग्रादि बहु जलचर जीव । वैठक सौहे गहरी नीव ॥
कमल फूल फूले बहु भाति । दीसै भली वाग की पाति ॥८२॥
दक्षिण दिस **लंका** जिहा नाम । सर्व वस्तु सो सीमै ठाम ॥
चैत्यालौ परि धुज फहराय । ग्रमर स्वर्ग सुख ऊोडै ग्राय ॥८३॥
सहस्त्रकूट बने जिरण थान । **लंकागढ** सुर्ग पुरी समान ॥
सकल वस्तु का करौ वषान । बढै कथा नही होय निदान ॥८४॥
मेघवाहन कु दीयाहार । या की पूजा करो सबार ॥
जो मनवाछित करस्यौ नरेस । तैसा तुरत प्रकासै भेम ॥८५॥
पहैरै मति गले मभार । कुल क्षय होय पहरै जब हार ॥
या की पूजा कीजो भली । तो पूजै मन वाछित रली ॥८६॥
ग्ररु द्वै विद्या दीनी राक्षसी । ते निश्चल चित ग्रतंर वसी ॥
कमला ग्रमला सप्रत तीन । दई विद्याधर गुणह प्रवीन ॥८७॥
श्री जिणवर की ग्राज्ञा पाय । चढि विमान लका मे जाय ॥
बाजा बाजै धुरै निसान । पूरणघन मेघवाहन भान ॥८७॥
सेना वहुत लई उन संग । हाथी रथ पालकी तुरग ॥
बैठ विमान चले ग्राकास । देखे पुरपट्टण बहु बास ॥८६॥
देख्या सायर लहर तुरत । मच्छ कच्छ उतरै बहु रंग ॥
त्रिकुटाचल तिहा कचन कोट । ताहि कान्ति रबि हुग्रा ग्रोट ॥६०॥
देखी लका कंचन मई । जिनवर भवन सोभा भति भई ॥
ग्रष्ट द्रव्य सो पूजा रची । करै ग्रारती दंपति सची ॥६१॥
पूजा करि गढ ऊपर चढे । देखत सुख महा ग्रति बढे ॥
ढाल कलस दीया लंका राज । हुवा सर्व मन बाछित काज ॥६२॥

निरभयवंत राज ते करैं । भूचर षेचर सेवा करैं ।।
विजयारध पर्वत कै पास । किनर गीत नगर का वास ।।९३।।

प्रतिमयूष तिहा बसैं नरेस । ग्रानमती त्रिय सोहै केस ।।
सुप्रभा पुत्री ताकै भई । मृगलोचन कमलाननी थई ।।९४।।

कीर नासिका सुभ्र कपोल । हीरादंत कोकिला बोल ।।
भुजा कलाई अगुरी फरी । जंघ केल सम कटि केहरी ।।९५।।

पंकज चरण हस गति चाल । बेणी सोभा जेम वयाल ।।
टीका **मेघवाहन** का किया । निष्या लगन सुभ दिन साधिया ।।९६।।

रहसरली सो हुआ विवाह । सोना दीया वहु तर नाह ।।
हय गय वाहन दीये घने । चमर छत्र सिंघासन वने ।।९७।।

जीत कसौंज भूपति नइ दई । तो मोपैं नहिं बरणी गई ।।
विदा होय चाले नरनाह । आये निजपुर अधिक उछाह ।।९८।।

सुष माही दिन बीते घने । चमर छत्र सिंहासन बने ।।
भई गर्भ थिति सुप्रभा तने । **महाराक्षस** भयो उत्पने ।।९९।।

महाराक्षस भया उत्पन्न । रूप कला लक्षण सुखन्न ।।
ता पाछै हुआ सुत ग्रोर । **ससांक** कुमार विराजै ठौर ।।
सगर चक्री **मेघवाहन** भूप । पहरि आभर्ण अधिक अनूप ।।१००।।

आए समोसरण जिनथान । देखत उपजै सुख दिनांन ।।
नमस्कार करि बिनती करैं । कर जोडि मस्तक भू धरैं ।।१०१।।

स्वामी कथा कहो समझाय । मन म्हारे का संसय जाय ।।
तुमसे पुरुष ग्रौर भी भए । धर्म तीर्थ कौं उनके कीये ।।१०२।।

तुमसा कोई ह्वै है ग्रौर । अमुभ करम को डारै तोडि ।।
चक्रवर्त्ति केते ह्वै भूप । कामदेव ह्वै अधिक स्वरूप ।।१०३।।

नारायण केते बलिभद्र । प्रतिनारायण के ते रुद्र ।।
श्री जिनवर भाषै अब समझाइ । बारह सभा सुणै मनलाय ।।१०४।।

उत्सर्पणी अवसर्पणी काल । त्रेसठ पुरुष ह्वै चौथेकाल ।।
चौबीस तीर्थंकर कामदेव । बारह चक्री नो बलदेव ।।१०५।।

नारायण प्रतिनारायण नौ । महारुद्र वे ग्यारह गिनो ।।
पहली हुआ जुगलिया धर्म । **रिषभदेव** परकास्यौ मर्म ।।१०६।।

चक्री प्रथम भया ते **भरत** । कामदेव **बाहुबल** समरत्थ ।।
पंच कल्याण इद्रादिक देव । पूजा करैं चरण की सेव ।।१०७।।

हम सरवारथसिधि तें आय । **अजितनाथ** बीजो जिनराय ।।
गरभ जनम तप केवल ग्यान । किये महोछब सुर नर आन ।।१०८।।
चक्री **सगर** दूसरा भया । छह षंडि साधि राज भोगिया ।।
बाईस होय और अवतार । धरम प्रगासेंगे संसार ।।१०६।।
चक्रवर्त्ति ह्वैं हैं दस और । पाप दुष्ट मारेंगे तोडि ।।
धर्म पुन्य की रक्षा करैं । तीन काल सुमरण दिढ धरैं ।।११०।।

चौबीस तीर्थंकर

ऋषभनाथ प्रथम जिणदेव । जैन धरम प्रकास्या भेव ।।
दुजे अजितनाथ जिणराय । सभव अभिनदन सुखदाय ।।१११।।
सुमति पदमप्रभू देव सुपास । चद्रप्रभ मन पूरवै आस ।।
पुष्पदत सीतल श्रेयास । वासपूज्य सुमरो जिणहंस ।।११२।।
बदौं विमलनाथ सुजिणद । अनतनाथ चउदहौं मुणिद ।।
धरमनाथ जिणधरम महत । शाति कुंथु श्री अरु अरिहत ।।११३।।
मल्लिनाथ मुनिसुव्रत देव । नमि नेम की कीजे सेव ।।
पार्श्वनाथ कमठ मद हया । वर्द्धमान प्रकासी दया ।।११४।।

दूहा

बाहुबलि का वल अधिक, दूजा अमर मजसेन ।
श्रीधर दरसन भद्र अति । **प्रसनचंद** सुष सेन ।।११५।।
चद्रवरण चद्रकला, अगाति, मुकति **सनंतकुमार** ।।
श्रीवछराजा कनकप्रभ, मेघ वरण उनहार ।।११६।।
साति कुंथ अरु अरह जिण. **विजयराज** श्रीचद ।।
नल राजा थुलभद्र अति, हनुमान छह दंद ।।११७।।

अडिल्ल

बलिराजा वसुदेव सेव बहुतै करै
प्रद्युमन रूप अपार ताहि क्यौ मन धरै ।।
नागकुमार सुदरशन सील पाल्या घरा,
धारघौ दृढ व्रत सील सुभब सायर तिरघा ।।११८।।
चक्रवर्त्ति भयऊ भरथ देश वहु साधिया ।
जीते भूप अनेक जिनौ को बाधिया ।
धरचा धरम सो ध्यान कर्म वसु क्षयकिया ।।
केवल ज्ञान उपाय मुक्ति वासा लिया ।।११९।।

सगर जीय कर चक्र देस अपने करैं ।
छहू षड के भूप हाथ जोड्यो खरै ।
सुन्या धरम जिन पास भाव बहु मन धरघा ।।
वाणी अगम अपार जीव सुणि निस्तरघा ।।१२०।।

दूहा

मघवसु चक्री तोसरा । सनतकुमार भी होइ ।।
सांति कुंथु अरहनाथ जी । सुमरो नित सब कोइ ।।१२१।।
फिर सुभोम चक्री भया । पद्मम सुचक्री जान ।।
हरषेन जयसेन नृप । ब्रह्मदत्त गुणषान ।।१२२।।
त्रिविष्ट द्विविष्ट स्वयभव । पुरुषोत्तम सिंघ भेव ।।
पु डरीक दत्त लक्ष्मणा । कृष्णनारायण देव ।।१२३।।
सुत्तारिक असुग्रीव । मेर कुमेर मधु कैंट ।।
नि-संभव पहलाद । वलि रावण जरासिंध हु वाहेट ।।१२४।
विस्वानल सुप्रतिष्ठ । अचलपुंगीक जीतधर ।।
विजय अचल सुधरम सुपुत्र सुदरसन आनंद ।
नदमित्र श्री रामचन्द्र हरलधर ए शुभ्रकद ।
भीम बली जितसत्रुजी जित नाभि पोढिल इष्ट ।।१२५।।
क्रोधानलं भया ईग्यारमा । महारुद्र बलवीर ।।
त्रेसठ सीलाका पुरुष सव । सम्यकदृष्टी धीर ।।१२६।।

अडिल्ल

श्री जिण ग्यान गभीर अत नहि पाइये ।
भव्य जीव धरि भाव प्रात उठि ध्याइये ।।
केवलग्यान अपार सकल ससै भजै ।
दियो धरम उपदेस सुख हिरदै रजै ।।१२७।।

चौपई

संसार का स्वरूप

अब देखौ ससार सरूप । कबहू रक कबहू ह्वै भूप ।।
जीव दया विन कबे न सुख । निरदय पावै भव भव दुख ।।१२८।।
हय गय विभव द्रव्य भडार । रहै सकल हैगे गिगनाकार ।।
सज्जन कुटुंब दामनी उद्योत । छिनही माँहिं अंधेरा होत ।।१२९।।
राजा विभूतरु पुत्र कलित्र । सबै विनासी बुदबुदावत ।।
इण ससार नही थिर कोय । देही आदि नही साथि होई ।।१३०।।

धरम सहाई जीव के साथ । हमरण करउ ज्यो जिण नाथ ॥
जैन धरम परखै गुणवत । रवि प्रताप उज्जल बहु मत ॥१३१॥

मिथ्या धरम करै जे अध । अशुभ करम के बाधे बंध ॥
छाडै अमृत पीवै नीर । भवसायर ते लहै न तीर ॥१३२॥
च्यारो गति मे डोलै सदा । काल अनत लहै आपदा ॥
मिथ्या धरम करो मत कोई । जैनधर्म तें शिवपद होइ ॥१३३॥
छोडै भोग जोग आचरै । बहुर न भवसागर मे परै ॥
च्यारि कषाय अठारह दोष । ए छाडै तब पावै मोक्ष ॥१३४॥

अडिल्ल

मेघवाहन सुनि भूप धरम पहचानिया ।
जग सुपना सम देखि अनित्य जु ठानिया ॥
छाड्यो लकाराज पुत्र जाको ययो ।
सहस्र भूप के साथ आप चारित्र लियो ॥१३५॥

चौपई

महाराक्षस जहा भोगवै राज । ससाक पुत्र छोड्या जुवराज ॥
महाराक्षस के विमला स्त्री । पतिव्रता आज्ञा मे खरी ॥१३६॥
तीन पुत्र जाके उर भये । रूपलक्षन करि सोभै नये ॥
अमर राक्षस उदयोदय रात्त । भानु राक्षस की सोभा लाक्ष ॥१३७॥

सगर चक्रवर्ती वर्णन

सगर चक्रवर्त्ति निष्कटक राज । साठ सहस्र सुत आज्ञा काज ॥
एक दिवस सब मतउ विचार । चले पिता पै करै पुकार ॥१३८॥
अब हम बडे सयाने भए । अब लग कछु उद्यम नही किये ॥
षोडश वर्ष तणी परमाण । पुत्र पिता कै पावै धान ॥१३९॥
बिना कुमाये यू ही फिरै । सो कपूत नाही विस्तरै ॥
अब हमकू तुम आज्ञा देहु । सेवा करै किसकी घरि नेहु ॥१४०॥
कहै पिता तुम सुणउ कुमार । हम सव भूप नही ससार ॥
ताकी सेव करौ तुम जाय । कौन समुझि चितई सुखदाइ ॥१४१॥
सर्व वस्तु की पूरण रिद्ध । विलसो वच्छ घणेरी रिद्ध ॥
सुणत वयण कर मस्तक धरै । हमने टहल करो सो करै ॥१४२॥
आज्ञा भई जाहु कैलास । महा गगा पोदो ता पास ॥
सोवर्नमई चैत्यालै घने । रतन बिब सोभा सब बने ॥१४३॥

आगई बहु होंहिगे मलेच्छ । वेहु वां आनि करैं परवेस ॥
महाबला ने फेरउ तिहां । कोइ न जाइ सकैगो वहां ॥१४४॥
विदा मांगि गए कैलास । खाई खोदें चित्त उल्लास ॥
खोदी तिएँ ऊंडी अति मही । धम धम बहु धरणेन्द्र सही ॥१४५॥
मनमे कोप्या मुंड उठाइ । सहस्रमुखी जिह्वा निकलाय ॥
करी फुंकार धूम आकार । अग्निझाल ते हुये छार ॥१४६॥
मूए सब तब उबरे दोय । भीम भागीरथ चित विसमय होय ॥१४७॥
सगर पास आए तिए वार । सकल बात कौं कह्यौ विचार ॥
सुणि वृत्तान्त महादुख भया । रोवै पीटै कूटै हीया ॥१४८॥
हा हा कार नगर मे होय । ऐसा दुखी न दूजो कोय ॥
राजा अश्रुपात बहु करइ । ज्यौं ज्यौं दु:ख हिये उच्छरइ ॥१४९॥
समझावै सब मंत्री लोग । इस संसार सयोग वियोग ॥
किस को पुत्र पिता परिवार । इस विभूति जल पटल अकार ॥१५०॥
पुण्य संयोग लई बहु रिद्ध । अशुभ उदय दुख लहैं प्रसिद्ध ॥
स्वारथ रूप सबै ससार । साथी नही पुत्र परिवार ॥१५१॥
जब लग जीव तब्य सुखराज । जीव बिना कछु सरइ न काज ॥
राजा फेरि नगर संचरचा । मनतें दु:ख न होवै परा ॥१५२॥
आये समोसरण की सीम । राजा सगर साथ ले भीम ॥
श्री भगवत का दरसन पाय । बहुत भांति सो नवण कराय ॥१५३॥
देख मलीन बहुत मनमांहि । श्री जिनवर समझावै ताहि ॥
भ्रम्या जीव इह आदि अनादि । बिना धरम नर देही वादि ॥१५४॥
सब ऊपर चक्र फिरावै काल । नोतन विरध न छौडै बाल ॥
बैठ्या ऊठ्या जागत सैन । रोवत गावत दुंचिते बैन ॥१५५॥
कायर सूर राव ने रक । काहु की नहीं मानें सक ॥
मूरिख पंडित तप व्रति जती । काजै दया न आवै रती ॥१५६॥
पूरण आव बीत जब जाय । बालक तरुण वृद्ध ने खाय ॥
काल समान बली नही कोइ । पकरि पछारत वार न होय ॥१५७॥
स्वर्ग पाताल अनै भुवि लोक । सरवारथ सिध लौं थोक ॥
आवै नही काल की दौडि । मुकति थान निरभय है ठौर ॥१५८॥

दूहा

तीरथंकर अस चक्रवत्ति, कामदेव बलिभद्र ॥
नारायण प्रतिनारायन, तपसी नारद रूद्र ॥१५९॥

काल तर्ण बसि सब भये, जोधा सुभट सुजान ।।
सकल लोक इरण जीतिया, या सम बली न ग्रांन ।।१६०।।

सोरठा

चक्रवर्त्ति सुनि भेद, भोग सोग सब परहरे ।
धरयो ध्यांन दिढ जोग, सब संसार मन ते तजा ।।१६१

राजा भागीरथ का वर्णन

दूहा

भागीरथ राजा किया, सगर भीम सहु त्याग ।
दिक्षा ली जिणराय पै, मनमे धरि वैराग ।।१६२।।

चौपई

पालै प्रजा भागीरथ भूप । मुकट छत्र सिर बने अनूप ।।
राज करत दिन बीते घने । श्रुतसागर मुनि आये सुने ।।१६३।।
नरपति के मन हरष अपार । चलै जहा मुनि प्राण अधार ।।
नगरलोक चाले सहु साथ । वनमे ध्यान धरयौ मुनिनाथ ।।१६४।।
आए निकट वंदना करी । साठि सहस की पुच्छी धरी ।।
किण कारण एकठे मरे । कहो कथा ज्यो ससय टरे ।।१६५।।
मुनि बोले पिछला संबध । ताथी हुवा करम का बंध ।।
समेद शिखर चाल्यो इक सघ । दतपुर गाम देख मनरग ।।१६६।।
देखत लोग सघ को हंसै । देखा गांव किसो तह बसै ।।
कु भकार वरजै तिह्नं जात । इण ठा गया जीव नो घात ।।१६७।।
बात कही भीमानी नही । गांव माहि देही गज गही ।।
पकड पछारे सगले लोग । मीड माड सव कीन्है फोक ।।१६८।।
कु भकार मरि वणिवर भया । तप करि बहुरि राज सुत भया ।।
तप करि फिरि पायो सुरथांन । सो तु भयो भगीरथ ग्रांन ।।१६९।।
साठि हजार सिंघ के जीव । सगर भूप सुत उपजें तीव ।।
जात्रा माहि सव का रह्या ध्यान । राजपुत्र ते हूये ग्रान ।।१७०।।
कारण पाए मुए इक ठोर । अशुभ करम की मिटई न घोर ।।
सुनि भागीरथ कीयो नमस्कार । राज छोड ली दीक्षा सार ।।१७१।।

लंका का राजा महाराक्षस

महाराक्षस लका का भूप । वन क्रीडा का देखन रूप ।।
सकल कुटंब लिया नृप सग । वन उपबन गुह गभीर उतंग ।।१७२।।

निरमल सरोवर देखे घने । फूल फले कमल अति बने ।।
स्वर्गलोक किन्नर उनहार । रांणी सोमै राज दुवार ।।१७३।।

भई रयण मुरझाये फूल । भमरा रहे बास में मूल ।।
देखई उपज्यो नृप ने ज्ञान । एके इन्द्री मे भ्रमर भुलान ।।१७४।।

पंच इंद्री वसि रहे भलाय । उन जीवांनें कौंण सहाय ।।
ग्रैसी समझि भयो वैराग । राजरिद्धि सहु परियन त्याग ।।१७५।।

भ्रमर राक्षस

भ्रमर राक्षस ने सौंप्यौ राज । दिक्षा लई मुकति कैं काज ।।
ससार परीष्या पेषन किया । भवर देखि मति आयी हिया ।।१७६।।

दूहा

भंमरा वीध्या कमल मे, दये प्रान ता वीज ।।
राजा क्रीडा अति करही, विषय गणी सब नीच ।।१७७।।

अडिल्ल

मनमे धरि वैराग चित्त चिमक्या धरा ।
इह संसार असार दुख सागर भरा ।।
एक इंद्री कै विषै प्राण परिहरि करै ।
पंच इन्द्री के विषै सेय क्यो निस्तरै ।।१७८।।

चौपई

श्रुतसागर मुनि के वास गमन

राजा सोचै मनमे ध्यान । श्रुतसागर आये वन थांन ।।
धर्यो ध्यान तप करै अनेक । मन वच काय न डोलै एक ।।१७९।।

तेरह विध चारित्र सौ चित्त । सहैं परीसा बाइस नित्त ।।
अवर अनेक सिष्य ता संग । सहैं परीसा अपने अंग ।।१८०।।

रूप गुणे अति महा प्रवीण । चंद्रकांति देखत अति हीण ।।
माली गया भूप के पास । मुनिवर जोग दिया वनवास ।।१८१।।
ग्यान तीन अंतरगत वसै । दरसत देखत पातिग नसै ।।
सुनि नरेस मन किया उल्हास । पूजण चले सुगति की आस ।।१८२।।

नगर लोग चले संग बहुत । ततखण वन मे आय पहूंत ।।
नमस्कार करि करी डंडौत । वदन कांति ससी की अति जोत ।।१८३।।

चरण प्रक्षालण विनती करैं । कहो धर्म मम संसय हरै ।।
मुनिवर कहै धर्म समुझाय । हिंसा व्रत पालो मन लाय ।।१८४।।

दृष्टि अगोचर गोचर जानि । षटकाया जे आप समान ॥
जाणि बुझ न विराधो कोइ । अनइ देखे जे हिंसा होय ॥१८५॥
पश्चात्ताप करै मन माहि । मिटै सकल हिरदा की दाह ॥
अनरत विरत दूसरा कह्या । सत्य बचन ते सिव सुख लह्या ॥१८६॥
चोरी लाभ परिहरो सर्व । दान अदत्ता लेय न दर्व ॥
परिग्रह सख्या पालै सील । धर्म निमित्त न कीजे ढील ॥१८७॥
संख्या वस्तु करे परिमाण । सक्तिसमा द्यो चारो दान ॥
वइयावरत करै बहु भांति । अनंतकाय भोजण तजि राति ॥१८८॥
महाराक्षस वीनवै करि गह्यौ । मेरो भव ब्योरास्यो कह्यो ॥
चारि ग्यान का धारक साध । पूजत हैं प्रांनी की साध ॥१८९॥
कही सकल पूरव भव बात । अंधकार जिम दीप मिटात ॥
पोदनपुर उदयाचल भूप । अरहण श्री राणीज अनूप ॥१९०॥
हेमरथ पुत्र ताहि कै भया । बहुत आनद दंपति चित्त थया ॥
हितवंत महाजन तिह ठा बसई । माधवी नारि मन उल्हसइ ॥१९१॥
प्रत्यक्षपुत्र है लघु अवतार । रूपलक्षण करि सोभा सार ॥
एक दिवस गरज्यो घनघोर । नृत्य करतउ देख्ये मोर ॥१९२॥
विद्युत घात मुवा जब मोर । नरपति के जिय उपजी ओर ॥
ससार परिक्षा पेषि तुरंत । घर परियण छोडे बहुभत ॥१९३॥
श्री मुनि पास दिक्षा लई आय । करी तपस्या मन वच काय ॥
पहुच्या स्वर्ग लही गति देव । किन्नर बहुत करै ता सेव ॥१९४॥
चई करि उपज्या षेत्र बिदेह । कचनपुर देखे वर गेह ॥
श्री प्रभाराणी सुन्दरी । ताकै गर्भ आइ थिति करी ॥१९५॥
उदित नाम भया सुकुमार । रूपवत गुण लक्षण सार ॥
जोवन समै महा बलबत । रविप्रताप सोभा बहु मत ॥१९६॥
मुनिवर का उपसर्ग निवार । धरम बषाण सुण्यौ निरधार ॥
चारण मुनिपै दिक्षा लई । ग्यान ज्योति अन्तर्गत भई ॥१९७॥
असनवेग विद्याधर जहा । उदित मुनि ध्यान धरया तिहा ॥
घनिबिर विद्याधर गमे आकास । हम भूगोचरी पृथ्वी वास ॥१९८॥
मेरे तप का इह फल होइ । विद्याधर गति पाऊ सोइ ॥
देही छोडि ईसांन विमान । छोडि हुवा महा राक्षस आंन ॥१९९॥
अमरराक्षस को दीया राज । भान राक्षस छोटा युवराज ॥
महाराक्षस दिक्षा पद लई । सौधर्म विमान देव पद थई ॥२००॥

विजयारध पर्वत उच्चंत । किन्नर गीत नगर निवसंत ।।
श्रीधर जहां रहै सुनरेस । आदित्त स्त्री सोभै बहु भेस ।।२०१।।

विद्युत पुत्री ताकै भई । रूप लक्षण गुण सोभै मई ।।
अमर राक्षस कुं दई विवाह । भोग मगन रस करई उछाह ।।२०२।।

गधर्व गीत नगर शुभ ठोर । सरीसनाभ सम भूप न और ।।
मारज्या नाम राणी पट धनी । गाधर्ववती पुत्री सोभा बनी ।।२०३।।

भानराक्षस कौं कन्या दई । क्रीडा भोग रिति मानैं नई ।।
अमर राक्षस के देवराक्षस पुत्र । विजयार्द्ध जीते सहु सत्र ।।२०४।।

भानराक्षस कै दस सुत भये । पुत्री षट्ग्यान मुन हीये ।।
दसो बसाये दस ही देस । सुरगपुरी सम दीसै भेस ।।२०५।।

सध्याकार बसाया नगर । सबल मनौ लकापुर अगर ।।
मृनाल हस हीर पुरिश्रौर । जोधपुरि समदपुरि की ठौर ।।२०६।।

देवराक्षस लकापति राय । मनोवेग गति सोभै ठाइ ।।
सुप्रभा विवाही असतरी । नदीनाक पुत्र भया सुभ घरी ।।२०७।।

प्रोहनमती विवाही नारि । भीमप्रभ पुत्र भयो अवतार ।।
जोवन समय भयो विवाह । सहस्त्रियासौं भोग उछाह
भए पुत्र एक सो आठ । वरणत सकल बढै बहु पाट ।। ।।२०८।।

दूहा

भासकर पुंजर नाम जित, सप्रति कीर्त्त सुग्रीव ।
वृहत्कीर्त्ति नदन सुनंदन, समुद्रसेन हयग्रीव ।।२०९ ।।

चौपई

चंद्रवरत भया महाराव । मेघ धवल ग्रह धवला नाव ।।
नक्षत्र दमन मेघनाह भाव । धवल प्रभु बहु बढतै दाव ।।२१०।।

कीर्त्तिधवल को सौप्या राज । आपण किया मुक्ति का साज ।।
पाले प्रजा प्रभू कीरति धवल । धरमनीत सुणि वाणी प्रबल ।।२११।।

इति श्री पद्मपुराणे श्री अजित महातम राक्षस संबंधी ।
विधानक ।।३ ।

चतुर्थ संधि

वानर वंश वर्णन

चौपई

फिर श्रेणिक कीयो परसन्न । वानरवंसी की उत्पन्न ॥
श्री जिनजी की वांणी भई । मन ससय सब की मिट गयी ॥१॥

विजयारध गिर दक्षिन ओर । सुरग लोक सम सोमैं ठोर ॥
मेघपुरी नगरी इक नाव । अतेंद्र भूपती को तहा ठाव ॥२॥

मंदिर सघण वणे उच्चत । उत्तम लोग बसैं गुणवन ॥
अत्येंद्र राजा अति बली । श्रीपती जग माने रली ॥३॥

श्रीकंठ पुत्र ताकै गेह । रूपवंत कंचन सम देह ॥
विद्या पढी भया उर ग्यान । ता सम तुल्य न पडित आन ॥४॥

चौथी देवी पुत्री भई । लोयण मृग क्राति शशि लई ॥
सकल रूप जो कहु समझाइ । सामोद्रिक के जानो भाइ ॥५॥

रतनपुरी पुहपोत्तर भूप । जा घर राणी अधिक सरूप ॥
पद्मोत्तर सुत वाके गेह । लक्षण करि करि सोमैं देह ॥६॥

अतेंद्र पास तिण भेजा दूत । विनती आप लिखी सुबहुत ॥
पद्मोत्तर सुरमोरा गुनी । कन्या देऊ चढाओ मनी ॥७॥

अत्येंद्र पूछया श्रीकठ । करी सगाई लिष दिया सठ ॥
आनद भया दुहु भूपती । करैं वधाई जागी रती ॥८॥

यो ही बीत गये दिन घने । लगन काज सुन सौं नृप भने ॥
रचौ सौज करि दीजे व्याह । पुत्र पिता की मानैं नाहिं ॥९॥

कहैंक यासो व्याहु नही । पद्मोत्तर सुनि चिंता थही ॥
मोमैं कहा लगाई खोर । उनैं विचारी मनमे और ॥१०॥

पुहुपोत्तर पद मौत चितवै । निस वासुर हा हा बोलवै ॥
अन्तर्गत मन राखै बैर । दाव बनै तो मारू घेर ॥११॥

कन्या की सुन्दरता

बिद्याधर सब गये सुमेर । पूजन चले न लागी देर ॥
पुहपोत्तर की तहा पूतरी । सकल कला गुण लावण भरी ॥१२॥

रूपवत ज्यो पून्यू चद । घटैं वधैं यह सदा अनत ॥
दीरघ नयन श्रवण सो लगे । देख कुरग वन माहि भगे ॥१३॥

दंत चिमकै ज्यो हीरो की ज्योति । मस्तक कपोल प्रथ्वी उद्योत ॥
नासा भौंह बनी छबि घनी । वैनी कीर्त्ति न जाये गिनी ॥१४॥

केहरि कटि कदली सम जंघ । भुजा कलाई सुभर अभंग ।।
एडी तलुवा पल्लव भली । गावै राग मनोहर रली ।।१५।।

द्वादस आभरण सोल श्रृंगार । देखत नर मू खाइ पछार ।।
सीरीकंठनें सुणि कै राग । दोन्यु वार्ता करें सराग ।।१६।।

द्वै विद्याधर इनको देख । पुहपोत्तर की पुत्री पेष ।।
यह ससै क्यू लागा बात । सुंणी भगाक पुत्री की तात ।।१७।।

पुहपोत्तर वे देख्या आन । और वही घुटिक हिये मैं जांन ।।
श्रीकठ का पीछा किया । भाज्या लका भीतर गया ।।१८।।

श्रीकठ भगनी पैं जाय । आदर भाव किया बहु भाव ।।
पुहपोत्तर साजी सब सैंन । चढया कटक दिन तै भई रैंन ।।१६।।

छाया रहे आकास विमांन । अरु बाजै गहर निसान ।।
दसौं दिसा भई मैंभीत । कीर्तिधवल मन वाढो चित ।।२०।।

कै इह कोप चढया है इद । अबहो आए करैगा बुन्द ।।
भेज्या दूत पुहपोत्तर पास । याहि वेग सुघ लीज्यो तास ।।२१।।

गयो दूत जहा नाम नरेस । नमस्कार करि कहै उपदेस ।।
तुम भूपति उत्तम कुल भान । ऐसा भूप नही कुहि आन ।।२२।।

सिरीकठ भूरिख अग्यांन । उए न करयो तुमरो सनमान ।।
वह सेवक तुम परथीपती । वापर कृपा करो भूपती ।।२३।।

वह भी उत्तम कुल का बाल । करो ब्याह तो वात रसाल ।।
चार चितवै भेज्या वसीठ । आया निकट भूप की दीठ ।।२४।।

पूछै राय कहो सत भाव । कौंए काज पठयौ इए ठाव ।।
कहै दुत सुणु तुम नरेस । चारिवि देवि ने कह्या सदेस ।।२५।।

पद्मोत्तर से मागी मोह । या जग और न जाउं गोहि ।।
एक छोडि दूजो जो करै । नरक निगोद अघोगति फिरै ।।२६।।

पद्मोत्तर तें जे नर और । तात भ्रात सम जाणो ठौर ।।
अबला विचारै और करम । कैसे रहै त्रिया को धरम ।।२७।।

दासी ह्वै विनऊ कर जोरि । मनकी घुटकै मारू तोडि ।।
रहस रली सौ किया विवाह । दुहु कुल हुआ अधिक उछाह ।।२८।

हिरदा तणां बैर तव तज्या । भई बधाई मत में रज्या ।।
सोना दिया बहुत नरेन्द्र । दोन्यूं ओर भया आनंद ।।२६।।

भोग भगन सब सुख के साज । दोऊं नगर करैं ते राज ।।
कीर्त्तिधवल श्रीकठ सौं कहै । लंका के जेते पुर रहै ।।३०।।

जहां कहो सोई द्यु नगर । वैरभाव भाजेगे सगर ।।
दक्षिण दिसा भीम ग्रति भीम । सघन बसैं सुविराजै सीम ।।३१।।

उत्तर दिस ग्रस्त सा दीप । मिरगदीप सौचित्र कर दीप ।।

सकल दीप की सोभा कही । श्रीकंठ सुनि मनमैं गही ।।३२।।

पद्मश्री ग्रस्त्रीन बुलाय । दंपति विलसे सुख के भाय ।।
कीर्त्तिधवल के निकसे संग । किषल पर्वत देखिये उत्तग ।।३३।।

वानर द्वीप

चौदह योजण पर्वत ऊच । वानर द्वीप बसै ता षुन ।।
नील नगर की महिमा घनी । सायर माइ भाइ ग्रति बनी ।।३४।।

वन उपवन नीली चहुग्रोर । पंछी करैं हरष सौं सोर ।।
देख श्रीकठ करैं ग्रानंद । कहु पंछी गुण पढ़ै जिणंद ।।३५।।

बोलैं सबद सुहाये बोल । रहस रली सो करैं किलोल ।।
छह रित के फूले फल फूल । बैठक घनी बनी ग्रनुकुल ।।३६।।

मंदिर चित्रकारी सुं बने । कूप वापिका सरोवर घने ।।
जल मे कमल विराजै भले । भवर गुंजार करैं पहुफले ।।३७।।
जैसे दृग तिय कज्जल भरैं । कमल ऊपर मधुकर गुंजरैं ।।३८।।

बहुरि गिरि चढि देखे देस । मन ग्रानंदित भए नरेस ।।
कपि पकडि ग्राणे बहु बाधि । देखे राय नयन सो साधि ।।३९।।

ए दीसें माणस की भाति । कोमल रोम वर्ण सुभ गात ।।
हैम साँकल जडाउ पटे । घुंघर बाल सु वानर मढे ।।४०।।

मीठें भोजन नाना भाति । उनह षुवावैं सझ्या प्रात ।।
किषल गिर पै ग्राब्ढे भूप । सोभा दीवै सकल ग्रनूप ।।४१।।

किषलपुर नगर

चौदह जोजन ऊचा मेर । वैयालीस जोजन का फेर ।।
किषलपुर नगर ता ऊपर बसै । बन उपवन सोभा उलसै ।।४२।।

कचन कोट रतन के जडित । सुरगपुरी की सोभा हरत ।।
रतनसिला की देहली बणी । नयरी सघण बसै तिहां घणी ।।४३।।

श्रीकंठ पदमावति तिरी । रूप लक्षण गुण सोभा भरी ॥
कीर्तिधवल लंका का नरेस । दिया श्रीकंठ किंषलपुर देस ॥४४॥
राजा राणी भोगवै राज । वन क्रीडा के देखन काज ॥
भद्रसाल वन सोभा घोर । नदन वन आनद की ठौर ॥४५॥
वनक्रीडा सुख देखे भले । दंपति फिर आए घर चले ॥
रुति असाढ सोभै सब भुमि । मेघ घटा चिहुं दिस रही घु मि ॥४६॥
दोन्युं चढे मंदिर सत खने । सीतल पवन ताप ने हरें ॥
इंद्रादिक च्यारौं विध देव । चढें विमांण आपणौं भेव ॥४७॥
ग्रैरापति पर सोभै इंद्र । चले नदीस्वर दीप सुरेन्द्र ॥
श्रीकठ मनमे उल्हास । वंदण निमित्त धरी चित आस ॥४८॥
सब परिवार सेन्यां सग लेइ । साजि विमाण गमन धुनि देइ ॥
मानषोत्तर पर्वत के मध्य । विद्याधर की चली न बुध ॥४९॥
वहुत उपाय किए उस बेर । विद्याधर को लांघै मेर ॥
अपनी निंदा खगपति करै । हीन पुण्य कब हम अवतरै ॥५०॥
अधिक पुनीत देव गति लही । नंदीश्वर को पूजै सही ॥
अब दीक्षा ल्यो इण बार । धरिहौं व्रत संयम ना भार ॥५१॥
यदि देहो तजि देवगति धरूं । नदीस्वर की पूजा करू ॥
आपण किया दिगबर साज । बज्रकठ पुत्र ने दे राज ॥५२॥
बज्रकठ भोग वै चाल । सुख मे बीत गया कछु काल ॥
चारण मुनि का दरसन पाय । पिता बात पूछी तब आय ॥५३॥
चारण ऋषि बोले धरि ध्यान । पूरब भव का करौ बखाण ॥
आवीसता नगरी का नाम । वनिक पुत्र द्वै निवसैं ताम ॥५४॥
परिच्छत दुरबुधि दोउ वीर । रूपलक्षण गुण साहस धीर ॥
परिच्छत कै मन उपज्या ग्यान । दुरिबुधि कूं लक्षमी का ध्यान ॥५५॥
आप जाय दीक्षा पद लिया । देही छोडि अमर गति भया ॥
दुरबुधि करै सरावग धर्म । दया अंग के जानै मर्म ॥५६॥
मिरगावती स्त्री ता गेह । सिखनी लक्षन ताकी देह ॥
करकस वचन सर्व सो कहै । दया धरम तैं परे ही रहै ॥५७॥
खोटी क्रिया करै मन लाय । जिनवाणी चित्त को न सुहाय ॥
दुरबुधि समझि ससार सरूप । तजि गेह भया दिगंबर रूप ॥५८॥
मन वच काया साध्या जोग । देव भयो सौधर्म सुर जोग ॥
परिच्छत जीव श्रीकंठ सुभया । दुरबुधि जीव इंद्रपद लीया ॥५९॥

इन्द्र विचारी यह मन मांहि । ए चारित्र दिखाया ताहि ।।
तातै उत्तम दिक्षा पद लह्या । वज्रकंठ का ससा गया ।।६०।।

इन्द्रीवद कौं दीया राज । आपरण किया मुक्ति का साज ।।
इन्द्रप्रभू इन्द्रमति मेर । समद समीर रविप्रभ और ।।६१।।

रविप्रभ जोगीस्वर भया । राजभार अमरप्रभ दीया ।।
अमरप्रभ परतापी खरा । या सम तुल्य न कोई नरा ।।६२।।

त्रिकुट राजा लकापती । ता घर राणी सौभावती ।।
तास गर्भ कन्या गुणवती । रूप लक्षण सोभा बहुवती ।।६३।।

अमरप्रभ पै भेज्या विप्र । नालिपुंग लिख दीया पत्र ।।
गुणवती का मंगलाचार । आवो लका स्यों परिवार ।।६४।।

अमरप्रभु मन भया आनद । वाजित्र बाजै सुख का कद ।।
रहस रली सु व्याहण चल्या । वेदी चोक सवारया भला ।।६५।।

किये चितेरे बहुत अनूप । सकल भाति के माडे रूप ।।
वन उपवन के रूंख बनाय । कनक कलस चौखूंट धराय ।।६६।।

सुघट त्रिया मिल पूरया चौक । कपि के चिह्न किये बहु थोक ।।
आई जान नगर के पास । साज बाज आग्योणी भास ।।६७।।

वस्त्र आभर्ण रु मोती लाल । दीये तुरंग हस्ती सुषपाल ।।
टीका करि जनबासा दिया । भोजन वहुत जान को किया ।।६८।।

दई ज्यौंणार अति करि सनमान । फिर आये मडिप तिहि थान ।।
सकल विभूत देखिए षरी । अमरप्रभु दृष्टि कपि चिह्न परी ।।६९।।

कपि कु देखि कोप बहु करया । सकल हिदय भय बहुत भरया ।।
गुणवती ढिग वैठी आन । अमरप्रभू वोल्या करि मान ।।७०।।

इह तो मगलचार की वार । बानर किम माडे इस बार ।।
सब के मन मे चिंता भई । दुहु विरया क्या वर्ण है दई ।।७१।।

ब्रह्माथांन मत्री था एक । जानें इनकी थापना बिसेष ।।
उनने बात कही समझाय । इह कुल कुशल चाहिए राय ।।७२।।

कुल पूजै हैं तुम्हारै कपि । श्रीकंठ नै इनाको थपि ।।
तातै चित्र किये इस ठाय । इन दर्शनफल है बहु भाय ।।७३।।

इतनी सुणत क्रोध घट गया । मगलचार दान बहु दिया ।।
पूछी सब ब्योरा सूं बात । रोमाचित्त हुवा सब गात ।।७४।।

करि विवाह गए फिरि थान । भोग मगन बहु सुख की खांन ॥
बहुविध सैन्यां लेकर चले । विजयाधर मन साधे भले ॥७५॥

सब राजा नैं मानी श्रान । धुजा मांझि कपि के निसांन ॥
कपि के चित्र मुकट मे बने । वांनर वंसी प्रगटे घने ॥७६॥

देश साधि सब अपने किये । बहु पुर नगर बसाए नए ॥
कपिकेतु जनमिया कुमार । रूपवत शशि की उनहार ॥७७ ।

जोबन वय श्रीप्रभा नारि । इन्द्री सुख मांनें संसारि ॥
आप तात जिण दिक्षा लई । राजविभूति पुत्र ने दई ॥७८॥

पाले प्रजा कपि ध्वज नरेस । प्रतिबल पुत्र भया सुभवेस ॥
आप लिया संयम का भार । प्रतिबल को सोप्या ससार ॥७९॥

गगन आनंद खेचर आनद । गिरिनंदन तप सरवर नंद ॥
श्रेयांस जिणवर के समै । श्रीकंठ किषपुर गमैं ॥८०॥

तीन सागर बीते जब काल । अमरप्रभ उपज्या भूवाल ॥
वासुपुज्य जिणवर के थान पूजि चरण आयो नृप वांण ॥८१॥

याहि कुल भूपति बहु भये । काटि करम ऊंची गति गये ॥
वानर वंसी विद्याधर कहे । वरनौं सकल पार को लहै ॥८२॥

महोदधि रवि याही कुल भूप । विद्युतप्रकास राणी सुसरूप ॥
और स्त्री बिवाही घनी । पुत्र अठोत्तर सो गुण गुणी ॥८३॥

किषलपुर का भोगवै राज । वानरकुली फुनिका काज ॥
उत्तिम कुल इनका सुबिनीत । दया धरम सुं बहुते प्रीत ॥८४॥

अडिल्ल

राजा भए अनेक नाम कहा लौं कहूं ।
विद्याधर गुणवंत सकल दुरजन दहै ॥
करी जगत परिजीन श्राण सगलैं वहै ।
अष्ट करम कुं काटि मुक्ति को पथ गहे ॥८५॥

इति श्री पद्मपुराणे वानर वंसी उत्पत्ति चतुर्थ संधि विधानक

पंचम संधि

चौपई

लंका का राजा विद्युतवेग

विद्युतवेग लंका का धनी । श्रीचंद्रा राणी गुण भरी ॥
नारी तेरह बिवाही घणी । ते सुख सोभा जाय न गणी ॥१॥

स्यौं प्रतेवर बन में गए । ता बन सोभा देखत भए ।।
वृक्ष ऊपर कपि बैठघा एक । राणी कु फल मारघा फेंक ।।२।।
आया निकट बीजुरी देह । बहुरयो चढघा वृक्ष के गेह ।।
राय सुण्या राणी का सोर । खेंच बाण मारघा कपि ठोर ।।३।।
श्रवण मुनी बैठा तप करै । बानर आय मुनी ढिग परै ।।
श्री मुनि च्यार ग्यान का धनी । कपि ने देख दया ऊपनी ।।४।।
कपि करण सुणाये पच प्रभू नाम । महोदय नाम सुर पैठाम ।।
प्रवधि विचार एक भव तनी । आई सुरति क्रोध कपनी ।।५।।
कपि देही ते भया हु देव । विद्य ुतवेग स्यु भाष्यो भेव ।।
माया रूपी साजी सैंन । जहा तहा कवि करै कुचैन ।।६।।
विद्य ुतवेग सोचै मनमाहि । कै षेचर कै भूषर आई ।।
यासो जुध करै चढि षेत । बाधु सगली सैंन समेत ।।७।।
सेन्यां लेकर सनमुष चल्या । बहुधा वानर कीया हला ।।
धरती पग चोटी आकास । मुख विकराल भयानक रास ।।८।।
लबे दात भयदाई धरे । सूरवीर धीरज नही धरै ।।
केई परवत लेय उठाइ । केई विरख उठावें आय ।।९।।
ले ले दौडे एकै वार । मारि मारि कपि करै पुकार ।।
विद्य ुतवेग नैं मानी हार । गया जहा महोदय सुकुमार ।।१०।।
देव विचारघा हिरदय ग्यान । धरि आये कीजे सनमान ।।
राजास्यौं समझाई बात । मैं वह बदर मारघा प्रात ।।११।।
साध प्रसाद भया मैं देव । चालो मुनि पै पूछै भेव ।।
राजा देव गए मुनि पास । दई प्रकम्मा पूजी आस ।।१२।।
सुर षेचर दोउ स्तुति करै । साधु संगति भव सागर तिरै ।।
देव तणी गति वानर लही । पच नाम करण तें सही ।।१३।।
जो कोई सेव तुम्हारी करै । मन वच काया दृढ कर धरै ।।
मुगति पथ सो लेय तुरन्त । तोरै जनम जरा का अन्त ।।१४।।
अब प्रभूजो कहिए कछु धरम । नासै पाप मिलै पद परम ।।
मुनिवर कहै धरम का भेद । असुभ करम का हुवा खेद ।।१५।।

मुनि का उपदेश

पच अणुव्रत श्रावक करै । महाव्रत जोगीस्वर धरै ।।
कुगुरु कुदेवां मानै नहीं ते । उत्तम कुल श्रावक सही ।।१६।।

जे मूरिख कहिए अग्यांन । कुगुरु कुदेवई सेवै आन ।।
मरि कर होवें सूकर स्वान । खोटी जोणि भ्रमें बहु म्रान ।।१७।।

नीची गति बहु भ्रमता फिरैं । कबहु न ऊंची गति मैं परैं ।।
जोनि लाख चौरासी संताप । कबहु होइ मोह अरु साप ।।१८।।

मूल न मिथ्या कीजे कोइ । जैन धरम ते सुरपति होइ ।।
सूक्षम भेद कहे समुझाय । फिर पूछे पिछले परजाय ।।१९।।

मुनिवर बोले ग्यान विचार । बूडत जीव उतारैं पार ।।
कासी देस भील इक रहै । वनमे जाय जीव बहु दहै ।।२०।।

सावस्थी नगरी का नाम । सुजसदत्त वाणिक तिह ठांम ।।
सुजसदत्त उपज्या वैराग । छोडे विषय दोष अरु राग ।।२१।।

जाण्यो इह ससार असार । दिक्षा लई सयम का भार ।।
करि बिहार कासी वन गया । तिहा जाय मुनि जोग जु दिया ।।२२।।

नगर लोक आयो सब जात । मुनिवर दीसैं मैले गात ।।
भील चल्या था करण अहेर । वनमे मुनि देख्या तिह बेर ।।२३।।

पूरव भव का बैर विरोध । मन मांहि बहु आण्या क्रोध ।।
मुनिवर नें सरसेती हत्या । देही छोडि देवता भया ।।२४।।

मुनिवर भया सौधर्म इन्द्र । सुरग लोक मे गया सुरवीन्द्र ।।
मुगत आय लीया अवतार । तडित केस तू भया कुमार ।।२५।।

भील मुवा नरक गति लही । बहुरयो तिण खोटी गति सही ।।
भ्रम्या जोनि बहुला दुख पाय । अब इह वादर हुवा आय ।।२६।।

पूरव भव का इह संबध । रुद्र प्रणाम कुगति का बध ।।
सुणी बात ससा सब गया । दया भाव अन्तर्गत भया ।।२७।।

सुकेस पुत्र कौं दीया राज । आपणि करचौ मुक्ति को साज ।।
महोदधि किषलपुर बनी । सुरगपुरी की सोभा बनी ।।२८।।

घौल अबर विद्याधर आय । महोधर बसौं निचरण कराय ।।
विनती करै दोय कर जोडि । सुनौं प्रभुजी कहू बहौरि ।।२९।।

तडतकेस लंका का भूप । दिक्षा लई दिगम्बर रूप ।।
तुझ उसमे थी अधिकी प्रीति । सुकेस पुत्र बालक भयभीत ।।३०।।

लंका का भी साधौ काज । जब वह चेतें तब दीज्यौ राज ।।
राजा सुणि बोलेसत भाव । सिष पुत्र कौं कहा उपाव । ३१।।

जैसा बीज तैसा ज सुभाव । ऊनकूं कहा छिपावै दाव ।।
राजा मनमे किया विचार । अतहपुर गया तिही बार ।।३२।।
राणी सगली लई बुलाई । तिणि सूं बात कही समझाय ।।
इह विभूति सुपने की रिध । जाग्या कछुं न देखै सिध ।।३३।।
अबहु दिक्षा दिढ सुं धरु । काटि करम भवसायर तरूं ।।
सुणें वयन रोवै रणवास । जैसे बोलै वासरी नाद ।।३४।।
कोकिल कंठ सब बोलें नारि । क्यो जल सरवर रहैं विनपार ।।
तुम बिन हम क्यूं जीवै राय । दासी होय बिन वै गह पाय ३५।।
इह सुख छोडि धरो सन्यास । दिन दिन होइ रूप का नास ।।
जनम अकारथ देखै कौंन । ए सुख परिहर लीजे मौंन ।।३६।।
पचामृत भोजन सुषवास । हूवा नित होइ पराई आस ।।
निरस सरस ले हो आहार । छह रितु सहौ परीसा मार ।।३७।।
तुम सुखीयानै कोमल देह । भूमि पिलग तजि सोवो गेह ।।
वाईस परीसा दुख की रासि । क्यो भरिहौ पिय बारह मास ।।३८।।
बलि समझावै मत्री आइ । भूपति ने सहु परिजा जाइ ।।
तुम सा राजा पावै कहा । तुम प्रसाद सकल सुख इहा ।।३९।।
अब तुम राज करो बिश्राम । चौथे आश्रम दिक्षा काम ।।
राजा कहै सुणौं चित लाइ । इन्द्रिय विषय नरक ले जाइ ।।४०।।
पुत्र कलित्र रु राज विभूत । सबै विनासी असी हुत ।।
स्वारथ रूपी जानहु बध । मोह करम बसि हुए अध ।।४१।।
मन वच काय लगाऊ जोग । छांडूं सयल भांति के भोग ।।
प्रतिचन्द्र कुं राजा किया । आपण भेष दिगंबर लिया ।।४२।।
श्रवण मुनीबर के ढिग जाय । दिक्षा लई भये मुनिराय ।।
तप कर उपज्या केवल ज्ञान । धरम प्रकाम भया निरवान ।।४३।।
प्रतिचंद्र तहा भोगवै राज । सुख मैं द्वै सुत उपजै काज ।।
किषर कुंवर अघक दौउ भए । रूपवत विधनां निरभये ।।४४।।
प्रतिचद्र ने दीक्षा लई । राज काज दोऊ पुत्र नें दई ।।
दोऊ भ्राता भोगवै देस । सुख ही मे नित रहैं नरेस ।।४५।।
विजयार्द्ध रथनूपुर नगर । अश्वनवेग राजा बल अगर ।।
विजयसिह पुत्र वलवत । बल पौरुष का नही अत ।।४६।।

आदितपुर नगरी का नाम । विद्यामंदिर राव तिहथान ।।
वेगवती राणी ता गेह । श्रीमाला पुत्री कंचन देह ।।४७।।

श्रीमाला का स्वयंवर

वाके निमित्त स्वयवर रचा । छत्र सिंहासण बहुते सज्या ।।
देस देस के भूपति ग्राय । बैठे ग्रपनी ग्रपनी ठाय ।।४८।।
राग रंग बाजित्र सुघने । मंडपनल नरपति सब बने ।।
कन्या ने कर माला लई । राय सुमंगला कुंवरि सग भई ।।४६।।
लीन्ही छडी धाइने हाथ । सब राजा का कहै वृत्तान्त ।।
एक एक से चढता भूप । उनका कहा लौं वरनु रूप ।।५०।।
नाभस तिलक मातु ड कुंडला । विद्यासद्य सुदरसन भला ।।
वज्रादरज ग्रौर वज्राघ ।वज्रसिल वज्रपंजर साथ ।।५१।।
भानुकुमार राजा चद्रान । नूपुरेन्द्र वज्रहंस बलवान ।।
विद्याधर नरपति तिहा घने । नामावली कहा लौं गने ।।५२।।

दूहा

देखे सब राजा ग्राबली, कोई न ग्राया दिष्ट ।।
ग्रपणे मन भूपति सकल, मान भग चित भिष्ट ।।५३।।

चौपई

कन्या नई फिर माला लई । भूमि गोचरी राजा पें गई ।।
राजकुंवर देखे फिरि नैन । किकिद्ध पास गई माला दैन ।।५४।।
माला देई गले मे डाल । विजयसिंघ कोप्या भुवाल ।।
बानर क्यो ग्राये इस ठाव । हमस्यौं करचा गर्व का भाव ।।५५।।
इनसौ कहौ जाय फिरि गेह । ग्रबही मारि मिलाउ खेह ।।
राक्षस बसी किससुं कहौ । भागो बेग जो जिया चहौ ।।५६।।
जाउ तुरत वन ग्रतर रहौ । वनचर पं धर राच्यां रहौ ।।
बोले किकंध ग्रर ग्रंधकुमार । सुकेस कहै क्रोध के भाव ।।५७।।
तुम पंथी हम लंकापती । किकंधपुर की सोभा भती ।।
जैसे कौवा उडे ग्राकास । तैसें तुम पछी बनवास ।।५८।।
बिजैसिंघ की ग्राज्ञा भई । सेना सकल एकठी थई ।।
कोई छाय रहे ग्रसमान । कोई घेर रहै उद्यान ।।५९।।

द्वार बार घेरे चहु ओर । भांजि न सकई किस ही ठोर ।।
अजहूं इनको कीजे दूर । घर आए मारें नहीं सूर ।।६०।।
इनकूं इहां ले आया कर्म । मारो अबै गमावो भर्म ।।
किषध नरेन्द्र की आग्या पाय । सईन्या सिमिट भई इकठाइ ।।६१।।
विद्या साधी सनमुख भए । वरिणधारी आगैं ह्वै गए ।।
विद्याधर भूझै आकास । भूमिगोचरी भूमि निवास ।।६२।।
मैंगल सु मैंगल चोदंत । पैंदल सु पैंदल भूझंत ।।
जे ते हैं विद्या के वान । दुहुधा छूटैं मेह समान ।।६३।।
सैची तुपक तरणी भइ मार । विजयसिंघ धाइया कुमार ।।
अधक सेती कह्या हकार । रे बानर अब डारो मार ।।६४।।
अधक कुंवर गही तरवार । विजयसिंह मारया तिह बार ।।
विद्याधर कीये भयभीत । सुकेस किकधक अधक की जीत ।।६५।।
किंकर अस्वन बेग पें गया । जयसिंह कुं भूठा कह्या ।।
राजा सुरिण खाई पछार । सेवक घरणे करैं उपचार ।।६६।।
सीतल औषधि वीतनवार । बडी बार मे हुई संभार ।।
तब कर उठ्या मार ही मार । सेना चाली सकल अपार ।।६७।।
आदितपुर कौं घेरया आइ । राक्षस वानर वसि न रहाय ।।
मनमे सूर तरणें आनन्द । देखै किनर सूरिज चंद ।।६८।।
चाकं बिघ के देखें देव । श्रीमाला समभावैं भेव ।।
तुम हो तीन वहै सेन हैं घनी । जै तुम छिपोरि कल हनी ।।६९।।
वे फिरि जाहि तब करो विवाह । मेरा वचन मानो नर नाह ।।
अधककुवर कहै सुनि बैंन । स्यालन देखै मृगपति नैंन ।।७०।।
तुम नृप वैठि रहो घर मांहि । सेनां सब मारों पल माहि ।।
विद्यामदिर अस्ववेग सौं कहै । नीत मृजाद तुमौं ते रहै ।।७१।।
जा गल कन्या डारै माल । सोई कन्यां का भरतार ।
विजयसिंघ ने माडी राडि । तातै भई उपाधि अपार ।।७२।।
अस्ववेग के हिरदै दाह । पुत्र वैर राखै मन मांह ।।
बोले भूप दिखावो मोहि । मेरा पुत्र उन मारा द्रोह ।।७३।।
क्रोध लहर की उठैं तरंग । राक्षस वानर कुं चाहै भंग ।।
अस्ववेग सेन्यां मे गया । किकध राय के सनमुख भया ।।७४।।
वाकूं मोहि दिखावो आंन । मेरा पुत्र हण्या है जांन ।।
विद्यावाहन किषधराय । भयो जुध वरन्यु नही जाय ।।७५।।

अंजकुमर भए सांमहि । मारचा पकडैं ग्रीवा ढही ।।
पकडो भू मि तब छूटे प्रांन । किकंधराय तिहां पहुंच्या आंन ।।७६।।
गही सिला परवत की एक । अस्वनवेग कु मारी फेंक ।।
राजा गिर घोडे तें परचा । सेवक उठाय स्वार तहा करचा ।।७७।।
वडी वेर मे भई संभार । घोडै चढया गहैं हथियार ।।
रे वानर अब फिरि तु चेत । आव फेर तुझ मारू खेत ।।७८।।
मेरा वहुगा वज्र सरीर । अईसा कौंन जोधा वरवीर ।।
जाका घाव मो उपर पर्च । रण संग्राम नीति कै वर्च ।।७६।।
किकध राजा ढूंढै भ्रात । झुज्या सुनि कैं कम्प्या गात ।।
खाय पछार धरनी पर गिरचा । वडी बार मे फिर सभरया ।।८०।।
उंन पापी बालक कौ हया । वाकै चित्त न आयी दया ।।
वह पहलै जो मारता मोहि । भ्राता दु.ख भया मम द्रोह ।।८१।।
वहोत विलाप करै तिह बार । सुकेस कही बात सुवार ।।
इसका था इहां लौं सनबंध । मोहि करम दुरगति का बंध ।।८२।।
ग्यानी उत्तम करै न सोक । रण जुझै जस होय त्रिलोक ।।
बहुत भांति निवारचा दुख । जो अब बचलो तो पावो सुख ।।८३।।
अस्वनवेग वज्र की देह । सेनां घनी वहूत है तेह ।।
जासु संवर होय न कहु । चलो वेग तौ सुख कौं लहुं ।।८४।।
जीवैंगे तो फिरि कैं जुध । चलणै की परकासी बुध ।।
श्रीमाला करि गुपत विवाह । वैठि विमाण ले चाले ताहि ।।८५।।
मंडलीक पुत्र सहस्र सुसार । उन पाछै दउरा तहैं बार ।।
विद्युतवाह समझावै वात । भागें को पीछा न कीजे तात ।।८६।।
ए इतने सब करै विचार । वे पहुचे लंका सुमंझार ।।
लंका किंधपुरी का राज । अस्वनवेग का साध्या काज ।।८७।।
रितु सांवन महा रवनीक । बोलै मोर पपीहा पीक ।।
अस्वनवेग मंदिर पै चढया । देख्या बादर मन सुख बढया ।।८८।।
चल्यो पवन वे पटल फट गये । राजा संसय वहुविध थए ।।
ताहि देख उपज्या वैराग । राजविभूत देत सब त्याग ।।८६।।
सहस्रार कौ दीया राज । आपण किया मुक्ति का साज ।।
श्रवन मुनी पै दीष्या लई । बारहै विध तप साधै गुणमई ।।६०।।

नरपति विद्याधर इक दिवस । पुर लंका में कीनु परवेस ॥
उपसम भाव देस फिरि आइ । सुकेस किकंध का संसा जाइ ॥६१॥
किषंधराय परवत पर गया । श्रीमाला राणी संग भया ॥
किषंधपुर बसाया देस । सुखसौं राज पालै सुनरेस ॥६२॥
दोय पुत्र भए ता गेह । सूर्यरज अक्षरज कंचन देह ॥
पुत्री सूरज कमला भई । कमल जेम सोभा तसु दई ॥६३॥
राजा मेर मेघ के धनी । पंचाली राणी सु जोडी बनी ॥
मृगव दमन पुत्र गुनवत । रूप लक्षण सोभा सौभंत ॥६४॥
इक दिन कुंवर गया था काम । देखी सूरज कमला नाम ॥
आइ पिता सौं विनती करी । सूरज कमला विवाही तिरी ॥६५॥
राजा मेर किकंध पुर गया । किंषध राय सौ विनैवत भया ॥
प्रभु मो परि कृपा तुम करो । सूरज कमला मम पुत्री बरो ॥६६॥
किषध राय नें पुत्री दई । लिख्यौ लगन सुविधाई भई ॥
रहस रली सौं हुवा विवाह । क्रीडा गमन बहु तो उछाह ॥६७॥
सुकेस राव इंद्राणी तिरी । करणाकुंड पुर नगरी करी ॥
मदिर भले सुहावन रूप । छाया सीतल कहीं न धूप ॥६८॥
बाग बगीचे सोभै बने । चैत्याले श्रीजिनवर के बने ॥
नित उठ दरसन पूजा करै । जिनबाणी हिरदै मे धरै ॥६९॥
अनुक्रम तीन पुत्र अवतरे । रूप लक्षण करि सौभै खरे ॥
प्रथम माली सुमाली और । मालिवान ते सोभै ठोर ॥१००॥
हेमपुर नगर व्योम भूपती । भोगवती राणी सुभमती ॥
चन्द्रमती पुत्री अवतरी । माली सौं बिवाही सुभ घरी ॥१०१॥
प्रीतंकर राजा प्रीतकर देस । प्रीतवती राणी गुणवेस ॥
प्रीति पुत्री सुमाली कुं दई । बहुत आदर बधाई भई ॥१०२॥
कनकपुर नगर कनक है देस । कनक नरेस राणी किन्नर वेस ॥
कनकावली पुत्री ता भई । मालीवान कुंवर को दई ॥१०३॥
माली कुंवर पराक्रम धरै । लंका किषधपुर क्रीडा करै ॥
माता पिता कहै समभाय । लंका किषदपुरी मत जाय ॥१०४॥
पूछै कुवरन सौं बिरतात । किह कारण बरजुं ह्वा जात ॥
पिछली कथा कही सब बात । उठ्या क्रोध रोमखरी गात ॥१०५॥
कहे कि अब लंका मैं जाउ । करि संग्राम लेहु सब ठांउ ॥
तात मात समभाव वैन । निरघात राजा कै बहुतै सैन ॥१०६॥

तुम बालक वे हैं बहुबली । वाकै सकल जुध की बली ॥
वासो सरभर कैसे होय । क्षमा करो समझाउं तोहि ॥१०७॥

माली कंवर कहै सुनि तात । देखिज अबहूं करिहुं प्रात ॥
निरघात भूप कौं मारूं ठौर । लंकाराज मैं लेहु बहोर ॥१०८॥

इतनी कहि सेन्या सब लेई । दोन्युं भ्राता संग सुणाई ॥
पिता भया मयद असवार । विद्या बांन लीया संभार ॥१०९॥

माली राजा द्वारा लंका पर आक्रमण

इह राज किषंदपुर गई । किषदसुरज असवारी हुई ॥
आए सुकेस भूप के पास । सूरवीर मन बहुत उल्हास ॥११०॥

आसि पासि के नरपति घने । बानै धारी बहुते बने ॥
उडी रयण छाया आकास । घेरी लंका जुध की आस ॥१११॥

बाजै बजैं भुंभाउ कर नाइ । निरघात राव सब सैन्य बुलाय ॥
कोप चढा जे को हो बली । मह्या सुभट माने मन रली ॥११२॥

नेजा बरछी धनुष तरवार । भूझे सुभट न लागी वार ॥
दंती सो दती चोंदत । टूटे सूंड मस्तक दहटंत ॥११३॥

निरघात राजा हस्ती पलाण । माली कुंवर पै पहुंच्या आन ॥
मारि खडग रथ डारी तोडि । माली कुंवर संभल्या बहोरि ॥११४॥

लीयो खडग हस्ती पै मारि । गहै दंत चढिया तिह बार ॥
विद्याधर मारया निरघात । राक्षस वसी जीते प्रात ॥११५॥

भाजे विद्याधर के लोग । बहुत उनकै मन बाढा सोग ॥
फेर लिया लंका का राज । भया सकल मनबंछित काज ॥११६॥

बहुरि गये ते क्षिधरभ देस । सहस्रार मान्या उपदेस ॥
जित तित के जीते भूपाल । फेर वसाए नगर बिसाल ॥११७॥

फेरी आन्या च्यारू ओर । आये अपने नगर बहोरि ॥
सुकेस किषद ने दीक्षा लई । राज विभूति सु तोंको दई ॥११८॥

राक्षसवंसी लंका का राज । बानर बंसी किकिंधपुर साज ॥
विजयारथ रथनूपुर देस । सहस्रार नरपति असेस ॥११९॥

मानु सुंदरी राणी पटधनी । चौंसठ कला रूप अति बनी ॥
सुखमैं गरभ भया सुभ घरी । दिन दिन देह दुरवल होइ तिरी ॥१२०॥

नृप पूछै राणी सौं बात । काहै दुच्छ होइ तुम गात ॥
तुम कौं कौण बात का दुख । जो तुम चाहौं मांनु सुख ॥१२१॥

राणी कहै सुणु प्राणपती । इंद्राणी से सुख चाहो थिति ।।
राजा बचन कहै धरि ग्यांन । हम विद्याधर देव समान ।।१२२।।
पातर आदि गुनी जन घने । नाचै गावै सुख सब बनें ।।
नो महीने बीते सुभ घरी । भया पुत्र मानी लीधरी ।।१२३।।
रूप लछन ससि की उनहार । इंद्र नाम जनमिया कुमार ।।
ज्यों दुतिया ससि कांति कौं चढै । ज्यो बालक पल पल मे बढै ।।१२४।।
जोवन बसै विवाही नारि । चाली सहस्र किन्नर उनहार ।।
और आठ व्याही पट घनी । इंद्राणी सम सोभा वनी ।।१२५।।
जोजन एक को उचो गेह । सुरगपुरी सी सोभा देह ।।
पचीस सहस्र गुनी जन लोग । निरत करै गावै बहु भोग ।।१२६।।
पच सबद बाजैं दिन रयण । तासु सबद सुणि सोभा चैन ।।
हय गय विभव भडार असेस । माने सब भूपति आदेस ।।१२७।।

दूहा

सुखमें दिन बीते घने, करै प्रजा सुख चैन ।
सुखने दुखने देखिये, निस वासर भरि नैन ।।१२८।।

चोपई

माली भूप लका का धनी । तिसकी आन मानै सब दुनी ।।
देस देस ते आवै भेंट । डरपै भूप न आवै हैठ ।।१२९।।
इद्रकुमार प्रतापी भया । माली का लोग निकाला दिया ।।
अपने लोग तिहां वैठाय । नरपति मिले इन्द्र सौ आय ।।१३०।।
माली राय बात यह सुनी । भया कोप कापी सब दुनी ।।
विजयारध को दहवट करो । इहे म्हारी धरणी तल धरौं ।।१३१।।
सेन्या सकल लई नृप टेर । चढयो विमान न ल्यायो वेर ।।
रग रग के वने विमांन । चले सुभट छाया असमान ।।१३२।।
माली सुमाली सुमालिवांन । सूरज रज अंबर रज जान ।।
और बहुत भूपति सग चले । पहरि आभरण बहुतें भले ।।१३३।।
विजयारध गिरि पहूचे जाय । दुरजन को मारै अब धाय ।।
भई रयण तिहां उतरे लोग । सुपना देखि मन बाढा सोग ।।१३४।।
कुरितु तणा देखिया मेह । बिजली देही पडि बहु देह ।।
अगनि जलै धुवा तिहा घना । रोवै मंजार स्वान सिर धुना ।।१३५।।

दिसा दाहिनी गदहा पुकार । सूके वृक्ष कौं कवा चुंच मार ।।
सुमाली बडे भ्रात सों कहै । यह सुगुन तैं चिंता दहै ।।१३६।।
अब जो फेर चलो तुम वीर । तौ काहू कौं होय न पीर ।।
हम लंका का भोगवैं राज । जो फिर चलैं तो सुधरै काज ।।१३७।।
माली बोलैं सुंणि भो भ्रात । जो अब फिरैं तो लज्जा जात ।।
देस देस में हुवा सोर । अब सुंचैतो लागै षोर ।।१३८।।
और जे सुभट आए हम संग । ते कैसे फिरि हैं करि भंग ।।
डरै जिको पाछा फिर जाउ । जीवत षेत न छोडुं ठाव ।।१३९।।
इतनी कह करि कीनु दौर । आस पास तैं माची रौर ।।
देस परगने लूटे घने । सहस्रार राजा इम सुने ।।१४०।।
बोले भूप इंद्र सो कहो । वाका वचन वेग तुम गहो ।।
गये लोग इन्द्र की ठोर । करैं वीनती दो कर जोर ।।१४१।।
माली नांम लका सुनरेस । चढि कर आया है तुम देस ।।
आस पास के लूटे गाव । घेरा है रथनूपुर ठाव ।।१४२।।
सब विरतात सुन्या जब इन्द्र । सूर सुभट मन भया आनंद ।।
ज्यौं मंगल माता मयमंद । केहरि छाह देखि भाजत ।।१४३।।
जब लग मोकूं देखै नाहि । तौ लूंवे गरमैं मन माहि ।।
राक्षस वानर मारूं ठोर । पडी जाय लका मे सोर ।।१४४।।
सेन्या सगली लई बुलाइ । देस देस के नरपति आय ।।
विद्या जेती थी भंडार । सहु वा समय लई संभार ।।१४५।।
सिलह सयोग बाधि हथियार । चले सुभट तिहा लगी न बार ।।
अस्व गयद घने असवार । हस्ति पै चढि इन्द्र कुमार ।।१४६।।
चामर छत्र महा उद्योत । सूरज मुखी रतन की जोत ।।
सूर सुभट दोऊ दल जुटे । पाछे पगन कोउ नहीं हटैं ।।१४७।।
झुझैं स्याम धरम के काज । जिनको छत्री धरम की लाज ।।
मैगल सेती मैगल भिडे । पैदल सों पैदल जुध करैं ।।१४८।।
माली सुमाली मालवान । पाछे कु पंग अहरे जांन ।।
सूरज रज अक्षर रज आइ । राक्षस बंसी भया दिठाइ ।।१४९।।
फिरकै समट सभाले बांन । दुरजन मारि दिये घमसांन ।।
इन्द्रकुमार कोप्या करि तेह । राक्षस बादर मिलाऊं षेह ।।१५०।।

आप कुमर तब सनमुख भया । बहुत जुध दोउ भूपति थया ॥
परवत की सिल लई उखार । चउथां पडै जो घनहए धार ॥१५१॥

दोऊ भूपति मुष्टिका लरैं । कातर लोग देख सब डरैं ॥
तोउ न मानैं दोउं हार । बान पत्र लषि मारी डारि ॥१५२॥

तुं बालक अजहू अग्यान । मानु कुंवर रीस मति ठान ॥
गही कर डारघा चक्र फिराय । माली ग्रीव पडी भुवि आय ॥१५३॥

सुमाली मालिवान दोऊ वीर । भाजि गए सब लका तीर ॥
बैठि बिमान चले वे गेह । सोग लहरि हूं इन्द्रन की देह ॥१५४॥

इन्द्र तवै छोडे वहु बान । ए राक्षस पावै नही जान ॥
मंत्री तबै समझावै बात । भाग्या कै पीछै कहा जात ॥१५५॥

मत्री वचन सुणे तिह बार । उनकी छोड दई तलवार ॥
वे पहुचे लका मे ग्रांन । राणी रोवैं करैं बखान ॥१५६॥

माली के गुण बरनै लोग । सब परवार मैं वाढ्या सोग ॥
सुमाली मालवान भय करै । इद्र भूप भय चिंता धरै ॥१५७॥

बहोत भाँति समझाया परिवार । गए अलका पुरी मझार ॥
जीता इन्द्र राजा महाबली । जाचिक बोलै बिरदावली ॥१५८॥

कौतिक देख सराहै दुनी । परियन माझ बडाई घनी ॥
मात पिता के बदे पाय । बहुत भाति के विनय कराय ॥१५९॥

आनद मन हुआ हुल्लास । आन्या इन्द्र फिरी चहु पास ॥
चक्र धुजा आदित्या तिरी । ससी पुत्र भया ता घरी ॥१६०॥

लोकपाल इन्द्र का भया । सर्व जीव की पालै दया ॥
पूरव दिसा उद्योतपुर नगर । कातिमन भूप लोकपाल अगर ॥१६१॥

मेघरथपुर महाबली भूप । परणा नारी महास्वरूप ॥
वरुण नाम पुत्र ता गेह । लोकपाल तीसरा करेह ॥१६२॥

नगर मेघपुर पच्छिम देस । रहै तिहा सूरज नरेस ॥
कनकावली का पुत्र नरसेर । ताकुं थाप्या भंडारी टेर ॥१६३॥

काचनपुर पूरब दिसि ओर । वला धगनि नरपति तिह ठौर ॥
श्रीप्रभा राणी पट धनी । चद्र कर्म पुत्र सु गुनी ॥१६४॥

नाम धरत असुर सुर मेह । और दस दिगपाल थापेहि ॥
जम्बु दीप किन्नर किन्नरा । गंधर्व राग सुनावै खरा १६५॥

ग्रस्व ग्रस्वनी वईस्वानर । देव समान सब विद्याधर ।।
कौतिक मंगल व्यौम विद मूप । आनंदवती रांणी सु अनुप ।।१६६।।
तास कन्यां तीय गर्भमई भई । कोकसी कैकसी गुंणमई ।
वंश्रव राजा के बिश्रवा पुत्र । कीकसी दई विवाह संयुक्त ।।१६७।।
वइस्वानर सौ इह मैं थई । लंका राज विस्वानर है दई ।।
सुमाली मालिवान अलका रहे । मन मैं भय दुरजन का रहै ।।१६८।।
सुमाली कै पुत्र इक भया । रूपवंत विद्यावां निरमया ।।
दिन दिन बढा सयाणा भया । कन पौरिष बिद्या निरमया ।।१६६।।
श्री जिनवाणी निश्चै धरै । तीन काल सामायिक करै ।।
लका घुटक राति दिन धनी । छूटा थान पुरषारथ हनी ।।१७०।।
जो हम अपना देस न लहै । इह चिता निसि वासर रहै ।।
इह सोच बिजयारध गया । तपसी भेष वनवासी भया ।।१७१।।
विद्या साधी मन वच काय । कैकसी पिता की आग्या पाय ।।
विद्या निमित्त गई सुन्दरी । रूप लक्षण अबला गुण भरी ।।१७२।।
विजयारध पर पहुती तिहा । रतनश्रवा तप करता तिहा ।।
वाके निकट कैकसी आय । करै रुदन अवला बहु भाय ।।१७३।।
रतनश्रया बोलै तज मौन । साची बात कहौ तुम कौन ।।
कै किन्नर कै हो अपछरा । कारण कौन रुदन तैं करा ।।१७४।।
कौण दुख व्यापा है तोहि । अब तुं वरण सुणावहि मोहि ।।
करूं दूरि तेरी दुख आजि । मन का भेद कहौ सब साजि ।।१७५।।
व्यौमविद राजा मम तात । आई थी मुनिवर की जात ।।
रतनश्रवा विद्या सिध भई । ममकी इच्छा पूरण भई ।।१७६।।
कह इक नवर वसै इह बार । वस्या नवर सुख हुआ अपार ।।
कैकसी सौं विवाह विध करी । भोग भुगत मे बीतै घडी ।।१७७।।
मंदिर सुरगपुरी सम जानि । सेज्या सोमै सुख की खानि ।।
कैकसी मन इच्छा इह भई । होई पुत्र मेरै जै दई ।।१७८।।

तीन स्वप्न

सुख मैं सयन करै ही रयन । सुपन तीन देखे सुख चैन ।।
किंचित रात रही पाछली । एक मुहूरत विरयां भली ।।१७६।।
प्रथम सिंघ गर्जा रव करै । हस्ती हनै बहुत मन धरै ।।
दूजे मैंगल देख्या बली । सरोवर मे वह करता रली ।।१८०।।
कमल उखारि लिया सुख माहिं । मानूं मेरे मंदिर आहिं ।।
तीजे देख्यौ पूरण चन्द्र । सुपने देख भया आनन्द ।।१८१।।

जागी त्रिया हुआ परभात । पति सों जाय सुणाई बात ।।
सुपिने साभलि भया उल्हास । विधनां तुम मन पूरवै आस ।।१८२।।
होइसी पुत्र तीन गुणवत । तीन षड के पति सोभन्त ।।
सुनि प्रिय बचन अधिक सुख पाय । अचल गांठि दई बहु भाइ ।।१८३।।
प्रथम स्वर्ग तैं सुर इक चया । आइ गर्भ स्थिति वासा लया ।।
मनमैं गर्व करैं कैकसी । प्रिय सुं वचन कहै करि हंसी ।।१८४।।
हम सेवैं श्री जिणके पाय । हम मन रहै क्रोध किहि भाय ।।
दपति गए मुनिवर के पास । नमसकार करि पूछै तासि ।।१८५।।
स्वामी कहौ धरम समझाय । चित्त हमारा किम गरबाय ।।
वोले मुनिवर ग्यान बिचार । प्रतिकेशव तुम गर्भ अवतार ।।१८६।।
वासम बली न दूजा और । भूचर खेचर सेवै कर जोडि ।।
दोय पुत्र होसी ता पछै । केवल पाव मुकति मे गमैं ।।१८७।।
मुनि वाणी सुनि आया गेह । अदभुत सुख पाया ता गेह ।।
जब बीते पूरे नव मास । पुत्र जनम का भया प्रकास ।।१८८।।
दीन दुखित नें दीना दान । सब ही का राख्या सनमान ।।
बाजै वाजित्र नाना भाति । सबद सुहावने लागे गात ।।१८९।।

रावण का जन्म

दुतिया शशि जु बधै कुमार । रावण रूप रवि तेज अपार ।।
दुजा कु भकरण सुत भया । चद्र नखा रूप गुंण धीया ।।१९०।।
तीजा भभीषन हुआ कुमार । मानूं पूनम शशि उनहार ।।
दशानन कुमर महाबलवन्त । इन्द्र भूप खोटे चिह्न जोवत ।।१९१।।
सुपने मे गज दाबइ आय । जाग्या कछु देखै नहिं राय ।।
दामिन कडकडाय कै गिरै । लोथि आय धरणी पै परै ।।१९२।।
औंर घणां ह्वैं उलकापात । ए चिह्न इन्द्र देखैं दिन रात ।।
कुमरें इक दिन डबा उधारि । काढ लिया बिद्या का हार ।।१९३।।
पहरी तुरत गले मे माल । दरसण सोभण लगै विसाल ।।
इह था कुल विद्या का धरा । पूजा करैं ते छूंते हरा ।।१९४।।
पु निवंत पहिरघा गल मांहि । पुण्य प्रसाद भय ब्यापै नाहि ।।
कैंकेसी सूती महल सत खनै । सेज्या तैं सुख बिलसैं अति घने ।।१९५।।
दसानन कुंअर सौवै था पास । वदनदति जोति परकास ।।
चद्रमां की सोभा तन कांति । दसन जोति बालक बहु भांति ।।१९६।।

मले हार सहृव में डारि । दस सिर सोभै रावकुमार ॥
वैश्रव विद्याधर उरफेर । सेन्यां साथि गमन सब बेर ॥१९७॥

रावण की जिज्ञासा

चले जात हैं अपने थान । बहुत भांति के घुरैं निसांन ॥
दसानन तब पूछी मात । कवरण भूप इह किह पुर जात ॥१९८॥
कहा बसै कैसा प्राक्रर्म । कुरण न्याल कैसा कुल धर्म ॥
इन्द्र भूप बिजयारध धनी । करै सेव राजा बहुधनी ॥१९९॥

माता का उत्तर

वैश्रवा भगनी सुत मोहि । सुरणौं पुत्र समझाऊं तोहि ॥
लंका छी अमहारी थान । अबण्ह राज करै बलवांन ॥२००॥
घने किये तुम तात उपाव । कछू न वरणता देख्या दाव ॥
अब तुम उपजे तीनूं वीर । कब जीतोगे साहस धीर ॥२०१॥
म्हरै मनसा ऐसी रहै । कवरण समैं फिर लंका रहै ॥
सुरणी वात कोपियो कुमार । हू लंका जीतूं इह बार ॥२०२॥
सुंणि माता समझावैं बाल । तुम हो सुत लघ वय सुकुमाल ॥
इतनी सुणि परबत पै कूदे । मारि लात ढाह्या पद पूंद ॥२०३॥
भारी सिला इक लई उठाइ । ताड वृक्ष कर लिया उठाइ ॥
जो अब फैकूं तो पहूंचै लंक । वैश्रव राजा मानै संक ॥२०४॥
विजयार्द्ध गिर उलट कैं धरूं । इन्द्र सुधा ले प्रलयल करूं ॥
मात पिता उठ चुंबई सीस । बहुत प्रकारै दई असीस ॥२०५॥
पहिलैं विद्या साधउ भली । पीछैं पूरो मन की रली ॥
मात पिता की आग्या लई । तीनूं भाई सब गुरण मई ॥२०६॥
भीम बन हुई विद्या की ठाउ । भयदायक नही मानुष नाउ ॥
अजगर सिंह देख मन डरै । वा बन मे धीरज को धरै ॥२०७॥

विद्या सिद्धि

ये पुनिवंत सिला इकु देखि । बैठा तापस का धरि भेष ॥
धरयौ ध्यान विद्या सिध थई । अन्नदान प्रथमई लई ॥२०८॥
इच्छा भोजन पावै नीर । है गुन है या विद्या तीर ॥
दूजा ध्यान धरया लउ लाइ । आया यक्ष क्रीडा के भाइ ॥२०९॥

यक्ष द्वारा परीक्षा

देख तीन तपसी बहु रूप । इन सम कोई नाहि सरूप ॥
जक्ष परीक्षा इनकी करै । कैसे ध्यान धीर तन धरै ॥२१०॥

देवांगना इक चातुर घनी । रूपवंत लावण्य गुनवनी ॥
गावै गीत बजावै बीरा । गई जिहाँ तापसी तीन ॥२११॥

ताल पखावज दुदुभी करै । निरत करत मुनि जन मन हरै ॥
कोई निकट बैठि इम कहै । किम बालक देही दुख सहै ॥२१२॥

मन मानैंता भुगतो भोग । उछौ वय क्यों सहौ वियोग ॥
तुम कारण हम किंनर चई । तुम्हारी तपस्या पूरण भई ॥२१३॥

जहां तुम चलौ चलैं तुम साथ । तुम हो प्रभू अनाथों के नाथ ॥
एह बैठे काठ समान । मनमे कछु बन आवै आन ॥२१४॥

तब वे किन्नरि वसन उतारि । लपटी इनसो ज्यो गलहार ॥
कोई देह चुटकिया लेइ । कोई पांव दडवडी देइ ॥२१५॥

किन्नरी वहुत दिखाए भाव । इनका ध्यान रह्या थिर ठांव ॥
उनको चित्त न क्यो ही टरै । विलषी भई अप्सरा फिरै ॥२१६॥

आय कही यक्षसो सहु बात । उनका चित्त न चलै किह भात ॥
आप यक्ष आया उन पास । मांगो वर पुर वो मन आस ॥२१७॥

तोउ न बोले तीनू वीर । ठाढा कोपै यक्ष शरीर ॥
निज सेन्या नै दे उपदेश । सब मिल करो भयानक भेस ॥२१८॥

वेग जाइ तप टारो आज । इनका पूरण होइ न काज ॥
इतनी सुणि वितर सब जाव । दई परीस्या नाना भाति ॥२१९॥

कोई रूप सिंघ का करै । बहुत दहाडै देख्या मन डरै ॥
कोई रूप सु करिए एव । अजगर भेस धरै कहु देव ॥२२०॥

कोई सर्प होई तन डसै । तो उनरो मनू नहु का खिसै ॥
वह औरउ सैन्या करी मलेच्छ । कहै पुहपपुर की मन एच्छ ॥२२१॥
रतनसरवा कु बाधन चलै । स्यू कुटंब कहि ल्यावै भलै ॥
जो तुम बहुत सूर वीरता धरौ । हमसौं जुध वेग तुम करौ ॥२२२॥
ए तापस बोले नही बोल । ध्यान लहरि मे करै किलोल ॥
ऐसे कह करि आगै चले । माया रूप चिह्न करि भले ॥२२३॥

रतनश्रवा कैकसी के हाथ । भ्राता बाधे उनकै साथ ॥
ले आये विमान मझार । मात पिता वहु करै पुकार ॥२२४॥

तु दसानन कहिए वलवंत । हमारा होत प्राण का अंत ॥
ए मलेच्छ हम दे अति त्रास । तुमतै टूटै हम संगल पास ॥२२५॥

तू होयगा दस सीस का धणी । एक सीस का धंमयहणी ॥
तुं कहतो प्रथ्वी वसि करौं । झूठ कहत कुछ काज न सरौ ॥२२६॥
जनमतही तु मरि क्यूं न गया । हमरी तोहि न आयी दया ॥
भांन कुमर तूं ऐसो सुभट । तुझ आगल हम पावै कष्ट ॥२२७॥
तै रावल पौरिष कहा गया । तेरं चित्त न आई दया ॥
जो तुम देखो भौंह चढाय । सबै मलेच्छ भसम हो जायं ॥२२८॥
बभीषरण सों कहे ए बैन । तुम बैठे हम होंय कुचैन ॥
तेरा नाम भवीषरण कहे । दुरजन दुष्ट न पल मे दहै ॥२२९॥
तुम देखत हम होई सताप । दुखे पावै हैं माई बांप ॥
जो तू हमैं छुडावै नही । बल पोरिष तुम हारया सही ॥२३०॥
बहुरि गहै नागी तरवार । दपति को मारघा तिहूं बार ॥
सीस काटि कर आगै धरै । तउव न ध्यांन उनका टरै ॥२३१॥
जे जोगीम्वर राखै ध्यान । निश्चै उपजै केवलज्ञान ॥
जे चाहै ससारी रिध । मनवाछित की पावै सिध ॥२३२॥
धरम जिनेस्वर का दिढ धरै । सरब जीव की रिक्षया करै ॥
तब जिया पावै मारग मोक्ष । मेटै जन्म जरा का दोष ॥२३३॥
विद्या निमित्त इरण निश्चै धरी । विद्या सकल आय कर वरी ॥
दसानन ग्यारह सै विद्या लई । जिनके गुरण का पार न कहीं ॥२३४॥
जो विद्या का करौं बखान । पठत सुरणत कछु अत न ग्यांन ॥
भाम करन विद्या लही च्यारि । तिनके गुरण बहु अगम अपार ॥२३५॥
विद्या चतुर बभीषरण लई । बहुत भांति सुखदायक भई ॥
जो बितर आए थे तिहां । ते आभूषरण आपै वहां ॥२३६॥
नमस्कार करि सेवैं पाय । सब वितर ठाढे भए आय ॥
विजयारध पर्वत उतंग्र । ता ऊपर गिर बण्या सुरंग ॥२३७॥
जहा इनहिव किया प्रवेस । स्वय प्रभु सु बसाया देस ॥
कंचन कोट रतन मणि जटा । अधिक उतग दिखाई घटा ॥२३८॥
हथिया पौलि पौलि ढिग करै । कलस परतमा ऊपर धरैं ॥
चैत्यालय जिरण प्रतिमा तरणे । पूजा करै सामायकु घरणे ॥२३९॥
बहुत लोक तिहां बसै प्रसेस । तीनूं भाई जिहां नरेस ॥
अनुवर्त्त पक्ष आया तिरण ठाय । नमस्कार कीया बहु भाय ॥२४०॥
मैं हुं जख अनुंवतक नाम । आज्ञा थोसी ताकं काम ॥
जंबूद्वीप मैं जो कछु कही । सब चितमों तब ठाडा रही ॥२४१॥

छत्र सिंहासन चामर दई । दियो मुकट सुर रतनां मई ।।
बहुरयो कथा पुहुपपुर गई । बहुत आनद बधाई भई ।।२४२।।

सुमाली एवं मालिवान की कथा

इह अलका किषधपुर सुंनी । बाजै बाजा गावै गुंनी ।।
सब परिवार भया आनंद । पूजा कीनी देव जिणंद ।।२४३।।

स्यौं परिवार स्वयंपुर चले । सुमाली मालिवांन दोउ मिले ।।
सूरजरज अंबरजि भूप । बैठि विमान बने जु अनूप ।।२४४।।

परियण युत आये जिण थान । पूजा कीनी निहचै आण ।।
भई रयण कीयो विश्राम । करई सामायिक ले जिण णाम ।।२४५।।

उत्तर तै रतनश्रवा कैकसी । मिले सुतउसे चिता नसी ।।
च्यारू पुरुष आए तिह घरी । आए सब परिवार की तिरी ।।२४६।।

ए बालक उठि लागे पाय । उनु हिये सौं लिये लगाय ।।
कंकसी नें करै डडोत । उनूं दई आसीस बहूत ।।२४७।।

धन धन गर्भ रतन की खानि । तुझते बढे घणे सतान ।।
पुरुषा सिंघासन बैसाइ । बहुत भात कीनी मनुहार ।।२४८।।

चउकी कनक षचत मणिलाल । हीरा पना अवर प्रवाल ।।
तिनपरि बैठें भूपति आय । करै उबटना मध मिलाय ।।२४९।।

सौंधा अगरजा तेल फुलेल । किस्तुरी सामग्री मेल ।।
नाई सुघड करै तिहा सेव । पावै सुख नरपति बहु भेव ।।२५०।।

निरमल जल कचन के कुंभ । ये सोभै ज्यौं सुदर थभ ।।
ढारै कलस करै असनान । गावै गुणियण चतुर सुजाण ।।२५१।।

उत्तम धोवती पहरी भली । तिहा मुंवर मानै बहु रली ।।
इन सरीर मे इसी सुवास । तातैं भवर न मूकै पास ।।२५२।।

दसानन भान करण कुंमार । वभीषण सेव करै बहु भाइ ।।
नमस्कार चरणन कौं करै । पुरुषासुख अधिक मन धरै ।।२५३।।

षट रस व्यंजन

भई रसोई व्यंजन भले । स्युं कटुब जीमण कुं चले ।।
रतन तिवाई सोवन थाल । कचनझारि गगाजल घाल ।।२५४।।

घेवर बरफी लडुवा सेत । बहु पकवान परुस्या तेह ।।
षटरस भोजन कीने घने । हरे वपेरे उत्तम बने ।।२५५।।

जीमैं भोजन सब परिवार । बीरा दीमां पान संवार ।।
सिंघासण परि बैठें आय । नगर कितोहल देवै राय ।।२५६।।

दसानन तब पूछै बात । माली का कहै विरतांत ।।

दशानन द्वारा लंका राज्य प्राप्ति की इच्छा

किम छोडया लंका का राज । व्यौरा सकल कहो प्रभू आज ।।२५७।।

पिछली कथा कहो समझाय । सुमाली भया मूरछा आइ ।।
सबही कवर करैं उपचार । बडी बार में भई संभार ।।२५८।।

अवर कथा कही तिह वार । फिर कैलासह देवहू दार ।।
पूजा करी श्री भगवत । सोवन मुनी तिहा महंत ।।२५६।।

नमसकार करि पूछी वात । लका राज लहै किह भात ।।
अवधि बिचार कहैं मुनिराय । पोते तीन होयगे आय ।।२६०।।

बे पावैगा लका राज । मन बाछित का सुधरै काज ।।
बहु परिवार बढै सतान । उन सब बली न दूजा आन ।।२६१।।

जे कछू कहैं मुनीस्वर जैन । तुमने देषि भया सुष चैन ।।
पु नि सु पावै सुर की रिधि । पुन्ये होवै विद्या सिद्ध ।।२६२।।

पुण्यें भोग भूमि सुष करै । पुण्य राज प्रथ्वी कू बरै ।।
पुण्य दु ष दालिद्र सब हरै । पुण्यै भव सागर जल तिरै ।।२६३।।

पुण्ये पुत्र कलित्र परिवार । पुण्ये लछमी होय अपार ।।
पुण्य विद्या लहै विमान । पून्यै पावै उत्तम थान ।।२६४।।

पुन्ये दूरिजन लागै पाव । पुन्य थी सदा सुषदाय ।।
जल थल बन विहूंड सहाय । तातै पुन्य करो मन लाय ।।२६५।।

सुणे पु न्य कीजे सब कोय । मनवाछित फल पावै सोय ।।
सुरगति नर नारकी तिरजंच । पुण्य बिना सुष लहै न रंच ।।२६६।।

इति श्री पद्मपुराणे बेसानन उत्पत्ति विधानक

मन्दोदरी की सुन्दरता

सुरदंतपुर दक्षिण की ओर । वैतनाथ राजा तिह ठौर ।।
हेमावती राणी पटधनी । मदोदरी सब गुण मय भनी ।।२६७।।

कैसे कवि चन्द्रमुखी कहैं । वह घटै बधै वा सम निल रहै ।।
किम कविराज कहै मृगन । वई भय दायक सुख की देन ।।२६८।।

क्यो करि कवि कहै वेणी व्याल । इह वह रहै प्रत्यक्ष पताल ।।
क्यो विजयं नासा कीर । ए पखी ए गुण गंभीर ।।२६६।।

सकल रूप का करू' बखान । पदमनी की सी सोभा जान ।।
कन्या खेलै ही वह बाल । अचल देखी ताम भूवाल ।।२७०।।

राय देख मन सर्सै किया । राणी सेती प्रकासित भया ।।
पुत्री भई विवाहन जोग । उत्तम कुल जे नामी लोग ।।२७१।।

विवाह के लिये विचार विमर्श

जहा देखिये कीजे काज । मत्री मत्र समारो साज ।।
इन्द्र भूप भूपन सिरमोर । वा सम बली न दूजा और ।।२७२।।

दूजा मत्री विनती करै । दशानन कुंवर विद्या बहु धरै ।।
उत्तम कुल उजियारा पक्ष । उनकी सकल जगत मे पक्ष ।।२७३।।

दिन दिन ह्वं है घणा परताप । उसका जीवै दादा बाप ।।
मत्री बात सति चित लगी । बुलाए पडित अरु जोतिगी ।।२७४।।

साधो लगन देख बहु भाति । सब विग्रह होवै उपसाति ।।
जोतिग देखि साधी सुभ घरी । और बहुत सामग्री करी ।।२७५।।

पुहपनगर के लिये प्रस्थान

मत्री च्यार कन्या इक सग । और लोग बहुरंग सुरग ।।
पहुचे पुहपनगर मे जाय । रतनश्रवा तिहा नहि पाय ।।२७६।।

पूछे लोग नगर के घने । भीमपुर नगर रतनश्रव सुने ।।
स्वयंपुर नगर वस्या ता पास । सुख सु तहा बे करै विलास ।।२७७।।

मंत्री स्वयंपुर नगर कु चले । वन उपवन मदिर तिहां घने ।।
उतरे वन जिहा श्री जिनथान । चन्द्रनखा बैठी थी आन ।।२७८।।
जब उनसो वह कन्या मिली । बहुत बात पूछी तसु भली ।।
तू किम एकाकी इण ठाम । कहो कवण अपणो कुल कांम ।।२७६।।

चन्द्रनखा से भेंट

चन्द्रनखा बोली सभभाय । दशानन है मेरा भाय ।।
सयल राज पर्वत सुभ ठौर । चन्द्रहास खडग की दौर ।।२८०।।

ते विद्या साधन को गया । सात दिवस का वादा दिया ॥
चन्द्रहास खडग नैं पाव । अब आवसी दसानन राय ॥२८१॥
विद्या सिद्ध मन वांछित भई । चन्द्रहास की प्रापति भई ॥

रावण के दर्शन

आया रावण श्री जिन भौंन । साध्या भला महूरत सौंन ॥२८२॥
मन्त्रिया आय कियो परिणाम । देख्यो रूप लक्षण गुण धाम ।'
ऊचे आसन बैठा आय । रवि ज्यों सोभा वपु परताप ॥२८३॥

पूछे जबै दसानन कुमार । कवण काज आया भो द्वार ॥
स्वर्गगीतपुर दक्षिण देश । दैत्यनाथ तहा बडो नरेश ॥२८४॥

ताके तनया मन्दोदरी । जाम रूप नही अपछरी ॥
चन्द्र ललाट पै भौंह कवान । मृगनयनी लज्या गुन थान ॥२८५॥

नासा कीर रू सुठट कपोल । उष्ट रग दत सहज तबोल ॥
कुच भुज चरण कमर केहरी । सुघर कलाई सोभै घरी ॥२८६॥

ऐसी है गुण गण सयुक्त । हस गमणी नव किरण जुगत्ति ॥
तु मनि मस्त बहै सुंदरी । लेहु लगन साधो सुभ घरी ॥२८७॥

मन्दोदरी के साथ विवाह

लियो लगन मन रहस्या घना । स्वयपुर गए कुटब मैं भना ॥
आनद हुआ दोऊ कुल मांझ । बाजे बाजै बाजुर सांझ ॥२८८॥

भले महूरत कियो विवाह । बहुत अडंबर करि उत्साह ॥

भोग भुगति में बीतैं घडी । सुखमाने दंपति तिस घडी ॥२८९॥

दोऊ कोक कला विध करै । अधिक प्रीत उर माही धरै ॥
मेघमिर पर्वत ऊपरि वाय । एक जोजन की है चउराइ ॥२९०॥

छह हजार नृप की पुत्री । षेलै सरवर ऊपर खडी॥
बसन उतार करैं असनान । उझकि उझकि सब झाकैं आनि ॥२९१॥

जल उछाल खेलैं सहेलिया । गावैं सरस चउ बोलिया ॥
घाट बाट रखवाला रहै । मारग चलैं न सब बट रहैं ॥२९२॥

दसानन विद्या सभारि । पहुतो जाय सरोवर पाल ॥
सगली कन्या रही लजाय । ताकूं देख रही मुरझाय ॥२९३॥

दसानन दोडि ग्रही तसु बांह । सकोचि प्राणि कछु बोली नाँहि ।।
सबली ही समझी तिहुं बार । इह निश्चै सब का भरतार ।।२९४।।

एक महुरत भांवरि फिरी । बासमये भूखली सब तिरी ।।
कोक कला सब ही परवीन । किनर देखि होय गुण हीन ।।२९५।।

रखवाले ऐसी सुध पाय । कही ग्रमर सुंदसुं जाय ।।
सुनि करि नृप कोप्यो बहु भांति । सेना भेजौ चाबै दांत ।।२९६।।

वाकूं मारि करो तुम षेह । दशानन नहीं राषी उस देह ।।
चले सुभट परवत पै गये । छीडे बाण ता सनमुख भए ।।२९७।।

दसानन तबै चढायैं भौंह । सब सेन्या भागी सिर नौंय ।।

दशानन की वीरता

नृप सौं जाय जनाई सार । वा सनमुख न चलै हथियार ।।२९८।।

राजा कहै अवर ल्यो सैन । पकरो वेग दिखावो नैन ।।
तब सेवक नरपति सो भनैं । प्रभू तुम आप चलो तो बनैं ।।२९९।।

अमर सुंदर अमर नो वेग । कनक विद्युत प्रभ अवर अनेक ।।
षट्सहस्र भूपति इक ठोर । सेना का कछू नाही ओर ।।३००।।

चढे विमान चले उस थान । राजसुता देखिया निसान ।।
पद्मावती आदि जे तिरी । दसानन सुं विनती करी ।।३०१।।

तुम परि चढि आया निश्चै धार । तुम जल माहि छिपी असवार ।।
जो तुम जल नें तिर नवि सको । तो मातिनाथ मंदिर मे लुको ।।३०२।।

विद्या ल्यो तुम आलोपनी । दृष्टि न आवो काहू तणी ।।
जब वे ढूंढ सोष उठि जाय । तब ले चलो आपने ठांव ।।३०३।।

रावण कहै सुनो त्रिय बैन । मेरा बल तुम देखी नयन ।।
मैं तो गरुड वे सर्प समांन । एको सनमुख झुझैं आन ।।३०४।।

सिंह एक हस्ती सैंस्याठ । भाजै तुरत मयगल ठाठ ।।
मैं तो बली सिंघ सौंवाधि । मोकुं सकै कौन नर साधि ।।३०५।।

सब नैं पकडि करूं दहै वाट । बध करो सब ग्रोघट घाट ।।
पद्मावती प्रमुख इम कहै । पिता भ्रात मुझ जीवत रहैं ।।३०६।।

अवर निसंष करो असिघाउ । उनको तुम लीजियो बचाउ ।।
दसानन सुणुं तुम तिरी । उण मारन की प्रतिग्या करी ।।३०७।।

सब दल निकट पहुंतो आय । रावण भी तत सन्मुख जाय ॥
बैसि विमान गगन मे गया । बहुत सुभट बिद्या के किया ॥३०८॥

चन्द्रहास तब खडग संभाल । मुराछावंत किये ततकाल ॥
नागपासनी बिद्या डारि । बांधे सब नरपति तिहं बार ॥३०९॥

मानभग सब ही नृप किये । हार मान विनती कर नये ॥
दया आण छोडे सब राय । कन्यां व्याहीं मन धर भाव ॥३१०॥

सकल त्रिया ले घर कौं चले । भान भभीषन सन्मुख मिले ॥
मंदिर अंतेवरह सवारि । न्यारी न्यारी राषी नारि ॥३११॥

कुंभपुर नगर सहोदर भूप । ता घर राणी महा स्वरूप ॥
तडित माला ताकै सुता । भानकुंवर व्याही शभमता ॥३१२॥

कुंभपुर तणां सुण्या जब गीत । कुंभकरण नामैं सु पुनीत ॥
ज्योतपुर विमुष सुकमल नरेश । मदनमाला नारी गुणवेस ॥३१३॥

सरस्वती पुत्री गुणवत । रूपवत लावण्य बुधिवन्त ॥
भभीषण सौं किया विवाह । भोग भुगत मे करैं उछाह ॥३१४॥

मदोदरी गर्भ स्थिति करी । इन्द्रजीत जन्म्या शुभ घडी ॥
नाना कै ग्रह बधै कुमार । देखत मोह करैं नरनारि ॥३१५॥

दूजे मेघनाद अवतारि । रूपवंत ससि की उनहारि ॥

कुंभकरण द्वारा उपद्रव

कुभकरण लका ढिग जाय । आस पासि सब लूट ले जाय ॥३१६॥
बहुत सखी आनी सुंदरी । भोग मगन मानैं मन रली ॥
इसी बात तब वैश्रव सुनी । आई लहर क्रोध कंपनी ॥३१७॥

वैश्रवण राजा के दूत का सुमाली के दरबार में आना

लिख्या पट्ट दूत कर दिया । स्वयप्रभ नगर सुमाली पै गया ॥
सोभा दूत नगर की देख । देखी स्वर्गपुरी सुविवेक ॥३१८॥

जाय पहुंतो राजै द्वार । सुमाली सुरत सुणी तिहबार ॥
राजा पासैं कोक बसीठ । लिया लेख बांच्या नृप दीठ ॥३१९॥

नमस्कार करि बोले दूत । निरभय जंपै वयण बहुत ॥
तुम इन्द्र ते बचे थे भाग । पातालपुरी छिपे थे लाग ॥३२०॥

दयानिमित्त दिये तुम छोड । अबके पकडे मारउ ठौर ।।
तुमने बुधि मारण की भई । तुमैं उपाधि उपाई नई ।।३२१।।

सोवत केहरि दिया जगाइ । वा आगें जीवत क्यू जाय ।।
जो दादुर अहिमुख ते छूटि । फिर करिहै वाबी की घूटि ।।३२२।।

ऐसे तुम निबसों इस ठौर । सुनें इन्द्र अब मारै ठौरि ।।
जो तुम अपनौं जीवत चहौ । तो अपणे मारग मे रहौ ।।३२३।।

कुंभकरण अब किया बिगार । वानै बाधियो अब मार ।।
जो उस सीष हुवैं इस बार । बहुरन करै अनीति लगार ।।३२४।।

जो नही करै तुमारी कान । तो उस बाधि भेज द्यो आनि ।।
हू तिस कैसा लगाउ हाथ । बहुरन चूक करै किण साथ ।।३२५।।

दशानन का कोप

साभ न इतनी दसानन कोप । जैसें गरज करै घटाटोप ।।
कहै राय सुन रे अज्ञान । काक हस होवै किह वान ।।३२६।।

मानुप इन्द्र होवै किण भाति । हम सेवक है उसका णाति ।।
जो मगल गरजै मन माहिं । देषै नहिं केहर की छाह ।।३२७।।

तुझ पतग डोला उणहार । कहा गरुड तापति करै मार ।।
ज्यौं पतग ते सेवै भूप । देखत मरै अगनि का रूप ।।३२८।।

तैसे इन्द्र और वैश्रवान । जे वै बेग मिलै मुझ आन ।।
तो वानैं छोडूं जीवता । नातर वलिद्यउ दशदेवता ।।३२९।।

दूत राय कै सनमुख खरा । चंद्रहास खडग कर धरा ।।
कंपी धरती कप्या सूर । भभीषण उठ कहै हजूर ।।३३०।।

इस ऊपर क्या कोपो वीर । यह किंकर आया तुम तीर ।।
कहे आपणे पति के बैन । या कु मारचा वात न अैन ।।३३१।।

अर याको जो मारो डार । तो अपजस होवै ससार ।।
इतनी सुनत भया मन सात । समझाया जब लहुडै भ्रात ।।३३२।।

धका दे पुर बाहर किया । वसीठ का भर आया हीया ।।
पगडी बाध लका मे गया । सब व्यौरा वैश्रवन सो कह्या ।।३३३।।

वे तुमनें पतंग सम गिनें । उनकी बात कहत न बने ।।
दसानन दस सिर का धनी । अपनै मन राषै अति मनी ।।३३४।।

वीस भुजा दीसैं बलवंत । विद्या घणी करै परचंड ।।

वैश्रवन राजा द्वारा युद्ध

वैश्रवन कोप्या भूपाल । ज्यों दिया तेल अगन में डाल ।।३३५।।
सुरस सुभट सब लिये बुला । मरू बाजे भए करनाइ ।।
देश देश मे भेज्या उकील । आया सुभट न लागी ढील ।।३३६।।
उडी धूल छायो आकास । अंधकार दीसै चहूं पास ।।
चढि विमाण दोड तिह बार । स्वयं प्रभु नगर घेरया तिह बार ।।३३७।।
दशमुख विद्या लई संभाल । दोन्यूं भाई लये हुंकार ।।
रतनसूर पलान तुरग । भले सुभट लीये सब संग ।।३३८।।
दुहू तरफ वानैती भूप । सनमुख भये जुध के रूप ।।
गहि तरवार चक्र कर लिया । बरछी हाथ ढाल मुख दीयां ।।३३९।।
सूर सुभट दोऊ धा लरैं मूंड तूटि धरनी परि पडै ।।
सर छूटे वाणव की मार । मानो वर्षे घन हर धार ।।३४०।।
दसानन निज करै मनमांहि । सेना भूझ मुई मनमांहि ।।
केहरि रथ बैठा तब आय । दुरजन दलन भया संताप ।।३४१।।
गदा चक्र ले खडग चंद्रहासि । दस सिर बीस भुजा हैं तास ।।
धस्या कटक मे मारे घने । जक्षनाथ आया साम्हने ।।३४२।।
दोऊ लरैं जुध कै हेत । जक्षनाथ तब राख्यो खेत ।।
तब वैश्रवन सनमुख भया । वैश्रवन चित्त ऊपजी दया ।।३४३।।

युद्ध से वैराग्य

ध्रग ध्रग ए राज ध्रग मेदिनी । विषय बेल के फल ए दुनी ।।
पिता पुत्र भ्राता थी लरै । रुद्रध्यान करि नरकौं पडै ।।३४४।।
इह मो भाई मौसो के पूत । याकूं मारे पाप बहुत ।।
इण प्रणांम करि ठाढा भया । दसानन रुद्र भाव सों गया ।।३४५।।
वैश्रवण बोलै तिहं बार । जाणी ए संसार असार ।।
किसका राज कौण की मही । सुख दुख दाता कोई नहीं ।।३४६।।
माया मोहि मे फिरहि अग्यांन । क्रोध मान वसि भया अग्यांन ।।
तृष्णा लोभ बहु दु:ख का सूल । तिनमें रह्या चिदानंदि भूलि ।।३४७।।
राज करत उपजै बहु पाप । मरि करि परिभव लहै संताप ।।
बली दसानन कहै विचार । हिवणा कवण ग्यांन कौ सार ।।३४८।।

जइ तुं जीव की रिक्षा करैं । जनी होय तो काल न टरैं ।।
जो तू आने जीव तें डरैं । तो तु सेव हमारी करैं ।।३४६।।
लंका हम कू तू जो देह । तो इह बचै तुम्हारी देह ।।

दसानन द्वारा युद्ध करना

जो कछु बल पौरष मन धरौ । तो संभालि फिरि हमसों लरो ।।३५०।।

इतनी सुनत गहै हथियार । सनमुख ह्वै करि माडी रार ।।
दसानन गदा लीन्ही हाथ । रथ फेरया तब लंका नाथ ।।३५१।।

धनदत्त विद्याधर आया दौडि । गदा चक्र वाणी की झौडि ।।
दसानन फिरि कीने धाउ । दसानन बज्र कीया दाउ ।।३५२।।

विद्याधर नै सिर सौं हया । रथ ते गिरया पुत्र ले गया ।।
वैद्य बुलायो कीया जतन । घाव सिबातैं कहा कठिन ।।३५३।।
सेवा करैं पुत्र सब आय । सेवैं घाव अरु मलम लगाय ।।
वैश्रवने देखै चहु ओर । पडी लोथ ही सगली ठौर ।।३५४।।

सेन्या सकल का भया सहार । मन वच क्रम छोडयौ अहंकार ।।
उपसम भाव उरमाही धरैं । जिणवर चरण सरण सभरैं ।।३५५।।

या संसार अचल कछु नाहि । राजभोग जिम बादल छाह ।।

जिस कारण बाधे सहू पाप । चहुगति माहि सौहै सताप ।।३५६।।

इन्द्री सुख के कारण जीव । बहु अपराध चढावें ग्रीव ।।
बिना काज इतना जिय मरैं । किये करम टारे नही टरैं ।।३५७।।

वैश्रवन द्वारा दिगम्बर दीक्षा ग्रहण

लका राज दसानन दिया । वैश्रवन भेष दिगबर लिया ।।
बारह विध तप उत्तम ध्यान । तेरह विध चारित्र विनाण ।।३५८।।

तन बाईस परिसा सहै । अष्ट करम छिनमाही दहै ।।
सारित रुद्र ध्यान करि दूरि । धरम सकल चित राखैं पूरि ।।३५६।।
केवलग्यान भया तिह घडी । सुरलोकातिक महिमा करी ।।
कोटि कम पहुच्या निरवान । पायो सिवथानक कल्यान ।।३६०।।

सुमाली द्वारा पुनः लंका की प्राप्ति

सुमाली बैठा लका राज । भया सकल बाछित काज ।।
ए सब कवर करैं आनद । समरण पूजा करैं जिणद ।।३६१।।

दसानन विमान इक रच्या । नग तिरणै उणहारै संच्या ।।
मंदिर कनक मई सब किये । बंदनमाल रतन मय हिये ।।३६२।।

छत्र सिंहासरण चामर ढरैं । सब कुटंब संग लेकर चलैं ।।
भंन कुंमर शुभ रच्या विमान । भभीषरण है सवारया ग्रांन ।।३६३।।

चढे विमान अपरणे आपरणे । दक्षिरण दिस नृप साथे घनै ।।
देस देस के भूपति मिले । श्रारण मनाय विजयारध चले ।।३६४।।

मारिग माहिं पूजि सुमेर । चैत्याले देखे बहु फेर ।।
ऊपर धुजा बहो फहराय । रतनबिंब जिरण का तिरण ठाय ।।३६५।।

सुमाली सेती करै प्रसन्न । दोउ कर जोडि बीनवै दशानन ।।
इरण नगरी का भाषो नाम । चैत्यालै कब ते इस ठाम ।।३६६।।

सुमाली भूपति ब्योरा कहै । हरिषेरण चक्री छहूखंड लहै ।।
उन श्री जिनके मंदिर किये । छत्री कलस रतन जड दिये ।।३६७।।

हरिषेरण चक्रवर्त्ति की कथा

हरषेन की सुनु अब बात । उन जिरण भवरण किये किरण भांत ।।
कपिला नगरी सिंहध्वज राय । विप्रा राणी सबै जिरण पाय ।।३६८।।

ताके गर्भ भया हरषेरण । वाकै भए हुआ सुख चैन ।।
राणी दस लक्षरण व्रत करै । पुन्यौं दिन चाहै रथ फिरै ।।३६९।।

लक्ष्मी सोकि पति सौ बीनवै । मिथ्या धरम कुदेवै नवै ।।
मेरा रथ पहलै नीकलै । ता पाछै वाका रथ चलै ।।३७०।।

राणी के मन व्यापा सोग । छांडे अन्नपान रस भोग ।।
हरिषेरण माता ढिग गया । सब व्रतांत रथ का पूछिया ।।३७१।।

तुम हो क्यों माता अरणमरणी । रथ पूजा सामग्री वरणी ।।
कही पुत्रस्यौं सब समझाय । सुनि हरिषेन पसीनी काय ३७२।।

जो अब कहौं पिता सौं बैन । बधै उपाधिर होय कुचैन ।।
उठ्या कुंमर गया उद्यान । सब वन दीसै अति भय वांन ।।३७३।।

अजगर सर्प सिंह तिहां रहैं । कोई मनुष तहां भूलि न जहै ।।
पुण्यवंत चित भय नवि धरै । बनमे कुमर अकेला फिरै ।।३७४।।

गिरि ऊपरि सन्यासी रहै । स्यो कुटंब भेष तप गहै ।।
पंच अगनि तिहां साधै घने । रूपवती पुत्री तिह तनै ।।३७५।।

नीचि झांकि देख्यो हरिषेन । भया दुहां का चारों नैन ।।
देखि कुमर गिरि ऊपर जाय । तपसी याहि कुंवर जे श्राय ।।३७६।।

इह उनका वरज्या नही रहै । गिरि ऊपरि का मारग गहै ।।
तब वे कोप उठे तापसी । श्राव गहि श्रावै धसमसी ।।३७७।।

कन्या देखं दृष्टि पसार । तब बोली माता बच सार ।।
हम इम सुण्या साधु मुख बैण । तू पटराणी ब्याही हरिषेण ।।३७८।।

तू देखं परदेसी ऊठि । निज तन कहा लगावै पोटि ।।
तब बोले हरिषेण कुमार । श्रतिथन पै क्या गहु हथियार ।।३७९।।

परवत छोडि चल्यो वन माहिं । मनमे चिंत वा सुर साझि ।।
वन फल खाय वन ही मे रहै । रात दिवस दारुण दुख सहै ।।३८०।।

फूल पान सोवै सायरै । निस वितीत होवै इण परै ।।
इण विजोग तै कछु न सुहाय । प्रानी प्राण बिना दुख पाइ ।।३८१।।

मन मे ऐसी निश्चय करी । माता दुख बहुरि श्रस्तरी ।।
जब छह षड का पाउ राज । जिणवर भुवण सवारौं राज ।।३८२।।

ऐसा चिंतत सिंध तट गया । नदी तीर तिंह ठाढा गया ।।
तिहा नारि देखै सब घरी । गोरी बाल तरुणी गुण भरी ।।३८३।।

प्रौढा विरधा बहुत सुजान । श्रमी स्वरूप देख इक तान ।।
नयनह देखं रूप श्रथाय । सिथल भयी निज घर न सुहाय ।।३८४।।

हस्ती एक बहुत मद भरचा । पटा चुवै भय दायक खरा ।।
महावंत मगल पर चढचा । चरबी भोई श्रवरछह गढचा ।।३८५।।

घेरचा जाहि चले चिहु श्रोर । सारे नगर मचाई रोर ।।
श्रावत देखिर कहै कुमार । से महावत हाथी ने टालि ।।३८६।।

महावत कहै परदेसी सुनौ । मंगल मतवालो है घनो ।।
श्राकुस गिणें न माने कारिण । यहा नही फिरै हमारे पाण ।।३८७।।

किम करि यो का महरा फिरै । तु ह्याथे श्रलगो क्युं न टरै ।।
साम्है गज पाछै है नदी । कहा जाउ दोन्यु विध बदी ।।३८८।।

सकल नारि देखै विललाइ । महावत गज ले पहुच्या श्राय ।।
तब हरिषेण धीरज बहु दिया । तुम कछु भय चित नाणउ तिया ।।३८९।।

बोले कुमर रे समझ गंवार । हाथी सहित तुझ मारू ं डारि ।।
कहै महावत तुझ लाग्या काल । दूरि होवै ना मूढ गंवारि ।।३६०।।

सांभल सबद कोप्यो सुकुमार । हस्ती दंत गहे तिरण वार ।।
लिये उपारि मस्तग सौं हनैं । भाज्यो विलखिनाय गज मनैं ।।३६१।।

एक दई महावत कै लात । जाणैं करी सत्रु की घात ।।
निरमद किया महामयमंत । राजा सुधि लई बलवत ।।३६२।।

सिंहराज भेजे सब लोग । करो महोछव कवर सजोग ।।
बहुत करी विनती मनुहार । भली भाति ल्यावो हम द्वार ।।३६३।।

आय कुंवर कै लागे पाय । चलिये प्रभू बुलावै राय ।।
हस्ती ऊपर चढयो कुमार । वाजैं प्रतिबाजे तिह बार ।।३६४।।

छाय बाजार सवराई गली । घरि घरि कामरिण गावैं रली ।।
सिंह भूय भेटया उर लाय । रूप देषि अति हरष्यो राय ।।३६५।।

निजपुत्री ब्याही तिह घरी । ताकी साथि कन्या सौ वरी ।।
इक दिन बात निमित्तक भनें । इस कन्यावर हस्ती हनैं ।।३६६।।

भोग भोगवै सुख सेझ मझार । नागवती चित करी कुमार ।।
कुवर भणैं कब बीतैं रयरण । चलौं बेग नागवती लैंरण ।।३६७।।

इम चितवन्ता आई नींद । परयो सेज पर जारिण गयंद ।।
बेगवती विद्याधर आय । कुवर सोवतो लियो उठाय ।।३६८।।

धर विमान लेचल्या आकास । बेगवती मन करै उल्हास ।।
जाग्यो कुवर अचुंभय भयो । देख त्रिया कर सो कर गह्यो ।।३६६।।

तूं छै कवरण कहो सत भाव । किह कारण तैं लिया उठाइ ।।
बेगवती बोली नहीं बात । कुंवर बिचारै घालुं घात ।।४००।।

बेगवती कंपी तिहंबार । हिवं मुनें जो डारै मार ।।
बहु करै बीनती आपरणैं । हु आई कारज तुम तरणैं ।।४०१।।

जो तुमही विरणासत हो मोय । तो सब कारण विरणसैं तोहि ।।
सुरज उदयपुर नग्र सुभथांन । संक्रचाप राजा जिम भांन ।।४०२।।

अंधुमती राणी पट धनी । जै चंद्रा पुत्री ता तणी ।।
लिख दीने बहु षंड के भूप । कन्यां निजर न आव्या रूप ।।४०३।।

तुमारा चित्र सीस धरि लिया । ता कारण मैं तुम हर लिया ॥
चलो बेग तुम करहु बिवाह । मिटै सकल हिरदै के दाह ॥४०४॥

सुरज उदयपुर में तब गये । राजा पास बधावा गये ॥
सुभ लगने ब्याही सुंदरी । भोग मगन मे बीतै घड़ी ॥४०५॥

मगाधर्म महींदर भूप । दोऊं भए क्रोध के रूप ॥
इन परदेसी नें कन्या दई । हमारी उसने काण न लई ॥४०६॥

सेन्या ले चल दौडे सूर । विद्याधर विद्या भरपूर ॥
सुरज उदयपुर घेरया आय । हरिषेण सु कहै समुझाय ॥४०७॥

तुम ग्रह रहो हम जाहैं लरन । तुम पाहुणा न होवै मरण ॥
तब हसि करि बोले हरिषेन । तुम घरि बैठि करो सुखचैन ॥४०८॥

हम वैरी स्यु करि हैं युद्ध । अपणा मन तुम राखो सुधि ॥
सैन साथ ले मुहमल भए । सूरवीर तहा जुझ बहु भए ॥४०९॥

दारुण जुध भया भैभीत । हरिषेन की भई तब जीत ॥
जीत्या सत्रु भया आनद । बाजे बजे महा सुखकद ॥४१०॥

आयुधशाला कारण भया । चक्र सुदर्शन पाया नया ॥
पूजा करि सुदरसन बंदि । चल्या चक्र जीते छह षड ॥४११॥

तब आए तापस की पुरी । बारह जोयण सेन्या परी ॥
सहु तापस आये तिह बार । आसीरवाद दे बारबार ॥४१२॥

तब हरषेन कहै हसि बात । मे हु वह जो तुम वरजात ॥
तपसी जाणि दया उर धरी । षिमा करी उन वाही घरी ॥४१३॥

तपसी कहै तुम हो धरमिष्ट । पुण्यवंत क्यु होय न कष्ट ॥
वन विहड मे पुण्य सहाय । मन वाछित सुख उपजै आय ॥४१४॥

पुण्य बधै लक्ष्मी परिवार । पुण्यै भोग लहै ससार ॥
तुम बलवत अति महापुनीत । तुमतैं कौण सकै नर जीत ॥४१५॥

सब तपस्या मिल अस्तुति करी । ब्याही नागवती पुत्तरी ॥
पहुते आय नगर कपिला । कठा कपण परियण मिला ॥४१६॥

मात पिता के बंदे पाय । रथ चलाइया श्री जिनराइ ॥
मु जै राज करै आनद । ठोर ठोर देहुरा जिणंद ॥४१७॥

राज करत दिन बीते घने । एक दिवस एक कारण बने ॥
चढि मंदिर देखै बन भाव । देखे हिरण जुगल इक ठांउ ॥४१८॥

सुरत रीत वे बन में फिरैं । विद्युत पात तें दीऊ मरैं ॥
ताहि निरख जाग्यो मन ग्यान । कालचक्र है पवन समान ॥४१९॥

क्षिण मैं व्यापै करै न ढील । मोह जिण राख्यउ कील ॥
इह संसार जल बुदबुद प्राय । पल पल आव घटत ही जाय ॥४२०॥

हय गय विभव अर्थ भंडार । पुत्र कलित्र मित्र परिवार ॥
सबै बिनस्वर थिर नहीं कोय । सपई तणां विछोहा होय ॥४२१॥

ससार परिक्षा परिषन किया । राजरिद्ध तजि संयम लिया ॥
करम काटि पंचम गति लई । हरिषेण कथा संपूरण भई ॥४२२॥

दोहा

सुनी कथा हरिषेण की, मनमे भयो आनंद ॥
दशानन को सशय मिटयौ, पूजे देव जिणंद ॥४२३॥

चौपई

दशानन द्वारा जिन पूजा

जिनवर भवन में उतरे जाय । प्रणपति करी दशानन राय ॥
आठ दरब स्युं पूजा करी । जनम सफल मान्यौं तिह घरी ॥४२४॥

वहा तैं उठि समेदगिरि गये । रैण भई आश्रम तिह लये ॥
हसती एक महामयमंत । ढारह फोरत गरज करंत ॥४२५॥

लोक देख होवै भयवंत । दसानन चित सोच करंत ॥
कै कोई दुरजन है इह बार । आया हमसों करिबा रार ॥४२६॥

कै वैश्रवन क्रोध संभाल । यूद्ध करण आया इह काल ॥
व्हां सेती उठि लीनी सुद्ध । हाथी देखि विचारी बुद्धि ॥४२७॥

कुसुमादिक विमाण परि बैठि । आपण जोवै हस्ती हेठ ॥
धनुष सात है उदर गयद । दस धनुष लवा वपु छंद ॥४२८॥

नव धनुष ऊंचा गजराय । ऐसापति साम रावै भाव ॥
दसानन उठि ऊभा थया । निकट कर्ण के संख बजाय ॥४२९॥

सख सब्द गिरिवर गिरिपडै । धरती कपी जलहर डरै ॥
हस्ती भागो सांकल तोडि । दसों दिसा में मांची रोर ॥४३०॥

भई भंडा की रोमावलि खडी । हस्ती कै जिय चलभल पडी ।।
तबै गयद भाज्यौ चिघार । दसानन चरण गह्या तिहुंवार ।।४३१।।

फैंक बगाया धरती पड्या । मानुं अजनगिरि गिर पडया ।।
पकडि दात झकझोरा घन्या । बज्रमुष्टि कर ताकू हन्या ।।४३२।।

निरमद कीया अजा समान । सुख पाया कुटब जन आंन ।।
पोह फाटी रु भया परभात । मजपलाण मार कर जात ।।४३३।।

तब इक किंकर पहुता आइ । लोटैं धरा सिर पाग वगाय ।।
दसानन तिहा उभा रह्या । कहो किंकर तू किणं दह्या ।।४३४।।

तासुं वचन पूछं बलवीर । कहो बात चित राखो धीर ।।
कोण काज आया मो पास । तेरा मन की पूरू आस ।।४३५।।

सखावली किंकर को नाम । सेन्यावली का सुत इण ठाम ।।
इन्द्रतणा किंकर कही एक । तिण लीधी लक कर टेक ।।४३६।।

लोग तुम्हारा दिया निकाल । सूरज रज अच्छर रज पाइ मार ।।
वें तुमारा बल कै परताप । वे दोन्युं चढि दोडे आप ।।४३७।।

दो सुं वोड जुध अति भया । वानर बसी दल कटि गया ।।
रहे सूरज रज अच्छर रज । किया जुद्ध राखी तिहा लज्ज ।।४३८।।

जम की सेन्या करी सहार । जम सन्मुख आया तिहबार ।।
सूरज रज कै मारी गदा । रथ तै पडया भूमि पर तदा ।।४३९।।

अलका मे ले गये उचाइ । मिल मिल गावें घाव सिचाइ ।।
अब वाकु कुछ भई उसास । जम दे है लोका नै त्रास ।।४४०।।

नरक सात सो राया इन्द्र । तहा माणस राख्या करि वृन्द ।।

लंका विजय

तिस कारण आया तुम पास । तुम चल दूर करो दुख त्रास ।।४४१।।

इतनी सुणि सब सेन्या दही हुंकार । किषंद पुरे पहुता तिण बार ।।
बाजै मारू माची रोर । किपदपुर देख्या दक्षिण ओर ।।४४२।।

बैतरणी अरु सातौ नर्क । बदी बान सहैं उपसर्ग ।।
रखवाले बैठे तिहा घने । थभ वाधि करि पिंजर हने ।।४४३।।

दशानन बंदि छोडि सब दई । सपोट कनें ए वात सब गई ।।
सुणित वात कोप्या सपोट । दशानन नें अपडू पग रोप ।।४४४।।

सूर सुभट सब लिये बुलाय । चढि आया लडवे कैं भाय ॥
बभीषण आय फिरया असवार । दोनुं दल सुरया तिह बार ॥४४५॥

संप्रोट भभीषण नें कहै । अब तू मोतें सनमुख रहै ॥
तोकुं सही भभीषण नाम । जीवत पकडि बांधि ले जाउं ॥४४६॥

बभीषण की सेना बहुमरी । दशानन भी आया तिह घरी ॥
चन्द्रहाहास लीया सभालि । सपोट का दल किया सहार ॥४४७॥

सपोट भाज गया जम पास । बोले वचन मुख लेइ उसास ॥
जम साभलि ली सौं बात । चढयो कोप केहर की जात ॥४४८॥

जम की साथ चले सामंत । सेना नहीं लामै अंत ॥
चढि आया बाजित्र बजाय । कुंभकरण भभीषण सनमुख आय ॥४४९॥

दूहुधा सुभट जुझै रणमाहि । उडी रेणु मांनुं भई सांझ ॥

दशानन द्वारा युद्ध

दशानन आया उण ठाव । युध भेद समझै सब दाउ ॥४५०॥
दस सर बीस भुजा बलवान । दुरजन मारि कीये घमसान ॥
जम इनकै सनमुख ह्वै लरचा । सर लाग्या रथ सै गिर पडया ॥४५१॥

सातक नाम जम का इक पूत । लोथ पिता की उठाई तुरन्त ॥
लोथ राष करि किणही गाम । रथनूपुर गया इन्द्र के ठाम ॥४५२॥

व्यौरा सकल इन्द्र सौं कह्या । जमने मारि देश उन लह्या ॥
दशानन नाम महा बलिवत । देखत ताहि प्राण ह्वै अंत ॥४५३॥

बीस भुजा कहिए दस सीस । जाकी कर न सकै कोई रीस ।
सुणत बात कोप्या जिम सिंह । साथि सैन भट लिये अभिन्द ॥४५४॥

देस देस तें लिख फरमान । दूत पठाया चतुर सुजान ॥
सबै नरेन्द्र बुलाये राय । जोतकी पूछे तुरत बुलाय ॥४५५॥

विद्र भरणै जोगित बुलाय । हिव चलस्यौ तो होसौं हार ॥
कहै इन्द्र अब निकल्या बार । जो फिर जाऊं नगर सभार ॥४५६॥

तो सूरिमा पणौं नवि रहै । मांनी हारि सहु कोई कहै ॥
पुरुषा सब समझावैं बात । बतीस दांत नही मानुं हार ॥४५७॥

अंतहपुर में फिर गया इंद्र । सौच बुलाय करै आनंद ॥
जम फिर आया इंद्र के पास । पुत्री दई रूप गुण जास ॥४५८॥

जम भेज्या सुरगतिपुर देस । खुसी हुए सब भूप नरेस ।।
दसानन नगर लिये सब साथ । इन्द्र सु'तिन भाडी उपाधि ।।४५९।।

त्रिकुटाचल रतनश्रव राज । मनबंछित का हुवा काज ।।
किकधपुर सूरजरज दिया । किंधपुर राज अच्छरज लिया ।।४६०।।

सुमाली मालिवान दोऊ लंका धनी । सुभ साता तमु आई घणी ।।
सेवा करै वे तीनु' वीर । लह्या सब सुख पाय सरीर ।।४६१।।

छत्र सिंघासरा चामर घने । बहुत गयद डोर के बने ।।
हय गय रथ पायक असवार । मेहल चढया देखैं नर नारि ।।४६२।।

लाल जवाहर डारैं भूप । सगली सोभा बणी अनूप ।।
पहुचे गढ लका मे जाय । बजैं निसाण गुणी गुण गाय ।।४६३।।

सब कुटंब भेट आगलैं लागि । असुभ करम सगले गये भाग ।।
इतनी कथा कही जिणराय । श्रेणिक भूप सुणी मन लाय ।।४६४।।

सोरठा

श्री जिण धरम प्रसाद, वृद्धि भई परिवार की ।
पायो लंकाराज, राक्षसबसी जग तिलक ।।४६५।।

इति श्री पद्मपुराणे दशग्रीव विधानकं

सप्तम विधानक

चौपई

बाली सुग्रीव वर्णन

किंधिपुर सूरज रज भूप । इन्द्रमालिनी नारि सरूप ।।
बालि पुत्र ताकै उर भया । चरम सरीरी रूप निरमया ।४६६।।

रतनमाला गर्भ भया सुग्रीव । जानैं धरम करम की नींव ।।
दिन दिन बढत सयाने भये । विद्या पढि पडित अति थये ।।४६७।।

राजनीति का जाणैं भेव । मनमे जपै सदा जिणदेव ।।
सदा रहै हिरदै मे ज्ञान । सम्यग् दृष्टि निश्चल ध्यान ।।४६८।।

सूरतिवत पराक्रमी घने । दुरजन कपैं नाम के सुने ।।
किंधपुरी अच्छर रज राय । हरीवात प्रिया सोभै पट ठाइ ।।४६९।।

प्रथम पुत्र जनम्यां नल नाम । दूजा नील दया का धाम ।।
चरम सरीरी उजली देह । महा पराक्रमी धरम सनेह ।।४७०।।

सूरज रज उपज्या वयराग । राजरिद्ध सगली ही त्याग ।।
बालि कुमर प्रति सोंप्या राज । सुग्रीव ने कियो जुवराज ।।४७१।।

राज्य प्राप्ति

परहितमोह मुनिवर के पास । दिष्या लई मुक्ति की आस ।।
राजा बालि प्रतापी खरा । रामावली अस्त्री में वरा ।।४७२।।

तातैं व्याही सौ और । तातैं अधिक बिराजै ठौर ।।
विजयार्घ मेघपुर नांम । ताकै पुत्र षरदूषण नांम ।।४७३।।

चन्द्रनषानैं चाहै हरया । निसवासर लंका में फिरया ।।
दसानन कुंभकरण तें डरै । भभीषण का भय चित्त धरै ।।४७४।।

दसानन गया जात्रा मेर । षरदुषण आया तिह बेर ।।
चन्द्रनषा हरि चढ्या विमान । लेकर गयो आपणौं थांन ।।४७५।।

कुंभकरण भभीषण दोउं वीर । ग्रैसी सुनि परजले सरीर ।।
मन माहि ते कर आलोच । अन्नपान छोड्या मन सोच ।।४७६।।

रतनश्रवा अर नरपति घने । कहैं कि वाकों गहि कर हने ।।
सेन्यां जोडि विजयार्द्ध चले । दसानन आवतां मारग मिले ।।४७७।।

सांभलि चन्द्रनषा की बात । कपी देइ पसीना गात ।।
इतनी सेन्यां का क्या काम । एक ही करै ते करौ संग्राम ।।४७८।।

छिनमे मारि सब परलय करो । उनपरि कहा चडग बापरों ।।
मन्दोदरी सीख इम भनै । कंन्या घर राख्या नहिं बनै ।।४७९।।

उत्तम कुल उनके भी धरे । चौदह सै षेचर उरण घरे ।।
विद्या सहस है वाके तीर । साहसैवत महा बलबीर ।।४८०।।

जो तुम वाकी डारौ मार । तो विधवा होसी बहुण तुमार ।।
तब वाको दूषण अति होय । तुमने भला न कहसी कोय ।।४८१।।

अब जो षिमा करो तो भला । ह्वं सेवक ह्वं करि आवै चला ।।
जो तुम जुध करण का चाड । तो अब बालि सुग्रीव परिजाउ ।।४८२।।

उनको षिम बीते हैं घने । न करै सेव हुकम तुम तने ।।
आग्या मानैं नाहीं बाल । बेग जाहि दह टाको साल ।।४८३।-

दसानन सुनी त्रिया सो कहै । जो वे मुझ आग्या मे रहैं ।।
हूं उनकी नहीं मानू संक । वे हम सूं कहा करि हैं बंक ।।४८४।।

बहुरि भरणै मंदोदरी वैन । सुणु कथा चित राषो चैन ॥
पाताल लंका चंद्रदधि रहै । अनुराधा राणी सुख लहै ॥४८५॥

चंद्रोदधि सहजै मरि गया । राणी तब वनबासा लिया ॥
बनमे भया पुत्र परसूत । बलिनामे लक्षरण संयुक्त ॥४८६॥

विद्या सीख भया बहु गुनी । अपने मन राखै अतिमनी ॥
वालनमीप मिल्या बल आय । दोन्यू रहैं प्रीत अधिकाइ ॥४८७॥

ऐसे सुणि करि भेज्या दूत । और बात अति लिषी बहुत ॥
पहुच्या किषंदपुर जिहा बालि । पत्री ताहि सौंपै दरि हाल ॥४८८॥

दसानन सम भूपति नही और । जाके बल को नांहि ओर ॥
तुमारे पुरखानें दई भूमि । वे सेवा करते तजि भूमि ॥४८९॥

तुम भी मानु उनकी आन । ज्यौं ए रहैं तुम्हारे प्रान ॥
अब तुम साथि हमारे चलौ । श्री प्रभा कन्या ले मिलौ ॥४९०॥

ज्यौ तुझ देश परगने देइ । आदर सहित नगर मे लेइ ॥
वालि नरेस कहै समझाय । मैं पद नमू जिणेश्वर राय ॥४९१॥

कैसे ताहि नमाऊ सीस । मेरे बडा अछै जगदीस ॥
दूजा नै प्रणामू किस भांति । मै भगवंत सुमरउं दिनराति ॥४९२॥

उह ऐसा है क्या वलवान । मुझने वचन कहै इस भांति ॥
जो हू लंक उपरि चढि जाउ । मारौ उलटि सब उसका वाउ ॥४९३॥

उठी कोय चल गहै तरवार । मारउ दूत मिलाउ छारि ॥
भव वल का कर पकरै वाल । दूत न मारै को भूपाल ॥४९४॥

योह बैल निज पति का वैन । आया हमे सदेशा दैन ॥
धका दिवाय कर दिया निकार । गया दूत फिर उतनी बार ॥४९५॥

सकल बात व्योरा सौ कही । तुय तें तिण सम मानै नही ॥
लंकपति सेना सब टेर । देसपति साथ लिये तह बेर ॥४९६॥

युद्ध वर्णन

चाल्यो दल छायो आकास । पहुचे किकंधपुर कै पास ॥
बाजा तब बाज्या बहुजोर । गाम घेर लीन्हा चहूं ओर ॥४९७॥
बालि भूप नै भई संभार । नल नील आए जु कुमार ॥
सूर सुभट सब एकठें किये । हय गय रथ वाहन बहु लिये ॥४९८॥

चढे कोपि जिए पर केहरी । देखत ही सब की सुधि हरी ।।
बजे भुभाय तुरी पलान । दुहू धा धाए सूर सुजांन ।।४९९।।

हांथ गह्या लागी तरवार । दुहुवां पडै बाण की मार ।।
बरछी हाथ धनुंष सर लीये । ताकि मारे अरियण के हिये ।।५००।।

कोई सुभट गदा कर गहे । तब सागर मत्री इम कहै ।।
पंडित गुंनी अधिक सुज्ञान । वचन बालि प्रति जपै ग्रांन ।।५०१।।

सैन दसानन की है घनी । तुम हो एक नगर के धनी ।।
उन सगली जीती है मही । वा समान कोई खेचर नही ।।५०२।।

चन्द्रहास जो मारै षड्ग । तो तुमनै ह्वै बहुत उपसर्ग ।।
इतना जीव मरै रण माहि । घर घर सोग बधै दुखदाय ।।५०३।।

इन जीवा को क्यौं ल्यौं पाप । अब तुम षिमां करो प्रभु आप ।।
बालि कहै मत्री सुंणि बात । देखि ज्यु इणै लगाउं हाथ ।।५०४।।

सब सियाल मिल इकठा होय । एक सिंह नबि जीतै कोइ ।।
इणका काल लिष्या इण ठांम । मारौ ठौर मिलाउ नाम ।।५०५।।

मंत्री फेर वीनतौ करै । बाकी सर भर क्यौं बल धरै ।।
ज्यौं मनुषां केहर नैं गहै । पिंजर माहिं परबस दुख सहै ।।५०६।।

वह तुमनें पकडै करि घेर । तातै करो छिमा इस वेर ।।
बहुरि बालि मंत्री सौं कहै । सूरापन षिमा तै न रहै ।।५०७।।

भूप कहै इन मांनी हारि । चरचा इम चालै ससार ।।
मस्तक मैं नाउं भगवत । मुणि पै बरत गह्यो इण मंत ।।५०८।।

बालि द्वारा दीक्षा ग्रहण

जो अब जाइ मिलु तजि अंग । तो होवै मेरा बल भग ।।
सुग्रीव नै सौंप्या सब राज । आपण किवो मुक्ति की साज ।।५०९।।

समनचंद्र मुनि पासै जाय । दिक्षा लई मन बच क्रम काय ।।
बारह अनुप्रेक्षा चित धरै । मास उपास पारण करै ।।५१०।।

तेरह विध पालै चारित्र । जीत्या क्रोध लोभ मद सत्रु ।।
बाईस परीसा सहै सरीर । मन बच काया राषी धीर ।।५११।।

निस दिन चिदानंद लिख लाइ । विद्या सिद्ध भई तब आइ ।।
बल अनंत विद्या गुण ढेर । भू उलटत नही लागै बेर ।।५१२।।

मुनि कै चित्त दया का भाव । नाँ कछु हरष नही विसमाव ।।
धरम उपदेस सुणै भवि लोक । मुनि साधै निस वासर जोग ।।५१३।।

करि बिहार पहुते कैलास । दरसन किया मुगति की भास ।।
बारहविध लाग्या तप ध्यान । बाहर भ्यंतर उत्तम ग्यांन ।।५१४।।

सुग्रीव दशानन पासै गया । श्रीप्रभा सुं विवाह कर दिया ।।
पटराणी थापी तिह घरी । पाछै व्याही घणी भ्रसतरी ।।५१५।।

सुग्रीव ने सौंप्या निजपुर राज । सो फिर करै भूप का काज ।।
नीलकमल बिजयारध देस । तिहा रहै नील कमल नरेस ।।५१६।।

श्रीदेवी राणी तसु गेह । रतनावली पुत्री सुभ देह ।।
दशानन व्याही रतनावली । भोग मुगति मानै बहु रली ।।५१७।।

दशानन की कैलास बंदना

ह्वा तै बैठि करि चले विमांण । गिरि कैलास परि थाप्यो भ्रान ।।
तब मन सोच करै दशसीस । मत्री भणै सुणौ नर ईस ।।५१८।।

गिरि कैलास बहैतर देहुरा । तीन चोबीस रतन बिंब धरा ।।
वंदनीक हैगी इह ठौर । या समान तीरथ नही भ्रौर ।।५१९।।

बालि को तपस्या

इण ठा बालि तपस्या करै । तिण कारण बिवाण नही टरै ।।
सोभनीक तिहा वृक्ष उतग । फूलत फलत विराजै रग ।।५२०।।

चिमकै सिला मानु रवि किरण । दरसण कीया दुख का हरण ।।
गगा नदी चलै तिहा घनी । उज्जल वरण सोभा जब बनी ।।५२१।।

दसानन कोप्या तिहबार । जाणै परवत लेउ उखार ।।
उलटो गिर सायर मे देउ । निज बल तणी परिक्षा लेउं ।।५२२।।

उतरचा भ्राप भूमि पग दिया । त्रोध भ्रति चित्त मैं किया ।।
चढि परवत पर पहुतो तहा । करै बालि मुनिवर तप जहां ।।५२३।।

ताहि देख करि भौंह चढाय । हथेली काटई दात चबाई ।।
निठुर बयण मुख सेती कहै । तू यो ही देही क्यो दहै ।।५२४।।

तेरे मन का क्रोध न घटचा । जैन धरम कछु तप करि सटा ।।
भ्रहंकार तैं मनमे धरा । मेरा विमान रह्या जो वरा ।।५२५।।

भ्रब तू देख कहा मैं करौ । परवत सहित सायर संचारौं ।।
जो तैं सिध पाई कछु भली । भ्रब कै बचै तो जाणौं बली ।।५२६।।

ऐसी भांति कहैं बहु बोल । मुनिवर साधैं तप अडोल ।।
ध्यान लहर मैं बैठा जती । राव दोष मनमें नहीं रती ।।५२७।।
आया पर्वत कै तरहांन । सुमरत विद्या ठाढी भई आन ।।
एक महूरत एकै घडी । विद्या आई सकल तिहां जुरी
देहु वेगु प्रभु आज्ञा, आज करां जिका फरमावो काज ।
निज देही तब कीधी वडी, सब विद्या वाकै संग चडी ।।५२८।।
मारी एक गदा गिर थांन । भई पातिका कूप समान ।।
दसानन गया तबै पाताल । गिर उठाय लिया ततकाल ।।५२६।।
छत्र समान उठाया सीस । भुजा उचाई उंचे बीस ।।
कपी धरती हाल्या रु ख । ऊंची पडै परवत की कुंख ।।५३०।।
हस्ती घोडा करै चिंघाडि । डरपै केहरि खाइ पछाड ।।
पंथी उडे हलै तरु डाल । मानु आया परलय काल ।।५३१।।
अंधकार दीसै चिहु ओर । चली नदी जल परवत फोर ।।

बाली द्वारा चिन्तन

मति श्रुति अवधि मनपर्यय ग्यान । बालि साध तब करै विचार ।।५३२।।
अवधि प्रमाण करि चितै ध्यान । दसानन हैं या परवत ठाम ।।
तिण उपसर्ग किया इत आइ । कहा आश्चर्य मुझ छूटै काइ ।।५३३।।
एक बार है मरण निदान । तातैं सोच न करिये आन ।।
होणहार नही टारी टरै । विकलप णै कारज नही सरै ।।५३४।।
वाल साध इम करै विचार । मुनिवर या तप करै विचार ।।
वे मुनि केवल लोचन सार । मति श्रुति अवधि मनपरजय कार ।।५३५।।
कंचनमय अच्छै देहुरा । रतनबिंब अनसंख्या करा ।।
गिरि उपर निवसैं वहु जीव । सब नै दुख आपै दसग्रीव ।।५३६।।
यह मुझ नैं होसी अपलोक । इण परि बलि करै मन शोक ।।
मुझ नैं अच्छै ए तो पराक्रम । इसको तुरत गमाउ भर्म ।।५३७।।
दया निमित्त मैं लीधा जोग । अब इण पर मुझ वण्यौ नियोग ।।
जो हू इस पर करू कषाय । तो मुझ तप सहु निरफल जाइ ।।५३८।।
अपने जीव का भय नवि करौ । अवरा तणां सोच चित धरौं ।।
पर उपगार करैं जौ कोइ । ताको कछु वन दूषन होइ ।।५३९।।
इम चितवी अंगुठा टेंक । भई विद्या ईक विद्या एक ।।
बीस भुजा सहि सकै न भार । ज्यौं ज्यौं दबई त्यों करै पुकार ।।५४०।।

तब लग नही टूटे दस सीस । बोझै व्याकुल ह्वै लंकीस ।।
नीचइ पापी करै पुकार । ह्वा तैं कोई न सकै निकार ।।५४१।।

रोवै बहुत न निकसै कहू । अब हूं किण पर मारग गहु ।।
रोवै राण्या करै पुकार । विधवा भई हम माग मझार ।।५४२।।

मुणिवर कै मन आई दया । चरण उठाइ भूमि तै लया ।।

रावण द्वारा बाली की वंदना

तब रावण छुट्या तिंह घरी । मान भग ह्वै अस्तुति करी ।।५४३।।
गयो आप तिहा बैठा जती । ताकै लोभ न वपु एको रती ।।
तप प्रताप सौं दिपै देह । चिदानद सेती अति नेह ।।५४४।।

जैसे ह्वै पाणी की कार । ग्रैसा मोक्ष मारग अहकार ।।
रावण तीन प्रदक्षिणा दई । नमस्कार करि समता भई ।।५४५।।

तुम महत धरम धर मीत । तातै धरी धरम की रीत ।।
मैं पापी मूरख अग्यान । पड्यो मोह फदा मे आन ।।५४६।।
पाप करम मैं किया अथाय । तें दुख किम करि मेट्या जाय ।।

दीक्षा लेने के भाव

अब तु मो प्रभु दिक्षा देह । वाह पकड अपनी ढिग लेह ।।५४७।।

चद्रहास तब दीनो डारि । गदा गौमती सब हथियार ।
मुकुट सीस ते डारया तोडि । विद्याभरण दीने सब छोडि ।।५४८।।

कपडे तनके डारे फार । मन वैराग्य धरया तिह बार ।।
करी वंदना चौबीसी तीन । वार बार बोलै आधीन ।।५४९।।

तुम भगवत हो तारण तरण । हू आयो प्रभु तेरी सरण ।।
मैं दीक्षा ले सेऊ चरण । मेरे होउ पापो का हरण ।।५५०।।

आसण कप्या धरणी देव । अ सठ सिलाका होइ न छेह ।।
इनका अैसा अछै नियोग । भुगतै तीन षंड का भोग ।।५५१।।

अैसी चित आया कैलास । पूजे श्री जिण मन उल्लास ।।
रावण सु धरनेन्द्र इम कहै । तेरे दया भाव चित रहै ।।५५२।।
तैं तौ भगति करी मन लाइ । मैं सुणि धरम आया इस ठाइ ।।
जो तेरे मन इच्छा होइ । मुझ पैं मागि लेहु तुम सोइ ।।५५३।।

रावण विनवै मांगु यही । करू तपस्या जिण पद गही ॥
छोडु सकल राज का मोह । वग बंधन है माया लोग ॥५५४॥

पुत्र कलित्र न संगी कोइ । संपय तणां विछोहा होइ ॥
ऐसा मे ससार सरूप । नटवत भेष करै बहु रूप ॥५५५॥

जौनि फिरयौ चौरासी लाख । समकित की परतीत न साख ॥
नौ इह भ्रम्यो सकल जग बीच । कवहूं उत्तम कवहूं नीच ॥५५६॥

मनमे कबहू नायो सांच । विषय किये भर इंद्री पांच ॥
इक इंद्री सुख भुगतण हार । ते भवमें दुख सहैं अपार ॥५५७॥

पाचु इंद्री विषय सयुक्त । सेवत पामे दुख बहुत ॥
पाच चोर काया मे रहैं । ए जीतें तब सिव सुख लहै ॥५५८॥

धरणेन्द्र द्वारा शिक्षा

तब बहुरि बोले धरणेन्द्र । तुम राजा पृथ्वी के चन्द्र ॥
तुम बिन दुख पावेंगे लोग । चौथे आश्रम लीजो जोग ॥५५६॥

मैं आया अब तेरे पास । मांगि सिघ्र ज्यौं पूरूं आस ॥
दिन को ज्यों चिमकै बीजली । वरषै मेह पुरैं मन रली ॥५६०॥

देव सरण जे भेटे आय । ये दोन्यु निरफल नहीं जाय ॥
रावण जपै सुणि धरणेन्द्र । देह देव जो तुझ उर विन्द ॥५६१॥

सक्ति बाण रावण प्रति दिया । ताका भेद गुण समझाइया ॥
जाके हिये लगै यह बाण । ताके गुण का इहै परमाण ॥५६२॥

ए करण ऊपर होइ जाय । बहु जीवै नही किसही उपाय ॥
धरणेन्द्र देव गया पाताल । रावण मन मे भयो विकराल ॥५६३॥

एक मास परवत पर रह्या । चित मे धरम जिणेंसुर गह्या ॥
समझावै परियण सब आय । मंत्री कहै ग्यान समझाय ॥५६४॥

अब फिर चलो करो निज राज । तुम बिन बिगडै सगरे काज ॥
च्यारि दान तुम दीज्यो नित्त । पूजा करि पालो समकित ॥५६५॥

रांवण पहुतो लक नरेस । करै राज सुख पावै देस ॥
बालि जती लहि केवल ग्यांन । धरम प्रकास गए निरवाण ॥५६६॥

इति श्री पद्म पुराणे बालि निर्वाण विधानकं ॥

नवम विधानक

अतिगति का विवाह

चौपई

ज्योतपुर नगर हुतासन भूप । हरियल राणी महा स्वरूप ॥
अतिगति पुत्री ताकै उर भई । रूप लखन करि सोभै नई ॥५६७॥

चित्रांगद राजा कै साहसगति पूत । साहसीक बहु गुण सयुक्त ॥
इक दिन दृष्टि पडी अतिगता । देखत बढी काम द्रुम लता ॥५६८॥

जाय पिता सें विनती करी । हुतासन की ब्याहू पुत्तरी ॥
राजा ततक्षण भेज्या दूत । लपी वीनती बचन बहुत ॥५६९॥

मेरा पुत्र बहुत गुणवत । जाकै बल पौरष नही अंत ॥
अतिगति पुत्री तुम या को देहु । मेरा बचन मान प्रति लेहु ॥५७०॥

अवर दूत भेज्या सुग्रीव । वानर वंमी अति उत्तम जीव ॥
राजा सोच करै मन माहि । पुत्री समझि दीजिये काहि ॥५७१॥

मुनि चद्रस्वामी पै जाइ । नमस्कार करि लग्यौ पाइ ॥
मेरे मन संसय भयो आइ । उभय दूत पठिए द्वै राइ ॥५७२॥

कन्या किसकी संबंधिनी । अवधि विचार के भाषो मुनि ॥
वोले मुनिवर ग्यान बिचार । सुग्रीव की हैं आव अपार ॥५७३॥

सुग्रीव के साथ विवाह

साहसगति की है अल्प आव । कन्या देहै सुग्रीव कुं भाव ॥
राजा का संसय मिट गया । मगलचार सुग्रीव सूं ठया ॥५७४॥

पच सबद बाजै तिण बार । बाभण पढै वेद झकार ॥
रहस रली सू भयो बिवाह । दोउ कुल मे बहुत उछाह ॥५७५॥

भए बिदा किकधपुर गया । दपति करै भोग नित नया ॥
भया पुत्र इक गर्भ अनग । दूजे अगद लहर तरग ॥५७६॥

महाबली है दोनू वीर । पराक्रमी अरु दिव्य सरीर ॥
साहसगति कै हिरदै दाह । अतिगत सुग्रीव ले गया बिवाह ॥५७७॥

छलबल करिकै वाकूं हरू । मनवांछित सुख तासो करूं ॥
जब लग अतिगति मेटू नाहिं । तब लग रहि है मुझ मन डाहि ॥५७८॥

हेमाचल पर्वत पर गया । विद्या हेत तपस्वी भया ॥
रावण साधे सकल नरेस । आण मनाय किये वसि देस ॥५७९॥

रावण द्वारा इन्द्र से युद्ध करने का विचार

दुरजन रह्या नहि किण ठांय । इन्द्र ऊपर तसु भई चढाइ ।।
देस देस तैं आए राव । परदूषण मन चिन्त्या दाव ।।५८०।।

ऐसी बार रावण पै जाउं । वासुं मिलै मिटै अंतराव ।।
भली भांति मिलवे कू चले । चउ देसैं भूपति सब भलैं ।।५८१।।

रावण सुणि खरदूषण बात । महा सुख मान्यां इण भात ।।
भली बार परदूण आइ । तानू भाइ मिले गल लाइ ।।५८२।।

चढि सब अपणे चले विमाण । बोभल भया अबै रथ भांण ।।
बाजे बाजैं घुरै निसांण । हस्ती गरजैं मेघ समांण ।।५८३।।

एक सहस छोहनि अर एक । एक सहस सुर दल की टेक ।।
पुष्प विवांण परि बैठा आप । मनमे जपै श्री जिनेस्वर जाप ।।५८४।।

सुमरण किये मनबछित सिध । सुख संपति पावै बहु रिध ।।
रवि अस्ताचल ओभल भया । परवत पर इनौ बासा लिया ।।५८५।।

सेज्या परि पौढइ सब भूप । शशि उडगण की जौति अनूप ।।
भयो प्रभात उठे सब लोग । नोबत बाजै हर्ष प्रयोग ।।५८६।।

गावै गुणियन राग बहोत । रवि की भई किरण उद्योत ।।
रावण बैठा कचन पाट । विरुद बषाणै जाचक भाट ।।५८७।।

कंचन कलस नीर सु भरै । करि सनान फिर सुमरण करै ।।
तुरी पलाण भये असवार । रमवाताल गए तिह बार ।।५८८।।

पाल मनोहर निरमल नीर । हंस आदि पंषी बहु तीर ।।
जलचर जीव विराजै ओर । पक्षी करै कुलाहल सोर ।।५८९।।

बैठक छत्री चाकं घूंट । मदिर वण्या बीच धरि सूत ।।
किंकर आइ बात जो कही । मैं देषि है उत्तम मही ।।५९०।।

तिहां तुम प्रभु उतरो जाइ । सुख पावै सेना तिण ठाय ।।
महिषमती नगरी है तिहा । मानसरोवर सोभै जिहा । ५९१।।

तार्के निकट रावण उतरया । सकल सैन सो बन बहु भरया ।।
डेरा सोभैं सुरंगी रग । आभूषण सोभैं अति चंगि ।।५९२।।

सहस्त्ररश्मि राय सरोवर माहिं । सहसनारि संग करै उछाह ।।
दीसै लोचन जेम कुरंग । क्रीडा करै भूप के संग ।।५९३।।

चौकी बैठी घाटी घेर । कोई न असंकै तिहं बेर ।।
जलक्रीडा सरोवर बीच । खेलैं राणी माची कीच ।।५६४।।

अंजलि भरि भरि नीर उछाल । असे षेलै तिहां भूपाल ।।
राजा लीने कमल उषारि । मारैं उनै मनावैं हारि ।।५६५।।

कोइ रुठि रहै मुष मोरि । ताहि मनावैं भूप बहोरि ।।
विविध प्रकार की क्रीडा करी । गावैं मंगल सब मिलि तिरी ।।५६६।।

रावण द्वारा जिन पूजा

वे अपने मन निरभय षरे । रावण पूजा नें चित धरे ।।
सामग्री पूजा की सौज । निज थानिक साजा करि चौज ।।५६७।।

अष्ट द्रव्य सौं पूजा करै । श्री जिनवाणी मुख उच्चरै ।।
जल धारा का इह विचार । त्रिषा दोष मिटै संसार ।।५६८।।

केसर चंदन जिण ए दले । भव आताप मिटै सषए ।।
पहुप चढावै जिण प्रतिबिंब । सीलन टरै रहै गन थंभ ।।५६६।।

उज्वल अक्षत षंडित नही । इण विध पूजा कीजे सही ।।
नेवल थाल चढावै परे । क्षुध्या आदि दोष हरे ।।६००।।

दीप चढावै रतन समान । निश्चै पावै केवल ग्यान ।।
षेवै धूप सुगध निर्मित्त । आठ करम जर जावै अंत ।।६०१।।

फल जु चढावै जिण पद पास । पावै मोक्ष तणा आवास ।।
विनयवंत ह्वै आरती करै । ऊछलै जल रावण ढिग परै ।।६०२।।

रावण कै मन चिंता होइ । असा निडर इहा नही कोइ ।।
उन कछु करी न मेरी काणि । जिनवर कै डर करया न जांणि ।।६०३।।

अब देखउ ढूंढो तुम जाइ । वेगि बाधि आणि इस ठाइ ।।
गई धौंस तिहा षेलै राय । रखवाला वरजै मति जाय ।।६०४।।

सूर सुभट भीतर धसि गये । वाकुं देखि अचंभित भए ।।
तू इत तैं हिव नीकलि मूढि । मैं तोनैं अब पाया ढूंढि ।।६०५।।

तू अब चल रावण के पास पास । जो चाहै जीवण की आस ।।
और जो तू मन राषै भर्म । देख जु अब कछु ह्वै है कर्म ।।६०६।।

रावण का सहस्ररश्मि से युद्ध

राजा निकल्या जल तैं दूरि । आभूषण पहरया भर पूर ॥
शस्त्र बांधि कर भया तयार । सूर सुभट सब लिये हंकार ॥६०७॥

ऐसी वात रावण पै गई । सैन बहुत तिन आपण लई ॥
मिले परसपर मांडी राड । जैसा सू तैसा करै मार ॥६०८॥

सेना भुम्भि दोऊ थी भरी । रावण आया वाही घरी ॥
अपणे भागते देखे लोग । सहस्ररश्मि कै कछुवन सोग ॥६०९॥

फिर संभालि करि धीरज दिया । मार मार शब्द बहु किया ॥
रावण कै सन्मुख होय लरै । दससिर का कछु भय नवि करै ॥६१०॥

धनुष गह्या सर छोडे घने । निरभय होय सर्व ही हने ॥
रावण मनमे अचिरज धरै । मेरे आगै जम से टरै ॥६११॥

यह तो दीसै है अति धीठ । याकै मुझसे टरै न दीठ ॥
धनुष ताण करि मारया बाण । रुधिर चाल्या धारा धर मान ॥६१२॥

तब रावण हस्ती पर आय । सहस्ररश्मि नैं मारै धाइ ॥
दोउं वाथावाथ जु लरै । हस्ती तैं धरणी पर गिरैं ॥६१३॥

कबहू ऊपर कबहू तलैं । महाबली ते इणपर लरै ॥
बहुत लोग रावण के आय । सहस्ररश्मि नै बाध्यो राइ ॥६१४॥

बाकु भेज्या लका बाधि । मारग चलत लिया नृप साथि ॥
रजनी भई लिया विश्राम । सुख सेन्या सूते उस ठाम ॥६१५॥

बाजे प्रात समैं बहु बजे । सबद सुनत सब का मन रजैं ॥
रावण उठ सामायिक किया । सिंघासण ऊपर पग दिया ॥६१६॥

राजा आय करैं नमस्कार । मुकटबंध के भूप हजार ॥

सतबाहन मुनि द्वारा उपदेश

सतबाहन मुनिवर तप सूर । अनतवल है रिद्धि भरपूर ॥६१७॥

आवै लोग मुनीस्वर जात । सहस्ररश्मि की भाषी बात ॥
रावण तुम्हारा सुत बांधिया । बंदीखानें ले कर दिया ॥६१८॥

सुणी पुत्र की चिंता धरी । उनौं माया सब की परिहूरि ॥
फिर कछु दया भाव चित लाय । मुनिवर उठि रावण पै जाय ॥६१९॥

रावण साध को दरशन देषि । सफल जनम जानौं बहुलेष ॥
उतर सिंघासण करि डंडोत । रावण अस्तुति करी बहुति ॥६२०॥

सकल सभा कीनो नमस्कार । धर्म वृद्धि दीणी तिणबार ॥
सिंघासण बैठाण्या मुनी । बैयावत कीधा नृप घनी ॥६२१॥

हम आवें थे वनह मझारि । विघनां पूरी इच्छ हमार ॥
तुम प्रभू हम पै करतारथ किये । तुम दरसन सुख पायो हिए ॥६२२॥

अब सेवक प्रति आग्या देहु । ज्यों मेरो भाग सदेह ॥
किण कारण यां कियो गमण । स्वामी वचन तजि भाषउ मौन ॥६२३॥

कहै साधु तुम सुणु नरेस । मानो तुम म्हारो उपदेस ॥
सहस्ररश्मि नें छोडो राउ । या कारण आया इस ठांव ॥६२४॥

रावण कहै सुणो प्रभु जती । मोह पुत्र का है कछु थिति ॥
जो तुम आग्या देते मोहि । मे छोडतो प्रभू अब तोहि ॥६२५॥

तुम आपणनें कीधे षेद । मायाजाल कीये सब भेद ॥
मुनिबर बोलैं चित्त विचार । सकल जीव मेरैं इकसार ॥६२६॥

दया हेत आया तुम पास । अभयदान दीजे सुषवास ॥
रावण कहै सुणौ मुनिराइ । हमसे सकल मिले नृप आइ ॥६२७॥

सहस्ररश्मि अति कीनी मनी । मिलन न आया सामनी ॥
हम पूजत है श्री जगदीश । तउ उन आया नमाया सीस ॥६२८॥

जल उछालि डारयउ तिण ठाव । मोकुं चढ्या क्रोध का भाव ॥
लोग षंदाया उसकै पास । उण तो करया प्राण का नास ॥६२९॥

तब मै आप बेग आइया । हमसौं घणा जुध तिण कियां ॥
मै इसनें लीया था बाधि । तुम आया थी छोडु साध ॥६३०॥

बेडी हास हथकडी काटि । आभूषण दीने मन आट ॥
ले आए तिहां रावण भूपि । राजसभा मे दियैं अनूप ॥६३१॥

नमस्कार करि ऊभा भया । रावण सलहै पौरष किया ॥
बहुत भांति करि स्तुति करी । इसा चाहिजे रण की घडी ॥६३२॥

या सम सुभट न दूजा कोइ । मो सौं सनमुख लडया न कोइ ॥
मेरा भय कछु चित्त न धरया । मेरे सन्मुख आछा लडया ॥६३३॥

इसने करिहु सेनापति । सबल बाहि बढाऊं रती ॥
रावण प्रस्तुति कीनी घनी । और सराह करै सब गुनी ॥६३४॥

सहस्त्ररश्मि की बिरदावली । एक एक की कीरत भली ॥
रावण मन तै भयर मन भंग । बहुर न करौं राज सौ संग ॥६३५॥

सर्व बिराणी राज बिभूति । हय गय लखमी लखमी पूत ॥
जे मैं फेर करी कुलथीच । तो तौ मोकूं ऊपजी की भींच ॥६३६॥

सहस्त्ररश्मि द्वारा मुनि दीक्षा

अब हू दिक्ष्या लेस्यु जाय । करो तपस्या मन वच काय ॥
रावण जंपै सुनहु नरिंद । मै बयराग भया सब निंद ॥६३७॥

धरणेन्द्रइ मोकूं समझाया फेर । कियो प्रथ्वीपति रय फेर ॥
तुम बालक जोवन भरि देह । क्यो करि तपस्यों धरि हो नेह ॥६३८॥

जैन धरम दुष्कर है घना । भूमि सेज करिस्यो पोढणां ॥
बाईस परिस्या कैसे सहै । क्षुधा त्रिषा दुख तन को दहैं ॥६३९॥

अब तुम राज करो आपणां । छहु रितु दुख पावोगे घणा ॥
श्री जिनवाणी निश्चय ध्यान । दान च्यारि दो सक्ति समान ॥६४०॥

सब नरिंद मे तू सरदार । निरभय पालो राज द्वार ॥
श्रीप्रभा मंदोदरि की बहन । करो ब्याह जे हुवै दुख वहन ॥६४१॥

रावण बहुत प्रकार समझाय । वाका मन न चलै किण ठाइ ॥
सतवाहन पै दिक्षा लई । जनम जरा की संका गई ॥६४२॥

नगर अजोध्या पूरब देस । सहश्रकिरण तहा धणी नरेस ॥
सुणी सहस्त्ररश्मि की बात । पुत्रै राज महस तीर्ई भांत ॥६४३॥

आपण लई दिक्षा उण जाइ । अरण्य भूप आया इस ठांय ॥
अभिनंदन सुत ने दे राज । आपण कियो दिगंबर साज ॥६४४॥

रावण सुं उत्तम क्षम करी । आवत केवल विध्य की घरी ॥
आतम ध्यान लगाया जोग । पावैगे पंचम गति भोग ॥६४५॥

इति श्री पद्मपुराणे सहस्त्ररश्मि अर्ध विधानकं ॥६॥

[illegible]

चौपई

सरोवर निकट किया दोहुरा । आदिनाथ रचना सौं धरा ॥
बीस बिंब जिण प्रतिमा किये । भई प्रतिष्ठा वरणीउं गये ॥६४६॥

देस देस तें आये लोक । चलि आये वंदण जिण थोक ॥
नरपति आय बहुत तिस मिलै । आदर भाव किये तिण भलै ॥६४७॥

सगला ने दीन्ही ज्योणार । बहु विध कीये व्यजन सार ॥
अष्ट द्रव्य सुं पूजा करी । पंडित पढी जिनवाणी धरी ॥६४८॥

दीन दुखी जन दीना दान । सब ही का राख्या सनमान ॥
धरम जुगति कीनी तिहां धनी । धरम तीर्थ की सोभा वणी ॥६४९॥

यज्ञ भेद की चर्चा

श्रेणिक राजा अस्तुति करी । यज्ञ भेव भाखो इस घरी ॥
श्री जिणवाणी अगम अगाध । पूजित है प्राणी की साध ॥६५०॥

गौतम स्वामी कहै अरथाइ । बारह सभा सुणै मन लाय ॥
नगर अजोध्या राजा सुप्रतिष्ठ । श्रीकता राणी समदिष्ट ॥६५१॥

वसु राजा

वसुव पुत्र जनमिया कुमार । क्षीरकदम की सोभा सार ॥
स्वस्तिमती बाकी अस्तरी । परवित पुत्र भया सुभ घरी ॥६५२॥

तीजा शिष्य नारद तिहा पढै । तीन्या की बुधि दिन दिन बढै ॥
चारण मुनिवर निकसे आय । कहैं बात अपणै सदभाव ॥६५३॥

मुनिवर जंपै इन महला एक । जाय जीव नरक में विवेक ॥
षीर कदम सुणि कीया सोच । छुटी भई शिक्षा आलोच ॥६५४॥

वै अपणै मन मांही रली । षीरकदम जिय आई भली ॥
चल्या उसुं कै पीछै लागि । पहुच्या थाणक पूरण भागि ॥६५५॥

नमस्कार करि विनती करी । प्रभु मोहि दिक्षा दीजे शुभ घरी ॥
तुम संगति पचमगति लहु । चरणकमल ढिग तपस्या गहु ॥६५६॥

क्षीरकदम बैठ्या धरि मौन । परवत पुत्र घरकुं किया गौन ॥
स्वस्ति मती तब कहै रिस्याइ । पिता साथ छोडकरे किम आई ॥६५७॥

ग्रीर बार पोथी ले कांख । तीकूं पिता ग्रापणि ढिग राखि ॥
तब बोले परवत समझाय । मोहि ग्रगाउ दिया पठाय ॥६५८॥

इहां दुचितै जोवै बाट । ह्वां उन ब्यौल्याई मन घाट ॥
रयण गई ग्राया नहिं गेह । चिन्ता व्यापी उनकी देह ॥६५९॥

प्रात भयो उठि चाल्यो पूत । पिता तरणी चटसाल पहूत ॥
वहां नहि देख्या ग्रागे गया । बनमैं पाया मौन गहि रह्या ॥६६०॥

कहै पिताजी चलिये गेह । भयो दुचितो कुटंब दुख देह ॥
इनतो माया मोह सब तज्या । सुत ह्वातैं ग्राया घर भज्या ॥६६१॥

सब व्रतांत जननी प्रति कह्या । सुणी बात मात दुख लह्या ॥
खाय पछाड करै बिललाट । परवत पासि धुणै ललाट ॥६६२॥

तुम जोगीश्वर व्रत धरी । हमरी चिंत कछु नही करी ॥
वाका ध्यांन निरजन लग्या । बोलै किसही कौण का सगा ॥६६३॥

नारद का ग्रागमन

फिर ग्राये घर बहुत उदास । नारद ग्राया गुरुनी पास ॥
गुरणी नैं समझावै बात । नदी नाव ज्यौं कुटंब संघात ॥६६४॥

उतरे पार बिछुर सब गये । ग्रइमैं संग परातम भए ॥
सुपने केसा इह सयौग । छोडि दिया संसारी भोग ॥६६५॥

तातैं करो मति कछु भी सोग । भयानंद मुनिश्वर साधै जोग ॥
सुप्रतिष्ठत भूप ग्रजोध्या धनी । क्षीर कदंब की ग्रवज न सुनी ॥६६६॥

वसु पुत्र में सोप्या राज । ग्रापण किया सुगति का साज ॥
पालै परजा वसुव नरेस । निरभय राज करै गुणमेस ॥६६७॥

नारद सम्यग्दृष्टी गुणी । परवत थाए मिथ्या धनी ॥
दोऊ ग्ररण शास्त्रन पढे । परवत मन मे खोटी गढे ॥६६८॥

चरचा करै यज्ञ ग्रर दांन । पंच महाव्रत द्वै विधि जान ॥
पंच ग्रणुव्रत श्रावक करै । महाव्रत जोगीस्वर धरै ॥६६९॥

पंच समिति ग्ररु तीन गुपति । ग्रठाईस मूल गुण संजुक्त ॥
क्रिया चौरासी पालै सदा । छह रितु सहै बाईस ग्रापदा ॥६७०॥

सुक्षम बादर जेते जंतु । दया भाव सुं राखै सत ॥
बारह ग्रनुप्रेक्षा सु बिचार । भवसायर तै उतरै पार ॥६७१॥

त्रेपन क्रिया सुश्रावक करै । च्यारि प्रकार दान विस्तरै ॥
पूजा करै साम्मायिक दांन । छह दरसन का राखै मान ॥६७२॥

चैल्यालै करै प्रतिष्ठा भली । संघ चलावै मन की रली ।।
तब परवत द्विज असैं लही । ब्यारदान हैं नाही सही ।।६७३।।

नारद एवं पर्वत के मध्य चर्चा

तब पूछं नारद फिर बात । कौण दाण दीजे किण भांति ।।
बोलै विप्र दाण ए सही । कन्या गऊ अर दीजे मही ।।६७४।।

सत्री बौन मंदिर सतखनां । सोना रूपा जवाहर घणां ।।
अज गज महिष अश्व को होमि । प्राशुष भली संवारै भौमि ।।६७५।।

गडहा श्रौंडा खोदै घरे । मच्छ कच्छ तामैं ले धरै ।।
पडित विप्र वेद धुनि पढै । सकल जीव अग्नि मैं डढै ।।६७६।।

मास प्रसाद बाटि सब खाइ । जग्र किया बैकुठा जाई ।।
नारद सुंनि समझावै ताहि । ए उपदेस नरक थिति श्राइ ।।६७७।।

जीव हतंर भषैगो मास । उनकी कदे न पूरवं आस ।।
नीच गति वेहै भ्रम है घनी । ते दुख वरण सकं को गुनी ।।६७८।।

बोलै विप्र होम क्यूं होइ । हत्या करत डरै जो कोइ ।।
नारद कहै होमिए अचित । लगै दोष जालिये सचित्त ।।६७९।।

अज कहिए छह बरस का धांन । हम गुरु मुखस्यौं यो वखान ।।
ते हम होमैं अग्नि मझार । जिस का दोष न लगै लगार ।।६८०।।

परवत कहै अज कहिए बोक । नारद मण मे आणी सोक ।।
दोन्यू कहै बसु नृप की साष । चरचा करै सभा मे भाषि ।।६८१।।

जिसकी भूपति मानैं सांच । जिसका वचन सब मानैं पाच ।।
जे हारैं रसना द्वै षड । असा मड्या वाद प्रचंड ।।६८२।।

दोन्यु पहुचे राजदुवार । नरपति था तब महल मझारि ।।
फिर आये वे आपणे गेह । प्रात भए पूछैंगे एह ।।६८३।।

परबत कही माता सौं बात । नारद करसी वाद प्रभात ।।
मैं अज कह्या छाले का नाव । वह छह बरसी धान कहाव ।।६८४।।

जो हारै राजा की सभा । तिसकी जीभ हौयगो अभा ।।
माता सुणि करि मुडी धुंन । करी नपूती सुत सो भनै ।।६८५।।

तू तो झूठे बोल्या बैन । पड्या कूप मे देषत नैन ।।
जो क्यौं जीवै कूप मझारि । राजा तोहि डारिहै मारि ।।६८६।।

तैं जे उपाई पाप की बुधि । मो तन भूलि गई सब सुधि ॥
मोहि कह्या था राजा बोल । जो कछु कहु वस्तु अमोल ॥६८७॥

मनवांछित मागो से लेहु । मिश्रानी जी आज्ञा देहु ॥
तब मे वचन लिया निरधार । अब चाहूं दीजो तिह बार ॥६८८॥

स्वस्तिमति द्वारा वसु राजा से वचन मांगना

अब मांगु राजा पै जाय । झूंठ वचन तैं लेहुं छुडाय ॥
स्वस्तिमती राजा पै गई । आदर मान राव बहु दई ॥६८९॥

बार बार पूछै कर जोरि । कैसे कृपा करी इस ठौर ॥
मिश्राणी बोलै समझाय । मेरी दक्षिणा दीजे राय ॥६९०॥

देव अंजुली पाणी लेहु । अपणां वचन कह्या सो देहु ॥
राजा तब अंजुली जल भरया । मागो जो चित भावै धरा ॥६९१॥

परवत तणी कथा सब कही । तुम बिन सरणागति को नही ॥
उसने सांचो करो नरिंद । पुत्र भीख मुझ द्यो अवनींद ॥६९२॥

राजा सुणि करि मीडै हाथ । बारबार धूंणै निज माथ ॥
इण मिश्रांणी मुझनैं छल्या । इण यह वयण न भाख्या भला ॥६९३॥

झूंठ न्याय जो राजा करै । निश्चै अधोगति नरकै पडै ॥
वचन दीया फेरुं किस भांति । असै सोचत बीती रात ॥६९४॥

आया नारद उठि परभात । परवत चल्यो कहु तुम बात ॥
राजसभा मे दोन्युं गया । ग्यांन चरचा मे वाद तब भया ॥६९५॥

राजा कहै वचन बसि काज । परवत कहै सुमानो राज ॥
धरती फाटि सिंहासण धस्या । तब नारद राजा प्रति हस्या ॥६९६॥

भूपति अजहू न्याव विचार । झूठ कहे सिर बांधि है भार ॥
नृप बोलै परवत रूष देषि । सिंहासण धरती मे प्रेषि ॥६९७॥

नारद का वचन

नारद बोले सुनि हो राव । असत्य वचन का देखो भाव ॥
वे ही वयण बोलै भूपाल । आसण सहित गया पाताल ॥६९८॥

वसु भूपाल नरक में जाय सहै दु.ख तहा बिललाय ॥
झूठ श्रवै अरु करै अन्याव । ते प्राणी बहुते दुख पाव ॥६९९॥

सगली सभा अचंभै भई । बहु फटकार विप्र नैं दई ॥
पापी बुद्ध पाप का मूल । राजा तणो भया ए सूल ॥७००॥

राजा मुह देखी जो करै । नरक निगोद सदा दुख भरै ।।

परवत द्वारा सन्यास

परवत ने अति चढया कलक । छोड़या नगर लोक की संक ।।७०१।।

सन्यासी पै दिक्षा ऊई जाय । पच अग्नि साधै मन लाय ।।
देही छोडि हुवो वह देव । अवधि विचार पाप के भेद ।।७०२।।

षोडस बरस की देही करी । कध जनेऊ धोती धरी ।।
गोपीचन्दन द्वादस तिलक । राते नयरण सो भयो पलक ।।७०३।।

पोथी काधिर जटा लटकाय । असा धरा देव नें भाव ।।
मेरा मुखतै निकली बात । मैं अब करउं जगत विख्यात ।।७०४।।

विप्र सन्यासी वेद पढाई । इह विध प्रकट करै सब ठाईं ।।
पाप भेद भरगे जे विप्र । पाप वृधि मे भए विचित्र ।।७०५।।

मारुत राजा को सबोधन

सव्रत रिषिस्वर राजगिरि जाइ । राजा मरुत समोध्या आई ।।
कहीक जज्ञ करो तुम एक । बडा रचाउ युगल अनेक ।।७०६।।

सकल जाति के मारणौं जीव । रालो बाधि उरणा की ग्रीव ।।
ग्रौंडा खाडा खरणावो बडा । तिहा उनने होमै भरि घडा ।।७०७।।

वहै जीव पावैंगे सुर लोक । होसी जस तुम लही हो मोक्ष ।।
होम जज्ञ विधि राजा ववी । देस देस ने दीन्ही चिठी ।।७०८।।

सब कुटब वाभरण सब चले । देस देस के भूपति मिले ।।
जज्ञ की ठाम पहुते आय । च्यारौ वेद पढै तिहि ठाय ।।७०९।।

नारद कथा

श्रेणिक पूछै नारद की कथा । इसका था कुरण माता पिता ।।
ब्रह्मरुचि ब्राह्मरण परमातिरी । सन्यासी की दिक्षा धरी ।।७१०।।

दपति पच अगनि करि जोग । कबहू मानै मनका भोग ।।
कद सूल का करै अहार । भई गरभ थिति परमा नारि ।।७११।।

मुनिवर तत्र आई निकलै । देखे दपति जप तप तिहां करै ।।
मुनिवर वात धरम की कही । उन बोल्या बिल जिय मे धरी ।।७१२।।

जैसे नर कौवे नहि डोर । बहुरि करै नहीं अंगीकार ।।
जे जोगीस्वर माया गहै । परिग्रह बहुत लीयां जे रहै ।।७१३।।

जिसका जनम अकारथ जाइ । अंतकाल पीछे पछिताय ।।
तिरणां मात्र न परिग्रह लेह । वाकौं सब कोई उपमा देह ।।७१४।।

जे तुम जोग करो धन तजो । माया छोडि जिनेस्वर भजो ।।
ब्रह्म रुचि का संसय मिट गया । स्त्री त्याग दिगंबर भया ।।७१५।।

परमा कहै मोहि दिक्षा देहु । जैन धरम पालो धरि नेहु ।।
बोले मुनिवर ग्यान विचार । गर्भवती नहि ले दीक्षा सार ।।७१६।।

तब वह स्त्री वन मे ही रही । दसमास पूरण निरमई ।।

नारद का जन्म

भया पुत्र नारद रिष मुनी । माता मनमें सोचे घनी ।।७१७।।

मैं दिक्षा लेकर तप करौं । अवर न कछु चित्त मे धरौं ।।
या का निमित्त हाय सो सही । मेरे माया मोह कछु नहीं ।।७१८।।

पाना माहि लपेट्या पुत्र । तरु तलि म्हेल्या लक्षरण सयुक्त ।।
इन्द्र मालिनी अर्जिका पैं जाय । लीन्ही दीक्षा मन बच काय ।।७१९।।

वहा बालक नित वधे पुंनीत । पुन्या के कछु होय न चित्त ।।
पुन्यैं रिक्षा करैं सब कोइ । सगलें पुण्य सहाई होय ।।७२०।।

जंबक देव जात हो चल्या । थक्या विमांरण न ह्वा तैं हल्या ।।
अवधि बिचारैं सुर मन माहि । नारद मुनि हैं या बन ठाहि ।।७२१।।

देव आय करि लिया उठाय । विजयार्द्ध पहुंचाया जाय ।।
गुफा बीच ले राख्या बाल । देव करैं ताकी प्रतिपाल ।।७२२।।

नारद का जीवन

विद्या पढि पारगत भया । बृहस्पति का सा लक्षरण लिया ।।
आकासे गामनी विद्या पाइ । श्रौड देष करि राजगिर जाइ ।।७२३।।

मनमे सोच करवि आपरणैं । वनमें लोग मिलै क्यों घणे ।।
कौण परवया नगर मझार । भीड़ जुडी क्यों इतनी बार ।।७२४।।

नारद मुनि देखैं धरि ध्यांन । ब्रांह्मण बहु बैठे तिहिं थांन ॥
बहु तपसु जिहा राषे घेर । होम क्रिया चाहैं तिहिं बेर ॥७२५॥

निहा नारद मुनि पहुना आन । जटाजुट घोती तरहान ॥
काध जनेऊ पोथा लिये । हाथ कमडल फीची किये ॥७२६॥

देव शब्द वाता संस्कृत । नारद जानि द्विज आदर कृत ॥
नमस्कार करैं सब लोग । वदनीक सब पूजण जोग ॥७२७॥

मवृत ने पूछ्या वृत्तान्त । जीव जत क्यो घेरे भ्रान्त ॥
भणैं विप्र इण को ह्वै घात । अग्नि बीच होमैंगे प्रात ॥७२८॥

नारद का उपदेश

नारद मुनि बिप्र सो कहे । मारचा जीव नरक दुष लहै ॥
दया भाव सर्वज्ञ के बैंन । दूपन दीजे देषत नैंन ॥७२९॥

सकल आतमा आप समान । सब की दया कही भगबान ॥
मवृत द्विज नारद प्रति भनैं । रूप रेष अरु सबद न जिनैं । ७३०॥

उन सरवज्ञ किम थापी दया । तू मूरिख कछु भेद न लिया ॥
नारद बोलै सुनि विपर अज्ञ । रूप न रेख जैंन सरवज्ञ ॥७३१॥

पाए भेद ए तो किण कह्या । जिसके कहै वेद तुम लह्या ॥
महा अनर्थ लिखा जिहं बीच । असा करम करैं नहिं नीच ।७३२॥

ब्राह्मण कहै ब्रह्मा का ग्यान । जिन सब रची सृष्टि परवांन ॥
ए सब पशु होम के काज । ब्रह्म वचन महकिया साज ॥७३३॥

नारद मुनि फिर उत्तर देय । जं ब्रह्मा सब सृष्टि करेय ॥
ते सब हुए पुत्र समांन । वानैं दहन क्यों किया बषान ७३४॥

पसु तृणचारी है बनबास । इनके जिनका न करिये नास ॥
त्रिषा भूष धूप ए सहै । ऐसे दुःख छहौं रितु लहैं ॥७३५॥

तिनकी कहा कीजिए घात । हिंसक है विकाली जात ॥
जीब बद्ध तैं मुक्ति न होय । आपण पाप करै जे कोय ॥७३६॥

चारौं गति मे सह संताप । जब वे आणि उदै ह्वै पाप ॥
मन वांछित नही पूजै आस । मवर दारिद्र तजै नहि पास ॥७३७॥

जै गयंदनी माणस जणैं । तुरी गर्भ हसती गति वणैं ॥
गदही उदर तुरंग प्रसूत । तो हत्या तैं मुक्ति संयुक्त ॥७३८॥

राजा बसु ने कीन्हु हुंकार । नरक छोडि आवै इस बार ।।
ह्यां तैं उठि मुकति मैं चलैं । तो जब दाहं आगों मैं भलैं ।।७३९।।

नारद पर उपसर्ग

जग्य करया राज मनवसीकरण । विषय पंच इन्द्री का हरण ।।
संतोष विप्र नैं दखिणा दई । केश लोचना क्रोध करेई ।।७४०।।

ध्यांन अगनि मैं आलै कर्म । इस विध होम किये हूं धर्म ।।
विप्र सन्यासी उठ्यो रिसाइ । नारद परि सब आए धाय ।।७४१।।

कोई मू की कोई लात । नारद मुनि मारयो बहु भांति ।।
नारद कै मन उठ्यो अहंकार । गही सिला सब ऊपरि मार ।।७४२।।

वे अनेक इहां एक सरीर । इण विध परी नारद पर भीर ।।
पकडि लिया दोऊ कर बाधि । सास उसास पाई असमाधि ।।७४३।।

पापी मिलि दुख दिया बहूत । रावण का तिहां आया दूत ।।
देखा बाडा पसू अति जीव । नारद ऋषि की बांधी ग्रीव ।।७४४।।

सो देखि उपसर्ग सो पाछा फिरया । देख पशु मन कोप्या खरा ।।
हिंसा घणीं कही नही जात । रावण सों कही रिष की बात ।।७४५।।

रावण द्वारा नारद की सहायता करना

रावण सेना तहां पठाइ । कही मरुत नें बांधो जाइ ।।
बाजे मारू दौडे सूर । दसौं दिसा सु रही भर पूर ।।७४६।।

बाडा तोडि पसू सब छोडि । नारद ऋष के बंधन तोडि ।।
राजा मरुत बांधि गहि लिया । विप्र संन्यासी पकडा दिया ।।७४७।।

आग्या ऐसी रावण दई । ए सब मारो पापी सही ।।
ए पापीष्ट पाप का मूल । दया भाव इन के नहीं मूल ।।७४८।।

इनहि मारि खोउ अघखोज । फेरन होय पाप का खोज ।।
जीव विणास बतावै धरम । ऐसा करै नीच का करम ।।७४९।।

इनके मारे का नही पाप । ए जीवा नैं मारै आप ।।
मारि इननैं परलय करूं । इनहि बेग तुम बाहूबट करउ ।।७५०।।

नारद मुनि चित आणी दया । रावण मैं उपदेस इम दिया ।।
ए बाभण उत्तम कुल भये । रतना संपट कुमारग चले ।।७५१।।

आदि पुराण मे इनका भेद । सुणौं भूप हु कहौं न भेद ।।
नाभिराय कै रिषभकुमार । त्रियासी लख पूरब राज सभार ।।७५२।।

ऋषभ वर्णन

रही आव पूरव लष एक । इन्द्रौं के मन भया विवेक ।।
ए हैं प्रथम तीर्थंकर देव । इनते चलई धरम का भेव ।।७५३।।

ए माया मे रहे भुलाय । मन वैराग्य उपजै किह भाय ।।
एक अपछरा थी परवीन । जाकी आव घडी दोय तीन ।।७५४।।

राज सभा मे नाची भली । देख नृत्य उपजी मन रली ।।
निरत करत तहां पूरी आव । खाइ पछाड परी भुवि ठाव ।।७५५।।

बोले भूप उठावो याहि । याकी वेग गहो तुम बाह ।।
मंत्री कहैं यह पातर मुई । तब बैराग चिमक चित भई ।।७५६।।

छोडया सब पृथ्वी का राज । आपण चले धरम के काज ।।
भरथैं दिया अजोध्या राज । बाहूबलि पोयणपुर साज ।।७५७।।

च्यार सहस राजा भए संग । दया भाव चित लहर तरंग ।।
वनमैं मौनि गही जिनराज । राजा अवर उठे अकुलाइ ।।७५८।।

भूख छहमासी सहियन जाय । जो अपणे घरि चलिये धाइ ।।
तो फिर हमे भरत दुख देइ । असी मनमे चित्त धरेय ।।७५९।।

वन फल खाई पीवैं नीर । जोगी संन्यासी तप सहे सरीर ।।
एक हजार वरष भए बीत । श्री जिण उपज्या केवल चित्त ।।७६०।।

केवल वाणी संसय हरै । ताहि सुणत भव सायर तिरै ।।
चक्रवर्त्ति भरत बाहुबलि बंड । जिन भुजबल साधे छहु षंड ।।७६१।।

लछमी जुडी भरथा भडार । जिसका गिणत न आवै पार ।।
गिर कैलास शिखर देहुरा किया । रतनबिंब संवराया नवा ।।७६२।।

तो भी लछमी घाटै नहीं । दाण देण इच्छाउ मही ।।
कोई न लेन दांन नै आइ । तब बामण कूं थापे राय ।।७६३।।

आदिनाथ स्वामी पै गया । ब्राह्मण का ब्योरा सब कह्या ।।
रिषभ देव की वाणी भाई । इह उपाधि तुम थापी नई ।।७६४।।

जैन धरम के निंदक होइ । पाप उपदेस कहैंगे लोइ ।।
भरत भनैं इम करिहू दूरि । सब को मारि गिराऊं मूल ।।७६५।।

श्री भगवंत चित दया विठाय । सकल ब्राह्मण दिये छुडाय ।।
चौथा वरण उरण तेती हुआ । चौटा वेद ग्रंथ थाप्या जुवा ।।७६६।।

सुभूमि चक्रवर्ति किये संघार । तपसी प्रहस्त भये तिहु वार ।
तब तैं फेर भये उत्पन्न । छोडो इन ज्यौ पावो धन्न ।।७६७।।

बांमण छोडि दिया तत्काल । विनयवंत बोले मरुत भूपाल ।।

रावण का कनक प्रभा से विवाह

कनक प्रभा पुत्री गुणमई । रावण प्रति विवाह कर दई ।।७६८।।

एक बरस इस कीयरा ठांम । राजा मरुत नैं सुख के भांव ।।
कनक प्रभा के भई प्रसूत । त्रिया पृथ्वी लक्षण संयुक्त ।।७६९।।

हेमाचल गिर रावण गया । भूपति सकल ग्रग्य करि नया ।।
हैमाचल परवत रमणीक । ता ढिग भूमि लगी सोभनीक ।।७७०।।

महल करण की इछा करी । सब मिल समझावैं मंतरी ।।
ह्या के रहे परदेसी नाम । नाम लंका है पुरखां की ठाम ।।७७१।।

उनही लोक जांणै सब कोइ । ह्या के बसैं न कारज होइ ।।
तब फिर कों मारग कौं चल्या । देखै रूप सराहैं भला ।।७७२।।

राजगिर नगर मे निकस्या आय । देखै रूप रावण बहु भाइ ।।
कोई अटारी देखैं नारि । कामिन झरोखा ऊभी द्वार ।।७७३।।

कई गली कई बाजार । सबै किये सोलह सिणगार ।।
पुरुष रूप देखै सब लोक । [illegible] पुण्य सजोग ।।७७४।।

जिणपद नगर जैसे नरेस । रावण नैं जीति सब देस ।।
मिल्या ग्रगाऊ ग्रस्तुति करी । पुत्री ब्याह दई सुंदरी ।।७७५।।

रावण मनमैं बहुत उल्हास । देखैं नगर सकल चिहु पास ।।
प्रजा सुखी इम बेह ग्रसीस । रावण जीवो कोडि बरीस ।।७७६।।

बहुत दिवस बीते इस गाव । बहुरो चले आपणे ठाम ।।
सकल लोग मन भया उदास । जे अबके रहते चौमास ।।७७७।।

उदर पूरणा कर वे लोग । या के आया भयो वियोग ।।
असाढ बदी दोयज की घडी । चरणे की मन इछा धरी ।।७७८।।

बरषा आठ दिवस की झडी । चतुरमास की सांवण करी ॥
सबही की पु जी मन आस । रावण भु जै भोग विलास ॥७७९॥

रहै सतखनै महल आवास । सोलह सहस्र राणि हैं पास ॥
राग रग गावैं मल्हार । भंवरघें अति घन हन बार ॥७८०॥

मोर झगार पपीहा रटां । चउधा मडी काली घटा ॥
विजुली चिमकै गरजै घना । ग्रैसा सुख रावण नैं बन्या ॥७८१॥

भाद्रपद के व्रत

कोई बठाउ भीजत जाइ । कीचड माहि बहुत दुख पाय ॥
भादौ मास धरम का थान । पूजा वणी सामग्री आण ॥७८२॥

सोलहै कारण का व्रत करैं । दया अग निस वासर धरैं ॥
पूजा रचना मैं बीतै घडी । चरचा करैं जैनमत खरी ॥७८३॥

दस लाक्षण का पालै अंग । बहुत वरत धारी ता संग ॥
चदवा तणा बहुत देहुरैं । रग सुरंग विछवणा करैं ॥७८४॥

रतनत्रय व्रत पालैं लोग । मन वच काया साधैं जोग ॥
पूरणवासी पूंनिम चद्र । रहस रली मनये आनद ॥७८५॥

सब ही मे दीनी ज्योणार । वहुत बीनती कर मनुहार ॥
पुण्य प्रसाद अधिक सुख भया । देस देस सुख भुगत्या नया ॥७८६॥

इति श्री पद्मपुराणे राजा ऋतु भ्रम विधानकं ॥

चौपई

दशम विधानक

रावण की कन्या का मधु के साथ विवाह

रावण मनमें समझै ग्यांन । कन्या वेसकर भई प्रमांन ॥
उत्तम कुल कोई देख कुंमार । करो काज सुख धरी बिचार ॥७८७॥

बहुरैं कक इन्द्र नर दौड । कैसी बात वणाइक मोरि ॥
कन्या व्याह करि नीवरूं । मन वच का संसा परिहरूं ॥७८८॥

मंत्री देस देस कौं चले । पुरपट्टण सब देखै भले ॥
आये मथुरा नगर मझार । हरिवाहन नृप माधवी नारि ॥७८९॥

मधुत्र पुत्र महा बलवंत । रूप लछन छवि शोभावंत ॥
सम्यग्दृष्टी महा विचित्र । नांम सुणंत सब कांपै सत्र ॥७९०॥

मंत्री देख भया उल्हास। चितमां पुरकी मनकी आस ॥
हरिवाहन सुं कही समुझाय। मधु कुंवर ने देहु पठाइ ॥७६१॥

रावण पासि चला तिह बार। मंत्री चतुर अधिक असवार ॥
बरछी हाथ वही हथियार। वाके गुण का अंत न पार ॥७६२॥

रावण पास जब गया कुंवार। नमस्कार करि करची जुहार ॥
अधिक रूप देख्यौ भरि नैन। सुभ मंत्री बिनवै सुभ बैन ॥७६३॥

मध हरिवंसी है बलवंत। विद्या विनय बहुत गुणवंत ॥
बरछी दई देवता मित्त। दुरजन देख भजै भयभीत ॥७६४॥

या सनमुख कोई रहै न सूर। विद्याधर देखिर भाजैं दूर ॥
असे गुणवर वीर के बडे। जिहां लग चाहैं तिहां लग बढे ॥७६५॥

सेव तुमरि चित्त मे धरी। आया सेव करण इस घरी ॥
रावण देख किया बहु भाव। टीका किया अधिक मन चाव ॥७६६॥

भली घडी सुभ दिन साधिया। मंगलाचार कुंवर का किया ॥
सोवा दीनां अगण अपार। भाति भांति की करी ज्यौंणार ॥७६७॥

मधु चित्रा समदे सुभकार। मगन रहै नित भोग मझारि ॥
सुख मे बसै मधुपुरी देश। हरिवंसी सुख करै असेस ॥७६८॥

मधु का वृतान्त

फिर श्रेणिक पूछै करि जोडि। मधु की कहो मुझ बात बहोडि ॥
देव मधु किम हुवा नेह। ज्यो मेरा भाजै संदेह ॥७६९॥

तब श्री जिण की वाणी भई। सब के मन की दुविधा गई ॥
धातकी द्वीप अैरावत क्षेत्र। धारा नगर तिहां राय सुमित ॥८००॥

विभवी नाम ब्राह्मण पुत्र। दोन्युं विद्या पढै विचित्र ॥
ब्राह्मण पुत्र अधिक आधीन। पढ़या गिरया कणका लैं बीण ॥८०१॥

नित प्रति भिक्षा मांगिर खाई। असी ही विध काल बिहाय ॥
राय सुमित्र विद्या था बौल। राज बैठि तुझ करूं अमोल ॥८०२॥

बैठ्या राज तबै सुख भई। बहुत विभव ब्राह्मण नें दई ॥
आप बराबरी बोभण किया। राजा वन क्रीडा नें गया ॥८०३॥

घोडा छुटया भील की पुरी। वन देख्या सब सुध बीसरी ॥
तिहां राजा भीलैं ने गह्या। ब्याही बनमाला सुख लह्या ॥८०४॥

मास एक बीत्या तिरा देस । फिर आया निज नगर नरेस ॥
ब्राह्मण सुणि राज्या प्रति मिल्या । वेको वनमाल चित चल्या ॥८०५॥

जो ऐसी मैं भोगउ त्रिया । तो सुख मानों यह चित वया ॥
या के अधिक वियाप्या मैन । निस बासर देही नहीं चैन ॥८०६॥

कामल ब्रह्मा हर तप टरचा । तप सब खोइ चतुर सुख करचा ॥
सकर नाच्या गदा कर त्याइ । तप खोबो रसनारि लुभाय ॥८०७॥

कामरणयद है अति बलवड । घन्य जिको जिन राख्यो दड ॥
ब्राह्मण छीजै दिन दिन देह । राजा के मन भया सदेह ॥८०८॥

इह क्यों दुरबल हुवै घणां । या के भेद न जावै भणां ॥
विप्र प्रत नृप पूछै बात । तुम अपणा भासौ विरतात ॥८०९॥

किस कारण तुम षीण सरीर । तो कु है काहे की पीर ॥
सांची बात कहो समभाय । तो मेरो ससय मिट जाय ॥८१०॥

ब्राह्मण कछु न बोलै बैरा । थाकै दाह लगाई मेंरा ॥
लाज सबद वोलै किस भांति । काम अगन कैसे हिसिरात ॥८११॥

छोडी लाज सुणाया भेद । इह वणमाला कारण खेद ॥
राजा कहै सुणो द्विज मित्त । तुम कछु मनमे नाणउं चित्त ॥८१२॥

जो वह इच्छै तो तुम लेहु । मैं तोकु दीनी निसदेह ॥
उठया विप्र देवी बट गया । राणी कुं उपदेस इह भया ॥८१३॥

तुम जाग्रो देयी की जाउ । मढ बाहर सखीय बैसाउ ॥
रांणी मढ के भीतर गई । देखि सेज बिछाई नई ॥८१४॥

ब्राह्मण वचन पयपै ताहि । राणी देखि रही मुरझाइ ॥
ब्राह्मण सुं बोलै वनमाल । परनारी जैसा है काल ॥८१५॥

विषै न खाय मरै अग्यांन । नरक जाहि वे जीव निदांन ॥
जे नारी परपुरुष को रमें । सो नारी नीची गति भ्रमै ॥८१६॥

सूकरी कुकरी गदही होइ । खोटी गति मे भरमैं सोइ ॥
इक तिल सुख बहु बहु दुख लहै । छेदन भेदन के दुख सहैं ॥८१७॥

तास फूतली त्यावे अग । ए फल लहै सील करि भग ॥
द्विज के मन को मिटयो कुफंन । दया भाव प्रगटयो शुभ मैन ॥८१८॥

आप करै निंदा आचरी । कोटी कुषि करी मैं अवरी ॥
ऐसा मैं अंबत्त आत्मा पाप । सो क्यों मिटै किया विलाप ॥८१९॥

खडग काढि निज कांधे धरया । प्रछालणे नृप देखें खरा ॥
तब नृप द्विज का पकड्या हाथ । बहुत पाप उपजे अपघात ॥८२०॥

पाप करै अगनि जल मरै । विष फांसी कुवे गिर पड़ै ॥
बहु नरक पड़्या भव होय । ताहि सहाय करै नहीं कोइ ॥८२१॥

ब्राह्मण गयो देस सब त्याग । करि करि भ्रम्यो धरया बहु खावि ॥
एक दिवस घनहर घनघोर । चली पवन उडि गए बहोरि ॥८२२॥

राजा देखि भयो वैराग । राजविभूति किया सब त्याग ॥
सुतने निज पद दियौ नरेस । आपण लियो दिगंबर भेस ॥८२३॥

देही छोडि गया ईसान । पाया जित स्वर्ग लोक विमाण ॥
उन द्विज भ्रमत नर देही धरी । संन्यासी की तपस्या करी ॥८२४॥

मरि कर भया निरक्षक देव । अवधि विचार किया बहु भेव ॥
सुमित्र राय था मेरा मित्र । उन मुझसौं राखी बहु प्रीत ॥८२५॥

अब वह मध्य लोक अवतरा । मधु सुमित्र मिलु सो धरा ॥
रतन बहुत तिन मधु नैं दिया । धरछी एक बहु गुणी थिया ॥८२६॥

सब सुख सौं राजै मधु भूप । कहा लग वरणाउं तास स्वरूप ॥
अठारह वरष भये जब वीत । बहुत देस के भूपति जीत ॥८२७॥

तब कैलास परबत परि गया । श्री जिण बिंब चरण प्रति नया ॥
अष्ट द्रव्य सो पूजा करी । पढ़ै मंत्र जिनवाणी खरी ॥८२८॥

दुर्लिगपुर नल कुबल दिगपाल । सुणि रावण आया भूपाल ॥
तिनमे जीते हैं बहु देस । अब उन इहां कीउ परवेस ॥८२९॥

पत्री इंद्र भूपनें लिखी किंकर हाथ दीनहा भाखी ॥
रावण नलकूवड परि गया । चिट्ठी बांचि करो कुछ दया ॥८३०॥

प्रभुजी उसका ऊपर करो । नलकूबड का भय तुम हरो ॥
इन्द्र करैं पूजा जिण नाथ । सेना दई दूत के हाथ ॥८३१॥

युद्ध वर्णन

गढ गाढा सौं जैसौं भरो । बाहिर नीकल मत लरो ॥
आप गया पांडव बन थान । पूजा करी लिये पच नाम ॥८३२॥

वे गढ मे पहूंचे सब आय । दीये किवाडें भीतर जाय ।।
सो जोजन ऊंचा गढ देखि । दस जोजन चौंडा सु विसेख ।।८३३।।

कांगुरे कांगुरे धरी कुबांन । हथनां लांका अत न आंन ।।
पूजा करी रावण नीवरधा । देख्या गढ तापर मन भरधा ।।८३४।।

सूर सुभट बहु दिये पठाय । गढ ने हाथी दिये ढकाइ ।।
दांत टूट कर मस्तक हनें । इनका कछु दाव नहीं बने । ८३५।।

रावण पर तब आये घने । असे कठन न देखे सुने ।।
गोला गोली लगै न वाण । ता गढ परि क्या चलै सयान ।।८३६।।

यह सुणि रावण चढधा बिमांन । ग्यारह सै छोहणि बलवान ।।
ऊपर तै गोली की मार । उलटी सेन्या होई सधार ।।८३७।।

च्यार जोजन गोला विस्तार । जहा पडै तहा परलय कार ।।
बहुते लोग जुडे सावत । तब बोले मंत्री विनयवत ।।८३८।।

यह गढ कठिन आवै नहिं हाथ । अब फिर चलो लकापति नाथ ।।
बोले भूप महा बलवंत । जो छेऊ तो लोग हसत ।।८३९।।

अब इहां रह करि करो उपाव । जो गढ आवै किण ही दाव ।।
कैलास की खोह मे मोरचे किए । बहुत उपाव बिचारैं नए ।।८४०।।

ऊपर आ नल कूवर धनी । रावण के चित चिंता धणी ।।
रूपवंत सुनिये है सही । उन जीती है सगली मही ।।८४१।।

एक बार हूं दरसन करउ । दससिर देख सुख मन धरउ ।।
वनमाला दूती नें टेर । रावण पासि जाय कैं बेर ।।८४२।।

असैं कोई सूझैं नही कोइ । कहिए अंतहैपुर की ठोर ।।
जो तुम ढील काम की करो । प्रांरण वेग तुझ पर हो करो ।।८४३।।

दूती कहै अब मोहू जाय । अंद फंद सों आनौं राय ।।
आभरण सजि कैं दूती गई । ओहन मोहन विद्या लई ।।८४४।।

मदिर माहि निरभय ह्वै धसी । रावण देखि मन मे अति हसी ।।
पूछी राय कहो सन भाव । कवण काज आयी इस ठांव ।।८४५।।

नलकूबड की है पटधनी । रूपलक्षण सोहै अति घनी ।।
तुम सौं बहुत कही बीनती । दरसण देहु कृपा करि अती ।।८४६।।

अब तुम उठो चलौ उस पास । दोन्यां की पूरै मन आस ।।
रावण कहै दूती सौं बात । पर रमणी सग नरकै जात ।।८४७।।

जैसी झूठी पातल पडी । असे नेह जाणौं पर तिरी ।।
जैसे उलगण डारैं कोइ । कुकर दौडि गहै फुनि सोइ ।।८४८।।

असी जाणि पराई नारि । सत्त न छोड़ूं इस अवतार ।।
दूती बोली फेंर रिसाइ । तोहि अभाग उदय भयो आय ।।८४६।।

जे तू वाकी मानै बात । गढ तोकौं आवै परभात ।।
रावण कही मंत्री सो जाइ । बैठि मतो तहा कियो उपाइ ।।८५०।।

मत्री समझि सीख यह दई । विद्या वा पै है गुणमई ।।
रम मे लेहु वे विद्या मागि । पाछै उसने कीज्यौ त्याग ।।८५१।।

रावण फिर दूती पै गया । राणी प्रति सदेसा दिया ।।
तुम मेरी इच्छा जो धरो । वेग आय तुम दर्शन करौं ।।८५२।।

रावण पासि सौ दूती गई । रस की बात घणी वरणई ।।
राणि कै मन भयो आनद । विगसै जेम कुमोदनी चद ।।८५३।।

विद्या सुमरि करि चढी विमाण । रावण की ढिग पहुची आन ।।
बैठी सेज्या ऊपरि जाय । काम लहरि कहु कहां समाय ।।८५४।।

रावण कहै देवी तुम सुणौं । गढ परि जावा चित मुझ तणौं ।।
राणी जपै सुणौं नरेस । मैं तुमकौ भेजा सदेश ।।८५५।।

तुम तो आये नहीं उस ठांम । अब किस विध जैहो उस धाम ।।
रावण कहै विद्या मुझ देहु । तो मैं तेरा कह्या करेउ ।।८५६।।

रावण द्वारा विद्या प्राप्ति

तब राणी विद्या दी भली । रावण की पूजी मन रली ।।
असालक विद्या सब तैं बडी । वज्रसाल गढ तिन सौ मढी ।।८५७।।

वे विद्या पाई तिह बेर । तब सेन्या लीया गढ घेर ।।
तोंडै पोलि कपाट गयंद । धंसे सुभट बाजे जय दुंद ।।८५८।।

रावण की विजय

लूट लिये सब हाट बाजार । नल कुबड तब सुणी पुकार ।।
चढ्या कोप बांधे हथियार । सूर सुभट सब लिये हकार ।।८५६।।

आया धाय इरण पर केहगी । देखत सब की सुधि बीसरी ।।
मभीषण सन्मुख दोड्या जाय । दुहूघा जुध भया अधिकाइ ।।८६०।।

नलकूबड बाधिया तुरत । भभीषरण जीत्या बलवंत ।।
वज्रसाल गढ सम नही और । बहुत देस पहुच्या यह सोर ।।८६१।।

रावण का जस प्रगटया घरणा । उपरभा मानै सुख घरणा ।।
मैं विद्या रावण नें दई । गढ पायार जीत तब भई ।।८६२।।

मेरी बहुत करैगा कारण । गई अत पुर अैनी जाणि ।।
रावण नैं बहु आदर दिया । माता वचन मुख सौं बोलिया ।।८६३।।

तुम गुरुणी मुझ विद्या दई । तुम मुझ मात धरम की भई ।।
गुरुणी माता साह की स्त्री । आवज आश्रित गाव पुत्री ।।८६४।।

इतनी माता पुत्री समान । जोग अजोग करै पहिचान ।।

नलकूबड को राजा से बात

नल कूबड को लिया बुलाय । तिरणसौं कही बात समझाय ।।८६५।।

जो तुम चाहौ आपण देस । तो मुझ आप मानौ द्यौ येस ।।
जो तुम कुछ इछा सो देउ । अब तुम मानौ माहरी सेव ।।८६६।।

अपरभा माता की ठोर । तुम दृढ राज करो सुबहोरि ।।
नलकूबड बोले करि ग्यान । मैं पाया है इद्र का थान ।।८६७।।

निज प्रति बोझ अवर का होय । ताकौ भला न कहसी कोइ ।।
जनम जनम को चढै कलक । अपने जी की माने सक ।।८६८।।

नल कूबड छोडी वह नारि । विजयार्द्ध पहुच्या तिंहबार ।।
रथनूपुरह इंद्र पै गया । सब वृत्तान्त नर वैंसो कह्या ।।८६९।।

सुणी बात जब कोप्या इंद्र । रावण ने हु ल्याउ वदि ।।
मैं उसने दीन्ही थी छूट । उन देश मे मचाई लुटि ।।८७०।।

देखि जु वाहि लगाऊ हाथ । अैसी फिर न करै किरण साथ ।।
पूछ्या जाव फिर तासू मता । अैसी बात सिखाओ पिता ।।८७१।।
जिह विधि रावण नै ल्यौ जीत । युद्ध तरणी समझावो रीत ।।
सहस्रार बोलै समझाय । रावण राक्षसबंसी राइ ।।८७२।।

उन कयलास छत्र सिर लिया । वैश्रवरण जम को दुख दिया ।।
बजसाल गढ लिया छिनाय । बहुत भूपती साथे जाय ।।८७३ ।

तुम वासी किम सर भर करौं । रुपणी कन्यां दे क्रोध परिहरो ।।
अपणां कीज्यो निरभय राज । निज बल समझ कीजिये काज ।।८७४।।

इन्द्र द्वारा क्रोध करना

तबै इद्र बोलिया रिसाइ । पुरखा भय बुधि सब जाय ।।
जे छत्री मरने तै डरैं । तेवौं नरक निगोदौं परै ।।८७५।।

मैं केहरि वह दंती श्राइ । भाजै देखि सींघ की छाइ ।।
मैं अब लग कीनी है गई । वाकौं बुधि मरण की भई ।।८७६।।

सूरवीर सब लिये बुलाइ । देस देस के श्राए राय ।।
हय गय रथ साजे तिहां घने । सब सामंत देव से बने ।।८७७।।

संजी धनुष लिये बहु बाण । जम धरम डम भले नीसांन ।।
लाख पचास हस्ति चलै डोर । श्रागै वानै धारी श्रोर ।।८७८।।

रावण की सेना

उनते रावण सेन्या साजि । निकस्यो युद्ध करण के काज ।।
बानर बंसी राक्षस बस । घणे भूपति उत्तम अस ।।८७९।।

दैत्यनाथ षडदूषण भूप । देश देश के सुभट अनूप ।।
सब सामत मन माहि अडोल । पालैं अपने प्रभु के बोल ।।८८०।।

पचपन लाख डोरि गज चले । अस्व अनेक सौमैं तिहा भले ।।
ग्यारसय छोहणि दल संग । सिलह संजोग बने सब अग ।।८८१।।

दोउ सनमुख दल भये श्राय । दोन्यूं तरफै धुरे नीसान ।।
छूटै तीर तुपकहथनार । जैसे वरषै घनहर धार ।।८८२।।

दुहुधा लडै सूरमा बली । दोन्यु सेन्या बहु विध दली ।।
राक्षस रूप लडै विकराल । बानर बसी सब मुख लाल ।।८८३।।

देखि इन्द्रै भय उपजै घनी । देव जेम विद्याधर गुणी ।।
मारै खडग मुंड गिर पडै । रुड मुड बहु लडते फिरैं ।।८८४।।

मही इन्द्र सेनापति तिहबार । भई भभीषण स्यौं तरवार ।।
सेनापति झूझ मुई गिर्‌या । श्रीमाली तब ऊपर कर्‌या ।।८८५।।

कु भकरण तब कीन्ही दौर । सूरबीर झूझै दुहुं ग्रोर ।।
इद्रजीत मेघनाद तब धसे । घरणे लोग जम मदिर बसे ।।८८६।।

सिषवाहनर कनक प्रभ सूर । तिनऊ जुध किया भरपूर ।।
श्रीमाली माल्यवान का पूत । धाइ लड्या सेना सयुक्त । ८८७।।

दुरजन दल ए परलय किया । रुधिर तरणा ग्रति नाला थया ।।

इन्द्र द्वारा युद्ध

इन्द्रभूप ग्राया चढि बली । जं ग्रत पुत्र संग सेन्या भली ।।८८८।।

पुत्र पिता सौ विनती करै । मेरा कह्या क्यौं न उर धरै ।।
मोकु ग्राज्ञा दीजे ग्राज । वेग सवारौं तुम्हारा काज ।।८८६।।

रावरण को बाधौ जब ग्राय । मोहि पराक्रम देखो राइ ।।
कहै इंद्र पुत्र सो बात । तुम हो बालक कोमल गात ।।८६०।।

ग्रब तेरे खेलरण की बात । तुम सुख भुगतो इरण संसार ।।
बालक क्रीडा की है वयस । तुम बिरण काज कवरण इह देस ।।८६१।।

तेरा मरण केम देखु नैरण । ग्रेसे कहै पुत्र सो वैन ।।
जैवत इन्द्र बोलै करि जोडि । तुम पर बैठो निरभय ठौर ।।८६२।।

रावरण पकडौं सैन्या साज । ज्यौं पकडै तीतर नै बाज ।।
ग्रैसी विध रावरण नै गहु । पलमाही सब सेन्या दहू ।।८६३।।

जयंत इन्द्र करि तुरिष पलारण । भले लिये जोधा बलवान ।।
श्रीमाली सु लडा बहुत । लगी गदा भू पड्या तुरत ।।८६४।।

सेवका ग्राग करि लिया उठाइ । सीतल पवन वीभना बाय ।।
चल्या कुंवर लिये हथियार । हस्ती ऊपर भया ग्रसवार ।।८६५।।

श्रीमाली उपर मारि तरवार । माथा छेद भया तिह बार ।।
सेन्या विचल रावण की भई । इन्द्रजीत को इह सुध भई ।।८६६।।

करत चबै ज्यौं बरसै मेह । परवत समान पडी मृत देह ।।
सूर सुभट तिहा बहु कटे । पाछै पाव न कोई हटै ।।८६७।।

जयत कुवर के लागा घाव । ग्राया इन्द्र क्रोध के भाव ।।
इतरै रावरण चढया दससीस । सब हथियार गहै भुज बीस ।।८६८।।
सब सावंत लिये कर सग । दुरजन दल करवे को भंग ।।
रावरण कहै दिखावो इन्द्र । कोस दोय देख्या मुवचद्र ।।८६६।।

अैरापति पर आवत चल्या । छत्र चमर ता ऊपर भला ।।
इन्द्रजीत को घेरयो आइ । इनका दल सब दीया हठाइ ।।६००।।

रावण देखी सुत पर गाढ । छोड्या तिहां क्रोध करि बाढ ।।
छूटे बाण अगनि की जाल । मेघबांण ज्यो वरषा काल ।।६०१।।

अस्व गयंद सूर बहु कटे । तउव न सैन दुहुवा घटै ।।
रावण दया विचारै हिये । इत उत कौं यहां क्यों क्षय किये ।।६०२।।

रावण और इन्द्र में युद्ध

मुझ ने तो है इन्द्र से काम । जासु सन्मुख करू संग्राम ।।
सुमति सारथी प्रति समझाइ । इन्द्र साम्हा ही चलिए धाय ।।६०३।।

रावण चढ्या सिंह के रथ । हाथी चढ्या इन्द्र समरत्थ ।।
दोन्यू भूप सामही लरै । छुटै बाण मेह जिम पडै ।।६०४।।

अगनिबाण छोड्या मेघबाण । बुझी अगनि उबरे बहु प्राण ।।
इन्द्र तणी सेन्या बहि चली । इन्द्र भूप विद्या साभली ।।६०५।।

अधकार जब छोड्या बाण । भया अधेरा गए अोसाण ।।
उनकं सुझैउ नहिं अधेर । रावण का दल मार्‌या घेर ।।६०६।।

उज्वल बाण रावण चित किया । छुटत ही अंधेरा मिट गया ।।
इन्द्र करै तब वज्र सौं मार । रावण क्यो नहिं मानै हार ।।६०७।।

रावण चन्द्रहास कर गह्या । भई मार धीरज नही रह्या ।।
कातर भाजि छिपावै जीव । सूर सुभट नहीं मोडै ग्रीव ।।६०८।।

अजित कुमार सौं इंद्रजीत । दारुण जुध भया भयभीत ।।
देखै भाक पिता की छोडि । हांकि गए दोउ नर तब छोड ।।६०९।।

किस ही भाति टरै नही पांव । इन्द्रजीत रह्या तिहि ठांव ।।
इन्द्रै इन्द्रजीत कौ गह्या । बाथोबाथि लरै हैं तिहां ।।६१०।।

अैरापति तै दोउं उत्तरे । दोन्यू भूप मल्ल जिम भिरैं ।।
कबहू ऊपरि कबहूं तले । अैसा युद्ध किया उन भलैं ।।६११।।

पकड्या इन्द्र बाधि यहि लिया । लेकरि बंदीखानें दिया ।।
सब सेना मन भया आनंद । निरभय थए मिटया दुख द्वंद ।।६१२।।

भूपति सकल आय कर मिले । रावण फिर लंका गढ चले ।।
परिग्रण माहिं बधावा भया । स्यौं कुटुंब लंका में गया ।।६१३।।

पुण्य प्रसाद जीत बहु भई । पुंण्य विभव चौगुणी थई ।।
तातै पुण्य करो मनल्याय । सुख सपति बाधे अधिकाइ ।।६१४।।

अडिल्ल

पुण्य तणे संयोग देश बहुते जुडे ।
जीते भूप अनेक बोल ऊपर करे ।
इन्द्र नरेन्द्रह साधि सकल जय जय भई ।
जैन धरम परसाद असाता सब गई ।।६१५।।

इति श्री पद्मपुराणे इन्द्र प्रभाव विधानकं ।।

१३ वां विधानक

चौपई

सहस्रार का रावण के पास जाना

इन्द्र को सब रोवै रणवास । अन्नपानी तजि करै उपवास ।।
जयवंत कु वर बहुत बिललाय । नगर लोग चिनवै बहु भाय ।।६१६।।

सहस्रार करिकै मनुहार । समझाया सगला परिवार ।।
अबहुं रावण पासै जाउ । मेरा कह्या मानैगा राउ ।।६१७।।

इन्द्रतणी मैं बुडाउ बदि । ज्यौं परियण मे होय आनद ।।
सब परियण कौं धीरज दिया । लकौं तणै पयाणा किया ।।६१८।।

मत्री सुधर लिये नृप सग । रूपवत सौभै सब अ ग ।।
पहु ते लंका समुद्र मझार । देखी स्वर्ग पूरी उणहार ।।६१६।।

सिंघ दुवारै पहु च्या भूप । बणी पोल तिहा अधिक अनूप ।।
पौलिये खबर रावण सौ करी । माहि बुलाया वाही घडी ।।६२०।।

राज्यसभा माही नृप गया । रावण उठकर आदर किया ।।
सिंघासण बैठाया राय । पुरुषा जाणि करी बहु भाय ।।६२१।।

इन्द्र को छोडने की प्रार्थना

सहस्रार रावण प्रति कही । पुत्र वियोग मम हिरदा दही ।।
इन्द्रै छोड्यां जस बहु होय । तुमारी कीरत करै सब कोइ ।।६२२।।

तुम आग्या मानैगा इन्द्र । कृपा करिउ छोडो अब बदि ।।
बोलै रावण आज्ञा यही । नगर बुहारै नित उठ सही ।।६२३।।

धरती छिड़कें अपणें हाथ । राणी चंदन छिड़कें साथ ॥
तो छोडु उसने इण बेर । आग्या भंग करै नहि फेर ॥६२४॥

सुणी बात मन विस्मय भया । माथा नीचं राख्या नया ॥
तब रावण समझी मन बात । तुम पुरुषा जैसा हम तात ॥६२५॥

बोले सहस्रार सुभ चैन । मंत्री सबद होय मन चैन ॥
हमही इन्द्र समझाया घणा । महाबली उपज्या रावणा ॥६२६॥

तुम उसकी सेवा करि जाय । अंसे उसने रहै समझाय ॥
असुभ करम ताकी मति हरी । सीख हमारी लागी बुरी ॥६२७॥

उन तुमसूं किया युध जु घणा । पुरुषा वयण सबै अवगणा ॥
पुरुषा का मान्या नही कह्या । तो दुख मान भंग होय सह्या ॥६२८॥

जे सुबुधि पंडित सुग्यान । पुरुषा कहैं सु करैं प्रमांन ॥

इन्द्र को छोडना

रावण सहस्रारसो कहै । भ्राता इन्द्र मेरी ढिग रहै ॥६२९॥

अंसा दूजा बली न ओर । जो मन इच्छे सोद्यो ठोर ॥
अंजो चाहो आपणा देस । करौ राज निरभय भुवनेस ॥६३०॥

अगले तै द्यो टाल्यो राज । मनवंछित का ह्वं है काज ॥
सहस्रार नृप अस्तुति करै । तुम दरसन तैं दुख वीसरैं ॥६३१॥

तुम हो त्रेसठ सलाका पुरुष । देखत मनमे उपजै हरष ॥
कृतार्थ भए हम प्रभु आज । रथनूपुर का पावै राज ॥६३२॥

वहै बडा पुरुषा की ठाव । वहां के बसैं हम प्रगटे नाम ॥
बेडी काटि दिया इन्द्र छोडि । तोय हथकडी डारी तोडि ॥६३३॥

हय गय आभूषण पहराय । रथनूपुर कौं दिया पठाई ॥
अपने घरमे पहुंच्या इन्द्र । सब परियन में भयो आनंद ॥६३४॥

इन्द्र चित्त मे भरमे घना । इह उपसर्ग कहां ह्वं बन्या ॥
अन्नपान पाणी नही रुचै । एसा रहै रात दिन सोच ॥६३५॥

राणी देश भागि भंडार । सबै मयांमक सबै उजार ॥
हय गय विभव सेव पालकी । कुछु न सुहाय सबै ज्यालसी ॥६३६॥

इन्द्र की व्यथा

परजा का कछु करै न न्याव । ऐसा राखै विकलप भाव ॥
बहुत दिवस बीते इस भांति । तब कछु सुरत भई नृप गात ॥६३७॥

गधमादन पर्वत पर गया । श्री जिनमंदिर मे प्रगटया ॥
नमसकार करि पूजा करी । ऊचे ते सेना दिठ पडी ॥६३८॥

इन्द्र भूप उपज्या मन सोच । सहस्रक्षोहिणी था मेरा भोग ॥
रावण ने सब परलय किये । बहुत दुःख उन मोकू दिये ॥६३९॥

उस रावण का जाण्यो षोज । लका माहि पडीयो रोग ॥
वाका परलय होय ज्यो राज । उनही बिगाडया मेरा काज ॥६४०॥

मेरे थी विद्या लक्ष्मी । हय गय विभव तणी नही कमी ॥
उन रावण सब दहवट किया । बहुत प्रकार मुझे दुख दिया ॥६४१॥

वाकी सपति ह्वै जो नास । उन मुझ प्रति ही दिखाई भाम ॥
इन्द्र सरायय बारंबार । बहुर ग्यान मय किया विचार ॥६४२॥

समझि समझि मनमे पछताय । मैं क्यो सराप्यो रावण राय ॥
सराप दिये अति बाढै पाप । अपनी करनी खोवै आप ॥६४३॥

राजभोग थिर नाही मही । च्यारो गति माही सुख नही ॥
पुण्य सजोग मिलै बहु रिध । पुण्य घटया नासै सब सुध ॥६४४॥

कबहू राव कबहु ह्वै रक । कबहू जीतै गढ अति बक ॥
कबहु बैठि सिघासण चलै । कबहू पायक पीयस दलै ॥६४५॥

कबहू देव कबहू नारकी । कबहू मनुषा ह्वै तिरण चार की ॥
घटि बढि होइ कर्म की चाल । च्यारो गति मैं व्यापै काल ॥६४६॥

राज भाग मे अछो अचेत । या परसाद भई मुझ चेत ॥
जो वहै इतना करता नही । ग्यान मुझे किम होता सही ॥६४७॥

अब ग्रैसा गरवा तप करौ । काटि करम पंचम गति बरौ ॥

मुनिचन्द्र का आगमन

इह विचार चित बैठा इन्द्र । तिहा एक आया मुनि चन्द्र ॥६४८॥
च्यार ज्ञान का धारक जिके । दरसन देख होय सुभ मते ॥
नमस्कार कीया कर जोर । टूटे जनम जरा की डोर ॥६४९॥

सुणे ध्यांन के सुच्छम भेद । तातैं होइ करम का छेद ।।
प्रभु मेरे पूरव भव कहो । कवण करम तें दुख बहु लह्यो ।।६५०।।

इन्द्र के पूर्व भव

मुनि जपै पिछला विरतांत । भ्रम्या लाख चौरासी जात ।।
लया जनम भील के गेह । थई पुत्री ता कुष्ठी देह ।।६५१।।

मुख विकराल चपटी नांक । चुंधी प्रांख मुख दीसें बांक ।।
जनमत मात पिता मर गये । ऐसे दु:ख वा गति मे भए ।।६५२।।

ह्वांते मरि फिरि देही धरी । मुंनि दरसन तें राजग्रह परी ।।
तप करि पहुंती स्वर्ग विमांन । पूरण भाव भुगती सुर थान ।।६५३।।

रतनपुर नगर तिहा गोमटराय । कुंदमणी राणी उर प्राइ ।।
क्षीर धारा तहा हुई पुत्री । तप करि स्वर्ग लोक थिति करी ।।६५४।।

क्षेत्र विदेह रत्नसचय नगर । असमत वर्द्धन रावल अग्र ।।
गुणवती राणी पटधनी । पुण्यसेन पुत्र भया बहु गुणी ।।६५५।।

राजा नैं दीक्ष्या पद लिया । राज्यभार सब सुतनें दिया ।।
गुणसेन सुण्यां बहुधर्म । सिथल भए असुभ सहु कर्म ।।६५६।।

छोड राज दिक्षा लई जाइ । स्वाध्यान तपसो मन ल्याइ ।।
देही छोडि अहमीन्द्र विमाण । भया इन्द्र पाया सुख थान ।।६५७।।

वहा ते चय रथनूपुर देस । सहस्रार कै इद्र नरेस ।।
पूछै इन्द्र दोइ कर जोडि । प्रभुजी मेरी करो बहोडि ।।६५८।।

कौण पापते मान मग भया । सब सुख कवण करम तें गया ।।

रावण द्वारा इन्द्र के मान भंग के कारण

क्यों रावण मुझ दीना दुख । भूल्या सकल राज का सुख ।।६५६।।

मुनिवर बोले आतमग्यांन । जह्यी सुमरण धरि देख्यो ध्यान ।।
अरजयपुर नगर अनूप । अगनिवेग विद्याधर भूप ।।६६०।।

आनदमाला पुत्री ता गेह । कोकिल सब्द कचन सम देह ।।
ताकै पिता स्वयंवर रच्या । सकल सौज सामग्री सच्या ।।६६१।।

देस देस के आए राय । मडप तल बैठे सब आय ।।
कन्या हाथ लई वरमाल । गुणवत खेचर गल दीनी डाल ।।६६२।।

किया विवाह् घडी सुभ साध । भोग भुगत कीनी अति वाधि ।।
एक दिन सूता था आवास । विद्याधर ले चले आकास ।।६६३।।

आनदमाला जागी तिण वेर । सेज्या अकेली देखी फेर ।।
तब उपज्या मनमें वैराग । सकल वस्तु का कीना त्याग ।।६६४।।

हसावली नदी तट तीर । परम स्वरत मुनिवर तप धीर ।।
दिक्षा लई मुनिवर पै जाइ । करै तपस्या मन बच काय ।।६६५।।

गुणसेण जाग्या तिह वार । विद्याधर सौं कीनी मार ।।
भाजि गये दुरजन के लोग । आया निज नगरी मे लोग ।।६६६।।

देखी नहीं त्रिया घर माहि । चिंता करता ह्वै गई साझ ।।
गई सुरत मुनि थानक गया । क्रोध वचन मुख सौं बोलिया ।।६६७।।

मेरे डरते लीया जोग । अजौ अभिलाषा राखै भोग ।।
सौहागणि तै बाई करी । आई तुझ मरने की घडी ।।६६८।।

मुनिवर कु बाध्या बहुभांति । मारया आछे मुक्की लात ।।
मुनिवर कछुवन आणें चित्त । सहै परीसा आपणै नित्त ।।६६९।।

इत्तनो है यासु वैरान । सो मुझनै भुगत्या परवान ।।
चिदानद सौं ल्याया ध्यान । ह्वा इसका होसी कल्याण ।।९७०।।

बोली नारि पति ने दे गालि । रे पापिष्ट मुनि किया बेहाल ।।
ए मुनिवर मन अंतर रहैं । छह रितु के दुख असे सहैं ।।९७१।।

तै क्यो आप उपद्रव किया । किण हित साध प्रतै दुख दिया ।।
तेरा होज्यो राज का भग । इस सराप दिया तिण संग ।।९७२।।

मुनिवर सिध रिष की भई । वा सब रिद्ध कल्यांण नै दई ।।
गुणसेन सोच करै मन माहि । इह सराप टलसी का नाहि ।।९७३।।

सीलवंत का वचन न टलै । मैं तो पाप बहुत ही करै ।।
बधण दिये साधु के खोलि । अति अधीन होय बोलै बोल ।।९७४।।

मुझ मे आज भई अब बुधि । माया जाल तैं भूली सुधि ।।
अब कछु ऐसा करू उपाव । नासै पाप लहुं सुख ठांव ।।९७५।।

मुनिवर करी धरम की टेक । सत्रु मित्र सम जाणै एक ।।
मुनिवर कहै ग्यान के भेद । तप करि महेन्द्र भया वह देव ।।९७६।।

उहां मुनि इंद्र सुधर्म विमांण । आव भुगति रावण भया आंन ।।
गुणसेन जीव भया तू इन्द्र । वा सनमथ किया तुझ बदि ।।६७७।।

पिछली सुणि मन भया अडोल । रावण किया मित्र का बोल ।।
जो उन मोसो कीन्हा जुध । तो मैं लही धर्म की बुद्धि ।।६७८।।

वा कै ह्वं जौ मुकत की ठोड । वा परसाद गई मुझ षोड ।।
सुण्यां धरम रथनूपुर गया । जयन कुंवर ने राजा किया ।।६७६।।

इन्द्र द्वारा मुनि दीक्षा

इन्द्र भूप दिगबर भया । तेरह विध सौ चारित्र लिया ।।
सहै परीसा बाइस गात । च्यार करम का किया घात ।।६८०।।

केवलग्यान लब्धि तसु भई । जै जै सबद दुदुभी थई ।।
धरम प्रकास सबाधे घने । इन्द्र मुनीन्द्र भेम बे बने ।।६८१।।

दूहा

इन्द्र भूप इह विध बली, धरघो धर्म दृढ चित्त ।।
भवसागर तै उतर करि, सुख भुगतें बर नित्त ।।६८२।।

चौपई

मुकति गया मुनिवर श्री इन्द्र । पावै सुख सास्वते आनंद ।।
ज्योति ही ज्योति एकठी भई । इन्द्र प्रभू पचम गति लही ।।६८३।।

रवि उद्योत अंधेरा मिटै । केवलवाणी ससय मिटै ।।
मन धर कथा इन्द्र की सुनै । ते नर अष्ट करम कौ हणै ।।६८४।।

इति श्री पद्मपुराणे इन्द्रनिर्वाण विधानकं ।।

१४ वा विधानक

चौपई

अनन्तवीर्य मुनि को कैवल्य प्राप्ति

दीप धातकी मध्य गिर मेर । अनतवीर्य जिण केवल बेर ।।
साधम पर्वत पर जीण साथ । इद्र आदि देवता साथ ।।६८५।।

बैठ विमान देव सब चले । मुकटां की मणि सोभा भले ।।
पृथ्वी दसौं दिसा उद्योत । रतना तणी बिराजै जोत ।।६८६।।

बाजा बाजैं नाना भाति । सब सुर चले जिनेश्वर जात ।।
देखि विमांण रावण चितवै । तब मरीच मंत्री बीनवै ।।६८७।।

अनतवीर्य स्वामी जिणदेव । ए सब चले तास पद सेव ॥
अनंतवीर्य को केवलज्ञान । पूजा करें ग्यान कल्याण ॥९८८॥

रावण द्वारा वन्दना

रावण के मन भया आनंद । दरसन कारण देव जिणंद ॥
सोलह सहस्र भूप सग लिये । बैठि विमाण समोसरण गये ॥९८९॥

दई प्रदक्षिणा सुर नर जाय । नमस्कार कीया बहुभाय ॥
दोई कर जोडिर पूछै इन्द्र । बारह सभा मे सूरज चन्द्र ॥९९०॥

इन्द्र धरणेन्द्र तिहा नरेन्द्र । भया सकल प्राणी आनद ॥
पूछै पुण्य पाप के भेद । सुणत वचन मिट जावै खेद ॥९९१॥

भगवान की वाणी

श्री भगवन की वाणी होय । भवियण लोग सुणै सब कोइ ॥
छहु दरब अर तत्त्व नु सात । नव पदारथ अर पचगात ॥९९२॥

पाप पुण्य का करै बखाण । हिंसा तै गति नरक निदान ॥
मद्य मास सहित जे खाइ । उवर पच कठूंबर आय ॥९९३॥

काहू की चित दया न करें । ते जीव नीची गति पडै ॥
सात विसन जे चित मे धरै । सातउं नरक माझ दुख भरै ॥९९४॥

असत्य वचन जे मुख सो कहै । च्यारूं गति मैं सुख न लहै ॥
असत्य वचन चोरी परिहरै । ब्रह्मचर्य व्रत विध सौ करै ॥९९५॥

परिग्रह प्रमाण करै नहीं मूढ । भव भव मे पावै दुख गूढ ॥
सात विसन के सेवणहार । ते कबहू नही पावै पार ॥९९६॥

रोग सोग दुख पडै बिजोग । काहू भव मे मिटै न सोग ॥
पाप करम के भेद अनत । उनका कहत न आवै अंत ॥९९७॥

धरम करत सुख सपति होइ । कै मनुष्य कै सुर पद होइ ॥
मनुष्य जनम का लाहा लेह । सोलह कारण वरत करेह ॥९९८॥

दशलक्षण पालै धरि भाव । रतनत्रय जंपय जिण नाम ॥
अठाईस मूल गुण पालै सुद्ध । धरम ध्यान में राखै बुधि ॥९९९॥

चार दान दे वित्त समान । नित उठि दरसन करै विहान ॥
बइयावरत सबही सो करै । दया भाव चित अंतर धरै ॥१०००॥

सारस्त्र पुराण सुणौ मन ल्याइ । निस में भोजन भूलि न खाय ।।
जे जीव निसमे लेय आहार । तिरजंच मांहि भ्रमैं अपार ।।१००१।।

ब्यालू करैं न छीजती बार । दरसन ग्यांन चरित्र चित धारि ।।
उत्तम गति मे ह्वै आरिज खंड । पंचेन्द्री कौ दीजे दंड ।।१००२।।
संयम कौं पालै धरि भाव । भोग भूमि पावै सुख ठांम ।।
सुपात्रां नें विध सो दे दान । षट् दरसन को राखैं मान ।।१००३।।

आप समान सकल ने जांनि । दया भाव सब ऊपर आंन ।।
दान कुपात्र फलै नहीं कुच्छ । कुगुरु कुदेव कुसास्त्रां तुच्छ ।।१००४।।
इन संगति नीची गति जाय । अर जे कद मूल फल खाय ।।
पाप पुन्य को भेद न करै । कुगुरु कुदेवा निश्चै धरै ।।१००५।।

ते जीव मरि खोटी गति पडै । भव भव दुख दलिद्र अनुसरै ।।
सम्यक दर्शन देखै सुध । सम्यकग्यान चारित्र सुबुध ।।१००६।।
श्री भगवत नै पूजै नित्त । सुमरै गुणवाद धरि चित्त ।।
निसदिन गुरु की सेवा करैं । मिथ्या तजि समकित आदरै ।।१००७।।

कै व्है देव कै भूपती । सम्यक ते होय पंचमगती ।।
समकित बिना न पावै मोक्ष । मिथ्याती ते भव भव दुख ।।१००८।।

दूहा

सम्यक है चिंतामणि रतन, तेह पालो धरि ध्यांन ।।
भवसागर कौ है सगुण, महित कीजिए मान ।।१००९।।

जती विरत तेरह विध धरैं । बारह विध तपसो अध हरैं ।।

क्रोध लोभ ए च्यार कषाय । रागदोष ये देय बहाइ ।।१०१०।।

बाईस सहै अबाधा नित्त । द्वादस अनुप्रेक्षा सों चित्त ।।
भोजन करैं उडंड अहार संयम का राखै दिढ भाव ।।१०११।।

दस लक्षण के पालें अ ग धरम सुकल स्यौं राखै संग ।।
बारह बरत सरावग करै । पाच अणुव्रत निश्चैं धरै ।।१०१२।।

फुनि पालै शिस्याव्रत च्यार । सातौं विसन तजै जिम छार ।।
पुराम गुणव्रत धारै तीन । सो जाणौं श्रावक पर बीन ।।१०१३।।
राखैं सदा मनमे संतोष । तृष्णा तजै तो पावै मोक्ष ।।

लोभदत्त सेठ की कथा

लोभदत्त सेठ की कहीं कथा । तिण लक्ष्मी बहुते संग्रही जथा ।।१०१४।।

कुरी खाइ महादुःख भरै । जहा तिहा पायक जिम फिरै ।।
सिर पगडी तल धोती बांधि । एक दुपट्टी राखै कांध ।।१०१५।।

जीरण वस्त्र त्रिया ने देय । दान पुन्य कबही न करेइ ।।
सब पुर लोग कृपण कहैं ताहि । वह मनमे कछु आणे नाहि ।।१०१६।।

चारण मुनि आए तिण वार । साहणी दौडि करी नमस्कार ।।
स्वामी म्हारा पूरव पाप । छती आथि हम सही संताप ।।१०१७।।

किण प्रकार होसी हम गति । लोभदत्त कै धरमन चित्त ।।
अब अैसी विद्या मुझ देहु । तीरथ दरसन सदा करेहु ।।१०१८।।

तब मुनिवर इक विद्या दई । ताहि सुमर बुधि पाई नई ।।
लकडो एक बडो विस्तार । भीतर ते पोलाइ सार ।।१०१९।।

विद्या सुमरित सु ऊपरि बैठि । तीरथ करण चाली त्रिय सेठ ।।
अैसे नित प्रति तीरथ जाइ । रतन द्वीप पूजै जिण राइ ।।१०२०।।

तेली तेलण दोन्यु लडै । तेलणि रूस लकडा मै बडै ।।
साहणि चढि चाली आकास । उतरै रतन दीप कै पास ।।१०२१।।

तेलण देख अचमं भई । रतन संकेलि गोद भरि लयी ।।
लकडे बीच आइकै छिपी । बहुत ज्योति रतनन की दिपी ।।१०२२।।

साहणि आई घरि आपणै । तेलण आनंदी मन घणै ।।
तेली प्रति दीने सब जाइ । रतन एक साह ढिग ल्याइ ।।१०२३।।

साह देख अति अचिरज भयो । अैसो रतन कहा तै लयो ।।
तेलण सो पूछै लोभदत्त । मोसौ साच कहो मोहि सत्य ।।१०२४।।

तै यह कहा तै पाया रत्न । वा का मोहि बताबो जत्न ।।
तेलण भणै सुणउ मम सेठ । लकडे माहि रहो तुम पैठि ।।१०२५।।

भई साझ सेठ तिहा धंस्या । अधिक लोभ ताके मन वस्या ।।
साहणि विद्या सुमरी आय । लकडे बैठि दीप कौ जाय ।।१०२६।।

समुद्र माझ देख्या सहतीर । इह लकडा डाल्या गहै नीर ।।
वा लकडे चढि साहुणि गई । डुब्या साह नरक गति भई ।।१०२७।।

साहणि आयी घर आपणे । पूछै बात तब मुनिवर भणे ।।
कहो साहु गयो किंह ओर । वाकूं मैं ढूढू किस ठौर ।।१०२८।।

मुनिवर कहै पिछला वृत्तान्त । डूब्या साह लकडे संघात ।।
साहुणिकीया मन मे सोच । लोभदत्त का इह नियोग ।।१०२९।।

नित प्रति उठि लक्ष्मी दे दान । पूजै साधु देव भगवान ।।
विलसै भोग दिन सुख मे जाइ । भोजन भले भले नित खाइ ।।१०३०।।

दूहा

लोभदत्त लक्ष्मी लही, कछुबन जाण्यां भोग ।।
पाप करम करि एकठी, ताथी भयो वियोग ।।१०३१।।

चौपई

भद्रदत्त सेठ की कथा

भद्रदत्त सेठ ग्राधीन । बेचै वस्तु परिग्रह लीन ।।
दान ग्रदत्ता लेइ नही पडघा । बाहर ग्रभ्यतर चित खरा ।।१०३२।।
एक दिन कचन राय प्रधान । तसु दीनार पडया मग थान ।।
सब दीनार सेठ जब लही । भद्रदत्त चित्त सोचै कही ।।१०३३।।
कचण पास गया तिण बार । नृप के मन की पूछै सार ।।
कहा दुचिते बहुत उदास । मुनै कहो करौ बिसवासि ।।१०३४।।
कचन कहै मो पास दिनार । राजा मुझे सोपिया संभारि ।।
छूठ पडे मारग मे जात । तातै सोच करू बहु भाति ।।१०३५।।
ग्रन्नपान मो कछू न सुहाय । तिण कारण मै रह्यो मुरझाय ।।
वे दीनार सेठ तब दिये । भयो सुख कंचन के हिये ।।१०३६।।
भद्रदत्त की ग्रस्तुति करै । धन्य सेठ तु लोभ न धरै ।।
सगला लोग सराहैं ताहि । ऐसी बात सुणी नरनाह ।।१०३७।।
दई सेठ नें घणी विभूति । ग्रादर मान किया ग्रद्‌भूत ।।
ताको जस प्रगटचो ससार । सत तें लछमी लही ग्रपार ।।१०३८।।

दूहा

सति मारग ग्रैसा भला, ताहि करौं सब कोइ ।।
दोन्यु भव जस विस्तरै, बहुरि मोक्ष पद होइ ।।१०३९।।

चौपई

कुंभकरण द्वारा धर्मोपदेश की प्रार्थना

कुंभकरण पूछै कर जोडि । स्वामी भाखौ धरम बहोडि ।।
कवण पुन्य तै लहिये मुक्ति । तैसी मोहि सुणावो युक्ति ।।१०४०।।
ग्रनंतवीर्य जिण कहै वखांण । बारह सभा सुणैं धरि ध्यान ।।
समिकत जे पालै धरिचित्त । उत्तम ध्यान विचारैं नित्त ।।१०४१।।

समव्याईक वेदक समकिती । निश्चय विवहार दोइ विध थिती ।।
अरिहंत समान देव नही कोइ । गुरु निर्ग्रन्थ सतोषी होइ ।।१०४२।।
सास्त्र ते जिस माही दया । इष्ट अनिष्ट करै नही भया ।।
देव कुदेव है पूजै नही । पाखंडी गुरु की बात न सही ।।१०४३।।
कुसास्त्र मे मानै नही साच । निग्रह कीजे इन्द्री पाच ।।
अपरोषत कीजे उपवास । खोटे व्रत तें होय पुन्य का नास ।।१०४४।।
वरत करि कै कदमूल को खाय । तो किया कराया निरफल जाय ।।
लेय आहार कहै हम व्रती । मनुष्य जन्म की खोवै कृति ।।१०४५।।
चउ घडिया अणथमो करै । अथवा घडी दोय अगसरै ।।

रात्रि भोजन निषेध

भोजन रयण तजै तिहु वात । ते कहीए मानुष की जात ।।१०४६।।
जे नर रयण भोजन खाहि । राष्यस सम जाणिये ताहि ।।
पशु जाति ते हैं अग्यान । जैसे मास भषी है स्वान ।।१०४७।।
कीट पतंग माकडी घणी । वाका दोष न जाय न गिणी ।।
ते सव गति अति षोटी लहै । रोग सोग दुख भव भव सहै ।।१०४८।।
केई जनम दलद्री होइ । थोडी आव लहै जिय सोइ ।।
लख चौरासी भ्रमै ससार । ते कबही नही पावै पार ।।१०४९।।
भोजन रयण तजै धरि ध्यान । ते भव भव सुख लहै निदान ।।
पंचमि गति पावै निरवाण । सकल लोक मे उत्तम थान ।।१०५०।।

दूहा

जे नर निशि भोजन करै, कंद मूल फल खाइ ।।
ते चिहु गति भ्रमते फिरैं, मोक्ष पथ तिहा नाहि ।।१०५१।।

रात्रि भोजन त्यागै सर्व । उत्तम कुल पावै बहु दर्व ।।
भले भले मिंदिर आवास । कै सुख विलसै कै जाइ अकास ।।१०५२।।
बत्तीस लक्षणी पावै नारि । रूपवंत ससि के उणिहार ।।
हंस गामिनी कोकिल वयण । सबद सुणत मन उपजत चैन ।।१०५३।।
पुत्र सपूत होहि तिसु भले । कबहूं खोटे मार्ग न चले ।।
सज्जन कुटंब भाई घणे । आदर भाव कहत नही बणे ।।१०५४।।
छहो राग अरु तीस रागणी । होहि नृत्य सुख सोभा घणी ।।
कनक मई पाई अति देह । लोचन कमल है ससि नेह ।।१०५५।।

कुंडल सोभै दोन्युं कर्ण । बडी भाव मुगतें सुख सर्ण ॥
जैन धरम सौं राखें प्रीत । सकल धरम की पालैं रीत ॥१०५६॥
नित उठि द्वारा पेषण करै । जनम जनम के पातिग हरै ॥
मुनिवर कों विधस्यों दे दान । छहों भेष का राखें मान ॥१०५७॥
बारह सभा सुणी जिण धर्म । असुभ भाव के छूटे कर्म ॥
कैई भूप दिगम्बर भये । किनही व्रत श्रावक के लिये ॥१०५८॥
जैसा चित तैसा लै व्रत । जनम जनम का दुःख जहन्त ॥

रावण द्वारा व्रत ग्रहण

रावण सौं बोले भगवान । तू लें व्रत कछु निश्चय आन ॥१०५९॥
रावण सोच हिया मे करै । सीलवरत की इच्छा धरै ॥
परनारी सेवै अग्यान । पावै श्रत दुख की खान ॥१०६०॥
जैसे स्वान जे वम्या आहार । जैसे विषई सूढ गवार ॥
बहै द्वार दुरगंध निवास । ताहि देख मन होत उल्हास ॥१०६१॥
मेरी तीन षड मे आग्या । मोपै वरत सर्व नही जाग्या ॥
एक भांति व्रत पालौ सही । जे नारी मुझ इच्छै नहीं ॥१०६२॥
तांका सील न षंडउं जाइ । इहै वरत मुख बोलवै राइ ॥
श्री जिण पास नेम इहलीया । आगै कौं फल दाता भया ॥१०६३॥
कुंभकरण भभीषण व्रत लिया । करि डंडोत पयाणा किया ॥
आए लंका सह परिवार । करै धर्म मन हरष अपार ॥१०६४॥
इन्द्र धरणेन्द्र सुरथानक गए । श्री जिनवाणी सुमरै हिये ॥
सब के मन का संसय गया । धरम प्रकास जगत मे भया ॥१०६५॥

अडिल्ल

अनतवीर्य भगवंत धरम बहुविध कह्यौ ।
सुधम भेद अगाध सुणत सब सुख लह्यौ ।
व्रतधारी भए भूप मोक्षमारग गए ।
भवसागर ते जीव उतरि शिवपद लए ॥१०६६॥

इति श्री पद्मपुराणे श्री अनंतवीर्य धर्म व्याख्यान विधानकं ॥

पन्द्रहवां विधानक

चौपई

हनुमान का जीवन

इहां श्रेणिक कीया परसन्न । हनुमान की कहो उतपन्न ॥
श्री जिनवाणी दिव्य ध्वनि होइ । बारह सभा सुणै सब कोई ॥१०६७॥

गौतम स्वामी निरणैं भणैं । सभामध्य श्रेणिक सुणैं ॥
विजयारध दक्षिण दिस ओर । आदितपुर नगरी तिहा ठोर । १०६८॥
राय प्रहलाद नगरी को धणी । केतुमती राणी गुण तणी ॥
पवनजय पुत्र भया शुभधरी । फल फल बढ़ै देह गुण भरी ॥१०६६॥
पर्वत सम वैसपुर देस । महेन्द्र विद्याधर तहां नरेस ॥
हृदयवेगा राणी सुंदरी । सो पुत्र जनमे सुख करी ॥१०७०॥
प्रथम अरिदमन दूजा उदपाद । अजनी सुंदरी पूनम चाव ॥
रूप लक्षण गुण महा प्रवीण । सोलह भात बजावै बीण १०७१॥
छट्ठी राग अर तीस रागणी । विद्या पढ़ै सरस्वती वणी ॥

अंजना के विवाह की चर्चा

राजा महेन्द्र तब मता उपाइ । मंत्री चारू लिये बुलाइ ॥१०७२॥
अमर सागर सौं मता विचार । कन्या बडी भई इह बार ।
उत्तम कुल जे राजकुमार । तिहा लगन भेज्यो इस बार ॥१०७३॥
अमर सागर बोल्या मतरी । रावण की कीर्त्त हैं खरी ॥
ऐसैं सुं कीजे सनमंध । राक्षसवंस ज्यौं पुंनिम चंद ॥१०७४॥
इंद्रजीत दूजा मेघनाद । वेद पुराण बजावै नाद ॥
पराक्रमी वै चरम सरीर । मोक्षमार्गी एका भव तीर ॥१०७५॥
ऐसे उसके महा सपूत । कंन्या देहु सुख होइ बहुत ॥
सुमति मत्री फिरि दूजा कहै । मेरे मन इह ससा रहै ॥१०७६॥
रावण के घर इतनी नारि । पटराणी सोलह हजार ॥
कुमरा कहैं बहुत अस्त्री । एक एक सेती गुणभरी ॥१०७७॥
उस घरि कन्या दीये नहिं वणै । श्रीषेन राजा गुण घने ॥
चरम सरीर प्राक्रमी बली । उकौं देहु हौयगी रली ॥१०७८॥
तारा धर मत्री समभावै बैन । कनकपुर नगर सोभा है अैन ॥
हिरणनाभि राजा तिण ठाम । तसु पटराणी सुमना नाम ॥१०७६॥
सौदामनि तास उस भया । मोक्षगामी सोमे सुभ कया ॥
वाके गुण का पार न कही । अैसा बली भूप को नहीं ॥१०८०॥
सदेहपारिष बोलै परधान । सौदामनी के मन मे बहु ध्यान ॥
वैराग भाव कुंमर का चित्त । संसार समझै अनित्य ॥१०८१॥
जौ उसको उपजै वैराग । वाकैं लगै न करता त्याग ॥
कन्या विधवा सम क्यूं दिन भरै । क्यौ करि दिवस कत विन टरै ॥१०८२॥

वाहि अठारह बरसौ के गए। दिष्या ले केवल उपजए ॥
पहुंते मुक्त रमणि की ठौर, आवागमन करै बहोरि ॥१०८३॥
पवनंजय कुमर विजयारध देस। रूपवंत अति बडो नरेस ॥
ताका गुण ब्योरा सो कहै। कहत सुणत कछु अंत न लहै ॥१०८४॥
रितु बसंत का आगम भया। राग रंग सब घरि घरि क्या ॥
कामनी मानै रति अतिभली। घरि घरि गावै मंगल रली ॥१०८५॥
फूले फूल मोरे तरु अ ब। सब पल्लव सई भई अचंभ ॥
भ्रमर भ्रमरनी करै गुजार। जिहा तिहां गावंति धमाल ॥१०८६॥
सकल भूप आये कैलाश। महेंद्रसेण की पुंत्री आस ॥

राजा महेन्द्र एवं राजा प्रहलाद की भेंट

तिहा आया राजा प्रहलाद। वा सग सेन्या बहुत अगाध ॥१०८७॥
दोनू भूपति मिले गल लागि। रूपवत अति पूरण भाग ॥
बारबार पूछै कुसलात। पूजा करै जिण की सुप्रभात ॥१०८८॥
राय प्रहलाद महेन्द्रस्युं कहैं। मेरे मन को ससा दहैं ॥
तुम क्यौं दुर्बल अधिक नरेस। अपणें चित की भणउं असेस ॥१०८९॥
महेन्द्रसेन बोले भूपती। मुझ घर कंन्या अंजनावती ॥
रूप लषण सब गुण सयुक्त। धर्म भेद जाणै सुबहुत्त ॥१०९०॥

पवनंजय के साथ विवाह प्रस्ताव

पवनंजय पुत्र तुम्हारा सुण्या। तामे विद्या बल गुण घणा ॥१०९१॥
पवनकुमर ने अंजनी दई। दोन्यु कुलां बधाई भई ॥
त्रिवलसाह लिख भेज्या पत्र। आदितपुर पठया दूत विचित्र ॥१०९२॥
तीन दिवस रहै साव्हा माझि। मत्री जाय पहूते सांझि ॥

पवनंजय द्वारा अंजना को देखने की उत्सुकता

पवनजय पूछै अजनी रूप। सुण्यां कुंवर नें बहुत अनूप ॥१०९३॥
तीन दिवस बीते किह भांति। व्याप्या काम कुमर के गात ॥
कब बीते ये तीन दिवस। कब अंतःपुर होइ प्रवेश ॥१०९४॥
पवनजय कुमर विचारै ग्यांन। सीलवंत किम होय अयान ॥
अष्टगुणा काम स्त्री होय। तिह सौं सील जु राखै सोइ ॥१०९५॥
भो सा पुरुष जो व्याकुल रहै। मोकुं अजस न कोई कहै ॥
प्रहसित मित्र पै गया कुमार। मन का भेद कह्या तिह बार ॥१०९६॥

अंजनी रूप सुण्यां मैं घणां। मोकूं काम व्याप्या जोगुणां ॥
जों हू देखूं अपणे नयन। तो मोकूं होवै सुख चैन ॥१०९७॥
मित्र कहै धीरज धर प्रात। दोन्यूं चल्या भई जब रात ॥
अंजनी मंदिर ढिग गए। झरोखे निकट छिपतिये भए ॥१०९८॥
नैंनूं देख्यो रूप अथाह। वह सुख कहीं न वरण्यो जाय ॥
वसन्ततिलका दासी को नाम। अंजनी सौं बोली धर भाव ॥१०९९॥
बडा भाग तेरा अंजनी। पवनजय सा वर पाया गुणी ॥
वा सम बली न दूजा और। सीझंगी तू पट की ठौर ॥११००॥
कचन रतन सी जोडी बनी। उसने हैं तुम सोभा घणी ॥
पूरव किया पुण्य तै भला। ऐसा वर सौं सनमध मिला ॥११०१॥

दासी द्वारा विद्युत वेग की प्रशंसा

मिश्र केस बोलै दूसरी। पिता तुमारे कीनी बुरी ॥
विद्युत वेग सा राजा छोडि। करी सगाई ऐसी टौर ॥११०२॥
वाके गुण का वार न पार। मुक्ति गामी अरु दातार ॥
बाकी तो इक घडी वहोत। कहा दीपक कहा रवि उद्योत ॥११०३॥
समद छाडि लौ चयरो भरी। असी महेन्द्रसेन प्रति करी ॥

पवनंजय को निराशा

असे वचन पवनजय सुनी। जानु उर आयुध सो हनी ॥११०४॥
सोवत सिह हंकारघा ढेल। मानु दीया अगनि मे तेल ॥
काढ षडग लीया तिह वार। अजनी सुधा डारू मार ॥११०५॥
विभचारणी लक्षण इण भांति। इन सुणि करि कछु कहियन बात ॥
प्रहसित मित्र समझावै बैन। कह्या न षडग त्रिया परिलेन ॥११०६॥
जे वचन सुणि भया मन भंग। व्याह करूं नही याके संग ॥
कहै पवन मै दीक्षा लेसि। प्रात भये सब तजिस्यो भेसि ॥११०७॥
प्रात भये उठिया कुमार। मन चाहै ल्यौं दिक्षा भार ॥
प्रहसित मित्र कुंवर सग चल्या। मता विचार सुणाया भला ॥११०८॥
जे तुम लेस्यो दिक्षा जाइ। हीण कहेंगे सगला राय ॥
एक बार लुटै इह देस। पाछै होइ दिगंबर भेस ॥११०९॥
दोनूं गये पिता के पास। म्हांरै है दिक्षा की आस ॥

दंतीपुर पर चढाइ

एक वीणती सुंण हो नाथ। दतीपुर कौं ल्याउं हाथ ॥१११०॥

इतनो सुणि सब सैन हंकार । चढ्या कोप करि पवनकुमार ।।
कुज सेन्या रावण तणी बुलाय । दतीपुर कौं घेरया जाय ।।१११११।।
बाजै बाजु नाना भांति । रोम उठी सूरौं के गात ।।
अ जनी काम पडी ए वात । सीस धुणै चितवै बहु भाति ।।१११२।।
विधना कवंण पाप मैं किया । मंगलचार समै दुख दीया ।।
खाय पछाड धरती पर पडी । ददा उपाव सेवा बहु करी ।।१११३।।
बडी वार मे भई सभालि । बिभचारिणी कु दीनी गाल ।।
इन सब भाष्या षोटा बयण । सुणै पवन देखै निज नैंण ।।१११४।।
मैं अबही माडउ संन्यास । जीवत जनम मे भई निरास ।।
नगर माहिं अति हुवा सोर । व्याह बीच तब मांची रोर ।।१११५।।
पवन नाम दुलह का सुण्यां । पवन समान आईया मना ।।
जैसी बाव वहै चिहु ओर । असी याहि कुमरि मे षोरि ।।१११६।।
सुणी बात महेन्द्रसेन । प्रहलाद निकट आया सिख दैन ।।
हमतै कहो चूक के परी । तुम आपणो मन असी धरी ।।१११७।।
हम तुम मे थी पहली प्रीत । कैसे करी कुल की रीत ।
आज चाहिये रहसानन्द । किह कारण तुम कीया बंध ।।१११८।।

दूहा

पवनंजय अ जना विवाह

महेन्द्रसेन के सुणि वचन, मिटया कोध का भाव ।।
वहुरचा रहस रली भई, दुहु कुल अधिको चाव ।।१११९।।

चौपई

कुंवर के मन की षुटक ना आइ । संभा भावर कीम छर भई ।।
अंजनी का भाज्या मन दुख । सुफल जनम करि मान्या सुख ।।११२०।।
भए बिदा बीत्या इक मास । जब पहुचे अपने घर बास ।।
मन सेती मूलै नही बात । रोवै षुटक कुमरि दिन रात ।।११२१।।

दूहा

पवनजय के मन की षुटक, कवहि न होवे दूरि ।।
अंजना सु दरि क्या करै, दीदा कुमाया क्रूरि ।।११२२।।

चौपई

अंजना का दुःख

मदिर न्यारा अंजनी नैं दीया । रहै अकेली कंपै हिया ।।
अपणी निंदा बहुतै करै । भुगत्या बिना करम नही टरैं ।।११२३।।

पवनजय कुमर चरम की देह । मे पापणी किय होइ सनेह ।।
कै मैं जिन गुण निन्दा करी । जिनवाणी नही निश्चय धरी ।।११२४।।
कै गुरु का राख्या नही मांन । कै मनधर नहीं सुण्या पुराण ।।
कै किस ही को किया बिछोह । कै मिथ्या सो ल्याया मोह ।।११२५।।
कै भोजन उठि खाया रति । परनिंदा कीनी बहु भाति ।।
तो इह मुझ मैं भया वियोग । असुभ उदंब तैं बाढया सोग ।।११२६।।
ऐसे कहि अंजनी पछिताहि । सखी सहेली कहैं समझाय ।।
मनमे चित करौ मति घणि । करम उदै ते ऐसी बणी ।।११२७।।
अंजनी कै है पवन का ध्यान । अब इहा कथा चली है आन ।।

रतन द्वीप राजा के साथ रावण का युद्ध

वरण है रतनद्वीप का राय । रावण कौं नही आणै दाय ।।११२८।।
रावण ने तब भेज्या दूत । वरण भूप पै जाइ पहूत ।।
वासु वातां कहै बसीठ । रावण ने तैं दीनी पीठ ।।११२९।।
उण राजा जीते सब देस । तीन खड के करै आदेस ।।
इन्द्र वैश्रवण जीतिया कुबेर । जम नलकूबड पकडया घेर ।।११३०।।
तु समुद्र मे छिपकरि रह्या । अब तु मानि हमारा कह्या ।।
रावण सेव करो कर जोडि । आग्या मानि तु आव बहुरि ।।११३१।।
तुज वह देस परगने देइ । आदर सहित नगर मे लेइ ।।
इतनी सुण कर कोप्या भूप । रक्त नयन भय दाई रूप ।।११३२।।
बोलै राजा सुण रे दूत । रावण नें सगहित बहुत ।।
जै वह बहुत कहावै सूर । हमसो जुध करो भर पूर ।।११३३।।
धका देइ पुर बाहर किया । दन तरणा मन विस्मय भया ।।
दूत रावण पै आया फेर । कही सकल उन उत नीबेर ।।११३४।।
सुणत वचन तब उठया रिसाइ । सूर सुभट सब लिये बुलाय ।।
रतनदीप कूं घेरा जाय । सुनत वरण तब निकस्या धाइ ।।११३५।।
राजा पीडरी दोउ सुत चले । सेना जोडि सूरमा मिले ।।
दुहुंधा लडै बडे सामंत । पैदल सु पैदल झुझंत ।।११३६।।
मैंगल सो मैंगल बहु भिडे । रथ सो रथ टूटि गिर पडे ।।
रावण की सेन्या अहटाइ । बाधि लिया षडदूषण राय ।।११३७।।
रावण का मन दुचिन्ता भया । मत्री सेती मता तिन किया ।।
मंत्री जन दीया उपदेश । बुलाए नगर के भूप नरेस ।।११३८।।

बरश भूप कौं भेरया आय । ग्रैसा कहा तुम किया उपाइ ।।
सकल ठौर कौं गए वकील । आवो वेग मति ल्यावो ढील ।।११३६।।

राय प्रहलाद के पास रावण का सन्देश

राय प्रहलाद पै गया वसीठ । चीठी दई पढी अर दीठ ।।
माथै कागद लिया चढाय । पढि पढि पत्री नवण कराय ।।११४०।।

दल सज किया पलाणी तुरी । पवनंजय कुमर बीनती करी ।।

पवनंजय द्वारा युद्ध में जाने का प्रस्ताव

तुम हा बैठि करो प्रभु राज । तुम आगै हम साधै काज ।।११४१।।
पिता आगै सुत करै न काम । महा कपूत कहै सब गांम ।
बोले राजा सुणौ कुमार । तुम क्या जाणौं जुध की सार ।।११४२।।

कुमर पितासो विनती करै । सिंह पुत्र किसका भय धरैं ।।
ताकौं कवण सिखावै दाव । भाजै हस्ती सुणतौं नाव ।।११४३।।
हस्ती भाजै थानक छोडि । सिंह के सुत की सहै न ठोडि ।।
पिता कहै दिखावो प्राकर्म । मेरे मन का भाजै भर्म ।।११४४।।

जब बोल्या पवनंजय कुमार । तिणका करै गज त्रिण का छार ।।
काम पडे तब देखो वात । वरणाह वाघु अब ही जात ।।११४५।।

सोम माल दरी न वस । ज्यौं सरवर मे सोमैं हंस ।।
करि सनान बहु भोजन खाइ । उत्तम वस्त्र तिन पहरे जाय ।।११४६।।

बाधि हथियार सेना सग लई । बहुत असीस वडे जन दई ।।

अंजना द्वारा पवनंजय कौं विदाई

सब कुटुंब भेट्या गल ल्याइ । तिहां अंजनी ठाढी आय ।।११४७।।

देह मलीन रही मुरझाय । ताहि देखि मन पवन रिसाय ।।
इह क्यो आई है इण वार । निठुर वचन मुख कहा अपार ।।११४८।।

त्रिया कौं लागे मीठे वयण । सुणि सुणि होय बहुत ही चैन ।।
धन्य धन्य हैं आज का द्योस । पिय के बचन सुने करि हौंस ।।११४९।।
बहुरि अंजनी बिनती करै । नीची दृष्टि चरण चित धरै ।।
जै तुम थे इस नगरी मध्य । तुमरी नित पावै थी सुध ।।११५०।।
मेरे मन ऐसी थी आस । इक दिन प्रभु बोलेगा हास ।।
अब तुम गमन करो परदेस । तुम बिन क्युं जीवस्यु नरेस ।।११५१।।
बहुत भांति बीनवै अंजनी । वाकै दया न आयी चिनी ।।
हस्ती चढया साधि सुभ घडी । वहोत सौंज लीनी सुभ घडी ।।११५२।।

मानसरोवर उतरे जाय । सेना सकल रही तिह ठाय ।।
देख सरोवर निरमल नीर । मंदिर देखे ताके तीर ।।११५३।।

ऊचे बैठा पवन कुमार । देखै इत उत दृष्टि पसार ।।
आवै सीतल पवन सुवास । पषी सब दल बैठिहु पास ।।११५४।।

पवनंजय द्वारा चकवा चकवी का वियोग देखना

हस आदि बहु जलचर जीव । सर ढिग करै किलोल अतीव ।।
कोई कूद जल भीतर पडै । तिहा बैठि अति क्रीडा करै ।।११५५।।

चकवी चकवा रयण वियोग । व्याप्पा तबै कत का सोग ।।
भाई जब देखै जल माहि । ताको समझै अपणा नाह ।।११५६।।

निरखै भाई करै पुकार । कबहा जाय चढै द्रुम डार ।।
सीतल नीर अगन सम लगै । अैसे सब निस चकवी जगै ।।११५७।।

अैसा दुख पवनंजय देख । मनमे उपजी दया विशेष ।।

अंजना से मिलने की इच्छा

बाईस वरस मुझे व्याहां भया । अजना सुंदरी ने दुख थया ।।११५८।।

कर हूं चल्या जुध के काज । झुझि मरूं जो पूरी लाज ।।
मुझ वियोग अजना मरै । विना वस जनम इह गिरै ।।११५९।।

किण विध जाय अंजनी सु मिलुं । सोक वियोग बाको सब दलौं ।।
घर ते विदा होय मैं चल्या । फेर न येन कहै कोई भला ।।११६०।।

प्रहसित मित्र सो पूछी बात । अजनी दुख पाया बहु भाति ।।
वाकी चुकि तउथी कछु नाहि । ददा कही क्या लागै ताहि ।।११६१।।

कवण जतन देखूं अजनी । मोकू कठिन आई यह बनी ।।
सज्जन कुटब लोभ की काणि । दोन्यु कठिन वणी है आणि ।।११६२।।

प्रहसित कहै चलिये प्रच्छन्न । जैसे कोई लखै न चिह्न ।।
एक सोच उपज्या इण वार । सेना मे ह्वैगी जो पुकार ।।११६३।।

समाधान दल का तुम करो । ता पाछै यहा तै तुम टरौ ।।

मुगदराय सौं भाषी वात । हम समेद गिर् जाय हैं जात ।।११६४।।

इहां तुम सावधान बहु रहौ । श्री जिन के दरसन हम लहौं ।।
बहुत हार फूलन के लिये । चंदन केशरि उत्तम फल नये ।।११६५।।

वहोत सौंज ले दोनुं चले । करि आनद हीए मे खिले ।।

अंजना पवनंजय मिलन

अंजनी के मंदिर में गया । प्रहसित मित्र बाहर ही रह्या ।।११६६।।

अंजनी ने देख्या जब पौंन । उठी पुकारी तु है यहां कौन ।।
दहा कौं जबै जगावरण लगी । पुरुष देखि अंजनी भगी ।।११६७।।
बोले पवन डरैं मति नारि । हूं आयो तेरा भरतार ।।
इतनी सुं णि मन भयो उल्हासि । विंघना पूरी मन की आस ।।११६८।।
नमस्कार पवन सौं किया । दरसरण देखत दुख विसारियौ ।।
बैठा सेज्या ऊपर आय । गद गद बोल बोलै बहुभाइ ।।११६६।।
दासी बात कही थी बुरी । मैं वाकी कछु चित्त न धरी ।।
मोकु दुख लिख्या इ भाति । कर्म रेखा मेटी नहीं जात ।।११७०।।
तब पवनजय धीरज देइ । अपणे मन नही चित करेइ ।।
मैं तो आप भया अग्यान । मैं तुमकू दुख दीनां जांनि ।।११७१।।
हम तुम है दोउ बालक देह । बहुत दिना दुख होत सनेह ।।
सोभा रयरण चन्द्र तैं बणे । असे सुख देखेगी घणे ।।११७२।।
जिम पाछली निशा के समैं । चद्र प्रकासि ज्योति कू गमैं ।।
जब म्हे आंगरण किया परकास । तब ही जाणौ भोग विलास ।।११७३।।
दोऊ बोलै अमृत बैंण । दंपति मिलै भया सुख चैंन ।।
दोन्यु करैं कोक की रीत । प्रथम समागम त्रिया भयभीत ।।११७४।।
सरब सुख भुगत्या बलवीर । दोन्यूं सुखी इक भया सरीर ।।
अरण्या ते सूते गल लागी । झीनी रात शशि गयो भागि ।।११७५।।
पवन सरूप देखि छबि कांति । हारि शशि मानि भाज्या प्रातः ।।
रवि उदयाचल उग्या आइ । दरसरण देख्या चाहै राइ ।।११७६।।
बसतमाल परभातहि जागि । आयी निकट बारणै लागि ।।११७७।।
पौलि खोलि आई इरण पास । अंजनी बैठी नीचैं जास ।।
कुंअर जगाया कर पद चापि । जागि पवन अगराया आप ।।११७८।।
अंगुली चटकाबैं अरु जभाइ । रक्त नयरण बहुलै घमाइ ।।
रावण काजि सुरत गई भूलि । भए मगन दोउ सुख के भूलि ।।११७६।।
प्रहसित पास पवनंजय गया । भला भता दीन्युं मिल ठया ।।
अबेर भया प्रगटै इह ठाम । कातर होइ हमारा नाम ।।११८०।।
सब कोई फिर आया कहै । कपूत नाम प्रथ्वी पर लहै ।।
आगे पहरि भये तय्यार । अजनी करैं अधिकी मनुहार ।।११८१।।
हमनैं काज रावण का कारणा । कारज साधि वेगा फिरणां ।।
अपणा मन राखियो अडोल । असैं कहैं पवनंजय बोल ।।११८२।।
अंजनि के भरि आये नैंन । कहो कुटुंब सौं अपने वैंन ।।
मैं असनांन किया है आजि । गरभ रहै तो लागै लाज ।।११८३।।

बोले पवन सुणो हो स्त्री । अंसा भय तुम ना चित धरी ।।
तीस मास लगि लखै न कोइ । फिर आउं मास वतीत न होइ ।।११८४।।
अंजनि बोली दो कर जोडि । तुम विलंब मोहि लागै षोडि ।।
जे तुम कहो कुटुंब सौं बात । कोई न दोष लगै किण भांति ।।११८५।।
अंजनी सेती कह समझाय । सबसौं मुंह मिल हुवे हम जाय ।।
तुमसौ बिदा हुए थे नही । तातैं आइ मिले हम सही ।।११८६।।

अंजना को मुद्रिका देना

जो तुम कछु मनमें भय करो । मुद्रिका मेरी तुम कर धरो ।।
इह सहनाणी दिखाइयो नारि । हमकों सीष आयो इण बार ।।११८७।।
चल्या पवनजय और प्रहसित । चढ विमाण चाल्या विहसित ।।
आकास गामनी विद्या संभारि । दोन्यू पहुंता कटक मझारि ।।११८८।।

सोरठा

पुन्य संजोगै होय, भोग ताहि जिय सुख समझि है ।।
विषय बेल फल होय, तब अंसा बहु दुख सहै ।।११८९।।

इति श्री पद्मपुराणे पवनंजय अंजनी मिलाप विधानकं ।।

सोलहवां विधानक

चौपई

अंजना द्वारा गर्भ धारण करना

सुख मे मास गये द्वै बीत । प्रगटत भई गरभ की रीत ।।
पीत वदन कचन सम जौति । दिन दिन उदर अति ऊचा होत ।।११९०।।

केतुमति द्वारा पूछताछ

चलै चाल गयवर की भाति । केतुमती जब सुणी इह वात ।।
अंजनी पासि आइ पूछी सुरति । तैन कवण करी इह करतूति ।।११९१।।
साचे वचन कहो मुझ आथ । देषज ताहि लगाऊ हाथ ।।
उज्जल कुल को कालष चढी । असी चिंता बास मैं बढी ।।११९२।।

अंजना द्वारा स्पष्टीकरण

अंजनी बीनवै दोइ कर जौडि । मोकुं कछुवन लागै षोडि ।
मानसरोवर परि तुम्हारे पूत । देख्या चकवी वियोग बहुत ।।११९३।।
मेरी दया बिचारी हिये । छातै आय रात सुख दिये ।।
च्यार पहर मुझ मंदिर रह्या । प्रात भये उठि मारग गह्या ।।११९४।।

मै उनने बहु विनती करी । कुटंब सौं कहो बात इएां घरी ॥
वे बोले यह लो मुंदडी लेउ । जो कोई पूछै तो इह देउ ॥११६५॥
जो मेरी मानुं नही बात । देख मुंदडी मानुं सांच ॥
केतुमती बोली रिसखाइ । निठुर वचन भाष्या बहु माइ ॥११६६॥
बावीस बरष विवाह को भए । तेरा नाम सुणत दुख सहे ।
जो तेरी छूं देखता छाह । महा कोप उपजै था वाह ॥११६७॥
चलण समय तुझसो रिस करी । तेरी दया नहीं उर धरी ।
ग्रैसी तोस्यू क्या सनमध । वह फिर आया छनैं बंध ॥११६८॥
विभचारिणी तै किया कुकर्म । मोसुं कहै पवन का भर्म ॥

अंजना को ताडना

लाठी लातै मारी घणी । ठौर ठौर अंजनी कौं हणी ॥११६६॥
बसतमाला परि कोपी बहुत । हे विभचारिणी तुहै ऊत ॥
तेरे आगै कारण इह हुवा । झूठा पवनजय कु दे दुवा ॥१२००॥
तोकु देषि कहा हू करउ । मारि तोहि जम मदिर धरउ ॥
अकुरूरा किकर लिया बुलाइ । इनकौं पिता घर ले जाइ ॥१२०१॥
महेन्द्रपुर माहि लेकै छोडि । दोई जीवस्यौं क्या मारूं ठौरि ॥
जो मैं अब दोन्यू जीव हतौं । तोतम बध भमुं चिहुं गतौ ॥१२०२॥
इह बात प्रहलाद नृप सुनी । क्रोध लहरि उपजी चित घनी ॥
वेगि निकाल मदिर ते देहु । या का नाम न फिर कैं लेहु ॥१२०३॥

अंजना का निष्कासन

रुदन करत काढी अंजनी । वसंतमाला ताकै सग दिनी ॥
उनकै पीछै किंकर हुवा । बहुत तरास दिखावै कुवा ॥१२०४॥
कहैंक वेगि वेगि तुम चलो । उनका चरणन धरती हलौ ॥
असुभ करम तें इह दुख भया । पावैं भ्रमी महेन्द्र की धिया ॥१२०५॥
कठिन कठिन वन अंदर गई । किंकर कै मन चिन्ता भई ॥
इह पवनजय की पटधनी । या कौं बेला ग्रैसी बणी ॥१२०६॥
अब मे छौहौं इनको दुख । इनके दिन फिरए लैहैं सुख ॥
सुणैं पवन मारै मुझ ठौर । तब मुझ कौण छुडावै और १२०७॥
किंकर करै बीनती बहु भांति । मेरी चूक नाहीं कछु मात ॥
तुम्हरे सासु सुसर नैं कह्या । उनके बचन तुम्हैं दुख सह्या १२०८॥

मैं सेवक विनउ कर जोडि । मेरी चित्त न आर्णौ षोडि ॥
कोस च्यार जब नगरी रही । भई रयण वन आश्रम गही ॥१२०६॥
असा दुख अंजनी कुं भया । देखि रुदन दिनकर लोपिया ॥
इह सब दोस करम कौ देइ । ऊचे नीचे उसास बहु लेइ ॥१२१०॥
गरजै सिंह हस्ती तिह ठौर । वन मे करैं स्याल अति सौर ॥
इनका दुख देखि सब पछी रोवैं । पात बिछाइ भूमि पर सोवैं ॥१२११॥
इक दिन बीतैं बरस समान । मनमे सुमरैं श्री भगवान ॥
वसतमाला की जाघ पर मूंड । वन भयदायक दीसैं सूंड ॥१२१२॥
कठिन कठिन बहु पीडित भई । तब कछु भय चितते मिट गयी ॥
सुमरैं जिनवर बारबार । असुभ करम के टारन हार ॥१२१३॥

दूहा

धरती पाव न जे धरैं, सोवैं सेझ अनूप ॥
वनमे निस दुखस्यौं कटी, पांव चली भरि धूप ॥१२१४॥

चौपई

अंजना का महेन्द्रपुरी जाना

भए प्रभात महेन्द्रपुर गयी । पिता द्वारि जाइ ठाढी भई ॥
पौलिया भीतर जाण न देइ । बसतमाला ताहि जंपेइ ॥१२१५॥
इह अजनी राजा की धिया । याकौं असुभ करम दुख दिया ॥
महिंद्रसेन कौ इह सुधि देहु । तेरी सुता आइ तुझ गेह ॥१२१६॥
सिलकपाट पौलिये का नाम । पहूच्या राज सभा की ठाम ॥
नमस्कार करि भाषी बात । अजनी आई आज प्रभात ॥१२१७॥
प्रश्नकीर्त्ति को दिया उपदेश । आदर सो कीजे परवेश ॥
नगर छवावो हाठ बजार । बहुत भाति कीजे मनुहार ॥१२१८॥
तब अकरूर कहै समझाय । मेरी विनती सुनिये राय ॥
केतुमती यह दीनी काढि । उनके चित ए चिंता बाढि ॥१२१६॥
बाईस बरष ब्याह कौं भए । पवनजय निज मंदिर गये ॥
पवन गया रावण के काज । इन ल्याई दोन्युं कुल लाज ॥१२२०॥
याकूं भई गरभ की थिति । तुम राखो जे आवैं चित्त ॥

पिता द्वारा निष्कासन

इतनी सुणत कोपिया भूप । रक्त नयन अर क्रोध के रूप ॥१२२१॥

बेग नगर तें देहु निकार । उनकौं नीकै बडी कुमार ।।
बसतमाला राजा पै गई । करि डंडौत चरण को नई ।।१२२२।।
अजनी बहौत लाडली सुता । वासौ मोह बहुत तुम हुता ।।
निसदिन जीव सम गिणते ताहि । वाका वचन डारते नाहि ।।१२२३।।
असी अति प्यारी वो धिया । केतुमती वाकौं दुख दिया ।।
मानसरोवर पवनंजय गया । चकवी रुदन देखि भई दया ।।१२२४।।
व्हाते आय किया सजोग । च्यार पहर निस भुगते भोग ।।
करी खौज तब कीजौं क्रोध । नीके न्याव समझो नृप बोध ।।१२२५।।
केतुमती इह दीनी काढि । याकौ अब बनी अति गाढि ।।
पिता गेह नही पामे ठाह । हारे थके बिरछ की छाह ।।१२२६।।
सब मत्री समझावं ग्यान । कोई चित्त नही आवं आन ।।
बसंतमाला ऊपर रिस करी । तू विभचारिणी है अति घरी ।।१२२७।

सब ओर से तिरस्कृत

ए सब भई तुझ ही ते पोडि । तो कौ दुख दीजे ते थोडि ।।
ढेला ईंट पत्थर की मार । नगर माँहि तें दई निकारि ।।१२२८।।
जिहा जिहा तै भाई वध । घरि घरि फिरी जाणि सनबंध ।।
कोई वारनु न देषन देह । द्वार ही ते पाथर लेय ।।१२२९।।
सब कुटब की छोडी आस । दोन्यु नारि लिया वनबास ।।
हस्ती सिंह चीते तहा फिरै । महा भयानक बन मे डरै ।।१२३०।।
गेवै पीटै करै पुकार । ल्यावै देही घाव विकार ।।
भूख पियास सतावै देह । कपडा फाटै लागै षेह ।।१२३१।।
आसी चलै दुख व्याप्या घणा । ऐसा जोग करम का बण्या ।।
पवनजय मोसो अस करी । विछोहा समै प्रीत चित धरी ।।१२३२।।
सासु सुसरै दई निकार । मात पिता कछु करी न सार ।।
करम विपाक जाणि मनमाहि । जननी पिया दया उर नाहि ।।१२३३।।
वा मुझसौं कछु किया न मोह । निर्दय बने असर नही लोह ।।
जो मृगपती मुझनें इहा खाइ । दुख सकल बियोग मिट जाइ ।।१२३४।।
तानी लू लागै तन तपै । छिन छिन नाम जिनेश्वर जपै ।।
केस उखारि र पीटै हिया । कवण पाप पूरब मैं किया ।।१२३५।।
बार बार सुमरै भगवंत । तुम बिण कुण सरणागति सत ।।
दूजा कोई नही सहाय । बेर बेर सुमरै जिणराय ।।१२३६।।

बसंतमाला समझावै ताहि । सुख दुख करमतणा फल आहि ॥
इनकै होत न लागै बार । कबहुक रंक कबहु भो बार ॥१२३७॥
वनहि देखि धीरज नही धरै । बसतमाला अंजनी स्युं कहै ॥

अंजना का गुफा में शरण लेना

परवत ऊपरि गुफा है भली । दोन्यु गिरिवर ऊपरि चली ॥१२३८॥
तिहा भौयग करै फौंकार । बारह कोस होइ वन छार ॥
देखत वन लागै भय घणी । नाम सुणत आवै कपणी ॥१२३९॥
झाखडी सूल पडे चिहू ओरि । पाव धरण को नाही ठौर ॥
कपडे झाडौ सों लग फटे । वारिझ कोरि देह कौं कटै ॥१२४०॥
पग भीतर बहु काटे गिडै । असे दुखसौं परवत चढै ॥
तिहा ठोर धोह बहु परी । ताहि देखि वह दोन्यु डरी ॥१२४१॥
थकी वृक्ष तल चलै न पाव । बसनमाला बौली इह भाव ॥
जिम तिम चल करि थांनक गहौं । गुफा माहि निरभय व्है रहौ ॥१२४२॥
देही छुलि छुलि हुवा पिड । पाव बिगास हुआ केई षड ॥
लेइ उसास रोवै अंजनी । चला न जाय कठिन गति बनी ॥१२४३॥
वामै दाहिणै कही न ठाव । वणी विविध किरण दिस जाउ ॥
बसतमाला कर पकडघा आइ । थाभती ठेकती गुफा मे जाय ॥१२४४॥

सघन वन मे मुनि दर्शन

बैठि गुफा मे आश्रम लिया । मातग वन सकल दृष्ट मे किया ॥
देखे वृक्ष मनोहर फले । ता वन मे मुनिवर तप करे ॥१२४५॥
नासा दृष्टि आतम ध्यान । तेरह बिध पालण धरि ध्यान ॥
सहै परीसा वाईस धीर । छह रितु की व्यापै नहि पीर ॥१२४६॥
मुनिवर वन मे भय नही धरै । देह तरणी ममता परिहरै ॥
ग्यानवत जिम समुद्र गंभीर । मुल्या भव्या बतावै तीर ॥१२४७॥

मुनि वंदना

जाकै हैं उत्तम छिमा आदि । पच इन्द्री का लहैं नहीं स्वाद ॥
अंजनी आइ प्रदक्षिणा दई । नमस्कार करि चरणां नई ॥१२४८॥
बसतमाला किया परणाम । बारबार पढैं गुणग्राम ॥
समाधान पूछै मुनिराय । मुनिवर भणै करम परभाव ॥१२४९॥
महेन्द्रसेन की इह पुत्तरी । सत्त सील सयम गुण भरी ॥
प्रहलाद राय पवनंजय पूत । बाईस वर्ष दुख दिया बहुत ॥१२५०॥

चलती बेर किया सजोग । केतुमती ने दिया विजोग ।।
कोई नाही हुआ सहाइ । असुभ कर्म उदय भया आइ ।।१२५१।।
असै करम सब ही कु लगै । कोई नाहि करम तैं भगै ।।
अजनी बसंतमाला सुण चहै । श्री मुनि सब आगम की लहै ।।१२५२।।

बसंतमाला द्वारा पति वियोग का कारण पूछना

बसतमाला पूछे कर जोडि । बात हमारी कह्यो बहोरि ।।
कैसा जीव गरभ किम पड्या । कठिन पाप करके अवतरया ।।१२५३।।
किम वियोग हम कौं इह भया । पूरव पाप कवरण हम थया ।।
बोले मुनिवर लोचन ग्यान । पुन्य जीव गरभ भयो आनि ।।१२५४।।
याको दूसण नाही कोइ । अंजनी पाप उदय तें होइ ।।
महापुनीत धर्म की देह । चरम सरीर पुत्र तुझ गेह ।।१२५५।।

मुनि द्वारा समाधान

हनूमान होसी तुझे पुत्र । कामदेव बलवंत बहुत ।।
उसका भव पूरबला सुणौं । रोग सोग मन को सब हरणो ।।१२५६।।
जबू द्वीप भरत क्षेत्र आहि । अमितगति नगरी ता माहि ।।
मदिर अभिप राजा धरमिष्ट । नंदीनमे सम्यक दृष्टि ।।१२५७।।
जया देवी स्त्री ता गेह । मदी पुत्र की सोमै गेह ।।
रितु बसत खेलै सब लोग । नदन वन मे वृक्ष असोक ।।१२५८।।
रागरग गावै सब ठौर । सकल जगत मे सुख का मोर ।।
विद्याधरी जोषिता घणी । चली जात आकास गामणी ।।१२५९।।
देखि दमै दौड्या आकास । मुनिवर निरष गई ता पास ।।
नमस्कार करि पूछ्या धर्म । जुणे बचन ते लागे मर्म ।।१२६०।।
इक दिन मुनि को दिया आहार । विनयवंत होइ कीनी सार ।।
नित उठ राषै आतम घ्यान । अत समै पढै पंच प्रभु नाम ।।१२६१।।
देही तजि गया सौधर्म विवान । भया देव पाया सुख ठाम ।।
व्हां ते चय मृगाकपुर देस । सूरज चद्र तिहां राय नरेस ।।१२६२।।
प्रीय अग ताकै पटधणी । सिंघरथ पुत्र सु सोभा वणी ।।
समकित पूरण भया काल । उपनां जाय स्वरगपुर चाल ।।१२६३।।
विजयारध तहा अरननदेस । सुकच्छ नाम तिहां तणी नरेस ।।
कनकोदरी राणी सुंदरी । घनवाहन पुत्र भया सुभघड़ी ।।१२६४।।
जोवन समै विवाही नारि । बीतैं निस दिन भोग मझारि ।।
विमलनाथ स्वामी अरिहंत । निरवाण भये श्री भगवंत ।।१२६५।।

तिरा अवसर धनवाहन राय । राजकरत सुख मे दिन जाय ।।
घरणहर देखि भयो वैराग्य । राजविभूति कू बही त्याग ।।१२६६।।
लषमी तिलक मुनिवर ढिग आइ । दिक्षा लई वचन मन काइ ।।
तेरह विध चारित्र सो ध्यांन । वैयावरत करौं उत्तम ग्यान ।।१२६७।।
सोलहकारण दसलक्षण वरत । रतनत्रय पालत गुण धरत ।।
बारह अनुप्रेक्षा चितप्रेषि । बाईस परीस्या सहै बिशेष ।।१२६८।।
बारह विध तपसो मन ल्याइ । बाह्याभ्यंतर एकै भाइ ।।
सब जिय आप समानै जानि । धर्मोपदेस करै व्याख्यान ।।१२६९।।
आतमदरस ज्योति सौ लगी । सास उसास ग्यान करि पगी ।।
मास उपास पारणा करै । ग्रैसा तप गरवा तन धरै ।।१२७०।।
सात स्वर्ग मे अमर विमाण । देही छाडि भया सुरथान ।।
वहा ते चइ तुझ कू षि मे आइ । पुन्यवत कचन सम काय ।।१२७१।।

दूहा

अब भव सुणि अजनी तणा, कहै सषेप वषाण ।।
वचन लगे अमृत समा, बोले ग्यान प्रवान ।।१२७२।।

चौपई

विजयारध नगरी तिहा अर्ण । मुकट भूप सब का दुख हर्ण ।।
ताकै घर पटराणी दोइ । सीलवती पतिबरता सोइ ।।१२७३।।
कनकोदरी न लक्ष्मीवती । दोन्यु सोभै गुण गुणमती ।।
लक्ष्मीमती प्रतिमा जिण पूजि । अन्नपान आरोगै तुझ ।।१२७४।।

कनकोदरी द्वारा जिन प्रतिमा की चोरी

कनकोदरी तब ग्रैसी करी । प्रतिमा चोरी बाइ मे धरी ।।
लक्ष्मीवती बरत ते उठी । जिनप्रतिमा नही पाई पुठी ।।१२७५।।
लक्ष्मीमती मन व्यापी पीर । अन्नखाई नही पीवै नीर ।।
श्रीमती अजिका तब आइ । लक्ष्मीमती देख मुरझाय ।।१२७६।।
तासौं अजिका कहै समझाय । अवर प्रतिमा पूजो जाय ।।
वेग सनान करि भोजन करो । भाव तुमारो पूरण सरो ।।१२७७।।
जिण अग्यांन तैं प्रतिमा हरी । अपणी गति षोटी तिण करी ।।
जनम जनम नरकौं दुख होइ । प्रतिमा जाणि चुरावै कोइ ।।१२७८।।
भव भव हूंता जीव कै रोग । सदा कुटंब मे पडै वियोग ।।
कनकोदरी कपी सुणि बात । प्रतिमा आणि दई ता हाथ ।।१२७९।।

मैं तो महापाप इह कियो । प्रतिमां ले जल मे राखियो ।।
लक्ष्मीमती न्हाई तिरण बार । प्रतिमां पूजि करि लिया आहार ।।१२८०।।

कनकोदरी कु चिंता भई । वाही समै राजा पै गई ।।
जो प्रभुजी मुझ आग्या होह । तो मैं अब संयम व्रत ल्यौह ।।१२८१।।

राजा की आग्या जब पाय । श्रीमती अजिका पासै आय ।।
बिनती करि चरणन को नई । मोसौं असी चूक जो भई ।।१२८२।।

दिक्ष्या देहु ज्यौं छूटै पाप । जो तप किये मिटै संताप ।।
दिक्ष्या दई जिनवाणी कही । तपारूढ ह्वं काया देही ।।१२८३।।

तप करि किया करम का घात । देही तजि पाई सुर जात ।।
इन्द्राणी थई सौधर्म विवाण । व्हा ते भई तू अंजनी आणि ।।१२८४।।

बाईस घडी जिन प्रतिमा हरी । बाईस वर्ष ही आपदा सही ।।
अणछाणी जल प्रतिमाधरी । वनमे पग उवाहणे फिरी ।।१२८५।।

सुणा धरम उपज्या वैराग्य । मुनि कै उठि चरणा मे लागि ।।
मैं गर्भ तें हो निर्वृत्त । दीक्ष्या लेई करूं शुभ व्रत ।।१२८६।।

पुत्र जन्म की भविष्यवाणी

बोले मुनिवर ग्यांन विचार । तेरै होई पुत्र अवतार ।।
रामचन्द्र लक्ष्मण का मित्र । बहुरिउ करै धरम की रीत ।।१२८७।।

कामदेव महा बलवंत । ताका नाम होसी हनुमंत ।।
पवनजय से फिर संयोग । बहुत बरस भुगतेंगे भोग ।।१२८८।।

तेरे असुभ करम सब गये । सुख अनंत देखैगी नए ।।
ज्यौंरा सुण्या किया नमस्कार । बैठी आय निज गुफा मझार ।।१२८९।।

मनमे रहसि भई अडोल । चित मे राखे मुनि के बोल ।।
सब चिंता तब ही मिट गई । प्रगटया तिमिर रजनी जब भई ।।१२९०।।

दुष्ट जीव हैं वनमे घने । महा भयानक शब्द हैं सुने ।।
दावानल सा वन सब जलै । गज टक्कर तें परवत हिलै ।।१२९१।।

झांई सबद तें गुंजे गुफा । भव व्यापै नहीं जीव में कृपा ।।
बसंतमाला अंजनी बिललाई । सोवें धरती पात बिछाइ ।।१२९२।।

असे दुखमैं बीतै घडी । इक इक पलक बरस सम टरी ।।
एक पहर जब बीती रयन । यां सेन्यां कै हिये अचल चन ।।१२९३।।

रतन चूलि खेचर तिह ठाह । रतनचूला राणी का नाम ।।

रतनचूल का अपनी स्त्री के साथ आगमन

अजनी का दुख सुनि उपनी दया । इहै विलाप कवण ने किया ।।१२९४।।
इनका दुख करौ अब दूर । असे वन मे ए कोई सूर ।।
वाही वनकू देवता आइ । एक भवतर की अवधि उपाइ ।।१२९५।।
ईके गर्भ मे है हनुवंत । महोच्छे जाके करै बहु भांति ।।
महाबली अर चरम सरीर । साहसैवत महा बलबीर ।।१२९६।।
असे बालक तरण अवतार । याही भव पावै सिव सार ।।
गधर्व जानि के आए देव । मगलचार करण की सेव ।।१२९७।।
सब परवत पर भई सुवास । महारमणीक सोभै चिहु पास ।।
गावै गीत अर नाचै पडी । रतनचूल चित अचरज धरी ।।१२९८।।
अबही रुदन होइ था दुद । पलमे देख्या होत आनद ।।
भरे तलाब अर पर्वत भरै । सूके रूख भए सब हरे ।।१२९९।।
छह रितु के लागे फल फूल । सीतल पवन सुख सम तुल्य ।।
मुनिसुव्रत की जिन प्रतिमा धरी । गधर्व देव सेव बहु करी ।।१३००।।
संस्कृत मे वे गावै गीत । करै नृत्य अति महा प्रवीण ।।
देवागना बजावैं वीण । करै नृत्य अति महाप्रवीण ।।१३०१।।
पूजा करी अजनी आय । तीन काल सुमरै जिण राय ।।
भ[ई] घडी दे[ही] कुसुम समाई । बसतमाला तब लई बुलाई ।।१३०२।।
उन इमके सब समझै चिन्ह । सेज्या पर स्वाई करी जतन ।।

पुत्र जन्म

भया पुत्र शशि के उद्योत । तम घट गया उजाला होत ।।१३०३।।
रवि कीसी सोभै छबि काति । बालक सोभै असी भाति ।।
बदन देख रोवै अजनी । कहै बचन सुभ असी बनी ।।१३०४।।
पुत्र जनम होता घर माहि । तो मनमान्या होत उछाह ।।
जो होता पवनजय गेह । पुत्र देखि करता अति नेह ।।१३०५।।
जनम समय देता बहु दान । पीहर का करता सन्मान ।।
अब वनमे आई परदेस । कहा करू किससु उपदेस ।।१३०६।।
देवागना समझावै ताहि । यह बालक मेटै दुखदाह ।।
पुण्यवंत जीव जन्मीयौ ! देव आय महोत्सव कियौ ।।१३०७।।

पराक्रमी एकाभव मोक्ष । अैसा पुत्र भया तुझ कूंषि ॥
अब अपणां मन करौ आनंद । यह बालक जैसे मुवि चन्द ॥१३०८॥
रक्षा बहुत करैगे देव । देवांगना करेंगी सेव ॥
विद्याधर स्त्री संयुक्त । गुफा दुवारै आय पहूत ॥१३०९॥
विद्याधरी बालक ढिग गई । देख बदन बलिहारी लई ॥
प्रति सूरज रह्या वारही ठौर । जहा देवता बैठें और ॥१३१०॥
बसतमाला मन चिंता करै । मत कोई दुरजन बालक हरै ॥
निकलि गुफा तै बाहर आइ । विद्याधर ढिग बैठी जाइ ॥१३११॥
तब षेचर पूछै विरतात । तुम क्यो रही वनमे इण भांति ॥
तुम अपणा समझावो भेव । तो मेरा भाजै अहमेव ॥१३१२॥

खेचर के प्रश्न का उत्तर

पिछली बात कही समझाय । इह है सुता महेन्द्रराव ॥
मनोवेगा गर्भ ते भई । प्रहलाद राय के सुत परणई ॥१३१३॥
इहै पवनजय की असनरी । बाईस वरष वियोग मे पडी ॥
रावण के कारज कौ चल्या । चकवी वियोग देख फिर मिल्या ॥१३१४॥
मात पिता थी मिल्या न कुमार । एक रात रह गया तिंह वार ॥
केतुमती इहै दई निकाल । याकी किनहि न करी समार ॥१३१५॥
नाथी आई गुफा मे रही । सर्वकथा व्योरास्युं कही ॥
मुनिवर पासि सुंणे परजाइ । किये करम सो भुगतै काइ ॥१३१६॥
बसतमाला तब पूछै बात । अपणा कहो नाम कुल जात ॥

खेचर का परिचय

विजयारध उत्तर दिस और । हनुरुह नगर बसै तिंह ठौर ॥१३१७॥
विचित्र नाल तिहा भूपती । सदमालण राणी सुभमती ॥
प्रतिसूरज हू ताको पूत । व्योरा सकल कह्या संयुक्त ॥१३१८॥
अजणि सुणि हिय गह भरी । मामा सो बोली तिंह घरी ॥
कंठ लगाय रुदन करि मिली । बसतमाला छुडावै मन रली ॥१३१९॥
नीर आणि परछाल्या मुख । दोन्या हीए भयो अति सुख ॥
थारु संग नाम जोतगी सघात । तास्युं पुछी जनम की बात ॥१३२०॥
कैसी घडी जन्म्या इह पूत । कवण कवण लक्षण संयुक्त ॥
चैत्र वदि आठै अधरात्रि । श्रवण नक्षत्र उदय शशि क्रांति ॥१३२१॥

वा समये हुवा परसूत । कौण लगन मे जन्म्या पूत ।।
पींडी लेइ करि जौतिग साधि । सुपभ नाम सवतसर बाधि ।।१३२२।।

सूरज स्वामि वरष का कह्या । सब विरतात जोतिगी लह्या ।।
रवि है मीन चन्द्रा मक्र । मगल वर्ष मीन मीन का सुक्र ।।१३२३।।

बुध मीन बृहस्पति सिंह । सनीस्वर मीन का सैह ।।
जनमपत्री लिखि जौतिगी देषि । सबै भले ग्रह पडे विशेषि ।।१३२४।।

दक्षिणा दई विप्र ने राइ । निवरण करी सब देवा आइ ।।

अंजनी का विद्याधर के नगर जाना

अंजनी प्रति बिवाण बैठाइ । बसतमाला संग लई चढाइ ।।१३२५।।
विद्याधर ले निजपुर चल्या । सुगन मुहूरत साध्या भला ।।
बैठि विवाण चले आकास । देख्या रवि बालक आकास ।।१३२६।।

बिमान से हनुमान का शिला पर गिरना

उछल पडघा परबत पर आय । अंजनी पुत्र पुत्र विललाय ।।
रुदन करै प्रति सूरज घणां । आसू धार नयण सौं वण्या ।।१३२७।।

बालक पडया सिला पर आय । पग्वत चूर हुआ तिह ठाइ ।।
पुन्यवत कै लगी न चोट । चुबै पाव अगुठा ओठ ।।१३२८।।

हसौर उछलै बारबार । देख पुत्र सुख भया अपार ।।
लिया उछग हिया सौं ल्याइ । पुहचे हनू रुह पुर मे जाइ ।।१३२९।।

नगर माहि अति थयो आनंद । पूजा करि श्री देवजिणद ।।
बालक बधै नित उत्तम देह । रहै अंजनी मामा गेह ।।१३३०।।

सोरठा

सब तैं बडो ज पुण्य, जल थल मे रिक्षा करै ।।
सकट विकट उद्यान, कष्ट पीड सगली हरै ।।१३३१।।

इति श्री पद्मपुराणे हनुमान जन्म विधानकं ।।

१७ वां विधानक

चौपई

पवनंजय के द्वारा रावण से विदा

पवनजय रावण पै जाइ । नमस्कार कीयो सिर नाइ ।।
रावण नें अति आदर किया । बिदा वरुण राजा पर किया ।।१३३२।।

पवन संग बहु सेन्यां दई। बरुण भूपसौं चरपट भई ॥
वरुण राय के भूझे पूत। बांध्या वरुण राय अवधूत ॥१३३३॥
खरदूषण तब लिया छुडाय। वरुण प्राणि लगाया पांय ॥
पवनकुमार सराह्या भूप। या का अधिक विराजै रूप ॥१३३४॥

पवनंजय का आदित्यपुर आगमन

भई जीत लंका फिर गया। आदित्यपुर पवन आइया ॥
मात पिता के चरणउं नया। परियण मांहि बधावा भया ॥१३३५॥
अजनी तणा महल मे जाय। देखी नहीं त्रिया तिह ठांय ॥
मन माही अति चिंता भई। मंदिर थी राणी कित गई ॥१३३६॥
मात पिता सू पूछी बात। मात कह्या उससे बिरतांत ।

पवनंजय का अंजना के निष्कासन के समाचारों से दुखित होना

तिण कारण घरते दी काढि। उंण दूषण किया था बाढि ॥१३३७॥
बोले पवन तब वचन रिसाइ। तुम मुझ देते लेख पठाइ ॥
तब तुम देते वाहिर निकाज। वा बिन प्राण जांहि इह बार ॥१३३८॥
वाकी मोहि बतावो सार। अंजनी पठई किसके द्वार ॥
वा हम भेजी पिता के गेह। तुम उसकी सुधि जाकर लेहि ॥१३३९॥
प्रहसित मित्र लिया तब साथ। दंतीपुर तहा महिंद्रनाथ ॥

पवनंजय का ससुराल जाना

पवनकुमार सुसर पै गया। उन सनमान बहुत विध किया ॥१३४०॥
अजनी तणें महल मे गया। देखी नही सोच तिण ठ्या ॥
कन्या एक देखी तिण ठाव। पूछै बात पवनजय राव ॥१३४१॥
उन सब कही सुसर की बात। काढी सुता पिता अर मात ॥
असी सुंणत खाई पछाड। बडी बार तन भई सवार ॥१३४२॥
महेन्द्रसेन सौं तब कही प्राणि। तुम क्यो दई अजना जाणि ॥
महेन्द्रसेन बोलै समझाइ। वाकु सासु ओलंभा लाइ ॥१३४३॥
सो हम पै क्यूं राखी जात। ओलभा तें सुकुल लजाइ ॥
पवन तिलक घरि घरि सुध लेइ। कोई निश्चै खबरि न देइ ॥१३४४॥
प्रहसित सो पवनजय कहै। तुम फिर जांहि खबर वे लहै ॥
प्रहलाद केतुमती पै जाइ। ए बारता कहो समझाय ॥१३४५॥
जो मैं अंजनी पाऊ कही। तो मुझ प्राण रहैंगे सही ॥
जो वह मेरे चढै न हाथ। तो मैं भी प्राण तजूं उस साथ ॥१३४६॥

प्रहसित मित्र बहु विनती करै । तुमनै छोडि जाउ किण परै ॥

अंजना की तलाश

भरतक्षेत्र ढूढूं सब देश । अजनी पावै कोई नरेस ॥१३४७॥
पवनजय बिदा मित्र ने दई । हस्ति परि चढि मोषण लई ॥
वन परवत देखी बहु ठौर । रुदन करै पीछै कर सौर ॥१३४८॥
पघडी पटकी करै पुकार । कपडे तनके फाडे डार ॥
इस वन मे वह कोमल देह । वन भय देखि भई मर षेह ॥१३४९॥
कै वह दुष्ट जिनावर गही । कै विद्याधर ले गया सही ॥
कै उन दीक्षा लीनी जाइ । अन्न पाणी बिन मुरझाय ॥१३५०॥
मै भी मरू याहि वन बीचि । ऐसे दुखतै आछी मीच ॥
हस्ती सेनी भरा कुमार । तू फिर जाह प्रहलाद कै द्वार ॥१३५१॥
मख प्यास तू दुखिया होइ । मेरा दुख जाणै नही कोई ॥

प्रहलादराय को पवनजय का संदेश

प्रहलादराय सो इम जाय कहो । पवनकुमार अगनि म दह्यो ॥१३५२॥
हस्ती देखि रुदन अति करै । आसि पासि कुवर के फिरै ॥
प्रहसित गया जहा प्रहलाद । पवनजय वचन के मुख आदि ॥१३५३॥
वह अजनी बिन तजै पराण । मैं तुम खबर करी छे आन ॥
राजा सुणनै खाई पछार । रोवै पीटै सब परिवार ॥१३५४॥
केतुमती आई सुणि सोर । प्रहसित बाता कही बहोर ॥
केतुमती रुस करी अनंत । तू क्यू आया छोडि तुरत ॥१३५५॥
केस खसोटै कूटै हिया । सब ररियण दुख अधिका किया ॥
तिनका दुख वरण्या नही जाय । असे सकल लोग बिललाइ ॥१३५६॥
सीलवती कु दिया कलक । इन क्यो व्यापी अंसी सक ॥

अंजना की तलाश

देश देश के षेचर आइ । प्रहलाद ने बात कही समझाय ॥१३५७॥
पवनजय अंजनी ढूढे जाय । उनको तुम पै ल्याऊं राइ ॥
अर जो आई पहुचे नही । पत्री लिखी प्रति सुरज जही ॥१३५८॥
भेज्या दूत प्रतिसूरज पास । उनसौं बात कही परकास ॥
पवन अ जनी के कारणै । आपणपै दुख कीनें घणे ॥१३५९॥

मात पिता विभव घर त्याग । ढू ढण कारण गया है भाग ॥
पवनजय को तुम ढूंढो जाय । अैसा कहै प्रहलाद जु राय ॥१३६०॥

प्रतिसूरज अ जनी सों कही । पवनजय की कुछ सुध नहीं ॥

अ जना की चिन्ता

अैसे सुने अ जनी बैन । चिता व्यापी भयो कुचैन ॥१३६१॥
अब लौ थी उसकी मुझ आसि । ऊनौं लीया अब वनवास ॥
अब हू तजू आपने पाण । अैसी मोहि बणी है आण ॥१३६२॥

वसतमाला सूरिज पै गई । सकल वात तासू वीनई ॥
तुमारी भाणजी व्याकुल होइ । तुम वा धीरज देवो कोइ ॥१३६३॥

प्रति सूरज अ जनी सौ कहै । तू काहे को चिंता गहै ॥
बैठि विमाण प्रथी सव देखि । पवन मिलाउ तोहि विसेषि ॥१३६४॥

सज्या विमाण चल्या आकास । देखे बहुपुर पट्टण वास ॥
प्रह्लाद तणे विद्याधर घणे । विमाण आरूढ भले सब वणे ॥१३६५॥
चले बहुत विद्याधर भूप । प्रतिसूरज पहुच्या रवि रूप ॥
देखै सकल पवन का खोज । बहुत विनय करै सब सौंज ॥१३६६॥

देख्या हस्ती वन के मांझि । पहिचान्या सब ही जन ताहि ॥
हस्ती ने देखी बहु भीर । वनमे कोई न आवै तीर ॥१३६७॥

पट्टा चु खै अधिक मयमंत । परिदक्षणा देवै बहुभाति ॥
प्रभु रक्षा करै गयद । चलै न विद्याधर का बद ॥१३६८॥
कागद की हथणी दिखलाइ । हाथी बांधि लियो तिन ठांय ॥
पवन बैठा कर संन्यास । गही मौन जीव तजि आस ॥१३६९॥

पवनजय की प्राप्ति

प्रहलाद देखि अति चिंता करै । मति यह रूप दिगंबर धरै ॥
माथा चु व्या पुत्र का जाय । बहुत प्रकार करी समझाय ॥१३७०॥
इह दीक्षा की नाही बार । अब तुम सुख भुगतो ससार ॥
आगे जब सपति ह्वै भलौं । तब दीक्ष्या लीजो मन रली ॥१३७१॥

मौर माहि इन सैन इम कही । त्रिया वियोग संन्यास मैं गही ॥
जब अ जनी मैं देखु नैन । तब मैं बोलू मुख सो बैन ॥१३७२॥

अन्न पान मैं तब ही खाउ । मैं अब धरघा मरण का भाव ॥
तब रोवै विद्याधर घणे । राक्षस वानर बसी जणे ॥१३७३॥

प्रति सूरज बोलै हंसि बात । हू बुलाऊ पवनंजय इक भांति ।।
तब सब बोल बेग बुलाय । तीन लोक मे होइ जस नाव ।।१३७४।।

प्रति सूरज पवन ढिग जाय । प्रथम भेद भाष्यो समझाय ।।
और सब बात गुफा की कही । पुत्र जनम सुरण रहस्या सही ।।१३७५।।

मु नि केवली गया था जान । वनमे नारि देखी विललात ।।
दया निमित्त मैं तहा आइया । भारणजी कु विमारण परि लिया ।।१३७६।।

अंसी सुणि मन आनंद भया । सब ही का समा मिट गया ।।
बहुरि कथा बालक की कही । रूप लक्षरण वा सम कोई नही ।।१३७७।।

रवि नै देखि बालक उछल्या । तिहा ते आइ परवत परि पड्या ।।
बहुत दु ख चित चिंता भई । हमारी सेन्या सगली ढई ।।१३७८।।
बालक की सुणि रोवै पौन । हाई हाइ करै सब हौन ।।
प्रति सूरज तब बोल्या राव । बालक बचा लगा नही घाव ।।१३७९।।
सिला फूटि थई चकचूर । पुण्यवंत कै लगी न मूर ।।
अ गूठा चूषै खिलकै खरा । पुन्यवंत बालक तिहा परा ।।१३८०।।
लिया गोद अ जनी कू दिया । हनू रुह मे आश्रम लिया ।।
सेना सहित हनूंरुह गये । सब राजन को भोजन दिये ।।१३८१।।

अंजना पवनंजय मिलन

मास दोय को सकल नरेस । बिदा मागि पहु चे निज देस ।।
पवनंजय अ जनी सुख कै भाव । पुत्र तरणा धरचा हणुमंत नाम ।।१३८२।।

कामदेव हे सब तै बली निसकी कथा जगत मे चली ।।
हणु मान का सुणै चरित्र । धन सपति बहु लहै पवित्र ।।१३८३।।

सुणि पुराग जे निश्चय धरै । काटि करम भव सायर तिरै ।।
रवि प्रकास नै भये अ धेर । पावै मोक्ष नासै भव फेर ।।१३८४।।

जाय सुगति मे निरभय ठौर । आवागमन न होय वहोर ।।
दरसन ग्यान तब लहै अनंत । बलबीर्य का नावै अन्त ।।१३८५।।

दूहा

चरित्र सुणै हनुमान का, धरै धरम दिढ चित्त ।।
निश्चय पावै परमपद, होइ मुकति की थित्ति ।।१३८६।।

इति श्री पद्मपुराणे पवनंजय अंजनी मिलाप विधानकं ।।

चौपई

१८ वां विधानक

वरुण द्वारा रावण से युद्ध

वरण सुणी पवनंजय गृह त्याग । छोडि कुटुंब वन मैं गये भागि ।।
अब मैं भुगतौं निरभय राज । रावण सौं क्या अटका काज ।।१३८७।।

रावण का कछु भय नही धरू । अब मैं पकडि बंदि मे करू ।।
रावण सुणी वरण की बात । महाकोप उपज्या सब गात ।।१३८८।।

देश देश को दूत पठाइ । सकल भूपति लिया बुला बुलाइ ।।
दोइ सहस्र अक्षोहिणी दल जुडया । वाजंत्र वाजैं मारू घुरया ।।१३८९।।

वजैं दमामा अर सहनाहि । मेघपुरी को घन घेरी जाई ।।

भेजा दूत हनूरुह देस । पवनंजय को दिया सदेस ।।१३९०।।

पवनंजय रावण की मागि । चल्या देखि वेग्य। फरमान ।।

हनुमान द्वारा युद्ध मे जाने की इच्छा

तब हणुमत कहै इरण भाति । मौकू आग्या दोजे तात ।।१३९१।।

मेरा तुम देख्यो पराक्रम । होइ सहाइ तुम्हारा धर्म ।।
पुत्र वयरण सुणि हस्या पवन । पुत्रै कीया तहां गवन ।।१३९२।।

सेना बहुत लई तिन साथ । त्रिकुटाचल देखि छिप्यो दिननाथ ।।
तिहा उतरि कै आश्रम लिया । भया प्रभात पयाणा किया ।।१३९३।।

रावण पास गया हणुवत । देख्या ताहि बहुत हर्षवंत ।।
बहुत प्रति थी बोलै भूप । वाका देख्या अधिक स्वरूप ।।१३९४।।

वाकी कथा कहैं सब लोक । पर्वत परि पडया माता भया सोक ।।
पुंन्यवंत कै लगी न चोट । परवत सिला भई सब षोटि ।।१३९५।।

सिला फोडि टूकडे करे । हणौंमान जीवत ऊबरे ।।
बहुत सिरावै रावण राय । पवनंजय भली करी बहु भाय ।।१३९६।।
अंसा बली भेजा मुझ पास । पूरैगा मो मन की आस ।।
सेना देखी नाना भांति । केई तरह की उनकी जात ।।१३९७।।

रतनदीप घेरया चिहुवोर । वरण राय आया चढि भोर ।।
सकल पुत्र आए चढि संग । मारू सुणि कातर चित भग ।।१३९८।।
सूरवीर मन करै आनंद । दुहु धां सुभट करै चद वंद ।।
राक्षसवंसी दिये ग्रहराइ । वानर वंसी बोले राइ ।।१३९९।।

भाज्या रण तै लागै लाज । अब फिरि करो भूप के काज ।।
सिमट लोग फुन सनमुख भए । इद्रजीत मेघनाद दोऊ गए ।।१४००।।
उतने कुमर इतते नृप घने । वरण पुत्र इनो ने हने ।।
मार मार दोऊ धा होइ । भूझे सुभट हटै नहि कोय ।।१४०१।।
रावण आप कटक मे धस्या । बीस भुजा दस सीरनी कस्या ।।
स्यंह तणे रथ बैठ्या भूप । तब हणुवत धाया बलरूप ।।१४०२।।
बाधे वरुण के बहु पूत । वरण राय तब आय पहुत ।।
मनमैं सोचा रावण राय । जे बालक ने मारै ठाय ।।१४०३।।
ग्रैसे समझ आया सामही । झूझै लोग न हारि मानई ।।
वरण एकै विद्याने संभारि । रावण परि छोडि तिण बार ।।१४०४।।

कुंभकरण द्वारा विजय के पश्चात् लूटपाट करना

रावण ऊपरि विद्या वही, हनुमान वह विद्या गही ।।
वानर वसी ने बाधिया कुमार' घेरघा वरण लोह की वाडि ।।१४०५।।
आण्या बाधि रावण कै पास । कुंभकरणस्युं बोल्या हास ।।
लूटो नगरि करो तुम बदि । जिहा तिहा जाई मचाई दुंद ।।१४०६।।
लूटो जिको तिकोही लेहु । कुंभकरण इम आग्या देहु ।।
लुटघा नगर हाट बाजार । राजा का लुटघा भंडार ।।१४०७।।
बहुत नारि नर लीन्हे बाधि । सीलवती मरै बिन अपराध ।।
केई जीभ खड करि मरै । सीलभग तै पतिव्रता डरै ।।१४०८।।
केई कुंभकरण का रूप । राग प्रमाण सु देखै भूप ।।
धन्नि भाग जे याकी नारि । यह उनकै ऐसो भरतार ।।१४०९।।
केई पुत्र पुत्र बिलल्लाइ । केई मात पिता कोई भाइ ।।
जिणकै कुटव विछोहा भया । परिबस पडी बहुत दुख सहा ।।१४१०।।
केई बाधि लई सगि नारि । केई ऊटा परि असवार ।।
केई लई गाडघा पै डारि । बहुत बांधि घेरी तिण बारि ।।१४११।।
ग्रैसी विधि रावण वै आनि । कुंभकरण आया बलिवान ।।
सगली बधि तब्र करै पुकार । रावण सुणि करि दया विचारि ।।१४१२।।

रावण द्वारा लूट की निन्दा करना

ए तुम क्यो बाधी अस्तरी । कुंभकर्ण तै कीनी बुरी ।।
अर्थ दर्व दे छोडी बदि । अपणे घर तुम करो आनंद ।।१४१३।।

जाकी वस्तु लूटि मे गई । ताकी ताहि मंगाय करि दई ।।
रावण में सब दई असीस । तेरो भलो करो जगदीस ।।१४१४।।

रावण फिरि लंका मे गया । सुदरसण सहज ही लिया ।।
जै जै सबद करै ससार । वरण किये बहुतैं नमस्कार ।।१४१५।।

मैं तो चूक करो थी धणी । कछुवन आवै कहतां बणी ।।
मैं तो अधिक मूढता करी । तुम्हारी आग्या चित्त न धरी ।।१४१६।।

वरण को पुनः राज देना

वरुण भूप तब दीना छोडि । बधण सकल दिये नृप तोडि ।।
वरण फेर करि पायो राज । रतनदीप का सारघा काज ।।१४१७।।

चन्द्रनखा की महाप्रभा पुत्री । हनूमान ब्याही सुभ घरी ।।

वानर वंशी राजा वर्णन

अपना पुहपश्री नगर शुभ देस । हनुमान कु दिया नरेस ।।१४१८।।

किपपुर का राज नल नील । श्रीमालणी रांणी सुभसील ।।
श्रीजयता ताकी सुता । हनुमान कु दीनी सुखलता ।।१४१९।।

विजयारध गिर किन्नर गीत । कन्या वाकी ब्याही सुभ रीत ।।
किषंधपुर रहै सुग्रीव । सुतारा पतनी धरम की नीव ।।१४२०।।

भावमडला पुत्री ता गेह । रूपलक्षण करि सोभै देह ।।
कंन्या बडी सयानी भई । राजा के मन चिंता थई ।।१४२१।।

कहै स्वयंबर छाउ आजि । देस देस के भूपति काज ।।
जा गलु कन्या डालै माल । कन्या सो व्याहै भूपाल ।।१४२२।।

राजा मता विचारै भला । देस देम को चितेरा चला ।।
पूतली लिखी सबै की जाइ । जहां लग थे प्रथ्वीपति राय ।।१४२३।।

जहा तहा के राजकुमार । चितेरै लिखी सुरति सवार ।।
हनूमान की लिखी फूतली । समझि धाइ प्रति सौंपी भली ।।१४२४।।

देखी भाव सकल मडला । हनुमान उपरि चित चल्या ।।
राजा याकी मुरति लिखाय । हनुमान पै दूत पठाय ।।१४२५।।

गया दूत जेठै हणुमंत । रूपलक्षण का नाही अंत ।।
दीया पटले वाकै हाथ । किया पयाना दूत के साथ ।।१४२६।।

तिहां नारि होवै मयमंत । जहां जाय निकसै हणुमंत ।।
भामंडला नृप दई पठाय । भोग भूमि बप करैं उछाह ।।१४२७।।

अंजनीपुत्र जाण्या इक ओर । छत्रपति नाम विराजै ठौर ।।
निरभय राज करै तिहा भूप । दुष चिंता सब डारी कूप ।।१४२८।।

दूहा

प्रथमकाड श्रेणिक सुण्यों, विद्याधर को बस।।
मिथ्या वेदन मिट गई, सगली ही मन सस ।।१४२९।।

इति श्री पद्मपुराणे प्रथम कांड रावण राज विधानक ।।

१९ वां विधानक

सोरठा

बे कर जौडि नरेस, श्रेणिक फिर परसन करै ।।
रावण वंम परमेस, मैं बहु बिध करकै सुण्या ।।१४३०।।

चौपई

जिन कोई बकै त्रिदोष का धणी । असी मैं उनके मुख सुणी ।।
केवल वयण कह्यो समझाय । सब ससय तिहा मिट जाय ।।१४३१।।
किम उपजै चौबीस जिणंद । द्वादश चक्रवर्त्त गुणवृन्द ।।
नव नारायण वलिभद्र भए । प्रति नारायण कैसे थए ।।१४३२।।
कवण पुण्य पूरवभव किया । कवण स्वर्ग ते चय आइया ।।
किम गुरु पासै दिक्ष्या लई । कवण भूमि ते इह थित भई ।।१४३३।।

अडिल्ल

वाणी ग्यान गभीर तबै जिणवर कही ।
गौतम करै बखान सुणै श्रेणिक उर गही ।।
समकित सो धरि प्रीत सुणै मन ल्याइकै ।
सकल बस का भेद कह्या समझाइकै ।।१४३४।।

जबुद्वीप भरतषड कोसाबी नगरी
सुमुष नृपति करै राज दया चित आगरी ।।
सुखी वसै सब लोग दुखी कोई नही,
आई रितु बसन्त सब न क्रीडा चही ।।१४३५।।

वीरक सेठ एवं वनमाला वर्णन

वीरकसेठ तिहा रहे वनमाला असतरी ।
रूपवत गुणचतुर सलावण अतिपरी ।।
सकल प्रजा नृप साथ सुवन क्रीडा करी ।
देख त्रिया नृप नैन सुदिस चिंता धरी ।।१४३६।।

वनमाला पर राजा का आसक्त होना

वनमाला चित चल्यो देखि भूपाल को ।
राज रिद्धि सब देखि भयौ सुख वाल कौ ।।
मो सी नारि सरूप राय वर जोइए ।
कहा वरिणक वर जोवन थिरता खोइये ।।१४३७।।

राजा सोच अधिक मन मे करै ।
नरपति करै अनीत सुमर नरकां पडै ।।
हू नृपति धरमिष्ट पाप कैसे करू ।
व्याप्यो अधिको काम सु धीरज किम धरौं ।।१४३८।।

राजा की व्याकुलता

गही राय तब मौन भेद नहि पाइये ।
करै वैद्य उपचार सु औषध ल्याइये ।।
कहै दोष पित्त वाय का ग्रन्थ विचारि कै ।
उसको रहै न विकार पचि हार कै ।।१४३९।।

पंडित जोतिग कहैं ग्रह चाल को ।
नवग्रह खोटे व्यापै या भूपाल को ।।
मुख बोलैं नही बोल सुग्रह खोटे लगै ।।
बहुत बढी गभीर जुडे प्रीतम सगे ।।१४४०।।

दूहा

सुमति नाम इक मत्रवी, आयो भूपति पास ।
लोग उठाय दिये सबै, पूछे करि अरदास ।।१४४१।।

सेवक स्यो मनकी कहो, किरण कारण गही मौन ।
सांच बात मुख उचरो, तुम मन संसय कौन ।।१४४२।।

राजा मत्री सों कहै, साभलि सुमति सुजारण ।।
वनमाला ने देख करि, चये जात हैं प्राण ।।१४४३।।

मत्री विनवै राय सो तुम नृप अछो सुग्यांन ।।
परनारी के सग थी, होइ धरम की हारिण ।।१४४४।।

बोलै नृप अकुलाय करि, सुरण हो मत्री बात ।।
ग्यांन भेद कब लग भणों, बा विनमो जीव जात ।।१४४५।।

मंत्री सोच विचार कर, दूती लई बुलाइ ।।
भेजी वनमाला कनें, लीनी तुरत मगाय ।।१४४६।।

दोन्युं की इच्छा फली, कियो जुगति सो भोग ।।
जैसे दुखिया मानवी, मूलै रुख वियोग ।।१४४७।।
बीती निशि सुरज उदय, दपति कर स्नान ।।
सुमरै श्री भगवंत कौं, मुनिवर पहुता ग्रान ।।१४४८।।
उठि द्वाराप्रेषण करचो, मुनि को दियो ग्रहार ।।
दपति बहु विनती करी, जिम थाये निस्तार ।।१४४६।।
जाप करत तस भूमिपै, पडी दामनी ग्राय ।।
वे दपति दोउ मुवा, विजयार्द्ध उपजा जाय ।।१४५०।।
उत्तर श्रेणी हरिपुर नगर, तहा पवन गिर भूप ।।
मृगावती राणी उदर, जनम्या सुषम स्वरूप ।।१४५१।।

अडिल्ल

पूर्व जन्म

हरि विभ्रम घरा जोतिगी विप्र न ।
दिन दिन बढै कुमार सुराजा केतु ने ।।
रूपवत सोभत सुख परिवार मे ।
दान सुपात्र सहाय भयो ससार मे ।।१४५२।।
मेघपुरी को नरपति ताकी ग्रम्तरी ।
वनमाला का जीव गर्भ तसु ग्रवतरी ।।
मनोरमा घारचो नाम जोतिगी विप्र ने ।
रूप लक्षण सामोद्रक काहै तसु तनै ।।१४५३।
जोवनवती देखि हरि विभ्रम को दई ।
लगन घडी सुभ साधि विप्र चौरी छई ।।
रहस रली सो व्याह रह रग प्रीत सो ।
फूलन की कर सेज रमै सुख रीत सौं ।।१४५४।।

दूहा

वीरक सेठ को तपस्या

वीरक सेठ उठि हाठ ते, ग्रायो गेह मझारि ।।
चिंता चित उपजी घणी, तिहा न पाई नारि ।।१४५५।।
घर की सुधि सब बीसरी, ढूंढै घर घर नारि ।।
कही न पाई ग्रस्तरी, जती भयो तिण वार ।।१४५६।।
करी तपस्या जुगति स्यो, लही देवगति जाय ।।
उपनी ग्रवधि इक भवतणी, रुद्रभाव सौं ग्राय ।।१४५७।।

दपति पिछला बैर सु, लो चाल्या आकास ।।
तु सुमुख बनमाला इहै, मैं वीर कहुं तो पास ।।१४५८।।

हू पूर्वं थो बांणियो, तू पृथ्वीपति भूप ।।
अब जो तू कछु बल करैं, हूं लडूं जुध के रूप ।।१४५९।।

चौपई

देव होकर पूर्व भव की अपनी स्त्री को दुख देना

दपति को दु.ख दीने घणे । सुर का क्रोध कहा लग गिणें ।।
कबहु गहिहि गयण उछालि । धरती पडता झेलै ख्याल ।।१४६०।।

कहै समुद्र में देहु बुडाइ । कैंले घरू सिला तलि जाइ ।।
कं या मीड करू चकचूर । नखसिख तोडि मिलाऊ धूलि ।।१४६१।।

दूहा

बहुत त्रास उनको दिये, उपनु जाती ग्यांन ।।
पूरब मे पाली दया, तो सुर लह्यो विमान ।।१४६२।।

चौपई

दया के भाव

जो अब इनकी हत्या करूं । नीतम पाप आप घट भरूं ।।
जै मानुष करै कोई पाप । जप तप करि निज हरै सताप ।।१४६३।।

मेरा दोष टलै अणरीत । राखुं जीव दया सुं प्रीत ।।
छोडे दंपत्ति आणी दया । नारि पुरुष मन आनंद भया ।।१४६४।।

दूहा

चंपापुर दक्षिण दिसा, छोडे दंपति जाय ।।
हरितिणपुर को नृप थयो, हुवो प्रताप अधिकाय ।।१४६५।।

चौपई

राज करत बीतै बहू वर्ष । जन्म्या मानी महागिर हर्ष ।।
महा प्रताप प्रगट्या ससार । हरवंसी जनमिया कुमार ।।१४६६।।

हिमगिर बसु गिर पीछे भए । महीधर आदि पुत्र बहु थए ।।
केई स्वर्ग देवगति पाइ । केइक मुक्ति विराज्या जाइ ।।१४६७।।

बहुतै नया बसाया देस । हरिबसी बहुं भए नरेस ।।
सीतलनाथ का दरसन किया । हरिराजा वा समए भया ।।१४६८।।

दूहा

सीतल नाथ जिनेन्द्र ते, हरिबंसी हुए अनंत ।।
नाम कहा लग बरणए, कहत न आवै अ त ।।१४६६।।

चौपई

मुनिसुव्रतनाथ का जन्म

कुसागर नगर सुमित्र नरिन्द्र । पौमा देवी मन आनद ।।
सधन ग्रह नगरी मे बसै । दुखी दलिदी कोई न नसै ।।१४७०।।

पदमादेवी पिछली राति । सुपने देखे नाना भाति ।।
स्वेत गयद वृषभ अरुस्यघ । लक्ष्मी माला पूनमचद ।।१४७१।।

सूरज उदै मच्छ जल तिर । कल सरोवर निरमल भरै ।।
सिंघासण रतनन की भूमि । देखी अगनि बलै निरधूम ।।१४७२।।

कु भ जुगल देख्या जल भर्या । देव विमान अनूपम धरया ।।
देख्यो धरणेन्द्र देवता नाग । थयो प्रभात उठी जब जाग ।।१४७३।।

सोलह सपणा देख्या इण भाति । सुमित्र भूप सो कही सब बात ।।
सुणे सकल सुपना के बैन । विगसत बदन भयो उर चैन ।।१४७४।।

होय पुत्र त्रिभुवन का धणी । हरिबंसी कुल वाणी वणी ।।
तीन लोक के सुरपति आइ । श्री जिन के सेवेगे पाय ।।१४७५।।

नरपति षगपति दानव देव । ए सब आनि करेंगे सेव ।।
पचग्यान का त्रिभुवन पति । धर्म प्रकासि पंचमी गती ।।१४७६।।

सु णि पिय बयण हीये सुख भया । अचल गाठि बाधि कै लिया ।।
श्रावण बदि दोइज सुभ घडी । प्रभुजी आय गर्भ थित करी ।।१४७७।।

आसण कंप्या सुरपति इन्द्र । अवधि विचार किया आनंद ।।
श्री जिन देव तणो अवतार । उतर सिंहासण कियो नमस्कार ।।१४७८।।

भृकुटी जक्ष तब लिये बुलाइ । नगर कुसागर वेगा जाइ ।।
छपनकुमारी देवि पठाइ । गरभ सोध तणौ प्रभाइ ।।१४७९।।

रतनवृष्टि फूलो की वृष्टि । जै जै करत भये अघ नष्ट ।।
देवी सब मिल सेवा करैं । रात दिवस टारी नहिं टरैं ।।१४८०।।

जैसे रवि बादल की छाह । इम गरभ माहि दर्पै जिणनाह ।।
स्वाति बूंद पर दमके पत्र । श्री भगवत महा पवित्र ।।१४८१।।

बैसाख बदि दसमी सुभवार । श्रवण नक्षत्र भयो अवतार ।।
सुरपति संग अपछरा घणी । ऐरापति साज्या विधबणी ।।१४८२।।

चले देवता जै जै करै । इन्द्राणी जिरावर नै हरै ।।
माया का बालक उतं राखि । लीया उचाइ दीनता भाखि ।।१४८३।।
पति की गोद दिये जिनराय । दरसरा देखि महा सुख पाय ।।
बाजे बाजै नाचै देव । दसौं दिसापति ग्राए सेव ।।१४८४।।
मेरु सुदरसरा पांडुक सिला । तिहा महोच्छव कीना भला ।।
करै उबटणा मंगल गीत । षीराचारि करी बहु प्रीत ।।१४८५।।
सहस अठोत्तर इन्द्र ने भरे । और देवता बहु कर घरे ।।
श्री जिरा ऊपर डारै आरिग । काजल नयन सहित मुख पान ।।१४८६।।
बींधे कर्ण वज्र की सुई । कुंडल तरणी जीति अति हुई ।।
आभूषरण पहराय अनूप । सब सिंगारै सोभै रूप ।।१४८७।।
अष्ट दरब सू पूजा करी । करै आरती विनती करी ।।
श्री जिनवर माता पैं आरिग । तिहा बाजै आरणंद नीसारण ।।१४८८।।
इन्द्र धरणेन्द्र सुरा लै गये । वरख्या रतन पुष्प वरणये ।।
तीस हजार वर्ष की आय । बीस धनुष की ऊंची काय ।।१४८६।।
कहैं जोतिगी लगन विचार । मुनिसुव्रत त्रिभुवन आधार ।।

मुनिसुव्रतनाथ का जीवन

परियरण मांहि बधावा भया । जनम समय बहु धन खरचीया ।।१४६०।।
खेलै सग देव के बाल । क्रीडा करैं तब रूप विशाल ।।
सात सहस्र अरु वरष पचास । ता पाछे मन भया उल्हास ।।१४६१।।
जसोमती व्याही वर नारि । रूपवत शशि की उरणहारि ।।
भोग करत दिन बीते घरणे । भयो गरभ जसोमति तरणे ।।१४६२।।
दक्ष पुत्र जन्म्या शुभ घडी । परियरण माहि बधाई करी ।।
पद्रह सहस्र वरष करि राज । मृग मृगनी देखे बन माझ ।।१४६३।।
बिजली पडि करि दोन्यूं मुवा । ताहि देखि मन विस्मय हुआ ।।
मन मे धरचा धरम सो काज । दक्ष पुत्र को दीनो राज ।।१४६४।।
सुपरणा सरसी जारिग विभूति । सुरलौकातिक आरिग पहूत ।।
धन्य धन देव सबद सब करैं । प्रभु आगैं शिव सुरका धरैं ।।१४६५।।
चढे पालकी प्रभु बन जाइ । सिध नाम ले लोच कराइ ।।
भए दिगंबर आतम ध्यान । सुरपति किया चारित्र कल्यांरण ।।१४६६।।
वैसाख बदी दसमी दिढ चित्त । नो वरष रहिया छद्मस्त ।।
वैसाख वदी नवमी शुभ वार । टारे करम घातिया चार ।।१४६७।।

प्रकृति तरेसठ टूटी जान । उपज्या प्रभु कूं केवल ज्ञान ।।
आए चतुरनिकाय के देव । पूजा करी बहुत विध देव ।।१४६८।।

जोजन तीन रच्या समोसर्ण । भव्यजीव का ससय हर्ण ।।
कंचन कोट रतन के तीन । सिंहासन भामंडल लीन ।।१४९९।।

चारौं वन के वृक्ष अति बने । वृक्ष अशोक शोक को हणैं ।।
वर्णी षातिका अति गंभीर । तिस में दीसै निरमल नीर ।।१५००।।

मानस्थभ मान कू हरै । देखत भी मन निर्मल करै ।।
अठारह गणधर बैठे पासि । च्यारो ग्यान कहै वे भास ।।१५०१।।

वाणी वेद सुणं सव कोय । बारह सभा का संसय खोय ।।
गणधर ब्योरा कहैं बखाण । भव्य जीव साभलै वषांण ।।१५०२।।

दानपती व्हां नृप वाहत्त । महसराय लीयो चारित्र ।।
बैसाख बदि चौदसि निर्वाण । समेदगिरि गए मुक्ति भगवान ।।१५०३।।

जोतै जोति जाय करि मिली । पूजा इन्द्र करै मन रली ।।
पालै प्रजा दक्ष प्रभु भूप । महाबली अति धर्म स्वरूप ।।१५०४।।

एलवृद्धन कू दीया राज । आपण किया मुक्ति का साज ।।
श्रीवर्द्धन जयवता भया । ताकै पुत्र कुनम वलि थया ।।१५०५।।

महारथ पुल वासकेत बलबड । बहु भूपन ते लीया दड ।।
वासकेत कै विमलावती नारि । रूप सील सयम की पार ।।१५०६।।

जनक भूप ताकै उर भया । दान मान सबकौ बहु दिया ।।
दया दान सयम नित करै । पुण्या प्रताप तै दुरजन डरै ।।१५०७।।

दूहा

हरिवसी राजा

हरिवंसी पुनिवत कुल, भूपति भए अनेक ।।
काटि करम सिवपुर गए, पाच नाम की टेक ।।१५०८।।

चौपई

कोई पंचम गति को गए । कैई स्वर्ग देवता भए ।।
हरिबंसी बसाए बहु गाम । इनका कुल तीस की ठाम ।।१५०९।।
इक्ष्वाकवस आदीश्वर किया । जिनकी कथा सुणौं धरि हिया ।।
उत्तम कुल सबही ते आदि । तिनकी चालै कथा अनादि ।।१५१०।।

दूहा

आदिनाथ मुनिसुव्रत लौं, नरपति भए अनत ।।
नाम कहा लग वरणउ, कहत न आवै अत ।।१५११।।

चौपई

इणही बस बहु भूपति भए । काटि करम शिव थानक गये ।।
केई पहुता स्वर्ग विवाण । केई भया पृथ्वीपति प्राणि ।।१५१२।।

केई पहुच्या नरक मझारि । केई पहुच्या स्वर्ग विमांण ।।
जैसी करणी तैसी गति । धर्मध्यान मे राखै मति ।।१५१३।।

सकति समान दान अरु वृत्त । देवशास्त्र गुरु राखै हित्त ।।
च्यारिउ दान भाव सो देइ । सो ऊची गति का सुख लेइ ।।१५१४।।

इष्वकावंसी राजा बज्रबाहु वर्णन

इष्वाक वंसी विजय नरेस । मुगतै नगर अयोध्या देस ।।
हेमचूल राणी पटधणी । मानूं कनक कामनी बणी ।।१५१५।।
सुन्दरमन ता पुत्र जनमिया । कीर्तवती तसु व्याही त्रिया ।।
प्रथम पुत्र बज्रबाहु भया । दूजा पुरीन्द्र पराक्रमी थया ।।१५१६।।
दोन्यु कुमर विद्या बहु वढे । बल पौरस सूं बहुते बढ़े ।।
हथनापुर हसवाहण राय । चूडामणी राणी पटथाय ।।१५१७।।

मनोदया पुत्री ताके भयी । सो बज्रबाहु कुमर को दई ।।
लिख्या लगन साध्या सुभ द्यौस । व्याहण चाल्या नृप मन हौंस ।।१५१८।।
पुरो इसो पूछै नव वात । चलोकरण मुनिवर की जात ।।
नासा दृष्टि आतमध्यान । ताको सोमै च्यारूं ग्यान ।।१५१९।।
बसत सगि परवत परिजाय । बज्रबाहु हस्ति चढिराय ।।
मुनिवर एक तिहा तप करै । जैसे केस सुंदर नर धरै ।।१५२०।।
आतमभाव लगायो जोग । छाडे सकल जाति के भोग ।।
तन बाईस परीस्या सहै । अष्ट करम कु नित ही दहै ।।१५२१।।
तप की अधिक बिराज जोति । निग समान परिग्रह नहीं होत ।।
दोनूं कुमर सराहै आइ धनि साध जे ग्रैसे भाइ ।।१५२२।।

बज्रबाहु तिहां लाया ध्यान । देख्या मित्र उदयसुंदर नाम ।।
कहै किम चाहौ दिक्षा लिया । वैरागभाव मैं तै चित दिया ।।१५२३।।
कवर भणै तउ अचिरज कहा । मनुष्य ही पालै चारित्र महा ।।
उदय सुंदर बोलै तब मित्त । जै दिक्षा तुम आणी चित्त ।।१५२४।।
मैं भी सयम ल्यौं तुम साथ । मेरी अरज सुणौं प्रभु नाथ ।।
इतनी सुनत वचन सब डाली । मन वैराग्य भयो भूपाल ।।१५२५।।

तब उठि मित्र वीनती करी । हांसीक ना सांची चित्त धरी ।।
तुम तो चले व्याह के काज । कवरण समय दिक्ष्यां थी आज ।।१५२६।।
बोले कुमर सुपन समरिध । मात पिता कुरण भाई दध ।।
जैसी परफुलत है सांझ । अैसे सुख कू लवकं मांझ ।।१५२७।।
विणसत वाहि न लागै वार । अैसा है ससार असार ।।
धन्य धन्य तू मेरे मित्र । तै मोहि कही धर्म की रीत ।।१५२८।।
तुझ प्रसाद सिव मारग गहू । तेरा गुरण मैं कवि लग कहूं ।।
अैसी बात सुंणी परवार । बाल वृद्ध आए तिरण बार ।।१५२९।।
दादी माता सब मिल आइ । और कहै बहु जन समझाय ।।
तु बालक जोवन की बार । करो विवाह भोग ससार ।।१५३०।।
कुंवर भरणं ससारा थिति । जीवका कोई सगा न इत्त ।।
सोग विजोग रहट की घडी । कबही रीती कबही भरी ।।१५३१।।
सब साता तै पावै सुख । अशुभ करम उदय तै दुख ।।
सुख भुगतै जो सागर बंध । इक पलके दुख मैं सब दु द ।।१५३२।।
तातै हूं अब तप आचरू । धरम नाव भवसायर तिरू ।।
गुरणसागर मुरणिवर के पास । दिक्षा लई सुगति की आस ।।१५३३।।
दोई सहस अरु छ सै कुमार । भए दिगंवर केस उतारि ।।
मनोदया सामली यह बात । दिक्ष्या लई अर्जिका के पास ।।१५३४।।
विजयसेन सुरेन्द्र मनिभूप । बैठे सकल मोग के रूप ।।
वह बालक सुकुमाल सरीर । कैसे सहेगा परीस्या पीर ।।१५३५।।
हम तो राज भोग बहु किए । ऐसी कछुवन आरणी हिये ।।
जरा व्यापी देही जो जरी । कैसे होय तपस्या खरी ।।१५३६।।
जोवन समय सभाल्या नाहि । अब पिछताया होवै काहि ।।
समझावै सब मत्री आय । जो कछु सधं सो करि जाय ।।१५३७।।
सोई घडी सधै सब धर्म । वाही घडी कटै अष कर्म ।।
सकल राज रिध करि त्याग । विजय साह हुआ बैराग्य ।।१५३८।।
पुरिंदर प्रति सोप्पा निज राज । आपरण किया दिगबर साज ।।
विजयसेन संग राजा घने । भए जती मद आठो हरणे ।।१५३९।।
निर्धारणघोष घोष मुनिवर के पास । भये साध मन पूजी आस ।।
पुरीदर राजा हथ्वीपति अस्तरी । कीर्तिधर पुत्र भया सुभ घरी ।।१५४०।।

कीर्तिधर राजा वर्णन

कुसाल नग्र नरेन्द्र नृप रूप । ता घरि पुत्री अधिक अनूप ॥
सहदेव्या कन्या का नाम । कीर्तिधर सौं ब्याई चाव ॥१५४१॥
भूप पुरेन्द्र हुवा जब जती । माया लोभ न ताके रती ॥
क्षेमंकर पासैं दिक्षा लई । आतमध्यान मे सदा रहेइ ॥१५४२॥
कीर्त्तधर अधिक प्रतापी भया । पृथ्वीतणां राज सब लिया ॥
सकल भूप तसु मानै आण । या सम राय न को बल जान ॥१५४३॥
एक दिवस सूरज कौं केत । किया ग्रहण असुभ कै हैत ॥
सूरज छिप्या भया अधकार । उडगन जौति भई संसार ॥१५४४॥
राजा देखि चित चिंता करी । ग्रैसी आउ जरा सी धरी ॥
जैसे केतने रवि कूं ग्रह्या । व्यापत जरा पराक्रम ढया ॥१५४५॥
रवि तो छूटि जाय ततकाल । जरा चढै तब व्यापै काल ॥
मंत्रिया सौं इम कहै भूपाल । तुम चालियौ धरम की चाल ॥१५४६॥
प्रजा देस की कीज्यो सार । हम अब लैं संयम का भाल ॥
मत्री सवै कहे सीस नवाय । तुम बिन क्यो देस साध्या जाय ॥१५४७॥
तुम भुगतो पृथ्वी का राज । हम तुम आगे संवारां काज ॥
परजा लोग करे सब आय । हमारा कह्या सुणौं तुम राय ॥१५४८॥
तुमारे राज प्रजा सब सुखी । तुम आगन्या मे कोई न दुखी ॥
तुम जिन छोडघो राज आपणा । तुम तैं हम सुख पाया घणा ॥१५४९॥
करो राज भोग मन ल्याइ । संतति होइ दीक्षा ल्यो जाइ ॥
राजा इनका मान्या कह्या । राज भोग मे फिर रम रह्या ॥१५५०॥
परजाने बहु दीना दान । घर घर बाजै आनन्द निसान ॥
इक दिन जनम्या पुत्र उदार । तास सुकोसल नाम कुमार ॥१५५१॥
मंत्री करी एक हिकमती । पुत्र ने राखियो गुपती ॥
ब्राह्मण मने किये सब जाय । राजा पासि हुवो मति ल्याइ ॥१५५२॥
जब एक मास वीत कर गया । ब्राह्मण जबै आसीरवाद दिया ॥
दई दोब राजा कै हाथ । पुत्र जनम जाण्यां नरनाथ ॥१५५३॥

दूहा

हुआ सुकोमल तरणी फिराई । आय राय दीक्ष्या लई जाय ॥
तेरह विध चारित्र व्रत लिया । आतम ध्यान मुनीश्वर किया ॥१५५४॥

इति श्री पद्मपुराणे श्री मुनिसुव्रत वज्रबाहु कीर्तिधर महातम वर्णनं ॥

२० वां विधानक
चौपई

कीत्तिधर की तपस्या

कीर्त्तिधर मुनिवर इम तप धरै । मास उपास पारणा करै ।।
सहै परीस्या वीस अर दोइ । दयाभाव सगला पर होइ ।।१५५५।।
बहुत वरष ऐसे तप किया । नगर आहार निमित्त आइया ।।
द्वारापेषण करै न कोइ । राजा द्वारै ठाढा होइ ।।१५५६।।
झरोखे बैठी सहदेवी नारि । आवत देख्या मुनिवर द्वार ।।
देख माथ मन बहुत रिसाइ । बाहर काढ्या धका दिवाय ।।१५५७।।
ए मुनिवर हैं बहुत बुरे । राज भोग सुख देख्या जरै ।।
महा दुख मो लहिए राज । तिणनै कहै नरक का साज ।।१५५८।।
अपणा घर खोवै व्है जती । पुत्र कलित्र की चित न रती ।।
घर तजि भीख मागता फिरै । लाज काण बसत्तर परिहरै ।।१५५९।।
घणा विणा खोवै घरबार । देह जलाय करै जिम छार ।।
छोडै सब ससारी सुख । छहु रिता वे भुगतै दुख ।।१५६०।।
ग्रंमी कुबुद्धि इनामे होइ । बूडै आप और पर खोइ ।।
एकै मास तणा तजि पूत । छोडी सगली राज विभूति ।।१५६१।।
बालक की न दया चित धरी । ग्रंमी इणि सब कीनी बुरी ।।
अब जो याहि दरसै हि कुमार । तौ वाको भी ले जाहि गवार ।।१५६२।।
निज किंकर बोल इम कह्या । सजमी पुर मा देखो जिहा ।।
तिनको मारि मारि परहा करउ । इह उपदेस हिया मा धरउ ।।१५६३।।
मुनिवर फिर गया वन माहि । करै तपस्या वासुर[1] साझ ।।
मनमा कछु नही आर्गां आण । जोति स्वरूप सौ लाया ध्यान ।।१५६४।।
विप्र सन्यासी पाचौ भेष । तिण की अस्तुति करै विशेष ।।
ते रावै अजोध्या मे घणे । तिण पै कुमर कोक विध भणे ।।१५६५।।
खोटे वेद रात दिन पढै । जिनके सुण्या नरक थिति बढै ।।
ग्रंमी विष प्रगटयो मिथ्यात । जैन धरम की कीनी घात ।।१५६६।।
तब ते इहा मिथ्याती बसै । खोटे वेद कीये तिनौ इसे ।।
बसंतलता ये देख चरित्र । मदिर माहि रुदन बहु करत ।।१५६७।।

---

१. रात्रि दिन

राजकुमार के द्वारा वैराग्य

राजकु वर तब धाय सो कहैं । तेरे मन की चिंता रहै ॥
जो कोई तोंसु बोलै बुरा । ताकी रसना खंडु छुरा ॥१५६८॥

बसंतमाला इम कहै समझाय । तुमारा पिता भया मुनिराय ॥
वह आया था लेण आहार । माता तुमरी खाई मार ॥१५६९॥

वासो राज भोग बन किये । जिसकी दया न आयी हिये ॥
ब्रांण वसाए मिथ्यमती । पुर मैं काढि दिये सब जती ॥१५७०॥

तुझ को निकसण दे नही द्वार । बाधि राख्यो तु कारागार ॥
ता कारण मैं किया रुदन । इम साभल नृप मोड्यो वदन ॥१५७१॥
अर्द्ध रात्रि महला परिजाय । डोरी बाधि तलै उतराय ॥
तिहा मुनिवर बैठा था एक । दई प्रदक्षिणा आण विवेक ॥१५७२॥
नमस्कार करि बारंवार । बहुत प्रकार कीन्ही थुति सार ॥
जनम जरामृत डोलै जीव । चिरकाल की गाढी नीव ॥१५७३॥

च्यारौ गति मे डोलै हस । कबहि नीच कभी उत्तम बंस ॥
रोग सोग आरति मे फिरै । बिन समकित भव सायर पडै ॥१५७४॥
प्रभुजी मो पर कृपा करेइ । भव दधि तार मुकति पद देइ ॥
मंत्री मिले आय सब पासि । समझावैं विनती मुख भासि ॥१५७५॥

अब लग थे तुम बाल अचेत । अब जोवन तुम भए सचेत ॥
हम ससय टूटण की बार । तव तु म ल्यौ हो दीक्षा भार ॥१५७६॥
कुल माहि कौन छै कुमार । ताकौं राज सौंप हो सार ॥
पिता तुम्हारे जब दिक्षा लई । महीना तणे सुत कौं मु दई ॥१५७७॥
अब तो तुम भुगतो ये सुख । चित्रमाला पावैं है दु ख ॥
वाकै बालक नाही कोइ । ता की गति कहु कैसे होइ ॥१५७८॥

जब सपति होवै तुम गेह । तुम तब करो दिगबर देह ॥
बोले भूपति वचन बिचार । चित्रमाला कै गरभ का भार ॥१५७९॥

वाकै पुत्र होयगा बली । पूरैगा सब की मन रली ॥
वाको मैं दीया सब राज । जब वह जनमे तब सारो काज ॥१५८०॥
इतनी कहि तब वसन उतारि । किया लोच सिर केस उपारि ॥
ल्याया चिदानंद सों ध्यान । गुरु संगति पाया बहु ग्यांन ॥१५८१॥

कठोर तपस्या

सहदेवी ग्रारत मे मुई । देही छोडि सिंघणी भई ॥
दोन्यूं मुनीस्वर करत बिहार । भवि प्रमोद गये वन मझारि ।।१५८२।।
घणहर करि छायो ग्राकास । मुनिवर तिहां रह्या चोमास ॥
वरषै मेह मूसलाधार । तिहा मोर कुहकै ग्रणपार ।।१५८३।।
जल पृथ्वी पर उमड्या ग्राइ । नदी नाला चलै ग्रधिकाय ।।
दोन्यूं मुनि परवत पर जाय । देखि सिला बैठे तिण ठाइ ।।१५८४।।
च्यार महीने का सन्यास । ग्रैसी विध नित करै उपवास ।।
वरषै मेह पवन ग्रति चलै । इनकी देह न तपते टलै ।।१५८५।।
स्याम भुवग मल पाटै देह । डस मछर तन चूटै एह ।।
बुंद झरै तरु बारबार । बेलि घणी लपटी ज्यो हार ।।१५८६।।
उगी दोब देह विपरीत । महा भयानक बन भयभीत ।।
देखै कातर फाटै हिया । जिस वनमाहि इनौ तप किया ।।१५८७।।
ग्रासोज कात्तिक ग्राई रित्त । चद्रमा ज्योति बिराजै ग्रति ।।
गति चौमासय पूरण योग । ग्राहार निमित्त चिंत बै नियोग ।।१५८८।।
वाही वनमे सिंघणी ग्राइ । मुख पसारि ग्ररु पूंछ उठाइ ॥
भय दायक देख्या डर होइ । ता वन मे नावै जन कोइ ।।१५८९।।
सुकुमार साधु सिंघणी नै गह्या । नखि मारि कै पाबा तलि लह्या ।।
भर्ष मास कछु दया न करै । ग्रैसे स्यघणी मुनि नै हर्णं ।।१५९०।।
इह पूरव भव का सनबध । भुगत्या बर्णं यही कछु बध ।।
मुनिवर सुकल ध्यान मन दीया । केवलग्यांन ग्रत छिण भया ।।१५९१।।
सुर लौकातिक जै जै करै । सुकुमार मुनीस्वर मुक्तं बरै ॥
देही दहन देवता करी । वह सिंघणी तिण ठाणं धरी ।।१५९२।।
कीर्त्तिधर बोले तजि मौन । तेरा वन क्यौ कीया गौन ।।
तुच्छ ग्राव ग्रब तेरी रही । क्रोध छोडि मन समता गही ।।१५९३।।
लियौ सन्यास तजे निज प्राण । पाया पहले स्वर्ग विमांण ।।
कीर्त्तिधर लहि केवलग्यान । धर्म प्रकास गये निरवाण ।।१५९४।।

चित्रमाला के पुत्रोत्पत्ति–हिरण्यनाभ

विचित्रमाल तिय जनम्या पूत । हिरण्यनाभ लक्षण संयुक्त ।।
जोवन समय विवाही नारि । ग्रमितमती शशि की उणहार ।।१५९५।।
राजकरत दिन बीते घने । तिण ठामे इक कारण बणे ।।
ग्रारसी दिखावै नाई ग्राइ । श्वेत केस सिर देख्या राय ।।१५९६।।

कहैक बीती जीवन वेस । दई दिखाई धवले केश ।।
जमके दूत दिखाली दई । मेरी श्राव अकारथ गई ।।१५९७।।
धरम राह मे किया न कुच्छ । अब तो श्राव रही है तुच्छ ।।
देह जाजरी तप किम होइ । अब पिछताये अवसर खोय ।।१५९८ ।
सकति समान किया कछु जाय । तप अर दान करो मन मांहि ।।

नघुष राजकुमार को राजा बनाना

नघुष पुत्र को राजा किया । विमल साध पैं सजय लिया ।।१५९९।।
सिधकारणी राणी पटधनी । सीलवंत अति सोभावनी ।।
दिन बीते सुख माहि बहुत । तब इक किंकर श्राणि पहुत ।।१६००।।
दक्षिण दिश का राजा वली । उन सब भूमि तुमारी दली ।।
व्हा का ऊपर करिये राय । या कारण श्रायो तुम पाय ।।१६०१।।
सेना बहुत भूप सग चली । सूर सुभट सोमैं अति वली ।।
नगर राज राणी नै सोप । श्राप चल्या दुरजन परि कोप ।।१६०२।।
उत्तर श्रेणी के सुणी नरेस । नघुष चल्या नृप दक्षिण देस ।।
उण सब लई श्रयोध्या घेरि । राणी सैन कोपी तिणवेर ।।१६०३।।
करि संग्राम भया श्रासत्तु । राणी श्रैसी महा विचित्तु ।।
दक्षण साधि नरपति श्राइया । राणी बात सुणी अति कोपिया ।।१६०४।।
राजा को व्यापा जुर ताप । उपजी ज्वाला भयो संताप ।।
नाई देख भेद सब कहै । या को कोई जतन न रहै ।।१६०५।।
या का मरण होयगा सही । पंडित वेदौं ऐसी कही ।।
राणी नित जिन पूजा करै । पच नाम का सुमरण करै ।।१६०६।।
हस्तपालि दीया सुभ नीर । यासो छिडको राय सरीर ।।
लेकर जल मंत्री नृप देह । किया श्रगोहल अधिक सनेह ।।१६०७।।
सीलवती का लाग्या नीर । दगध रोग की भागी पीर ।।
राजा को सुख उपज्या नया । फेर सुहाग राणी को दिया ।।१६०८।।
बहुत दिन बीते भोग मभार । स्यौदास पुत्र ने सौंप्या भार
श्रापण भए दिगबर रूप । स्योदास राज करै तिहां भूप ।।१६०९।।
कनकाभा व्यांही श्रस्तरी । सिधसेन जनम्यां सुभघडी ।।
श्रठाई का व्रत करै पुनीत । श्रावक करै धरम की रीत ।।१६१०।।

स्योदास द्वारा जीव हिंसा पर प्रतिबन्ध

नगर मांहि ढुंडी फिरवाय । जीवबंध को करै न काइ ।।
जाकै सुणियो हिंसा नाम । ताकूं लूट लीजिये गांम ।।१६११।।

राजा आमिष आहार नित लेई । मास बिना कछु मुख मे ना देई ।।
सुंदर नाम रसोईदार । राजा आगै करी पुकार ।।१६१२।।
श्रावग तणी अठाई व्रत । तातै आमिष कोई न करत ।।

राजा द्वारा मांस खाने की इच्छा

राजा कहै जो आमिष ल्यावै । तो मुझ आजि रसोई भावै ।।१६१३।।

ब्राह्मण कियो नगर तलास । बधिका कै घर मे नही मास ।।
कहू न पाया तबे मसाणा गया । बालक मृतक उठाय कर लिया ।।१६१४।।

राध्या आण रसोई बीच । ऐसे करम किये उस नीच ।।
राजा खाइ बडाई करै । बहुत सुवाद हुआ इण परै ।।१६१५।।
तीन सै गाव विप्र को दिये । विप्र कौ सुख हुआ अति हिये ।।
ल्यावै नित बालक चुराइ । ता बालक नै राजा खाइ ।।१६१६।।
नगर लोक मन चिंता भई । छिप छिप मुरति चोर की लई ।।
बालक गह्या रसोईदार । लोका मिल पकड्या तिन बार ।।१६१७।।
मारया घणा पासली तोडि । पुछया पीछै सबै उह चोर ।।
तू नित बालक ले ले जाय । तो कू हम मारेगे ठाइ ।।१६१८।।

द्विज बोल्या राजा के काज । इनको मास रसोई काज ।।
नृप आग्या तै बालक हरै । प्रजा लोग सुण कर परजले ।।१६१९।।
सिद्धसेन कुंवर पै जाय । मत्रीया सेती कही समझाय ।।
राजा है परजा कै वाडि । खेत करै जे बाडि उखाडि ।।१६२०।।
ऐसी हम परि हुई अनीति । कैसे बसैं लोग भयभीत ।।
सब मत्री मिल कियो बिचार । स्योदास भूप तब दियो निकाल ।।१६२१।।

सिधसेन का राजा बनना

सिधसेन प्रति दीनु राज । भयो सकल मन बछित काज ।।
स्योदास भूप अरु सुंदर द्विज । वनमे देख्या आचारज ।।१६२२।।
नमस्कार मुनिवर कू किया । पाप पुन्य का भेद पूछिया ।।
सुण्यां घरम आमिष का दोष । राज लिया सजम का पोष ।।१६२३।।
महापुर नगर किया परवेस । राजा विनां पड्या बहु देस ।।
तहां का राज स्योदास ने दिया । दंड सकल रायन परि लिया ।।१६२४।।
सिधसेन पै भेज्या दूत । हमसूं आय मिलो तुम पूत ।।
सिधसेन बोलियो नरेस । प्रजा मोहि दीयो नृप भेस ।।१६२५।।

कारण कवण पिता सों मोहिं । साची बात कहूं मैं तोहि ।।
दूत गया तब राजा पासि । निठुर बचन मुख कहे प्रकास ।।१६२६।।
कोप चढया भूपति स्योदास । मन में जुद्ध करण की ग्रास ।।
अजोध्या नगर घेरया चिहूं ओर । सिंघसेन सौं कीनी झौर ।।१६२७।।
सिंघसेन कूं बाध्या धाइ । फेर राज जन भुगत्या आइ ।।
राज करत कितना दिन गये । चैत्याधर्म दिगंबर भए ।।१६२८।।
सिंघसेन कूं सोप्या राज । स्योदास किया मुक्ति का साज ।।
वाके पुत्र भया वर भरथ । चतुर्वक्र अर हेमारथ ।।१६२६।।
दशरथ उदय पाद पृथ्वीरथ भए । अजिनरथ इंद्ररथ थए ।।
दीनानाथ मायत वीरसेन । प्रीतमन कमलवध सुभचैन ।।१६३०।।
कमलवाधवा ग्विमन और । वसत तिलक नो सोभै ठोर ।।
कुमेरदत्त अकुथभगत । कीर्त्तमन असा सूरज रथ ।।१६३१।।
दु दुरथ मृगेन्द्रमेन अति बली । दमन हिरनाकुस मानै रली ।।
वुज असथल वकुथन ननुरेस । रघुराजा जीते बहु देस ।।१६३२।।
अरुण भूप परतापी भया । बल पौरष अति प्रतिपाले दया ।।
है प्रथवीमती राणी पटधणी । रूप लक्षण गुण सोभा अणी ।।१६३३।
ताकै गर्भ दोइ सुत भए । अनतरथ दसरथ निरभए ।।
अरूणराय कै धरम सुं काज । अनतरथ कौं सोप्या राज ।।१६३४।।
सहस्त्ररश्मि रावण सौं युधि । वा समै एक ऊपजी बुधि ।।

दशरथ का राजा बनना

अरुण अनतरथ दोनु आइ । सहस्र रश्मि पै दिक्षा पाइ ।।१६३५।।
राजा दसरथ पाई मही । समद्रष्टी जानु ते सही ।।
महषमती नगरी का राव । विभ्रमधर राजा तिह ठांव ।।१६३६।।
अमृतप्रभा ताकै अस्तरी । अंबप्रभा भई पुत्तरी ।।
राय दसरथ कौं दई विवाह । भोग मगन सों करै उछाह ।।१६३७।।
कौसल नगर अपराजित भूप । अपराजिता पुत्री सुखरूप ।।
किया ब्याव दसरथ सौं आइ । भोग माहि सुख चैन विवाह ।।१६३८।।
महारपुर तिलकराइ । भीममती सोभै पटयाइ ।।
कैकइ पुत्री दसरथ कुं दई । राजभोग तहां विलसत भई ।।
मंगलावती नगरी कैकै मात । सुमित्रा सोभै इह भांति ।।१६३९।।
इति श्री पद्मपुराणे कौशल महातम दसरथ उत्पत्ति विधानकं

२१ वां विधानक
चौपई

दशरथ वर्णन

राजा दसरथ अजोध्या धनी । सास्त्र माहि जिनवाणी सुणि ।।
नितप्रति पूजै श्री भगवत । गुरु सेवा साधै नित सत ।।१६४०।।
सरब सुखी नगरी मे लोग । धरम राज सु भुगतै भोग ।।
राजसभा जे इन्द्र समान । मुनिसुव्रत का सुणै पुराण ।।१६४१।।

नारद मुनि का आगमन

तिहा नारद मुंनि पहुच्या आइ । सकल लोक उठि लागे पाय ।।
समाधान पूछी वहु भाति । कुण कुण तीरथा करी जात ।।१६४२।।
दीप अठाई मे करो गमन । बैठि विमाण चलो जिम पवन ।।
पु डरीकणी क्षेत्र विदेह । सीमधर जिण सासण गेह ।।१६४३।।
समोसरण जो पुराण सुणे । सो प्रत्यक्ष हम देखे बणे ।।
ससार मेरे मन ते टरा । अनत गुणा सु देखो खरा ।।१६४४।।
केवलि भाषी वाणी सत्य । भवियण लोग सुणै धरि चित्त ।।

नारद द्वारा रावण की बात कहना

अवर कही रावण की बात । कु भकरण भभीषण भ्रात ।।१६४५।।
नलनील अवर सुग्रीव । हणुमान सुभटा की नीव ।।
सोलह सहस्र सभा मैं भूप । हाथ जोडि खडा रहै अनूप ।।१६४६।।
तीन षड जीते सब देश । नरपति सकल करै आदेस ।।
निमितग्यानी सागर कौं पूछि । मेरी आव कहो आगम बुझि ।।१६४७।।
मैं सब जग बसि कीना सही । एक खुटक मेरे मन रही ।।
काल रह्या है मोसु भाजि । वा का जतन करो मैं आजि ।।१६४८।।
कहो वेग मोसु विरतात । तो मेरे मन होवै साति ।।
तव निमित्ति यह कही विचार । दसरथ सुत लक्ष्मण कुमार ।।१६४९।।
जनक सुता का कारण पाय । ताकै हाथ तेरी है आय ।।
या मनि सुणि चितवै नरेन्द्र । भूमगोचरी किम व्है बध ।।१६५०।।
दोन्यु नृप का किजे नास । तो मै रहू अमर जग बास ।।
भभीषण समभावै सुणि बात । दशरथ कनक नाम बहुभाति ।।१६२१।।
किसकौं मारौं कहौ भुपाल । विण समभया क्यो करौं जंजाल ।।
तब ही मैं पहूच्या तिरकूट । साधे कारण भेजे दूत ।।१६५२।।

जे तुम जाय किहा छिप रहो । तो आसा जीवे की लहो ।।
अब मैं जाय जनक सुधि देहूं । तुमको सकल सुणाया भेउ ।।१६५३।।

दशरथ तब बुलाय मतरी । मता बिचारै चिंता धरी ।।
वह षेचर हम भूमि गोचरी । वाकी सुरभर कू गाइं करी १६५४।।

राजा देश छोडि भजि गया । निज सुरत कर नृप थापिया ।।
अंनहै पुर ले राख्या थापि । राणी वा ढिग सेवक राइ ।।१६५५।।

याही गीत जनक नृप करी । कलहूनी इनकी इह बिध टरी ।।
कुंभकरण भभीषण भूपाल । बहुत ले चले साथ चिंडाल ।।१६५६।।

पाई सुरति अजोध्या आंन । दसरथ है सतखनै सथान ।।
याही विध वाहुकु मारि । दोउ सिर ले गए तिण बार ।।१६५७।।

दोऊं नगरी पीटैं लोग । सब परियण मैं बाढो सोग ।।
रावण पासि आणि दोउ सीस । पूजा दान निमित्त जगदीस ।।१६५८।।

अपना मन कीया निश्चंत । अमर हुवा रावण वलवंत ।।
होंणहार टाऱ्यो किम टरै जाइ । जे कोई करै कोडि उपाव ।।१६५९।।

दशरथ जनक पूर्व दुख दिया । या भव कौ इनमे व्यापिया ।।
बहुरि पुन्य कीया सुभ ठाम । प्रगट भया तासौं फिर नाम ।।१६६०।।

दोन्यु नृप आए निज देस । बहुरि दोन्यु भए नरेस ।।
टरयौ कलह निर्भबो आनद । हुवा सहाई धर्म जिणंद ।।११६१।।

दूहा

होणहार कैसे टलै, बहुविध करै उपाव ।।
अणहोणी होणी नहीं इह निमित्त का भाव ।।१६६२।।

इति श्री पद्मपुराणे दशरथ जनक काल बला टालण विधानकं ।।

२२ वां विधानक

चौपई

कैकयी वर्णन

कौतिग मगल उतरै सैन । शुभमति भूप प्रजा सुख चैन ।।
पृथ्वी राणी ता पटधनी । द्रोणपु कैकया पुत्री वणी ।।१६६३।।

लक्षण रूप सकल गुणभरी । महा विचित्र केकै पुत्री ।।
छहौ राग तीस रागणी । अठतालीस नंदन सोमै घणी ।।१६६४।।

नाद भेद वीणा के भेद । म्यांन सास्त्र के जाणें भेद ।।
देस देस की बोली बैन । कोकिल कठ सुणत सुख चैन ।।१६६५।।

लिखै पढै बहु शास्त्र पुराण । च्यार वेद का करै वखांण ॥
जोतिग वैदक भणी व्याकर्ण । ग्रागम कहै मन ससब हर्ण ॥१६६६॥
चउदहै विद्या बहत्तरि कला । जुधगीत कौ जाणैं भला ॥
सीलवत रूप की खानि । तीन लोक का समभैं ग्यान ॥१६६७॥
कन्या भई विवाहण जोग । सुमति मत्री राजा पूछियो नियोग ॥
मत्री सगला लीया बुलाय । बैठर मता बिचारै राय ॥१६६८॥
कन्या सो है गुण भरपूर । याते सरस होय जे सूर ॥
तासो समभि कीजिए विवाह । उत्तम कुल जाणिजे नाह ॥१६६९॥

स्वयंवर रचना

मत्री कहैं स्वयंबर रचो । भली भली सौ जौ तिहा संचो ॥
देश देश ते ग्रावै राय । कन्या कै कर माल दिवाय ॥१६७०॥
जा गलि डारै तास सो वरौ । यह बिचार हिये मे धरौ ॥
बहुत भले पाटंबर ग्राणि । जिण ते बहुत समाने नाग ॥१६७१॥
कनक थभ रतनन की जोति । नरपति ग्राए तिहा बहुत ॥
परिवाहण हैमप्रभ भूप । सिहासण तहा धरै ग्रनूप ॥१६७२॥
तब कन्या वरमाला लई । ताकै माथि नृपति धाइ दई ॥
चकडोल चढि कन्या तिहा ग्राय । विरदाली बनावै धाइ ॥१६७३॥
दसरथ के गले घाली माल । तव सव कोप उठे भूपाल ॥
कहै इक एक नगर का धणी । यामै बल पौरिष क्या हणी ॥१६७४॥
पकडन ग्राये रावण के लोग । भागि वच्या ग्रब भुगते भोग ॥
ग्रैसे परि रीझ कै किया । माला दई राजा की धिया ॥१६७५॥
बडे बडे फिर चाले राय । या राजा को मारै ठाइं ॥
हरिवाहण हेम प्रभु पै गए । ग्रैसे वचन ऊनु वनिए ॥१६७६॥
सगला नृपा यह मता विचार । दसरथ को घेरघा तिह बार ॥
सुभमति राय कहै समभाय । कैकेया सो ग्रयोध्या ले जाइ ॥१६७७॥

दशरथ द्वारा युद्ध

हम इन सौं समभैंगे बात । तुम निज घर पहुचो कुसलात ॥
बोले दसरथ राजा सुणौं । इनकौ तो मैं पल मे हणौं ॥१६७८॥
तुम देखो मेरा प्राकर्म । इनका मारि गमाउ भर्म ॥
चढया कोप दसरथ भूपती । रथ परि बैठी उजली रती ॥१६७९॥

कैकेया आय बैठी रथ बीच । विद्या साधी पूरण हीच ।।
तुम कीज्यौ निर्भय हो युध । रथ तुम भरणा चलाऊं सुध ।।१६८०।।
सुभमति की सेन्या सब चली । जाने सकल युध की गली ।।
हरिबाहन के सनमुख दोड । खैंचा धनुष बांण नै छोड ।।१६८१।।
सह न सके दशरथ के बारण । सब ही के मूले अवसान ।।
भाजे तब ही सकल नरेस । हेम प्रभु जपै उपदेस ।।१६८२।।
रण छोडया पति नाही रहै । कुल कलकजुगि जुगि कौं दहैं ।।
तब सब समटि एकठे भये । सनमुख लरन भए कछु थए ।।१६८३।।
सूरवीर दोउ धा लडै । पैदल सूं पैदल कट मरैं ।।
हाथी सू हाथी झुझत । रथ सेती रथ टूट पडत ।।१६८४।।
नगन खडग दामिन जिम दिपै । छुटै गोली सर कातर छिपै ।।
जैसे बरखै घणहर धार । ग्रैसे पडै दोऊ तरफ थी मार ।।१६८५।।
दुहु धा पडी पर्वत सम लोथ । तिण को ग्रध्र भर्ष है चु थि ।।
मार मार वाणी तिहा होय । कायर धीरज धरै न कोय ।।१६८६।।
हेमप्रभू के सनमुख भया । मारी गदा टूटि रथ गया ।।
हेमप्रभु गिरपडिया राव । रथ नीचे आए तसु पाव ।।१६८७।।
लोग भूप को लेकर भजे । दशरथ जीत्या बाजा बजै ।।
राजा सर्व दसरथ कौ नये । छोडि क्रोध निर्मद ह्वै गये ।।१६८८।।
सुभमति नै दीणी ज्यौनार । सगला की करिकै मनुहारि ।।
कैकया दई दसरथ को व्याह । गये अजोध्या घणे उछाह ।।१६८९।।
मत्री सकल वधाई करी । सकल प्रजा सुख ग्रानद भरि ।।
नया जनम दशरथ फिरि पाय । कलस ढालि पद बैठो राय ।।१६९०।।
भोग भुगति मैं बीतै घडी । देस प्रदेसै की रति करी ।।
जिहा तिहा दशरथ गुण चले । दुरजन दुष्ट बहुत दल मले ।।१६९१।।

दूहा

देश देश के भूपती, मानै दसरथ आण ।
कुलमडल नरपति भया, रघुबसी जग भाण ।।१६९२।।

चौपई

सकल ठाम की चिंता मिटी । दुख संताप की रज सब कटी ।।
निरभय राज करै नरनाह । कैकया के गुरण करै सराह ।।१६९३।।

देखी बहुत प्रकार गुण भरी । अवर बात रण की चित धरी ।।
राणी सु बोलै तिण बार । जो चाहो सो मांगो नारि ।।१६६४।।

तब केकया बोलै सुंदरी । प्रभु मुझ वचन देहु इण घरी ।।
जब चाहू तब लेस्यू माग । एह वचन तू द्यो हम त्याग ।।१६६५।।

सोरठा

महा विचित्रा नारि, वा समय उन बुधि करी ।।
पावैगी तिण बार, जिण बिरया इच्छा करै ।।१६६६।।

इति श्री पद्मपुराणे केकया वर प्रदानं विधानक ।।

२३ वां विधानक

चौपई

अपराजिता रानी द्वारा स्वप्न दर्शन

अपराजिता राणी पटधणी । सीलवत अति सोभा बणी ।।
भले महूरत पाछली राति । सुपना देख्या नाना भाति ।।१६६७।।

स्वेता गयंद ऊजलं वर्ण । देख्यो सिंघ गर्जना कर्ण ।।
सूर्य उदय देखा परभात । देख्यो ससि पूनिम की काति ।।१६६८।।

बाजे बाजै गुणियण पाइ । जागो तक चक्रित भई आइ ।।
जा दशरथ सूं सुपने कहे । व्यौरा सुणि अगणित सुख लहे ।।१६६९।।

स्वप्न फल

होइ पुत्र त्रिभुवन का धणी । जाकी महिमा जाइ न गिणी ।।
कुल उज्जल बालक तारणतरण । नाम जपत होइ पातिग हरण ।।१७००।

वा सम बली न दूजा और । ऐसा अधिक प्रतापी जोर ।।
सुणि पिय सबद भया आणद । चित मैं ध्यावै देव जिणंद ।।१७०१।।

सुमित्रा द्वारा स्वप्न दर्शन

सुमित्रा राणी पिछली राति । सुपिना देखे उठी प्रभात ।।
गर्जत देख्या सिंह केहरी । लक्ष्मी कलस सकल गुण भरी ।।१७०२।।

कमल फूल घट ऊपर धरे । देखे समुद्र लहरि उच्छरे ।।
सूरज उदय निर्मला देखि । देख्यो पूनिम चंद्र विसेष ।।१७०३।।

सुदरसण चक्र देख तिण बार । जागि उठी मन हरस अपार ।।
पति सो कही सपने की बात । सुणे सुपन फल नाना भांति ।।१७०४।।

होसी पुत्र महाबलवंत । तीन खंड का राज करंत ।।
ताकी सरभर अवरन कोय । तीन लोक ताको जस होय ।।१७०५।।

लक्ष्मण जन्म

नवमासैं जब जनम्या पूत । रूपवत लक्षण संयुक्त ॥
पंडित तेडि लगन सुभ लिया । दान मान मन वांछित दिया ॥१७०६॥

लक्ष्मण नाम कुंवर का धरया । अमनत रिध सिध गुण भरया ॥

भरत जन्म

कैकय गर्भ भरत भया पुत्र । बहुत रूप अरु सहा विचित्र ॥१७०७॥

अपराजिता के राम जन्म

अपराजिता भई परसूत । रूपवत लक्षण सयुक्त ॥
पदमनाभ ससि की उद्योत । सब परियण मे सोभा होत ॥१७०८॥
सुप्रभा पुत्र सत्रुधन भया । सो भी देव लोक तैं चया ॥
रामचद्र पदम का नाम । च्यारौं वीर दिये वपियाम ॥१७०९॥
सेवा करैं देवता घने । बोलैं भासा मोभा बने ॥
च्यारों बाल खेल अति करे । देख रूप सब का मन हरैं ॥१७१०॥

रावण के घर में अशुभ शकुन

रावण के घर उलका पात । बिजली पडी कागिर ढह जात ॥
रात दिवस रोवें मजार । कूकर रोवैं बारबार ॥१७११॥
मेगल चांरि सुपने माझि । बोलैं काग होइ जब साझ ॥
उल्लु बोलै दिन तिहा घणे । अैसी चिता मन रावण तणे ॥१७१२॥

दूहा

दशरथ अजोध्या का धणी, ताकैं पुत्र जु च्यारि ॥
रामचद्र लक्ष्मण वली, भरत सत्रुघन सारि ॥१७१३॥

अडिल्ल

पूजें श्री जिणराय सुगुरु सेवा करैं,
वाणी सुणैं मन लाय सुद्ध समकित धरैं ॥
प्रगटयो जस ससार कीर्त्ति बहु तिण तणी,
देइ सुपात्रह दान दया पालै धणी ॥१७१४॥

चौपई

चारों भाइयों द्वारा विद्या सीखने का वर्णन

कपिला नगर का थान । भारग सिद्ध क्षत्री का नाम ॥
जब उह पुत्र सयाना भया । नित्य उत्साहणा आवैं नया ॥१७१५॥

गागर फोडै निकसै पणिहार । गली गली मे लावै गार ।।
मात पिता भए कलि कान । दिया निकाल कुपात्र हि जान ।।१७१६।।
भूख्या प्यासा दूषित घणा । ग्रैसा ताहि कठिन दिन वण्या ।।
मागै भीख उदर निठ भरै । इण विध गया राज गिर पुरै ।।१७१७।।
कुसाग्र राय नगरी का धणी । ताकै विद्या साला वणी ।।
वैस्वासुत ने गुरु प्रबीण । ग्रावध विद्या सिखावै लीन ।।१७१८।।
कुवरु साथ शिष्य बहु जुरे । सीखै विद्या ते इण परै ।।
तिहा एलते पहुचा जाइ । दानसाला मां भोजन षाइ ।।१७१९।।
सीखै विद्या रहै उन पास । वहु विद्या सीखी उन पास ।।
राजा पासि गया इक बार । नृपति ग्रग्रे कही पुकार ।।१७२०।।
ग्राया एक विदेसी भेष । उनं विद्या सीखी सब देख ।।
कुंवर न लही विद्या हीण । परदेसी ते महाप्रवीण ।।१७२१।।
राजा ने गुरु लिया बुलाय । सिष्य प्रतें गुरु कहैं समभाय ।।
राजा देखत चलायो बाण । ग्रैडे बैडे छोडे जाणि ।।१७२२।।
राज सभा गुरु पहुचे जाय । गये ग्रायुध साला की छाय ।।
राजकुंवर सर छोडे भले । ग्रौरा का सर बांका चलै ।।१७२३।।
एल प्रदेशी धनुष कर गह्या । गुरु का वाकि सुध लह्या ।।
टेढे सर कूं छोडत भया । राजा का संसय मिट गया ।।१७२४।।
गुरु परदेसी परतुष्ट मान । कन्या देण कही तिण जाणि ।।
एल प्रदेशी ज्ञान चित किया । माहिन समान गुरु की धिया ।।१७२५।।
एमई व्याहुं तो लागई दोष । किस ही जनम उहै नही मोक्ष ।।
ग्ररध रात्रि तब भाग्या एल । ग्रजोध्या नगरी ग्राया तिंह वेर १७२६।।
दसरथ नृप के ग्राया पास । ग्रपना गुण कीना परकास ।।
राय दशरथ ने कन्या दई । इसकू तिहा सुख थिति भई ।।१७२७।।
च्यारू राजसुत तिहा मिल्या । विद्या गुण सीखैं तिहा भला ।।

इति श्री पद्मपुराणे रामलक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न विद्या विधानकं ।।

२२ वां विधानक

चौपई

जनक भूप विदेही ग्रस्त्री । निर्भय राज करै तिहं पुरी ।।
चक्रध्वज पुर का इक धणी । मनसेणी राणी तसु तणी ।।१७२८।।

चित्रोत्सवा पुत्री ताकै उर भई । रूप लक्षण सोमैं उरमई ।।
धूमसेन विप्र स्वाहा नारि । पिंगल पुत्र लियो अवतार ।।१७२६।।
राजसुता सेती अति प्रीत । एक बिचारी खोटी रीत ।।
दोन्या ने मिल कियो विचार । नगरी छोडि भज्या तिण बार ।।१७३०।।
लषमी घणी लेकर नृप सुता । निकसे दोनूं करके मता ।।
विदरभ देस प्रकृति सिंघराय । ए उस नगरी पहुंते जाय ।।१७३१।।
दंपति गये नगर के पासि । छाय झुंपडी करै विलास ।।
षोया षाय दलिद्री भये । लकडी बेचत कछु दिन गये ।।१७३२।।
कुंडल मंडल राजकुमार । बन क्रीडा आये इक बार ।।
देखी त्रिया रूप गुण रासि । कुमर कांम की उपजी प्यास ।।१७३३।।
दूती भेज तिन लई बुलाइ । नृप संग मिली महा सुखपाय ।।
गत दिवस भुगते सुख भोग । इनका ऐसा बण्या संजोग ।।१७३४।।

विप्र द्वारा विलाप

विप्र आया घर सझ्या वार । सूना घर पाया बिन नारि ।।
सारा दिन का हारा थका । भया अकेला गई कालिका ।।१७३५।।
त्रिया त्रिया मुख करैं पुकार । कबही रोवै खाय पछारि ।।
गली गली मे रोवत फिरैं । राय अग्रे जाय गिर पडैं ।।१७३६।।
मेरा न्याव करो तुम नरेस । मेरी अस्त्री गई तुम देस ।।
मुझ नारी तुम देहु ढुंढाय । नातर तजो प्राण विष खाय ।।१७३७।।
सरणैं आइ तुमारे मैं बस्या । महारा घर बिणसैं बिन वसा ।।
राजा मंत्री लिया बुलाय । तिणसैं बात कही समझाय ।।१७३८।।

राजा द्वारा षडयन्त्र

जब वह विप्र आवै मो पासि । तब तुम झूंठ कहो कैं साज ।।
नृप मंत्रीय सभा सब जुरी । विप्र फेर आयो ता घरी ।।१७३६।।
मंत्री इक बोल्या इण भाति । मैं देखी मारग में जात ।।
पोदनपुर के मारग मांहि । मैं आवै था देखी तरु छांह ।।१७४०।।
आरजिका तिहां तप करै । घणी साथ बैसी तप करै ।।
सखी एक अति रूप की खाणि । उनकी दिक्षा लीनी आनि ।।१७४१।।
बेग जाय पोदनपुर ढूंढ । इहां क्यूं सोर करत है मूढ ।।
विप्र कूं सब ही दिया बहकाय । पोदणपुर उण सोधण जाय ।।१७४२।।

देखे वन उपवन चहुं ओर । देखी गुफा परवत की ठोर ॥
देह सिथल वन देख्या भला । जिहा तिहा देवालय मिला ॥१७४३॥

पाई नही फिर आया विप्र । ताकौं आवत देखा नृप ॥
बडी दार तब दीया लगाय । गाय मारि कर दिया भजाय ॥१७४४॥

मुनि दीक्षा

बन मे बहुत दुखी बिललाय । आरिज गुपति मुनि भेट्या जाय ॥
सुणे धरम के सूक्ष्म भेद । सोह करम की टूटी खेद ॥१७४५॥

दिक्षा लई दिगम्बर भया । जैन धरम निश्चै चित दिया ॥
सियालै रहै नदी के तीर । सहै परीसा काया धीर ॥१७४६॥

उनालै गिरि पर वरि जोग । तपै भानु लू बाजै रोग ॥
चालै पसेव पाप बहि जाय । ग्रैसा तप साधै मुनिराय ॥१७४७॥

वरषा काल वृक्ष कै तलै । वर्षै मेघ ग्ररु नाला चलै ॥
पानि चुवैं मुनि उपरि पडै । माछर डास सदेह सो लगै ॥१७४८॥

लागे बेलि ग्रग लपटाइ । मुनिवर सहैं परीसा काइ ॥
चिदानद सौं लाया ध्यान । दया छह काया की जान ॥१७४९॥

रत्नावली का राजा द्वारा युद्ध करना

ग्रनरण रत्नाबली का राय । ग्रहिकु डल का सुण्या ग्रनाय ॥
चक्रपुरी तिण घेरी ग्राय । कुंडल मडल निकस्या ग्राय ॥१७५०॥

दुहुघा जुघ भया भयभीत । फिर ग्राया गढ भीतर जीत ॥
मूंद किवाड गोला की मार । ग्रनरन भूपति मानी हार ॥१७५१॥

किमहिं न पावै गढ का भेद । राजा कै मन उपजी खेद ॥
दिन दिन हुवै दुरबलि देह । वालचद्र सेनापति पूछै एह ॥१७५२॥

किण कारण देही तुम षीण । मन की बात कहो परवीण ॥
राजा सेनापति सो कहै । मेरे मन मे संसा रहै ॥१७५३॥

मत्री द्वारा उपाय बतलाना

चक्रपुरी ग्राई निज हाथ । ताथै चिंता है मन साथ ॥
बालचंद्र बोलै बलवान । कु डल मडल पकडो राजान ॥१७५४॥

बालचद्र ले सेन्या संग । गढ ततकाल कियो तिण भंग ॥
कुंडल मडल बांध्या जाय । निज पति पास ग्राया तिह ठाय ॥१७५५॥
दई मार पग साकल घालि । ग्रैसी रीति पड्या वह जालि ॥
बसन उतारि दिया सब छोडि । बन में गया करम की खोडि ॥१७५६॥

वैराग्य भाव

तिहा श्रवण मुनिवर तप करै । नमस्कार करि पाइन पड़ै ॥
साधा कहो धरम समझाय । मेरा पाप कटै किहि भाय ॥१७५७॥
राज रिद्धि मद धरम न किया । विपत्ति नै करुणा समझिया ॥
मेरा किण विध होइ सहाइ । किम भवसायर उतरों पार ॥१७५८॥

उपदेश

बोलै मुनिवर लोचन ग्यांन । सप्त विसनतै धरम की हाणि ॥
सातो नरक अनता भ्रमैं । छेदन भेदन विनसह जमैं ॥१७५६॥
भूख त्रिषा का नावै अंत । इण विध प्राणी दु ख लहत ।
जे तीरथ बहुतेरा फिरैं । भद्र होई कु दान नित करैं ॥१७६०॥
क्रोध मांन माया मद होइ । अैसा गुरु सेवो मत कोइ ॥
नख अर केस तीरथै बहाइ । आपा वर्णतैं ह्वै पाप उठाइ ॥१७६१॥
अण छाणे जल करैं सनान । अण गल जल पीवैं जल पान ॥
ते निहचै नरक मे जांइ । इण विध धरम धरो मन ल्याव ॥१७६२॥
समकित सुध आतमा जोइ । दया भाव जाकै चित होइ ॥
मनुष देव गति ऊंची लहै । दुष्टि हुवै सो नीची गति सहै ॥१७६३॥

राजा द्वारा अणुव्रत ग्रहण करना

सुणि राजा तबै अणुव्रत लिया । हिंस्या झूठ चोरी परत्रिया ॥
नमस्कार करि मारग गह्या । इह ससा उसकै मन रह्या ॥१७६४॥
मेरा कुटंब अरण की वदि । वे छूटैं तब हुवै आनद ॥
अब हूं साधू कोई देश । बाधू मैं आणि अरन नरेस ॥१७६५॥
मै अपणे बल छुडाउं जाइ । अइसै चित वत राजा आइ ॥
तग्षा पिव लागी तिस भूख । देही सकल गई तिस सूख ॥१७६६॥
अतै भया प्राण का नास । सुमरया प्रभु पाच की आस ॥
समकित सो पावै गति भली । अग्रे पूजैगी मन रली ॥१७६७॥

चित्रोत्सवा द्वारा दीक्षा लेना

चित्रोत्सवा उपज्यो वैराग । सकल विभूति कुटब ही त्याग ॥
आर्यिका पास ली दिक्ष्या जाइ । वईवरत करै बहु भाइ ॥१७६८॥
बारह विध तप साधै नित्त । निसवासर अनुप्रेक्षा चित्त ॥
तप करि कष्ट अति देही दहै । सत संयम आतम सुध लहै ॥१७६९॥

देह छोडि लियो स्वर्ग विमांण । उहा तै चई जनक घर आंण ।।

सीता का गर्भ में आना

विदेहा गरभ आणि थिति करी । कुंडल मंडलीमी तसु धरी ।।१७७०।।
पिंगल मुनिवर तजे पराण । पुंहच्या महाशुक्र विमाण ।।
अवधि विचार एक भव तणी । श्रवण पुन्य तैं सुरगति वणी ।।१७७१।।
पिछली सुरति तै कोप्या देव । कुंडल मडल का जाण्या भेव ।।
उन मेरी थी लीनी नारि । मुझको मारि दीया निकालि ।।१७७२।।
मोहि घणे दुख दीने भूप । तब मैं भया दिगंबर रूप ।।
नप प्रमाद ग्रैमी गति लही । बे दोन्यूं विदेहा उदर मे सही ।।१७७३।।
जनम समै ताकूं मैं हरू । अपणां मन माने हू करू ।।
आया देव गरभ रिख्या काज । ग्रैसी सुरत चितै सुरराज ।।१७७४।।

सीता भामण्डल का जन्म

नव मास जब पूरण भए । पुत्री पुत्र जनक घरि भए ।।

देवता द्वारा बालक का अपहरण

बालक लिया तबै देव उठाइ । पकडि वाह गयण ले जाइ ।।१७७५।।
मारै पेडि तबै बालक हसै । तबै सुर तणै क्रोध मन बसै ।।
तू कुंडल मडल था भूप । चित्रोत्सवा देखि स्वरूप ।।१७७६।।
तिसनें चुराय लेय तु गया । मो कूं भी तैं अति दुख दिया ।।
तब मैं था भिक्षुक आधीन । पिंगल विप्र मै वह सम कीन ।।१७७७।।
फैंकू गगन गरुड ले जाय । डालूं सिंध मे मच्छ तोहि खाय ।।
कै पर्वत पर पटकूं तोहि । सिला तलै दाबूं अइसा छोहि ।।१७७८।।
ग्रैसे मनमे करै उपाव । बहुरि भया दया का भाव ।।
मे था विप्र भिक्षुक आधीन । दया आणि साधे गुण तीन ।।१७७९।।
सम्यकदर्शन सम्यक ग्यान । तप करि भया देवता आणि ।।
अब मैं नया पाप क्यो करूं । याकु ले सुभ थानक धरूं ।।१७८०।।
रथनूपुर विजयारध जाय । राय तणे मंदिर वइठाय ।।
नृप तब बालक लिया उठाइ । सुदरसना राणी लई जलाय ।।१७८१।।
उठि तू पुत्र तइही जण्या । मीडत आखि उठी जब सुण्या ।।
हूं थी बांझि जण्या सुत केम । बिना गर्भ सुत होवै एम ।।१७८२।।

राजा कहै गर्भ तुझ गूढ । सोचं कहा लेहु सुत मूढ ।।
देखता कानैं कुंडल दिये । तिनकौ देखि अचर्भ भए ।।१७८३।।

सोचं पुत्र जण्यां मैं आजि । किण पहराये कुंडल साजि ।।
तब राजा बोल्यो सत भाय । या कु सुर ल्याया इण ठाय ।।१७८४।।

पुण्यवत मह शशि की जोति । मा की कण्यो सेव बहोति ।।
नगरी मध्य खबर यह दई । रांणी पुत्र प्रसूता भई ।।१७८५।।

सुख मे बधै धाय कै बाल । अगणित धन खरच्यो भूपाल ।।

जनक राजा द्वारा विलाप

विदेहा बालक देखै नाहि । रुदन करै नयना परवाह ।।१७८६।।
जनक राय रोवै तिण वार । हम क्या पाप किया करतार ।।
अैसा कवण पुत्र मुझ हरै । पूरव कर्म उदय दुख पडै । १७८७।।

देश देश कौं पत्र लिखाइ । करूं इलाज पावै किण ठाइ ।।
राजा दशरथ मेरा मित्र । वह ढूंढेगा अतर प्रीत ।।१७८८।।

राजा दशरथ द्वारा खोज

दशरथ सुणि ढूंढे सब थान । कही न पाया अपणे जान ।।
जनक त्रिया सो कहै समझाय । पुण्यवत बालक बहु भाय । १७८९।।
वहै तो वढै काहु के गेह । तुम चिंता न करो सदेह ।।
जे कछु सनमध है हम साथि । तो आणि मिलावैगा जिण नाथ ।।१७९०।

कन्या का सीता नाम रखना

कन्या का सीता धरया नाम । लीला करै बाल सुख धांम ।।
रूप लक्षण शशि की जोति । गुण वरण्या कहूं पार न होत ।।१७९१।।
वस्त्र आभरण वण्या सब अंग । गोद लिया परियण उछरंग ।।
दिन दिन बाढै सुखस्यौं तेह । मात पिता अति धरै सनेह ।।१७९२।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता भामंडल उत्पत्ति विधानकं

२३ वां विधानक

श्रेणिक द्वारा राम सीता विवाह को जानने की इच्छा

जब जोडे श्रेणिक नृप हाथ । एक ससय मो मन जिननाथ ।।
रामचंद्र सीता का व्याह । किण विध किया जनक नर नाह ।।१७९३।।

राम कवण पराक्रम किया । कैसें व्याही जनक की धिया ।।
बाणी कहैं तबैं जिनराय । गणधर वचन कहै समझाय ।।१७९४।।

विजयारध गिरि दक्षिण ओर । कैलाश गिर उत्तर की ठोर ॥
वर वर देस और विदग्ध । मैं उरमाल नगरपति बग्ध ॥१७६५॥
रब्बर चर राजा तिह नम्र । अकन और मुपती सम्र ॥
म्लेछ षड का राजा जुडया । अैसा मता उनु कर मिल्या ॥१७६६॥
आरज षड पर कीजे दौड । कोई नही नामी तिह ठौर ॥
रावण है लंका का देस । इह ठाम जाय हम करै प्रवेस ॥१७६७॥

जनक की नगरी मिथिलापुरी पर आक्रमण

म्लेछ षंड का दोडया भूप । डाहत फोडत आवै जम रूप ॥
मिथलापुरी जनक तिहा राय । घेरया नगर म्लेच्छा आय ॥१७६८॥
जनक दसरथ कनै दूत पठाइ । लिख्यो सकल विरतात वनाय ॥

जनक द्वारा दशरथ के पास सन्देश भेजना

म्लेच्छ मोहि घेरया है आप । थाणा मेरा दिया उठाय ॥१७६६॥
पीडा परजा कू दे है घनी । देवल डाहि गउ तिहा हणी ॥
साधा कू देहै उपसर्ग । जिसकूं तिसकूं मारै खड्ग ॥१८००॥
मै तो आय गढ म्यतर रहू । प्रजा दुःख किण बिरते सहूं ॥
प्रजा सुखी तो राजा सुखी । परजा पीडित राजा दुखी ॥१८०१॥
जो कुछ प्रजा पुन नित करैं । छठा अंस राजा नैं पडैं ॥
उनका डर तैं प्रजा सब भजैं । जो हूं भाजु तो कुल लजैं ॥१८०२॥
तुम जो मेरा ऊपर करो । तो मैं निकल दुष्ट सो लरो ॥

दूत का अयोध्यापुरी आना

आया दूत अजोध्यापुरी । राजसभा देखै सब जुरी ॥१८०३॥
दसरथ च्यारू पुत्र सयुक्त । करै सलाम आय तिहा दूत ॥
दिया लेख राजन निज हाथ । बाच पुत्र सूं करै नरनाथ १८०४॥
रामचद्र कुं राजा करो । ढालो कलस मुकट सिर धरो ॥
करो आरती पटह बजाय । हू साधू म्लेच्छ कूं जाय ॥१८०५॥
रामचंद्र पूछै तब बात । मो कू राज क्युं देत हो तात ॥
दसरथ कहै तुम सुणो कुमार । म्लेच्छां परिजास्या इण बार ॥१८६६॥
तुम साधो पृथ्वी का राज । हम जावै करिवा पर काज ॥

रामचन्द्र की जाने की इच्छा प्रकट करना

श्री रामचन्द्र बोले बलवीर । करो राज मन राखो धीर ॥१८०७॥

वे मलेच्छ जैसा सुण लिया । कहा सिव ग्रग्रे चालिया ।।
जो तुमारी सरभर कहा होइ । ता परि भला कहैं सहु कोइ ।।१८०८।।
हम हैं प्रभुजी ग्राग्या देह । सकल म्लेच्छ मिलाऊ खेह ।।
राय भरणै तुम हो लघु वैस । वे म्लेच्छ भयानक देस ।।१८०६।।
किण पर जुध करोगे जाय । ग्रैसे भूप कही समझाय ।।
रामचंद्र तब उत्तर कहैं । स्यंघ पुत्र किसका भय करैं ।।१८१०।।
हस्ती जूथ सबद सुण डरैं । वे भाजैं सकल सुध बीसरैं ।।
तिणमा एक करैं बन छार । हम सूं जोवे वह मानैं हार ।।१८११।।
ग्रइमै उनही लगाऊं हाथ । फेरि न बोलैं काहू साथ ।।
रामचंद्र लक्ष्मण तिहा चले । सूर सुभग संग लीने भले ।।१८१२।।

राम का मिथिला गमन

मिथलापुर मा पहुंचे जाइ । इनका दल दृष्टि न समाइ ।।
जनक कनक नें छोडे बाण । मारि म्लेच्छ किये घमसाण ।।१८१३।।
उत म्लेच्छ नीसान बजाय । जनक कनक भेटया गल लाइ ।।
बाजे बजें भेरि करनाइ । बहुत भूप ग्राये उस ठांइ ।।१८१४।।
जनक तणा दल हटया जाणि । घणे लोगा तज्या पराण ।।

राम द्वारा युद्ध करना

श्री रामचंद्र धनुष टकार । गह्या धनुष लक्ष्मण कुमार ।।१८१५।।
पड़े धाइ दल ऊपर जाय । दुहुं धा जुध भयो बहु भाइ ।।
दुरजन जाय दहवट करैं । तब म्लेच्छ सब फिरि कैं लरैं ।।१८१६।।
लक्ष्मण ऊपर ग्राये धाय । तोडया रथ मारे दुरजन राय ।।
श्री रामचंद्र पहुंच्या तिहृ बेर । मारि म्लेच्छ किये सब ढेर ।।१८१७।।
इनका है रवि जेम प्रताप । इण प्रकार धाए प्रभु ग्राप ।।
ग्रंधकार भाजैं जिम देखि । रवि की प्रगटैं किरण विशेष ।।१८१८।।
जैसे पटल महा घनघोर । भागै फाट पवन के जोर ।।
मलेच्छा की फोज चली सब भाग । ए दोडे उन पीछे लाग ।।१८१६।।
इनके दल बल हुवा घणां । राम प्रसादै पौरिस ग्रति बणा ।।
पकडैं जिसनैं मारैं ठोर । पड़ी लोथ तिण की नहीं ग्रोड़ ।।१८२०।।

राम का आदेश

रामचंद्र इह ग्राग्या भई । हिंसा जीव करो मति कोइ ।।
भागे का पीछा मति करो । ग्रब तुम ग्रपणे थानक फिरो ।।१८२१।।

रामचंद्र लक्ष्मण की जीत । जनकराय सो बांधी प्रीत ।।
जै जै सबद करें सब लोग । भाजे ताके सब सोग वियोग ।।१८२२।।

इति श्री पद्मपुराणे म्लेच्छ पराजय विधानकं

२४ वां विधानक

चौपई

जनक की इच्छा

जनक बिचारी तब मन माहि । ग्रैसी वसत कछु मेरै नाहि ।।
रामचन्द्र के अग्रे धरू । इनके गुना को पार न लहूं ।।१८२३।।

सीता देण की इच्छा करी । नारद कान बात यह पडी ।।

नारद द्वारा कन्या को देखना

नारद जुध इनों का देखि । अपणै मन हरषियो विशेष ।।१८२४।।

कन्या देखण कू धरि भाव । आया अंतहपुर की ठाव ।।
जनक मदिर नारद मुनि गया । दर्पण लीया थी वहा सिया ।।१८२५।।

नारद को देख सीता का डरना

कन्या देखै अपणा वरण । सब सरीर दीसै लगि चरण ।।
सीस जटा जुट देह मलीन । हाथ कमडल पीछी लीन ।।१८२६।।

कटि पडदनी अति तापस मुनी । सीलवत नारद रिष गुनी ।।
देखी छाया सीता डरी । भाजी कन्या वाही घडी ।।१८२७।।
मा मा करि दौडी घर माहि । नारद पाछै दोडे ताहि ।।
पोलीदार जाबा नहि देहि । नारद सेती वाड करेहि ।।१८२८।।

भया कोलाहल नरपति सुण्या । कहा सार अंतहपुर घणा ।।
आगन्या भई दौंडे सब सूर । आवध बहुत लिये भरपूर ।।१८२९।।

नारद निज विद्या सभालि । गिरि कइलास गया तिह काल ।।
ऊचे नीचे लेइ उसास । नही थी जीवण की आस ।।१८३०।।

नारद का विचार

नारद मुनी चल्या बडी वार । मनमे उपज्या तब अहकार ।।
मोसु नृप जनक असी करी । मोहि देखि सीता भाजि दुरी ।।१८३१।।

मिथलापुरं जनक की मही । करू उपद्रव तो नारद सही ।।
लीख्या पट्ट सीता का रूप । रथनूपुर चंद्रगति भूप ।।१८३२।।

प्रभामडल है तासु कुमार । नारद गयो तिण सभा मझारि ।।
उठें लोग जोडे दोउ हाथ । दरसन देखि नारद मुनि नाथ ।।१८३३।।
नमस्कार बहुत विध किया । नारद नैं बहु आदर किया ।
प्रभामडल नैं पट्ट दिखाइ । निरखै रूप अधिक सुख पाइ ।।१८३४।।
पदमावती के सुरपती धणी । के किंनर सोभा अति बणी ।।
बोले नारद सुणो कुमार । इन्द्रकेतु सुत जनक भुवाल ।।१८३५।।
मिथलापुर का भुगतै राज । विदेहा राणी लाज जिहाज ।।
तास गरभ सीता अवतरी । उसका रूप लिख्या तिस घडी ।।१८३६।।
इह सूरत वा मैं गुण घणे । हाव भाव बहु जाय न गिणे ।।
रामचद्र को इहै दई निमित्त । तबै इहै मेरे आयी चित्त ।।१८३७।।

भामण्डल की सीता को पाने की चिन्ता

अैसी त्रिया भामडल जोग्य । विद्याधर जे भोग नियोग ।।
इस कारण आया तुम पासि । चलो मिथलापुर पूजै आज ।।१८३८।।
भामडल की सुध वीसरी । सीता सीता चित मे धरी ।।
जे हू मिलू जनक की सुता । दरसण देखें भागैं चिंता ।।१८३९।।
घरि आगण ता कछु न सुहाय । अन्न पान मुख कबहुं न खाय ।।
दिन दिन कुवर भ्रमता जाइ । तन सूकै राणी पिछताय ।।१८४०।।
प्रभामडल मन सीता लागि । सुख ससारी दीया त्याग ।।
मात पिता की लज्जा करै । विरह अगनि सूं देही जरै १८४१।।
मंत्री सोच करै अधिकाइ । ता दिन देखी कुतली राय ।।
वाही दिन तै है यह सूल । या की औषधि मंत्र न मूल ।।१८४२।।
राणी का संसय किया । सासू सुसरां सू भेद यह दिया ।।
जब तै पट्ट देख्या इह पूत । तब तैं याकूं लाग्या भूत ।।१८४३।।
खाण पान वस्त्र सब तज्या । बह तो करै तुमारी लज्या ।।
तुम पूछो तिसका बिरतांत । कारण कवण तुम सूकै गात ।।१८४४।।
मात पिता कुंवर ढिग गए । वाका मन की पूछत भए ।।
नरपति कहै करो सनान । भोजन नीरग्वाबो तुम पान ।।१८४५।।
आभूषण तन तजो संवारि । तुमने इछा सीता नारि ।।
अब हम जतन ब्याह का करा । तेरा कारज वेग ही सरा ।।१८४६।।
भामडल का दुख अब गया । करि सनांन उठि भोजन किया ।।

चन्द्रगति द्वारा उपाय सोचना

चन्द्रगति मन सोचैं घणां । कुछ हरषै कुछ चितावणां ।।१८४७।।

राजा जनक भूमि गोचरी । अउर रहै वह मिथलापुरी ।।
रथनूपुर ते दूर वह देस । बेटी कबहू न देय परदेस ।।१८४८।।
जे सीता आणिये चुराय । होय अनीत रहसि सब जाय ।।
उनके घर मे बाढै सोग । हमने बुरा कहें सब लोग ।।१८४९।।
चपल वेग सू कही बुलाय । तुम अब मिथलापुर मे जाय ।।
जनकराय आणौ मुझ पास । वाकूं कछु न दिखाज्यो त्रास ।।१८५०।।
चपलवेग चाल्या सिरनाय । चढि विवाण मिथलापुर माइ ।।

विद्याधर द्वारा मायामयी अश्व रचना

अस्व एक विद्याधर किया । द्विज गहि हटवाडै गया ।।१८५१।।
तापरि रतन जडित पलाण । नाचत कूदत करै खाचा ताण ।।
अस्व प्रशसा जनक नृप सुणी । गुणह्या तहां सराहै दुणी ।।१८५२।।
आप जनक नृप देखण चल्या । गुण लच्छन सब देख्या भला ।।
व्यापारी सूं पूछा मोल । तब वह वाभण भाषै बोल ।।१८५३।।
पृथ्वी ग्रैसा अस्व नहीं । बडे भाग्यता आज्य जनक है सही ।।
तुम निमित्त आण्यौं इस ठांव । दोइ सहस्र सोनिया भाव ।।१८५४।।
व्यापारी कुं दिया दिनार । घोडा ले बाध्या दरबार ।।
बहु प्रकार सेवा निस होइ । तिहा मास बीता इक दोइ ।।१८५५।।
किंकर एक आयो इस ठांय । कही हथनापुर सहु लगाय ।।
दुरजन आइ घेरचा सब देस । तुम चलि करो उपर नरेस ।।१८५६।।
सुणी वात भव सैन्या पलांण । अस्वकोतिल घिरै निसाण ।।
सूर सुभट लीया बहु सग । बाजा वाजै लहर तुरग ।।१८५७।।
परवत पासि ढोल बहु पडे । हाथी तिण आगै टारै न टरै ।।
तब वह अस्व लिया मगवाय । ता ऊपर चढिया नरनाह ।।१८५८।।
हय नृप सहित उडया आकास । सैन्या साहि शोक की त्रास ।।
सैन्या फिर मिथलापुर जाय । नवा भूप थाप्या तिण ठाय ।।१८५९।।
जनक आकास गमन जब किया । पुरपाटण बहुला देखिया ।।
सब पृथ्वी का देख्या देस । मन आनन्द्या जनक नरेस ।।१८६०।।
विजयारध गिर पहुंता जाय । अस्व मांर्ग मे उतरचा आय ।।
सुखी चालां चलै तुरंग । रम्यकरण बन देखि सुरंग ।।१८६१।।
सहस्रकूट चैत्यालो जिहां । वन उपवन सरवर है तिहां ।।
पक्षी बैठा करैं किलोल । बोलैं वाणी अमृत बोल ।।१८६२।।

सीतल पवन कवल की बास । भ्रमर गुंजार करैं चिहुं पास ।।

राजा जनक का विद्याधरों की नगरी में आगमन

प्रथम पौलि जिन प्रतिमा बणी । हस्ती दोइ तिहां सोभा घणी ।।१८६३।।
ढालै कलस प्रतिमा परि भले । अस्व बाधि करि राजा चले ।।
गोपुर देखि भयो आनंद । बहुत ब्रृक्ष तिहां पंकति बंध ।।१८६४।।
भीतर जिन सासन की ठौरि । देखी प्रतिमा च्यारौं ओर ।।
नमस्कार कीनू नरनाह । पूजा अरजा अधिक उछाह ।।१८६५।।
सेवा सुमरण चारू बार । रहस्य आया मनमे तिण बार ।।
राजा श्री जिणवर का ध्यान । घोडा छोड गया स्वस्थान ।।१८६६।।
विद्याधर का फेरचा रूप । पहु च्या तिहा चन्द्र गति भूप ।।
जनक राय आव्या इस देस । चलो वेग तुम मिलो नरेस ।।१८६७।।
जिन थानक वे बैठा आइ । ढील करो तो वह उठि जाइ ।।
सह परिवार विद्याधर मिले । श्री जिन जाति रूप तिह मिले ।।१८६८।।
बजै बहुत बाजे कर नाद । बहु लोग पूजा कौं जाय ।।
साभलि जनक चढि देखि उतग । बहुत लोग भूषण पचरंग ।।१८६९।।
देख्या चंद्रगति तणा विवाण । के इक है राजा बलवाण ।।
केइ भूमि केई आकास । उतरचा भूमि चैत्यालय पास ।।१८७०।।
नमस्कार करि बइठा भूप । राजसभा देदीप्य अनूप ।।
जनक प्रति पूछै चन्द्रगति । के इंद्र के धरणेन्द्र तुम अति ।।१८७१।।
कै तुम विद्याधर कै इन्द्र । तुम पहुचे वो थान जिणद ।।
आनिन सकै अस अस्थल आइ । अपना भेद कहो समझाय ।।१८७२।।
बोलै जनक मैं भूमिगोचरी । राजकरै या मिथलापुरी ।।
माया रूपी घोडा आनि । हूं आयो हू इस थान ।।१८७३।।

चन्द्रगति द्वारा सीता के विवाह का प्रस्ताव

चन्द्रगति नृप आदर करै । एक बात की इच्छा धरै ।।
तुम घर सीता पुत्री सुणी । मेरा सुत प्रभामडल गुनी ।।१८७४।।
किया करि कन्या तुम देहु । विद्याधर सुं होइ सनेह ।।
कहै जनक तुम सुणु हो राव । सीता दई राम रघुराव ।।१८७५।।
अब मैं वचन न देता नाहि । कह्या तुम्हारा फिरता नाहि ।।
चन्द्रगति बहुरि जनक सुं कहै । रामचंद्र बल केता वेहै ।।१८७६।।

ताकू जो पुत्री तुम देई । उनसू प्रीत अधिक कर लेइ ।।
रामचन्द्र गुण वरणे भूप । वा सम कोई नही अनिरूप । १८७७।।
बरबर म्लेच्छ मिथलापुर आइ । बहुता नै घेरया मै धाइ ।।
रामचन्द्र ते मारया घेरि । गए भाज ते नाये फेर ।।१८७८।।
वा समये मैं दीनी सिया । तासु कथन मैंने यह किया ।।
चन्द्रगति कहै हम देव समान । भूमिगोचरी हैं पसू समान ।।१८७६।।
कहा म्लेच्छ हैं इसा वराक । उनकू मारू मैं इक धाक ।।
बाघु मलेछ पल मे पचषड । वे देहै मोकू नित दंड ।।१८८०।।
हमरी संका रावण मन धरै । भूमिगोचरी क्या सरभर करै ।।
जो तूम हमसो करो सनेह । तो हम सिखावै विद्या अत्रेह ।।१८८१।।
आकास गामिनी विद्या देह । देश देश का कौतुहल करेह ।।
सब पृथ्वी पर हो तुम बली । हम सो प्रीति किये होवै रली ।।१८८२।।

जनक का उत्तर

वहुरि भणै जगाक इह भाइ । तुम समुद्र वे तो भील गाइ ।।
बापी नीर पिवै सब कोइ । समुद्र उदक न वाछै कोइ ।।१८८३।।
तुम हो शशि वे सूर्य समान । देखत भान कला होइ आन ।।
पाडल पत्र दीमें बहु भाति । सूरज तेज सो नामी क्रान्ति ।।१८८४।।
अगनि पतगं त्रिण बहु जलै । दीप जोति मंदिर सब बलै ।।
होइ उजाला सब घर माहि । ता सरभर क्या कीर है राइ ।।१८८५।।
तुम गयद वह सिंह केसरी । विन देखै भाजै तिह घडी ।।
विद्याधर सुणि कोपे घणे । इन हमको ऐसे अब गणे ।।१८८६।।
भूमिगोचरी पशु सम चलें । हम आकाश तें पृथ्वी दलैं ।।
किसकी तू बहु करै सराह । भूमिगोचरी बखाणें ताहि ।।१८८७।।
पिरि जनक नृप ऐसे कही । वस इष्याक दसरथ नृप सही ।।
ताकै पटराणी हैं चार । पुत्र चारि तिण कूंषि अवतार ।।१८८८।।
एक सो पाच राणी है और । ते सोभै मंदिर की ठौर ।।
उत्तम आदिनाथ का बस । धरम तीर्थ भए जिन अस ।।१८८६।।
पछी जिम तुम उडो अकास । ऐसा बल पौरष उपहासि ।।
जो तुम दिक्षा लेण मन करो । आरजषड ते सिव सचरो ।।१८६०।।
तिहा सलाका त्रेसठ पुरुष । पूजै सुरपति मानै हरष ।।
इहा कोई आवै सुर देव । करण चैत्य जिणवर की सेव ।।१८६१।।

आरिजखड सम देस नहीं और । महापुरुष उपजै तिन ठौर ।।
रामचद्र लक्ष्मण बलवंत । तिनके गुणा को नाहीं अंत ।।१८६२।।

चन्द्रगति द्वारा स्वयंवर रचाने का प्रस्ताव

चन्द्रगति ये कह्या उपदेस । रच्यो स्वयंवर जनक नरेस ।।
वज्रावर्त्त धनुष है एक । वा कूं लो मंडप तल टेक ।।१८६३।।
जो नर करै धनुष टकार । बाण चलावै मंडप पार ।।
ताकू दीजे सीता धिया । ग्रैसा वचन जनक सौं कह्या ।।१८६४।।
जनक राय सोचै तिरण बार । कछु मन हरष कछु विस्मै सार ।।
रामचंद्र तै धनुष ना उठै । मेरा वचन पडै सब झूठै ।।१८६५।।
चद्रगति प्रभामडल सुकुमार । विद्याधर सहु लीना सार ।।
रथ परि जनक राय बैठाय । मिथलापुर के वन मे आय ।।१८६६।।

मिथिला नगरी

केई भूमि केई आकास । उतरे मिथला के चिहुं पास ।।
देखि नग्र मन भयौ उलास । भामडल मन लील विलास ।।१८६७।।
जनक भूप नगर मे गया । सकल लोक को अति सुख भया ।।
गली बटाई बाजार उछाड । झाकै अटा झरोखा वाडि ।।१८६८।।
हाट पटरण छाई सब ठोर । बाजा बजै नग्र मे सोर ।।
हस्ती चढया उछालै द्रव्य । दई असीस प्रजा मिल सर्व ।।१८६९।।
पट बैठे जनक नरेन्द्र । राजसभा मे अधिक नरेन्द्र ।।
कलस ढालि फिरि बैठा राज । सीधा सगला मनबंछित काज ।।१६००।।

रणवास मे राजा जनक

राजा जनक गया रणवास । ऊचे नीचे लेइ उसास ।।
बिदेहा राणी सेवा करै । चमर सहेली के कर ढलै ।।१६०१।।
पूछै राणी सुणौ नरनाथ । तुम चित अटके काहु साथ ।।
कवण देस की देखी नारि । तासू मन लाग्यो अपार ।।१६०२।।
मन माने तुम ब्याहो ताहि । मेरी बात सुणौं नर नाह ।।
तब राजा बोले सत भाव । पिछला भेद सुणाया राय ।।१६०३।।
मायामई अस्व मैं लिया । मो विजयारध गिरि ले गया ।।
विद्याधर घेरया सब देस । सीता मागै भामंडल नरेस ।।१६०४।।
बजरावरत धनुष है एक । वाकी उनकी है दृढ टेक ।।
जो कोई करै धनुष टंकार । सो ही कन्या का भरतार ।।१६०५।।

रामचंद्र न सके संभार । बे ले जाहि सीता नारि ॥
इह चिंता मेरे मन बसै । रामनें न द्यू तो जग हंसै ॥१६०६॥

राणी द्वारा चिन्ता प्रकट करना

इतनी सुणत राणी पिछताय । कवण पाप उदय मेरे श्राय ॥
जनमत भया पुत्र का हरण । कन्या जाइ तो पूरा मरण ॥१६०७॥
हाय हाय करि रोवै घणी । श्रैसी कठिन श्राणि कै बणी ॥
नव राजा समझावै वयण । श्रपणा मन राखो तुम श्रयन ॥१६०८॥
मारू विद्याधर सब ठौर । बे नहि श्रावै पाव न पौर ॥

सीता स्वयवर

राजा ने नवें स्वयवर रच्या । भली भली सौंज कर मच्या ॥१६०६॥
देस देस कु पठाए दूत । सकल पृथ्वीपति श्राई पहुत ॥
रामचद्र लक्ष्मण रु भरत । सत्रुघन सब का ले मन हरत ॥१६१०॥
श्राए सब मंडप राजान । कन्या कर जयमाला श्रान ॥
सुभस्वर ता है धीयता सग । रतन जडित कर छडी सुरग ॥१६११॥
खेचर भूचर भूपति घने । पहरि श्राभूषण श्राछे बणे ॥
एक तै एक नृप श्राये बली । कहा लगि वरणौं नामावली ॥१६१२॥
चंपापुर का हरिवाहन राय । ता ढिग धनप्रभु बैठा श्राय ॥
केतुमुख दुरमुख श्रौर प्रभामुख । श्री जैवाणारस का गुरुमुख ॥१६१३॥
जड़राजा भान सु प्रभा भूपती । मदिर बिसाल श्रीधर सुभमती ॥
वीरधर बधव भद्र तिह ठौर । नदकेस के पुरु नृप श्रौर ॥१६१४॥
गोविंद धर रघुपुरु का राव । राजा भोज सुभोज तिण ठाइ ॥
धाय नाम सगला का कहै । कंन्या देखि फिर मारग गहै ॥१६१५॥
राजकुंवर देखे बहू भाति । रामचद्र की देखी कान्ति ॥
बज्रावर्त्त धनुष तिहा धरचा । सेवा करै देव तसु घडा ॥१६१६॥
जे कोई धनुष चढावैं श्राय । सो सीता नै परणै राय ॥
जैसी बिजली तैसा बज्र । ज्वाला व्रत धनुष बहु श्रज्र ॥१६१७॥
फुकार फिरै तिहां नाग महान । कंपै भूपति जावैं भाणि ॥
केई धनुष पासि नहीं जावैं । सूर सुभट करै बहु उपाव ॥१६१८॥
जो कोई पहुचै किण ही भांति । भस्म होइ प्राण उड जात ॥
भूपति कहैं जनक कहा किया । इतने लोगो के प्राण जु लिया ॥१६१६॥

हमने छोडया ग्रैसा ब्याह । हम जीवत अपने घर जाह ।।
रूपवंत त्रिय सों क्या काज । बुरी भली सेती रह लाज ।।१९२१।।

सारा मान भंग इत भया । ब्रह्मचर्य पालै हम नया ।।
सकल भूप त्यां हारी मान । रामचन्द्र उठ्या तिरण बार ।।१९२२।।

राम द्वारा धनुष खेंचना

दशरथ नृप की आग्या लई । त्रिभुवन नाथ सो प्रणपति करी ।।
रवि सम तेज चन्द्र उणिहार । रामचंद्र का बल अंत न पार ।।१९२३।।

जैसा भेस सुदर्शण धीर । सोमैं कंचन वरण सरीर ।।
जिम समुद्र अति अगम अथाह । नही राम गुण को अवगाह ।।१९२४।।

कर सू धनुष जब लिया उठाइ । ततक्षण छिन मे लिया चढाइ ।।
करि टकार गह्यो जब बाण । गरज्यो धनुष अति मेघ समान ।।१९२५।।

बोलै मयूर पपीहा रटै । दादुर सबद सरोवर रटै ।।
धरतीस्वर गिर कपे घणे । जलह नीर तब उछले घणे ।।१९२६।।

सीता द्वारा वरमाला डालना

जै जै कार देवता करै । पहुप वृष्टि वरषै सिर परै ।।
रामचद गलै घाली माल । जै जै कार करैं भूपाल ।।१९२७।।

मान भग विद्याधर भए । लजावत होई उठि वए ।।
जनक दसरथ कै बाजे बजै । ता सबद सौं दुरजन लजै ।।१९२८।।

सिंघासन परि दसरथ राय । नमसकार कियो तिंह आय ।।
सीताराम की जोडी बनी । ते सोभा मुख जाइन गिनी ।।१९२९।।

ग्रैसी वस्तु नही जग माहि । जाकी पटतल दीजे ताहि ।।
चद्रकिरण खेचर भूपति । कन्या अस्टदस गुणवती ।।१९३०।।
रामचद्र कू दई विवाह । सीता संग अधिक उच्छाह ।।
लक्ष्मण नै लीना करि धनूष । उतारि चढाइ किया मन सुख ।।१९३१।
राजा सकल रहे मुंह बाहि । इन सम हम कोई जोधा नाहि ।।
भरत सोच करै मन बहुत । एक पिता हम च्यारू पूत ।।१९३२।।
मो पै धनुष उठ्या नहीं काय । इनु का पूरब पुन्य सहाय ।।
पुन्य प्रतापै ए हुआ बली । इनकी सरभर किम पाइं रली ।।१९३३।।
कैकई चितवै पुत्र की ग्रोर । मन मलीन देख्या तिरण ठोर ।।
सूरत मन की लाघी बात । पति सौं वचन कहै बहु भांति ।।१९३४।।
भरत तणां मनमैं वैराग । दीक्षा लेसी सब घर त्याग ।।
कनक गेह सुप्रभा नारि । लोकसुंदरी पुत्री तिण बार ।।१९३५।।

भरत का लोकसुंदरी से विवाह

बांहि कहो वरमाला लेहि । भरत तणे गले घालेइ ।।
जनक कनक प्रति कहै बुलाइ । कन्या आई मंडप ठाइ ।।१६३६।।

देखै सकल भूपती राइ । माला दई भरत गले घालि ।।
लोकसुंदरी व्याही भरत । तजि वैराग भोग सुख करत ।।१६३७।।

अं अं करम महा बलवत । मोह सिंधु मे बूडे अन्त ।।
भवसागर ते कठिन निकाल । जे उछलैं काहु बाल ।।१६३८।।

मोह सिला ले बोलै फेरि । जीव करम ने राख्या घेरि ।।
जनक नरेन्द्र दीनी जिवणार । देस देस के नृप की करै मुनहार ।।१६३९।।

मिष्ठानों का वर्णन

मंडप तलै वे बैठा भूप । सोवनथाल भरि रखे अनूप ।।
रत्नो जडित तवाई धरे । सुवन कटोरा दुग्ध ले भरे ।।१६४०।।

फीणा फीणी अरु बरफी स्वेत । घेबर लाडु परुस्या हेत ।।
खूरमे सीरा पूरी घनी । बहुत सुवास तनो की बनी ।।१६४१।।

घोल बडे व्यंजन बहु भांति । हरे जरद बहु गणे न जात ।।
भात दाल अति अत्त सुवास । सिखरण का दौंना धरि पाति ।।१६४२।।

तामे बूरा लायची लौंग । मेवा मेल्या तिहा मोहन भोग ।।
मीठा मिरच जीरो का मिल्या । लूण सघातै तिहां घिल्या ।।१६४३।।

जीम्या भूपति एकई पाति । चलु लेइ मुख सोध करात ।।
लौंग कपूर केशरि जावतरी । बीडा बाध्या चोली धरी ।।१६४४।।

भावे रत्न कनक नग जरे । बीडा बांधि तिन अग्रे धरे ।।
नृपति खाय सभा के बीच । लगाए अडिग चावै गला नीच ।।१६४५।।

केसरि छिडकी बहुत गुलाब । रंगारंग हुआ बहु भाव ।।
कामणि गावै मंगलचार । सहु कुटंब की आवै नार ।।१६४६।।

चौरी रची चउपड बणाइ । पढ़ै बेद धुनि पंडित राइ ।।
बाजा बहु बाजै दरबार । नृत्य करै गावैं नर नारि ।।१६४७।।

रामचंद्र सीता का ब्याह । दोऊ कुल मे अधिक उछाह ।।
बाही लगन विवाहो घणी । ते सुख सोभा जाय न गिणी ।।१६४८।।

सोदा बहुत दिया भूपती । नाही गिणत मैंताछती ।।
रहस रली सुं सुधरया काज । आय अयोध्या भुगतैं राज ।।१६४९।।

दूहा

चल कुटब लक्ष्मी घणी, पाई पुन्य पसाइ ॥
रामचंद्र लक्ष्मण बडे, भए मुकटमणि राय ॥१६५०॥

इति श्री पद्मपुराणे रामचंद्र सीता विवाह वरणन विधानकं

२५ वां विधानक

चौपई

अयोध्या आगमन

सहु परिवार अयोध्या आइ । करी बधाई दशरथ राइ ॥
सुख मे बीतैं आठो जाम । भोग्यां भुगतै सीताराम ॥१६५१॥

सुद असाढ अष्टमी सुभघडी । पूजा की सामग्री करी ॥
देव सथान सवारघा घणा । भला भला चंदोवा तणां ॥१६५२॥

अष्ट दरब सब लीये सुध । पूजा पढ़ै पडित सुबुधि ॥
गगा का जल उत्तम नीर । भरे कलस भारी तिहुं तीर ॥१६५३॥

अति सुवास जल भरया सुवास । व्रत अठाई करैं परिवार ॥
अरचा चरचा पूजा पाठ । असी विध बीते दिन आठ ॥१६५४॥

पूरणवासी करैं सातीक । उत्तम चलै धरम की लीक ॥
किया महोछव श्री जिन थान । देवसास्त्रगुरु प्रवांन ॥१६५५॥

गंधोदक लेना

गंधोदिक सिर लिया चढाइ । महल मांहि फिर दियो पठाइ ॥
सब राणी निज अग लगाइ । सुप्रभा ने नहीं पहुच्या जाइ ॥१६५६॥

जे व भ त्रिया गंधोदिक लेइ । ताकू पुत्र जिनेश्वर देइ ॥
कुष्टी का कुष्ट जु भगै । निरमल होइ देही जगमगै ॥१६५७॥

कंचन सम काया तसु होइ । निसचै व्रत करै जो कोइ ॥

सुप्रभा राणी की व्यथा

सुप्रभा राणी कर अहंकार । अणसरण लें पौढी तिणबार ॥१६५८॥

पसचाताप मन मैं अति धरै । हीन पुन्य जो पूरब करै ॥
पति का तो कहुं दूषण नही । तातैं हमारी कांण न रही ॥१६५६॥

अब मैं तज दूंगी निज पराण । हमारी आज घटाई काण ॥
राजा आये महल मंझार । देखी पडी सुप्रभा नार ॥१६६०॥

मलिन रूप देखी वहा पडी । जाणै प्राण तजै इस घडी ।।
दशरथ जाइ पलग परि बैठि । राणी उत्तर कर बैठी हेठ ।।१६६१।।
बाहु पकड करि लई उठाय । पोलग ऊपर निज पास बिठाय ।।
किण कारण तू करै अहकार । किए मनुष्य तो कू दई गार ।।१६६२।।
ताकी जीभ कटाऊ तुरन्त । जैसे ही पाऊ सुष तत ।।
सुप्रभा कहै सुणो नरेस । मोकू कहा देखी हीण भेस ।।१६६३।।
सकल कला गुण माहि प्रवीण । कवण वस्तु मैं जाणौं हीण ।।
गधोदक सब कू तुम दिया । मेरे ताई क्यु न वाटिया ।।१६६४।।
अब हूं मरू माडि सन्यास । अपणे जीवण की तज आस ।।
गाय कहैं तैं सुण्या पुराण । असी चित्त मैं भूल न आण ।।१६६५।।
क्रोध करि जो आतमा दहै । लख चौरासी मा दुख सहै ।।
कुमति मरण भवभव होइ दुख । चिहु गति माहि न पावै सुख ।।१६६६।।
गधोदिक लीया थी कचुकी । सुप्रभा राणी क्रोध मा वकी ।।
सुप्रभा बोलै सुणु नाथ । मुह मोडचा भीर ईनह हाथ ।।१६६७।।
मिल्यो तिहा सगलो रणवास । बैठी घेरि राणी चिहु पासि ।।
इह गधोदिक श्री जिनवर तणो । इस पर क्रोध न कीजे घणो ।।१६६८।।

कंचुकी को नृत्य का आदेश

अंजुली भर छिडकी सब त्रिया । ततक्षिण क्रोध पयाण किया ।।
राजा कचुकी सौ तब कहै । वेग नाचि राणी सुख लहै ।।१६६९।।

कचुकी का उत्तर

बोलै कचुकी सुणो नरेश । वृध्य भए पंडुरा केस ।।
टूटै दात देही जा जुरी । सब सरीर मे लीलरी पडी ।।१६७०।।
कापै चरण थर हरै सरीर । बहै नाक नैणा थी नीर ।।
लाठी टेक सुर ढीले भए । तरुणा पाका पौरुष गये ।।१६७१।।
जैसी फूलै है अति साझ । जिम जोवन विनसै पल माझ ।।
हू किण पर नाचू भूपती । देही मे बल रह्या न रती ।।१६७२।।
तुमारै ही इहै प्रसाद । बहुतेरा सुख भुगते स्वाद ।।
रूपरग चतुराई घणी । मुझ सो कोई न गुंणी ।।१६७३।।
वृद्ध भये कला सब घट गई । अख्यर पद की सुध भई ।।

दशरथ पर प्रभाव

दसरथ के मन साची लगी । वैराग भाव की चेष्टा जगी ।।१६७४।।

जोबन जल बुदबुदा समान । पलमैं होइ जाइ तिहा हानि ॥
जोबन समै धरम कबहू ना करै । ग्रगले भव कुंवो हित धरै ॥१९७५॥
जीव लपटियो माया जाल । ग्राय ग्रचिंत्यौ व्यापै काल ॥
जरा घटाई देही मांस । तो भी इच्छै भोग विलास ॥१९७६॥
ग्रगली सुध सब दई विसार । पुत्र ग्रर लक्ष्मी लाडई नार ॥
सुपना की सी है सब रिद्ध । जागति कबहू न दीसै सिध ॥१९७८॥
सकल विभूत पुण्य तैं होइ । ताका भेद समभै सब कोइ ॥
पुण्य सिवाय सगा कोई नहिं । कहा राचै ऐसा सुख माहिं ॥१९७९॥
उपजै विरासैं होइ विछोह । तासु कहा कीजिये मोह ॥
धन्य साध जिन तजियो गेह । ममता कबहू न राखै गेह ॥१९८०॥
मेरा है यह पुत्र सपूत । तिसको सौंपो राज विभूत ॥
ग्रातम का हित करू मन लाय । धरू साधु व्रत मन बच काय ॥१९८१॥
ग्रैसी चित चिंता नृप करै । पंच महाव्रत कब मन धरै ॥

सर्व विभूति मुनि से धर्मोपदेश का श्रवण

सर्वभूति मुनिबर पै ग्राइ । च्यार ग्यान झलकै तसु काय ॥१९८२॥
बहुत शिष्य मुनिवर ता संग । तीन ग्यान सों सोभै ग्रग ॥
केइ तरु तल केई जिन भूमि । केई सिला केई परवत गिन ॥१९८३॥
केई सरिता के तट तीर । धरयो ध्यान मन मेरु सुधीर ॥
रितु चौमासो काली घटा । सकल गयरण मेघमो घटा ॥१९८४॥
चमकै दामिरण गरजै घरणा । मूसल धारा बरसै घरणा ॥
मुनिवर बैठा ग्रपरणें ध्यान । लगै बूंद ग्रति तीर समान । १९८५॥
सहै परीस्या बीस ग्रन दोय । दया भाव सब ऊपर होइ ॥
बाजा बजै बहुत परभात । उठै लोग जिन सुमरै प्रात ।।१९८६ ।
करि सनान जिन पूजा करी । भूपति मुनि बदन चित धरी ॥
राय संघात चाल्या बहु लोग । देख्या साध ग्रातमा जोग ॥१९८७॥
दीनी तीन प्रदक्षिरणा राय । केवलि वाक्य सुण्या मन लाय ॥
सकल सदेह चित्त का गया । राजा फिर मंदिर ग्राइया ॥१९८८॥
राणी सो बहु मंदिर मांझ । राजा सेव करै दिन सांझ ॥
भोग मुगति मैं बीतै काज । दसरथ करै ग्रजोध्या राज ॥१९८९॥

इति श्री पद्मपुराणे विश्वभूति मुनिबर समीप धर्म श्रवण विधानकं

२६ वां विधानक

चौपई

भामंडल की चिन्ता

गई चउमास सरद रितु आई। कार्तिक मास महा सुखदाई ।।
धान पाण पाणी का स्वाद। फूले कमल करै अलि नाद ।।१९९०।।
चद्रसूरज की निरमल क्राति। उज्वल जल सोभै बहु भाति ।।
भामडल मन चिंता घणी। अई कैसी करम गति बणी ।।१९९१।।
मम इच्छा सीता की करी। व्याही राम भूमि गोचरी ।।
हम विद्याधर देव समान। हमारी कछुयन रही काण ।।१९९२।।
अैसी खुटक रहै दिन रात। वस्तध्वज कही मन की बात ।।
वृहतकेत साभलि सब भेद। करै सोच मन मा बहु खेद ।।१९९३।।
वोलै अन्य मंत्री तिहा घणा। दाव न को हम पास ई वणा ।।
सीता सम कोई नहि नारि। स्वरग मध्य पाताल मभारि ।।१९९४।।
रामचन्द्र सम अवर न बली। ते सीता सु माने रली ।।
लक्षमण तणौ अस्यौ प्राकर्म। उनकै सदा सहाई धर्म ।।१९९५।।
जब सीता व्याही थी नाहि। तब चोर ल्यावते ताहि ।।
तब कैसे लेता रामचन्द्र। हमौं किया जब भूठा दुद ।।१९९६।।
अब वह कैसे हरियन जाय। राम लषण तै देव डराइ ।।
बृहस्पति केतु मंत्री तब कहै। कहा सोच तुम मनमे रहै ।।१९९७।।
विद्याधर हम जइसा देव। सीता हरन लागै ई भेव ।।
राम लक्षमण मार्डै जुध। भूमि गोचरी लडै असुध ।।१९९८।।
हम विमाण चढि लेइ अकास। भूमिगोचरी के पुरबास ।।
भामडल वीमाण चढ चलै। वृहतकेत मंत्री सब मिलै ।।१९९९।।
बहुत सुभट सग लीया चढाइ। पहुचे विदग्ध देस मा जाय ।।

भामंडल को जाति स्मरण होना

महीधर परवत देख्या वहुदेस जाती समरण भया नरेस ।।२०००।।
पूरव भव करते इहा राज। द्विज नारी राखी वे काज ।।
तप करि विप्र भया वह देव। चित्रोत्सवा मै जुगल भए एव। २००१।।
जनमत समै मुझे सुर हरया। चद्रगति तरणं मदिर ले धरया ।।
महाकुबुधि विचारी बुरी। बहन हरन की इच्छा धरी ।।२००२।।
अपने कुल की निन्दा करी। आई मुरछा मृतक सम परी ।।
बहुर गये रथनूपुर देस। चन्द्राइण देख्या सुत भेस ।।२००३।।

वैद किया बुलाय उपचार । सीत कमल उर धरे समार ।।
कामिन फेरैं देही पर हाथ । बीजणा करैं सखी तिरण साथ ।।२००४।।
हूं सचेत बोलिया कुमार । पूछैं राय पुत्र की सार ।।
पिछला कह्या सकल सनमध । विषयां कारण हुआ ग्रंध ।।२००५।।
सीता बहिन हूं वाको भ्रात । उपजे कुंख विदेही मात ।।
जनम समै हरि ल्याया देव । तुम घर छोड दिया इह भेव ।।२००६।।
सकल सभा साभलि सनमध । सब ससार जाणियो धंध ।।
पोता कू दीनूं सब राज । चले सुत पिता दीक्षा काज ।।२००७।।
महेन्द्र गिर इक उत्तम थान । सरवभूत हित मुनि ढिंग ग्रांन ।।
करि जोड कीनूं नमस्कार । प्रभु हमे दिक्षा द्यो इणबार ।।२००८।।
बाजा बाजैं गुनी जसथाय । नृत्य करैं ग्रपछर तिण ठाय ।।
करैं ग्रारती महोच्छा घणे । भाट जैजै कार जनक भणैं ।।२००६।।
प्रभामंडल जनक सुत सूर । ग्यानवत दाता भर पूर ।।
धन्य धन्य धरी धरम की देह । धरमध्यान सु ल्याया नेह ।।२०१०।।

सीता द्वारा पिता के नाम पर चिन्तन

सीतां सुण्यां पिता का नाम । सोचै घणां राखि चित ठांम ।।
जनक पुत्र इहै है नृप कौण । मो सगि जनम हुवा था जौण ।।२०११।।
कोई हर ले गया जनम की वार । ताकी कबहु न पाई पार ।।
सीता के भरि ग्राये नैण । रामचद्र तब पूछं वयण ।।२०१२।।
किम इण भरे कहा तुस दुख । तुम कू है मुंह मांग्या सुख ।।
साची बात कहो समझाय । क्यूं दिलगीर भई किण भाइ ।।२०१३।।
पिछली कही जनक की बात । मो साथैं इक जन्म्या भ्रात ।।
वाकुं कोइ ले गया उठाइ । बोलैं भाट जनक सुत राय ।।२०१४
तुम चालो तो देख्या जाइ । दरसन भ्रात को पाऊं राय ।।

दशरथ का मुनि के पास जाना

बीती रयण भयो परभात । दशरथ चल्यौ मुनिवर की जात ।।२०१५।।
च्यारू पुत्र सहित परिवार । बहुतै लोग भए ग्रसवार ।।
विद्याधर की सेण्या घणी । मंदिर माया रूपी बनी ।।२०१६।।
राजसभा खेचर की जुडी । धनैं ग्रजोध्या छाई खरी ।।
दरसन कियो मुनिवर को जाइ । नमस्कार कीया बहु भाइ ।।२०१७।।

विद्याधर आय सब मिले । समाधान पूछे बहु चले ।।
चरचा करैं धरम की सर्व । सातों तत्व और षट द्रव्य ।।२०१८।।

नव पदार्थ नै काया पच । जिनवाणी मुख बोलै सच ।।
आदि अंत की चरचा करैं । जिनेश्वर वाक्य हिये मे धरैं ।।२०१९।।

दशरथ नृप पूछै कर जोडि । प्रभुजी इनकी कहो वहोड ।।
किण कारण यह लेत है जोग । छोडे केम राज सुख भोग ।।२०२०।।

मुनि द्वारा बतलाना

बोले मुनिवर ग्यान विचार । विदग्ध देस महीधर की पार ।।
कुंडलमडल तिहा भूपती । पिंगल विप्र करै तिहा थियती ।।२०२१।।

नारि लई विप्र की छीन । विप्र दलिद्री था अति दीन ।।
चक्रध्वज प्रभावती का सुता । राजा ले त्रिय भोगता ।।२०२२।।

विप्र महा दुख घणा मन करया । जती पास संयम आदरया ।।
तप करि लह्या महेन्द्र विमाण । पिछला भव समझ धरी ग्यांन ।२०२३।।

अनरण कुंडल मडल गह्या । वाध्या ताहि बहुत दुख दिया ।।
बहुरि कुंडल दीया छोडि । मुनि मुख सुनी करम की खोडि ।।२०२४।।

तिहाँ अणुव्रत लिया मन लाइ । चित्रोत्सवा तप कीया जाइ ।।
दोउ उपज्या गरभ विदेह । जनक भूप के जुगलया एह ।।२०२५।।

वैर समझि इन बालक हर्या । गयण गया गिर कदर फिर्या ।।
विजयारध रथनूंपुर जाग । चद्रगति फिर घेर्या आय ।।२०२६।।

पुष्पवती नैं पाल्या याहि । नाम धर्या प्रभामडल ताहि ।।
नारद लिखी सीता का रूप । प्रभामडल तब मोह्या भूप ।।२०२७।।

उन बाछी हरणे कु सीया । जानी सुमरण ग्यान उपजीया ।।
इण कारण उपज्या वैराग । राज रिध दी सब ही त्याग ।।२०२८।।

व्योरा सुणि सब चक्रित भए । सब सदेह इनू के गये ।।

प्रभामडल द्वारा प्रश्न करना

प्रभामडल तब पूछै प्रश्न । चद्रगति पुष्पवती प्रसंग ।।२०२९।।

कवण सनमध इणु सग मिल्या । पुत्र समान इनु कै पल्या ।।
भरतक्षेत्र मोद इम गाम । विमुंच विप्र निवसै तिण ठाम ।।२०३०।।

अनकोसा ताकी है स्त्री । अतिभूत पुत्र सरिसा पुत्तरी ।।
ग्याना विप्र उर जामात । सरसा कु ले भाज्या भ्रात ।।२०३१।।

मात पिता सुत निकसे खोज । तीनूं व्याकुल रोवैं रोज ।।
भर्या सौंज सों छोड्या गेह । तीनूं बिछुडे ढूंढत एह ।।२०३२।।

बहुत प्रकारैं ले ले नाम । ढूंढत फिरैं नगर पुर ग्राम ।।
घर कूं चोर लूट ले गये । तीनुं फेर भिखारी भए ।।२०३३।।

विमुच विप्र जमुना पर गया । भिक्षा मागि निज मारग लिया ।।
इन कुंवास नरइ मलीन । भ्रमत भ्रमत देही भई छीन ।।२०३४।।

उरजा देखि तब वार्म्यों मिली । अनुक्रम बात पाछली मिली ।।
उनव मती कही समभाय । बेटी किसके घरै समाय ।।२०३५।।
हम तुम दोन्युं एक ही जात । मेरै पुत्र हरी है राति ।।
पुत्र कू मिले गया संदेह । सरबार पुर गये दोऊं एह ।।२०३६।।
कमलाति अर्जिका कै पास । दिक्षा लई सुगति की आस ।।
विमुच विप्र भी दिक्षा लई । करी तपस्या मन वच कई ।।२०३७।।
पहुचे तीनुं ग्रीव विमाण । अदमुत सरिसा अवर कयाण ।।
तीनु थापै आंन की आन । करैं बहुत मिथ्या मत ध्यान ।।२०३८।।

जैन धरम की निंदा करै । मिथ्या धरम को निश्चै धरै ।।
सरसा बहुगति भ्रमी अथाइ । अंत भई हिरणी परजाइ ।।२०३९।।

चल्यो केहरी पाछै दोडि । हिरणी बसी दवानल माहि ।।
बहुरि कनक परवत परिजाइ । सिंघ देखि भागी उचकाय ।।२०४०।।

छुटे प्राण हिरणी तहा मुई । चक्रध्वज सुता चित्रोत्सवा भई ।।
ग्याना भ्रम्या बहुत ससार । धूमकेत घर लीया अवतार ।।२०४१।।
पिंगला नास पुत्र ते भया । चित्रोत्सवा पुंगल ले गया ।।
अतिभूत च्यारी गति भ्रम्या । अंत समै हुस गति जम्या ।।२०४२।।

ताराछ सरोवर क्रीडा करै । इक दिन जाय कीच मे पडै ।।
लाग्यो कीच पाख भर गई । उड न सकै अपाहिज भई ।।२०४३।।
जिनवर थान जाइ गिर पडै । जसोमित्र तिहा मुनि तप करैं ।।
अंत सुण्या परमेष्ठी नाम । किन्नर देव भया तिण ठाम ।।२०४४।।
दस हजार संवतसर आव । कुंडलमंडल हुवा राव ।।
विदग्ध नगर का राजा हुवा । पिंगल संग पहुंची चित्रोत्सवा ।।२०४५।।
त्रिया चोर द्विज नैं दुख दिया । पिंगल तप करि देवता भया ।।
विमुच जीव चन्द्रगति भूप । अनकोसा पुष्पावती रूप ।।२०४६।।
उरजा भई विदेहा नारि । चित्रोत्सवा सीता अवतार ।।

भाई बहिन मिलन

भाई बहन जुगलिया भए । पुत्री पुत्र जनक घरि गए ।।२०४७।।
पूरव भव का कारण मिल्या । इस सनबध इसके घर पल्या ।।
सुण्यो सकल पिछलो बिरतात । उठी रोम सब ही के गात ।।२०४८।।
भामंडल सीता मिले रोइ । समभावें उनको सब कोइ ।।
जनक कनै ए सब वेग पुचाई । अनितेडाइ विदेहा माई ।।२०४९।।
गया दूत पत्र दीया ताहि । बाचित मोह उदय भयो आइ ।।
पवनवेग तब कहै तुम चलो । पुत्र आपना सेती मिलो ।।२०५०।।
चढे विमान सहित परिवार । भयो सुख मन हरष अपार ।।
गए अजोध्या मिले गल लागि । मात पिता मिलिया बड भागि ।।२०५१।।
धन्य जननी जिन पायो वीर । बाललीला देखी सधीर ।।
दिखलाई लीला बहुभाति । भयो सुख अति पित अरु मात ।।२०५२।।
रामचद्र कै मन उल्लास । सकल कुटंब मिल्यो ता पास ।।
भामंडल कहै दिक्षा लेहुं । रामचन्द्र समझावै भेउ ।।२०५३।।
तुम बालक जोवन भरी देह । हम तुम हुवा अधिक सनेह ।।
जब हम दिक्षा लेस्या जाइ । तब तुम हम सग लीज्यो आइ ।।२०५४।।
भामडल सेना सयुक्त । रथनूपुर मे जाय पहुंत ।।
जनक कनक का सव परिवार । मिथलापुरी गए तिहवार ।।२०५५।।
सीता राम अधिक सुख भया । बहु प्रकार आनद सब थया ।
सगला की चिंता मिट गयी । दिन दिन सहस विभव गुण थई ।।२०५६।।

अडिल्ल

पुण्य उदय परिवार बधै दिन दिन घणा ।
बिछुरै प्रीतम मिलै बहुत धरि सज्जणा ।।
बैरी लागै पाय धरम परभाव सू ।।
संपति मिलै अनेक कृपा जिनराज सौं ।।२०५७।।

इति श्री पद्मपुराणे भामंडल समागम विधानकं

२७ वां विधानक

चौपई

दशरथ का मुनि के पास जाकर अपने पूर्व भव पूछना

राजा दशरथ मुनि पासैं गया । नमसकार करि चरणौं नया ।।
स्वामी मो मन रह्यो सन्देह । मो पूरब भव भाखो तेह ।।२०५८।।

कवण पुण्य श्री पाई रिद्ध । जनक कनक सुत च्यारौं विध ॥
सरवभूति मुनि श्रवधि विचार । ज्यों ज्यों भ्रमै संसार ॥२०५६॥

हम तुम रुल्या अनंती बार । भ्रमता कबहूं न पायो पार ॥
तीन लोक में नही विसराम । स्वर्ग मध्य पाताल सुठांम ॥२०६०॥

च्यारौ गति मे डोल्यो हस । कब उत्तम कब नीचै बंस ॥
सप्त तत्त्व के सूच्छम भेद । जाय सुरात ससय तरु छेद ॥२०६१॥

नित प्रति राखै उत्तम ध्यान । जैन धरम का सुरौं पुराण ॥
दान चार दे वित्त समान । श्रौषद श्रन्न श्रभय का दांन ॥२०२६२॥

जीव तत्त्व का सुरौं बयाण । एकै जीवइ निरंजन जान ॥
दोइ प्रकार ससारी प्रान । भव श्रभव्य जीव धरि ध्यान ॥२०६३॥

भव्य सोहौ जाणै ये भेव । मन वच सत्य जिनेस्वर देव ॥
पूजा दान सामायिक करै । पाप कर्म सबै परिहरै ॥२०६४॥

तो निश्चय सिद्धालय जाय । समकित सु रहैं दया के भाव ॥
कैई सिद्ध होइंगे श्रौर । पावैंगे तो निर्भय ठौर ॥२०६५॥

श्रभव्य जीव दरसन तै दूर । देव शास्त्र गुरु समझैं नही मूल ॥
जिन वाणी ताकूं न सुहाइ । कुगुरु कुदेव कुशास्त्र ते धाइ ॥२०६६॥

समकित दया न समझैं कुछ । च्यारो गति मांहि सबै तुच्छ ॥
उपजत बिनसत लगै न बार । ऐसे जीव रुलै संसार ॥२०६७॥

तिहु लोक विरत घट जिम भरै । तिहा के जीव नही नीवरे ॥
मोक्ष थानक भरि पूरन थाइ । नरक निगोद न रंच घटाइ ॥२०६८॥

धरम श्रधरम रु जीव श्रजीव । काल श्राकास द्रव्य षट नीव ॥
नव पदार्थ श्राने पच काय । सकल भेद कहियो समझाय ॥२०६९॥

सेना पुर नग्र तिहा बसती घणी । उपसत नृप भामणी तसु तणी ॥
जैन धर्म सौं प्रीत न चित्त । चंडी मुंडी मंडी पूजै सु चित्त ॥२०७०॥

मिथ्या धरम करै मन ल्याय । तीरथ तीरथ सप्त भ्रमाय ॥
दया दान समझै नहीं भेव । पाप प्रमाद की इच्छा करेव ॥२०७१॥

करै बरत खावैं कंद मूल । तिल दांणा बहुला फल फूल ॥
सिंघाडा बींध्या को चूंन । बरत खांड नैं सीधा लूण ॥२०७२॥

काया पोष बरत बहु किया । झूंठी क्रीया सौं चित दीया ॥
जल में कूच बिराबै मीन । छापा तिलक ध्यांन करि हीन ॥२०७३॥

अणछाणी जल करै रसोइ । बहुत पाप ताकूं नित होइ ।।
मरि करि पहुते नरक मझार । चउरासी लख भ्रम्या अपार ।।२०७४।।

दशरथ के पूर्व भाव

भ्रमत भ्रमत इद्रकपुर नग्र । करै राज राजा जसोभद्र ।।
धारणी त्रिया तासु पट घनी । धारण पुत्र सोभा अति बनी ।।२०७५।।
व्याही नयण सु दरि नारि । आया मुनिवर लेण आहार ।।
विघसुं द्वारा पेषण किया । ऊचा आसण बैसण दिया ।।२०७६।।
चरण धोय जल सीस चढाइ । वइयावर्त्त किया बहु भाइ ।।
मास उपासी मुनिवर जती । सुध आहार दिवो भूपती ।।२०७७।।

अषय दान दियो मुनिवर तहा । अधिक पुनीतण दपति कहा ।।
समकित सु पालै अनुवर्त्त । देवसास्त्र करै गुरुभक्त ।।२०७८।।
पूरण आव करि तज्या परान । क्षेत्र विदेह धातकी आन ।।
भोग भूम दपति तिहा पाइ । दोनुं भए जुगलिया आइ ।।२०७९।।
तीन पल्य की आयु प्रमाण । भुगति तीसरे स्वर्ग विमाण ।।
उहा तै चए प्रथइ देस । नदघोष रहै तिहा नरेस ।।२०८०।।

वसुधा है ताकी असतरी । नदवरधन जनम्या सुभ घरी ।।
कोडि पुरव की भुगती आव । जसोधर पाम सुण्या धरम के भाव ।।२०८१।।

दिक्षा लही जतीश्वर पास । जसोधर मुनि लौकातिक वास ।।
नद बरधन पचम सुरथान । भुगत आव फुन चया निदान ।।२०८२।।
मेरु सुदरसन पछिम त्रोर । विजयारध परवत की ठोर ।।
ससीपुर नग्र रत्नमाली भूप । विद्युलता राणी सु स्वरूप ।।२०८३।।
सुरजय ताकै भया सुपुत्र । विद्याधर बल सूं संजुक्त ।।
सिध नग्र बज्र लोचव राय । रत्नमाली चढे जुधकर भाय ।।२०८४।।

दारुन यूध दोउ धा भयो । रतनसाली नै क्रोध उपनुं भयो ।।
अगनि बाण कर लिया सभारि । मारि मारि किये दुरजन ठार ।।२०८५।।

देव एक आयो तिण ठाम । समझाया रत्नमाली नाम ।।
जो मारैगा इतने लोग । तोकू होसी भव भव विजोग ।।२०८६।।
जे कोई एक जीवनै हनै । ताको हुवै नरक की गनै ।।
भव पिछला देव निज कहै । राजा क्रोध छोडि इम कहै ।।२०८७।।

गधारी नगरी नृप भूत । उपमती नामइ पिरोहित्त ।।
हिस्या करै था घणी । इक दिन लबधि पुन्य की वणी ।।२०८८।।

दशरथ का पूर्व भव

कमल गर्भ मुनि आगम भया । सुणि नरेस पूजा कूं गया ।।
प्रदक्षिणा दई नृप तीन । नमस्कार करि बोलै दीन ।।२०८६।।
स्वामी कहो धरम समझाय । पाप पुन्य का कैसा भाय ।।
कहै मुनीसर सुणौ नरेस । पुंनि तैं जस होवै देस विदेस ।।२०६०।।
पुंन्य तैं ह्वं संसार मे रिद्ध । पुनि ते पावै सगली सिद्ध ।।
पाप करम नित करैं ते मूढ । दया पालै हिंस्या रूद ।।२०६१।।
मरि करि चहूगति माहि भ्रमई । खोटी गति मां वनसैं जमई ।।
राजा सुण्यां धरम का भाव । थर हर कर कंप्या सब गांव ।।२०६२।।
उत नरेन्द्र उपसमी द्विज । दिष्या पालै ब्रह्मचर्य ।।
तप करि पहूता स्वर्ग विमांण । पल्य पाच तिहा आयु पमांण ।।२०६३।।
प्रोहित जीव मिथ्या मन धरी । जैन चरचा राजा कै धरी ।।
उहां तैं लोक मध्य भए आइ । राजहस्त भूत का जीव है राइ ।।२०६४।।
प्रोहित जीव चय बडवा भया । हस्तनी गर्भ बडवा जिय चया ।।
हस्ती भूपति का गजराय । बहुत दिवस तिहा गए विहाय ।।२०६५।।
जुध समैं लागे बहु घाव । छूटा प्राण सग्राम की ठाव ।।
धीमत पुत्र हसति घर जाइया । जोजन गंधा राणी व्याहिया ।।२०६६।।
अर सूदन पुत्र हस्ती का जीव । दिन दिन बढै सुभट की नीव ।।
जाति स्मरण उपज्या तिण वार । कमलमर्द पले तप सार ।।२०६७।।
सतार स्वर्ग पाइया विमाण । हस्ती जीव मदार वण आण ।।
भया मृग तीहा पुगी आव । उपज्या गरभ भीलन की ठाव ।।२०६८।।
कालजर भील कहावै नाव । आखेटक करम सु राखै भाव ।।
मरि कर गया सरकरा भूमि । कठिन करम तिहा आया भूमि ।।२०६६।।
भ्रम्या जौनि चउरासी लाख । समकित कदेइ न मुखतै भाष ।।
भ्रम संसार मनुष गति लही । तिहा आइ कछु आश्रम गही ।।२१००।।
मैं अब आइ संबोध्या तोहि । असुभ करम का टूटा मोह ।।
करी तपस्या छोडे प्राण । रत्नमाली नृप हू भया आन ।।२१०१।।
रत्नमाली अन सूरज रजं । दोउं करथा पाप का कर्ज ।।
तिलक सुन्दर मुनि पै तब आइ । दिक्षा लई मुगति कै भाइ ।।२१०२।।
सूरज रज महा सुक्र विमांण । उहां तै चय दसरथ भया आण ।।
नदघोष ग्रीवक तै चया । सरवभूति मुनिवर वे भया ।।२१०३।।
चय इक देव हुवा है जनक । रत्नमाली जीव भया है कनक ।।
इण विध सुण्यां सकल परजाइ । ससय मन तैं गया बिलाय ।।२१०४।।

दूहा

सब परजाइ दसरथ सुण्या, ज्यो ज्यो भमिया हंस ।।
पुन्यवत सब जग प्रगट, सबतै उत्तिम वंस ।।२१०५।।

चौपई

दशरथ का वापिस घर पर आना

राजा फिरि आयो घरमाहि । मदिर गये भई तब साझ ।।
सरद रितु सुहावणी घणी । आभूषन की सोभा घनी ।।२१०६।।
चदन अगर सो अगीठी भरी । बास मदक रही तिन खरी ।।
ऊनमई सेज्या पाटवर सोडि । केसर भरे गीदवे तिरण ठोर ।।२१०७।।
दुग्धपान के कीजे भोग । जो दुख भूलै देख असोग ।।
बिछे गिलम तिहा अति ही अनूप । तणे चद्रवे सेज्या रूप ।।२१०८।।
उत्तम औषध खावै वणाइ । तिनले गुण वरभे नही जाइ ।।
अैमे सुखिया भुगतै सुख । दुखिया तणा सुणु अब दुख ।।२१०९।।
फाटे बसतर लूषी देह । मैलो मन अर पाप सनेह ।।
काठा मन अनै पानी धपै । औस होई धाम मे तपै ।।२११०।।
कठिन कठिन सो बीतै काल । पाप करम का एही हुवाल ।।
जैसी करणी तैसी गति । जाणं ए ससारी थिति ।।२१११।।

दूहा

शुभ अशुभ का भाव ए, देखो समभि विचार ।।
सुपना का सा सुख ए, जानि न लागै बार ।।२११२।।

चौपई

वैराग्य भाव—रामचन्द्र को राज सौंपना

राजा मंत्री सब लये बुलाइ । अब हम दिक्षा लेस्या जाइ ।।
रामचद्र को सोप्यो राज । प्रजा तणी वह राखै लाज ।।२११३।।
मत्री रुदन करै तिरण बार । राणी रोवै महल मझार ।।
भरत विचार करै जाहि । सोचै बहुतिहा अै दुखदाहि ।।२११४।।
प्रथम पुन्य तै अब मैं तरघा । मोकूं नाही राजा करघा ।।
अब मैं दिक्षा लेस्यु पिता सग । जो नही हुवै मेरा मान भंग ।।२११५।।
कैकेयी पुत्र देख्यो विरकत्त । राजा वर आण्यो तब चित्त ।।
गई भूप पासै तिरण बार । सकल सभा कीयो नमस्कार ।।२११६।।

कैकयी का दशरथ के पास आना एवं अपने वर मांगना

अर्द्ध स्यंघासण दियो नरेस । हाथ जोडि बोले भुवनेस ।।
मोकु वर दीना तुम क्या किया । अब मोकूं दीजे करि दया ।।२११७।।
तुम सम दाता कोई नही । जुग जुग की तरहै तुम मही ।।
बोलै राय सुणों कैकिया । अब हम चाहै दिष्या लिया ।।२११८।।
जो कछु वस्तु भली मो पासि । मागि बेग ल्यो पुरौं आस ।।
राणी नयण भरै बहू नीर । व्याप्या कत बिछोहा पीर ।।२११९।।
नीची देखै धरती खणै । बढी बेर पीछै मुख भणै ।।
भरत लेण कहत है जोग । मैं किम सहस्यौ पुत्र विजोग ।।२१२०।।
अब जो भरत नै द्यो राज । तो अब रहै हमारी लाज ।।

दशरथ द्वारा विचार

राजा दशरथ करै विचार । कठिन वस्तु लै मागी नारि ।।२१२१।।
रामचद्र सुत महा पवित्र । लक्षमण मेरै महा विचित्र ।।
भरत राज पावै किण हाथ । हारयो वचन त्रिया कै हाथ ।।२१२२।।
रामचन्द्र जे पावै राज । भरत करै दिक्ष्या का काज ।।
मरै कैकेयी पुत्र विजोग । मोकूं बुरा कहैं सब लोग ।।२१२३।।
रामचद्र हरि लियो बुलाय । सब विरतात कहै समझाय ।।
कैकेयी नै मैं कह्यो वर दैन । बल करि कियो राज सब लैन २१२४।।
जो मैं बाच कुवाच अब करू । पृथ्वी माहि अपजस सिर धरूं ।।
भरत लेय जो दिक्ष्या जाय । तो कैकयी मरै हलाहल खाय ।।२१२५।।
मोकूं होइ घणौ अपलोक । यो मुझ अधिक व्याप्यो सोक ।।
भरत राज देहु संसार । रामचन्द्र बोले तिण वार ।।२१२६।।
मात पिता की आग्या सार । जाका वचण कुंण सके टार ।।
निज मंदिर चढि देखै भरत । दीक्षा की मन इच्छा धरत ।।२१२७।।
कब सो पिता निकलै घर बार । ताके लेस्युं संजम भार ।।
बुलाया राय सभा के बीच । राय वचन ज्यौं अमृत सीच ।।२१२८।।

भरत को आमंत्रण

अजोध्या का तुम भुगतो राज । अब हम करैं धरम का काज ।।
विणवै भरत सुणौं तुम तात । बडे राम लक्षमण हैं भात ।।२१२९।।
इन हजूर किम बैठो पाट । कस्या नें तार्णौ मोसुं हाठ ।।
राज्य विभूत अरथ भंडार । जाणौं सहु असार असार ।।२१३०।।

पुत्र कालित्र सगा नही कोय । सपति तगा बिछोहा होय ।।
देही आदि कोई साथ न चलै । अब मैं फिर माया मे मिलै ।।२१३१।।
जो तुम दिक्षा समझी भली । मैं भी संयम ल्युं मन रली ।।
हमनै किम नाखो इह माहि । राज भोग की इच्छा नाहि ।।२१३२।।

राम लक्ष्मण द्वारा प्रस्ताव

रामचन्द्र लक्ष्मण इम कहै । हमारै चित्त अैसी क्यू रहै ।।
तुम बाल धर जोवन वेस । तुमकू दियो पिता सब देस ।।२१३३।।
अजोध्या तणौ राज तुम करौ । चउथै आश्रम दिक्षा धरौ ।।
दोइ कर जोडि भरत इम कहै । तुमारी आग्या मै सरदहै ।।२१५४।।
तुम प्रभुजो करि हो किस की सेव । मोकू कहि समझावो भेव ।।
रामचद्र भरत सु इम कहै । हम वन बेहड किनर रहै ।।२१३५।।
सेवा करि हैं कुण की जाय । वन मे बैठि जपै जिणराइ ।।
दशरथ के चरणन को नये । बिदा मागि माता पै गये ।।२१३६।।

माता के पास जाना

राजा दसरथ भयचक्र भया । मुरछा खाइ धरणि गिर गया ।।
सब सेवग मिल थामै देह । पुत्र बिछोहो व्याप्यो नेह ।।२१३७।।
माता सुणतै खाइ पछाड । बडी बार तन भई सभार ।।
माता कहै सुणु रघुनाथ । हम कू भी ले चालो साथ ।।२१३८।।
भरत राज पिरथी का रहौ । तुम अपने घर बैठा रहौ ।।
रामचद्र बोले सुण मात । रवि आगै शशि की नही कान्ति ।।२१३९।।

राम का उत्तर

हम आगै किम रहउ राज । वह पट बैठा हम कू लाज ।।
हम दक्षिण दिस करि हैं गौन । बन बेहड निहा नाही भौन ।।२१४०।।
तुमकूं किस विध लेकर जाहि । गैला मे दुख कैसे साहि ।।
जब हम कही लहै विश्राम । तब तुमसो मिलवे का काम ।।२१४१।।
सीता साथ लही तिणबार । वज्रावर्त्त धनुष सभार ।।
हम तुमकूं कहा देख्या कपूत । भरत नै सौपी राज विभूत ।।२१४२।।

लक्ष्मण द्वारा क्रोध करना

पिता न समझा धरम की चाल । हम कूं दीया देस निकाल ।।
त्रिया चरित्र सू भूल्या राय । लक्ष्मण ली तब भौंह चढाय ।।२१४३।।

धरती उठाऊं चक्राकार । भरत माँहि बल कहा अपार ।।
नगरि मांहित देहु निकाल । राज देहु रामचंद्रणैं इण बार ।।२१४४।।

बहुरिग्यांन लक्ष्मण मन भयो । क्रोध लहर सब ही मिट गयो ।।
पिता आग्या किम टारी जाय । हमकूं भव भव करम बधाय ।।२१४५।।

राम बनवास

राम माहि मोतैं बल अति । उण न आणी अपनैं चित्त ।।
तातैं कहि हैं ए वर्ण । पिता तणी आग्या नही हर्णैं ।।२१४६।।

आगै राम अनै पाछै सिया । लक्ष्मण ताकै पाछै किया ।।
श्री जिन चैत्यालय जाय । विध सेती वंदे जिन राय ।।२१४७।।

सकल कुटुंब नगर का लोग । पाछैं लागि चले मन सोग ।।
राजा दशरथ भरथ सत्रुघन । सब रणवास भयो सब सून ।।२१४८।।

गोहनतैं बिदा कर दिये । वे तीनूं तबै वन मा गए ।।
रोवैं स्वर्ग लोक के देव । सबै पृथ्वी भ्रम पायो भेव ।।२१४६।।

लोग कहैं चलिस्या सम राम । बन खड मे कैसें बिसराम ।।
सूरज देख दुख का भाव । जाइ छिप्यो अस्ताचल ठाम ।।२१५०।।

पछी रुदन करैं चढ रूख । जलहर गए सकल जल सूख ।।
भई रयण जिण मंदिर जाइ । नमस्कार करि बैठा ताइ ।।२१५१।।

भरत शत्रुघन पायो राज । दसरथ गयो दिष्या कै काज ।।
राज बहुत भए बैराग्य । राज भोग सहु जन करि त्याग ।।२१५२।।

इति श्री पद्मपुराणे भरत राज, राम लक्ष्मण वनबास, दशरथ दिक्षा, विधानकं

२८ वां विधानक

चौपई

वनवास की प्रथम रात्रि

रामचन्द्र लक्षमण अरु सिया । जिन मंदिर में आश्रम लिया ।।
भई रयण सोया कछु बार । अरध निस चाले धनुष संभार ।।२१५३।।

निकसे एक नगर के बीच । देखे मंदिर ऊंचे अरु नीच ।।
अपनी अपनी सेज्या ठोर । सोवैं लोग न सुणिये सोर ।।२१५४।।

कांमी थके त्रिया गल लाग । केई सुरत करैं हैं जाग ।।
कई त्रिया मदन सिस गया । कोकिला पंडित जन किया ।।२१५५।।

केई हारे पडे बेसुध । केई मूरख महा कुबुधि ।।
केई कथा धरम की चलै । सुर्णै भेद ग्रस्त्री सुख लहै ।।२१५६।।

केई दुखी दलिद्री पडे । टूटी झुपडे के तल गिरे ।।
कई पडे माहि बाजार । कई पडे रहैं पड्मारिनी सार ।।२१५७।।

चोर फिरैं पर धन हरैं । पाहरुवा का सबद सुरण डरैं ।।
देखे सकल नगर के चिह्न । दुखी सुखी देखे भिन्न भिन्न ।।२१५८।।

पुह फाटी उग्यो जब भान । बहु सावंत ग्रजोध्या ते ग्रान ।।
मारग घेर रहे वे ग्राय । रामचंद्र जिह पैंडे जाय ।।२१५९।।

राजाओं का अनुगमन

छोडा रथ कौतिल कर लए । भूपति सकल पयादे भए ।।
सखिया भू मनि धरते पाव । चल्या न जाय थके तिरण पाव ।।२१६०।।

जोता निबहै पाछै घने । कालिंद्री जमुना कूं हने ।।
उछलै लहर मच्छ बहु चलै । गडगडाट सो जल न हलै ।।२१६१।।

तबै सहू राजा बिनती करै । प्रभु हम कैसे पार उतरैं ।।
तुम तो प्रभुजी उतरो पार । हम कैसे पहुंचै निरधार ।।२१६२।।

सबको वापिस जाने को कहना

रामचन्द्र बोलैं सुणु लोग । तुम स्या मारै सहु विजोग ।।
हम तापस बन वेहड वास । करिहौ कहा हमारे पास ।।२१६३।।

तुम फिर जाउ घर ग्रापर्णै । दिन पलटया मिलिवो ग्रापणै ।।
रामचद्र सीता गहि बाह । पैरि गया तिहां तटनी थाहि ।।२१६४।।

बैठा एक रूख तलि जाय । वारि खडा भूपति विललाइ ।।
देखो ग्रसुभ करम का भाव । ग्रैसा क्या दुख व्याप्या ग्राय ।।२१६५।।

ग्रवर मनुष्य की कीजे कहा । राम सरीखा इह दुख लहा ।।
हम फिर जाहि करै वहा गेह । करि हा चिदानद सो नेह ।।२१६६।।

सब मिल ग्रैसी चितवै चित्त । इनु जिन भवन करी जाइ थित्ति ।।
श्री जिन मंदिर उज्जल वरण । वृक्ष ग्रसोग दुख के हरण ।।२१६७।।

पूजा करी जिनेस्वर भगत । ऊचै चढि देख्या सब जगत ।।
ठाम ठाम देख्या देहुरे । रतन सभव मुनि तिहा तप करैं ।।२१६८।।

देइ प्रदिक्षरणा पूछै धर्म । जती सरावग का सब मर्म ।।
पार उतरि ग्राये सब राय । सुण्यो धर्म तहा चित्त लगाय ।।२१६९।।

बहुत भूपति यां दिक्षा लई । धरम भेद सुणि निश्चय थई ॥
बहुतैं श्रावक का व्रत लिया । दया धरम मांही चित्त दिया ॥२१७०॥
घणां फिर गया अजोध्यापुरी । भरत सूं मिले बीनती करी ॥
कही बात सगली समझाय । रुदन करैं सुण दुख अधिकाय ॥२१७१॥

दशरथ द्वारा रुदन एवं वैराग्य

दसरथ करै करम व्यवहार । पुत्र वियोग भयो दुख अपार ॥
कवण करम मैं खोटा किया । पुत्रा हैं देस निकाला दिया ॥२१७२॥
बहुरि समझिया मन मे ग्यान । अैसा मोह मे भया अयान ॥
कुण कुण भवका चितवो पुत्त । केई पुत्र कलित्र सजुत्त ॥२१७३॥
स्वरगा का सुख के के बार । देवलोक की भुगती नारि ॥
चिहुं गति का दुख सुख घणे । देह जीव सों प्रीत न बणैं ॥२१७४॥
पुद्गल अगणत धरें सब जौंण । जीव सघाती कहिए कौंण ॥
पाच चोर हैं काया बीच । विष मय करै करम नित नीच ॥२१७५॥
विषय अभिलाष तै बाढै दुख । विसहर डसते जैसा सुख ॥
पाछैं हुवै प्राण का नास । अही समान इन्द्री सुख जास ॥२१७६॥
मोह जेल बधियो संसार । मूरख मगन हुवैं निरधार ॥
स्वारथ रूपी है जग सार । धरम एक जिय को आधार ॥२१७७॥
बारह अनुप्रेक्षा हुवै चित्त । आतम ध्यान विचारैं नित्त ॥
दसरथ मुनि अैसा तप करै । चिदानद लिव चित मैं धरैं ॥२१७८॥
अपराजिता रोवै दिन रात । कैकई सोग करै बहु भाति ॥
भरत करै माता का सोच । कहै चल देखु माता मन सोच ॥२१७९॥

भरत का राम के पास जाना

उनकू आनि बिठाऊ राज । उन आगै मैं साधूं काज ॥
भरत सत्रुघ्न अस्व पलांण । बहुत संग लीया राजान ॥२१८०॥
पहुचे कालिंदी पर जाय । गये पार बैठा तट ठाइ ॥
ह्वां तै मारग पूछत चले । छठे दिवस राम कूं मिले ॥२१८१॥
उतर दूर थी करैं डडोत । विनती तिनसौ करैं बहुत ॥
रोवैं सत्रुघन भरत अौर । रामचंद्र बोलैं तिण ठौर ॥२१८२॥
भरत बीनवैं द्वै कर जोडि । तुम प्रभू हो त्रिभुवन सिर मौर ॥
गैवर बोझ चलै किम बहल । हमसूं राज चलै नही छयल ॥२१८३॥

तुम राजिन लक्ष्मण परधान । तुम प्रभु हम छत्र उठावन वान ।।
सत्रुघन ढारैगा चमर । तुम पर बैठि बांधै कमर ।।२१८४।।

कैकयी का आगमन

पाछैं आई कैकई माइ । राम लखण उठि लागे पाय ।।
रुदन करै समभावै बात । तुम बिन दुख पावा दिन रात ।।२१८५।।
अजोध्या चालि राज तुम करौ । मेरी चूक न जित मैं धरौ ।।
लघु भाई सेवैगा चरण । तुम त्रिभुवन के तारण तरण ।।२१८६।।
रामचद्र बोले सुण मात । हमकुं वनवास दिया है तात ।।
पिता आग्या किम कीने भग । हम तपसी भेष हैं सुख अग ।।२१८७।।
भरत सत्रुघ्न हम दीया राज निरभय सारौ बछित काज ।।
तुम सब बिदा अजोध्या किया । आपण उठि वन मारग लिया ।२१८८।।
विद्युत मुनी अजोध्या बास । भरत सुनै जिन मत का पास ।।
अरहनाथ के मदिर जाइ । तिहू काल जिन पूज रचाइ ।।२१८९।।
धरम मार्ग का कीजे काज । प्रजा सुखी भरथ के राज ।।

राम का उज्जयिनी जाना

मालव देस उजीणी नयर । वन उपवन की देखत सैर ।।२१९०।।
गाय रु भैस चरै तिहा घणी । खेती हरियल सोभा वणी ।।
मनुष्य न दीसै किणही ठौर । नगर सोभै रमणीक सु और ।।२१९१।।
लक्ष्मण राम अचभा करै । इहा का लोक कहा हैं दुरै ।।
देखो परवत ऊपर जाय । सकल बात भाषो तुम आय ।।२१९२।।
लक्ष्मण जाय परवत चढया । देख देहुरो अत सुख बढया ।।
नमस्कार करि तरु परि चढयो । मनुष्य एक तहा दृष्टि पडयो ।।२१९३।।
ताहि देख मन सोचै माहि । ताको भेद न पाऊ जाहि ।।
कै इह मनुष्य कै उभौ ठूंठ । कैसे बिन समझ्या कहु झूंठ ।।२१९४।।
इह कू देखू अपने नयन । तब मे कहू राम सौ बयन ।।
उतर रूंख सौ वाढिग चल्या । पैडा माहि वह आवत मिल्या ।।२१९५।।
लूषी देह कूबडी षेह । फाटे बसतर लागै छेह ।।
नगे पाव दुषित अति रूप । ताहि साथ ले आए भूप ।।२१९६।।
रामचद्र सीता ढिग आणि । बटोही नै जाण्यौ देव समाणि ।।
कहै यह इन्द्र अथवा धरणेन्द्र । कै विद्याधर सूरज चन्द्र ।।२१९७।।

रामचन्द्र ता करुणा करी । तू कहा चाल्यो किण नगरी ॥

सिंघोदर मिलन

देस मालवो नगर उज्जैंण । करैं राज सिंघोदर सैंण ॥२१६८॥
दमापुर नगर थकी हूं चल्यौ । बज्रकिरण समदृष्टी भलौ ॥
रामचद्र पूछैं फिर बात । उण समकित पायो किण भांति ॥२१६६॥
पथी भणैं राय विरतात । दशारण वन ग्रहैडे जात ॥
इह वन छोडि किण कारण गया । प्रीतदरसन मुनि दरसन भया ॥२२००॥
ग्रीष्म रितु पर्वत बहु तपैं । ध्यानारूढ तहां भगवन जपै ॥
राजा मुनि नैं पूछैं ग्राइ । काया कष्ट सहो किण भाइ ॥२२०१॥
मनुष जनम कै लाहा लेइ । तप करि वाद जलावैं देहि ॥
ग्रात्मा कु कहीं दीजे दुख । पचइंद्री का भुगतो सुख ॥२२०२॥
भोजन कारण घर घर फिरो । निरस सरस ग्रहारह करो ॥
ग्रातम दुख करो तुम बुरा । मनुष्य जनम दुर्लभ है खरा ॥२२०३॥
बोले मुनिवर भूपति सुणौ । मैं निज सुख कहां लग भणुं ॥
राजा हंस करि पूछैं बात । तपैं सिला दुख पावैं गात ॥२२०४॥
उडैं धूल दुख सहै सरीर । भूख पियास परीसा पीड ॥
मुनिवर भणैं सुणुं भूपाल । इन्द्री विषय दुख का जाल ॥२२०५॥
सात नरक भुगतैं इण साज । विषय सेव्या बिगरैं सहु काज ॥
जे जीव विषय इन्द्री की करैं । मान तजत कछु बार न धरैं ॥२२०६॥
कारण मोह षिपैं है जीव । भ्रमैं ससार दुख की नीव ॥
राजा सुणि चरण कुं नया । पाप प्राक्रम सगला मिट गया ॥२२०७॥
जती सरावग का सुणि धर्म । ग्रणौव्रत लीया सुभकर्म ॥
मुनि पैं नेम लेई तिण बार । ग्ररिहंत बिन न करूं नमस्कार ॥२२०८॥
गुरु निर्ग्रंथ ग्ररु शास्त्र जैन । इनकू सेऊं कर मन चैन ॥
राजा ग्राये ग्रपने गेह । दया धरम सु लाया नेह ॥२२०६॥
विषय बिना रहै नहीं घडी । श्री जिनवाणी हिरदैं धरी ॥
प्रीतिवरधन मुनि मास उपास । निवल्या धरि भोजन की ग्रास ॥२२१०॥
बज्रकरण द्वारा पेषण किया । मुनिवर कूं तब भोजन दिया ॥
बरखे रतन पुष्प तिण बार । मुनिवर जबैं लीयो ग्राहार ॥२२११॥
राजा पासि रह्या उहै ग्राइ । नमसकार करैं किण प्राय ॥
मुनिसुव्रत की प्रतिमा घडाइ । मुंदडी में थे वा लगाई ॥२२१२॥

नमस्कार प्रतिमा कू करै । तुमारी काण न मनमें धरै ।।
लोक नें कछु समझत पडै । रघर बिन राजा सो कहै ।।२२१३।।
सिंहोदर मन कोप्या राइ । राते नयन क्रोध के भाय ।।
बृहद गति बज्र किरण पै जाइ । सगली वात कही समझाइ ।।२२१४।।
सिंहोदर कोप्या है घणा । नाका जीव कूं चाहैं हण्या ।।
जे तुम भाग जाइ किण ठाम । तब तुम बचो तजो यह गाम ।।२२१५।।
पूछै तैं जाणी किण भांति । मोसूं कहि समझावो बात ।।
कुंदनपुर नगरी का नाम । समुद्र मिग वणिक तिण ठाम ।।२२१६।।
जमना नाम जाकै अस्तरी । दोइ पुत्र जनम्या सुभ घडी ।।
विद्युत ज्वाल प्रथम सुत भया । बृहतगत दूजा कू थया । २२१७।।
मोकूं पिता द्रव्य बहु दिया । विणज हैत उज्जेणी गया ।।
कमला लता गणिका कूं देख । मन अटक्यो ता रूप बिसेष ।।२२१८।।
अरथ खोयो सब दलिद्री भया । अति समझ चोरी चित दिया ।।
सिंहोदर मंदिर गणिका गई । श्रीधरी राणी को देखन भई ।।२२१९।।
कुंडल देखि चितवै तिण बार । अपणे कुंडल धरे उतार ।।
सखी सु बोली वेस्या अस्त्री । मोकू कुंडल लागै बुरी ।।२२२०।।
जैसे कुंडल है राणी कान । असे मोकूं दीजे आन ।।
मैं सुण नृप मंदिर मे गया । सिंहोदर सू पूछै त्रिया ।।२२२१।।
किण कारण तुम दुचिते घणे । चिंता कवन तुम्हारे मने ।।
वज्रकिरण मन दुविधा धरै । मेरी काण नवै नही करै ।।२२२२।।
प्रतिमा नै वह करै नमस्कार । मान भग करै सभा मझारि ।।
मेरा अन्न खावै वह राय । मोमुं ऐसा करै दुराव ।।२२२३।।
वाकू मारू तो सुख लहू । इह मतो मैं तो सूं कहू ।।
ऊंचै चढि देखियो नरेस । घेरचा उसनै तुम्हारा देस ।।२२२४।।
वज्रकिरण तब गढ मैं गया । कागुरै कागुरै बैठा सुरया ।।
पौलि किवाड मजबूत दिवाय । जुध निमित्त रूप बैठा राइ ।।२२२५।।
रंघरविसुत सिंहोदर का दूत । बज्र किरण पै आय पहुत ।।
कहै क तू प्रतिमा कू नवै । जती पासि सुणि क्यूं निजदवै ।।२२२६।।
उनहै सुहावै असी रीत । तबकु चाहे किया अतीत ।।
तू काहे कू खोवै जीव । राजा प्रलै न वावो ग्रीव ।।२२२७।।

बोले बज्रकिरण भूपति । राजरिध छोडूं सब भती ॥
धरम द्वार हमनें तुम देहु । दंपति आया निकाला लेहु ॥२२२८॥
मैं निस्चै छोडूं गा नाहि । राज भोग की इछा नाहि ॥
दूत घर आया नृप पासि । वाकु एक निरजन पासि ॥२२२९॥
धरम द्वार की इछा ताहि । राज भोग की इछा नाहि ॥
सिंहोदर फिरिया भूपति । सेना पडी सब घेरैं धरती ॥२२३०॥
आस पास सब दिया उजाडि । तबतैं भाजे हैं सब छांडि ॥
सुरगीत मते मम आइया । इसकी खबर मैं अभी पाइया ॥२२३१॥
लागी अगनि जली झुंपडी । बली टूट अग परि पडी ॥
हेम साकली रत्न सो जडी । रामचद्र दीनी तिण घडी ॥२२३२॥
परदेसी पहुंतो निज ठाम । भया सुखी जगत मे नाम ॥
उहा तै चले असन निमत्त । दशागपुर चैत्यालै करी थिति ॥२२३३॥
चन्द्रप्रभ की पूजा करी । लक्ष्मण सुं बोले तिस घडी ॥
नग्र माहि सुं सीधा लाव । बिन सेती ज्युं भोजन खाय ॥२२३४॥

लक्ष्मण की बज्रकिरण से भेंट

सीता त्रिषावती है घणी । दशागपुर तिहा गाढ अति बणी ॥
चहुघा घेर रहै सामत । लक्ष्मण ने जाना वरजत ॥२२३५॥
धका धूम करि भीतर गया । गढ की पौलि खडा जिम भया ॥
बज्र किवाड अटल तिहा दणे । सूर सुभट रखवाले घणे ॥२२३६॥
लक्ष्मण सूं पूछै तू कुणे । किहा तैं किया तुमनै गौण ॥
कहेक हम परदेसी आय । अन्न हेत हम गढ मैं जात ॥२२३७॥
पोले दीनी खिडकी खोलि । बज्रकिरण आदर सो बोलि ॥
तुम किहा तैं आवण किया । लक्ष्मण को आदर अति दिया ॥२२३८॥
बोले लक्ष्मण सुनौ नरेस । अन इछा आये तुम देस ॥
पचामृत सू थाल भराइ । लक्ष्मण आगे धरा मंगाय ॥२२३९॥
तब बोले लक्ष्मण कुमार । भाई भावज हैं जिण द्वार ॥
उन जीम्या बिन मैं किम खाउ । कहो तो तिस पास ले जाउ ॥२२४०॥
भोजन अन्न दियो भरि थाल । लक्ष्मण नैं बूझै भूपाल ॥
लक्ष्मण ले आयो जिण धाम । जिहां बैठा श्री सीताराम ॥२२४१॥
असी आणी उत्तम वस्तु । राम कहैं लक्ष्मण नै हस्त ॥
फासु जीमण आण्या भला । बहुत सुगध ता माहि मिल्या ॥२२४२॥

करि अहार मन रहसे घणे । बज्रकिरण की अस्तुति भणे ॥
धन्य यह सम्यक दृष्टि भूप । असा भोजन दिया अनूप ॥२२४३॥
सिंहोदर वाकूं देहै दुख । किस विध होवै या कूं सुख ॥
हम तो खाया इसका धान । या का कारज करें प्रमान ॥२२४४॥

लक्ष्मण का सिंहोदर के पास जाना

लक्ष्मण भेज्या सिंहोदर पास । पुण्य जीव का किम करै नाम ॥
वज्रावर्त्त धनुष ले हाथ । तरकस बांधि खडग ले साथ ॥२२४५॥
राय द्वार तै उभा भया । पौलिय अटक्या जाण न दीया ॥
कहै किमई हू भरत का दूत । कहो सिंहोदर स्यौं इह सूत ॥२२४६॥
राजा नैं तब लिया बोलाइ । भरथ संदेसा कह्या समझाइ ॥
वज्रलोचन कहा किरी बिगाड । तै उसका दिया देस उजाड ॥२२४७॥
वह तो सेवै श्री जिनराज । तै वाकूं भयवता आज ॥
वा को वेगि छोडि तू देई । इह अपलोक मती तू लेह ॥२२४८॥
बोले राजा सुणि हो दूत । असा कहा भर्त रजदूत ॥
आपणें देस मनावो आण । ता पाछै हू राखस्यौं काण ॥२२४९॥
बज्रलोचन खावै मुझ धान । बहुरि मग करै मम मांन ॥
वा'कूं भला लगाऊं हाथ । असी करै न काहू साथ ॥२२५०॥
जो याकू मैं अब यूं छोडि । तो बिगडै और इ या होड ॥
बोले लक्षमण सुणु नरेस । या कू छोडि मानि उपदेस । २२५१॥
राजा कहै सुण रे तू मूढ । वा संग तू का हुवै आरूढ ॥
जैसा हुवै उसका मूल । असा तेरा ह्वै है मूल ॥२२५२॥

लक्ष्मण और सिंहोदर के मध्य झगडा

लक्षमण कहै आया तुझ मरण । मानै नहीं भरथ की सरण ॥
कोप्यो भूप आदि सब सभा । क्रोध सकल ही के मन धुवा ॥२२५३॥
कैई गदा गही तरवार । सगला आवध लिये सभार ॥
लक्षमण कहै ढील क्यो करो । तुम मे बल है तो वेगा लडो ॥२२५४॥
धाय पडे सब ही सामत । लक्षमण करै प्राण का अंत ॥
जाहि गहै ता पटकै भूमि । मारै मुंठी लाता घुंस ॥२२५५॥
मारि थपेड करै सहार । सगली सेन्या दीनी मार ॥
राजा देखि अचभा करै । एक पुरुष असा बल धरै ॥२२५६॥

राजा धाइ पड्या तिरा बार । बोलै सब्द मार ही मार ।।
कोई निकट ग्राई नही सकै । जा पकडै ता मारै थकै ।।२२५७।।
तोड्या रथ अर छत्र नीसांण । बज्रकरण देखै राजान ।।
इह तो कोई हितू हमार । सब दुर्जन कीने सहार ।।२२५८।।
सिंहोदर के धाए सुभट्ट । गदा खडग से किया सघट्ट ।।
गोला सर वरषै ज्यौ मेह । पु निवंत कै लगै न देह ।।२२५६।।
वज्रावर्त्त लक्षमरण संभार । सगला दिया मारि कर छार ।।
मारै खडग विजली सी घात । दारुण जुध भया बहु भाति ।।२२६०।।
देखै लोग अचर्भ होइ । इन्द्र कहै धरणेन्द्र है कोई ।।
कै विद्याधर कै इह देव । सिंहोदर सोचै मन एव ।।२२६१।।

सिंहोदर को लक्ष्मरण द्वारा बांधना

लक्ष्मरण तबै दुपट्टारोड । सिंहोदर नें बाध्या दोड ।।
मारै लात धमुंके घणे । राण्या उसकी विनती भणे ।।२२६२।।
मोहि भीख दीजिये भरतार । तू दूजा मेरै करतार ।।
लक्ष्मरण कहै रघु पासि ले जाहु । जे वे करै दया का भाव ।।२२६३।।
तो मै छोडु या कौं न्याइ । ल्याये रामचन्द्र की ठाइ ।।
चंद्रप्रभु की पूजा करी । रामतणी अस्तुति चित धरी ।।२२६४।।
वज्रकरण सेती रघु कहै । मागि वेग जो इच्छा वहै ।।
बज्रकरण कहै मागू एह । सिंहोदर ने छोडि तू देह ।।२२६५।।

राज्य का बटवारा

धन्य धन्य भाषै सब लोग । अभयदान का दीया जोग ।।
सिंहोदर कु दसागपुर दिया । उजेणी का राज वज्रकरण किया ।।२२६६।।
बहुत राय दरसन कूं आय । तीनसै कन्या भेट क्यौं ल्याइ ।।
रामचद्र लक्षमरण कहैं बात । हम परदेसी फिरै अमात ।।२२६७।।
वन मे फिरै तहा घर नाहि । कैसे इनस्यौं करै विवाह ।।
बारह बरस फिरा बहु देस । ता पाछै समझिये नरेस ।।२२६८।।
राजा सकल वीनती करैं । अब ए कन्यां किरण ने वरैं ।।
तुमकौं आणी ए धरि भाव । कैसे दीजे औरै ठाव ।।२२६६।।
कन्या सकल रही मुरझाय । जैसे फूलमाल कुम्हलाइ ।।
रामचन्द्र जिरण थानक गए । आधी रात विदेसी भए ।।२२७०।।

मनमे कछु नही अहमेव । सुमरत चले जिनेसुर देव ।।२२७१।।

दूहा

जिनवाणी निश्चै धरै, दया करै षट्काय ।।
दुरजन सकल चरणा नमै, श्री जिन धरम सहाय ।।२२७२।।

पर उपगारी राम हरि, परदुख भजन हार ।।
पर कारज सारण निमित्त, प्रगट्यो जस ससार ।।२२७३।।

इति श्री पद्मपुराणे बज्रकरण सिंहोदर विधानक

२६ वां विधानक

चौपई

लक्ष्मण और विद्याधर मिलन

रामचंद्र सीता तिसाया भया । नीर लेण कु लक्ष्मण गया ।।
तहा सरोवर निरमल नीर । छाया सगम विहगम तीर ।।२२७४।।

नेत्र तसकर विद्याधर भूप । विजयार्द्ध पति गणी अनूप ।।
क्रीडा देखन आयो तिहा । वन लीला सब निरखी जिहा ।।२२७५।।

देख्यो लक्ष्मण पैले पार । रूप क्राति कर दिपै अपार ।।
बहुत लोक भेजे ता पास । मनमे उपज्या अधिक हुलास ।।२२७६।।

सेवग आइ करै नमस्कार । करैं वीनती बारबार ।।
चलो प्रभु बुलावै तुम राय । तुम दरसन देख्या को चाव ।।२२७७।।

लक्ष्मण विद्याधर ढिग गयौ । नेत्रतसकर अति आदर दियो ।।
लक्ष्मण उठि बीनती करै । वैसाण्या सिंघासण परै ।।२२७८।।

पूछै आए तुम किण काज । कवण वस्तु बाछो तुम आज ।।
लक्ष्मण बोले सुणौ नरेस । आहार निमित्त आए इण देस ।।२२७९।।

रामचद्र सीता जिण थान । मैं पहुच्या पाणी कुं आन ।।
नेत्रतसकर बोलिया तिह बार । सलोदन तेडिया रसोईदार ।।२२८०।।

व्यजन भले सवारे भोग । हीरे पीले बहुत पयोग ।।
अवर पकवान संवारे घणे । उत्तम घी मीठा मे बणे ।।२२८१।।

राम बुलाये तिहां नरिंद । सीता सहित अधिक आनंद ।।
नेत्र तसकर चरणन कू नया । बहुत प्रकार महोत्सव किया ।।२२८२।।

सिंघासण ऊंचे बैठाय । करै आरती सेवै पाय ॥
रतन जडित सोने के चौक । करैं उबटण भूले सोक ॥२२८३॥

करि सनान फिर भोजन खाइ । बिदा होइ आगे कूं जाइ ॥
वनमे देखी सुभट मंडली । मारग की रोकी तिहा गली ॥२२८४॥

ए धसि करि तिह आगे गये । कचुकी देखि अचंभे भए ॥
देखी कन्या बहुत स्वरूप । वा समान कोई नही चुप ॥२२८५॥

सामुद्रिक की सोभावणी । अन्य कहा लग वरणौं गुणी ॥

लक्ष्मण द्वारा प्रश्न

लक्ष्मण तिस कूं पूछे बात । बालखिल्य नृप मेरो तात ॥२२८६॥
पृथ्वीदेवी कू खि हू भई । कुबड नम्र महा सुख मई ॥
धरम राज मैं बीतै घडी । दुरजन दुष्ट सेती थरहरी ॥२२८७॥

राजा मलेच्छ है रुद्रभूत । चढि आए सेना संयुक्त ॥
पिता मेरे मे किया जुध । बांधि ले गया करि बल बुध ॥२२८८॥

पृथ्वी देवी कारण कंत । निसदिन रुदन करै बहुमत ॥
बसुधा मत्री निमती बूझिया । कहि होणहार सूजिया ॥२२८९॥

राणी जब बालक नै जणै । सो तो सब दुर्जन कूं हणै ॥
बहुरि राज नगरी को करै । दुरजन तिस के पावा पडै ॥२२९०॥

कल्याण माला हू पुत्री जणी । निमित्त ज्ञानी नै ऐसी भणी ॥
कन्या एक पुरुष के भेम । वनमे रहै नित्य विसेष ॥२२९१॥

दोई पुरुष को दरसण लहै । ताहि देख दुख कोई न रहै ॥
सिंहोदर नृप को मैं दई । या कारण मैं वनमे रही ॥२२९२॥

मन्या मो पडी घेर चिहु पास । कुचुकी निकट मोहि इह आस ॥
मै तुम दरसन पायो आज । हूवा मनवांछित मम काज ॥२२९३॥

एक अचंभा मो मन घणा । जो मैं पुत्र होता गुण गणा ॥
तो नगरी का होता साज । पुत्री कैसे पावै राज ॥२२९४॥

रामचन्द्र इह आग्या दई । याही भेष रहो तुम थई ॥
तीन दिवस रहिगौ वन माहि । आधीरात छोडि तिहा जाइ ॥२२९५॥

कन्या जागि कहै बिललाइ । मे सोय गई वे उठ गये आय ॥
मेकला नदी उत्तर वन गए । करकारण वन देखत भए ॥२२९६॥

वामैं वृक्ष वेर के काग । देस्यग पेड नारियल लाग ॥
सीता तबै विचारचा सौंन । हूंसी जुध दो घडी मैं पौन ॥२२९७॥

अत जीत कं ह्वंगी भली । रामचद्र तव चाले टली ।।
असुभ सौण की छोडि वचाइ । वन ही वन निकसे रघुराइ ।।२२९८।।

रुद्रभूत राजा से युद्ध

रुद्रभूत राजा तिण ठाम । सेना घणी क्रोध कै काम ।।
रामचन्द्र सं माडचा जुध । हारी सेन्या भई असुध ।।२२९९।।

रुद्रभूत पग ल्याग्या आइ । रामचन्द्र का दरसण पाइ ।।
रामचन्द्र पूछै विरतात । उन भाषी पिछली सब वात ।।२३००।।

कौसबी नगरी का नाम । अहित अगन विप्र तिण ठाम ।।
प्रतिसरजा ताकै नारि । रुद्रभुत पुत्र भई अवतार ।।२३०१।।

सात विसण का सेवणहार । तसकराइ करत घेरचा कोटवाल ।।
विस्वानल राय पास ले गया । नृप तब उस पर कोपिया ।।२३०२।।

कंहक इसकूं सूली देइ । किंकर उस गह्या बहुत दुख देइ ।।
सेठ एक नृप आगै जाइ । विप्र जाणि कै दिया छुडाइ ।।२३०३।।

उहा तै मे आइया इह देस । काकोनद मलेछ पै भया नरेस ।।

बालखिल्य को मुक्त करना

रामचद्र इम आग्या दई । बालपिल्य नै छाडो सही ।।२३०४।।

मलेच्छराय ने दीया छोड । सेवा करी दोय कर जोड ।।
सभा सहित कुबडपुर आइ । करी वधाइ बालषिल राइ ।।२३०५।।

सिहोदर बज्रकिरण भी मिले । रुद्रदत्त बिदा कर चले ।।
इनका दुख कीया सव दूर । बालषिल सुख लह्या भरपूर ।।२३०६।।

दूहा

रामचद्र अति ही बली, लक्ष्मण भी बलवत ।।
परकाज के कारणं, करै उपाव अनन्त ।।२३०७।।

इति श्री पद्मपुराणे बालखिल्य विमोचन विधानक

३० वा विधानक

अडिल्ल

बन भ्रमण

रामचन्द्र लक्ष्मण कुमारं साथं सिया ।
आधीराततिनि षड गमण तहा तैं किया ।।
त्रिदस वन सुप्रसन्न नदी परवाहनी ।
तरवर अशोक सघन वन शोभा बनी ।।२३०८।।

चौपई

सीता की प्यास बुझाना

पंथीयातणां सुहावैं बोल । छाया सीतल बेल तंबोल ।।
उत्तरमस्तोही बन गए । महाभयानक देखत भए ।।२३०६।।
सीताने लागी तिस घणी । पडै धूप बहुतै अणमणी ।।
कहि नकट न देखीए नीर । लागी त्रिषा अनंत अधीर ।।२३१०।।
ऊचे चढि देख्यो कोई ठाम । उहां तैं देख्यो अरन इक गाम ।।
कपिल बिप्र बसै तिस ठोर । अगनिहोत्री अरु ठाढी पोल ।।२३११।।
यहां ते गए ब्राह्मण घर एह । करुणावत धरम की देह ।।
देख प्रदेसी दया ऊपजी । सीतल नीर झारी भरि लई ।।२३१२।।
पाणी पीय लिया विश्राम । कपिल ब्राह्मण आयो ताम ।।
वडी पोट कांधा परि लिया । लकडी का बोझा सिर किया ।।२३१३।।
अगोछा मस्तक परि लपेट । मैली धोती बांधी देह ।।
बाध जनेऊ तिलक ललाट । जाणै होम क्रिया इह बाद ।।२३१४।।

विप्र द्वारा क्रोध करना

देह कूबडी चपटी नाक । अति कुरूप रही तसु आख ।।
देखि विदेसी घर के पास । क्रोध वचन मुख बोल्या तास ।।२३१५।।
मीट चढाइ मुखस्यो बोलै वरडाई । कुवचन कही त्रिया ने जाई ।।
देसी क्यू बैठण दीये । लाज नही कछु इनके हिये ।।२३१६ ।
पौल पौल फडता फिरई पडै । असे इनको जक नही पडै ।।
ए उठि चलेइ देखै सब लोग । बहुत भीड दरसन के जोग ।।२३१७।।
कपिल विप्र लोगा सौ कहै । ए निलज्ज ऐसे ही रहैं ।।
कहा इनका दरसन तुम करो । मूढ लोग तब बोलै बुरो ।।२३१८।।
लक्षमण कोपि कपिल द्विज गह्या । फिर फिराय पटकन कूं चह्या ।।
रामचद चित करुणा आइ । कपिल विप्र कूं दिया छुडाइ ।।२३१९।।

दया के पात्र

हरि नै समझावै रघुनाथ । इस पर कहा उठावो हाथ ।।
जती सन्यासी विप्र अतीव । बाल वृद्ध नारी पसु जीव ।।२३२०।।
पसु अपाहज मत मारो भूल । इनकी हत्या है अघ मूल ।।
आपते सबल ता ऊपर चोट । परजा जीव दया की ओट ।।२३२१।।
लक्षमण दया चित्त मे धरी । धन्य साध जे रहैं वन पुरी ।।
पापी किरपण जे अग्यांन । उनकौं कह्यौ न षाणुं धान ।।२३२२।।

बस्ती में आने का त्याग

अब हम चलि वनवासा लेइ । बसती मे फिर पाव न देह ।।
वनफल बीग करै आहार । किम किस की सुणि मांडै राडि ।।२३२३।।

बसती तजि आये वनवास । अधकार निसवासर सास ।।
वरखा रितु घणहर चहु ओर । काली घट सोमै चिहु ओर ।।२३२४।।
रवि की किरण छाइ घण लई । सबै पृथ्वी अधियारी भई ।।
वरखै मेह मूसलाधार । चमकै दामिन चारू वार ।।२३२५।।
लक्षमण राम दुचिते घणे । छाया बिणा रहबो किम बणे ।।
दृष्टि पसार देखि चिहूपास । मदिर देखे चित्त उल्हास ।।२३२६।।

राम लक्षनण का मन्दिर मे विश्राम करना

मदिर मे बैठा तब जाई । कपडे निचोड करि दिये सुकाइ ।।
भई रयण पोढे तिण ठाम । इतरकरण देव का नाम ।।२३२७।।
इणे देखि तलक्षण भजि गया । विनाधुक प्रतै संदेसा दिया ।।
दोइ विदेसी अस्त्री एक । मेरे थान रह्या कर टेक ।।२३२८।।

देव द्वारा मायामयी नगरी की रचना

देवता बोल्यो अवधि बिचार । ए बलिभद्र नारायण अवतार ।।
ए आये है मेरे देस । सेव करू ह सेवग भेस ।।२३२९।।
नगर सवारया मिदर भला । रत्न खचित सुवर्ण निरमला ।।
वाही जागई सेज्या सवार । गिलम चद्रवा वादरवाल ।।२३३०।।
देव पुनीत आभूषण घणे । पाणी अन्न सौंज सब बणे ।।
हाथी घोडा रथ पालकी । बसनी बनी नई राम की ।।२३३१।।
लक्षमण राम उठे परभात । सीता जागी बीती रात ।।
गधर्व जात के गावै देव । बहुत प्रकार करी सुर सेव ।।२३३२।।
राम लक्षमण तब करै बिचार । या वन मैं तो थी ऊजाड ।।
किम प्रकार ए भई विभूति । तब यह वनसुर आय पहूत ।।२३३३।।
करि डडोत वीनती करै । वसो राज हम सेवा करै ।।
बैठि झरोखे भुगतो सुख । नगर देख भूले सब दुख ।।२३३४।।

कपिल ब्राह्मण की चिंता

कपिल बिप्र सिर लकडी भार । बन तें काठि आए तिण बार ।।
निषा माहि देखै है नगरी । कंचन मदिर रतन सू जडी ।।२३३५।।

तब द्विज मनमे अचरज धरै । इहा तो थे वन बेहड घने ॥
किण प्रकार इहा हुवा नगर । राति वी चालै वणीयो सगल ॥२३३६॥
कै इह सुपने हैं परतक्ष । कै ममता माया है को जक्ष ॥
ऐसे सोच करै था खडा । मिल पणिहारी भरि सिर घडा ॥२३३७॥
पूछै ताहि इह नगरी कौण । कहै पणिहारी रामपुर भौन ॥
इह तो बसी धरम की पुरी । देव सगति इह माया करी ॥२३३८॥
पौलीदार रखवाले घरै । पापी दुष्ट नै परहा करै ॥
धरमी हुवै सो दरसण लहै । देखी माणस दूरै रहै ॥२३३९॥
पूछै विप्र मैं किण विध जाऊ । पणिहारी कहै ले श्री जिण नामु ॥
मुणि पै सुण्या धरम का भेद । तातै हुआ पाप का विछेद ॥२३४०॥

धर्मोपदेश सुनना

चरित्र सुर मुनि पासै जाइ । नमसकार करि लाग्या पाइ ॥
सुणि जिणधरम अणुव्रत लिया । धर्म लेस्या मांहि चित दिया ॥२३४१॥
राम लखण का दरसण पाइ । कपिल विप्र ने लिया बुलाइ ॥
बहुत विभव विप्र कुं दई । मनमे कछुवन आणी नही ॥२३४२॥

दूहा

जैन धरम पालै सदा, दया करै बहु भाय ॥
नवनिधि पावै जगत मे, बहुरि मुक्ति मे जाय ॥२३४३॥

इति श्री पद्मपुराणे कपिल जैनधर्म व्याख्यान श्रवण विधानकं
३१ वां विधानक

चौपई

चातुर्मास के पश्चात् गमन

सुख मे इहां बीतो चउमास । बहुरि फिर निकले बनवास ॥
विनायक पति जोडे हाथ । नमस्कार करि नमायो माथ ॥२३४४॥
जे सेवा मुझ से भई हीन । षिमा कीज्यो विनवुं आधीन ॥
बिन उपदेश कियो इह काज । क्रिया करो सेवग परि आज ॥२३४५॥
रामचद्र लक्ष्मण कहै बैन । तेरा नगर मे पायो चैन ॥
तै बहु कीनी सेवा भगति । तेरा सुजस भया सब जगति ॥२२४६॥
हम तुमकुं सकुचाया आय । तुम जस महिमा कहिय न जाय ॥
इनका मोह देव बहु किया । मोती हार आन कर दिया ॥२३४७॥

कुंडल दिया सिया कूं आण । ताकी जोति रवि किरण समान ।।
नगर छोड वन मारग गह्या । नए बसे थे ते घर रह्या ।।२३४८।।

माया रूपी खिगे विभूत । लोग उदास भए तब बहुत ।।

विजय वन मे गमन

वन ही वन मारग कू चले । विजय हरि के वन मे नीकले ।।२३४९।।

पृथ्वीधर थे तहा भूपति । इद्राणी राणी उज्ज्वल मती ।।
वनमाला जाकै पुत्तरी । रूप लक्षण गुण सोभे खरी ।।२३५० ।

कन्या भई विवाहण जोग । निमित्तग्यानी इम कह्या नियोग ।।
लक्ष्मण की पटराणी होइ । दसरथ दिक्षा लई इण सोइ । २३५१।।

लक्ष्मण राम गये वनवास । भरत सत्रुघन करैं विलास ।।
लक्ष्मण कू अब पावै कहा । कन्या व्याह दीजिये जिहा ।।२३५२।।

सकल कुटंब रहसि मन करै । कन्या बहु सुख मनमे धरै ।।
राजा सुणी अजोध्या बात । दसरथ दिक्षा लई इण भाति ।।२३५३।।

वनमाला का लक्ष्मण पर आसक्त होना

वनमाला कहै लक्ष्मण बिन और । मेरे पिता भ्रात की ठौर ।।
लक्ष्मण कू सुमरै दिनरात । इण भव मेरे अन्य न बात ।।२३५४।।

साझ पड्या देवी की जात । वनमाला आज्ञा लहि तात ।।
कहै कहू फासी ले मरू । कत बिना कैसे दिन भरू ।।२३५५।।

छाडि ऊढणा तरु सू बाधि । गल मे मेल्यो चाहै फाधि ।।
लक्ष्मण ने आई सुभ गध । देखण गया ते सनबध ।।२३३६।।

वाहि देखि तरु हेठै छिप्या । वनमाला लक्ष्मण गुण जप्या ।
वनदेवी सु विनती करै । जे लक्ष्मण मो कूं अब बरै ।।२३५७।।

तेरा मढ चुणाउं देव । पूजा करूं बहुत विध सेव ।।
गल मे चाहै फासी लिया । इस भव मेरै लक्ष्मण हिया ।।२३५८।।

अगलं जनम होई जियो मेल । अैसे करै वह कन्या खेल ।।

लक्ष्मण का प्रकट होना

तबै प्रगट्या लक्ष्मण कुमार । तू अपघात करै किम नारि ।।२३५९।।
मैं हू लक्ष्मन तू रख मन ठाव । नै पताजै तौ रथ ढिग आव ।।
इतनी सुणि ऊढणी लइ खोलि । ऊभल केरिकं बोलै बोल ।।२३६०।।

राम का लक्षमणके लिये में पूछताछ

रामचद्र जाग्या अधरात । तिहां न देख्या लक्षमण कुमार ।।
सीतां सूं पूछी कित गया । ता समय इम बोली सिया ।।२३६१।।
पुकारो तुम आवैगा दोडि । रामचंद्र करै सोरा सोरि ।।
रामचंद्र पूछै हसि बात । कैसे समझे तुम बिरतात ।।२३६२।।
आसीरवाद तू ऊनै दिया । साची बात कहो तुम सिया ।।

सीता द्वारा उत्तर

सीता कहै अरध निस गई । चंद्रप्रकास उजैली भई ।।२३६३।।
वाही घडी लक्ष्मण वनमाला । दोऊ आये रूप रसाला ।।
जैसे रयण चन्द्र की प्रीत । असे सदा आनन्द की रीत ।।२३६४।।
रामचन्द्र ढिग लक्ष्मण बैठि । वनमाला सीता कै हेठ ।।
चारू वारता कथा कहै । सब सुख सुहावणां लहैं ।।२३६५।।
सीतल चालै पवन सुवास । वनमाला पुंगी आस ।।

बनमाला की तलाश

दासी जागी देवी थान । कन्या नैं रोवैं हैरान ।।२३६६।।
सूर सुभट बहु चौकीदार । तुरी पलाणां गहि हथियार ।।
केई पाला केई सुवार । निकसे सब कन्या की लार ।।२३६७।।
वनमाला देखी इस ठोर । सब सेन्या का हुवा सोर ।।
देख्या रूप राम लक्षणा । चद्रसूरज का जोडा बन्या ।।२३६८।।
कै इह इन्द्र स्वर्ग तै आइ । किसकी पटतर न दीया जाय ।।
करि प्रणाम बिनवैं बहु भांति । तुम हो कवण कहां तुम जात ।।२३६९।।
रामचद्र यह लक्षमण वीर । सोहैं दोन्यु कनक सरीर ।।
कही प्रभू सब बात पाछली । सगलां कै उपजी मन रली ।।२३७०।।
जै जै सबद करैं सब लोग । सगलां का भाज्या मन सोग ।।
राजा पासि खबर तब दई । रांणी सुनि आनंदित भई ।।२३७१।।
छाया नगर हाट बाजार । बरतैं उमही वर नार ।।
रामतणां सोहै अति रूप । भूपति दीनी भेट अनूप ।।२३७२।।
करि महोछब बाजा बजवाय । रहस रली सूं हुवा उछाह ।।
बैठि सिंहासन रामचंद्र । सकल प्रजा मन भयो आनन्द ।।२३७३।।

लक्षमण पृथ्वीधर नृप पास । करैं बधाई मन उल्लास ।।
महासुख मे थयो विहाण । और बजै आनंद नीसाण ।।२३७४।।
पूरव भव के पुण्य तें, पायो सुख अनंत ।।
वनमाला रहसी घणी, देख्या लक्षमण कंत ।।२३७५।।

इति श्री पद्मपुराणे लक्षमण पटरानी लाभ विधानकं

३२ वां विधानक

चौपई

अतीवीर्य राजा द्वारा अयोध्या पर आक्रमण

श्री नदनगर अतिवीरज राव । वायगत दूत प्रथीधर कनें आय ।।
दिया पत्र राजा के हाथ । विमुच प्रधान पढी सहु बात ।।२३७६।।
विजय सार्दूल वज्रधर भूप । वेगरथ सिंहरथ जम के रूप ।।
आठसहस्र मगल तसु डोर । हय गय रथ पायक नही ओर ।।२३७७।।
मिलेछ षड का राजा घना । आरज खंड के जाय न गिण्या ।।
वे सब आय एकठा भए । और बहुत आवैगा नए ।।२३७८।।
चिठी देख चले ततकाल । अजोध्या मारि चहै भूपाल ।।
भरत सत्रुघन करै ऊपरि दौड । दस क्षोहणी दल हुवा इक ठौर ।।२३७९।।
रामचद्र तबै दूत नै कहैं । अतिवीर्य क्यो उपद्रव चहै ।।
कहा भरत तुम किया बिगार । हमसे कहो बात निरधार ।।२३८०।।

लड़ाई के कारण

बोले दूत भरत के वैन । अतिवीर्य बैठा सुख चैन ।।
सहज विचार कियो मनमाहि । भरत भेट मुझ भेजै नाहि ।।२३८१।।
सब राजा मानै है आण । भरत सत्रुघन करै न काण ।।

दूत द्वारा सन्देश

सुरत बुध्य तिहा भेज्या दूत । अजोध्या माहि जाय पहुत ।।२३८२।।
भरत सत्रुघन नै कही जाय । अतिवीर्य सेवा करो आय ।।
कै तुम देस छोडि कै जाव । भला चाहो तो मो संग आव ।।२३८३।।

शत्रुघ्न का उत्तर

जैसे पड्या अगन मे तेल । सोंवत सिंघ जगाया हेल ।।
कोपि सत्रुघ्न बोलै वाक्य । अतिवीर्य ह्वैगो कहा वराक ।।२३८४।।
ताकी सेवा हम जो करैं । असा कहा अपर बल धरै ।।
उन तो सूतो सिंघ जगायो । वह जीवत छूटै किण पायो ।।२३८५।।

अब वह बचैं हमतैं किए भांत । देखत ताहि लगाउं हाथ ।।

दूत का पुनः निवेदन

बोलै दूत कोप करि घरणा । तुमतो हो बालक बुध्य बिनां ।।२३८६।।
प्रतिवीरज है इन्द्र समान । सकल भूप मानै लघु आण ।।
पिता तणी भोलं मति भूल । किसकै भोलै करत हो फूल ।।२३८७।।
बात कहै ता काहा तुम चित्त । बहुत गर्भ कहा करते हो चित्त ।।

उत्तर प्रत्युत्तर

सत्रुधन कहै अरे सुण दूत । वाकी करत है सराह बहुत ।।२३८८।।
जैसे गज रूई का फैल । तिणगा एक करै कस खेह ।।
जैसे घरमातै वैसाख । लोटै भूकै ल्यावै तन राख ।।२३८६।।
हस्ती की सरभर कहा करै । वह मूरखि जो हम तैं लडै ।।
वाकू कहि तू वेग सभारि । मारू मीड मिलाऊ छार ।।२३६०।।
दूत दिया धक्का दे काढि । दूत चल्या दता मन बाढ ।।

युद्ध की तैयारी

नृप पास परकास्यो भेद । प्रतिवीर्य सुणि कीयो मन खेद ।।२३६१।।
देश विदेश के भूपति जोडि । जनक कनक राजा हैं और ।।
वज्रकरण सिहोदर राय । अजोध्या तै चाले हरि आइ ।।२३६२।।
अब वे तुम परि ढोवा करै । तुमतो घर मे निश्चल पडे ।।
प्रतिवीरज कोप्या तिण बार । बहुत भूपति नैं लिए हकार ।।२३६३।।
प्रतिवीरज सूं जनक तणौ सनबंध । सबही आण जुडे बलवंध ।।
राम लक्ष्मण कोप्या केहरी । दसौं दिसा कापी भय धरी ।।२३६४।।
प्रतीवीर्य गर्भ मनमाहि । तब लगि नही देखै हरि छांह ।।
उनै भरत सौं बांध्या बैर । अब वे हमकूं मारै घेर ।।२३६५।।

पृथ्वीधर का निवेदन

पृथ्वीधर विनवै कर जोडि । तुम दोई वीर कर हो कोड ।।
वाकै दल जुडिया अधिकाय । कैसे जुध करोगे जाय ।।२३६६।।
हम कूं आग्या द्यो तुम आजि । अब ही करै तुमारा काज ।।
बोलै रामचन्द्र तब बली । पराये बल पूजैं नही रली ।।२३६७।।
आपणा बल तौं आवै काम । पराया भरोसा करै न राम ।।
रथपरि बैठि रामलक्ष्मणां । सीता छिय सुख मानैं घणां ।।२३६८।।

प्रथ्वीधर के आठौं पूत । नंदनगर ते जाय पहुंत ।।
सीता कहे सुण हो रघुनाथ । किम वर्ण जुध अतिवीरज साथ ।।२३९९।।

वहैनर्ष दलबल अतिघणा । अतिवीरज किम जावै हणा ।।
वा का तो है अतिवीर नाम । बहुत राय आये उस ठाम ।।२४००।।

जैसा नाम तैसा पराकरम । अतिवीरज कै मन आया धरम ।।

भरत शत्रुघ्न को आमंत्रण

भरत सत्रुघन लीया बुलाय । अपणे हेतु करो इकठाय ।।२४०१।।
तबै ईणसौं माडो जुध । अपनै हिरदै बिचारो बुध ।।
राम लखन मन हंसि कर इम कहैं । अनंत वीरज नाम वह लहै ।।२४०२।।

जे निरबल ते कहै अतिवीरज माहरे आगैं हैं अनवीरज ।।
हम हैं अति ही गंडुवा । वाका भय तुम क्यौं क्या हुवा ।।२४०३।।

भरत सत्रुघन कुल प्रताप । या परि वह धाय हैं आप ।।
जे हम मानै याकी सक । कैसे जीतेंगे गढ लक ।।२४०४।।

जो बल नही आपणी भुजा । कहा आणि करि है नर दुजा ।।

भरत की सेना

भरत कै मैंगल सात सै भोर । चौंसठ सहस्र अश्व हैं और ।।२४०५।।

वाकै दस क्षोहणी दल जुड्या । इस सेती जावै किम लड्या ।।
जे हमपै जीत्या नही जाइ । भरत सत्रुघन करि हैं कहा आय ।।२४०६।।

जो हम कबहू सुणते नाहि । भरत दूत मारचा था जाहि ।।
अतिवीरज सेती जो होती राड । इह उनकौ हणता तिण बार ।।२४०७।।
रघुवंसीया न ह्वंती लाज । अजोध्या तणैं बूझता राज ।।
हम रावल की जाणी नही सार । वाकौ डारै अब ही मार ।।२४०८।।
औरा नै काहे कूं हतू । मारे चाहो सो करु मतो ।।
जब लग दिवस आयवै नाहि । अबही चालि मारिये जाय ।।२४०९।।

मतो विचारत ह्वं गई रात । तब ही समझैंगे परभात ।।
जिन मदिर मे वासा लिया । जिन प्रतिमा का दरसण किया ।।२४१०।।

वृद्धि धरम मुंनि कूं नमस्कार । पूजा रचना बारंबार ।।

गणिका का नृत्य

गणिका अखाडै सजूत । करि आई नृत्य बहुत ।।२४११।।
बहुरि गई नृप के दरबार । देखण चले लोक हजार ।।
सकल कला पात्र गुणवत । नृपकै आगै गावै बहुत ।।२४१२।।

बाजै वीरण मृदंग अर ताल । मृगलोचनी सोहै सुविसाल ।।
दंत नासिका वणे कपोल । मधुर वचन कोकिला बोल ।।२४१३।।

सुघर कलाई सोभै हाथ । वेरणी बरणी भुयंगम नाथ ।।
कुच अति कठिन उदर त्रिवली । स्याम केस की सोभा भली ।।२४१४।।

कदली जघ चरण अति भले । गज मति बाल हंस की चलै ।।
वा रहै सोलह शृंगार । आई पात्र राज के दुवार ।।२४१५।।

ठाम ठाम आभूषण वणे । अति वीरज राजा तव सुणे ।।
सभा जोडि बैठो नरपति । गावैं गुण कोकिला अति ।।२४१६।।

नृत्य के भाव

नाचै पात्र दिखावै भाव । थेई थेई करता देखै राव ।।
कबहु लटि छूटै अर धुलै । मानौं भौं नाग का चलै ।।२४१७।।

ज्यौ घटा मांहि दामिन उद्योत । सरब सरीर कंचन सी जोत ।।
कबहु उछलै तोडै तान । मारै खैंचि नैंन सर बाण ।।२४१८।।

सभा मोहि ताकरि पायो दान । वस्त्र कनक लीया आसमांन ।।
नए गीत गावैं अपछरा । देखण कू सुरपति मन टल्या ।।२४१९।।

भरत शत्रु जस गुण गावं । अतिवीरज कौं समझावै ।।
तेरा मंत्री बुधि हीण । ताकौं मति दीनी है षीण ।।२४२०।।

भरत शत्रुघन रजपूत । महाबली ज्याऊं अवधूत ।।
जे तुम चाहो अपनां त्राण । भरत भूप की मानूं आण ।।२४२१।।

वह सूरज सम तुम हो चद । रवि अग्रे कला अमंद ।।
असी सुणि कोप्या मन राय । उठी सगली सभा रिसाइ ।।२४२२।।

राजा काढि खडग लियो हाथ । गणिका परि तक मारयो मांथ ।।
टूटी तरवार बची अपछरा । अपणैं मन कछु भय नही करया ।।२४२३।।

पातरी का उत्तर

पातर बोली सुणि हो नरिंद । भरत ध्यान तैं मो भया आनंद ।।
कटयो नही मेरो इकबाल । तेरा खडग टूटा मिटे जजाल ।।२४२४।।

अबै भरथ आवैगा आप । होइ सहाइ भरत गुण जाप ।।
सुणि सब लोग अचंभै भया । सबै विचार उपाया नया ।।२४२५।।

मंत्री तब समझावै बैन । देहि सीख राजा मैं चैन ।।
भरत सुमरण तैं पातर बची । अपणै मनं तुम समझो सची ।।२४२६।।

भरत नैं चालि करौ नमस्कार । तो तुम जीव का होइ उबार ॥
राजा कहै कहा है भरत । ताकी हम आज्ञा सिर धरत । २४२७॥

राय कहैं गणिका सुणि बात । जे तुम चालो मुझ सघात ॥
तिहा आप बैठा श्री राम । लछमण सीता सो जिण धाम ॥२४२८॥

राजा श्री जिन मदिर जाय । अष्ट द्रव्य सू पूज रचाय ॥

सीता के दया भाव होना

धरम मु नि को करि डडोत । रामचद्र पग नम्या वहुत ॥२४२९॥

सीता कै मन उपजी दया । लक्षमण स्यौं कही कीजिए मया ॥

अतिवीर्य को अभयदान

रामचंद्र लक्षमण कृपावत । अतिवीरज सो बोलै इण मत ॥२४३०॥

करौ राज तुम निरमै जाइ । अयोध्यापति की आज्ञा पाइ ॥
बहुरि न करो भरत सु बैर । अवर देस दीनां तुझ फेर ॥२४३१॥

बोलै अतिवीरज भूपाल । राज करत जे व्यापा काल ॥
मरि करि जीव नरक मे पडै । ऐसे दुख नीची गति भरै ॥२४३२॥

छह षंड तणौं पावै राज । माया अघ त्रिसना विण काज ॥
अब मैं लह्यो धरम को मार्ग । अब तक रह्यौ माया मे लागि ॥२४३३॥

अतिवीर्य द्वारा वैराग्य लेना

तुम प्रसाद अब भयो सचेत । अब हूं करू धरम सूं हेत ॥
केसरवक्र सुत ने दे राज । आपन कियो दिगबर साज ॥२४३४॥

तीन रतन तेरह विध धरम । दशलक्षण हूं पालै छह कर्म ॥
अवधिज्ञान मुनिवर कूं भया । जीव जतु की पालै दया ॥२४३५॥

नासा दृष्टि आतमाध्यांन । धरम कथा का करै बखाण ॥
सहै परीस्या वीस अरु दोई । देह मात्र परिग्रह होइ ॥२४३६॥

द्वादस प्रेष्या सु लाइ चित्त । दया भाव सगलां सौ नित्त ॥
जैसे पिता पुत्र सो नेह । षट् काया सो पालै नेह ॥२४३७॥

दश लष्यण गुण चक्र सभार । भावै सोलह भावन सार ॥
आरत रौद्रध्यांन करि दूर । धरम सकल राखै भरिपूर ॥२४३८॥

भरत सत्रुघन सुणी इह बात । उस पैं दिष्या पालै किस भाति ॥
अतिवीर्य माहि अति क्रोध । उन पाया किसका प्रतिबोध ॥२४३९॥

भरत कहै इम बात समझाइ । सूरवीर व्रत पालैं न्याइ ।।
कायर पालैं किम चारित्र । पालैं दिष्या सकल पवित्र ।।२४४०।।

दूहा

जैन धरम दुर्लभ घणां, पालैं बडे कुलीन ।।
कायर पालैं केम तप, अग्यांनी मति हीण ।।२४४१।।
अतिबीरज अति ही बली, करी धर्म सौं प्रीत ।।
राज रिधि सब छोड करि, भजै श्री अरिहंत ।।२४४२।।

इति श्री पद्मपुराणे अतिबीरज विधानकं

३३ वां विधानक

दूहा

विजय और अतिवीर्यजुत, रामचंद्र के भक्त ।।
पाया राज नंद नगर का, प्रगटया जस सहु जुक्त ।।२४४३।।

चौपई

विजय राजा का विचार

विजय असफदन करै विचार । असी वस्तु कहा संसार ।।
राम लक्ष्मण नैं दीजे भेट । असी कवण वस्तु शुभ होत ।।२४४४।।
रवि दा मात रितुमाला पुत्तरी । अति बीरज सुता रूप गुण भरी ।।
लक्ष्मण कूं दीनी तिह बार । बहुत बिनय कीनी मनुहार ।।२४४५।।
चल्या भरत फिर अजोध्या देस । मारग मैं मिल गयो नरेस ।।
विजय असफदन चरण कुं नया । भरत ताकुं उठि कंठ ल्याइया ।।२४४६।।
कंदर्पमा सुता विजय सुंदरी । भरत निमित्त दीनी घडी ।।

अतिवीर्य की कठोर तपस्या

मानगिर पर्वत ऊपरैं आय । अतिबीरज बैठा मुनिराय ।।२४४७।।
करैं तपस्या मन बच काइ । ग्यांन लहर उपजै बहु भाय ।।
तप कै तेज देही मैं जोति । मानुं पुंन्य शशि उद्योत ।।२४४८।।
भरत शत्रुघन विजय असफंद । गए तिहां अतिवीर्य मुनींद ।।
उतर सिंघासण करैं प्रणाम । सहु परिवार गया तिण ठाम ।।२४४९।।
पर्वत मारग महा कठिन । चढगये नृपति बहुत जतन ।।
मुनि कूं देखि भयो आनंद । वंदे चरण कमल सुख कंद ।।२४५०।।
विनयवंत करि वैयावृत्य । धन्य साध पालैं जे चरित्र ।।
सुणे धरम सब पातिग गये । नमस्कार करि बहु बिध नये ।।२४५१।।

आए अजोध्या मुगतैं राज । मनवांछित हुवा सब काज ।।
विजय प्रसफदन किया विदा । प्रीत रहैगी दहुंधा सदा ।।२४५२।।

पृथ्वीधर कह करो विवाह । राम कहैं हम तो वन जाह ।।
पूरण दिन होसी वनमाहि । तबं व्याह करणें की चाह ।।२४५३।।

वनमाला को छोडकर आगे बढना

वनमाला नैं लक्षमरण कहै । बारह वरस वनमाही रहैं ।।
तुमनैं साथ ले कहा दें दु ख । फिर आवै तब होवै सुख ।।२४५४।।

तब वनमाला रोवै घरणी । लक्षमरण समझावैं कामरणी ।।
हम फिर आवेंगे तुम पास । करो मति मन चित्त उदास ।।२४५५।।

होवै समकित बिन सूल । मिथ्यादृष्टी मिथ्या मैं भूल ।।
असा हम कुं जो होवै पाप । जे हम फिर आवै नही आप ।।२४५६।।

आधी राति उठे दोड प्रात । सीता ले चाले सघात ।।

सुलोचना नगर

सुलोचना नग्र के वन मे गए । अन्न पाणी आरण भोजन किये ।।२४५७।।

जिनमारग ये निकसे प्राय । देखि रूप सब मोहित थाय ।।
ए अपने मन निर्भय चलैं । देखे देश गाम अनि भले ।।२४५८।।

क्षेमांजलपुर आश्रम लिया । रामचंद्र लक्षमण तिय सिया ।।
देस देस के मानस देष । भाति भाति की बोली भेष ।।२४५९।।

रंग रंग के पर्वत घने । नामावली कहा लग गिणे ।।
एक मनुष्य कहे था बात । सनुद्रुम की कछु कही न जात ।।२४६०।।

जित पद्मा की प्रतिज्ञा

कनक भाजन की अस्त्री । जित पदमा वाकी पुत्री ।।
राजा पै कीनी इक टेक । मेरे हाथ की बरछी सह एक ।।२४६१।।

वाकुं पुत्री देहु विवाह । करहु मगलाचार उछाह ।।
असा पृथ्वी पर है कोरण । मरण आपणा चाहै जोरण ।।२४६२।।

जो कोई निज तज दे प्राण । कुण विवाहै असी जाण ।।
जीव करह्या तजे घरबार । जीव समान नही ससार ।।२४६३।।
जिह सौंना तें तूटै कान । ताकौं पहरै कौन सयान ।।
असी मरणकरा मेने सुणी । बाहिर बुला कर पूछी धणी ।।२४६४।।
लछमण राम अचभा किया । देखें इह राजा की हिया ।।
असा गुण वामैं है कहा । एता गर्व मनमे है महा ।।२४६५।।

लक्ष्मण का जितपदमा के पास जाना

लछमरण गया नगर के पार । ऊचे घर जैसा कैलास ।।
फटिक समान ऊजले वर्ण । जिनमंदिर देखे दुख हर्ण ।।२४६६।।

लक्षमरण पहूता राज दुवार । पौल्या ग्राय फिरघा ग्रडबार ।।
तुम हो कौरण कवरण कहा जाव । मो सो बात कहो सत भाव ।।२४६७।।

हम ग्राए नृप दरश निमित्त । देखरण कारग हुवा चित्त ।।
पोल्या कहै कुछ उभा रहो । मैं ग्रब जाय राय नें कहो ।।२४६८।।

भूपति प्रतै कही समझाय । रूपवंत कोई ग्रायो राय ।।
तुम दर्शन कूं ऊभो द्वार । हुकम हुवै तो ल्याउ हकार ।।२४६९।।

राजा पासि लाए बुलाय । लक्षमरण राजसभा मे जाय ।।
पूछै नरपति तुम हौ कोरण । किह नगरी सौ कीया गौरण ।।२४७०।।

लक्षमरण कहै हम भरत के दास । इहै बात सुरणौ परकास ।।
जितपदमा पुत्री तुम गेह । तुम हती बहुला की देह ।।२४७१।।

जे प्रतिग्या है तुमारी साच । तो तुम मुझ बरछी मारो पाच ।।
ग्रचरज करै राग मन माहि । ग्रैसा धीरज यामे काहि ।।२४७२।।

जो मैं घालू इस पर घाव । ग्रपजस चढै बुरा व्है नाम ।।

पद्मा द्वारा बरछी के बार करना

लक्षमरण कहै कहा करै विचार । बेग पाच बरछी मोहि मार ।।२४७३।।

ग्रगन प्रजलती एक चलाय । लक्षमरण ग्रही बीच मा धाइ ।।
दूजी बरछी फैं की बली । लक्षमरण नैं पकडी मन रली ।।२४७४।।

लक्षमरण की विजय होना

इरण विध चूकी पाचु चोट । पुंन्यवंत धरम की ग्रोट ।।
तब राजा लक्षमरण कु नया । जितपदमा दीनी निज धिया ।।२४७५।

लक्षमरण कहै वन मे मोहि भ्रात । सीताराम जगत विख्यात ।।
उनकी ग्राग्या ले करों विवाह । मेरा वचन सुरणों नरनाह ।।२४७६।।

राजा राणी सहित राम के पास जाना

राजा राणी जितपदमा पुत्तरी । मंगलाचार गीत विध करी ।।
परियरण सहित राम पै चले । बाजा बहुत बजाये भले ।।२४७७।।

उडी धूल ग्रालोप्यो भार । सीताराम विचारै ग्यान ।।
लक्षमरण सूं कछु भया विरोध । ऊचे चढि करि लेहुं सोधि ।।२४७८।।

देख्या रहस रली सूं लोग । आवत देख्या करण सजोग ।।
सत्रुद्रम आइ चरण कु नया । जित पदमा सीता पद लया ।।२४७६।।
कियो महोत्सव पुर ले गये । पुन्य प्रसादें बहु सुख भये ।।
अधिक आनंद नगर मे भया । जित पदमा चित हरख्या थया ।।२४८०।।

सोरठा

पूरब पुन्य पसाय, जिहा तिहा रख्या करें ।।
जीत भई सब ठांइ, रघुबसीन प्रताप अति ।।२४८१।।

इति श्री पद्मपुराणे जितपद्मा विधानकं

३४ वां विधानक

चौपई

जितपद्मा को छोडकर आगे बढना

राजा सौंज व्याह की करै । ए चलणे की इच्छा करै ।।
जित पदमा सू लक्ष्मण कहै । तू अपने मन निरमै रहै ।।२४८२।।
फिर आवै तब करस्या व्याह । तुम कूं वनमे कहा ले जाहि ।।
जित पदमा के लोयण झरै । नगर लोक सहु विनती करै ।।२४८३।।
लक्षमण राम रहै हम देस । पुन्यवत ए बडे नरेस ।।
राणी राय करैं अरदास । पूरण सकल मनोरथ आस ।।२४८४।
अरध रात्रि वन मारग लिया । राम लखण जनक की धिया ।।

राम लक्ष्मण का बसथल गांव में पहुंचना

देख्या गाम नगर रु नयरी । बंसथलपुर बसती खरी ।।२४८५।।
लोग भागते देखे घणे । तीजे दिन इक कारण बने ।।

पर्वत पर बाजा आदि बजना

परवत पर कोई करै पुकार । ताके भय भाजै ससार ।।२४८६।।
पुरुष छिपै मुहरा मभार । तिहा रहेगे साझ सकार ।।
बाजै घणे दमामे ढोल । ज्यो वह कान पडै नही बोल ।।२४८७।।
जो कोई वह सुणै हकार पुरुष नपुसक होवै तिण बार ।।
कोई सुणि कार तजै पराण । असा दोष अछै तिण थान ।।२४८८।
सीता सुणि बोली तब वैन । इस पर्वत परि होइ कुचैन ।।
इन लोगा संग तुम भी चलो । भय की ठौर रहै नही भलो ।।२४८९।।

राम लक्षमरण तब हसइ । सुर्णे थे जबै अजोध्या बसइ ।।

राम द्वारा विचार करना

दख्यण दिस इक पर्वत ठाम । हाक श्रवण सुंरण डरपैं गांम ।।२४६०।।
सो प्रतष्य हम देख्या आजि । मनबांछित का हुवा काज ।।
गिरवर पर कुंण करै पुकार । ताका डर मानैं संसार ।।२४६१।।
सीता जो तुम डरपो घणी । तुम भी जाहु जहां ए दुणी ।।
रामचंद्र सीता लक्षमरण । परबत चढि देखें हैं सब वन ।।२४६२।।
रयण भई बन के सब जंत । हस्ती स्यध बोलै दुरदंत ।।
स्याला सबद भयानक लगैं । राम लक्ष्मण उस बन में जगैं ।।२४६३।।
बसन उतारि पहर कोपीन । धरे ध्यान ऊभा तप लीन ।।
जैसे सोहै कलस सुमेर । ग्रैसे सोहत हैं तिरण वेर ।।२४६४।।

अजगरों का निकलना

नीलांजन नगर की उणिहार । अजगर निकले तिहा च्यार ।।
दामनी ज्यौ जिह्वा नीकलै । फुंकारता अगनि पर जलै ।।२४६५।।
महा भयभीत करै चिंघार । इनकै हे समकित आधार ।।
बहुत चिंघारे विलखे भये । पुन्यवत डर भय नही थए ।।२४६६।।
च्यारु अजगर रूप धरि देव । राम लक्ष्मण की कीनी सेव ।।
पूजै चरण बजावैं वीरण । नाचै गावैं गीत नवीन ।।२४६७।।

देशभूसरण कुलभूषण मुनि पर उपसर्ग करना

वा वन मे देशभूसरण मुनी । कुलभूसरण करै तपस्या घनी ।।
राष्यस आरण दिखावैं नृत्य । वह अपने मन भय ना कृत्य ।।२४६८।।
उनको चाहे तप से टाल । वह हैं मन वच काया हुसियार ।।
अंधकार घरण घटा बनाई । उपसर्ग दिया मुनिवरातै धाइ ।।२४६९।।

अडिल्ल

मुनिवर ध्यांन गभीर चित्त आतम दिया,
हृदय सुमरि नवकार ध्यान निर्मल किया ।।
आर्त्त रौद्र निवार धरम सुकल गह्या,
ऐसा सुभट मुनिराज कष्ट बहुला सह्या ।।२५००।।

चौपई

राम लक्ष्मण का मुनि के पास जाना

लक्षमरण राम सीरण सब चल्या । बज्रावर्त्त धनुष संभाल्या भला ।।
साधा नै क्यूं देहै दुःख । बितर भाज्या उपज्यो सुख ।।२५०१।।

दोऊ मुनिवर नै केवलग्यान । जय जयकार करै सुर आन ।।
पूछै राम हैंज कर जोर । नोल बध किम पिछली खोर ।।२५०२।।
कारण कवण उपद्रव किया । वितर किम तुम कूं दुख दिया ।।

व्यन्तरो के पूर्व भाव

बोलै मुनिवर पूर्व भव भाव । पद्मनी नगर विजयगिर राव ।।२५०३।।
पट्टराणी नामै धारणी । भोग भुगति रति मानै घणी ।।
अमृतस्वरित राजा का दूत । उपयोगा स्त्री उदित पूत ।।२५०४।।
मुदित नाम का दूजा पूत । वसुभूत विप्र मित्र बहूत ।।
उपयोगा विप्र पाप की रीत । अमृतस्वरि तै रहैं भय भीत ।।२५०५।।
पर्वतभूत मत्रीय बुलाय । अमृतस्वर कही दिया पठाय ।।
वसुभूति विप्र कू लीया साथ । विप्र षडग लीयो निज हाथ ।।२५०६।।
अमृतस्वरित कौ तिहा मारि । आय कही उपयोगा नै मार ।।
वे दोनु मन रहसे घणे । डाव पडै दोन्यु सुत हणे ।।२५०७।।
वा दोन्या वीर सुणी इह वात । इण भाभण मारघा तुम तात ।।
अब तुम कूं मारैगा आइ । सावधाण रहज्यो इण ठाइ ।।२५०८।।
इक दिन सोवै था दोउ भ्रात । मारण आया द्विज अधरात ।।
उदित ने मारी तरवार । वसुभूत मारघा तिण बार ।।२५०९।।
विप्रजीव म्लेच्छ अवतार । खोटी ज्यौन भ्रम्यो ससार ।।

मतिवर्धन मुनि का आगमन

मतिवरधन मुनिवर मुनी । अनधरा आरज का ग्यानी गुनी ।।२५१०।।
वसत तिलक वनमे ते आय । छह रितु फूल फले वन राय ।।
सूका तरवर हुवा हरया । जलहर सकल नीर सुं भरचा ।।२५११।।
माली गया राय के पास । कही वीनती सहु सब भासि ।।
राजा सहु परिवार हकार । हाथी चढि चाल्यौ नरपार ।।२५१२।।
नगर लोक चाल्यो नृप सग । पहरि तने आभरण सुरंग ।।
वन के निकट राय जब गया । गजते उतरि भूमि पग दिया ।।२५१३।।

मुनि की तपस्या

मतिवरधन मुनि के सग घने । वे ठाढे ध्यान माहि आपणे ।।
कोई पदमासन तप करै । तीन रतन हिरदै मे धरै ।।२५१४।।
राजा अस्तुति करि दडोत । दरसन देखि सुख भया बहुत ।।
नरपति कहै सुणो मुनिराय । तुमारी है राजा सी काय ।।२५१५।।

तुम काहे कूं लीया जोग । छाडे सकल राज के भोग ॥
बोले मुनिवर सुणौ विचार । राजभोग तिहा थिर न संसार ॥२५१६॥

सुभ अरु असुभ करम परभाव । भ्रमै जीव पावै नही पार ॥
सुपना का सा है सब सुख । बहुर लहै नरक का दुख ।२५१७॥

इत ऊबरै निगोदरी बास । जनम मरण नही टूटी आस ॥
दिष्या नै पावै सिव आस । निरमै लाभै भोग विलास ॥२५१८॥

दरसन ग्यान बलवीर्ज अनत । सासय सुख लहै बहु मत ॥
विजय परवत सुणि दिष्या लई । राज विभूत पुत्र को दई ॥२५१९॥

उदित मुदित द्वारा वैराग्य लेना

उदित मुदित उपज्यौ वैराग । भये दिगबर घर सब त्याग ॥
सम्मेद सिखर की मनसा करी । गुरु आग्या लीनी तिह घरी ॥२५२०॥

वन मे गए भील की पुरी । मग नही लहे तिहा स्थिति नरी ॥
साधें जोग धरम के काज । ग्यान अंकुस से मन गज राज ॥२५२१॥

पंचइन्द्री की रोकै चाल । मोह करम की तोडै माल ॥

म्लेच्छों द्वारा उपद्रव

मलेच्छ आय तब कीनी बुरी । साध हतण की इच्छा करी ॥२५२२॥

उदित कहै मुदित सौ बात । म्लेच्छ आवै है घालण घात ॥
हमकू मारया चाहै आइ । तुम राखो दिढ मन बच काय ॥२५२३॥

अपनु चित्त राखज्यो ठौर । टूटे जनम मरण की डोर ॥
उन मरथै उपसर्ग निमित्त । पापी पाप विचारघो चित्त ॥२५२४॥

पहुच्या तिहा भील का राय । दोन्यु मुनिवर लिये छुडाय ॥
तिन म्लेच्छा नै मारया बाध । तोनें क्यु दुख दिया साध ॥२५२५॥

पूछै राम राय की कथा । बाके भव भाषो सरवथा ॥
भरत नगर तिहां दोइ किमाण । सुरपक करपल्लव जानि ॥२५२६॥

सुकतवाल कहारिया चोर । तिण किसाण छुडाया तिण ठोर ॥
उन बालक जब बुधि सभारि । तप करि उपज्यो राजकुमार ॥२५२७॥

सब मलेछु का हुवा राय । करै राज सोभा अधिकाय ॥
सुरपक करपल्लव धरम जाणि । तप कर उदित भए यहा आन ॥२५२८॥

पूरब जनम दिया अभय दान । ता सनबध छुडाये इस थान ॥
म्लेच्छा को दीनी अति मार । मरि करि पहुच्या नरक मझार ॥२५२९॥

तोड वन उदर पूरण भई । संन्यासी पै दिष्या लई ।।
पंच अगनि साधी बहुभांति । मरकरि भया देव की जात ।।२५३०।।

अगनि केतु नाम तसु भया । उदित मुदित समेदगिर गया ।।

उदित मुदित द्वारा निर्वाण प्राप्ति

समाधि मरण करि छूटे प्राण । पाया स्वर्ग मे देव विमाण ।।२५३१।।
अरिष्ट नगरी प्रिय वन भूप । कंचन नामा नारि अनूप ।।
दूजी पदमावती अस्तरी । रूपवत लष्यण गुणभरी ।।२५३२।।
दोऊ देव चये अंत आय । पदमावती गर्भ भए आय ।।
प्रथम रत्नरथ चित्ररथ और । रूपवत सोहै तिण ठौर ।।२५३३।।
आभा और अगनिकेत पुत्त । अनरथ नाम रूप बहुत ।।
राजा सुण्यु धरम व्याख्यान । छह दिन आव रही परमान ।।२५३४।।
राज भार पुत्र ने दिया । आपण भेम दिगबर लिया ।
रत्नरथ श्रीप्रभा सौं व्याह । राजभोग मे करै उछाह ।।२५३५।।

अनरथ राजा का मान भग एवं वैराग्य

अनरथ करै राय सौं बैर । मागे राज प्रथी का खैर ।।
चित्ररथ मंत्री सौं मत्र विचार । सेना जोड कीए जुध भार ।।२५३६।।
मान भग अनरथ का होय । भये संन्यासी ग्यान वियोग ।।
काय कष्ट सु साधै जोग । छोडे सब ससारी भोग ।।२५३७।।
रत्नरथ चित्ररथ मुनिवर पं गये । साभलि धरम जतीसुर भये ।।
ईसान स्वर्ग मे हुवे देव । सुर बहु करै तिना की सेव ।।२५३८।।

देसभूषण कुलभूषण का जन्म

सिधरत्नपुर क्षेमकरण नरेस । विमलाराणी पतिव्रता भेष ।।
ताके गर्भ स्वर्ग तें चई । देसभूषण कुलभूषण भई ।।२५३९।।
सागरघोष भूप की साल । विद्यापढि दोउ भए गुणाल ।।
चउदह विद्या बहत्तर कला । सर्वविद्या सीखी गुण भला ।।२५४०।।
विप्रसाष दोऊ शिष्य ले आय । सुत गुण देख आनद्यो राइ ।।
सागरघोष बहु पायो दान । क्षेमकर कीयो सनमान ।।२५४१।।
नरपति ऐसा करै विचार । जोवनवत भयो सु कुमार ।।
रूपवत नृप को कोइ सुता । ताहि समभि कोई कीजै मता ।।२५४२।।
उहै भूपति को जाचै जाइ । ऐसी बात विचारै राय ।।

बनक्रीडा

दोऊ कुंवर बनक्रीडा चले । हय गय रथ पायक बहु भले ।।२५४३।।

रथ परि बैठा दोन्यु वीर । रूपलक्षण करि दिपै सरीर ।।
कमलोत्सवा झरोखे द्वार । बैठी नयन आभरण संवार ।।२५४४।।
देसभूषण कुलभूषण देखि । यासौं कहू विवाह विसेष ।।
वे दोन्यु आपस मे जिद । नारि रूप हिया मे निंद ।।२५४५।।
उततै भाट आवता मिल्या । आसीर्वाद दीया उन भला ।।
क्षेमंकर के कुल आनंद । विमला उदर भए सुविचंद ।।२५४६।।
चिरजीव ह्वै ज्यो तुम सदा । इनका सुजस बखाणै मुदा ।।

कमलोत्सवा का विचार

कमलोत्सवा इनकू देखिया । धन्य बहू जिनकै दोउ भया ।।२५४७।।
असी सुणी जबै इन बात । सोच करै मनमे दोउ भ्रात ।।
सराह्या इन भैया की ठौर । हम मनमे आणी थी और ।।२५४८।।
जे इह अनि राषती भाव । तोऊ न कहती बहिन का भाव ।।
हम तो चित मा आण्या था पाप । क्यू उतरैगा इह सताप ।।२५४९।।
मन ही मन मे बाधे करम । ज्ञानवत किम करै अधरम ।।
धिग् यह जनम धिग् संसार । विषय भाव मे रह्यौ अधियार ।।२५५०।।
अब किए विध मिट सी अपराध । करै तपस्या मन वच साध ।।

दोनो भाइयो के वैराग्य भाव

फिर आये जहा माता पिता । वैराग तणा करि दोन्यु मता ।।२५५१।।
कहै कि हय तुम इह सनबध । इन्द्रिय विषय पाप का बंध ।।
अब तुम हम कू आग्या देई । तो हम मुनि पासै व्रत लेहिं ।।२५५२।।

माता पिता द्वारा संताप

दपति सुनि मूरछा गति आइ । पुत्रा प्रतै कही समझाय ।।
तुमारा न देख्या मगलाचार । तुम दोनो बालक सुकुमार ।।२५५३।।
करो राज तुम भुगतो सुख । कारज विन कवण सहो ए दुख ।।
चउथै आश्रम दिक्षा जोग । अब भुगतो संसारी भोग ।।२५५४।।

कुमारो का उत्तर एवं वैराग्य लेना

बोले कुवर ससार असार । व्यापत काल न लागै बार ।।
वाल वृद्ध सगला नै खाय । काहु की करुणा न कराइ ।।२५५५।।
आग्या ले मुनिवर पै गये । लुंचे केस दिगबर भए ।।
बारह तप तेरह चारित्र । अठाईस मूल गुण है पवित्र ।।२५५६।।

तीन रत्न पालै धरि भाव । साधै तप या विध इरण ठाम ।।
अनरध संन्या कौमुदी नग्र । सुम राजा जा की बल अग्र ।।२५५७।।
रतिवती राणी सम्यक् दिष्ट । ग्यान क्रिया मे अधिक श्रेष्ठ ।।
राय सुणीह्या ऐसा महह । दरसन कारण चल्या तुरत ।।२५५८।।
अैसे तपसी करिए सेव । राणी निंदा करै अछेव ।।
वाद भयो राणी अन राव । समझै केम सुभासुभ भाव ।।२५५९।।
साधुदत्त मुनि के उपदेश । राणी माड्यो वाद नरेस ।।

नागदत्ता का अनरघ तपस्वी के पास जाना

नागदत्ता कन्या सु कही । अनरध पासि जाह तु सही ।।२५६०।।
सारे दिन रहियो वन माहि । तपसी पास जाइयो साझ ।।
जब वह चुकै आपणा ध्यान । वाकु ल्याज्यो कणिका थान ।।२५६१।।
पुत्री गई जहा अनरध । लाग्या ध्यान आतम के मध्य ।।
कंन्या की पाई तबै बास । अनरध कहै फली मन आस ।।२५६२।।
मैं तो बहु प्रकार तप किया । अपछर यह फल पाइया ।।
तब कन्या तापस ने कहै । मेरी माता मनोहर रहै ।।२५६३।।
तू पूत्री अपनो वर ढूढोल । अब तुम चली मोहि घर गल ।।
तुम चरणन की सेवा करूं । तुम साथै तप अन आदरू ।।२५६४।।
तव तापस आइया पास । कन्या बोली वचन प्रकास ।।
अब तुम चलो माता के पास । मोकूं देसी तुरत निकास ।।२५६५।।

तपस्वी का कन्या के साथ जाना

तपसी चाल्यो कन्या सग । त्रिया लाजी जिम व्याघ्र कुरग ।।
तिहा सुमुख राजा जा छिप्या । वेस्या के घर आया तपा ।।२५६६।।
वेस्या दई अपणी पुत्तरी । भोग मुगत मानें तिह घडी ।।

दुशान्ती होना

राजा तबै बाध्या तापसी । पनिया सौ पीटयो करि हसी ।।२५६७।।
राख्यो राति पाइगा बीच । मुत लाद की माडी कीच ।।
प्रभात भये बुलायो तुरत । मुंड मुंडाय कै पाछणा बहुमत ।।२५६८।।
गादह चढाइ फिराया देस । असा किया तपा का भेस ।।
मरि करि मुगती सातो नर्क । ऐसैं सहै भव भव उपसर्ग ।।२५६९।।
अत भया बाभण का पूत । सन्यासी ह्वै तप करै बहुभंत ।।
ज्योतिग पटल देवता भए । वा सनमंध हमनै दुख दए ।।२५७०।।

अनन्तवीर्य मुनि के पास देवों का आना

इक दिन असुरनिकाया देव । अनंतवीर्य दर्शन कुं सेव ॥
तिहां इन्द्र नें पूछी बात । मुनिसुव्रत उपजे जिननाथ ॥२५७१॥
उन पीछे कवरण होइ केवली । देसभूषण कुलभूषण कथा चली ॥

दोनों मुनियों के केवलज्ञान होना

उनकूं उपजै केवलज्ञान । उन प्रभु देव बिचारचा ध्यान ॥२५७२॥
पूरव भव का जाण्यां भेव । आया उपसर्ग कीया बहेव ॥
षेमकर अर बिमला माय । ले सन्यास तजी निज काय ॥२५७३॥
पहुंचे सौधर्म स्वर्ग बिमांण । उपसर्ग देख आए इस ठांण ॥
महालोचन षेमंकर जीव । आया मोह करम की नींव ॥२५७४॥
हम घातिया कर्म सहू टाल । माया मोह का तोडचा जाल ॥
केवलग्यान उपज्या इस घडी । सुर नर सहु मिलि सेवा करी ॥२५७५॥

दूहा

रवि प्रताप जग मे तपै, ग्यानी ज्योति अनंत ॥
सुणत भेद समय मिटै, सुख पावै बहु संत ॥२५७६॥

इति श्री पद्मपुराणे देसभूषण कुलभूषण केवलज्ञान विधानकं

३५ वां विधानक

चौपई

सूरप्रभ राजा द्वारा राम का स्वागत

सूरप्रभ वंसस्थल को राई । बंसगिरि सोमै बहु भाई ॥
बारह सभा सुणै तहा धरम । रामलखण को पायो मर्म ॥२५७७॥
भूपति सकल बर्णन कूं नए । दरसन पाइ कृतारथ भए ॥
नारायण बल अष्टम अवतार । सुमरचां हुवै जीव आधार ॥२५७८॥
सुप्रभराय गयद सवार । पचवर्ण कीने इकसार ॥
कियो महोछव आण्यो गेह । दीपै यह कंचन मय देह ॥२५७९॥
फिरै छत्र सिर ढारैं चवर । बिछे कुसुम सब मारिग ठौर ॥
बहु पकवान मिठाई बनी । बहुत भांति की रसवती बणी ॥२५८०॥
भात दाल तरकारी घृत । रस गोरस दीनां भरि घर्त ॥
रतनजडाई कंचन थाल । चौकी जडत बहु मोती लाल ॥२५८१॥

सुवर्ण झारी अमृत नीर । जीमैं राम लक्ष्मण दोउ बीर ।।
सीता नैं लीयो आहार । दई सुख सोधि बहु पुण्य सवार ।।२५८२।।
अगजा घाल्या बास गंभीर । बातै उपजै सुख सरीर ।।
लक्ष्मण राम बस गिर चले । वनक्रीडा देखत मन बलै ।।२५८३।।
चैत्यालय देखै बहु भाइ । रतन बिंब बैसो जिनराय ।।
कही कंचन के देहुरे । कहीं पाषाण लगाये खरे ।।२५८४।।
करै प्रतिष्ठा पूजा दान । सकल भूपती मानै आण ।।
रामचंद्र लक्ष्मण मो कहै । वर्णं नही जो हम इहा रहै ।।२५८५।।
लोग करैं हमरी सब सेव । भरथ सीव सौं रहिये छेव ।।
कैसे रहिये भरथ की ठौर । रहैं जहाँ तहा लखै न और ।।२५८६।
सतवादी श्री रामचंद्र, लक्षमण चित्त विवेक ।।
वगगिरि तजि आगैं चले, धारि धरम की टेक ।।२५८७।।

चौपई

राम का आगे गमन

राम गिरि छोडि वनमारग चले । बहु प्रकार तरु देखे भले ।।
अगले वन सब देखे सघन । मनुष्य न दीसैं मारिग कठिन ।।२५८८।।
निस वासर तिहा एक समान । सघन वृक्ष दीसै तिहा भान ।।
सारे दिन चलिया कोस एक । गिरि कंदरा मे रह्या टेक ।।२५८९।।
वनफल बीग करैं आहार । पहुँचे करण रेवा तट पार ।।
उत्तम वृक्ष लागे फल फूल । सीतल पवन जाय दुख भूल २५९०।।
तिहा जाय रामचदर रहै । वनफल आणि अन्य न चहै ।।

वन जीवन काल

वासण मोटा तिहा संवार । रसवती करै सीता तिण बार ।।२५९१।।
पातन की पातल ले वणाइ । सुरही धेनु का दुग्ध मगाइ ।।
नारिकेल के तदुल अनूप । दाडिम दाख मुख स्वरूप ।।२५९२।।
चारोली पिस्ता बिदाम । ए वसता खाई करै आराम ।।

राम द्वारा चारण मुनियो को अहार देना

चारण मुनि सीता दृष्टि देखि । मास उपवासी दिगबर भेष ।।२५९३।।
रामचद्र ने सीता कहै । उठो बेगि पडगाहो गहैं ।।
दोउ मुनिवर ने देय अहार । रामचद्र उठियो तिणबार ।।२५९४।।

नमस्कार करि पूजे चरण । मुनि दर्शन भव पातिग हर्ण ।।
वैयाव्रत करि दीयो दान । विधि सेती कीयो सनमान ।।२५९५।।

मुनिवर कौं दीनी सुखसोधि । अर्धदान बोले प्रति बोधि ।।
पुहुप रत्न बरषे तब घणे । सुर नर सब जै जै कूं भणे ।।२५९६।।

गृद्ध की कथा

गृध्र एक बैठा तरु डाल । भव सुमरण उपज्यो ततकाल ।।
केहू वेर लही मानव देहु । धरमध्यान सुं धरचो न सनेह ।।२५९७।।

अकारथ खोयो सब जन्म । नटवत भेष करे सब कर्म ।।
मानुष होय कबहु पुन्य न कियो । शास्त्र सुणन को चित न दियो ।।२५९८।।

मुनिवर को नहीं दियो अहार । धरयो नही व्रत संजम भार ।।
पषी भयो नित आमिष भष्यो । अब मैं कैसे अलेषं लिष्यो ।।२५९९।।

चरणोदक मुनिवर का पिया । अैसा ग्यांन गृद्ध को भया ।।
पषीन तै कहा संयम पलै । मुनिवर चरणा मे चित मिलै ।।२६००।।

जटारत्न सम पषी बणे । सोभा तसु कहत न बनै ।।
रामचंद्र पूछे विरतान्त । सुगुरु पनि गुपति भावै बात ।।२६०१।।

जनपद करण नाम तिहा देस । बहुत नग्र ग्राम बहु बेस ।।
कैई गिरिपर कैई तलें । कैई बसै नदी तट तलै ।।२६०२।।

कैई निबसै महा उद्यान । कैई निकट नगर के थान ।।
करण कुंडल का डंडक भूप । अस्वकरणी राणी सस्वरूप ।।२६०३।।

प्रवस्य सौं राजा आसक्त । भई रयण करिवा चाल्यो रित्त ।।
मारग मे मुनि ध्यानारूढ । सर्प एक मंगायो नृप ढूंढ ।।२६०४।।

मुनि पर उपसर्ग

कीडी चढी साध की देह । परिवस्य कै गयो भूपति गेह ।।
मुनिवर तबै मांड्यो संन्यास । वाके देह तणी नही आस ।।२६०५।।

विसहर मृतग चुबै गरल । अैसो अैहि घाल्यो मुनि गल ।।
जो कोई आय उतारै सांप । तब वह वासो करै संताप ।।२६०६।।

अन्य देश का भूपति आई । देख्यो सर्प मुनिवर की काई ।।
अस्व तैं उतरि मुनीसर पठतारि । राजा ये कीया नमस्कार ।।२६०७।।

उत्तम बस्त्र सें पूंछियो सरीर । वैयावृत्त करि मेटी पीर ।।
गयो भूप उपसर्ग निवार । डंडक फिर आयो तिण बार ।।२६०८।।

बोलै किणउ उतारचौ साप । उतारचा अनही राजा आप ।।
चढै कोप कहै कैलूं आंन । साधा नैं पीडूं इस थान ।।२६०९।।

मुनि के चारों ओर अग्नि जलाना

फिर बोल्या वाडा चहु फेर । काठ सवारो बहु तिहा घेर ।।
काहू कू निकलण मत द्योह । दावानल माहीं कीद्यो ल्योह ।।२६१०।।

पापी दुष्ट विचारी बुरी । आई नरक जाणें की घडी ।।
च्यारो तरफ लगायी आग । मुनिवर ध्यान निरजन लाग ।।२६११।।

लग्या भील देही सब जरै । मुनिवर नही ध्यांन तें टरैं ।।
पावकध्वज सबन को देव । अगनि बुझाइ करी मुनि सेव ।।२६१२।।

वाही अगनि देही सब जाल । सकल प्रथी बल हुई लाल ।।
दाझे जीव जन्तु सब मुये । राजा नरक सातवीं गये ।।२६१३।।

भरम्यो लख चौरासी जौंनि । अब ए गृद्ध भए करि गौंन ।।
हमारा भव देख्यो परतक्ष । वानारसी नग्र रहै तिहां रक्ष ।।२६१४।।

अचलराय एवं गिरदेवी द्वारा मुनि को आहार देना

अचलराय गिरदेवी अस्तरी । रूप लक्षण गुण सोहे घरी ।।
त्रिगुप्ति मुनिन कूं दियो आहार । दिखाया आपणा हाथ पसार ।।२६१५।।

मेरे सतति होय कि नांहि । भाषो मोहि जिम मिटै दाह ।।
मुनि बोल्या होसी सुत दोइ । सुगुपति गुपति तेरे गरभ होय ।।२६१६।।

सोमप्रभ प्रोहित है राय । सोमिला स्त्री गर्भ कै भाय ।।

सुकेत और अग्निकेतु द्वारा दीक्षा लेना

प्रथम सुकेत अनै अगनिकेतु । दोनूं वीर हैं बहु देत । २६१७।।

सुकेत अनतवीर्य मुनि पास । दिक्षा लही सुगति की आस ।।
अगनिकेतु सन्यासी भया । पचअगनि साधी तप किया ।।२६१८।।

सुकेतु विचारै असा ध्यान । अगनि केतु तप करै अग्यान ।।
काय कलेसस्यौं दहै सरीर । अन्य जीव किन आवै पीर ।।२६१९।।

सूक्षम बादर विराधै प्रान । अणगाले जल करैं असनांन ।।
वा कू परमो धूमैं जाय । गुरु सूं आज्ञा मागी आय ।।२६२०।।

अनतवीर्य सुकेत सूं कहै । अगनिकेत मन मिथ्या गहै ।।
तुम्हारा मानैगा नही बैन । अग्यानी किम समझै अैन ।।२६२१।।
क्रोध मान माया का धणी । जैन धर्म खाडा की अणी ।।
रागदोष वाकै मन बसै । संयम क्रिया नही उलह्सै ।।२६२२।।

वह तो समझैगा इस भांति । तोय्यु हम समझावै बात ॥
प्रकर महाजन सुघरा तिरी । वाकैं साथ तीन अउर तिरी ॥२६२३॥

आवैगा गंगा जल भरण । तीन दिन पाछै उसका मरण ॥
पावैगी भू डा अवतार । बीजे भव महिषी अवधार ॥२६२४॥

उहां तैं भी मरि विलास कै ग्रेह । जा कंवर ग्राम सुतां हुइ एह ॥
जती सुकेत भ्राता पै गया । दोन्या सूं तिहां मेला भया ॥२६२५॥

वाही समै रुधराजव आइ । तबैं सुकेत बोलैं मुनिराय ॥
अगनिकेत नैं पूछे ग्यांन । कहो कछु आगम व्याख्यान ॥२६२६॥

इस कन्यां का क्या होइ लिखत । तो मैं जाणु तुं महंत ॥
अगनिकेत कहै तुम भणौ । तुमारा ग्यान सही मई गिणो ॥२६२७॥

कन्या का भविष्य

सुकेत कहैं कन्यां इह मरै । तीजो दिन या को नहि टरै ॥
भेड भैंस गति ह्वं भी सुता । विसाल देह रूप की लता ॥२६२८॥

जबै कन्या होइ जोवनवंत । प्रवर विलास मामा सु कहंत ॥
इह कन्या मोकु तुम देहु । भाणजी जाणि कही उण लेहु ॥२६२९॥

व्याहण आया मामा द्वार । अगनिकेत आयो तिण बार ॥
है संन्यासी प्रवार सुं आया । इह तो सुता तेरी इह छाया ॥२६३०॥

तू कहा ऐसा हुआ अग्यांन । बेटी ब्याहन कुं जोडी जान ॥
ग्रैसी कथा कन्या नै सुणी । उपजी अवधि भव सुमरणी ॥२६३१॥

कन्या द्वारा वैराग्य के भाव

धिग् धिग् भाई मोहनी करम । ग्रैसे जीव भ्रमैं है मर्म ॥
इह अचिरज सब लोग्यां सुण्यां । भया वैराग सबही मणा ॥२६३२॥

अनतवीरज मुनिवर ढिग गया । दिष्या लई करि मन वच कया ॥
रामचंद्र सीता नै सुणैं । प्रवर वह वृद्ध बीनती भणैं ॥२६३३॥

अचल राजा गुपति सुगुपति । अगनिकेत लह्या समकित ॥
प्रवर अवर मामा विलास । विधरा नाम और कन्यां तास ॥२६३४॥

धरम मारग तुम मोसु कहो । तुम प्रसादै गति उत्तम लहौं ॥
रात्रि भोजन हिंस्या वृत्त । अइसी रीत वह पंथी वरत ॥२६३५॥

मुनिवर गए आपणै थांन । सिष्याइत भविजन मांन ॥
लछमण नें हस्ती वस्य कीया । ऊपरि ताके चढि आइया ॥२६३६॥

पुष्पवृष्टी देखे तिहा ठेर । जटा पंखी देख्या तिण वेर ।।
रामचद्र सूं पंछी कथा । प्रभु नें कह्या भेद सरवथा ।।२६३७।।

धन्य साध जे नारी तरै । बेर बेर सबै अस्तुति करैं ।।
ससय मिटया गया सदेह । दया धरम सूं धरयो सनेह ।।२६३८।।

सोरठा

नर देही निध पाया, दान सुपात्रा दीजिये ।
सुरग नरा सुख थाय, अत मोष्य पद पावही ।।२६३९।।

इति श्री पद्मपुराणे रामचन्द्र सुपात्र दांन जटापंखी विधानकं

३६ वां विधानक

चौपई

राम का आगे गमन

अग्रे चलेण की इछा करी । करन रेवा नदी बहै तिहा खरी ।।
नाव बिना किम होजे पार । ऐसा तिण ठा करै विचार ।।२६४०।।

सहर माहि सत्ते साह एक । ताकी सोभा वणी अनेक ।।
छत्री कलस मुगताहल घणे । रतन जोति सूरज सम बणे ।।२६४१।।

सिंहासण परिवसत अनेक । सज्या सोहै अधिक विवेक ।।
चंदवा चदव अरगजा और । वहुत जुगति राखी तिण ठौर ।।२६४२।।

बाजा बाजै ताके पास । उसपरि चढि चाले वनवास ।।
पार उतर देखे बहु देस । वन बेहड अति परवत वेस ।।२६४३।।

रग रग के गिर पाषान । उत्तम ठोर रहै मन मान ।।
कहि झरै पर्वत तै नीर । कही नदी निकसी तिह तीर ।।२६४४।।

दडक वन में पहुंचना

दडक वन मे पहुचे जाय । बहुत पुष्प फूली वनराइ ।।
सोहै वन सुगध अति वास । देखत उपजै चित्त उलास ।।२६४५।।

अडिल्ल

वन की शोभा

वेलि चवेली जातिक चपा केवडा ।
बने सरोवर कमल नीर निरमल भरया ।।
भ्रमर करै गुंजार सुसब्द सुहावणे ।
फूले फूल अनंत कवल कव लग गिणे ।।२६४६।।

नारिकेल खर्जुर अंब अनै आमली ।
नींबु सदाफल बेर सेव कहवे भली ।।
बड पीपल अरु महुवा छाह सीतल जिहां ।
सकल जाति के रूंख देखि बहु सुख लहा ।।२६४७।

केसरी अगर सुवास पुष्प चदन घणे ।।
दाख चिरूंजी अवर पेड पाडल वणे ।।
पुंगी वृक्ष उतंग जायफल के वणे ।
धांन तणे बहु खेति तिहा सुदर भणे ।।२६४८।।

चौपई

कहि हंसने कहा चकोर । बोले सब्द सुहावन मोर ।।
कहे तीतर कहे लवे कपोत । सारस वग बतक बहोत ।।२६४९।।

घुघू कवुआ गिरध बटेर । सूवा सागे पषी बहु हेर ।।
जे जे सबद करे चिहु वोर । राम नाम सुमरण का सोर ।।२६५०।।

दडक पर्वत तिहा उतग । गुफा मे रहै सिंघ उमंग ।।
कहु चीता कहिं सारंग रीछ । साभर सूकर गैंडा हीछ ।।२६५१।।

आरणां भैंसा सुरही गाय । पसु जाति सगला तिह ठांइ ।।
सरवर माहिं कमला का फूल । चलै पवन अति सुख का मूल ।।२६५२।।

चलै समीर तिहा गभीर । पावै सगला सुख सरीर ।।
सबल वृक्ष हालै पात । भयो आनंद वन मैं बहु भाति ।।२६५३।।

क्रीडा करैं हस वन मांहि । झरना झरै तिहा सीतल छाह ।।
हरषे सकल दिवस धन्य आजि । रामचंद्र आए वन मांझि ।।२६५४।।

वन सोभा देखैं अति भली । राति दिवस देखैं मन रली ।।
रंग रंग के दिपै पाखान । दमकै किरण उद्योत है भान ।।२६५५।।

फिटक सिला की जोति अनूप । सब ठा सोहै महा स्वरूप ।।

दंडक वन की शोभा

ता तलि करावरन बहै । महा अगनि उज्जल जल रहै ।।२६५६।।

परवत की झाई जलमांहि । भले वृक्ष तहा सीतल छाह ।।
स्वर्ग सूर ससी उडगण घणें । जल मे दीसैं अति सोभा वणे ।।२६५७।

रामचंद्र लखमण अर सीया । जटा पषी निज कर पर लीया ।।
करि सनान जल क्रीडा करी । नीर उछालें अजुल भरी ।।२६५८।।

वे सुख किए पर वरणे जाइ । विदग्ध नगर बसै तिण ठांइ ।।
वरषा रुति का आगमन भया । तहां प्रभु ने वासा लिया ।।२६५६।।
दडक बन प्रति उत्तम ठोडि । तिहा रघुपति त्रिभुवन सिरमोड ।।
पचवरण बादल आकास । बरषै मेह अधिक सुखरासि ।।२६६०।।
पर्वत तैं उतरै जल भौमि । काली घटा रही प्रति झूमि ।।
दामिन जोति पृथ्वी पर होइ । दंपति रहसि करै सब कोइ ।।२६६१।।

दूहा

दडक वन वासा लिया, प्रगटयो तिहा चउमास ।।
रामचद त्रिभुवन धणी, मन मे धरै उल्हास ।।२६६२।।

इति श्री पद्मपुराणे रामचंद्र दंडक वन निवास विधानकं

३७ वां विधानक

लक्ष्मण को सुगन्ध आना

लक्षमण वन क्रीडा को जाइ । बहुत सुगंध उठी तिण ठाय ।।
लक्षमण मनमे करै विचार । इह सुगध कैसी प्रपार ।।२६६३।।
ऐसी कही देखी न सुणी । इह सुगध वन मे घणी ।।
कै इह मम सरीर की बास । कै इह रामचंद्र की सुवास ।।२६६४।।
लषमण सोचै बारंबार । इस विध वास नही संसार ।।
इहां श्रेणिक पूछै कर जोडि । श्री जिन भाषै कथा बहोडि ।।२६६५।।

पूर्व कथा

ऐसी है किसकी सुवास । नारायण जु सराही तास ।।
श्री जिन भाषै समझाय । श्रेणिक राय सुणै मन ल्याय ।।२६६६।।
आदिनाथ स्वामी छदमस्त । नमि विनमि मागै इह वस्त ।।
भरत बाहुबलि पायो राज । सुधरया नही हमारा काज ।।२६६७।।
भाषो बात तजो प्रभू मौन । हम हे राज नग्री का कौंन ।।
धरणेन्द्र ने दीयो इन राज । विजयारध का सौंप्या राज ।।२६६८।।
वाकै बंस धनवाहन भया । अजितनाथ कै समोसरण गयो ।।
भीम नाम राध्यस पति देव । आया करण श्री जिन की सेव ।।२६६९।।
धनबाहन स्यों भया मिलाप । त्रिकूटाचल कुं ले चाल्यो आप ।।
दीयो लंका कों तब राज । जोजन आठ लंक गढ साज ।।२६७०।।
ऐसो हार दियो वा हाथ । सुंचि सेती पूजी इह नाथ ।।
वाकै बंस रावण भयो बली । तिहू षड साध्या मन रली ।।२६७१।।

वाकै भगनी है चन्द्रनषा । षरदूषण पट राणी सषा ।।
वाकैं गर्भ पुत्र द्वै भए । संबूक सुंदर निरमए ।।२६७२।।

सूरजहास षडग निमित्त संबूक की तपस्या

सूरजहास षडग निमित्त । संबूक साध्या तब बहु मंत ।।
वारह वर्ष दंडक वन रह्या । साधी विद्या षडग तब लह्या ।।२६७३।।

दिवस सात औंधे मुख रह्यो । संबू कुंवर षडक न ग्रह्यो ।।
जे षडग आवैं मो हाथ । तत ले जाउ अपणैं साथ ।।२६७४।।

तस सुगंध वन भयो सुवास । लक्ष्मण गयो षडग के पास ।।
बहुत कष्ट थी पायो षडग । वारह वर्ष सह्यो उपसर्ग ।।२६७५।।

ग्रैसे वासूं ल्यायो ध्यान । श्राप ही आवैं कर्म प्रमान ।।
तब मैं ले जाउं निज गेह । इण प्रकारैं साधी जन देह ।।२६७६।।

लक्ष्मण द्वारा सूरजहास की प्राप्ति

लक्षमण सूरजहास नै पाइ । पुण्यवंत नारायण राइ ।।
ततखिण मूठ खडग की गही । जाणो जोति सूरज की लही ।।२६७७।।

देख्यो बहोत ऊजलै वरण । लषमण चाहै परिष्या करण ।।
यो है कसोख देखूं चलाय । या की कैसी धार ठहराय ।।२६७८।।

वेडो वास को रह्यो तिहा छाय । संबू कुंवर बैठो तिण ठाइ ।।
लक्षमण करै वेढा परि चोट । संबूक कुंवर कटयो तिण वोष ।।२६७९।।

उतर मूंड धरती पर पडया । गिरी लोथ तिहां लक्षमण खडा ।।
सूरजहास खडग इह भेव । करै देवता सगला सेव ।।२६८०।।

देव सकल बोलै तिण बार । ए पुंन्यवंत अष्टम अवतार ।।
संबूक कंवर जु कीया तप । विद्या निमित्त किया बहु जप ।।२६८१।।

द्वादस वर्ष कष्ट बहु सह्या । वाका हेत मन ही मे रह्या ।।
बिन लहणैं पावै किम भांति । बारह वरष सहै दुखगात ।।२६८२।।

दोहा

बिना पुन्य पावैं नहीं, कष्ट सहै दिन राति ।।
हीन पुन्य परभव किया, सुभ फल केम लहंत ।।२६८३।।

पुंन्य जिहां तिहां फिरै, इतना लहै सुभाय ।।
विद्या विभव सरीर सुख, सो मिलै अगाऊ आय ।।२६८४।।

चौपई

देव पुनीत आभूषणो की प्राप्ति

देव पुनीत आभूषण घने । केसर चंदन सोभा बणे ।।
देवा नै लक्षमण कूं दिये । नमसकार चरणन कूं किये ।।२६८५।।

आनद्या लक्षमण कुमार । वनमे खडा लगी बहुबार ।।
सीता रामचद्र सुं कहै । लक्षमण कहा अब लग वन रहै ।।२६८६।।
वेगा उठि वाकी सुधि लेहु । जटा पषी तुम मोकूं देहु ।।
तब ही लक्षमण पहुचे आय । तब पूछै सब रघुपति राइ ।।२६८७।।
तुम यह खडग कहा ते लया । लक्षमण तब व्यौरा सब कह्या ।।
तब वह करै बहुत आनंद । खरदूषण घर हवा दंद ।।२६८८।।

चन्द्रनखा द्वारा विलाप

चन्द्रनखा आवै थी नित्य । पुत्र सनेह घणुं थो चित्त ।।
नित प्रति देती आन अहार । करती सदा पुत्र की सार ।।२६८९।।

देख्या बडा बास का कटया । पुत्र ने देख्या मन सहु घटया ।।
कुमर खडग किस पर चलाइया । वन कुं काटि कहा उठि गया ।।२६९०।।

अग्रे देखी सुत की लोंथ । पडया मुंड कुंडल की वोथ ।।
देख्या कुंवर खाई पछाड । रोवै पीटै करै पुकार ।।२६९१।।

किस दुरजन मेरा मेरा सुत हण्या । चन्द्रनखा सिर पीटै घणा ।।
भई चित्त भ्रम विचारै एह । विद्या सु काटि निज देह ।।२६९२।।

उठो पुत्र कहा करो चरित्र । तेरी बाट जोवै सब मित्र ।।
चन्द्रहास रावण पै खडग । तुम चाहो लियो वह मागि ।।२६९३।।

चन्द्रनखा की राम लक्षमण से भेंट

बहुरि सभल करि बोलै मात । देखु मैं किण कीधा घात ।।
राम लक्षमण कुं देखे कही । इन मेरया सुत मारया सही ।।२६९४।।

देखि रूप सो भइ आसन । धन्य वह नारि ज्यासौं ए रतन ।।
चन्द्रनखा रोवै तिण वार । सीता आय पूछी तिण सार ।।२६९५।।

किण कारण तू रोवै घणी । कहो सांच काहे अणमणी ।।
चन्द्रनखा बोलै तव वैन । मेरा जीव कुं महा कुचैन ।।२६९६।।
मात पिता मेरे को नाहि । अब मे गही तुमारी छांह ।।
जे लक्षमण मोकूं करै व्याहु । तुम जाई समझावो ताहि ।।२६९७।।

नहीं लक्षमण नैं इच्छा करी । मान भंड थई विद्याधरी ॥
चढि विमाण लंका को गई । रामलक्षण मन ऐसी भई ॥२६९८॥

जो इच्छै थी चन्द्रनखा, लक्षमण धरी न चित्त ॥
कुमति विचारैं प्रति घणी, कवण चहै त्रिय हित्त ॥२६९९॥

इति श्री पद्मपुराणे संबुकबध विधानकं

३८ वां विधानक

चौपई

चंद्रनखा का खरदूषण के पास आना

चद्रनखा पहुंची निज भूमि । कपडा फाडि मचाई धूम ॥
खोस्या केस लगाई खेह । नखतैं सब वीलरी देह ॥२७००॥

इण विध खरदूषण पै गई । सोगवंत तिहां बोलत भई ॥
पूछै पति साची कहो बात । तो कूं किसै कही प्रवदात ॥२७०१॥

जिन वरांक तेरा किया सूल । वाका मरण प्राया मूल ॥
जे यह छिपै चाइ पाताल । मारूं घेर ताकूं ततकाल ॥२७०२॥

चद्रनखा कहे दंडकारण । तिहा संबूक गया तपकरण ॥
सूरजहास खडग तिहां लह्या । रहै भूमिगोचरी तिहां ॥२७०३॥

मेरा पुत्र उनुं मारिया । मोसूं घणी करी है प्राणीया ॥
मैं तो घणी करी पुकार । कोई सहाय भयो न तिण बार ॥२७०४॥

हू प्रबला वह पुरुष सरीर । कैसै उनसौ हुवै धीर ॥
मत राखन वहुतेरा करचा । एक बटोही तिहा दिठ परचा ॥२७०५॥

उन मोकूं तब दइ छुडाय । मेरा सील रहा इण भाइ ॥

खरदूषण का कुपित होना

खरदूषण कोप्या सुंण बात । चउदहै हजार भूपति संघात ॥२७०६॥

चउदह सहस्र मगल तसु डोर । हय गय पायक रथ बहु प्रौर ॥
मंत्री सूं पूछै तब मत्र । मंत्री मंत्र कह्यो तिण मत ॥२७०७॥

बारह वरष कवर तप किया । लक्षमण प्रावत ही पग लिया ॥
सेवा करैं देवता घणे । वासौ जुध किया किम बणै ॥२७०८॥

जौ तुम जुध करण की बात । भेजो दूत दशानन पास ॥
एकठा होय सेन्यां बहु लेय । तब तुम वासौं जुध करेय ॥२७०९॥

रावण के पास दूत भेजना

इतनी सुणि भेजा तिहा दूत । रावण पासि जाय पहुंत ।।
सोलह सहस मुकटबध जुडे । हाथ जोडि प्रभु आगे खडे ।।२७१०।।
दस सिर बीस भुजा बलवंत । चन्द्रहास खडग सोभंत ।।
असक्त बाण गदा तसु पास । इन्द्र समान विभव बल तास ।।२७११।।

खरदूषण का दडक वन पहुंचना

खरदूषण बेटा के मोह । बहुरि उठा नारी का छोह ।।
बडे भुभारू चढे विमाण । दडक वन ते पहुचे आण ।।२७१२।।
सुण्या देव नंदीश्वर ज्याइ । कै कोई दुरजन चढ आव ।।
कै कोई गरुड चढे आकास । रामचद्र इम बोलै भास ।।२७१३।।
देखे दल नागी तलवार । वज्रावर्त्त धनुष संभार ।।
सुर जहा सरकत सौ भरया । एक मनुष्य विडे तल मरया ।।२७१४।।
उन अस्त्री उनके घर जाइ । कह्यो सकल व्योरी समझाइ ।।
ता कारण चढि लाए घणा । अत्रं सावधान हुवा ही वण्या ।।२७१५।।
सुण्या सवद सीता निज कान । रामचद्र सु लिपटी आन ।।
बहुत मोर काहे ते होइ । केसरी सिंघ दहाडै कोइ ।।२७१६।।
लक्षमण तव करै बीनती । तुम सीता सग छोडो मती ।।

लक्षमण द्वारा युद्ध करना

इनसूं जाय करू मैं युध । मे हारू तब लीज्यो सुध ।।२७१७।।
हार जाणौं तब पूरू संख । तब कीज्यो तुम मेरा पक्ष ।।
सूरजहास खडग कर लिया । वज्रावर्त्त टंकार तब किया ।।२७१८।।
उततै छूटै विद्या बाण । बरछी धरसे गदा मेघ समान ।।
गोला गोली पडै अनत । इततै छूटै बज्रावर्त्त ।।२७१९।।
लक्षमण कै लागै नही घाव । विद्याधर भुलै तिण ठाव ।।
जैसे कमल सरोवर माहि । ऐसे मुंड भुवि मध्य तिराहि ।।२७२०।।
हाथी घोडे पर्वत ढेर । पड़ी लोथ सगलो वन घेर ।।
भूझे सुभट स्वामि के काज । जिनकू धान खाये की लाज ।।२७२१।।

रावण का आगमन

रावण सुणि आयो तिण बार । पहुच्यो दंडकवन है मंझारि ।।
रामचंद्र सीता बैठारि । रावण दृष्टि सीता पर डारि ।।२७२२।।

सीता को देखना

सीता की देखी छबि घणी । ते मुख गोचर जाइ न भणी ॥
जे सीता के नख की कांति । असी नहीं मंदोदरी गात ॥२७२३॥

बुध तणी गति गयो भूल । उपजी कुबुधि मरण अनुकूल ॥
करै सौच सीता किम हरूं । मैं तो सील महाव्रत धरूं ॥२७२४॥

सीलव्रत टालो किण भाति । सोचैं घणा बणै नही बात ॥
अब लग मे नही करी अनीत । छोडूं नही धरम की रीत ॥२७२५॥

अब जो सुणैं दूसरा कोइ । तो अपलोक प्रथी पर होइ ॥
जो मैं छोडूं असी नारि । तो बिरहानल सहूं अपार ॥२७२६॥

असी विध याकूं ले जाउ । कोई न समझै मेरा नांव ॥

करणगुप्ति विद्या का ध्यान करना

करणगुपति विद्या सभारि । विद्या बोली बात विचारि ॥२७२७॥

रामचंद्र सीता के पास । लक्षमण जुध करै वन नास ॥
रामप्रतै असी हरि कही । मेरी हारि तबैं जाणो सही ॥२७२८॥

सख नाद सबद मैं करूं । तव तुम आपणा चित मैं धरूं ॥
करके नाद तब ऊपरि आइ । लक्षमण एम गये समझाइ ॥२७२९॥
जे तुम संखनाद करो भरपूर । रामचद्र उठि आवैं सूर ॥
तब तुम तुम सीता हर ले जाव । इण प्रकार तुम करो उपाव ॥२७३०॥

रावण द्वारा शखनाद करना

छोड्यो बाण भयो अधकार । सिंघनाद पूर्यो चिंघार ॥

राम का लक्षमण के पास जाना

नाद करत रघुपति साभल्यो । रामचंद्र लक्षमण ढिग चल्यो ॥२७३१॥

रावण द्वारा सीता हरण

खोटा हुवा राम ने सौंण । सीता लें रावण करै गौण ॥
पुहप विमांण ले बैठा चल्यो । निकले मनि पाप विचार न करयो ॥२७३२॥

सीता का विलाप

सीता राम नाम उर जपै । लौंचै केस देह अति कंपैं ॥
रे पापी कह तू है कौण । मोकौं लेना चाहै जिम पौंन ॥२७३३॥

जटायु द्वारा आक्रमण

रोवैं सीता पीटैं निज देह । जटा पंषी प्राकर्म करै एह ॥
मारै चोंच रावण के सीस । नष सौं चूंथ करै बहु रीस ॥२७३४॥

चले रुधिर रावण के मुख्य । जटा पंषी दीयो अति दुःख ।।
रिस करि रावण पंषी गह्या । तोडी पक्ष छेदन दुख लहा ।।२७३५।।
नांखि दियो पड्यो धरती आय । अधमुवा सुर्से तिरष ठाय ।।

रावण द्वारा खेद करना

सीता देख करत विल्लाप । रावण धुणैं सीस निज आप ।।२७३६।।
अनंतवीरज स्वामी अरहंत । तिणपें लियो सील इणभंत ।।
कवण कुबुधि उपजी मो चित्त । परनारी सो लगाया हित्त ।।२७३७।।
पतिव्रता है सीता सती । इसके मन मे पाप न रती ।।
छोडि राज मैं दिष्या लेहुं । उपजुं वैराग विचारं भेव ।।२७३८।।
याने ले लंका मैं जाउं । बिन बाछा मैं संग न करूं ।।
इसकी इच्छा होवै जबै । करूं संग मिलाप मैं तबै ।।२७३९।।
मांही तो यह पुत्री समान । इह विचार पहुतो निज थान ।।
लक्षमण रामचंद्र सो कहै । तुम क्यो आए वहां कुण रहै ।।२७४०।।
मैं तो सब दुरजन संहार । खरदूषण को मार्यो डार ।।

राम का बिलाप

रामचंद्र तब बोले बैन । सिघनाद सुणि भया कुचैन ।।२७४१।।
रामचंद्र फिर आये तिहा । सीता दृष्टि पडी नही वहां ।।
खाय पछाड धरती पर गिरे । सीता सीता मुख तै करै ।।२७४२।।
फाडे वस्त्र सिर केस खसोट । गह्यो धनुष किस पर करैं चोट ।।
वन बेहड सरवर अरु वृक्ष । कही न देखी सीता प्रतष्य ।।२७४३।।
जटा पंखी मारग मे पड्या । सास उसास ले चाहै मर्या ।।
पंच नाम संभलाए कान । जटा पषी का चया प्रांन ।।२७४४।।
सीता तुमते रही रुठि । वह तो नाद सबद था झूठि ।।
हम कु तुम कहा देहो दुख । उठि आवो देखो तुम मुख ।।२७४५।।
व्याकुल भया रघुपति का मन । रुदन करत तब भ्रमियो बन ।।
दोइ भाई तीजी सीता संग । भयो विछोह जीव का भंग ।।२७४६।।
हेर्या वन हेरी सब खोह । रामचंद्र ने व्याप्या मोह ।।
बहुत वियोग भया तिण बार । उठै लहर तब खायं पछार ।।२७४७।।

दूहा

जैसा दुख रघु नै भया, कहां लग करूं बखांण ।।
चित भरम्या त्रिभुवन धणी, भल्या सकल सयांण ।।२७४८।।

इति श्री पद्मपुराणे सीताहरण रामविलाप विधानकं

३९ वां विधानक

चौपई

लक्ष्मण खरदूषण युद्ध

लक्ष्मण खडदूषण सों जुध । कायर देख रही ना सुध ॥
सूरवीर मन करैं उल्हास । सुर नर असुर करैं जैकार ॥२७४९॥

विराधित चन्द्रोदिक का सुत । विद्याधर सेना संजुत ॥
लक्षमण को कीयो नमस्कार । विनयवंत ह्वै बारंवार ॥२७५०॥

प्रभुजी मुझ को आग्या देहु । दुरजन दल नाखुं करि खेहु ॥
लषमण विद्याधर प्रति कहैं । मेरा पराक्रम अब तू लहैं ॥२७५१॥

देख जु इनकूं परलय करूं । खडदूषण जम मंदिर धरूं ॥
विद्याधर सब विस्मय होय । या सम दूजा बली न कोय ॥२७५२॥

धन्य धन्य करि विनती करै । खडदूषण सौं जे तुम लडै ॥
सब सेना बाकी मैं हणूं । अपने आगै अवरन गिणूं ॥२७५३॥

विद्याधर विद्या संभालि । खडदूषण के सेनापति का काल ॥
वा सनमुख विद्याधर हुआ । पायक सो पायक लडि मुवा ॥२७५४॥
रथ सूं रथ टूटैं गिर पडै । हाथी सूं हाथी तिहां भिडै ॥
खडदूषण विद्या संभालि । गर्दभ मुख कीया तिण बार ॥२७५५॥

बडी दाढ भयदायक घणां । कहैक तैं मेरा सुत हणां ॥
अब मैं लेस्यूं सुत का बैर । चद्रनखा विगोई तैं घेरि ॥२७५६॥

अब तुम को भेजूं जम पास । तो कूं अबर जनम की आस ॥
खैंच चलायो कात्रिक बांण । लक्षमण कै लाग्यो आई कांण ॥२७५७॥
लक्षमण कहै सुणि रे तू गवार । तू तो गदहा की उणिहार ॥
सिंघ गदह सरभर किम होइ । अब तूं आया आपा खोइ ॥२७५८॥
मारयो बाण लखण नैं खैंचि । टूटया छत्र निसान रथ पैंच ॥
खरदूषण धरती गिर पड्या । गहि तरवार भूमि पर पड्या ॥२७५९॥

लक्ष्मण की खरदूषण पर विजय

लखमण सूरजहास संभार । मार्या खरदूषण भूपाल ॥
ज्यूं माखी उडि जांय बयार । त्यौं सब सेन्या भागी हार ॥२७६०॥

जीत्या लक्षमण जैं जैं थई । पुष्प वृष्टि लक्षमण पर हुई ।।
आया रामचंद्र कै थांन । देख्या सोवत चिंता भई आन ।।२७६१।।

सीता नही देखी तिण ठौर । मनमे चिंता व्यापी और ।।
रामचद्र जगायो जाय । पूछी चिंता खबर सुभाय ।।२७६२।।
रामचद्र बोले तिण बार । किण ही चोरी सीता नारि ।।
कै कोई सिंघ गया है खाय । कै छल करि ले गया कोई राय ।।२७६३।।

लक्ष्मण का विलाप

लक्षमण करै बहोत विलाप । कवण कर्म तैं भयो सताप ।।
वन मैं आय लिया आश्रम । कोई उदय भयो अशुभ कर्म ।।२७६४।।
इहा हूँ है सीता का हरण । पावै नही तो पूरा मरण ।।

विद्याधरों का आगमन

विराधित विद्याधर तिहा आय । रामचद्र के लाग्या पाइ ।।२७६५।।
रामचद्र पूछै इह कौंन । इनूं कितही तै कीया गौंन ।।
लक्षमण नै महिमा करी घणी । या की कीर्त्त जाई न भणी ।।२७६६।।
मो कूं कीनी बहुंत सहाय । चद्रोदित सुत विराधित राय ।।
लक्षमण विद्याधर सूं कही । तुम सीता कू ढूढो सही ।।२७६७।।
जो नही सीता की सुध होई । हम दोन्या मे बचै न कोइ ।।

चारों ओर दूत भेजना

कनकजटी का रतनजटी पुत्र । ठाम ठाम पठाए दूत बिचित्र ।।२७६८।।
रतनजटी सुणियां इह बोल । राम राम करि पुकारै रोल ।।

रावण के पास जाना

तिहा जाइ रावण कूं घेर । पापी ल्याव सीता इण बेर ।।२७६९।।
रामचद्र त्रिभुवन जगदीस । अब तू जाइ नवावो सीस ।।
तेरी लंका होइ विणास । इम भासै विद्याधर तास ।।२७७०।।
तो तू जीवैगा दिन घणे । नाही तोकूं जीवत हणैं ।।
भयो जुध रावण सुं तिहा । रावण सोच करै है जिहा ।।२७७१।।
इसकै साथ सेन्या है घणी । मैं एकाकी सुं असी वणी ।।
माया सो सीता मृत करी । रतनजटी इह चिता धरी ।।२७७२।।
या कारण आयो इस ठौर । सीता मुई करि दुख अति जोर ।।
रावण प्रतैं लगाऊं हाथ । वा को बांध ले जाऊं साथ ।।२७७३।।

रे पापी रावण बुधि हीण । इह तो बहुत भामडल की चीण ।।
तेरा काटैंगा दस सीस । तोडैंगा तेरी भुजा सब बीस ।।२७७४।।
रावण नै तब मार्‌या बाण । रतनजटी तब पड्‌या समुद्र मे आंण ।।
पच नाम का सुमरण किया । समुद्र तिर बाहर आइया ।।२७७५।।

कपि द्वारा देखना

कपि पर्वत परि उभो भयो । रावण लका मे तब गयो ।।
बिराधित नै ढूंढी सब दिसा । सीया न लाधी मनमे संसा ।।२७७६।।
सब फिर आये नीची दृष्टि । राम लखन नें व्यापियो अति कष्ट ।।
बिराधित नै बोलै रामचन्द्र । पूरव भव के खोटे वृन्द ।।२७७७।।
असुभ उदय हम पाये दुःख । तुम मो काहि न वाछउं सुख ।।
अवर फिरे तुम च्याऊं देस । मेरा तुम मान्या उपदेस ।।२७७८।।
मकल हमारे कर्म की चाल । तुम चिंता मति करो भूपाल ।।
विराधित वोलै विनती करै । प्रभू अपणे संसय परिहरे ।।२७७९।।
दीप अढाई ढूंढे जाइ । तुमकौं सीता देहा आइ ।।
इक चिंता इक मनमे प्रणी । तुम खरदूषण ग्रीवा हणी ।।२७८०।।

अलका गढ में पहुंचना

रावण कुंभकर्ण बलिवत । भभीषण इन्द्रजीत सामंत ।।
मेघनाद मे वल अपार । किषंदपुर सुग्रीव अगद गुण सार ।।२७८१।।
किषदपुर नल नील हणुमान । ए तुमसौं करि हैं घमसान ।।
चलहु अलंका गढ लेहु । सद कुंमर निकाल कै देहु ।।२७८२।।
पवन भामडल विद्याधर राव । वे सब आगे हैंगे आव ।।
दोय रथ समराउ भले । लक्ष्मण राम अलंका चले ।।२७८३।।
जाइ अलका गढ ले लिया । चद्रनखा सुत काढिकै दिया ।।
वे पहुचे रावण के पास । राम कहै भलो वनवास ।।२७८४।।
सीता विन सब देस उजाड । रामचंद्र चितवैं उपगार ।।
श्री भगवंत का तिहा देहुरा । पूजा करी भाव सु खरा ।।२७८५।।
अष्ट द्रव्य सूं पूजै पांय । दुख संताप गए बिलाइ ।।
इण विध रहैं अलंका मांहि । सीतां कारण चित कराहि ।।२७८६।।

दूहा

असुभ कर्म परभाव तैं, बाधी चिंता वेल ।।
जो कछु लिख्यो ललाट में, ताहि सकैं कुण पेल ।।२७८७।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता वियोग विधानकं

४० वां विधानक

चौपई

रावण की सीता के समक्ष गर्वोक्ति

रतनजटी कबु पर्वत थिस । रावण देखे दक्षिण भयो चित्त ।।
मद चाल से चलै विमाण । रावण लग्या कांम का बाण ।।२७८८।।
सीता प्रति बोलै आधीन । मुख दिखावो मोकूं परवीन ।।
जे मोकू दर्शन नही देहु । मेरे प्राण छुटैगे अबेह ।।२७८६।।
तुम कारण प्राण मम जांहि । इह तो पाप स्गलो तुम थाय ।।
तपसी कहा राम लक्षमणा । तिनका दुख मानै मत घणा ।।२७६०।।
कहा अजोध्या तिमका धणी । वनमे रहू तपसी रूप खुध्या घणी ।।
मैं तो नरपति सक्र समान । इछो सो पावो मन माहि ।।२७६१।।
सर्व प्रथई पर है तुम राज । करो भोग मनबंछित काज ।।
जे तूं मेरा कोरा सिर मै देइ । तो मै मनतै तजूं सनेह ।।२७६२।।
सोलह सहस्र राणिया मझार । तुझै पटराणी करू सिरदार ।।
तुमकूं फेर दिखाउ सुमेर । देखो यह सागर वहु फेर ।।२७६३।।
एह सुख देखो छडो सोग । राजरिष का भुगतो भोग ।।

सीता का करारा उत्तर

सीता कहै सुणरे पापीष्ट । जे तू खोवै खोटी द्रष्ट ।।२७६४।।
जे तू फरसै मेरी देह । ह्रू सराफ तू होवैगा षेह ।।
परनारी भगतै ने मूढ । पडै नरक दुख सहै अटूट ।।२७६५।।
मेरे रामचद्र का ध्यान । उन बिन ततक्षण तजौ पराण ।।
राम बिना जितना नर और । मेरै तात भ्रात की ठौर ।।२७६६।।
हस्त प्रहस्त खरदूषण का लोग । चालकेत महाखेड कै मन सोग ।।
गिरवा नरष भूपति मिले आइ । खरदूषण तिहा झुझै राई ।।२७६७।।
रावण निकट आयकै मिले । खरदूषण की सुणी पर जले ।।
गुण ग्रीवाहर रछ बाग । तिहा फल फूल रहे थे लाग ।।२७६८।।

अशोक वाटिका में सीता को रखना

असोष वृक्ष तले सीता राखि । चन्द्रनखा बिनबै सहु साखि ।।
खरदूषण संबूक को मारि । हमैं पताल तैं दिया निकारि २७६६।।

चन्द्रनखा का रावण से निवेदन

रावण चन्द्रनखा ने कहैं । तुझ उपाय ए फल लगे ।।
एता सब तुझ भया उपाय । मारया खरदूषण सा राव ।।२८००।।

गाव देस्या तू बैठी खाइ । अपरणा तन मन राखो ठाइ ।।
असी कहैं अंतहपुर जाइ । सेज्या पोढे व्याकुल काइ ।।२८०१।।

मंदोदरी द्वारा रावण से पूछना एवं रावण का उत्तर

मदोदरी पूछें कर जोडि । दुचिते कहा भए तुम खोडि ।।
रावण कहै सीता की बात । हरि लीयो वाकुं इण भांति ।।२८०२।।

खरदूषण सबुक कुमार । लक्षमण ने वे मारे डारि ।।
अवलोकिनी विद्या ने पूछ । वन मो बताई सगली गुह्य ।।२८०३।।

मैं वाकी सीता को हरी । वाहि विछोहा कत की पडी ।।
वाकै राम नाम की जाप । अन्नपाणी बिन सहै कलाप ।।२८०४।।

असी चतुर दूती जो होइ । वा कूं जाय समझावै कोइ ।।
मो सेती जो मानै रति । तो मेरे जीय की मिटै चित ।।२८०५।।

वा बिन ए जात है प्राण । सुध बुध भुजि गई सब स्वाण ।।
मदोदरी मन करै बिचार । करू उपाव तो बचै भरतार ।।२८०६।।

दूती का सीता को समझाने का असफल प्रयास

दूती सुघड विचक्षण नारि । वा कौं ततक्षण लहै हकार ।।
सीता नै समझावो जाय । अन्नपाणी जो अब ही खाय ।।२८०७।।

रावण तीन खड का धणी । राम लक्ष्मण तपसी मुणी ।।
उनकै कारण क्या इतना दुःख । करो भोग भुगतो सब सुख ।।२८०८।।

दूती चली प्रीवारव ठाव । सोभा देखी नदनवन भाव ।।
भले वृक्ष बेल बहु बणी । नामावली न जाये गिणी ।।२८०९।।

इन्द्रलोक सम उपवन बन्या । सीता सबद असोक तलि सुन्या ।।
जा मुख राम नाम का ध्यान । ताकै चित्त न आवै आन ।।२८१०।।

दूती जस रावण का गाय । करै नृत्य वाजित्र बजाय ।।
सौगन लखै न देखै सिया । अति पतिव्रता जनक की धिया ।।२८११।।
दूती दूत कर्म सब किये । सीता कै कछु नाही हिए ।।
हाव भाव दिखलाये घने । मन नहिं मानैं सीता तने ।।२८१२।।

दूहा

दूती फिर आई सबै, किये बहुत उपचार ॥
सत राखै करतार सु, कवरण डुलावरण हार ॥२८१३॥

चौपई

रावण की व्याकुलता

रावण सू दूती कहै वयण । सीता तो खोलै नहीं नयण ॥
अन पाणी तजि लियो संन्यास । ऊंचे नीचे लेत उसास ॥२८१४॥
बहुत भांति समझायी ताहि । मंत्र जंत्र कछु लागे नाहि ॥
सुणी वात रावण अकुलाइ । हाथ मसलकर बहु पछताइ ॥२८१५॥
षिण बाहर षिण भीतर जाइ । ता कै चित्त कछु न सुहाइ ॥
भ्रम्या चित्त सब सुध बीसरी । चिंता मिटै न एकै घरी ॥२८१६ ।
भभीषण च्यारु मत्री ते डाय । बैठि मतो इण भांति उपाइ ॥

मन्त्रियों द्वारा विचार

रावण क्या तै विभल हुयो । वाको कछु भेद न पाइयो ॥२८१७॥
सुभन मंत्र मत्री इम कहै । खरदूषण के सोग मे रहै ॥
इह आश्चर्य विचारै खरा । बारह वरष सबुक तप करया ॥२८१८॥
सूर्यहास खडग तब लह्या । लक्ष्मण नै पल ही मे गह्या ॥
वे दोन्युं थे मेरी वाह । अैसा मारया छिनकै माहि ॥२८१९॥
ता कारण रावण दुख करै । भ्रम्या चित्त सुधि बुधि वीसरै ॥
पचमुख दूजा मत्री कहै वैन । रावण को इस विध नही चैन ॥२८२०॥
लक्षमण एक खरदूषण दल घणा । उन तो सब सेन्या वल हन्या ॥
खरदूषण मार्या सबूक । तातै होइ रह्या है मूक ॥२८२१॥
सह आमती तीजो मंतरी । उनतो समझि बात कही खरी ॥
अश्वग्रीव प्रतिनारायण हुआ । सुप्रतिष्ठ नारायण नै ध्यो किया ॥२८२२॥
अब यह लक्ष्मण है अति बली । खरदूषण की सेन्या दली ॥
वाकै सेन्या जुडत न वार । रावण के मन इसो विचार ॥२८२३॥
चाथा मत्री बोलै विनयवत । विराधित विद्याधर बलवत ॥
वह तो रामचंद्र सु मिल्या । वाका हित सुग्रीव सों मिल्या ॥२८२४ ।
उसका मित्र बली हनुमान । रामचन्द्र सों मिलि है आन ॥
तो लंका टूटै तिह घडी । ऐसी बात चित्त मे धरी २८२५॥

सुग्रीव राज भ्रष्ट जो करै । लका परि हथनाला धरै ।।
सूर सुभट राखै चिहु ओर । सुग्रीव राज छुडाबो ठौर ।।२८२६।।

विद्याधर इक किषंदपुर गयो । तारा राणी सुं आसक्त भयो ।।
सुग्रीव दियो देस तैं काढि । सूरज के सुत चिंता बाढि ।।२८२७।।

बहुत सोच दुहु धा बणी, निसबासर इह ध्यांन ।।
रामचंद्र सीता धणी, बणै कहा अब आणि ।।२८२८।।

इति श्री पद्मपुराणे माया पुकार विधानकं

४१ वां विधानक

चौपई

राम सुग्रीव मिलन

किषंध नगर सूरज रज भूप । ताको पुत्र सुग्रीव स्वरूप ।।
तारा राणी ताकै पटधणी । अंगद पुत्र बल सोभा घणी ।।२८२६।।

सुग्रीव दडक वन माहि आय । देखी लोथ पडी तिण ठाय ।।
बटोही पूछ सुण्यो सब भेद । भयो सोच मन मे अखेद ।।२८३०।।

मेरे मन इच्छा थी और । खरदूषण भूझ्या इस ठौर ।।
अब हू मना कवरण सूं करू । रावरण की सरणागति पकरू ।।२८३१।।

बहुरि विचार करै सुग्रीव । जो मोकूं बाधै दस ग्रीव ।।
रामचंद्र सों जाकर मिलुं । तो मैं राज लहू निरमलूं ।।२८३२।।

सात क्षोहणी दल सुग्रीव के सग । जाकै भयो राज मे भंग ।।
राम लक्षमरण पै गयी सुग्रीव । करि डडोत नवाई ग्रीव ।।२८३३।।

मलिन रूप सुग्रीव कूं देखि । पूछै रघुपति ताहि विशेष ।।

राम के द्वारा सुग्रीव के सम्बन्ध जानकारी पाना

विराधित सूं पूछयो विरतांत । सुग्रीव दुखित है सो कहि भांति ।।२८३४।।

विराधित वचन कहै समझाय । किषंधपुर नगरी का राव ।।
मायारूपी विद्याधर एक आय । सुग्रीवरूप अंतहपुर जाय ।।२८३५।।

तारा राणी करै विचार । इह तो है अवरै अणुंहार ।।
किंकर तब ही लिए बुलाय । कही बेग सुग्रीव पै जाइ ।।२८३६।।
वन क्रीडा कूं भूपति गयो । मेरे मन एह संसय भयो ।।
किंकर दोडया वनह मझार । दुचिता देख्यो भूप तिण बार ।।२८३७।।

सोवै नृप किंकर कूं देखि । अंगद गया मेर दक्षरण बिसेष ।।
वाकूं लागे कछु इक बार । तो इहै आया इसै बिचार ।।२८३८।।

कै मन कुंवर भयो बैराग । दिष्या लेहै ग्रह कुं त्याग ।।
कै तारा राणी दुख दिया । यह कारण हू दुचिता भया ।।२८३९।।

पहुच्या किंकर बिनती करी । प्रभू चलो उठि या ही घडी ।।
एक अचंभा देख्या आज । तुम सूरत कोई आयो राज ।।२८४०।।

अंतहपुरी कियो परवेस । राणी तुमसौं किया सदेस ।।
राजा आयो नगर मझार । दरबानै रोक्या तिणबार ।।२८४१।।

अटक बचन मुख सेती कहै । राजा धंस्या तिहा यह लहै ।।
अपणी सूरत देख्या और । दोनूं भूप करै तिहा सोर ।।२८४२।।

मंत्री सोच मता इह किया । अगद प्रतै राज पद दिया ।।
वे दोन्यु नृप दिया निकाल । बाढी मनमे चिंता जाल ।।२८४३।।

जब लग समझ पडै कछु नही । तब लग राज तुमारा सही ।।
बिराधित दुजाइ हणुमत । उनै न पाया इनका अत ।।२८४४।।

ए दोन्युं एकै उणिहार । इनका न्याव नही निरधार ।।

राम द्वारा सुग्रीव को राज देना

रामचंद्र की क्रिपा भई । सुग्रीव भूप को उपमा दई ।।२८४५।।

तुमारे दुसमन को मारौं ठौर । अपणो कीज्यो राज बहोरि ।।
जो न सुधारो तेरा काज । तो मैं दिष्या लेग्युं आजि ।।२८४६।।

धिग धिग इण संसारी रीत । ना कारण ऐसी विपरीत ।।
जैसा दुख तुझै तैसा मोहि । हू अब देस माथ द्यो तोहि ।।२८४७।।
तू भी करो हमारा काम । सीता ढूंढ सुणावो ठाम ।।
कहै सुग्रीव सात दिन माहि । वाकी सुधि पहुंचाऊ आहिं ।।२८४८।।
सात दिवस मैं जो मोहि काम न करो । तो हू अगनि माहि जल मरू ।।
भेज्यो दूत विट सुग्रीव पास । वहै चढि आया जुध की आस ।।२८४९।।
दोनु तरफ दारुण जुध भया । सुग्रीवै गदा मारि घर गया ।।
निर्भयवंत तै भया अडोल । द्या सुग्रीव बेस्या फिर बोल ।।२८५०।।
रामपास इक दूत पठाइ । मेरी मदद करो जो आय ।।

सुग्रीव की विजय

उंन तो मारि किये चकचूर । मो सूं जुध भया भरपूर ।।२८५१।।

रामचंद्र सेना बहु जोडि । विट सुग्रीव परि दीनी दोड ।।
चढि दोड्या इन सनमुख आइ । बाजा मारू सबैं बजाइ ।।२८५२।।
दोन्यूं छोडे विद्या बाण । बहुता का उड गये परांण ।।
रामचंद्र भय करै न गात । विट सुग्रीव लडै इस भांत ।।२८५३।।

सुग्रीव राज पायो फिर देस । बहुत आनंद सुख लह्यो नरेस ।।
रामचन्द्र का महोछव किया । तेरह कन्या भेट ल्याइया ।।२८५४।।

सुग्रीव द्वारा तेरह कन्याओं को भेंट में देना

चन्द्राभान हृदया आवली । हिरदै दया धर्म की भली ।।
अनधरा नाम चउथी श्रीकांति । सुदरवती चन्द्रसम क्रान्ति ।।२८५५।।

मनोवाहनी च्यारू सिरी । मदनोत्सवा गुणवंती खरी ।।
पदमावती जिनवती बहुरूप । गुण लावण्य अति विसैं अनूप ।।२८५६।।

पुन्य संजोग मिली ए नारि । रूप लक्षण गुण अगम अपार ।।
रामचंद्र कूं करि डंडोत । सगला विनती करी बहोत ।।२८५७।।

देस देस के आये राय । कोई नही हम द्रष्टै आइ ।।
तुमारी सेवा हम करि है भली । बहुत भांति होसी मन रली ।।२८५८।।

श्री रामचंद्र पुनिवत धरम अवतार हैं ।
पुंन्य गुण बल रूप लह्यो अणपार है ।।
कनक वरण कामिनी कै मन चाव है ।
हरी जु सीता नारि असुभ पर भाव है ।।२८५९।।

इति श्री पद्मपुराणे विट सुग्रीव विधानकं

४२ वां विधानकं

चौपई

कन्याओं के हाव भाव

कन्या सकल परम परवीण । ताल मृदंग बजावै वीण ।।
कैई गावैं कैई नृत्य जु करैं । नो तन तान से धारैं खरैं ।।२८६०।।
रामचन्द्र का डुल्या न चित्त अधिक सोच सीता को नित्य ।।
कांमनी हाव भाव बहु किया । वन कै कछु न आई हिया ।।२८६१।।
राम लछमण बोले तिह बार । सुग्रीव अपणुं काज संवार ।।
अपणैं सुख की मानैं रुचि । सीता का कछु करै न सोच ।।२८६२।।

राम लक्षमरण किषदपुर जाइ । सुग्रीव सों वात कही समझाइ ।।
सुग्रीव ग्राय चरण कूं नया । प्रभुजी मोइ ऊपर कीजे दया ।।२८६३।।
ग्रैसै सीता सुधि ल्याऊ तोहि । तब मैं करू तुमारी सेव ।।
रामचद्र सुग्रीव सूं कहै । इह ससय मेरे मन रहै ।।२८६४।।
मोह फद मे बिसर गयो सूत्र । ग्रब मे ग्रैसी थापु बुधि ।।

जक्षदत्त द्वारा माता प्राप्ति की कथा

ज्यो जक्षदत्त नै माता लही । तारा इरण मुनिवर नै कही ।।२८६५।।
जक्षदत्त किम पाई माइ । ते विरतात कहो समझाइ ।।
ग्रंजन नगर भूप निहा यज्ञ । राजलदे नारि उत्तम पक्ष ।।२८६६।।
यज्ञदत्त वेस्या के ग्रेह । देखै कौतिग धरै सनेह ।।
दमंत्रवती ताकै निज वसै । जक्षदत्त तासूं नित हसै ।।२८६७।।
तारायरण मुनिवर यह देख । जक्षदत्त समझाया प्रेष ।।
इह तो तुझ माता परतक्ष । कहा ग्रग्यान भया दत्तदक्ष ।।२८६८।।
कुवर भरणै कैसे इह मात । व्योरा सु भाषो ते बात ।।
मुनिवर कहैं मृतकवती देस । कनक महाजन सुरण उपदेस ।।२८६९।।
धरणी नाम तास की नारि । धनदत्त पुत्र लियो ग्रवतार ।।
दमत्रवती व्याही ग्रस्तरी । रूप लक्षरण सौं सोभै खरी ।।२८७०।।
धनदत्त चाल्यो लाद जिहाज । दमत्रवती नै सौंपी लाज ।।
रत्नकवल दे तिसको गया । दमत्रवती सुं ग्रर्भ स्थित भया ।।२८७१।।
सासु सुसरै दई निकाल । उत्पलका संग दीनी नारि ।।
रोवत चली साह की बहु । कोय न बैठन देवै कहू ।।२८७२।।
विरणजारै संगि दुख सौं जाइ । वनफल कबहु भोजन खाइ ।।
उत्पल दासी भुयगम डसी । देह छोडि जम मंदिर बसी ।।२८७३।।
रही ग्रकेली दुखित घरणी । ग्रसुभ कर्म तै ग्रैसी वणी ।।
भयो पुत्र ग्रति चिंता करी । मे तो मुत जनम्यौ इस घडी ।।२८७४।।
जे राखुं तो पालूं किह भाति । रत्नकंबल में लपेटी राति ।।
जक्षराय को दीया पूत । जक्षदत्त नाम संयुत ।।२८७५।।
दमंत्रवती को दीया दाम । वह ती रहै वेस्यां निज ठाम ।।
जे तेरै मन ग्रावै नही । रत्नकंवल गांठ कीडी में सही ।।२८७६।।

जक्षदत्त सुणि दोडियो तुरंत । रत्नकंबल गठडी में बहुभंत ।।
माता कूं पूछया सब भेद । मनतें कुमति भई सब छेद ।।२८७७।।

धनदत्त सेती मिलियो कुमार । भयो आनंद सकल परवार ।।
इण विध तुम कौं सीता मिलै । सूर सुभट बुलाइयो भलै ।।२८७८।।

चारों ओर सीता की खोज

दीप अढाई मै सब ठौर । वेगा जाइ करो तुम दौर ।।
जहां सीता देखो तुम जाइ । तिहा की खबर वेगा ल्यो आय ।।२८७९।।

देस देस को नरपति गए । सुग्रीव बहुरि चरण को नए ।।
प्रभुजी मोकूं आग्या होइ । मैं भी थानक सोधूं कोइ ।।२८८०।।

बैठि विमाण चल्यो सुग्रीव । कांबु पर्वत की आयो सीव ।।
रतनजटी विद्याधर तिहा । फरहर्त्ती देख्या नेजा तिहा ।।२८८१

इह किसकी धुजा फरहराइ । उतर भूमि तिहा देखै आइ ।।
रतनजटी डरप्या तसु देखि । इह कोई है दुरजन भेष २८८२।।

रतनजटी और सुग्रीव की भेंट

सुग्रीव भूप पूछै रतनजटी । ते कहि रावण सीता हरी ।।
मै बहु तेरा किया उपाय । ता तै कोई न लागो डाव ।।२८८३।।

राम का नाम जपै थी सिया । दुखित बहुत जनक की धिया ।।
सुनि सुग्रीव रतनजटी ल्याइया । बैठि विमाण राम ढिग आइया ।।२८८४।।

रतनजटी द्वारा लंका का परिचय

रतनजटी कीयो नमस्कार । बात सकल भाषी निरधार ।।
राक्षसपुर इस सायर माहि । सातसै जोजन चोडाइ जाहि ।।२८८५।।

एक वीस जोजन की लंबाइ । त्रिकुटाचल नव जोजन चौडाइ ।।
पचास जोजन की उंचाइ । वा सम गढ नाहीं किणठांइ ।।२८८६।।

तीस जोजन कै लंका फेर । रावण कुंभकरण ज्युं मेर ।।
भभीषण तै दुरजन सब डरैं । इन्द्रजीत मेंघनाद बल धरै ।।२८८७।।

पंद्रहसै क्षोहणी बल संग । इंद्रादिक कियो मान भंग ।।
इस नगर वसैं ता पास । भुर्वा सुमेरपुर प्रहिलादपुर वास ।।२८८८।।

जोधपुर हरिपुर सागरपुरी । अधरसुर तिहां नगरी ।।
रावण सम भूपति कोई नांहि । ऐसे बचन सुणे नरनाह ।।२८८९।।

अइसी पईज कहा तुम करो । सीता तणो सोग परिहरो ।।
अवर विवाहो भुगतो भोग । कहा करो तुम इतना सोग ।।२८६०।।

राम कहैं सीता बिन और । करूं नारि प्राणन कौं ठौर ।।
रावण कूं भेजूं जमलोक । रहै सदा लका मे सोक ।।२८६१।।

जांबूनद मंत्री का कथन

जांबूनद मत्री कहै वयन । अपने मन कूं राखो चैन ।।
सीता किसपै आंणी जाइ । रवि समान तपैं रावण राय ।।२८६२।।

जैसे बंदर मोर के काज । व्याकुल भयो छोडि सब राज ।।
असे तुम भरमुं हो राम । जिह भरम्या कछु सरै न काम ।।२८६३।।

बंदर मोर की कथा

पूछै राम बंदर की बात । उसका मोर गया किह भाति ।।
वैनां नदी चैनपुर नगर । सर्व रुचि रहै नांमी सगर ।।२८६४।।

गुण पूरणा बाकी अस्तरी । विनयदत्त जनम्या सुभ घडी ।।
ग्रह लछमी परणाई नारि । जोवन वैस सुख भोग मझार ।।२८६५।।

विसालमूत द्विज सो बहु प्रीत । ग्रहलछमी बीचारी विप्रीत ।।
द्विज सौं कही विनयदत्त कुमार । हम तुम सुख भुगतै संसार ।।२८६६।।

ब्राह्मण मन मे पाप विचार । विनयदत्त को लेगया अरण मझार ।।
बाधि नेज सौं ऊची डारि । फिर आयो विनयदत्त के द्वार ।।२८६७।।

ग्रह लछमी कू जगाई सार । मैं मारचा तेरा भरतार ।।
दोन्यू खुसी हुआ मन बोच । विसालमूत कीया कर्म नीच ।।२८६८।।

दया न समझ्या मारचा जजमान । जिसपै लेता नित उठि दान ।।
छुदर सेठ वा वन मे गया । वाहि तरु तलि ठाढा भया ।।२८६९।।

ऊचे कू देख्या विनयदत्त । चढचा डाल परि दया निमित्त ।
खोलि दिया सर्व रुचि का पुत्त । वा कुं पहुचाया घर जुत्त ।।२९००।।

ब्राह्मण सुत भाज्या तजि देस । सेठ घरे बधाई बहु भेस ।।
नउतन जनम पुत्र का भया । छुंदर के हाथ सुं मोर उडि गया ।।२९०१।।

राजकुमर नैं पकड्यो मोर । छुंदर करै पुर मे अति सोर ।।
विनयदत्त प्रतै छुंदर इम कहै । मो सेती तुझ प्राण ए रहै ।।२९०२।।

मेरा मोर कुंवर ने ग्रह्या । जब बहु तेरा मानै कह्या ।।
मेरा मोर छुडाय दे मो हाथ । मैं तो मरा किया तुम साथ ।।२९०३।।

वह तो भूपति यह बाण्यां सुंदर । कैसे मोर लहै वह भगर ।।
बिनयवत बोले तिरण बार । हु बाण्या इह राजकुमार ।।२६०४।।
कैसे कहूं राज सो जाइ । अउर मोर लेहू मन ल्याइ ।।
वह तो मोर फिरणे का नही । एह बात हम तुझ सों कही ।।२६०५।।
ऐसा कवरण बली है सूर । रावरणस्यौ सरभर करै पूर ।।

लक्ष्मण का क्रोधित होकर निश्चय प्रकट करना

इतनी सुंरिण लखमरण कोपाइ । जो रावरण में बल अधिकाय ।।२६०६।।
तो क्यूं उन चोरी सूं लइ । वा कुबुद्धि मरण की भई ।।
कायर डरपै नपुंसक लोग । चोर अन्याई मानैं दुख सोक ।।२६०७।।
क्षत्री डर मरने का करै । निश्चय जाय नरक में पडैं ।।
अब लौं रावरण था बलवत । बन मैं जब लग बलवंत ।।२६०८।।
केहरि की जब सुरणैं हकार । निरमद ह्वै नासै तिरण बार ।।
लखमण कहै इरण परि उपदेस । राजसभा मैं सुण्यो नरेस ।।२६०९।।
कुसुमपुर नग्रप्रभा सेठ रहै । जमुना त्रिय निसदिन सुख लहै ।।
आत्मसंशि ताकैं सुत भया । इक दिन वन क्रीडा कौं गया ।।२६१०।।
प्रथमसेन का दरसन पाय । सेव करी बहु मन बच काइ ।।
उन तपसी चुरा इक दिया । सर्व गुरणों का परचा किया ।।२६११।।
राजा की राणी अहि डसी । गारुड गुणी जुडे गुण बसी ।।
औषध जतन लगं नहि काइ । आतम शक्ति राजा पं जाइ ।।२६१२।।
चुरा धोइ लिया पंच नाम । डसी थी ज्याचेती नृप भाम ।।
राणी का विष उतरा सुण्या । राय तणा मन रहस्या घणां ।।२६१३।।
आत्मशक्ति को दियउ बहु साज । बहुत बिभव अर आधो राज ।।
कुछ लछमी गडी थी कहां । खोदण गया आत्मसक्ति तिहा ।।२६१४।।
अजगर लेकरि गया पाताल । देखि चोह तिहा धस्या भुवाल ।।
अजगर ने मारी फौंकार । उठै सिला मारया तिंह बार ।।२६१५।।
लिया द्रव्य सर्व उन जाय । हम सीतां छोडै किण भाय ।।
जैसें उन अजगर कूं हण्या । तैसे हम मारेंगे रावणा ।।२६१६।।
लंका कूं करि हैं चकचूर । हम आगैं कहा रावण सूर ।।
सकल भूपती बोले वयण । सुणौं प्रभू राखो चित चैन ।।२६१७।।
दीप धातकी अनंतवीर्य जिनेस । रावण ने पूछे बहु भेस ।।
तीन खंड जीते सब देस । आण्या मानै सकल नरेस ।।२६१८।।

रावण की मृत्यु के सम्बन्ध में भविष्यवाणी

मेरी आव कवरण है हाथ । ब्योरा सूं कहिए जिन नाथ ।।
श्री भगवत की वानी हुई । कोटि सिला उठावै जो कोई । २६१६।।
वाकै करि है तेरी मीच । निसचै जारिण बात मन बीच ।।

लक्ष्मण द्वारा शिला उठाना

जो तुम सिला उठावो जाइ । तो रावरण कूं मारो भाइ ।।२६२० ।
लक्षमरण कहै उठाऊ सिला । तब मो पौरिष देखो भला ।।
सुग्रीव साथ नृपति सब चले । साजि विमांरण सौज भी भले ।।२६२१।।
राम लक्षमरण विमारण परि बैठि । पहुचे कोटि सिला कै हेठि ।।
अरध निसा गई सिला के पासि । तिहा होइ सिवपुर की ग्रासि ।।२६२२।।
नमसकार करि बारबार । ग्राठ मिध गुरण पढे सभार ।।
बहुत विनय सो पूज जिनेस । मुनिसुव्रत पूजिया नरेस ।।२६२३।।
लक्ष्मरण पढ्या पच प्रभु नाम । सिला उठाइ लई तिस ठांम ।।
जोजन एक सिला उच्चत । अठ जोयरण चकली दीपत ।।२६२४।।
दश जोजन की हैं लबाइ । लक्ष्मरण ततक्षरण लई उठाइ ।।
जथा लग पहूचाई ग्रान । बहुर धरी तब वाही थान ।।२६२५।।
जै जै देव दु दभी भई । ए लक्षमरण नारायरण मई ।।
नल रु नील ग्रनै सुग्रीव । सब नै मता मै गाढी नीव ।।२६३६।।
बहुरि नरेन्द्र कहै ए बली । कथा नारायरण की तब चली ।।
सात नारायरण आगै हुआ । तिरण थी प्रतिनारायरण मुवा ।।२६२७।।
केई कहै इन उठाई सिला । रावरण कैलास उठाया भला ।।
कोई कहै रावरण विद्या सहाइ । हम लहै विद्या लेइ उचाइ ।।२६२८।।
इन उठाई देही के बल । लक्षमरण महाबली भू ग्रटल ।।
कोऊ कहै ए दोनू भ्रात । रावरण का दल कह्या न जात ।।२६२६।।
ए उसको जीतैं किस भात । ग्रैसा करो दोनू घर सात ।।
रामचद्र पै भूपति गए । राम कहैं ढीले किम थए ।।२६३०।।
बेगि चलो लका परि ग्रबै । रावरण मारि ढाहौं गढ सबै ।।
कहैं भूप सुरणो त्रिभुवन राय । जब वह सीता देइ पठाइ ।।२६३१।।
तो कीजे काहे कू जुध । हम वाकूं समझावैं बुध ।।
भभीषरण ज्ञानवत परमेष्ट । दयावत है समकित द्रष्ट ।।२६३२।।

तासूं कही बात समझाइ । वो कहै है रावण नैं जाइ ।।
रावण कै सीलव्रत की टेक । मरण बांछित किम तजै विवेक ।।२६३३।।
सिया तुम्हारी देगा आणि । भेजो दूत कोई चतुर सुजांण ।।
पवनपुत्र बलीं हणमंत । सूरवीर महाबल अनन्त ।।२६३४।।

जो वह जाइ तो ल्यावै सिया । श्रीभूत दूत हणूमंत पै गया ।।
लिख्या पत्र विवरा सूं भला । दूत लेई ततक्षण चला ।।२६३५।।

इति श्री पद्मपुराणे लक्ष्मण कोटिसिला उतक्षेपण विधानकं

४३ वां विधानक

दूहा

रामचद्र लक्ष्मण सबल परदुख भंजण हार ।।
कोडिसिला उठाइ करि, प्रगट भए ससार ।।२६३६।।

चौपई

श्रीपुर नगर राजा हनुमान । सर्व सुखी परजा तिण ठांम ।।
नगर सोभ कछु जाय न गिणी । स्वर्गपुरी की महिमा बणी ।।२६३७।।

अनग कुसमा खरदूषण पुत्री । दक्षिण आखि फुरकै खरी ।।

लंका से दूत का आगमन

नरमद दूत लंका तै आइ । सबुक खडदूषन की कहे समझाय ।।२६२८।।
रामचद्र लक्षमण दोउ वीर । सीता नाम त्रिया उन तीर ।।
लक्ष्मण नैं मारघा संबूक । खडदूषण भी हण्यां अचूक ।।२६६६।।

सेना जुडी नरपति घने । नामावली कहां लग गिणे ।।
ग्रैसी बात ग्रंतहपुर सुणी । रोवै हणुमान सब दूंणी ।।२६४०।।

अनग कुसमा सब परिवार । आई मूरछा खाय पछाड ।।
पीटै हियोर खोंसै केस । हा हा कार करै बहु भेस ।।२६४१।।

पपी वजवीण ग्रंनई कोकिला । ग्रैसा सबद उणीं का नीकला ।।
ग्रैसे भोमगोचरी कौण । इण विध प्रगट भए मड जौण ।।२६४२।।

खडदूषण सा मारघा राय । करै सोच अति दुखित मनाय ।।
श्रीभूत सुग्रीव का दूत । ग्यानवंत अतिबल संजुत्त ।।२६४३।।
कवण काज आये तुम दूत । ग्रैसा कारिज कवण बहुत ।।
हनूमान को करि नमस्कार । पवनपूत बोले तिण बार । ।।२६४४।।

दूं करि जोडि करि बोलैं दूत । निरभय वचन कहै अदभूत ।।
किषंदपुर का राजा सुग्रीव । माया रूपी विट् सुग्रीव ।।२६४५।।
राज लिया सुग्रीव का छीन । सुग्रीव आप फिरिया आधीन ।।
राम लक्षमरण भूमिगोचरी । तिरण सूं जाइ वीणती करी ।।२६४६।।
रामचद्र का दरसन पाय । तिरण सुं भेद कह्यो समभाइ ।।
मेरो दु:ख दूरि करो तुम दूरि । कांम करो करुणा भरि पूर ।।२६४७।।
बिट सुग्रीव दूत दोउ जुटे । बहुत सुभट दोऊ धा कटे ।।
रामचन्द्र ने मारया चोर । सुग्रीव ने दीया राज बहोरि ।।२६४८।।
इह सुरिण हणुमान आनंद । धनि धनि पुरुष राजा रामचद्र ।।
पर दुख भजन हैं श्रीराम । कोटिसिला, उठाई लक्षमरण ताम ।।२६४६।।
उनकी सीता किण ही हरी । तिरण थी खबर तुम कोई नीकली ।।
हणुमान सुंणि अस्तुति करै । कुल कलंक सुग्रीव के टरै ।।२६५०।।
भावमंडला सुग्रीव की धिया । पिता राज सुरिण हरषा हीया ।।
आदरमान दूत को दिया । उचित दांन बंदीजन लीया ।।२६५१।।
सुणत दु:ख सगला बुझि गया । बाजा बाजि बधावा भया ।।

हनुमान द्वारा राम के दर्शन करना

हणुमान सेन्या ले घरणी । बैठि विमान सोभा अति बरणी ।।२६५२।।
घोडे हस्ती रथ सुखपाल । लागे कनक रतन बहु लाल ।।
राम लक्ष्मरण दरषन निमित्त । किषिंधपुर आये हनुमत ।।२६५३।।
कोडि सिला का सुण्या बखान । अनतवीर्य का वचन प्रमाण ।।
ये रावण का करि हैं नास । हूं सेवा करिहूं उरण पासि ।।२६५४।।
किषदपुर की समराई गली । सुग्रीव भूप मानैं अति रली ।।
घरि घरि बाधी बदरवाल । घर घर छाये हाठ बाजार ।।२६५५।।
बहुत लोग अगवाणी चले । जाय करि हनूमांन सुं मिले ।।
हस्ती पर हनुमान कुमार । सेन्या चली नगर मझार ।।२६५६।।
सिघासरण बैठे रामचन्द्र । लक्षमरण पासि सोहैं जिमचंद ।।
सुग्रीव नल नील बैठे तिण पासि । विराधित अगद अंग सुवास ।।२६५७।।
बहुत नरेन्द्र सभा मे खडे । सूर सुभट महागुण भरे ।।
छत्र चवर रघुपति सिर ढरे । वदनही जोति सोभा अति टरैं ।।२६५८।।
स्याम केस लोचण अति बणे । नासा कपोल विराजैं घणे ।।
रक्त उष्ट्दन छबि कुंद । हीरा जोति चडकाकी बुंद ।।२६५६।।

हीया कंठ भुजा सोभत । उदर कमर केहरि की भंत ।।
कदली जंघ कमल से चर्ण । नख की जोति जैसी ससि कर्ण ।।२६६०।।
रवि प्रताप शशि की ज्योति । हनुमान कौ दर्शन होत ।।

राम का हनुमान को गले लगाना

चरण कमल बंदे हणुमन्त । रामचंद्र भए कृपावंत ।।२६६१।।
कंठ लगाइ सनमुख बैठाइ । आदरि मनोंहारि बहु भाय ।।

पवनपुत्र द्वारा अस्तुति

पवन पूत बोले कर जोडि । प्रभू तुम गुन का नावै ओरि ।।२६६२।।
जैसे रतन समुद्र मे घने । ते गुण जाय न किस पैं गिणें ।।
तुमारे गुण प्रभु अगम अपार । राम नाम त्रिभुवन आधार ।।२६६३।।
तुम जीत्या बरबर मलेछ । वज्रावर्त धनुष कौ खैंचि ।।
सिंघोदर राजा ने जीत । पिता बचन की पाली रीत ।।२६६४।।
दंडकवन मे लह्या सूर्यहास । संबुक खडदूषण कीए नास ।।
प्रति सुग्रीव विद्या बैताल । तुम कूं देखि भाज्या तत्काल ।।२६६५।।
परपची कु मारया ठोर । सुग्रीव राज दीया बहोर ।।
किण ही पास न हुवो न्याव । ततक्षय कीयो तुम उपाव ।।२६६६।।
कहां लौं बरणो तुमारा उपगार । इह जस कीरत चलै संसार ।।
बेद पुराण कथा यह चलै । सीता कौं प्राणौं कौं मिलै ।।२६६७।।
सफल जनम मेरो तब सही । हणुमान बात ए कही ।।
रावण परि लंका को जाउं । सीता को आणउं इस ठांव ।।२६६८।।
रामचन्द्र बोले जगदीश । जे तुम वचन मानें दशशीश ।।
तो सीता आणउ हम पास । चोरी सुं आण्यां उपहास ।।२६६९।।
रावण चोरी सूं ले गया । हम चोरै तो अपयस नया ।।
सीता अन्नपाणी सब तज्या । बाकु दोवुं कुल की लज्या ।।२६७०।।
हम बिन वह छोडेंगी प्राण । इह बूंदडी दीज्यो सहिनांण ।।
कहियो मन रखियो निश्चल । किषंधपुर राम लक्ष्मण निवसत ।।२६७१।।
अन्नपाणी वाकुं खवाज्यो जाइ । निश्चय मन राखियो धीरपाइ ।।
जांबुनंद बोल्या मंत्री । वन इक बुधि बताई खरी ।।२६७२।।
रावण लंकापति बलवंत । जिसकी आवग्यां तीनुं खंड ।।
कुंभकर्ण भभीषण वीर । इन्द्रजीत मेघनाद अति धीर ।।२६७३।।

लका के रखवाले घने । पंषी जाए न पावै किरो ।।
तुम इरण विध जाऊ परछन्न । लखे न कोई इसे जतन्न ।।२६७४।।
तुम हो एक वहै है घरणे । तिनसु' बिगाड्या नही बरणे ।।
मनुष जनम पावना कठिन । देख सोच के कीज्यो गमन ।।२६७५।।
हनूमान जब चढें त्रिमारण । त्रिकुटाचल कौं कियो पयान ।।
रघुपति गले लाइकै मिल्या । लक्ष्मरण ग्रादर कीने भल्या ।।२६७६।।
सीव लगैं भूपति सब ग्राइ । पहुचाए तिहा हणुवत राय ।।
हणु'मांन सुग्रीव सु' कहै । राजा सब किषिदपुर रहै ।।२६७७।।
ग्रवरै लोग बुलावो सूर । सेन्या जोडो दल भरपूर ।।
ग्राप चले रघुपति के काम । मनमे सुमरो सीताराम ।।२६७८।।

ग्रडिल्ल

रामचद्र जगदीसर परमपुनीत हे ।।
भव भव की हैं पुन्य धर्म सो प्रीत है ।।
सूर सुभट सब ग्राइ मिले बड भूपती ।।
रावरण भया सुन हीन राम जागी रती ।२६७९।।

चौपई

प्रगट्यो पुनि मिलइ सब सुख । जनम जनम का मूलैं दु ख ।।
सज्जन मित्र मिलैं बहु लोग । मनबछित सब भुगतै भोग ।।२६८०।।
तातैं पुनि करो सब कोइ । पुत्र कलित्र लक्ष्मी बहु होइ ।।
रामचद्र का सुरौं पुरारण । भव भव पावैं ते कल्यारण ।।२६८१।।

दूहा

चढि विमारण हणुमत, चल्यो राम के काज ।।
सूर सुभट ग्रति ही बली, रूपवत सब साज ।।२६८२।।

इति श्री पद्मपुराणे हनुमान लंका प्रस्थान विधानकं

४४ वां विधानक

चौपई

महेन्द्रपुर नगर

चढि विमारण देखे बहु देश । दंती पर्वत महैन्द्र नरेस ।।
महेन्द्रपुर की शोभा ग्रति देष । भया मोह मन ग्रति परेख ।।२६८३।।
इस नगरी मेरा ननसाल । गर्भ समैं मा दई निकाल ।।
मेरी माता कु' दुख दीया । परजक गुफा में मेरा भव भया ।।२६८२।।

अमृत गुपति मुनि देख्या सही । अंजनी सूं सब पिछली कही ।।
इह राजा महेन्द्रसेन । मुझ माता कूं देता नहीं चैन ।।२९८५।।
तो क्यूं होता इतना दूख । रतन चूल तैं पाया सुख ।।
अब मैं इण सौं लेहू बैर । महेन्द्रपुर कूं मारूं घेर ।।२९८६।।

हनुमान द्वारा महेन्द्र सेन से बदला लेना

बाजे मारु घिमक्यो महेन्द्रसेन । सूर सुभट सू बोलै वयण ।।
कवण देस का आया राइ । सेना सजो युध के भाय ।।२९८७।।
दुहुधा छूटैं विद्या बाण । प्रसन्नकीर्त्ति आगैं बलवांन ।।
भया जुध प्रसन्नकीर्त्ति को बांधि । महेन्द्रसेन कोप्या सिर सांधि ।।२९८८।।

अर्क असफंदन हार । धाए सनमुख करि मारामार ।।
पर्वत सिला बिरख उखारि । पडै घणी हनुमंत परि मार ।।२९८९।।

तब हनुमंत बिद्या सभारि । बानर बहुत भए बिकराल ।।
जा कूं पकडै लु चै देह । कबहु उठाइ सिला कूं लेह ।।२९९०।।

जाकूं मारैं होइ सहार । तोड्या रथ महेन्द्र तिण बार ।।
कूद चढे हणवंत विमाण । मारैं मुकी क्रोध मण आंण ।।२९९१।।

हनुमांन तब राखैं कांण । पुरुषा सम नाना कुं जाणि ।।
उस ऊपर तू उठावैं हाथ । पुकारैं सकल लोक जे साथ ।।२९९२।।

दुहिता कूं मारै अग्यान । अंजनी सुत इह है हनुमांन ।।

परस्पर मिलन

इतनी सुणत मिल्या गल ल्याइ । जैसा सुणैं था तिसा दिखाइ ।।२९९३।।

कुल मडण तू उपज्या पूत । सकल गुणां लक्षण सजुक्त ।।
प्रसन्नकीर्त्ति दिया तब छोडि । मिलकै अस्तुति करी बहोड ।।२९९४।।
पुर मैं आणि महोछा करै । सब विरतांत सुणि मन मैं धरै ।।
मो कूं है कारज उत्ताल । तुम किषंदपुर जाज्यो दरहाल ।।२९९५।।
रामचंद के सेवउं पांय । सेना ले वेगां तुम जाव ।।
महेन्द्रसेन प्रसन्नकीर्त्ति चले । श्रीपुर जाइ अजनी सूं मिले ।।२९९६।।
बहुत दिया लक्ष्मी अनै चीर । कथा कही सुख हुआ सरीर ।।
हनुमान लंका कूं गया । हम किसंधपुर कुं गम किया ।।२९९७।।
रामचंद्र लक्षमण पैं जांय । सुणी सुरत सुग्रीव नरनांह ।।
महेन्द्रसेन आइया नरेस । आदर बहुत दिया आनंद ।।२९९८।।

दूहा

भया मिलाप कुटंब सूं, महेन्द्रसेन नरेन्द्र ।।
हनुमान अर अजनी, मान्यां अति आनन्द ।।२९९९।।

इति श्री पद्मपुराणे महेन्द्रबोहिता मिलान विधानकं

४५ वां विधानक

चौपई

दधिमुख द्वीप मातरा देस । मंदिर स्वेत शोभा बहु भेस ।।
वन उपवन नें बावडी कूप । महा रमणीक सुहावै रूप ।।३०००।।

अंतर वन सुभ थानक खरो । अजगर स्यघ देख मन डरो ।।
तिहां दोइ मुनिवर तप करैं । आतम ध्यान सु निश्चय धरैं ।।३००१।।

तीन कन्याओं द्वारा तपस्या

कन्या तीन फिरैं तिण ठाव । दावानल सुं जलैं ए भाव ।।
एक तप करैं न डोलै चित्त । चलैं पसेव परीसै सहंत ।।३००२।।

हनुमान द्वारा दावानल बुझाना

हनुमान कु उपजी दया । समंद्र माहि तैं जल भर लिया ।।
दावानल बुझाई दीयाइ । सगला तपसी लिया बचाइ ।।३००३।।

उनकूं विद्या की सिध भई । जाय मेरु प्रदक्षिणा दई ।।
दोई घडी मे आए फेर । मुनि दर्शन कीया तिण बेर ।।३००४।।

हनूमान कीया नमस्कार । पूछयो कन्या का व्यवहार ।।
तुम तप करो कवण निमित्त । अपनी बात कहो उत्पत्ति ।।३००५।।

कन्या के विवाह की भविष्यवाणी

मित्रादेस नृप गंधर्वसैन । जाकी कन्या बोलैं बयन ।।
अमरवती राणी गर्भ भई । चद्ररेषा हु पहली थई ।।३००६।।

मगमाला विद्युतप्रभा तीसरी । हमारे पिता स्वयंवर विध करी ।।
देस देस के नृपति आय । कोई न हमारी दृष्टि पडाइ ।।३००७।।

मानभंग हुं नृप फिर गये । परियण मांहि सोच अति भए ।।
मुनिवर कू पूछयो मो तात । ए कन्या दीजे किण भांति ।।३००८।।

मुनिवर बोले ग्यान विचार । विट सुग्रीव जो मारैं डार ।।
सो होसी इणका भरतार । मुनिवर कह गए उपगार ।।३००९।।

सकल देस का देख्या राव । वह है कवरण तिसका सुरगउं नाम ।।
मुनि के बचन यह झूठे पडे । वह संसय परियरण सबं करै ।।३०१०।।
अबार्क विद्याधर आइ । मेरे पिता सूं कहै समझाय ।।
मैं हूं विद्याधर बलवंत । कन्या विवाह द्यो मोहि तुरंत ।।३०११।।
वासौं कही जो मारै ताहि । विट सुग्रीव नाम है जांहि ।।
सो विवाह सी इरण नै न्याइ । तू अपरणे घर कूं उठ जांइ ।।३०१२।।
बारह दिन हम कू हत भए । मुनिवर कूं अष्टम दिन थए ।।
अगारक आग लगाई वन । तुमे उपाया मोटा पुंन्य ।।३०१३।।
षष्ट वरष जो तपकूं करै । तब इह विद्या ताकूं फुरै ।।
तुम दरसन विद्या सिध भई । महापुरुष छो तुम गुरण मई ।।३०१४।।
गधर्व सेन आये भूपती । बंदे चरण देखि मुनि जती ।।
हनूमान सूं पूछया भेव । सकल बात सुणि कीनी सेव ।।३०१५।।
रामचन्द्र हन्या विट सुग्रीव । किषदपुर है समंद की सीव ।।
उनसो जाइ मिलो तुम राइ । हम लंका सीता कनें जाइ ।।३०१६।।
राजा सुंणि कियो उल्हास । ततक्षरण गयो राम के पास ।।
रामचंद्र लक्षमरण मूं मिल्या । गंधर्व सेन बली अति भला ।।३०१७।।
कन्यां तीनूं राम कौं दई । मन की चिंता सहु मिट गई ।।
अधिक उछाह भयो मनमांहि । सकल दूरि भाजी उरदाह ।।३०१८।।

दूहा

मनवांछित कारज भए, तप साधे थी तीन ।।
विद्या की तिहा सिध भई, पायो वर प्रवीरा ।।३०१९।।

इति श्री पद्मपुराणे गंधर्वसेन लाभ विधानकं

४६ वां विधानक

चौपई

हनुमान का आगे जाना

त्रिकुटा चल गिरि ऊंचा थान । ताहि न सकै उलंघ विमान ।।
पास रही चाल्यो हनुमान । वा पर कोट देख्यो हनूराय ।।३०२०।।
प्रथम मंत्र मंत्री सो कहा । यह गढ कवरण सवारथा तिहां ।।
तब मंत्री बोले सुविचार । सीतां हरी तबै ए सवार ।।३०२१।।
खरदूषण सूं झूझ्या सुण्यां । एक पुरुष सगला दल हण्यां ।।
अब कहु ये यहां आवै वोइ । तो हम दल सब परलई होइ ।।३०२२।।

ताथै माया का गढ करया । बहुत सोंज सुभट सौं भरया ॥
कोई देख सकै नही कोंट । जो कोइ जोवै ता परि चोट ॥३०२३॥
इतनी सुणि धाया हणवंत । तोडि पोलि भीतर पैसत ॥

वज्रमुख एवं हनुमान की वार्ता

वज्रमुख साभलि इह वात । चढयो कोप उठी रोम गात ॥३०२४॥
दोनूं जुध करै बहु भाइ । दोन्या माहि न कोई हटाइ ॥
हणवंत क्रोध चढै तिण बार । वज्रमुख झझ्या तिहां राव ॥३०२५॥
लंका सुंदरी वज्रमुष की धिया । पिता बयर सांभलि जुध किया ॥
सेना जोडि हणवंत से लडं । मन मे वयार पिता को धरै ॥३०२६॥
छोडै विद्या बाण अनत । झूझे सूरबीर सामन्त ॥
देख्या हनूमान का रूप । लका सुंदरी मोही भूप ॥३०२७॥

लंका सुन्दरी और हनुमान के मध्य प्रेम होना

ऐसा रूप पुरुष नहीं कोइ । जैसा सु संगम अब होइ ॥
उतसौं हणुमंत देखी ए नारि । हाथा सू छोडे हथियार ॥३०२८॥
दोनूं कै रहसि मन भया । लकासुन्दरी के विमान पै गया ॥
दोनू कैं मन उपजी प्रीत । भूली सकल युध की रीत ॥३०२९॥
लका सुदरी वाण पर लिख्या । उलटा बाण हनुमान पै नषा ॥
दोनूं मिलिया कियो विवाह । सुख भोगवै मन उछाह ॥३०३०॥
रहसरली सू पुर मे जाइ । पंचइंद्री सुख मुगतै काय ॥
हणुमान बोले तिण बार । हमैं जाइ है लंका मझार ॥३०३१॥
रामचंद्र का करना काम । हमकूं विदा देहु तुम भाम॥
लका सुन्दरी पूछै बात । सुण्या सकल पिछला बिरतात ॥३०३२॥

लंकापति का प्रभाव

कहिक लंकापति अति बली । तिण रोकी है सगली गली ॥
तिहा देवता सकै न पैठ । तुमको होइ है रावण सूं भेट ॥३०३३॥
पकडै तोकूं वह रालै बाधि । जे तुम चलो मता मन साधि ॥
कहै हणवत जो रावण लरै । वा का भय हम चित्त न धरै ॥३०३४॥
इण विध जाइ करी परवेस । कोई न लहै तुम्हारा भेस ॥

हनुमाह द्वारा समझाना

लकासुंदरी पिता का सोग । रोवै घणी अर भया बियोग ॥३०३५॥

इस विध समझावै हणवंत । वाका था ई मही निमित्त ।।
क्षत्री जे रण में दई पीठ । कुल कलंक लागै तसु दीठ ।।३०३६।।
वा का जाणहु इह विध लेख । ताकां कबहु न करो परेख ।।
समझाई लंका सुन्दरी । लिखे कर्म सो टरै न घरी ।।३०३७।।
जैसा कर्म उपावै जीव । तैसा भुगतै अपनी ग्रीव ।।
तुमारा था असा संयोग । पिता मरण पुत्री संभोग ।।३०३८।
अब तुम सोग करो सब दूरि । सुष भुगतो बांछित मर्न पूरि ।।
भोग भुगत सो वीती रात । राम के काम उठ्या परभात ।।३०३९।।

दूहा

पुण्य पुरुष अति ही बली, इक पलमें भई जीति ।।
देव षेचर सुख ते लहैं, इह ही धरम की रीत ।।३०४०।।

इति श्री पद्मपुराणे लकासुन्दरी विवाह विधानक
४७ वां विधानक

चौपई

हनुमान का लंका में पहुंचना

लंका मे पहुंच्या हणमत । भभीषण नै जाणि दयावंत ।।
अंजनी सुत संदिर मे गया । आदर मांन बहुत तिण दिया ।।३०४१।।

विभीषण से भेंट

बेर बेर पूछै कुसलात । बडी बार बतलाया बात ।।
कहै भभीषण सुण हणवंत । रावण कूं उपनी कुमत्त ।।३०४२।।
सीता कुं ल्याइया चुराय । परदारा सब को खय जाइ ।।
देस देस हुवा अपलोक । राजनीत मे दोषी होक ।।३०४३।।
तीन षंड का रावण राय । खोटी मति इंण करी अन्याय ।।
असे भूप कर्म ए करै । पृथ्वी पर अपजस सिर धरै ।।३०४४।।
उत्तम करम करै जो नीच । उत्तम मध्यम में क्या बीच ।।
मैं याका सेवक हनूमान । तातैं मैं कही है आंन ।।३०४५।।
सीता रामचन्द्र कूं देइ । इतनां जस जे तुम लेहु ।।

विभीषण का रावण को समझाना

भभीषण सुणि रावण पै गया । बहुत भांति कर समझाइया ।।३०४६।।

सील रतन मत खोवो बीर । सीलवंत सुख लहै सरीर ।।
सीलवंत की कीरत होइ । सीलैं भला कहैं सब कोइ ।।३०४७।।
लक्षमण खरदूषण ने मारि । सेनां सकल करी तिण छार ।।
रामचन्द्र लक्षमण दोऊ बीर । जानैं सकल जुध की भीर ।।३०४८।।
जब वे आवेंगा इस ठौर । मावेंगी लका मे रोड ।।
सीता देई रघु पास पठाइ । प्रथवी तणं दुःख मिट जाय ।।३०४९।।

रावण का क्रोधित होना

इतनी सुंणि कोप्यो दस सीस । मेरी कवण सकै करि रीस ।।
रामचद्र से मारे घणे । इनको गिणती मा को गणे ।।३०५०।।
अब मैं सीता आणी सही । अैसा कवण पुरुष है मही ।।
सीता भेजचुं उन पास । लाजै कुल होवें उपहास ।।३०५१।।
कहा करेगा तपसी राम । मोसुं जीत सकै सग्राम ।।
जीती है मैं सगली मही । मोकूं किह का ही डर नही ।।३०५२।।

हनुमान का वानर रूप धारण कर सीता के पास पहुंचना

भभीषण कही हणवत ने आय । हनुमांन उठि वन मे जाय ।।
प्रमदा वन मे बैठी घणी । फलै फूल वृक्षावली वणी ।।३०५३।।
लगूर रूप विद्या सूं करया । सीता कूं देखण तरु परि चढया ।।
वदन मलीन हंगलो छै हाथ । सुमरण जाप जपं रघुनाथ ।।३०५४।।
जाकै राम नाम का ध्यान । वाकै चित्त न आवै आन ।।
दई छाप सीता ढिग जाइ । निरखत सीता नयन उघाडि ।।३०५५।।
तज्या सोग मन भयो उलास । दूती मुख देख्यो सु प्रकास ।।
जाय रावण सों विनती करी । सीता सोग तज्यो इण घडी ।।३०५६।।
दूती ने दीया बहु दान । मंदोदरी पठई सीता थान ।।

मन्दोदरी और सीता की वार्तालाप

मदोदरी आय सखी सजुक्त । सीता की अस्तुति की बहुत ।।३०५७।।
सीता बोली तबै रिसाइ । हे निलज्ज मति पाप कहाइ ।।
राम तणी सुधि पाई अबैं । मेरा सोग विसर गया सबै ।।३०५८।।
भली करी तैं छोडा सोग । रावण सुं भुगतो सुख भोग ।।
तुमकुं सब तैं करि हैं बडी । भला समझि तैं छोडी गुंढी ।।३०५९।।

मंदोदरी कहूँ छाप तैं लही । वे तपसी मुवा हैं कहीं ।।
किण ही पंछी आंणी छाप । तू मन में गरभै है आप ।।३०६०।।
काहू वन में मारया तापसी । पंछी छाप ले आयो नसी ।।
छाप देख मन गहै गही । कहा अजोध्या ताकी मही ।।३०६१।।
एक नगर के वे भूपती । रावण तीन खंड का पती ।।
उनका इतना करैं भरम । ग्रैसा वचन लगाया मरम ।।३०६२।।

सीता द्वारा राम के सेवक को प्रकट होने के लिये कहना

तब सीता बोली सत बैंन । राम का सेवग देख्या नयन ।।
कोई हूं हो प्रगटचो ग्राय । मेरे मन को संसय जाय ।।३०६३।।

हनुमान का सामने आना

हणुमान प्रगटचा तिण ठाइ । रही सहेली दृष्टि लगाय ।।
कै इह सुर कै खेचर भूप । कै इह कामदेव का रूप ।।३०६४।।
सीता कूं किया नमस्कार । ग्रस्तुति बहुत करी तिण वार ।।
धनि धनि हो तुम सीता मात । ग्यारह दिन दुख सह्यो इण भांति ।।३०६५।।
देह सुकाई करी ग्रति षीण । राम नाम सुमरण मे लीन ।।
ग्रपणा राखियो मन ग्रडोल । रामचंद्र इम बोल्या बोल ।।३०६६।।
किषधपुर मे सेना जोडि । ग्रब करि हैं लका परि दोड ।।

सीता के प्रश्न

सीता कहै सुणुं हणुमांन । तुम ग्रन राम कद की पहचान ।।३०६७।।
मैं तुम कूं नही देख्या सुण्या । किस बिध उणस्यो सनबंध बण्यां ।।
उनु कै कारण ग्राये लंक । मनमे कछु ग्रन ग्राणी संक ।।३०६८।।
ब्यौरा सूं समभावै बात । मिटैं संदेह सुंणि बिरतांत ।।
लक्षमण तणी कहो कुसलात । छाप एह पाई किण भांति ।।३०६९।।
कै रामचद्र नै दीक्षा लई । कै इह छाप पडी तुम पई ।।

हनुमान का उत्तर

हणवंत बात कही समभाइ । रामचंद्र दंडक बन रहे आइ ।।३०७०।।
संबूक चन्द्रनखा को पूत । साधी विद्या तप किया बहुत ।।
द्वादश वर्ष मे विद्या फुरी । सूरजहास ग्राया तिह घडी ।।३०७१।।
लक्षमण नें वह लीया खड्ग । संबू कू मार किया उपसर्ग ।।
चंद्रनखा देखै पुत्र का सूल । तब सुधि गई सबै भूलि ।।३०७२।।

खरदूषरा सूं करी पुकार । कपडे फाडि लगाई ढार ।।
खरदूषरा प्रति क्रोध कराय । सैन्या ले तिहां धाये प्राय ।।३०७३।।

लक्षमरा वासूं माड्यो जुध । रावरा नें इह पाई सुध ।।
कोप में चले पुहप विमांरा । दंडक वन मे पहूच्या प्रांन ।।३०७४।।

तुम को देखि राम के पास । वाकी सुधि गई सब नास ।।
राजनीत सहु वीसर गई । तुमारे हरन की इछा ठई ।।३०७५।।

सिंघनाद रावरा पूरिया । रामचद्र लक्षमरा पै गया ।।
रावरा नें तब तुमकूं हरया । जटापंखी बल करि तिहां लड्या ।।३०७६।।

वाकौं गहि रावण मारिया । ऊपर तैं धरती डारिया ।।
लक्षमरा रामचद्र कू देख । कहिक तुम क्यो प्राए लेख ।।३०७७।।

सीता छोड प्राये एकली । एह तुम बात करी नही भली ।।
बेग जाम्रो सीता के पास । तुम बिन दुख होवैगा गात ।।३०७८।।

ढूंढे बन वेहड सब खोह । उनकां तुम सेती प्रति मोह ।।
सिवकति पाया पंषी जटा । देखा प्रतसमय वन बटा ।।३०७९।।

पंच नाम सुरगाए कांन । जटा पषी गया स्वर्ग बिमांरा ।।
लक्षमण खरदूषरा नैं मारि । तुमरा हर्रा सुण्या तिरा बार ।।३०८०।।

रतनजटी तुम पाछैं दौडि । प्रांरा करी रांवरा सूं क्रोडि ।।
रतनजटी कैं लाग्या घाव । समुद्र मे पडे रतनजटी राव ।।३०८१।।

उहा तैं तिरि कंचू गिरि गए । रामचन्द्र ने भेद तिरा दिये ।।
बिराधित नैं लंका पाताल । प्रांरिग बिठाए रघु ततकाल ।।३०८२।।

सुग्रीव राज परपची छीन । तातैं हुम्रा फिरघा प्राधीन ।।
रघुपति परपंची को मारि । सुग्रीव राज दियो तिराबार ।।३०८३।।

उंनौ वडा किया उपगार । ता कारण हम कियो है बिचार ।।
रावरा तीन खड का भूप । सीलवंत करुणा का रूप ।।३०८४।।

ताकी कीरत है संसार । प्रठारह सहस ताके घर नारि ।।
मैं सेवक रावरा का सही । मेरा वचन फिरैंगा नही ।।३०८५।।

तुमकूं देगा मेरे साथ । ले पहुचाऊं जिहा रघुनाथ ।।
सीता हनूमान सूं कहै । तुमसे किते राम ढिग रहै ।।३०७६।।

मन्दोदरी का कथन

राम पास किता दल जुड्या । मंदोदरी बोलै एही घडा ।।
कै इह बली के राम लक्षमरणा । प्रौर न कोई चढया जणा ।।३०८७।।

जब होता रावण का काम । हनुमान करता संग्राम ॥
इह वाके भाई की ठोर । असा हितू न कोई और ॥३०८८॥
चद्रनखा की दीनी पुत्री । असी याकी कृपा करी ॥
या के कर्म असी मति दई । याकै हिरदै असी मति दई ॥३०८९॥
कहा राम भू म गोचरी । ताके दूत होइ आया इण पुरी ॥
सुग्रीव मति मरणे की भई । किषदपुर तपसी कु दई ॥३०९०॥
अब जो सुणै रावण इण बात । देख जू तोहि लगावै हाथ ॥

हनुमान मन्दोदरी संवाद

हणवंत कहै मंदोदरी सुणु । तो पै बुधि नपै कों गिणु ॥३०९१॥
तेरी बुधि भई है हीण । खोटी मुति रावण को दीण ॥
तोहि कहे थे नव जोबना । तो मैं गुण एकौं नहि वण्यां ॥३०९२॥
तो मैं जो होता गुण सार । तो वह क्या नै हरता परनारि ॥
खोटा करम उदै तुज भया । तेरा गुण सगला गिर गया ॥३०९३॥
रावण की दूनी तू भई । पटकी महिमा सगली गई ॥
तू वईरण रावण की सही । वाके जीव का तोकूं डर नही ॥३०९४॥
तै मति दई मरण की ताहि । तोहि रंडापा की भई चाहि ॥
मदोदरी आदि कोपी सब नारि । रे बानर कहो बचन सभारि ॥३०९५॥
कहो राम लक्षमण कूं मारि । बानर बसी कहा गंवार ॥
जितने जुडे राम के पासि । होसी उनुं सगला को नासि ॥३०९६॥

सीता का उत्तर

सीता बोली सुणो सब तिरी । राम लखण की कीरति खरी ॥
पहला बरबर मलेछ कूं जीति । वज्रावर्त्त तै सब भयभीत ॥३०९७॥
असा धनुष चढाया तुरंत । उनसे कों नहीं बलवत ॥
खरदूषण मारधा संबूक । उनका बाण है महा अचूक ॥३०९८॥
सेना का नाही कछु काम । रावण कूं मारै नही राम ॥
समुद्र उतरि जो आवै एक । राखै रघुवंस की टेक ॥३०९९॥
तुम अब निश्चै होस्यो राड । तुम जसकीर्त्ति मा होस्यो भांड ॥३१००॥

मन्दोदरी का नाटक

मदोदरी आदि अठारह हजार । सहुं मिल बोलै मुंह थी गाल ॥३१०१॥

कोसे सब झकोडैं बाहु । हनुमान ग्रहटाई जाहि ।।
सकल नारि धरती मैं मिलैं । कैसे हनूमान को लेइ चलैं ।।३१०२।।
बसन फाडि लोचैं सिर केस । गई तिहा दशकंध नरेस ।।

हनुमान का सीता से निवेदन

सीता सो बोलैं हनूवत । तुम कछु मन मा धरो मति चित ।।३१०३।।
जो तुम कहो तो ग्रब ही ले जाउं । ग्रपणो मन राखो चित ठाउं ।।
ग्रन्न खावो जल पीवो मात । नमस्कार कीयो बहु भाति ।।३१०४।।

हनुमान द्वारा भोजन

इला वाहण सो कहै हणवत । करो रसोई व्यंजन बहुमंत ।।
किये पकवान सुगधा घणा । छहरि रसोई उत्तिम वणा ।।३१०५।।
भात दाल उत्तम बहु घृत । प्राशुख जल सो स्नान करंत ।।
श्री ग्ररिहंत का सुमरण किया । एक पहर दिन कर उगिया ।।३१०६।।
मन मे ग्रैसी इच्छा धरी । कोई मुनीस्वर ग्रावै इस घडी ।।
प्रथम सुपात्र नै द्युं दान । पाछै हम करिहु जलपांण ।।३१०७।।
पूरब जनम किया मैं पाप । तो इह भयो मोहि संताप ।।
कै मैं दान कुपात्रै है दिया । कै सुत मात बिछोहा किया ।।३१०८।।

सीता द्वारा ग्राहार ग्रहण करना

सीता जी लीयो ग्राहार । इला हणवत जीम्या तिण बार ।।

सीता का चिन्तन

सीता चिन्तै राम की वात । तीरथ करण पिया संग जात ।।३१०९।।
कै मैं मुनिवर कियो ग्रपमान । कै जल पीयो ग्रणछाण ।।
कै मै भोजन खायो राति । कै जिन धरम न सुहात ।।३११०।।
श्री भगवत भज्या बिण भाव । समकित चित्त न हुवो सुहाव ।।
कुगुरु कुदेवा की कीनी सेव । कुशास्त्र उर धार्या भेव ।।३१११।।
कंदमूल फल खाये घणे । भला शास्त्र मन धर ना सुणें ।।
परनिंदा कीनी ग्रधिकाइ । तो इह उदय भया मुझ ग्राइ ।।३११२।।
ग्रश्रुपात चुवै दृग भरे । तबइ हनुवत बीनती करै ।।
जै तुम मात चलो मुझ साथ । पहुचाऊं तुमनै जिहां रघुनाथ ।।३११३।।

सीता के वचन

सीता कहै सुणो हणुमान । रामचन्द्र आवैं इस थांन ।।
तो मैं चलूं तिनां के संग । उणां बिणां चलणां नहीं रंग ।।३११४।।

हनुमान का प्रस्थान

सीताजी की आग्या पाइ । विदा भए तब हणवंत राय ।।
पुहप गिरिवर पर ठाढा भया । तहा बहुत आई हैं तिरिया ।।३११५।।
वन क्रीडा देखैं थी नारि । हणुवंत रूप देखिया अपार ।।
वाजै वीण सुणावै तान । कोई कहै एही हणुमान ।।३११६।।

मन्दोदरी का रावण के पास जाना

मंदोदरि संगि गई सब तिरि । रावण सुं पुकार त्यां करी ।।
हणुवंत तणउं कह्यो विरतात । उठ्यो कोपि रावण सुणि बात ।।३११७।।

रावण का क्रोधित होकर युद्ध का आह्वान

सूर सुभटां कूं आज्ञा दई । वेगा मारो हणुवंत जई ।।
दोड्या बहुत सुभट तिण बार । हाथों मे नांगी तलवार ।।३११८।।
गदा गुरज बरछी तीर कवांन । इणैं प्रकारैं घेर्‌यौ हनुमांन ।।

हनुमान का युद्ध कौशल

लागुली विद्या भली सभारि । ठौरि ठौरि के बृक्ष उखारि ।।३११९।।
मारे सुभट किये तिहा ढेर । उजाडि दिया उपवन चिहुं फेर ।।
सिला थंभ मिंदिर सब ढाहि । चौपटि किये तिहां ढेर उखारि ।।३१२०।।
सूरवीर झुझे तिह ठौर । कायर भाजि गये सब औंर ।।
हनूमान बैंठे तिन ठाम । जाके हिए राम का नाम ।।३१२१।।
रावण सुणु सुभट परिहार । तब भेज्या बहुला असवार ।।
इंद्रजीत नैं मेघनाद । जाणैं सकल जुध अनै वाद ।।३१२२।।
मारि मारि करि दौडे घणे । जइसें जम प्राणन कूं हणें ।।
हनूमांन सनमुख भया आंण । मारई सिला करैं घमसाण ।।३१२३।।
मैंगल को पकडै चिहु पास । फैंकै ताहि घणे रहै ठांय ।।
तरु उपाडि कर मारै सीस । एक ही बार मरैं दस बीस ।।३१२४।।
सेनां झूझी राक्षस बंस । इन्द्रजीत मनमे करै संस ।।
हणवंत एक महा बलवंत । जिण मारे सगले सामंत ।।३१२५।।

इन्द्रजीत मेघनाद इम कहै । इन्द्रभूप हम ही तब गहै ।।
इह विध हम तें कोई न लड्या । हणवत उपरि ढोवा कर्या ।।३१२६।।
छूटै सर गोला जिम मेह । धरती गगन उडी अति षेह ।।
गदा खडग की होवै मार । जित जित दीसै बानर वारि ।।३१२७।।
जाकू पकडै लेई झझोर । लका मा हुआ तब सोर ।।

इन्द्रजीत द्वारा हनुमान को पकडना

इन्द्रजीत विद्या संभार । नाग पास है इन्द्र का जाल ।।३१२८।।
वासौ बाध लिया हणवत । मार्या घणां किया दुखवत ।।
रावण पास आया हणुमान । कोप्या क्रोध बहुत मन आन ।।३१२९।।
बाधि मुसक हथकडी डाल । गल मे नौष जडे तिहकाल ।।
पाव माहि बज्र साकुनी । मारे बहुविध हणवत बली ।।३१३०।।

इन्द्रजीत द्वारा हनुमान का परिचय देना

इन्द्रजीत रावण सु कही । भु मगोचरी का दूत है अही ।।
इण पहिली महेन्द्रपुर जाय । महेन्द्रसेन जीते तिह ठाइ ।।३१३१।।
भेजा ताहि कनै रामचन्द्र । गधर्वसेन का मिटया दद ।।
मुनिवर का उपसर्ग निवार । भेज्या किषधपुरी मझार ।।३१३२।।
वज्रकोटि लका का तोडि । बज्रमुखी नै मार्या ठोडि ।।
लकासुन्दरी आप विवाहि । बहुरि आया ल का माहि ।।३१३३।।
सीता नै खबर राम की दई । मदोदरी आदि मान भंग भई ।।
पुहपक वन इन दिया उजाडि । ढाहे बहुत हाट वाजार ।।३१३४।।
मिंदर घणा मिलिया छार । सुरसूभट बहु डाले मार ।।

रावण का क्रोधित होना

फोड्या कुआ बाव तालाब । रावण कहै क्रोध के भाव ।।३१३५।।
मै तोहि ऊपर राखं था मया । तू उठि रामचंद्र पै गया ।।
राम लक्ष्मण सौ कद की प्रीत । उनकौ मिल्या भया तू मित्त ।।३१३६।।
मेरा डर तुम कू नही भया । मेरा गुण तू वीसर गया ।।
खरदूषण की तो कु कन्या दई । देस माहि तो कीरत भई ।।३१३७।।
बहुत देस दीने तुम सही । तै आपणे मन असी गही ।।
कहा राम लक्ष्मण तापसी । भ्रमति भ्रमति उन पाई महीवसी ।।३१३८।।

उनका दूत भया है आण । तोइ नं भई कोक की काण ।।
भई निलज्ज पणा है तेरा । जिय में कछु विवेक नहीं धरा ।।३१३९।।

पवनजय का तू नाही पूत । काहू बरांक तैं उपज्या दूत ।।
जै तू होता उत्तम वंस । तो नाही मानता उपदस ।।३१४०।।

अब तोकुं मार करू निरजीव । चंद्रहास सुं काटूं ग्रीव ।।

हनुमान का उत्तर

हनुमत बोल्यो निरभय बैन । तो पापी को होसी कुचैन ।।३१४१।।
अठारह हजार तेरै थी अस्तरी । तैं काहे कूं सीता हरी ।।
तेरा मरण आया है सही । खोटी मति तैं मनमें धरी ।।३१४२।।

रत्नश्रवा कुल ध्योआ भया । राक्षसवंस कलक तैं दिया ।।
तेरे कुल का ह्वं है नास । अब तु छोडि जीव की आस ।।३१४३।।

तेरा नही देखण का मुख । चौंर जार क्या मानै सुख ।।
रावण कोपि गह्या कर खडग । हणवत को कियो उपसर्ग ।।३१४४।।

देखैं वहुत पुरुष अरु नारि । नंगा करि फेर्‌यो घर वार ।।
अपणां प्रभू नै ज्यां दीधा पीठ । ताका सूल ए सब दीठ ।।३१४५।।

घर घर का रावडा बहु जुडे । डारैं खेह सहु मूंठी भरैं ।।

हनुमान का मायावी विद्या द्वारा लंका दहन

हनूमान सब बधन तोडि । विद्या को संभालि बहौडि ।।३१४६।।
लंगूर रूप तिहां सेना करी । बीजली सम पूंछ अगनि संभरी ।।
सगली लका दई जलाय । सगला मंदिर दीए ढहाय ।।३१४७।।
चौपटि करि लंका का देस । चढि विमान हनूमान नरेस ।।
सीता सुण्यौ पकड्यो हनुमान । रोवैं बहुविध करैं आयान ।।३१४८।।
इला वाहन कहै चिंता मति करौं । हनूमान अपरं बल धरौ ।।
लका कूं दहवट करि गया । सीता आसीरवाद यह दीया ।।३१४९।।
चिरजीव ह्वं है हणमत । सीता असीस कहै बहुमत ।।
तिहूलोक ह्वं जो तुझ नाम । लहियो सदा सुख विश्राम ।।३१५०।।

दूहा

हनूमान साका किया, पुन्यवत बलवान ।।
वानर राव जस प्रगट्यो घणौं, कारिज कियो प्रवांन ।।३१५१।।

इति श्री पद्मपुराणे हनूमान सीता मिलन विधानकं

४८ वां विधानक

चौपई

हनुमान का पुनः राम के पास आकर पूरा वृत्तान्त कहना

हणुमान सेन्यां मे मिल्या । फिरे छत्र ता ऊपर भला ॥
किषधपुरी में पहुच्या जाइ । अपणें मंदिर बैठा आइ ॥३१५२॥
सुग्रीव आदि भूपति सब चले । हनूमान सेती सहु मिले ॥
लंका तणुं सुण्युं विरतांत । सुग्रीव कहै रघुपति सौं वात ॥३१५३॥
वीती रयण उगोयो भांण । राम पास पहूचे हनुमांन ॥
नमस्कार करि करी डंडोत । तिहा भूपति खडा बहूत ॥३१५४॥
पूछै राम सीता कुसलात । हनूमान कहैं सब बात ॥
प्रमदा वन मे सीता रहै । दूती दूत वचन तिहां कहै ॥३१५५॥
सीता अनपांणी नहीं रोच । नाहि निवाय करै वहु सोच ॥
उसकै सदा रहै तुम ध्यान । मनमे कछुवन आवै आन ॥३१५६॥
मैं उनकूं खवाई रसोई । राति दिवस बीतें इम रोइ ॥
सब दूती मैं दई बिडारि । रावण आगैं करी पुकार ॥३१५७॥
रावण तणै भेजी निस सैन । मैं लंका मैं कियो कुचैन ॥
तोडि बाग फोड्या सब गेह । लका जाल करी सब खेह ॥३१५८॥
तुम सूं आइ कहा संदेस । मन आवै सो करो नरेस ॥

राम की चिन्ता

राम नयन सेती बहै नीर । जा हिरदै सीता की पीर ॥३१५९॥
घिग घिग भाई असा जीवणा । हम जीवत सीता दुख घणा ॥
जे सीता का दुख करै दूर । तो हम वली कहावै सूर ॥३१६०॥
जिम केहरि दावानल माहि । ताका बल चालै कछु नाहि ॥
असी कठिन बणी अब आय । इण विघ सोच करैं रघुराय ॥३१६१॥
लक्षमण कहै तो पहुंचो लंक । तो मन की पोषैं सब संक ॥
धन्य सुग्रीव धन्य हनुमान । इनुं दई सीता सुधि आनि ॥३१६२॥
अब जो भावमडल हूं संग । रावण तणो करै मान भंग ॥
सुग्रीव सेती बोलें रघुनाथ । भामंडल आवै हम साथ ॥३१६३॥
वाकू हम ढिग लेहु बुलाय । कैं हमने वो पथ बताइ ॥
सायर तिर हम लंका जाइं । तुम इहा रहो अपणी ठाइं ॥३१६४॥

राजाओं द्वारा निवेदन

सिंघनाद बोले भूपती । हनुमान कीनी यह गती ।।
उपाड वृक्ष ढाहै प्रासाद । अवर कियो रावण सूं वाद ।।३१६५।।
सूरवीर मारे बहु लोग । घरि घरि कियो लंका में सोग ।।
लंका वाल करो इण खेह । कुवा वापी ढाहे सब गेह ।।३१६६।।
रावण मन में राखै बैर । सगलां कूं मारैगा घेर ।।
रावण ने पकडी अनीत । बिसर गया धरम की रीत ।।३१६७।।

युद्ध की तैयारी

वासुं सब मिल करस्यां जुध । अवर न कछु विचारो बुधि ।।
चंद्रमरीच इम भणै नरेस । नृप एकठा भए सहु देस ।।३१६८।।
रामचद्र का करो उपगार । रावण मारि मिलावो छार ।।
धनगति गज धुंन गति कुरकेत । भीम नल नील सुग्रीव समेत ।।३१३६।।
वज्रभूकरण अर भूपति घणे । सब का नाम कहां लग गिणै ।।
महेन्द्रसेन पवनंजय राय । प्रसन्न कीर्त्ति की अधिकाइ ।।३१७०।।
विद्याधर एकठे सहु भए । सेना जोडि राम संग गये ।।
अश्वनी सुदी पंचमी दिनेस । दीतवार को चले नदेस ।।३१७१।।
नक्षत्र कात्तिका मेष था लगन । अवर भए सभी सुह सुकन ।।
लक्षमी सिर गागर दही । बलै अगनि तिहां धुआं नहीं ।।३१७२।।
पीछै आवत मंद समीर । बोलै काक वृक्ष गुण धीर ।।
मुनिवर द्रूं देखे ले अन्न । तीसूं उपजै काया चैन ।।३१७३।।
लंका तणा गिरा कागुरा । रावण चित तब चमक्या खरा ।।
घडी साध सुभ कीया पयाण । सैना जुडी दिना उनमान ।।३१७४।।
राम लक्षण दोऊ चढे बिमाण । हय गय रथ पायक नीसांन ।।
मैंगल कोरि लाख पचास । बहुत विद्याधर रघुपति पास ।।३१७५।।
बेल धर परवत परि गया । समुद्र नाम राजा तिहां रह्या ।।
नल नें पकडि वही नरेन्द्र । आणि दिया वाको करि बन्द ।।३१७६।।
लाग्या रामचंद्र के पाय । छोडि दिया तबै रघुराय ।।
बेलंधरपुर इण ने ले जाय । कन्या च्यारि हरि नै दई आय ।।३१७७।।
श्री कमला दूजी गुणमाल । सुश्री रतनचूला सुविसाल ।।
उहां तैं चले भये परभात । सुबेल परबत पहुंचे रघुनाथ ।।३१७८।।

सुखेम राय परि भेज्या नील । पकडिया तुरत न लागी ढील ।।
हंस दीप कीयो विश्राम । सब सेना उतरी तिरण ठाम ।।३१७९।।
जब लग भामंडल नहीं मिले । तब लग हम द्वीप तैं न चले ।।
रही सेन सगली तिन ठौर । भूपति प्राय मिले सब ग्रौर ।।३१८०।।

ग्रडिल्ल

पूरव पुन्य उदै बहुत सेना जडी
जीत भई मग चलत ही साधी पुरी ।।
चरण नये सब प्राय भूप ब दे घरणे
दिन दिन ग्रधिक प्रताप बढै चऊ गुरणे ।।३१८१।।

इति श्री पद्मपुराणे राम लंकापुरी प्रस्थान विधानकं

४९ वां विधानक

चौपई

रावण का चिन्तन

रावण ग्रैसी पाई सुधि । क्रोधवत होई सोचै दसकंध ।।
ग्रजोध्या नृप भूमिगोचरी । हम ऊपर ग्रावै डर नही करी ।।३१८२।।
देखो इनहै लगाऊ हाथ । मेरे लोग सव मिलिया साथ ।।
यह देखो संसारी रीत । जिणकौं मैं जाणें था मित्त ।।३१८३।।
सेवग मोसौं गैरी भए । ग्रैसा कर्म उना नै किये ।।
रामचद्र किंषधपुर राखि । सुग्रीव मेरी ग्रपकीरत भाष ।।३१८४।।
हनूमान ग्रवर नरपति मिले । मेरा उदय न चाहैं भले ।।
उनको समझा मैं ग्रापणा । एसहु किये उनु का उपणा ।।३१८५।।
जे तपसी सो मिलते नही । तो ग्राए सकते नही ।।
ए ल्याये उनकू इस ठौर । एती सेन्या उन साथै जोरि ।।३१८६।।
ऐसा निडर नही कोई ग्रौर । ताथी माची इण ठा रौर ।।
देख जू इनसौं ऐसी करू । पकडि लेय जममंदिर धरू ।।३१८७।।
मेरा भय कछु चित्त न धर्या चित्त । ग्रपणा नही विचार्या वित्त ।।
परजा डरपै लका माझि । करै सोच निस बासर साझ ।।३१८८।।

युद्ध की तैयार

रावण के सोलह सहस्र भूप । मुकुटबंध ते दिपै ग्रनूप ।।
मारिच मगदत्त ग्रमीचद । हस्त प्रहस्त ग्रने ग्रसफंद ।।३१८९।।

राजा घणे सभा में खडे । एक एक तैं अतिबल भरे ॥
रावण कै बाजै नीसान । रहै सेनां सबद सुंण कान ॥३१६०॥

सोरठा

धनि धनि आज दिनेस, करै काज जो प्रभु तणौं ॥
आनंदीया नरेस, सबद सुनत रणभेरि को ॥३१६१॥

चौपई

योद्धाओं का रावण को पुनः समझाना

जोधा सुभट जुडे सब आय । कुंभकरण भभीषण राय ॥
इन्द्रजीत बोले कर जोडि । उज्जल कुल मति लगावो खोडि ॥३१६२॥
अब लौं जस निर्मल चहुं देस । परत्रिय चोरी सुनो नरेस ॥
चढे अपलोक कछु किये अनीत । समझो प्रभू धरम की रीत ॥३१६३॥
वेद पुराण सुणी इह बात । परनारी है विष की जात ॥
खाय हलाहल इक भव मर । परदारा तैं भव भव दुख भरै ॥३१६४॥
सीता रामचंद्र कूं देहु । निर्भय बैठा राज करेहु ॥
अठारह सहस्र हतै तुम नारि । रूपवंत शशि की उणहारि ॥३१६५॥
कहा एक सीता बापडी । ता कारण एह अडी आपडी ॥

रावण का पुनः क्रोधित होना

सुणि रावण कोपियो बहुत । इन्द्रजीत क्यो डरपै पूत ॥३१६६॥
अस्त्री है चिंतामणि रत्न । जो आ पावै काहू जतन ॥
हाथ चढी किम दीजे छोडि । सूर सुभट को लागै षोडि ॥३१६७॥
अैसा भय किसका मैं धरूं । जे हूं अपणी टेक तै टरूं ॥
जो तुम जुध करबे सौं डरो । जाय कहा छिपकै दिन भरो ॥३१६८॥

बिभीषण का इन्द्रजीत से बचन

भभीषण इन्द्रजीत सौं कही । तुम सम कोई दुरजन नहीं ॥
तू नै इसे सुणाये बैन । या के मनकूं भयो अचैन ॥३१६६॥
भली बात याहे लागै बुरी । आई याके मरण की घडी ॥
राम लक्षमण दोऊ बलवंत । उनका सेवग है हनुमंत ॥३२००॥
सुग्रीव और विद्याधर घणे । भामंडल पराक्रमी सुणे ॥
दिन दिन सेना उन संग बधै । पल में उनके कारज सधै ॥३२०१॥

इनै अपणा नहीं जाण्या मर्ण । कीए जाय सीता का हर्ण ॥

रावण का विभीषण पर धावा बोलना

उठ्यो कोप रावण सुणि वात । चन्द्रहास ऊपरि धरि हाथ ॥३२०२॥

भभीषण कू मारण निमित्त । ग्रैसी खोटि विचारी चित्त ॥
भभीषण कू तब चढघो विशेष । गह्या थंभ पाथर का सोष ॥३२०३॥

दोऊ वीर क्रोध कै भाय । कुंभकरण बोल्या समझाय ॥
भभीषण सु कहै तु घरि जाह । तब लग क्रोध घटै मन मांहि ॥३२०४॥

सीतल वचन रावण ने कहै । भभीषण लंका मे नही रहै ॥
मात पिता बहु पाये पडै । सगला सज्जन ग्ररज करै ॥३२०५॥

विभीषण का राम के पास जाना

तीस क्षोहणी दल लिया साथ । चल्यो सर्ण जिहा रघुनाथ ॥
तीन सहस लिया संग नारि । ग्रौर सकल छोडघा परिवार ॥३२०६॥

हंस द्वीप है जिहा श्री रामचंद्र । गयो भभीषण को सब दुंद ॥
वानर बंसी भभीषण कु देख । ग्रैसी समझ करै मन प्रेष ॥३२०७॥

रावण भेज्या है जुध निमित्त । हनुमान ग्रादि सभल्या सामंत ॥
गहि हथियार उभा सबै तिहा । ग्रागन्या होय तो ग्रब मारै इहा ॥३२०८॥

वज्रावर्त्त धनुष गहि राम । समुद्रावर्त्त लक्षमण गहि ताम ॥
भभीषण सेना बाहिर रही । ग्राप ग्राय पोल्या सौं कही ॥३२०९॥

विभीषण का द्वारपाल से निवेदन

भभीषण ग्राय खडा है बार । मेरा जाय कहो नमस्कार ॥
ग्राग्या होय तो दरशन करै । सेवग ग्राइ वीनती करै ॥३२१०॥

करी वीनती द्वै कर जोडि । भभीषण ऊभा है तुम पौलि ॥

मन्त्रियो का परामर्श

ग्राग्या होय तो देवै चर्ण । मंत्री लागे मतो कर्ण ॥३२११॥

रावण तनो भभीषण वीर । कछु परपंच ग्राया तुम तीर ॥
ग्रब इह जो मांडेगो राडि । ग्रावाद्यो मति सभा मझार ॥३२१२॥

मति सागर दूजा मंतरी । उणी इक बुधि उपाई खरी ॥
रावण भभीषण भयो वइर । दूती इसी कह गई सबेर ॥३२१३॥

तुमारी सर्ण भभीषण ग्राव । कृपा करो तो दर्शन पाइ ॥
भभीषण रामचंद्र कु देखि । लक्षमण तणु रूप ग्रति प्रेष ॥३२१४॥

बिभीषण द्वारा राम का दर्शन

रामचद्र का देख स्वरूप । बंदे चरण भभीषण रूप ।।
राम कहैं आवो लंकेस । तोकु दिया लका का देस ।।३२१५।।

भभीषण मन मे भयो आनंद । मेरे तुमही देव जिणंद ।।
कहो सकल किम लडिया भ्रात । होवे क्रोध कर्म की बात ।।३२१६।।

गिरगो भ्राता थे वे दोइ । चंपापुरि जाणै सब कोइ ।।
सूरज देव राज सु करत । मतिबती पटराणी गुणवंत ।।३२१७।।

सुगुपति मुनि भाष्यो धर्म । लीयो व्रत उण जाण्यो मर्म ।।
गिरगोभूत जाय था कही । इनैं रत्न लिखमी बहु लही ।।३२१८।।

आवत देखे लोग बहुत । ढांक बही लिखमी सयुक्त ।।
फिरि वे आए घरि आपणैं । उहा अवरै की अवरै वर्णै ।।३२१९।।

कौसंबी नगरी के मध्य । बहुधन सेठ कुपदा मध्य ।।
अहदेव महादेव दोइ पूत । बहुधन मूंवा आव पहुत ।।३२२०।।

ए दोन्युं उदिम कू चल्या । वे रत्न लखमी पाया भला ।।
लषमी घर लाया आरणें । वे दोई जाई धरती षणें ।।३२२१।।

दोन्यू लडै न मानैं हार । गिरि गोभूत सूं भई राडि ।।
गोभूत कू मारै तिन ठोर । असुभ कर्म तैं हुवा भौर ।।३२२२।।

अहदेव महादेव ल्याया रतन । गिरितें पहिचान्या सब जतन ।।
सुणी बात मन मे पछिताइ । उठै लहरि पावक कै लाग ।।३२२३।।

मैं क्युं मारघा अपना वीर । अइसें समझि न धारै धीर ।।
तातै करम इह करतूति । लोमैं हणें पिता नै पूति ।।३२२४।।

सुणी बात भाज्या सदेह । हंसद्वीप दिन आठ रहेइ ।।

सेना के साथ लंका द्वीप मे पहुंचना

ड्योढ सहस क्षोहणी दल जुड्या । चार सहस रावण कै पड्या ।।३२२५।।

भामंडल साथ क्षोहणी सहस । अष्ट दिवस रहे द्वीप हस ।।
बाजा बजाइ लंका मे गए । ए सबद रावण कैं भए ।।३२२६।।

सोरठा

रावण सकल बुलाये लोग । अैसा वण्यां तिहां सजोग ।।
सूर सुभट सब इकठे भये । धांनई धारी भूपति नए ।।३२२७।।

रावण खोटया कुट, अंतरिगति सोच्या नहि ।।
छोड धरम का मूल, सज्जन तै दुरजन भया ।।३२२८।।

इति श्री पद्मपुराणे भभीषण राम समीप आगमन विधानकं

५० वां विधानक

चौपई

अक्षोहिणी संख्या

श्रेणिक नृप जोडे दोइ हाथ । किपा करि भाषो जिन नाथ ।।
क्षोहिणी गिनती किस भांति । मोकू समझावो विरतात ।।३२२६।।
श्री सरवज्ञ के उत्तम वैन । सुणते सब के मन चैन ।।
गोतम स्वामी करै बखान । बारह सभा सुणै धरि कान ।।३२३०।।
अष्टप्रकारी सेन्या संग । च्यारि च्यारि इक इक के अंग ।।
पति हाथी घोडांने रथ । पायक और सुभट बहुथ ।।३२३१।।
हाथी एक पयदल पाच । तिगुने एक एकतै वांच ।।
ऐसी विधतै गिणती बढै । इस लेखे आठ लौं बढे ।।३२३२।।

अथ क्षोहिणी कहैं छै । पति १ सेना २ मुघ ३ अनीक ४ वाहनी ५ चमू ६ वरू ७ दड ८ ये आठ प्रकार की सेना कही । नवमी अक्षोहणी कहजे । नवघोडा ६ अर तीन रथ ३ तीन हाथी ३ पनरह पायक १५ ए च्यार प्रकार सेना का भेद छै ।। हिवै मुख कहैं छै । हाथी ६ रथ ६ घोडा २७ पयदल ८१ पयादा १३५ ए अनीक हुई । अथ वाहनी कहै छै । गज ८१ रथ ८१ घोडा २४३ इक्यासीय दल च्यार मैं पाच । ए वाहनी कहैजे । चमू कहैं छै । दोय सै तियालीस २४३ हाथी रथ २४३ सात सै गुणतीस ७२६ घोडा बारा से पनरा १२१५ पयादा ए चमूं कहेखे । विरुथनी कहै छै । रथ ७२६ सात सै गुणतीस हाथी ७२६ सात सै गुणतीस । घोडा २१८७ इकबीस सै सत्यासी । पायक छत्तीस सै पैंतालीस ३६४५ । हिवई दड कहे छै । इकबीस सै सत्यासी २१८७ हाथी । इकबीस सै सत्यासी २१८७ रथ ।

घोडा पैसठ सौ इकसठ ६५६१ । प्यादा नवसौ पैंतीस । अर दस हजार हुवै ए दडक कहेजे । अक्षोहणी कहै छै । गज इकबीस हजार । आठ सै सिहत्तर रथ । पैसठ हजार छ. सै दस घोडा । एक लाख नौ हजार तीनसै पचास पैदल । एक अक्षोहणी कहे जे । प्रथम पति १ सेनापति २ गुलम ३ वाहिनी ४ पंचम सति । छठी प्रतिनाच ६ । सातमी चमु ७ । अनीकनी ८ मने दस गुनी भई ।]

दोनों दलों के सामर्थ्य की चर्चा

इतने तैं क्षोहिनी इक होय । इस विध समझो गुनीअन लोय ।।
दोउं या दल हुआ इक ठोर । मत्ता करै दोन्युं फोजां सोर ।।३२३३।।

कोइक कहै रावण दल घणां । रामचंद्र संग थोडा जना ।।
राक्षस बंसी है बलवंत । वानर बंसी किम होइ करंत ।।३२३४।।
जे राख्यस वानर कु भषैं । ग्रैसे लोक ग्रापस में बकैं ।।
कोई कहै बली हनुमान । लका कूं डाही उन ग्रांन ।।३२३५।।
सब लोगन कू दीनी मार । बन उपवन कर दिया उजार ।।
सनमुख कोई जुध न करि सकै । इसही विध राख्यस संसकैं ।।३२३६।।
कोई कहै रावन ग्रति बली । कुंभकरण की कीरत भली ।।
इन्द्रजीत मेघनाद बलवंत । इन्द्र भूप कौं कीना मड ।।३२३७।।
रामचंद्र जीतै किस भात । रावण का बल कह्या न जात ।।
कोई कहै ए दोन्यू वीर । दंडक वन मे कोई न तीर ।।३२३८।।
खरदूषण सुं लक्षमण लडया । सेन्यां सुधी परलय करया ।।
रामचन्द्र पै बज्रावर्त्त । लक्षमण कनै समुद्रावर्त्त ।।३२३९।।
रामचन्द्र लखमण सु पुनीत । रावण करी पाप की रीत ।।
जिहा धरम तिहां ह्वैं जय । रावण का होवैगा क्षय ।।३२४०।।
ऐसै ग्रापस मैं करैं सोच । ग्रन्य वस्तु की भूली रूच ।।
कौण मरै कोण जीवत बचै । को व्यर्थ बात मैं पचै ।।३२४१।।
धरम मार्ग क्रिया सुध मूल । रात दिवस मन किया ग्रडोल ।।
जे कोई छोडि जाइ सग्राम । दिक्षा ले करि ग्रातम कांम ।।३२४२।।
तो होवै लोक मे ग्रपलोक । कातर कहैं ताकू सब लोक ।।
ग्रैसी ग्राणि वणी है कठिन । तांको कछू न होवै जतन ।।३२४३।।
इह भवसागर मे जीव । भ्रमैं च्यार गति गाढी नीव ।।
धरम दया तै उतरैं पार । जो कोई सहै सयम का भार ।।३२४४।।

दूहा

ग्रारत रौद्र निवार करि, धरम सुकल धरि ध्यान ।।
ग्रातम सौं लव ल्याइकै, तो पावै निरवाण ।।३२४५।।

इति श्री पद्मपुराणे उभय बल मांन विधानकं

५१ वां विधानक

चौपई

युद्ध के लिये सैनिकों का प्रस्थान

रावण नृप इम ग्राज्ञा दई । साजो सैंन भूप सज थई ।।
रामचंद्र सो करियो जुध । सब कूं भई मोह की बुधि ।।३२४६।।

अपने अपने गेह मंझार । करैं आलिंगन सब नर नारि ॥
पुत्र पौत्रादि सकल परिवार । लपटैं कंठ अनैं करैं पुकार ॥३२४७॥
पोषी देह स्वामी के काज । अब जो रहै तो पूरी लाज ॥
जे जीवांगा तो मिलि हैं आय । उत्तम क्षमा कहि निकसे राय ॥३२४८॥
रोवैं कुटुंब सब बारबार । उन कूं व्याप्या मोहि अपार ॥
न कछु जनम सेवग का जान । तजि कुटुंब देवैं निज प्रान ॥३२४९॥
करैं बीनती रोवैं अस्तरी । जइ तुम जीत फिरो तिण घरी ॥
जब हम तुमतैं हुवै मिलाप । तुम मुझै होइ संताप ॥३२५०॥
अपणा तजो तिण बार । तुम बिन सगलो जगत उजाड ॥
कोई नही विवाही नारि । ते तेहीं समझै सुख की बार ॥३२५१॥
मोह फद मैं बाधी दुनी । असी कठिन सबसौं वनी ॥
कोई आभर्ण करि असमान । सुथरे बागे पहरे आन ॥३२५२॥
सब ही नैं बांधे हथियार । अपणा अपणा रूप संवार ॥
पूज्या पहलां देव जिणंद । सूरवीर मन करैं आनद ॥३२५३॥
धन्य दिवस सही है आज । सार्थे स्वामि धरम का काज ॥
कोई कहै कित सीता हरैं । ता कारण इतने दल जुडे ॥३२५४॥
कुण कुण मरि है रण के माझ । रावण माही अधरम की झाझ ॥
सीता को जो देई पठाइ । तो कां जुध होता इण बार ॥३२५५॥
अब हम जाई दिखा लेहु । छोडि सव ससारनि एहु ॥
कातर कहै लोग सब कोइ । ए बिचार उनके मन होइ ॥३२५६॥
रावण कै बाजै नीसान । निकले सकल लोग तजि थान ॥
हस्त प्रहस्त अगाऊ चले । तिणा कै सग सुभट बहु मिले ॥३२५७॥
मारीच स्यध जान भूपती । स्वयम् प्रथोत्तम उज्जल मती ॥
पृथ्वी बल चंद्राक अवर चद्रसुक । नरपति बहुत अवर असुक ॥३२५८॥
कुंभकर्ण अनै इन्द्रजीत । मेघनाद अति महा पुनीत ॥
अढाई कोडि कवर असवार । सोमैं जिसा देव उणिहार ॥३२५९॥
रतनश्रवा अरु मालवान । रावण चाल्यो गज पलांण ॥
केई भूमिर केई विमान । छाई किरण जाणुं लोपैं भांण ॥३२६०॥
होवै कोलाहल सबद न सुणैं । उडो धूल अधियारो बणैं ॥
पचास लाख रावण की डोर । हस्ती मातै उमैं पौर ॥३२६१॥

दूहा

रावण की सेन्या चली, तिसको नांही अंत ।।
एक एक रथी सरस रावण प्रति बलवंत ।।३२६२।।

इति श्री पद्मपुराणे हनुमान लंका प्रस्थान विधानकं

५२ वां विधानक

चौपई

राम की सेना

रामचंद्र अब साजी सैन । कीयो गवन महूरत ग्रैन ।।
नल अरु नील अगाऊ चले । सूर सुभट लीने संग भले ।।३२६३।।

हनुमान जांबूनंद समांन । जैमित्र चंद्राभ वलवांन ।।
वरधन कुमर रतन महेन्द्र । भामंडल बहु अपर नरेन्द्र ।।३२६४।।

द्रिढ रथ प्रति कठ महाबल । सूरज उदय सरव प्रिय अटल ।।
बेल प्रिय सरब सार्दूलबुध । सर्वोत्रएल सरव बुध ।।३२६५।।

निव निष्ठ अव संत्रास । विघन सुदन नटवर पास ।।
पापी लोल महामडल । संग्राम चपल का बहु वल ।।३२६६।।

परम धीर प्रस्तर दिनवान । भगदत्त द्रुपद पूर्ण चंद समान ।।
विधुसागर निससागर भूप । असकेद पादप चंद्र सरूप ।।३२६७।।

इंद्रोवधि और गोतर त्रास । सकट पौन बज्रकरण पास ।।
वलसील सिंघोवर समेद । अचल साल जाणै सुभ भेद ।।३२६८।।

महाकाल अवर रविकाल । अंगतिलक सुखेन तरवाल ।।
भीम महाभीम रथ धरम । मनोहारि हर मुख बहु मरम ।।३२६९।।

धरमति सार अरु सूरजजटी । सिवभूषन अवर रतनजटी ।।
विराजित मनोहर खेम । नंद नंदनी विघत बाहन जो हेम ।।३२७०।।

बहुत भूप की सेना वर्णी । नामावली न जाये गिणी ।।
पचीस लाख हाथी की डोर । सुग्रीव साथ उभा नृप और ।।३२७१।।

भावमंडल फिरावें छत्र । अग्रे लक्षमण महा विचित्र ।।
बाजा बाजैं होवै सोर । अंगद अगाऊ हुवो तिण ठोर ।।३२७२।।

रावण के हस्त प्रहस्त योद्धाओं की हार

दोउ सेन्या सनमुख भई आय । हस्त प्रहस्त लडैं दोउ राव ।।
उत नल नील लडै शस्त्र बांधि । बदन जुध भयो बहु भांति ।।३२७३।।

हस्त प्रहस्त कै लाग्या घाव । भूमै ऊभा सेनापति राव ।।
नल नील दोऊ जीत्या वीर । रामप्रताप अति साहस धीर ।।३२७४।।

श्री रघुवंस प्रताप, इनका बल सबतै घणां ।।
रावण मन संताप, हस्त प्रहस्त दोन्युं मरचा ।।३२७५।।

इति श्री पद्मपुराणे हस्त प्रहस्त बध विधानकं

५३ वां विधानक

चौपई

हस्त प्रहस्त कथा

श्रेणिक नृप पूछै कर जोडि । हस्त प्रहस्त की कथा बहोडि ।।
राक्षस बंसी के सेनापती । उनैं हणे बहुते भूपती ।।३२७६।।

इन सनमुख कोई जीत न सकै । नल नील आगे किम भकै ।।
नल नील नें मारचा ततक्षणे । इह अचिरज कछु कहत न बणे ।।३२७७।।

इनका भेद ब्योरा सुं कहो । इह संसय मो मन का गहो ।।
श्री जिन की बाणी तब हुई । बारह सभा सुणै सब कोइ ।।३२७८।।

श्री गौतम समझावैं भेद । सब संसय का हो विच्छेद ।।
कंस सुमत सोमर का नाम । इद्र कपिल बाभण तिण ठांम ।।३२७९।।

करण खेती करम किसाण । ते नित करै दया सुं दाण ।।
नित उठि दान सुपात्रै देइ । पूजा रचना सदा करेइ । ३२८०।।

रागद्वेष इन के मन नहीं । सोक पडचा उपजाग्या कही ।।
निस्वा कुटुंब नथासिक दार । इन्द्र कपिल द्विज लेहु हकार ।।३२८१।।

मार्ग दामनि उपज्या खेत । मारै किसाण द्रव्य के हेत ।।
भोग भूमिहर खेत्रै जाइ । दोन्युं विप्र देवगति पाइ ।।३२८२।।

दोय पल्य की भुगती आव । उहां तै लही स्वर्गगति ठांव ।।
निस्वा कुटुंबन बन कै मांझ । दोनुं चले पड गई साझ ।।३२८३।।

दोय पल्य की भुगती आव । उहां तै लही स्वर्गगति ठांव ।।
निस्वा कुटुंबन वन कै माझ । दोनु चले पड गई साझ ।।३२८३।।

सीतकाल सुं दुखित भए । मरकरि सातमी नरकै गये ।।
भरमे लख चौरासी जौनि । ते दुख वर्ण सकै कवि कौन ।।३२८४।।

दोऊ विप्र घर सुत भए । जनमत मात पिता मर गये ।।
दुख में दोउं सयाणां भए । सन्यासी पै दिख्या लये ।।३२८५।।

पंचाग्नि साधैं तप करै । कबहु जोग खडा ही धरैं ।।
दोऊं हाथ उन ऊंचा किये । नख बढाइ मृगछाला लिये ।।३२८६।।

बढी जटा उरग्यांन मिथ्यात । भये देव दोऊ वे भ्रात ।।
दक्षिण उर विजयार्द्ध मेर । अरंजय नगर बहु फेर ।।३२८७।।

वहन कुमार अस्वनी अस्तरी । वे दोउं देवां स्थिति धरी ।।
कंपिला सकार दूजा असो करा । अस्वनी राणी गर्भ अवतरा ।।३२८८।।

रथनूपुर इन्द्र के पास । करता सेवा अधिक उल्हास ।।
इन्द्र कपिल द्विज नृप के संग । दुरजन दल को करता भंग ।।३२८९।।

इनके सनमुख कोई न थपै । ए प्रधान रावण के तपै ।।
इन्द्र कपिल वे स्वर्ग मे गये । वहां से चयकरि सूर्यभट भए ।।३२९०।।

सुख माही कीने बहु भोग । भये दिगम्बर साधो जोग ।।
बाईस सहैं परीसह गात । दया लाख चउरासीं जात ।।३२९१।।

तेरह विध चारित्र पालैं । काया तजि सुर भया विसाल ।।
उहा तैं चव किंधदपुर आइ । सूरजरज के नल नील कहाइ ।।३२९२।।

पूरब भव के ए सनमध । तातै लिया वैर प्रतिबंध ।।
ग्यांनी वयर करै नहीं कोइ । रुद्र परिणाम खोटी गति होय ।।३२९३।।

रण अन बैर टलैं नही काहू । जनम जनम बहुतै दुख सहूं ।।
जे राखै दया सुभ भाव । उनका तीन लोक में नाम ।।३२९४।।

सर्वसेती उत्तम क्षमा करै । खोटे बंधन जिय मे धरैं ।।
जित जावै तित आदर होइ । उसकी कीर्त्ति करै सब कोइ ।।३२९५।।

सोरठा

पूरब भव, प्रतिबंध, भुगत्या बिन कैसें टलै ।।
इही कर्म सनबध, या माही एको तिल न सरैं ।।३२९६।।

इति श्री पद्मपुराणे हस्त प्रहस्त नल नील पूर्व भव वर्णनंम विधानकं

५४ वां विधानक

चौपई

दूसरे दिन का युद्ध

रावण सुणि सेनापति बात । उठ्या क्रोध सुभटां कै गात ।।
दोउं धां सेन्यां उठी परभात । करि सनांन सुमरे जिण गात ।।३२९७।।

आंभूषण पहरे निज अंग । सस्त्र बांधि चाल्या नृप संग ।।
रण की ठाम खडा दोउ आय । मारीच के सनमुख भये जाय ।।३२९८।।

घोडा से घोडा तब लडै । मंगल सौं मंगल अति भिडै ।।
रथ को रथ पर दिया हिया पेल। अैसे भिडै ज्यौं खेलत द्वं मल्ल ।।३२९९।।

दोउ धा वरखै विद्या बाण । गोला गोली करै घमसान ।।
मारै खडग टूक द्वं होइ । पीछा पाव न हटिहै कोई ।।३३००।।

मारै गदा वज्र के समान । सेतपराजा भूझै बलवान ।।
सिंह जटी क्रोध करि लडै । बहुत लोग दोऊ धा कटै ।।३३०१।।

प्रथक राय भूझ कै पडा । उदै मद ससत्र जघन दल जुडा ।।
भई मार इततै टलै न सूर । क्रोध करि भट लडै बल पूर ।।३३०२।।

सकनदन पाप जुध करै । पापनदन भूझि करि पडै ।।
रामचंद्र के भूझे लोग । रवि आ लोप्या करि के सोग ।।३३०३।।

भई रयण मिटियो सग्राम । सघला ही पायो विश्राम ।।

तीसरे दिन का युद्ध

भयो दिवस उग्यो जग भान । दुहुधा जुटचा सूरमा आन ।।३३०४।।

बर्षा बाण पडे चहु ओर । जैसे पडै मेह की डोर ।।
जुडा भूप छोडे जुरवान । विसोलदूत के हरे परांन ।।३३०५।।

वानर बंसी अति भयभीत । राक्षस बसी की भई जीत ।।
सुग्रीव आयो गज पलाण । अर्ज करै आइ हनूमांन ।।३३०६।।

तुम अब ही बैठो इण ठाम । राक्षस वंस ऊपरि दोडूं मैं जाम ।।
हनूमान धाया केहरी । राक्षस वसी की सुध बीसरी ।।३३०७।।

भाजै जिम मगल मदमयवत । सुणे सबद केहरि गरजंत ।।
तब कोप्या रावण बलवांन । अवर घणे विनती करैं आंन ।।३३०८।।

तुम आगे सारैं हम कांम । हमारा देखो तुम सग्राम ।।
धाए तिहा भूपती घणे । पडी मार दुरजन बहु हणे ।।३३०९।।

हनूमान तबैं गदा संभारि । घणा भूपति मारे डारि ।।
रावण की सेना चली भाग । तबै उसके हिरदै दोइ लाग ।।३३१०।।

कुंभकरण अनै सबुकुमार । चन्द्रक सार्दूल दल भार ।।
जंबुमाली तन उदरी सुत वाल । महोदर तीन पुत्र सुविसाल ।।३३११।।

धाय पडे सब एकै बार । जंबूमाली कान्ह बांन सौं मार ॥
तब भुर्भे रावण का पूत । कुंभकरण कोपिया बहुत ॥३३१२॥

मूर्छा बाण कुंभकर्ण छोडिया । सोइ गया सहु काया मरण ॥
देखै तबै तिहां नल नील । धाय पड्या ज्यों उतरहै चील ॥३३१३॥

मारैं गदा तीर तरवार । भाज्या कुंभकरण तिण बार ॥
जीते रामचंद्र के बली । नल अरु नील सहु सेना दली ॥३३१४॥

रावण चढि दौडियो नरेन्द्र । इंद्रजीत बोलै बल वृन्द ॥
हमकूं आगन्या कीजे तात । देखो जुध करूं किहं भांति ॥३३१५॥

मनबांछित हू कारज करूं । दुरजन दल जम मंदिर धरूं ॥
त्रैलोकसार हस्ती सुपलांन । इन्द्रजीत दोडे बलवान ॥३३१६॥

मेघनाद जबूमाली चले । अस्त्रशस्त्र बहु कर लिये भले ॥
कुंभकरण अवर हनुमंत । सुग्रीव इन्द्रजीत सामंत ॥३३१७॥

मेघवाहन भामडल लडै । बज्रकरण विराधीत दोउ भिडै ॥
ज्यौं घनहर वरषै घनघोर । छुटै सर गोली चिहूं ओर ॥३३१८॥

बरछी गदा चक्रों की मार । बाजै लोह उडै अंगार ॥
गज सेती गज टक्कर लेह । घोडा सो घोडा अरभेह ॥३३१९॥

पयदल रथ तिहां भूर्भे घणे । मनमें हरष धरि जोधा वणे ॥
इन्द्रजीत राय सुग्रीव कह भाइ । हमारा देस परगना खाइ ३३२०॥

हमारा डर तै धरा न चित्त । समभै नही आपणा चित्त ॥
देखि तोहि लगाउं हाथ । दूरि करौं देही तैं मांथ ॥३३२१॥

सुग्रीव छोडे विद्या बांण । राक्षस दल कीया घलहांण ॥
इन्द्रजीत छोड्या मेघबांण । वरषै मेघ भुल्या अवसांण ॥३३२२॥

पडै बीजली परलय करै । पवन बांन सुग्रीव संभरै ॥
उडै पटल राक्षस दल उडै । रावण सुत क्रोध मन वढै ॥३३२३॥

अंधकार बांण कूं छोडि । भया अंधेरा सुग्रीव की वोड ॥
नागपासनी विद्या संभार । लपटे सर्प मुरछा तिह बार ३३२४॥

सुग्रीव कौं नागपास सौं बांधि । मेघनाद एही विध सांधि ॥
भामंडल कुं इंण ही भांति । करै मूरछा सांस न गात ३३२५॥

कुंभकरण पकडे हणवंत । दोनूं भुजा भरि चाबै दंत ॥
अंद फंद भल्यो हणुमांन । वा समयै ना छुटे प्रान ॥३३२६॥

विभीषण का राम को परामर्श

भभीषण राम लक्षमण सों कहै । तुमारे दल मे सुभट न रहे ॥
तुम यातै रहियो सावधान । सुग्रीव भामंडल कै लाग्या बान ॥३३२७॥

उनकी ल्याऊं लोथ उठाय । जो कोई बणि आय उपाय ॥
अंगद सोच करै मन माहि । सुग्रीव भामंडल रहै इहाहि ॥३३२८॥

कुंभकरण सो हुवा जुध । बाकी मारग वाही सुध ॥
हनुमान छूटि करि गया । बहु उपाय अंगद नै किया ॥३३२९॥

भभीषण आयो लोथ कुं लेन । इन्द्रजीत मेघनाद कहै बैन ॥
हम तो जीते हैं सब लोग । हमारी सरभर कूं कोनै जोग ॥३३३०॥

काका आए करवा जुध । या सनमुख किम लरिये युध ॥
पुरुषां परि किम करिए घाव । अब इहां चलै नही कहूं दाव ॥३३३१॥

समझि ग्यान भाग्या तिण घरी । सुग्रीव लोथ इनकी देखै पडी ॥
भभीषण देखै इन ही को आइ । पडे मूर्छा मृतक की नाइ ॥३३३२॥

लक्षमण रामचंद्र सूं कहै । नल कोप्रकु विद्याधर गहै ॥
उनसो जीत सकै नही कोइ । रावण सूं किण परि जुध होइ ॥३३३३॥

रामचंद्र बोले सुण वीर । अपणा मन तुम राखो धीर ॥
रावण कु मारैगे ठाव । समर माहि राखो तुम भाव ॥३३३४॥

देशभूषण कुलभूषण केवली । चितागति देव कही थी भली ॥
जब तोकुं हुवैगा काम । तुम चितारो आउंगा उस ही ठाम ॥३३३५॥

देवों द्वारा राम को विद्या प्रदान करना

रामचन्द्र पै आए देव । नमस्कार करि कीनी सेव ॥
रामचन्द्र भाष्यो विरतांत । सुर विद्या दीनी बहुभाति ॥३३३६॥

विद्या सिध करि कारज किया । दोय रथ विद्या सिध का दिया ॥
छत्र चमर मोतियन का हार । चितवत सेन्या होइ अपार ॥३३३७॥

मनबंछित कारज सब होइ । दुरजन जीत सकै नहि कोइ ॥
विद्या लई सकल सुख मूल । मन की चिंता गई तब भूल ॥३३३८॥

दूहा

जैन धरम सब तै बडा, निसचल राखै चित्त ॥
संकट विकट उद्यान मे, आइ मिलै बहु मित्त ॥३३३९॥

इति श्री पद्मपुराणे विद्यासहाय विधानकं

५५ वां विधानक

चौपई

राम रावण द्वारा युद्ध की तैयारी

रामचन्द्र लक्ष्मण इह चित्त । पहरया देव वस्त्र पवित्र ।।
चंद्रहास बांधा तरवार । आयुध सगले लिये संभार ।।३३४०।।

वज्रावर्त्त समंदरावर्त्त । लिये धनुष रणजीत के करत ।।
सिंघरथ ऊपर चढे रामचन्द्र । गरूड वाहन लक्ष्मण वृंद ।।३३४१।।
सेन्यां चाल्' साथ जो लई । रवि की किरण उभिल भई ।।
कापे तरवर कांपी मही । कपे गिरिवर जलहर सही ।।३३४२।।

रामचन्द्र कोप्या भगवान । कौण कौण का जासैं परान ।।
रामचन्द्र सुमरिया जिणंद । दोनूं सोहै जिम सूरज चंद ।।३३४३।।

आकाश गामिनी विद्या संभार । रथ सुं फरस चली तिणबार ।।
बहै पवन लागै तन व्याल । उतरयो विष चेत्या भूपाल ।।३३४४।।

नाग फांस के टूटे बंध । भया उजाला भाज्यौ अंध ।।
जेते पडे थे मूर्छावंत । बोल उठे नाम भगवत ।।३३४५।।

राम लक्ष्मण का दर्शन पाय । मन आश्चर्य भये सब राय ।।
राम लक्ष्मण थे भूमिगोचरी । किण विध इनने विद्या फुरी ।।३३४६।।

विद्या द्वारा मूर्छितों की मूर्छा दूर करना

आकाश गामिणी इन ही ने किया । जीव दान सब ही कूं दिया ।।
उठे सकल लोग भुवि पडे । विद्या लाभ सुंणि रह जे घणे ।।३३४७।।
सुग्रीव भामंडल पूछैं सहुबात । चिंतागति सौं सनबध किण भांत ।।
रामचंद्र लक्ष्मण समझाय । देसभूषण कुलभूषण मुनिराय ।।३३४८।।

बंसलगिरि उपरि धरया आतमध्यान । उनकू उपसर्ग भयो तिण थान ।।
हम उनका उपसर्ग निवार । केवलग्यान उपज्या तिण बार ।।३३४९।।

आये सुरपति पूजा करी । चिंतागति मित्र भयो तिण घरी ।।
दोन्युं मुनि का था इह तात । तपकरि भया देव की जात ३३५०।।
या सम अवर नहीं सुर कोइ । इन्द्र समान चिंतागति होय ।।
इन म्हारी स्तुति करी घणी । ग्रैसी बात वासव भणी ।।३३५१।।
हूं सेवग थारो रघुपति । जब चितवो तब आवुं तित ।।
तब तुम मूर्छावंत होय पडे । चिंतागति ने चित मध्ये धरे ।।३३५२।।

आये देव तिण विद्या दई । ग्योरो सुणि चिंता मिट गई ।।
सुभ अरु असुभ करम का जोग । सुभ कै उदै करै बहु भोग ।।३३५३।।

असुभ करम तै पावै दुख । दोनूं सरभर दें दुख सुख ।।
धर्म चितवता टूटैं पाप । पुण्यवंत का टलै सताप ।।३३५४।।

संकट विकट मे धरम सहाय । सुरपति नरपति सेवै पाय ।।
धरम समान सगो नहीं कोइ । धरम हि तै बहु विध सुख होइ ।।३३५५।।

दूहा

धरम दान सबतै वडा, यातै भलो न और ।।
ससारी सुख मुक्त करि, फिर पावै सुर ठौर ।।३३५६।।

इति श्री पद्मपुराणे सुग्रीव भामडल समाधान विधानक
५६ वां विधानक

चौपई

दोनों ओर के योद्धाओं द्वारा युद्ध

इह प्रकार नृप रावण सुण्या । आए आप राम लक्ष्मणा ।।
लकापति हस्ती सुपलाण । चली सेन्या बाजे नीसाण ।।३३५७।।

उत मारीच इत है सुग्रीव । बज्रमुख सारन जुध की नींव ।।
मिरत अबर जुटे सुक्रोध । मेघनाद विराधित ए जोध ।।३३५८।।

मेदयत अगद दोउ लडैं । कुंभकर्ण हणुमान सूं भिडैं ।।
भभीषण देख्या रावण दृष्टि । क्रोध भई बोल्या अभिष्ट ३३५९।।
रे कपूत मूरख अग्यान । भूमगोचरी का सेवग भया आन ।।
तो कूं अवही मारूं ठोर । भ्राता जाणि दिया है छोडि ।।३३६०।।

विभीषण रावण युद्ध

भभीषण कहै सुण रे पापिष्ठ । तै तो करी पाप की दृष्टि ।।
सतवती सीता कुं हरी । पाप पुन्य का भेद न धरी ।।३३६१।।
तेरी भई आयु बल षीण । तातै बुधि है भई मलीन ।।
जे तू जीया चाहैं भ्रात । रघु नें मिलाउ मा हरै सघात ।।३३६२।।
सीता देकर लागो पाई । तेरा प्रान मैं देउं छुडाइ ।।
इतनो सुणित रावण कोपिया । क्रोधवंत तब वै भया ।।३३६३।।
जैसा सुं तैसा वे जुटैं । पाछैं पांव न कोई हटैं ।।
सनमुख भए भूपती घणे । उनके नांउ कहा लगि गिणे ।।३३६४।।

धनुष खैंचि करि मारे बाण । भभीषण कैं कंठ लाग्यां बाण ।।
टूटया धनुष भभीषण बच्या । बहु जुध दोउंवां मच्या ।।३३६५।।
बिजुली सम चिमकैं षडग । बाई रहां तिहां समला सरग ।।
तिहा होवैं तीर तुपक की मार । बजधार सुं करै संघार ।।३३६६।।
मारै खड्ग मुंड गिर पडै । तोउ न सुभट धरती पर पडै ।।
रुंड मुंड ह्वं लडै सासत । झूझैं बली महा बलवंत ।।३३६७।।
स्रोणित की वैतरणी बही । पडी लोथ कहां रही नहीं मही ।।
हाथी घोडे झूझे घणे । परवत सम ढेर तिहां बणे ।।३३६८।।
पग धरबे कूं रहीयन ठौर । दोउ धां मांची बहु झोडि ।।
राम कुंभकरण सुं जुध । लक्षमण नैं इन्द्रजीत सूं बिरुध ।।३३६९।।
दूहुधां बांण पडै ज्यों मेह । भालिन फूटै इनूं की देह ।।
लक्षमण इन्द्रजीत ढिग प्राय । झपडि रथ सौं पटके जाइ ।।३३७०।।
रावण की सेना भाजि कै चली । इन्द्रजीत संभाल्या बली ।।
रथपरि चढया बहुरि सभारि । सेन्यां सकल लई हूंकार ।।३३७१।।
धुवा बाण छोडया इन्द्रजीत । लक्ष्मण सूर्यबाण मन चित ।।
छोडे बाण उजाला भया । अंधकार सगला मिट गया ।।३३७२।।
नागपासनी छोडी विद्या । गरुड बाण तें होई भिद्या ।।
वह विद्या लक्षमण ने गही । छोडी इन्द्रजीत सामही ।।३३७३।।
रावण का सुत मुर्छावंत । नाफ फास सुं बांधि तुरन्त ।।
कुंभकर्ण रामचद्र सुं लडैं । रथ समेत वह ऊंधा पडैं ।।३३७४।।
रामचद्र फिर रथ परि चढे । वा समए क्रोध प्रति बढे ।।
नाग फासि बांध्या कुंभकर्ण । मूर्छावंत प्राण का हर्ण ।।३३७५।।
लागे सर्प उनूं की देह काटैं तिह का प्राण हर लेह ।।
खैंचैं देह दुख व्यापै घणा । ग्रैसा कष्ट उनौं कौं बणां ।।३३७६।।
भामंडल इन्द्रजीत ढिग आण । रथपरि डाल लिये बलवान ।।
बिराधित कुंभकर्ण लिये उठाय । रथ परि ततक्षण लिया चढाय ।।३३७७।।

लक्ष्मण रावण युद्ध

बोले रावण सुणि लक्षमण । तेरा भी आया है मरणां ।।
लक्षमण बोलै रावण सुणौं । तो कुं अब पलही में हणौं ।।३३७८।।
दारुण जुध दोउवां होय । हारि न मानैं द्वैं में कोय ।।
अमक्ति बाण रावण ने तारिया । लक्षमण कैं उर लाग्या आण ।।३३७९।।

गिरचा भूमि सांस तब थक्या । रामचंद्र रावरण सों जुटैं ॥
बज्रावर्त्त क बाण जू छुटैं । रामचंद्र रावण सो जुटैं ॥
घणी वेर लग कीया जुध । रावण नै मारि किये बेसुध ॥३३८०॥
गज के रथ सू दीया डारि । सिंघो के रथ चढे संभारि ॥
उहाँ तैं फिरि रावण दिए डारि । मारि गदा तिहां तिह बार ॥३३८१॥
कोई न घाव रावण कै फुहा । रामचद्र तब ग्रैसा कहा ॥
अरे रावरण तेरी उमर है घणी । तू छूटा है अबकी अणी ॥३३८२॥
लका जाइ आश्रम गहो । तो परि वयर लक्षण को रहो ॥
तेरे टूक टूक जब करू । तोकू ले जम मंदिर धरू ॥३३८३॥
रावण सब सेन्यां ले साथ । लका पहुंच्या हरषित गात ॥
मैं लक्षमणां मारया है सही । मोकू कुछ चिंता है नहीं ॥३३८४॥
जे रामचंद्र मुझसौं फिर लडै । बातैं कछु कारिज ना सदैं ॥
भ्रात पुत्र की चिन्ता चित्त । देखो यह ससार अनित्त ॥३३८५॥
दुख सुख जीव तणैं संगि लग्या । ग्रैसा ग्यांन उणसमैं जग्या ॥
करै सोच ग्यांन धरि चित । होणी टरै न ग्रैसी स्थिति ॥३३८६॥

अडिल्ल

लक्षमण पडया अचेत राम व्याकुल घणां ॥
रावण भए नचिंत क्योंकि दुरजन हणां ॥
ग्रैसा अवर न कोई तां हाथ रावण मरै ।
देखो कर्म प्रभाव कहा ते कहा करै । ३३८७॥

इति श्री पद्मपुराणे संग्राम विधानकं

५७ वां विधानक

चौपई

राम विलाप

रामचंद्र लक्षमण कैंपास । देख्या मृतक कहुं न सांस ॥
रघुपति देखरि खाइ पछाड । रोवैं पीटैं बारबार ॥३३८८॥
हाय भाइ हम कैसी बणी । मंत्री बात कहैं थे घणी ॥
जब हम छोडि अजोध्या चले । सब परिवार कहैं मिले ॥३३८९॥
लक्ष्मण कूं नीकै राखियो । मनोहार वांणी भाखियो ॥
किस भांति नैं चलायो चित्त । लक्ष्मण कीज्यो भक्त हित्त ॥३३९०॥

मो कारण लक्षमण जीव दिया । अवर मोहुरी बिछडी त्रिया ।।
किम दिखाउं मुख आपणां । मोहि अपलोक चढ्या है घणां ।।३३९१।।

मैं देख्या भाई का मरण । अवर भया सीता का हरण ।।
काठ सकेल अगनि मैं जरूं । लक्ष्मण का कैसे दुख भरूं ।।३३९२।।

सहु राजन सूं रघुपति कहै । तुम हम संग बहुत दुख सहैं ।।
मेरा बहुत किया उपगार । पर उपगारी हो भूपाल ।।३३९३।।

बोलै भूपति इण परि बात । जीवैगा लक्ष्मण तुम भ्रात ।।
इसका हम करि हैं उपचार । चउकस राखो चोकीदार ।।३३९४।।

दुरजन कोई सकै नही आइ । कोई उपाधि न करि है यहां आय ।।
दिसौं दिसा रखवाला रहो । उला पैला का आहट लहो ।।३३९५।।

सब जागियो नरपति चिहु ओर । चौकीदार मिलो कर सोर ।।
तिण थानक कोई पैठ न सकै । सहु जागियो इम जाण न सकै ।।३३९६।।

इति श्री पद्मपुराणे सकती भेद, राम विलाप विधानक

५८ वां विधानक

चौपई

मन्दोदरी और सीता का विलाप

रावण मन मे चिंता करै । कुंभकर्ण इन्द्रजीत दोउ मरे ।।
रोवै राणी मंदोदरी । सुवरण वास तणी असतरी ।।३३९७।।

कैसे जीवा अइसे दुःख । अब सहु बाद उनू विण सुख ।।
अंसा दुष रावण के मना । सीता सुण्यो मुवो लक्ष्मणा ।।३३९८।।

रोवै लुंचै सिर के केस । राखै सदा राम सुं सनेह ।।
हम मरती तो टलतो पाप । मेरे कारण हुवो विलाप ।।३३९९।।

सीता तबै समभावै बैन । अपना चित राखो तुम चैन ।।
लक्षमण का होवैगा जतन । अैसा दुख निवारै यतन ।।३४००।।

सीता समभि रही मुरभाय । अब सेनां मैं करै उपाइ ।।

भामंडल और चन्द्रप्रति का आगमन

भामडल जागियो नरेस । चंद्रप्रति नैं कियो प्रवेस ।।३४०१।।

पूछै भामडल तू कूंण । किंह कारण तैं कीयो गौण ।।
बोलै परदेसी दरसन निमित्त । मैं तो ध्यान धरया है चित्त ।।३४०२।।

भामंडल को है भूपति । लक्षमण कै बाण लाग्या सकति ।।
रामचंद्र बैठा उन पास । रघुपति तिण थीं बहुत उदास ।।३४०३।।

चंद्रप्रति तब विनती करै । मैं हूं वैद्य कारज तुम सरै ।।
भामंडल इतनी सुणि बात । वाकौं ले चाल्यो सघात ।।३४०४।।
खंडा माहिं रोकै नही कोइ । इनका मनबांछित जो होइ ।।
रघुपति कौं उन करि डडोत । नमस्कार फिर किया बहुत ।।३४०५।।
रामचंद्र पूछै तिण बार । इहै है कौण तुम लार ।।
कहैं ए वैद्य गुणवंत । लक्षमण जतन करे बहुमत ।।३४०६।।
परदेसी कूं पूछै राम । तू कितते आये इण ठाम ।।

वैद्य की जीवन कहानी

कहै विदेसी अपनू भेद । विजयारध तहा विद्या भेस ।।३४०७।।
गीतपुर नगर समेइल राइ । सुप्रभा राणी रूप की काय ।
ताकै पुत्र चन्द्रप्रति भया । बल पौरिष सो सोभै नया ।।३३०८।।
वेलंधर का सहस्रबीर्य पुत्र । चंद्रबाण मोरिया तुरत ।।
मैं पड्या जाय अजोध्या माहि । तिहा भर्थ भूप आए साझ ।।३४०९।।
मोकूं देखि दया उन करी । गधोदिक छडक्या उण घडी ।।
उतरचा दोष मोकू भया चेत । उना धरम सु कीनुं हेत ।।३४१०।।
मैं उठि भरत सूं विनती करी । इस विद्या हैगी गुण भरी ।।
इसका मोहि सुणावो भेद । भरत भूप भाख्यो सब भेद ।।३४११।।
महिन्द्र उदै रावण मेघ भूप । गुणमाला राणी बहु रूप ।।
वाकै गर्भ विसल्या भई । रूप लक्षण सोमै गुण मई ।।३४१२।।

विशल्या की कथा

जब वह कन्या करै सनान । वह जल पहुचै रोगी थान ।।
तिनका रोग तबही मिट जाइ । सकति बाण का दोष विलाइ ।।३४१३।।
अजोध्या मांहि रोगी थे घणे । वाही जल तें नीके बणे ।।
तब तैं प्रगट भया वह नीर । गई सकल रोगी की पीर ।।३४१४।।
पूछै भरथ विसल्या परजाइ । वाका भव भाषो समझाय ।।
कवण पुन्य तै पाई सिध । जिसके चरणोदक इह विध ।।३४१५।।
सकल रोग कू परिहा करै । अैसे गुण चरणोदक धरै ।।
बोले मुनिवर ग्यांन विचार । क्षेत्र विदेह स्वर्ग अनुहारि ।।३४१६।।
पुंडरीकनी सीमधर जिनंद । चक्रवत्ति त्रिभुवन आनंद ।।
चक्रधरा वाकै पटधनी । रूपलक्षण गुण सोमै खरी ।।३४१७।।

अनंगसेना ताकै पुत्तरी । दानादिक गुण में लावण्य भरी ॥
जोवन समैं पुनर्वस को दई । दोन्यां मां प्रीत अति भई ॥३४१८॥

एक दिवस अनंग कुसमा नारि । सोवत देखी दुरधरि तिह बार ॥
विजयार्द्ध का विद्याधर धीर । देखी त्रिया आया तिह तीर ॥३४१९॥

गही बांह विमाण बैठाइ । ले कै विजयार्द्ध कूं ले जाइ ॥
मंदिर मांहि भई पुकार । त्रिभुवन नंद सुणी तिहं बार ॥३४२०॥

भेजे सुभट सुता की खोज । सब परियण मां मांची रोर ॥
विद्याधर देख्या गमन आयास । अनंग सेना बैठी ता पास ॥३४२१॥

वह षेचर एह भूमिगोचरी । सकल लोग बोल्या तिण घडी ॥
रे रांक सुण हो दुर धीर । हमसूं जुध करै तो वीर ॥३४२२॥

पडी मार तीर तरवार । टूटया रथ भाज्यो तिण बार ॥
वह कन्या रथतै गिर पडी । पंचनाम सुमरण आखडी ॥३४२३॥

महा उद्यान भयानक ठोर । करै विलाप रुदन अतिघोर ॥
मात पिता का सुमरै नाम । मनुष न दीसै है तिण ठाम ॥३४२४॥

हाय कर्म तैं असी करी । भूख प्यास सो सुध वीसरी ॥
वहै विरया कुण होइ सहाय । वहै विरया कछु न बसाय ॥३४२५॥

दूहा

चक्रवत्ति की थी सुता, करती भोग विलास ॥
अशुभ कर्म के उदय सं, पडी आय वन वास ॥३४२६॥

चौपई

वनवास के दुःख

तिहा स्यघ चीता बहु व्याल । भयदायक रटै बहु स्याल ॥
वन के भयदायक तिरजच । पडै सीत वस्तर नही रच ॥३४२७॥

असा दुख सो बीतै काल । बन फल खाइ सुता भूपाल ॥
उनालै तपै सब मही । सीतल ठौर न पावै कहीं ॥३४२८॥

दुख मे वीतैं आठु जाम । तिनहीं नही कभी विश्राम ॥
बरषा आगम बरषै मेह । सहे परीसा कोमल देह ॥३४२९॥

पवन चलैं बरषा झकझोर । चमकै दामिन आइ घटा घनघोर ॥
छोडि आस संसारी भोग । मन वच काय लगाया जोग ॥३४३०॥

दोय हजार वर्ष तप किया । अन्न पाणी तजि संयम लिया ॥
भव्य तीन सु विद्याधर आइ । नमसकार करि लाग्या पाइ ॥३४३१॥

धन्य साध अैसा तप करै । छह रुति का दुख मन नही धरै ।।
चिदानन्द सो ल्याया ध्यान । दया करै सब ऊपर जान ।।३४३२।।

वन मे ए तप इण विध किया । जीव दया सयम व्रत लिया ।।
लबधदास कहैं तुम चलो । त्रिभुवन आनद पिता सुं मिलो ।।३४३३।।

अनग सेना मन मे समझाइ । मैं संन्यास करया इण ठाय ।।
छोडे सब संसारी मोह । लबध दास समझाऊ तोह ।।३४३४।।

तब उठि गया भूपति सो कही । अनगसरा देही सब दही ।।
उरा वन मे लीयो सन्यास । छोडि दिये सब भोग विलास ।।३४३५।।

त्रिभुवन नंदन देखरा निमित्त । आया वन मे देखी बहुभंत ।।
अजगर भया दुरधी का जीव । उन बहु धरी पाप की नीव ।।३४३६।।

डसी अनगसरा तिह घडी । देही छोडि स्वर्ग सचरी ।।
भुगति आव द्रोवनमेघ गेह । गुरासाला गर्भ विसल्या एह ।।३४३७।।

इरा प्रकार की पाई रिध । चररा उदिक होवै सब सिध ।।
त्रिभुवन नद इह काररा देखि । उपज्यो ससार वैराग परेष ।।३४३८।।

जार्यौ इह ससार सरूप । भ्रम्यो जीव धरि नाना रूप ।।
देही आदि सगो नही कोय । सपति तराा बिछोहा होइ ।।३४३९।।

चारूं गति भरम्युं चिदानद । सुभ अनै असुभ तरो दोइ फद ।।
कबहु रंक कबहु भुवनेस । जैसी करनी तैसा भेस ।।३४४०।।

मन वच काय लगाया ध्यान । काठि कर्म पहूंच्या निरबारा ।।
वाईस सहस पुत्र समेत । ल्याया चिदानंद सो हेत ।।३४४१।।

दुरिम मुनिवर के पास । दिष्या लई सुगति की आस ।।
तेरह बिध चारित्र व्रत लिया । बिधसु पच महाव्रत किया ।।३४४२।।

तीन रतन वरष्या दस दोइ । बाईस परीसह उन अंग होइ ।।
उसन काल गिर ऊपर तपैं । वरषा समैं रुख तलि छिपैं ।।३४४३।।

सियालै सरिता तट ध्यान । उपज्या उनकूं केवलग्यान ।।
गए मुकति तिहा सिध अनत । ज्योत ही ज्योत भई एकत ।।३४४४।।

पुनवसु कै त्रिया का सोग । भए दिगंबर छांडया भोग ।।
पच महाव्रत पाचु सुमति । मन बच काया तीनूं गुपति ।।३४४५।।

बाईस परीसा सहै अ ग । द्वादश अनुप्रेक्षा तह संग ।।
छह रुति के सुख दुख सहै सरीर । जारौं षटकाय प्राणी की पीर ।।३४४६।।

दसौं दिसा वाके आभरण । श्री जिन बिना कोई नहीं सर्ण ॥
तप करि देह जाजरी करी । अंत समय असी मन धरी ॥३४४७॥
जे मैं निर्मल भूपति भया । मो पै त्रिया दुरधी ले गया ॥
मेरे तप का एह फल व्हैज्यो । मो सम बली न दूजा मां कहज्यो ॥३४४८॥
अनगसरा सुं फिर समबध । हो जो असा किया बहु बंध ॥
देही छोडि लही अमर विमाण । पायो स्वर्ग तीसरे थान ॥३४४९॥
आव भुगति दसरथ के गेह । भए पुत्र लक्षमण की देह ॥
अजगर मरि भैसा गति भया । हस्तनापुर जनम जू लिया ३४५०॥
वर्धमान वरिणक तिहा रहै । विणज हैत देसातर बहै ॥
भैसा लादि अजोध्या गया । तहा महिष गल कुष्टी भया ॥३४५१॥
कीडा पडि सहैं दुख घरगे । पाप उदय तें ए फल वरगे ॥
कोई बालक मारै ढेल । खैंचै पूंछ करै वे खेल ॥३४५२॥
इस दुख नई भईसा मुवा । बजावर्त्त कुमार देवता हुआ ॥
रहै नरक मे तिहा नारकी । उनूं कुं दुख करै मार की ॥३४५३॥
समझि कुबोध विचारि चित्त । मइय्या महिष अजोध्या करि चित्त ॥
उन लोग मोकु दिया दुख । अब लेहुं वयर तो पाउं सुख ॥३४५४॥
उन छोडी कोई असी बयार । सर्व कुंभ या रोग तिण वार ॥
सगला दुखी थया पुरलोक । अजोध्या मैं प्रगटया था रोग ॥३४५५॥
द्रोवण मेघ की विशल्या पुत्तरी । उसके चरणोदिक पीडा टरी ॥
वह विशल्या लक्षमण की नारि । या तै होइ इनका उपगार ॥३४५६॥

दूहा

पूरब भव सब ही सुणे भाज्या सब संदेह ॥
जैसा कर्म कोई करै, तैसी गति पावेह ॥३४५७॥

इति श्री पद्मपुराणे विसल्या पूर्व भवांतर विधानकं

५९ वां विधानक

चौपई

हनुमान अंगद को अयोध्या भेजना

सुण्या रामचन्द्र पर जाइ । हणुमंत अंगद अजोध्या पठाइ ॥
भामंडल कूं दीया साथ । विरियांन लागी इणकौ जात ॥३४५८॥

भरत सोवैं था सज्या ठोर । ए पहुचे भूपति की पौर ।।
बीण बजावैं गावै तांन । रघुबंसी कुल का करैं बखांन ।।३४५९।।
भरथ भूप सांभली ए बात । तजि निद्रा बस्तर पहिरे गात ।।
द्वारै उभा देख्या तीन । महा सुघड बजावैं बीन ।।३४६०।।
तिनकुं पूछै भरत नरेस । तुम हो कवण कहो संदेस ।।
कवण काज आये तुम रयण । साचे मोहि सुणावो वयण ।।३४६१।।

भामंडल का उत्तर

भामंडल बोले समझाय । राम लक्ष्मण डंडक वन रहे जाय ।।
सुरजहास खडग तिहा लिया । खरदूषन संबुक जिहां दहा ।।३४६२।।
रावण सीता हर ले गया । वानर वंसी का मदद भया ।।
[1]हरि कै लाग्या सकती बांन । हरि के हर ले गए पराण ।।३४६३।।
देहु नीर सजीवन मूल । तो कछु होवै जीवन सूल ।।
इतनी सुणि कोप्या भरत । सत्रुघन सुणिर क्रोध करत ।।३४६४।।
ग्रैसा क्या रावण बलवान । सीता कु ले गया निज थान ।।
मारू रावण कू अब जाइ । वाही समय नीसान बजाय ।।३४६५।।
जागे सब नगरी के लोग । भरत कूं व्याप्या लक्ष्मण सोग ।।
सुणिवाजंत्र जान्या सबै । ग्रनिवीरज सुत आया तबै ।।३४६६।।
कै कोई दुरजन यहा आइ । आण चढै बाजित्र वजाय ।।
भए एकठे नरपति घणे । भरत सू कहै उपाव किये वणें ।।३४६७।।
जे तुम लंका पहुचो राइ । तो इह रयण बीत कै जाय ।।
लक्ष्मण का होवै काज । विसल्या भेजो इण साथै आज ।।३४६८।।
कैकई गई मेघद्रव के गेह । विसल्या सुण्या लक्ष्मण सुं नेह ।।
रोवै कन्या लग्या सुन वाण । या समैं हु पाऊं जाण ।।३४६९।।
तो लक्ष्मण अब जीवै सही । सूरज उदय कछु जतन नही ।।
सब मिल कियो यह बिचार । भामंडल संग विसल्या तिण बार ।।३४७०।।
यासुं पवन फरस कै लाग । उसही घडी लक्ष्मण उठि जाग ।।
असक्ति वाण भाज्या आकास । लक्ष्मण को भई जीने की आज ।।३४७१।।
पवनपुत्र पकड्यो वह बाण । बोली विद्या पूछै हनुमांन ।।
असक्ति बाण नैं छोडे प्राण । पुण्यवंत सो चली न सयान ।।३४७२।।

---

१. लक्ष्मण

लक्षमण पुण्यवंत अति बली । विसल्या नारि सर्वगुण मिली ।।
मैं विद्या अंसी असकत्ति । मोकूं जाणैं सबै जगत्त ।।३४७३।।

धरणेन्द्र ने ए विद्या दई । रावण कौं तिहां प्रापति भई ।।
बालि मुनीश्वर गिरि कैलास । वा समये असक्ति दिया तास ।।३४७४।।

मोकू कोई सकै न टारि । जो मिल जत्न करै संसार ।।
विशल्या पूरब भव तप करै । ऐसी रिध उस तपतैं फुरै ।।३४७५।।

आवत सुणी विसल्या नारि । अगले भव का लक्षमण भरतार ।।
मै भागी लक्षमण तजि देह । पुन्य बराबर अवर न एह ।।३४७६।।

विसल्या द्वारा मूर्छा दूर करना

विसल्या आइ लक्षमण के पास । केसर चन्दन लई सुवास ।।
रामचन्द्र कू किया नमस्कार । लक्षमण तणी करी बहु सार ।।३४७७।।

कन्यां सहस्र विसल्या साथ । सब मिल गावैं जस रघुनाथ ।।
ताल मृदग बजावै बीण । गावैं सकल नारि प्रवीण ।।३४७८।।

लक्षमण का होश में आना

लक्षमण तब उठे अंगराइ । मुख तैं सुमरे श्री जिनराइ ।।
बोले लक्षमण रावण कहां । मार मार सबद मुख तैं भण्या ।।३४७९।।

रामचन्द्र समझाई बात । असक्त बाण लग्या तुम गात ।।
विसल्या मेघद्रवण की धिया । असक्त बांण इने दूरि किया ।।३४८०।।

गाए अनंत बधाये घणे । मूर्छा तणे सब दूखण हणे ।।
चेत्या सब सेना के लोग । भूल्या तब परजा का सोग ।।३४८१।।

दूहा

वाईस परिसह उन सहे, चडी च्यार कषाय ।।
असुभ करम सब टारि करि, भया नरायन राय ।।३४८२।।

इति श्री पद्मपुराणे विसल्या आगमनं विधानकं

६० वां विधानक

चौपई

रावण को मंत्रियों द्वारा समझाना

रावण सुनि लक्षमण उपचार । किये सचेत विसल्या नार ।।
सकती बाण तैं हुवा असकति । पुन्यवंत कुं कछु न लगत ।।३४८३।।

बैठि सभा बहु मंत्री बुलाई । पूछैं माता लंका जाइ ॥
मृगांक मंत्री बीनती करै । कहुं सांच प्रभु हिरदै धरै ॥३४८४॥
स्यघा कै रथ श्री रामचन्द्र । ते जाणैं विद्या के बंद ॥
गरुड वाहन लछमण कुमार । विषल्या जाणैं विद्या सार ॥३४८५॥
जे तुम चाहो भुगत्यौं राज । राक्षस बंसी राखो लाज ॥
सीता ले मिलो राम के संग । जो न होवई राज का भग ॥३४८६॥
सदा रहै ज्यौं ऊन सौं प्रीत । छूटैं कुंभकर्ण इन्द्रजीत ॥

रावण का मन्तव्य

रावण कहै सुणू मतरी । भेज्यी दूत उनपै इन घरी ॥३४८७॥
रूपवत हुवै चतुर सुजाण । निरभय वचण सुणावै जाम ॥
छुडावो कुंभकर्ण इन्द्रजीत । हम उनसो करै मत्र की रीत ॥३४८८॥
मैं नही वा करै घमसान । चाल्या दूत सुघड सुजान ॥

रावण के दूत का राम के पास जाना

सुग उपदेस राम पै गया । सेन्या देखि विचार इह किया ॥३४८९॥
इनकै है सेन्यां अति तुछ । रावण कै है सब कुछ ॥
जाइ पौलि ठाडा भया दूत । रामचद्र सेन्या सजूत ॥३४९०॥
पहुच्या त्वरति बुलाई बसीठ । स्वामी काज को देइ न पीठ ॥
रामचद्र का दर्शन पाइ । नमस्कार करि ऊभा जाइ ॥३४९१॥
विनती करू सुण हो रघुनाथ । कुंभकर्ण इन्द्रजीत द्यो मो साथ ॥
रावण सुं राखो सनमंघ । इत उत तै चूकै इह घघ ॥३४९२॥
प्रजा बचै सब का दुख जाय । छोडा क्रोध धर्म के भाय ॥

राम का उत्तर

रामचद्र बोलै तिण बार । जो सीता भेजै हम द्वार ॥३४९३॥
भाई पुत्र उसका देउं छोडि । जब वह जीया चाहै बहोडि ॥

रावण के दूत का पुनः निवेदन

दूत कहै साभलि राजान । रावण सम कोई नही आंन ॥३४९४॥
उन जीत्या है तीनू षड । सब भूपन पै लिया हे दड ॥
जीत्या इन्द्र दशौं दिगपाल । राक्षस बंसी बली भूपाल ॥३४९५॥
जै तुम जीया चाहो राम । तो सीत का मति लेहु नाम ॥
छोडो कुंभकर्ण इन्द्रजीत । तो तुमसौं छूटै नही प्रीत ॥३४९६॥

हमारे कुल को लागै गाल । बोलै नही बचन संभाल ।।
सीता कुं दूजा कहै भरतार । लगै कलंक तिहुं लोक मझारि ।।३४९७।।
रामचंद्र जो ढील न करैं । रावण कूं हम परलय करैं ।।
लक्षमण भावमंडल सूं कहै । दूत कु कछु दोष न लहै ।।३४९८।।
रावण के बचन कहै इस ठौर । याकूं कछु न लागै खोडि ।।
सिंह कोप हस्ती परि करै । मुसक परि कछु काज न धरै ।।३४९९।।
इह बसीठ उदर सामान । ता परि कोपै स्यंघ क्या भ्रान ।।
इतनूं कहि मारै क्या पाप । जोग्या नीतै समझै आप ।।३५००।।
बलि वृद्ध विप्र तापसी । जोगी जती युद्र मानसी ।।
पशु आश्रित पंषी अस्तरी । इनै मारि भुगतैं गति बुरी ।।३५०१।।
दूत मारैं का लागै दोष । सकल ही जीव दया कौ पोष ।।
जिहा दया तीहां धरम । अदया जाणहु पाप का मर्म ।।३५०२।।
भावमडल का घट गया क्रोध । लक्षमण नै दीया प्रतिबोध ।।
सामंत दूत फिरि बोले वयन । समझो राम ज्युं पावो चैन ।।३५०३।।
तीन सहस्र विद्याधर सुता । व्याही सकल सुख की लता ।।
जो विद्या तुम चाहो राम । मानुं नगर भलेरा गांम ।।३५०४।।
पुहपक विमान छत्र सुखपाल । हाथी घोडे मोती लाल ।।
अर्द्ध राज लंका का लेहु । सीता का हट छांडि देहु ।।३५०५।।

राम का प्रत्युत्तर

तब श्री रामचंद्र इम कहैं । अरे मूढ तू बिवेक न लहै ।।
रावण कै कोई मत्री नाहि । भली बुधि समझावै ताहि ।।३५०६।।
नारी देकरि भुगतो राज । ते अपणां बिगाडै काज ।।
वातैं भलो जांणु अतीत । वन मे रहैं आतम सुं प्रीत ।।३५०७।।
फिरैं पयादा बन फल खाइ । वा सम सुखी अवर न कहवाइ ।।
श्री जिन जी सूं लगावै ध्यान । राखै सदा आतम ग्यांन ।।३५०८।।

दूहा

राज काज त्रीया तजै, भुगतै सब विध सुख ।।
धिग् जनम वा पुरुष को, कुलहै लगावै दोष ।।३५०९।।
धक्का दीया दूत को, दिया सभा तैं काढि ।।
वचन न बोलै समझ करि, तातैं व्यापै गाढि ।।३५१०।।

चौपई

दूत का रावण के पास आना

गया दूत रावण कै पास । भाषी सकल बात परकास ।।
भामंडल वचन कह्या समझाइ । लक्षमण ने तब दिया छुडाइ ।।३५११।।

दूहा

वह तो हठ छोडै नही, तजै न सीता नारि ।।
धरम नीत जे तुम करो, बेग विटावो राडि ।।३५१२।।

इति श्री पद्मपुराणे रावण दूत आगमन विधानक

६१ वां विधानक

चौपई

रावण द्वारा चैत्य वन्दना

रावण सु णें दूत के वैन । करै सोच मन भयो कुचैन ।।
कुंभकर्ण अने इन्द्रजीत । मेघनाद तीनू भयभीत ।।३५१३।।
वे बंधे मै भुगतू राज । मेरा हुआ घना अकाज ।।
वे ठाडे गलहथं हाथ । सोगवत करि नीचा माथ ।।३५१४।।
बहुत किया उनसो संग्राम । हारि न मानैं लक्षमण राम ।।
जानो अब मुझ कैसी बनै । निसचैं वे प्राण मम हनै ।।३५१५।।
अैसी विद्या साधू कोइ । दुरजन सकै न सनमुख होइ ।।
वडी बेर उपज्यो चितग्यान । सब राउं सांतिनाथ जिन थान ।।३५१६।।
मुनिसुव्रत स्वामी की सेव । करू बिंब बीसौं जिनदेव ।।
सहस्रकूट कचन देहुरे । रतन बिंब कचन मो जडे ।।३५१७।।
देश देश चीठी पठवाइ । करो चैत्याले सगली सज्याइ ।।
पर्वत वन नगर अने गांम । भए देहुरे उत्तम ठाम ।।३५१८।।
पूजा प्रतिष्ठा करै सब लोग । धरै भाव करि तीनूं जोग ।।
मदोवरी आदि अठारह सहस । पूजै सब त्रिय उत्तम बंस ।।३५१९।।
धरम महातम हिए विचार । देव गुरु सास्त्र करै मनूहारि ।।
पूजा दान करै सब नित्त । दया धरम सो लगाया चित्त ।।३५२०।।

इति श्री पद्मपुराणे शांतिनाथ मुनिसुव्रत चैत्यालय विधानकं

६२ वां विधानक
चौपई

अस्टाहिनका महोत्सव

फागुन मास अष्टमीं स्वेत । अठाईं व्रत करैं धरि हेत ।।
नदीश्वर दीप जिनेस्वर भवन । सुरपति करैं तिहां गवन ।।३५२१।।

अमराधिप पूजै जिन देव । करैं नृत्य मन बच सुनेह ।।
कंचन कलस षीर जल लाव । ते ढालै मस्तक भगवान ।।३५२२।।

रतनपुंज धरि पूजा करैं । जै जै सबद पाप कूं हरैं ।।
खेचर भूचर चैत्यालय भगवंत । रचना रचैं तिहां बहुभंत ।।३५२३।।

तरणे चन्द्र वे सोभय ठोर । वाजतर बाजैं तिहां सोर ।।
अष्ट द्रव्य सामग्री घणी । वांदरवाल को सोभावणी ।।३५२४।।

पंडित मुनी पढैं जिनदेव । कहै ग्यांन के सूक्ष्म भेद ।।
वर्त्त अठाई उत्तम ध्यान । करुणा अग वखाणैं ग्यांन ।।३५२५।।

दूध दही रस घृत की धार । श्री जिन पूजा बारंबार ।।
दुहुधा वोर करैं सब धर्म । जीव जत करुणा का मर्म ।।३५२६।।

सब ही सू छोडें तिहा वैर । पुन्य काज लागे बहु फेर ।।
चरचा करैं धरम की रुची । पालैं क्रिया बहुत ही सुची ।।३५२७।।

सामाईक करैं त्रिकाल । सावधान सब ही भुवाल ।।
आत्मा लिव ल्यावैं बहु भाइ । दिढसूं वृत्ति करैं सब राय ।।३५२८।।

दूहा

वर्त्त अठाईं जे करैं, राखैं समकित सुध ।।
सो ही उत्तम जिन सही, करैं धर्म की बुध ।।३५२९।।

चौपई

शांतिनाथ मिंदर सु अनूप । पूजा करैं तिहां रावन भूप ।।
अष्टांग करैं नमस्कार । अस्तुति पढैं सु बारंबार ।।३५३०।।

मन में विचारैं असा भाव । जिहां लग बसै नगर अन गांव ।।
आठ दिवस का पोसा लेहु । नित उठि दान सुपात्रां देहि ।।३५३१।।

जमदंड कुं इह आग्या भई । ढूंढेरा फेरि दुहाई दई ।।
जे ते हैं उत्तम कुल लोग । आठ दिवस अठाई जोग ।।३५३२।।

आरंभ तजि करो दिढ धरम । आठ दिवस छोडो सब कर्म ।।
जा के घर मे नाहीं अन्न । तिस कूं द्यो मुंहमांग्या धन्न ।।३५३३।।

भंडारहु दीज्यो ताहि । जो कुछ चाहै सो द्यो वाहि ।।
सुणु सहु लोक भयो आनंद । पूजा रचैं श्री देव जिनंद ।।३५३४।।

तीन काल पूजैं जिनदेव । सुणैं सास्त्र गुरु की सारैं सेव ।।
दान सुपात्रां विधि सौ देइ । अठाई व्रत सफल कर लेहु ।।३५३५।।

जपै जाप राखै चित ठौर । गहै मौन व्यापइ न है और ।।
कोइ चरचा कोइ आतम ध्यान । कोई कहै धरम व्याख्यान ।।३५३६।।

रावण द्वारा विद्या सिद्धि का प्रयत्न

रावण चौबीस दिना की टेक । सिध होवै तब विद्या एक ।।
जाको वह विद्या सिध भई । दरजन जीत सकै नहीं कोइ ।।३५३७।।

वे पूजैं स्वामी सातिनाथ । रावण सुमरैं जहा हाथ ।।
चित्त न चलै रहै मन धीर । जाणु बैठा वज्र सरीर ।।३५३८।।

दूहा

विद्या साधन कारणैं, दिढकर लाग्या ध्यांन ।।
हौनहार समझै नहीं, कहा होइती आन ।।३५३९।।

इति श्री पद्मपुराणे रावण विद्या साधन विधानकं

६३ वां विधानक

अडिल्ल

सुणी इसी जब बात कहै सव सजुत्त सूं ।।
उनतो लगया ध्यानक श्री श्री भगवंत सू ।।
जो कोई आश्रम लेई पुरुष के मान कौं ।।
वह नहीं छोडै वांह सर्म की कान कौं ।।३५४०।।

चोपई

व्रत साधना के कारण युद्ध बन्द होना

कैसी विध उसकौ दुख देई । उनतो कियो धरम सूं नेह ।।
वाकैं करै धरम की हान । होइ पाप समझो धरि ध्यान ।।३५४१।।

जब हमसूं वह सनमुख लडै । तब हम भी उसमे जुध करै ।।
धरम नीत सूं कीजे जुधि । पाप कर्म की छोडो बुधि ।।३५४२।।

वरत अठाई उसका सही । वाकौं दूषण है यह नहीं ।।
बानर बंसी कहई नरेस । तुमतो कहो धरम उपदेस ।।३५४३।।

जई बालक तौ बिगडै काज । तो नहि लागै उनको लाज ॥
हम मारैं रावण कूं आइ । ए आठ दिवस जाइ बिहाइ ॥३५४४॥
पूरणमासी तणीं बिहाण । अपणीं अपणीं बैठि विमांण ॥
मकरध्वज राजा संतोष । रतिबर्द्धन छाया करि कोप ॥३५४५॥
वाताइण अरु सूरज उद्योत । महारथ पीतंकर बहु जोत ॥
नलनील अणै नृप घणे । नांमावली कहां लग गिणे ॥३४६॥
पहुचे लका सभले वे भूप । रखवाले करै रावन रूप ॥
कोप्या सकल सूरवा घेर । मदोदरी समभावै तिण बेर ॥३५४७॥
लंकापति आगन्या दई । हिंसा कर्म करो मति नई ॥
ए इस थांन धर्म की ठोर । झुझ कीये ते लागै षोरि ॥३५४७॥
आग्या बिन कीजे नहीं जुध । असे कहि मंदोदरी बुधि ॥
सगलां मिल तोडी पोल कु वाउ । लका मांहि पडी तब राडि ॥३५४९॥

बंदरो द्वारा लंका में उपद्रव करना

लगुर निज विद्या संभार । वानर वारन घर घर वारि ॥
जाकूं पकडै लौचै गात । वालक अस्त्री डरपै बहु भाति ॥३५५०॥
रावण की माला लई छीन । लुंचै ताहि बहुत दुख दीन ॥
भाजे लोग कोट मे घसे । लुटैं गांम वानर जु हंसै ॥३५५१॥

क्षेत्रपाल द्वारा रक्षा

क्षेत्रपाल कोप्या तिण घडी । माया रूपी सेना करी ॥
मुंख बिकराल राजा नयन । मुदगर हाथ मार मुख वयन ॥३५५२॥
कोई रूप स्यंघ अरु सांप । अगनि रूप धरि देह संताप ॥
लांबी डाढि देह अस्थूल । पकडैं विरछ उपाडै मूल ॥३५५३॥
उनुं वृक्ष की कीनी है मार । बानर बंसी मानी हार ॥
भाजि छिपे भूल्या अवसान । छुटया दुख लंका के थान ॥३५५४॥
बहुरउ विद्याधर संभार । मारे देव मनाई हार ॥
वे भाजे ए पीछा करैं । देखैं सकल अचंभा धरैं ॥३५५५॥
पूरणभद्र मणिभद्र क्षेत्रपाल । विद्याधर मारे भूपाल ॥
भाजे नरपति लंका जोडि । सूरबीर फिर लडैं बहुरि ॥३५५६॥
सनमुख भए विद्याधर भूप । औ हटैं नही क्रोध के रूप ॥
करै देव बीजली घात । वर्षै पण पवन हठैं नही राति ॥३५५७॥

बरसै मेह मूसलाधार । भाजें विद्याधर कुंवार ।।
वे दोन्युं देवल मांझ गये । हाथ जोडि तिहां ठाढे भये ।।३५५८।।

वानर वंसी कुमर सब आइ । हमकूं दुख दिया बहु भाइ ।।
श्री जिन सातिनाथ के थान । रावण राय लगाया ध्यान ।।३५५६।।

सब परजा कूं उनो दुख दिया । जिन मंदिर में उपद्रव किया ।।
तुम अग्रे हम करें उपगार । बरजौ तुम उनसौं इंण बार ।।३५६०।।

लक्ष्मण कहै रावण है चोर । सीता हर ल्याया इस ठौर ।।
साधैं विद्या सुं अजीत । एहै कवण धरम की रीत ।।३५६१।।

अब हम वहै सरभर हैं सही । जे वह विद्या पावैं नही ।।
तो हम पावैं सीता नारि । जई विद्या न हुवै अधिकार ।।३५६२।।

कारिज हमारा बिगडै सही । अवर सोच हमकुं कछु नही ।।
पापी कूं तुम भए सहाइ । हमारा दुख तुम चित्त न सुहाइ ।।३५६३।।

अइसा तुम कछु करो विचार । टरै ध्यान पावै नही पार ।।
कहैं देव हम बोलै नाहिं । परिजा दुख करिय न चाहि ।।३५६४।।

जासो बयर तामुं करो युध । असा वचन कहै गए सुर सुध ।।
सुणे वचन सब निरभय भये । मन संदेह सहु के गए ।।३५६५।।

दूहा

रावण साधै ध्यान धरि, विद्या महा अजीत ।।
एक खोट वामैं बडो, प्रमदा माही चित्त ।।३५६६।।

इति श्री पद्मपुराणे समदिष्टी देव प्रहार अईकीर्त्ति विधानकं
६४ वां विधानक

चौपई

अंगद का लका में जाकर वहां की स्थिति देखना

अंगद लंका देखण चल्या । किषधकांड गज साध्या भला ।।
चौरासी अरु सोहै भूल । घंटा वादि सुहावण मूल ।।३५६७।।

ऊपर वणी अंबारी लाल । जिहां बैठा अंगद भूपाल ।।
सूर सुभट संग भूपति घणे । पयादा लोग न जावै गिणे ।।३५६८।।

बादल मांहि जिम पुंनिम चंद । तिम गज ऊपर अंगद सुरेन्द्र ।।
लका देखि नगर की भली । वोडि वोडि सोभा अति भली ।।३५६९।।

लाल मृदंग बजै गुडगुणी । करै नृत्य पातर रूपकी ।।
जिहां जिहां जिन के देहुरे । पूजा पढ़ैं पंडित सहु खरे ।।३५७०।।

बाजा बजैं सुहावण रूप । तिहा कामिनी नारि अनूप ।।
अगद कूं देखै तिण बार । धन्य नारि जिसका यह भरतार ।।३५७१।।

कोई कहै इह जननी धन्य । जिसकी कूख भया उत्पन्न ।।
कोई कहैं बहन है धन्य । जिसका है यह बीर रवन्य ।।३५७२।।

सब मिलि नारि सराहैं रूप । नमस्कार करि फिरियो भूप ।।
लका के गढ किया प्रवेश । चंद्रकांति मणि मिंदिर भेस ।।३५७३।।

मंदिर का बहुतै विसतार । जो भूलै सो लहै न द्वार ।।
इन्द्र नील मणि मदिर और । रतन सफोटिक मिंदिर तिण ठौर ।।३५७४।।

श्री भगवंत का है तिहां सथान । अगद नृप तिहां पहूंच्या आंन ।।
नमस्कार करि करी डडोत । अस्तुति जिन की पढी बहोत ।।३५७५।।

तीन प्रदक्षिणा दई नरेंद्र । सातिनाथ पूजिया जिनेन्द्र ।।
रतनथंभ चैत्याले लगे । उनतैं अंधारा सब भगं ।।३५७६।।

बेदी माही वनी अनूप । छत्री सोमैं अधिक सरूप ।।

ध्यानारूढ रावण को देखना

जिहाँ रावण था ध्यानारूढ । अंगद नैं तब पाया ढूंढ ।।३५७७।।

रे पापी पाखडी नीच । धरया ध्यान कपट मन बीच ।।
असा परपच करै हे झूठ । गही मौंन जैसा है ऊट ।।३५७८।।

बिन विवेक देही को दहै । सत्य शील का भेद न लहै ।।
रावण चित्त डुलावै नही । करतैं जाप्प अंगद नै गही ।।३५७९।।

पुहुप उठाय मारे मुंह माथ । पकडि झंझोडे दोनूं हाथ ।।
मदोदरी आदि सकल रणबास । चोटी पकडि आनी उन पास ।।३५८०।।

करै आलिंगन मोडै बांह । रावण मूंह तैं बोलै नांह ।।
सगली सखी पुकारैं घणी । करैं कहा अब असी बणी ।।३५८१।।

तुम बैठां हमको दुख होइ । तुमकों बुरा कहे सब कोइ ।।
रावण का तिहां चित्त न टरै । तब अंगद मुख तैं उच्चरै ।।३५८२।।

रे रावण तैं सीता हरी । हूं ले जाऊं मंदोदरी ।।
जै तूं बली तो लेहु छुड़ाय । दासी करि हूं पिता की जाय ।।३५८३।।

मैं चाल्या थे तोहि दिखलाइ । मति कहियो ले गया चुराय ।।
रावण मुख तैं कछुवन कहै । जिन्हा का ध्यान जीव मे रहै ।।३५८४।।

रावण द्वारा विद्या सिद्धि

चिहुं ओर उजियाला भया । विद्या पाइ सुख उपज्या नया ।।
बोलै विद्या प्रभु आगन्या देहु । जो मन हुवै सो कार्य करेहु ।।३५८५।।
रावण कहै लक्षमण कु बांधि । मेरा इहि विधि कारज साधि ।।
बहुरूपिणी विद्या गुण धणे । रावण सों वह विनती भणें ।।३५८६।।
आगन्या देहु प्रभुजी मोहि । कुंण खुटक हिरदा मा तोहि ।।
तब रावण बोलै तजि मौन । उठो वेग अब कीजे गौन ।।३५८७।।
बांधि आंणु राम लक्ष्मणा । तो समझौं तो मैं गुण घणां ।।

विद्या का रावण से निवेदन

विद्या कहै लकापति सुणु । दानव देव सकल मैं हणु ।।३५८८।।
चक्रधारी सूं कछु न बसाय । अवर मकल कौं बांधू जाय ।।
सातिनाथ का दरसन पाय । दई प्रदक्षिणां नवण कराइ ।।३५८९।।

अडिल्ल

रावण सोच विचार बहुत मन मे करै,
बिद्या भई जु सिध सुगुंण वहुला धरै ।।
जो यन इछ्छ बात सो यापै है नही,
मो पै विद्या बहुत एक ये भी सही ।।३५९०।।

इति श्री पद्मपुराणे बहुरूपिनी विद्या आगमन विधानकं

६५ वां विधानकं

चौपई

रावण का गमन

सब रणवास जु करै पुकार अंगद दुख दिया तिण बार ।।
तुम अग्रे अंसी करी । तुमारि संक न मनमे धरी ।।३५९१।।
अंगद गाढ़ का कहा त्रित्त । उन कछु भय आंण्यां नहिं चित्त ।।
तुम नै हमारी न आंनी दया । सब त्रिया कूं दुख दे गया ।।३५९२।।
रावण कोप कहै ए वैन । मइतो ध्यांन धरै दिढ जइन ।।
जई किरोध करता मन माहि । तो मोकुं विद्या फुरती नाहि ।।३५९३।।
वाकुं बुधि मरणे की भई । बैंदर वात उपाजाई नई ।।
बे तो सब ही है कीट समान । मारूं मीढक करूं घमसान ।।३५९४।।

सब त्रिया तसी करि मनुहार । पहर आभूषण किये शृंगार ॥
चल्या मेह बाजा बजवाइ । सुबरण चौका लिया मंडाइ ॥३५९५॥

वस्त्र उतारे करैं सनान । तेल फुलेल उंबटणा आंन ॥
कंचन कलस गंगा का नीर । करई सेवा राणी तीर ॥३५९६॥

सांतिनाथ की पूजा करी । अष्ट द्रव्य सामग्री धरी ॥
बहुरि आय लीया आहार । पुष्पक विमाण परि हुवा असवार ॥३५९७॥

बहुरूपणी का अब देखू बल । कैसी है या विद्या अटल ॥
जितनी थी विद्या की सईन । सब गुंज देखे अपणे नयन ॥३५९८॥

कंपी धरती गिरि थरहरे । रामचंद्र का दल ऊपरे ॥

रावण के मंत्रियों द्वारा पुनः निवेदन

रावण के बोलैं मंतरी । तुम पाई विद्या गुण भरी ॥३५९९॥
रामचंद्र लक्षमण हैं बली । सीता देहु क्यों होवै रली ॥

रावण द्वारा पश्चाताप

मोहि भई आंख्या की लाज । मोहि नहीं सीता स्यु काज ॥३६००॥

जई फेरू तो मोहि लगै कलंक । सब कोई कहै इन मानी संक ॥
मोकू उपजी बुधि कुबुधि । तुम्हि हरि लाया भूली सुधि ॥३६०१॥

मेरी आव थी जो इम ही लिखी । बैठि विमांण देखउ भू सखी ॥
पुष्पक विमांन सीता बैठांणि । दिखलाया समस्त संसार ॥३६०२॥

धिग धिग धिग है मेरी बुधि । कछु नही करी धरम की सुधि ॥३६०३॥
परनारी मैं काहे हरी । अपनी कीरत कीनी बुरी ॥
जो मैं जटा पंखी के पास । छोडि आवता दंडक बनवास ॥३६०४॥

भभीषण समझावै था मोहि । मैं वापरि कीया अति छोह ॥
वाके मारण की मति करी । भाई बीछडि गयां तिन घडी ॥३६०५॥

जे मैं मानता उस तणां वचन । तो किम होती ऐसी कठिन ॥
कु भकर्ण अर्नै इन्द्रजीत । मेघनाद तीनु भयभीत ॥३६०६॥

पडे बंदि मोरा सब आइ । ए दुख मोपैं सह्यो न जाइ ॥
उत्तम कुल को कालम ल्याइ । सीता कु आंणी चुराइ ॥३६०७॥
सकल लोक निसदिन निंदा करै । जो सुणि है सो कहि है बुरै ॥
परनारी है जिसा भुवंग । भव भव दुख होवै जिस संग ॥३६०८॥

मैं सबकै वा अमृत पाय । विष समांन लागै मुक्त दाइ ।।
अई हूं वेहुं राम नै जाइ । तो सब हंसैं रक अवै राय ।।३६०९।।
उन अंगद मोसुं करी अति बुरी । बिगोवा मोहि सब असतरी ।।

रावण का पुनः युद्ध करने का निश्चय

अंगद और मारूं सुग्रीव । दोनूं मारि करूं बिन ग्रीव ।।
प्रभामडल तम मडिल करू । हनूमांन जम मंदिर धरू ।।३६१०।।
चंद्रहांस से सबकौं काटि । उनकूं भेजूं जम की बाटि ।।
देख जु अब मैं असी करूं । मारि सबन कूं परलय करूं ।।३६११।।

दूहा

समझि ग्यान विह्लल भया, पहुंची आवजु पूर ।
धरम रीत जांणी नहीं, उन जु कुमाया कूर ।।३६१२।।

इति श्री पद्मपुराणे बुधनिश्चै कृत विधानकं

६६ वां विधानक

चौपई

रावण की दैनिक क्रिया

बीती रयण किया सु विहाण । रावण उठि कीयो असनान ।।
पूजा करी देव भगवत । बारबार सुमरै बिनयवंत ।।३६१३।।
भोजन करि भूषण सवारि । मात पिता की कीनी मनुहार ।।

दरबार हाल

सब कू दीने कंचन लाल । स्यघासन बैठा भुवाल ।।३६१४।।
तिहा भूपती ठाढे घणा । रावण सोचै मन आपणा ।।
कुंभकर्ण था मेरी बाहु । इन्द्रजीत मेघनाद्र भी नांहि ।।३६१५।।
वे तीनूं रामचद्र कै बंदि । उन बिन सगली सेना अंध ।।
हाथ गला थैं सोचैं सोच । अन्नपाणी की छोडी रुच ।।३६१६।।
देखै तिहा सकल मंतरी । उनू बुधि उपजाई खरी ।।
मन की बात उनू सब पाइ । कहै वीनती सबै समझाई ।।३६१७।।
तुम कुछ चिंता आणौं आपणौं । हम संग नरपति हुं मे घणौं ।।
बिद्या एक एक तै भली । पूजैंगी तुम मन की रली ।।३६१८।।
सुरवीर नही करै बिचार । उठो बेग बांधो हथियार ।।
मदोदरी झाखै झरोखा द्वार । कैसी आजि करै करतार ।।३६१९।।

अपशकुन होना

रावण आवधसाला चल्या । जिहाँ सुगन खोट सहुं मिल्या ॥
डंड सौं छत्र पड्यो भूमि । टूटी धुरि आया रथ भूमि ॥३६२०॥
मार्ग होइ निकल्या मांजार । स्वान कान झाड्या तिन बार ॥
खोट सुगन रावण को भए । मंदोदरी सोचैं निज हिये ॥३६२१॥

मन्दोदरी की चिन्ता

मंदोदरी पूछै निज मंतरीं । जे रावण टालै असुभ घडी ॥
समझावो तुम मेरी वात । ज्यौं टलि जावै एही बात ॥३६२२॥

मन्त्री का उत्तर

बोलै मत्री माता सुणु । रावण समझै सबही तैं घणु ॥
वेदपुराण करै व्याख्यान । वा सम सुघड न दूजो आण ॥३६२३॥
हम कछु कहैं तो मांनै बुरा । हमारे कहे काज कहा सरा ॥
जो तुम वा समझावो आप । तोइ हमन को मिटै संताप ॥३६२४॥
मंत्री पास सुणे उपदेस । गई जहां दसकंध नरेस ॥

मन्दोदरी द्वारा रावण को समझाना

हंस गमन सोहै मंदोदरी । बहुतै संग सखीयां खरी ॥३६२५॥
जैसे गंग समुद्र कूं मिली । मंदोदरी इम पति पैं चली ॥
जैसे सबहै कालिंदरी । तिम वे संग सोहे अस्तरी ॥३६२६॥
जैसे इन्द्र इन्द्राणी के हेत । अइसी प्रीत इनांको होत ॥
आवत देखी रावण निज नारि । बाधे था कटिस्युं तरवार ॥३६२७॥
बोलै भूपति कारण कवन । काहे कूं तुम कीया गवन ॥
मंदोदरी बिनवै कर जोडि । मोकूं देइ सुहाग बहोड ॥३६२८॥
प्रभुजी मेरा मानों बचन । करो राज घर बैठा चइन ॥
रामचंद्र हैं सूर्य समान । तुम हो सब तारा समान ॥३६२९॥
कैसे लगैं भांन कूं हेल । बालक ज्यों करता होइ खेल ॥
वह हैं तीन लोक के ईस । उनसौं करि न सकै कोई रीस ॥३६३०॥
सीतां उनकी देहु पठाइ । निरभय राज करो इण ठाइ ॥
परनारी है दुख की खांन । तासौं होइ धरम की हानि ॥३२३१॥
कुल क्षय होइ जाहि हैं प्रान । ऐसी समझि विचार तु ग्यांन ॥
सोक नदी अति ही गंभीर । चिंता लहर ज्यूं लागे तीर ॥३६३२॥

है कालिन्दी अगम अथाह । बुडत बांह गही तुम नांहि ।।
उत्तम कुल ए राक्षस बंस । तुम इह किया पाप का अंस ।।३६३३।।
तैं कुल डोब्या परनारी काज । कीत्ति तुम खोई अकाज ।।
परनारी के भुगतरण हार । ते क्षय भए हैं इस संसार ।।३६३४।।
अर्ककीत्ति जैसे क्षय गया । श्री विजय की नारी ले गया ।।
असनघोष अने विजयसेन । श्री विजय के मन भया कुचैन ।।३६३५।।
उनू अकीत्ति कौं मारि । रूपणी त्रियां लई तिणतार ।।
असी तुमकूं भई कुबुद्धि । अपणे जीव की करी न सुध ।।३६३६।।
सीता देहु रामकूं जाहि । निर्भय राज करो तुम राय ।।
कह्या हमारा करो तुरत । ज्यो नगरी मे होवै संत ।।३६३७।।

रावण का उत्तर

रावण कहै मंदोदरी सुणुं । अर्ककीत्ति सम मो मति गिणों ।।
मै जीते है सकल नरेस । इन्द्रभूप मान्यां आदेस ।।३६३८।।
मेरा बल है प्रगट तिहुं लोक । तू कांई चितवै मन सोक ।।
कहां राम हैं भूमि गोचरी । जिसका भय तू चित्त में धरी ।।३६३९।।
उनकी सेना दहवट करूं । राम है बाँधि बंदि मैं धरूं ।।
जे मैं आणी सीता नारि । फेर सकूं कैसे इण बार ।।३६४०।।

उत्तर प्रत्युत्तर

मंदोदरी सुणि धुंण्यो माथ । मेरा बचन तुम मानुं नाथ ।।३६४१।।
कहा दीपक कहा सूरज कांति । तुम दीपक रवि हैं रघुनाथ ।।
भानु उदय तब दीपक किसा । उनका बल आगैं तुम जिसा ।।३६४२।।
तुम काहे को होवो दुखी । सीता देह तुम रहो सुखी ।।
रावण बोलै करि नीचो मांथ । करै सोच बहुत है साथ ।।३६४३।।
जे पुरुष काहू का कर ग्रहै । तो क्यूं छोडै किसही के कहै ।।
मोहि भई आणे की काण । कैसे छोडूं अपणी जाणि ।।३६४४।।
मदोदरी बिनवै सुणु नरेन्द्र । परनारी है पाप के फंद ।।
कीरत नासै अपजस होइ । पति परतीत करै नहीं कोइ ।।३६४५।।
फल इन्द्रायण अधिक स्वरूप । असा परनारी का रूप ।।
देखत लागं सोभावंत । फरसत खात लगै बिष अंत ।।३६४६।।
जैसे मणि भुयंग सिर देख । जो कोई लोभ करै वह पेख ।।
डसै बियाल आई तसु प्राण । वह मणि तब कोई भुगतै आण ।।३६४७।।

जे बांबी में डारै हाथ । नितची हुवै प्राण का घात ॥
समझि बूझि भया अधीन । परनारी हरि कहिये आन ॥३६४८॥
जाइ नरक भुगतै चिरकाल । छेदन भेदन दुख का साल ॥
ताती पुतली ल्यावै अंग । ए फल भवै सील के भंग ॥३६४९॥
जे कुलीन ते पालैं सील । तजै सील जे कूले कुचील ॥
सीता मो कूं मांगी देहु । तुम इह मेरा वचन करेहु ॥३६५०॥
जे तुम चाहो हो अति रूप । मैं हूं सबतें महा स्वरूप ॥
जैसा कहो तैसा करूं भेष । बैक्रिया रूप करूं असेस ॥३६५१॥
सीता नै द्यो मेरे साथ । पहुंचाऊं जहंने रघुनाथ ॥

रावण का कोधित होना

असी सुणि कोप्या दशशीस । भूंह चढाई नयनही बीस ॥३६५२ ।
तू मेरा असे सूं जाह । रावण तबै इण विध रिसाह ॥
परपरुषां की अस्तुति करै । मेरा भय जिय मैं न धरै ॥३६५३॥
तेरै कहा रामसूं काम । तो कूं जात हे उनकी ठाम ॥

मन्दोदरी का पुनः निवेदन

मंदोदरी कहै फिर बैन । प्रीतम तुम राखो चित चैन ॥३६५४॥
इतना गुण सीता में कहा । ता कारण इतना हठ गह्या ॥
वह तो कोई इच्छै नांहि । अटल सील वरतै है ताहि ॥३६५५॥
उत्तम कुल जनक की धिया । महा सती राम की त्रिया ॥
जे कुल हीन तजैं ते सील । विभचारी कुल छांडै नींव ॥३६५६॥
बिना कारिज मरि है ए जीव । ए सब पाप चढेंगे नव ग्रीव ॥
पहिलां तजै आपनी देह । तब परदारास्यु किसा सनेह ॥३६५७॥
जिनकी तुमने सीता हरी । वै तोहि मारेंगे इस घरी ॥
सीख दत मानु तुम बुरा । तुम मरने कारन ही धरा ॥५६५८॥
बिसन कुमार विक्रिया रिद्ध । दारा दुख बाका पुनि सिध ॥
बलि पै मांगी पैड जु तीन । तब बोल्या ब्राम्हण मति हीन ॥३६५९॥
छोटा भाव बांभण का सही । तीन पैंड ही मांगी मही ॥
इतनी सुण तब धाई देह । मानषोत्तर पर्वत पग देह ॥३६६०॥
दूजा चरण सुदर्शन मेरु । तीजा पग कूं रह्या हेर ॥
तीजा चरण बलि कै हीए । देवां मैं संतोष तब किये ॥३६६१॥

तुम हो जती दिगंबर भेस । समझावो ग्यांन दया उपदेस ॥
तब मुनिवर कु उपजी दया । बलि कूं छोडि बलवास लिया ॥३६६२॥
मूलां ते दीजिये बताय । ग्यांनी मूरख नहीं रिसाइ ॥
सीता देहु ज्यु मिटै राड । मानु वचन ज्यु न पडै धाड ॥३६६३॥
आगैं भए नारायण सात । प्रतिनारायण मारे इण भांत ॥
प्रथम त्रिविष्ठ विजई बलभद्र । अश्वग्रीव मारे करे चक्र ॥३६६४॥
सुप्रतिष्ठ अचल दूजा अवतार । तारक मार किया संघार ॥
स्वयंभू धर्म तीजे भए । वैडम उन हण्यां समए ॥३६६५॥
पुरुषोत्तम सुप्रभु चौथो बली । निसुंभ कीत्तिण ग्रीवा दली ॥
पुरुषसिंह सुदरसन पंचसैं । मेरकुमार जिम मदिर हसैं ॥३६६६॥
पुंडरीक नंद भए छठा । मदसूदन मारया चक्र पडै ॥
दत्त नामात्र नारायण सातए । बल्लभ कौं मारया घातए ॥३६६७॥
अब है यह अष्टम अवतार । तुम प्रतिनारायण हैं इस बार ॥
नारायण का है इहै नियोग । प्रतिनारायण कै कुल करैं बिजोग ॥३६६८॥
तातैं मुझे व्यापै है इही । तुमकूं लक्ष्मण मारैगा सही ॥
तातै निवऊं बारंबार । अब जै सकै कलह कुं टारि ॥३६६९॥
अकारथ क्यूं दीजिये जीव । अब कछु करो धरम कीं नींव ॥
अणुव्रत पालो घर मांहि । सुख सो बैठा सीतल छांह ॥३६७०॥
छह दरसन विध स्यौ द्यो दान । सास्त्र सुणुंउ नित व्याख्यान ॥
अथ तेरह विध चारित्र जीतो । पंच इन्द्री सत्रु ॥३६७१॥
आठ कर्म जीतो तुम ईस । प्रकृति ते रहै एकसो अडतालीस ॥
भव जल तिर जावो सिव मध्य । अजर अमर तिहां पूरण रिद्ध ॥३६७२॥
उत्तम ग्यानी करै न पाप । सीता देहु राम कूं आप ॥
छुडावो कुंभकरण इंद्रजीत । मेघनाद छूटै इह रीत ॥३६७३॥

रावण का उत्तर

रावण सुणि इम उत्तर देइ । तुम ए वचन काहे कहेइ ॥
तोरी कूंख उपजे बलवत । तू किम हो है भयवन्त ॥३६७४॥
मैं तो प्रतिनारायण नहीं । कौण नारायण है इस मही ॥
इद्र भूप सम अवर न कोइ । वाकुं बस कीयौं भ्रम खोइ ॥३६७५॥
ऐसे हैं ये कहा वरांक । जिन की तुम मानो हो धाक ॥
मरण सुं कातर होइ सो डरै । सरअ होइ सो वेगा मरै ॥३६७६॥

कहूं राम लक्षमण सूं जुध । अब मैं अबरन समझूं बुध ॥
भई रयण अस्त भया भान । ससि की ज्योति उदय भई आन ॥३६७७॥

रावण की रात्रि

रावण अंतहपुर जाइ । भोग भुगत सों रयण विहाइ ॥
नगर लोग सब मानैं रली । कोई दुखी न सोभा भली ॥३६७८॥

घरि घरि दंपति भुगतैं भोग । ज्यों दुखि भलैं देख असोग ॥
उज्जल सिज्या उज्ल वर्ण । सोभैं तिहां चांद की किरण ॥३६७९॥

सुरगपुरी सुर करै विलास । बैठी नारि कंत के पास ॥
फूल सुगंध अरगजा ल्याइ । जिसकी बास मधुकर लुभाइ ॥३६८०॥

बीण बजावै गावैं तान । बोलैं बचन सुख कीं खान ॥
सखी विचक्षण ढोलैं वाइ । पान खुवावैं बीडी बणाइ ॥३६८१॥

चउका वण्यां विराजै दंत । सोहैं हीरा की सी भंत ॥
कउक कला जाणई विचित्र । सोहैं हाथ कमल के पत्र ॥३६८२॥

कांमी कामनी मय मंत । बोलैं सबद कोकिला भंत ॥
ते सुख किसपै बरणे जाइ । जे बरणों तो पार न पाइ ॥३६८३॥

सुख सूं भुगते ब्याकु जाम । करि सनान सुमरे जिन नांम ॥
पूजा करी निरंजन देव । भोजन मुंज विचारै भेव ॥३६८४॥

युद्ध के लिये प्रस्थान

प्रभु की आज्ञा बजै निसांन । सुण्यां सबद छोहै बलवांन ॥
काहू कूं व्यापै बालक मोह । रोवैं नारी प्रभु भयो विछोह ॥३६८५॥

आंसू नयन भरे सब नारि । जुध करण चाल्या भरतार ॥
कहैं कंत सुणु वर आंन । हम खाए हुं प्रभु को आंन ॥३६८६॥

स्वामि काज को बरचा सरीर । करो काम मन राख्यो धीर ॥
करै वेगि भूपति का काज । जै विधना अब राखैं लाज ॥३६८७॥

जीवांगा तो मिलस्या आइ । सहु कुटंब भेट्या गल लाइ ॥
भया विदा ने पलाण्यां तुरी । ऊंची चढि देखैं सब तिरी ॥३६८८॥

गए दूर सब दृष्टि न पडैं । मुरछावंत नारी गिर पडै ॥
रावण की सेना तब चली । भई भीड पावै नहीं गली ॥३६८९॥

देखैं अटा अटारी लोग । हय गय पायक सुभट मनोग ॥
भूपति तडे बडे सामंत । बाजैं बाजी चले बलवंत ॥३६९०॥

घोडा रथ अग्रे सुखपाल । हस्ती पर रावण भूपाल ।।
दस सिर वीस भुजा सोवंत । के आकास गामी विद्यावंत ।।३६६१।।

भूमिगोचरी पृथ्वी पर चलै । विद्याधर ऊंचे बहु भले ।।
लोप्या भानु न दीसै आकास । महासंघट सेना चिहुं पास ।।३६६२।।

दूहा

रावण की सेना चली, कंप्या सब ससार ।।
सूर सुभट जोधा घने, कहत न पावै पार ३६६३।।

इति श्री पद्मपुराणे रणजोग विधानकं

६७ वां विधानक

चौपई

मन्दोदरी से अन्तिम भेंट

मंदोदरीं सुं रावण इम कहै । तू काहे चिंता चित गहै ।।
सुभटा साथ वणै है काम । जो जीवता बचै सग्राम ।।३६६४।।

फिर तोहि सेती होइ मिलाप । हौणी होइ टरै नहीं आप ।।
बहु विध समझाई अस्तरी । बिछडे कंत हिए गम भरी ।।३६६५।।

ऊंचे चढि देखी सब सैन । धरि अगण जीवकुं कुचैन ।।
मैं समझाई रचि पचि हार । वचन न मान्यां मोहि भरतार ।।३६६६।।

अब कै कहा वणावै दई । अठारह सहस सोच चित्त भई ।।
एक सहस मगल मथमंत । रथसो लगे अंजन गिर मत ।।३६६७।।

छत्री कलस अति सोभा बणी । रतन जोति सी दमकै घणी ।।
रावण बैठा रथ परि आइ । दससिर सोहैं बीस भुजाइ ।।३६६८।।

इन्द्र रथ सम रथ नहीं कोइ । ऐसी सुणी रघुवंसी वोर ।।

राम द्वारा युद्ध की तैयारी

राचचन्द्र केहरि रथ चढे । गरुड वाहन लक्षमन बढे ।।३६६९।।

सेना चली चतुर विध सघ । सुर सुभट मन उठै तरग ।।
इद्ररथ रघुपति ने देखि । पूछै इह का कहो परेखि ।।३७००।।
कै परवत कै कोई देस । कही न देख्या इसका भेस ।।
अगद बोलै जाबूनद । इह रथ रावण विद्यावंत ।।३७०१।।

लक्षमण सुणि कोप्या बहु भाइ । वा सनमुख सेना ले धाइ ॥

दोनों की सेनाओं में युद्ध

इत उत सेना सनमुख भई । काढि खडग लडाई लडी ॥३७०२॥

दंती अजनगिर जिम जुटैं । मद के माते चुवे पटैं ॥
मारैं टक्कर टूटैं दंत । मसतक फूटैं बहैं रकत ॥३७०३॥

छोडैं चरखी मारैं बाण । पैदल सब झूझैं घमसान ॥
किसही काढि लई तरवार । धाइ पडे करि मारुंमार ॥३७०४॥

तीर तुपक का लागै घाव । सुरमां सभी लडैं तिह चाव ॥
तउव न मानै दोउधा हार । घायल घूमे रणह मझार ॥३७०५॥

रूंडमुंड परवत सा पडे । रथ सुं रथ अस्व सु अस्व भिडे ॥
दोउ धां झूझै भूपत घणे । उनुं का नाम कहालूं गणे ॥३७०६॥

धनुष खैंचि तक मारै बाण । बहुतू का छूटैं तिहा प्राण ॥
ग्रध आदि भर्प तिहा आइ । सुरनर किंनर देखै जाइ ॥३७०७॥

बाने धारी जोधा लरैं । उनू के पीछे पाव न पडैं ॥
कातर भाजै जै रण कू देख । कोई न उवरैं असा लेख ॥३७०८॥

असी कठिन बणी चिहू फेर । जित भाजैं तित मारैं घेर ॥
वडगी संग वडगी जुटे । तिनका क्रोध बहुतें घटे ॥३७०९॥

मारैं गदा करैं चकचूर । चक्र मारता झूझै सूर ॥
बरछी मारैं लेइ उंचाई । कोई गहि कर देहु बगाई ॥३७१०॥

बाथौं बाथ लडैं बलवांन । सोणत बहै अति नदी समान ॥
इहै हनूवत उतै मारीच । घेरि लिया सेना के बीच ॥३७११॥

तब धाए अगद सुग्रीव । सहुक कुंभ विक्रम रण सीव ॥
पडी मार रावण की सैंन । झूझे राक्षस भया कुचैन ॥३७१२॥

चिहुं ओर धाए सामत । टूटैं खडग लोह बाजत ॥
रावण देखे हारे लोग । आया आप जुध के जोग ॥३७१३॥

रामचंद्र लक्ष्मण बलवंत । सन्मुख ए धाए पुन्यवंत ॥
पुन्य तै होवै निज जीत । पापी मरै महा भयभीत ॥३७१४॥

रावण रामचंद्र सौ कहै । अजहूं कछु सास रहे ॥
मारूं तोकुं बेग सवारि । लक्षमण बोलै बात विचार ॥३७१५॥

रे गवार पापी तूं चोर । अबकै पकडि मारूं ठौर ॥
अज्ञावर्त्त राम कर गह्या । लक्षमण समुद्रावर्त्त ले रह्या ॥३७१६॥

जाणे पडे गिरि सुमेर । सोमै दंत गिरधा रण घेर ।।
राक्षस बसी रोवै भूप । सुग्रीव आदि सोग बे सरूप ।।३७६८।।
रोवें सकल उपाडै केस । देखै सब रावण के भेस ।।
हा हा कार करै वह सोर । रावण मृत्यु पडा तिण ठौर ।।३७६९।।

दूहा

परनारी के कारणै, रावण दीये प्राण ।।
इह तन अपणा खडीए, समझो एह सुजाण ।।३७७०।।

इति श्री पद्मपुराणे दसग्रीव बध विधानकं

७० वां विधानक

चौपई

बिभीषण द्वारा भाई के मरण पर विलाप करना

भभीषण व्याप्या भाई सोय । रोवे और चहु धा लोग ।।
हाइ भाई ए तैने क्या किया । मेरा कह्या तै नहि माना हिया ।।३७७१।।
जो मोहि सेती भई कछु चूक । गही मौत रहै ह्वै मूक ।।
किरपा करो सुणावो वयन । तो अब मोहि होय सुख चैन ।।३७७२।।
तुम बिन कैसे जीऊ वीर । तेरे दुख सो जलै सरीर ।।
तुम विन चले जात है प्रान । आइ मूर्छा मृतक समान ।।३७७३।।
रामचन्द्र लक्षमण तब देख । भभीषण पड्या मृतक के भेस ।।
वैद्य बुलाइ करै उपचार । ऊखद दे करि वीजणा बयार ।।३७७४।।
बडी बार मे भया सचेत । व्याप्या मोह भाइ के हैत ।।
रावण का तब पकडै हाथ । लें ले लावै छाती माथ ।।३७७५।।
बार बार आलिगन करै । हाय वीर तू अरथन मरै ।।
बहुरि भयो वह मूर्छावत । जाणै भया प्राण का अंत ।।३७७६।।
बहुत जतन सो भई सभार । अंतहेपुर पहुची यह सार ।।

रावण की रानियों द्वारा विलाप करना

मंदोदरी रभा चंद्रान । चंद्रमन उरबसी त्रिय आंन ।।३७७७।।
मलीन रूपणी सीला रत्न । रत्नमाला रामोदरी बिला ।।
लक्षमी पदमा सु विसाल । रानी सहस्र सभी बेहाल ।।३७७८।।
पीटैं छाती कूटै देह । सब मिल घालै सिरमे षेह ।।
बिनवैं सब मिल रावण भोग । सब नगरी का रोवै लोग ।।३७७९।।

हाय करम तैंने कहा किया । बिघया भई महा दुख दिया ।।
कैसे जीवैं कत के मुवै । सब मिल पीटैं अपना हियैं ।।३७८०।।

कोकिल सबद सुहावन बोल । सब परियशमा मार्च रोर ।।
सब आए जिहां रावण पड्या । देखें लोग ज्यौं पर्वत गिरया ।।३७८१।।

ले ले हाथ लगावैं हिये । इन रावण बहुतें सुख दिये ।।
बहुत भांति के भुगते सुख । अब कु जीवै कंन के दुख ।।३७८२।।

सब नारि आलिंगन करैं । अण आई रावण का मरैं ।।
जै सीता कुं देता आंण । तो क्यानें ये तजता प्राण ।।३७८३।।

भूमिगोचरी की अस्त्री हरी । परनारी ज्युं पैनी छुरी ।।
असी विध रावण का मरै । करम अटारे किम टरैं ।।३७८४।।

रामचन्द्र लक्ष्मण तब आइ । समभावै इनकू बहु भाइ ।।
रावण का था यही निजोग । अब तुम तजो सकल निज सोग ।।३७८५।।

भावमंडल कहै उपदेस । सुणु वचन भभीषण भुवनेस ।।
रावण रण मे साका किया । रह्या खेत सनमुख जिय दिया ।।३७८६।।

ते बलवंत टेक सो मरे । तिनका पावन रण मे टरैं ।।
धन्य पुरुष जे राख टेक । ते सहस्र मे गिणिये एक ।।३७८७।।

पत्री होय मरैं पडि खाट । जनम अकारथ तिसका घाट ।।
इह रण था सुभटा की चोर । असा मरण न पावै और ।।३७८८।।

धनि धनि ए रावण महाबली । जाकी जुधस्यौ पुजी रली ।।
चक्र चलाया मे चित्त न किया । ए दिढ रावण मनमे लिया ।।३७७९।।

सफल मरण ए तिन विध जान । असे है उत्तम परमाण ।।

श्रेष्ठ मरन

सग्राम माहि जे क्षत्री मरैं । कै तपकर सजम व्रत धरैं ।।३७९०।।

जीतैं आठ करम धरि ध्यान । ते उपजावैं केवलज्ञान ।।
पावै अजर अमर पद ठाम । जुग जुग रहै उनूं का नाम ।।३७९१।।

ले सन्यास तजैं जे प्राण । समाधि मरण जग मैं ए जान ।।
असी विध सौ मरैं जो कोइ । ताका सत्र बिघसैं जस होइ ।।३७९२।।

असो का किम करिये सोग । ऊनूं का हठ बखाने लोग ।।
तीन लोक मे अमर है जांन । वेद पुराण करैं है बखान ।।३७९३।।

वे नही मुवा सदा है अमर । अरिदम सा मुवा जान्या सगर ।।

लक्ष्मण द्वारा चक्र प्राप्त करना

लक्षमण कै वह बैठा हाथ । पुण्य सहाइ हुआ रघुनाथ ।।
पुन्य समान सगा नही कोइ । पुंन्य ही तै जग मे जस होइ ।।३७४२।।
पुंनि सहाय दुर्जन हीन । पुन्य पावै बुध्य प्रवीन ।।
पुण्य तें भोग भुगतै ससार । पुन्य बडो त्रिभुवन आधार ।।३७४३।।
पुन्य तै दुख दालिद्र जाइ । सकट विकट मे पुन्य सहाइ ।।
जल थल महियल मैं भय टरै । ठग ठाकुर न उपद्रब हरै ।।३७४४।।
पुन्य तै कंचन वरण सरीर । रोग सोग ने व्यापै पीड ।।
सब जग सेवैं भय नहि ताहि । पुन्य समान भला कछु नाहि ।।३७४५।।
पुन्य तै पावै धन सिध । पुन्य ते पावै सुर की रिध ।।
पुन्य तें पावै परियण सुख । पुन्यवत का भाजै दुख ।।३७४६।।

सोरठा

रघुवसी सु पुनीत, चक्र सुदर्शन पाइया ।।
तब सब भए नचीत, पूरब भव के पुन्य सु ।।३७४७।।

इति श्री पद्मपुराणे चक्रसुदर्शन लाभ बिधानकं

६९ वां बिधानक

चौपई

लक्षमण चक्र सुदर्शन पाय । आनंदे रघुवसी राइ ।।

रावण का पश्चाताप

रावण बेर बेर पिछताइ । मुझी सब भेन्या इस ठाइ ।।३७४८।।
हय गय रथ अरथ भंडार । पुत्र मित्र सगी नही लार ।।
नारी लक्ष्मी आवै फिर जाई । जैसे बुंद बुद जाइ बिलाई ।।३७४९।।
हु माया जाल माहि पड्या । परनारी जाय करि हरया ।।
मैं माया तजि लेता जोग । तो क्यू होता इतना सोग ।।३२५०।।
लक्ष्मी तज न सक्या अग्यान । मोकु छोडि गई सुविहान ।।
जे नर माया कै बस भए । धर्म विदारक स्वान ही हिए ।।३७५१।।
जनम अकारथ खोया आप । अइसा रावन करै बिलाप ।।
अनतवीर्य स्वामी के वचन । ते मै देखे भेद भिन्न भिन्न ।।३७५२।।
कोटिसिला उठावै जाइ । चक्र सुदर्शन पावै आइ ।।
ते निसचै रावण कु हणै । हुआ परतक्ष श्री जिन भणै ।।३७५३।।

राज मद मे मैं हुआ अंध । बाध्या असुभ कर्म का बंध ॥
धन जोवन सुपने की रिध । जाग्या कछुग्रन देखै सिध ॥३७५४॥
जो मुरख ते मोह बसि पडै । वे क्यो भवसायर मे नडै ॥
जे विषफल को देख लुभाइ । जाके भर्षै प्राण उड जाइ ॥३७५५॥
उस खाया इक भव ही मरै । परत्रिया तै भव भव दुख भरै ॥

विभीषण द्वारा लक्ष्मणको परामर्श

रावण अपणी निंदा करै । भभीषण मुं लक्ष्मण उच्चरै ॥३७५६॥
अवर नृपति जो मार्गौं भ्रांण । ज्यों रावण राखै हम काण ॥
तो करो राज लका का वही । जीव दान वाको द्यू मही ॥३७५७॥

रावण का क्रोधित होना

रावण सुणि अगनि जिम बलै । रे लक्ष्मण क्या मन मे खिलै ॥
मै रावण हू बली बलवान । जे तै चक्र लह्या अब आन ॥३७५८॥
चक्र पाया क्यूं काज न सरै । जैसे चक्र कुभार का फिरै ॥
चक्र फिराए होय न कछु । जैसे धन पाये कुल तुच्छ ॥३७५९॥
वे मन मै ही अति गरवन्त । क्षुद्र पुरुष गर्भ बहुवन्त ॥
जे तू नारायण होता आज । मैं कहूं सोही करै तू काज ॥३७६०॥
इन्द्र सरीखा फेरै तू रूप । तो तूं सही नारायण भूप ॥
तू नारायण कैसे भया । दसरथ देस निकाला दिया ॥३७६१॥
वन बेहड तू भ्रमता फिरया । तब तैं कुछ कहु न बल करया ॥
मै बालकस्यौं बूढा भया । तब ते मैं प्राकर्म वहु किया ॥३७६२॥
मो पै है विद्या बल वही । हूं रावण जीती सब मही ॥
मोकू तू जाणै है भलै । मो सूं कहा चक्र की चलै । ३७६३॥
तू भरम्या है चक्र फिराइ । वराक पुरखां एहै सभाय ॥
जितना तरे सगी भूपाल । मारूं गदा घसै पाताल ॥३७६४॥
मैं रावण किस की करू सेव । तुम कु अब जिम मिंदिर देव ॥
निठुर वाक्य बोल्या वहुभाति । सकल सुण्या राज रघुनाथ ॥३७६५॥

लक्ष्मण द्वारा चक्र से रावण का वध करना

लक्षमण कोप्या चक्र फिराई । छुटया ज्यों बीजली धाई ॥
रावण इन्द्रधनुष कर गह्या । अपणौं बल पौरष उमह्या ॥३७६६॥
चन्द्रहास खडग नीकाल । रोकै मार चक्र की चाल ॥
लाग्या चक्र रावण कै हीए । दोए खड होइ प्राण उड गये ॥३७६७॥

धनुष लीया रावण नै तागि । दाउ था छूटै विद्या बांण ॥
भभीषण मयमत सु जुध । बाध्या मैं भूपति बहु बुध ।।३७१७।।

दूहा

बहुत जुध दोउधा हुवो, कब लग करै बखाण ।।
सुर असुर गधर्व सु, सहू जीवनै दीये पराण ।।३७१८।।

इति श्री पद्मपुराणे रावण लक्षमण जुध बिधानकं

६८ वां विधानक

चौपई

देवताओ द्वारा आकाश से युद्ध का अवलोकन करना

रावण लक्षमण दोउ लरै । दस दिन बीते दोउ न टरै ॥
सुर असुर किनर गधर्व । देखै जुध सराहै सर्व ।।३७१६।।
बर्षै फूल होई जैकार । इनका जस प्रगटया संसार ।।
चन्द्रवरधन कै आठ पुत्तरी । बैठि विमाण आई सुदरी ।।३७२०।।
देखे जुध पूछै अपछरा । तुम हो कवन ध्यान ह्हा धरचा ।।
चन्द्रवरधन राजा की धिया । जा समै बीवाही थी सिया ।।३७२१।।
तब हम लक्षमण कु पिता दई । जै लक्षमण जीतै अब कही ।।
हमारे मन का कारज होइ । नातर हममैं जीवै नहि कोइ ।।३७२२।।
इतनी सुणि देई असीस । लक्षमण जीवो बहुत वरीस ।।
उचै चित्त लक्षमण वली । आनदे सब मनमे रली ।।३७२३।।
किनर दीया सिधारथ वाण । वह विद्या पाई तिह थान ।।

रावण द्वारा चिन्ता करना

रावण मनमे करै विचार । किमहि न मानै लक्षमण हार ।।३७२४।।
विघन विनायक छोडे बाण । लक्षमण बाकी करै न कांण
सब विद्या छोडी तिह वार । चले वाण ज्यौ घनहर धार ।।३७२५।।
बाण सकल निर्फल होइ गए । रावण साच विचारै हिए ।।
मेरी विद्या बांण अचूक । इह विरया पराक्रम गए सूक ।।३७२६।।
बहुरूपणी विद्या सभालि । कोप चढे रावण भूपाल ।।
लक्षमण का चकवाण छोडि । एक मुंड रावण का तोडि ।।३७२७।।

अनेक रूप में रावण का लड़ना

टूटया एक भया होइ दस ओरि । वीसतै दूणी भुजा तिह ठोर ।।
सूरजहास लक्षमण कर गह्या । काटै मुंड रकत तिहां वह्या ।।३७२८।।
ज्यो ज्यों काटै त्यौं त्यौ बधै । सहस्र मुंड भुज दूणा वढै ।।
ज्यो ज्यो काटे भूजा अरु मूंड । लाख सीस भुज दोई लख दंड ।।३७२९।।
सकल भुजा आयुध को लिये । मार मार सबद मुख किये ।।
जिहा काटै तिहां चलै रकत । नदी बहे डूबै सहु जत ।।३७३०।।
परवत मुंड भुजा का भया । पडी लोथ पग जाई न दिया ।।
सोनन नंदी बहै तिहां लोथ । हाथी घोडे रथ सूर वहोत ।।३७३१।।
जैसे मगरमछ जल तिरै । असे लोथ रकत मे फिरै ।।
जेता रण झूझा दोउ सेन । तिनका कहि न सकै कोइ बैन ।।३७३२।।
रावण की सब सुध वीसरी । लक्षमण भुजा थकी तब हरी ।।

रावण द्वारा चक्र चलाना

रावण तबै संभाल्या चक्र । सुदर्शन नाम भयानक वक्र ।।३७३३।।
सहस्र देवता सेवा करै । चक्र सुदर्शन वहु गुण धरै ।।
रावण के कर आया तिह घडी । रवि की ज्योति सब उन हरी ।।३७३४।।
चिमक सकल भाज्या रण लोग । कौण कौण का होय वियोग ।।
जिहा चक्र चलै सब दलै । कोई न बचै फिर जीवत मिलै ।।३७३५।।
चक्र तेज तै सहु जन डरै । वा सनमुख कोई न उबरै ।।
रामचद्र लक्षमण सुग्रीव । भामडल भभीषण नीव ।।३७३६।।
हनुमान सुभट थिर भए । कछु सक न मानै हीये ।।
बोलै रामचंद लक्षमणा । रे बरांक सोचै क्या मना ।।३७३७।।
छोडि चक्र करूं द्वै टूक । बज्रावर्त्त सू हनूं अचूक ।।
कोप्या रावन चक्र फिराइ । छुटया सुदर्शन मुख जाइ ।।३७३८।।
रामचन्द्र कर वज्रावर्त्त । लक्षमण कर समुंद्रावरत ।।
भभीषण सभाल्या त्रिसूल । चक्र फेर गमावै मूल ।।३७३९।।
हनुमान उठाई गदा । सुग्रीव बज्र संभाल्या तदा ।।
चक्र नै फोडि करै चकचूर । असा मता करै सब सूर ।।३७४०।।
चन्द्ररस्म अर भूपति घणे । छलबल निपुण राम संग बणे ।।
सुदर्शन चक्र लक्षमण ढिग जाई । तीन प्रदक्षिणा दीनी आई ।।३७४१।।

अरिदम की कथा

अईसा केसो गहै न्याई । जे वह मुवा जीव छिपाई ।।३७६४।।
अष्यरपुर नगर हरदच भूप । लछमीवती राणी सुखरूप ।।
अरिदम पुत्र वाकै गर्भ भया । जोवन समै उछाह अति थया ।।३७६५।।
वसुसुंदरी व्याही अमनरी । रूप लष्यन गुण लावन भरी ।।
राजा राणी भए वैराग । राजबिभूत सकल साहिबी त्याग ।।३७६६।।
अरिदम पुर का राजा किया । आप जाइ संयम व्रत लिया ।।
अरिदम अधिक प्रतापी थया । भूप प्रताप सकल छिप गया ।।३७६७।।
सब पृथ्वी का जीत्या नरेस । मनाय आंण लीया सहु देस ।।
फिर आया अक्षरपुर नगर । हाट बाजार छाए तिहा सगर ।।३७६८।।
घर घर बाधी बादरवार । भया रहसि अति नगर मझार ।।
घरि घरि रली बधावा भए । परियण में सुख उपजे नये ।।३७६९।।
वहुत आनदस्यौ आयो राय । रत्नमुष्ठि भर डारत जाय ।।
राजा अतहपुर मे गयो । राणी सुं इम हसि बोलियो ।।३८००।।
जो कछु नई बात तुम सुणी । अंसी हमस्यौ कहिये मुणी ।।
राणी कहे तुम सुणियो कन्त । कीरतधर मुनिवर सु महंत ।।३८०१।।
इक दिन आए लेण आहार । भोजन पाय चल्या तिण बार ।।
मैं पूछया तुमारा परताप । कब आवै प्रथिवीपति आप ।।३८०२।।
मुनि बोले जीतैगा सब मही । पण वाकी आरबल तुछ रही ।।
वा दिन तै चिंता है मोह । सुणु प्रभू समझाउ तोहि ।।३८०३।।
राजा सुणि कै गयो उद्यान । जहाँ बैठ्या मुनि आतम ध्यान ।।
पूछै मुनि सू तब ही नरेन्द्र । मेरे मन की कहो मुनिंद ।।३८०४।।
बोलै मुनिंद पूछो तुम आव । रहे दिन सात जीवण के राव ।।
पूछै नरपति कारण कौण । समभावो स्वामी तजि मौन ।।३८०५।।
कहै मुनीस्वर सुणौ भुवाल । विद्युत पात सो तेरा काल ।।
सोचै भूपति मुनि सु ण वात । करू उपाव बचै जिव घात ।।३८०६।।
बुलाइ मतरी मतो उपाइ । मुनि के वचन निरफल जाइं ।।
एक जतन सु उवरो राइ । लोह की कोठी तुम करवाइ ।।३८०७।।
वाड वामै राजा तुम पैठ । साकल लगाव इवा हेठ ।।
वज्र साकुल कठाडवा वाधि । डारै दह में जिहा नीर अगाध ।।३८०८।।

जहां दामनी का नहीं प्रवेस । या प्रकार जीवस्यों नरेस ॥
छह दिन बीत सातवां भया । डबै पैठि द्रह भीतर गया ॥३८०९॥
नावांसु सांकुला लगाइ । उठी घटा सहज के भाइ ॥
घन घटा होइ संसार उवार । कडकी दामनी मारचा तिणबार ॥३८१०॥
टूटा डवा राजा दोइ खंड । होनहार महा प्रचंड ॥
करम रेख किम मेटी जाय । होंणहार सौं कहा बसाय ॥३८११॥
राजा बीजली नें मारिया । उन मरणे का ग्रति भय किया ॥
भैंसे का सोग करया त्यांइ । रावण भूझा सामों ध्याइ ॥३८१२॥
प्रीतकर ने पाया राज । ग्ररिदम मुवा सरचा नहि काज ॥३८१३॥

दूहा

करचो सयाणय बहुत बिध, मन्त्र जंत्र ग्रनै उपाइ॥
होंणहार टलता नही, बहुत वणावो दाव ॥३८१४॥

इति श्री पद्मपुराणे ग्ररिदम विधानक

७१ वां विधानक

चौपई

रावण का दाह सस्कार करना

रामचंद्र लछमन सजुत । तिहा बैठा भूपती बहुत ॥
भभीषण ने बहुते समभाय । दहन क्रिया कीजे ग्रब जाइ ॥३८१५॥
रावण तीन खंड का राव । जाका तिहू लोक मे नाव ॥
वेगी क्रिया तास की होइ । काया विगडन पावै सोइ ॥३८१६॥
जो मृतक कौं होई ग्रबार । उपजै जीव वा देह मभार ॥
ग्यानवंत ढील नही करै । उठी वेग ज्यौं कारज सरै ॥३८१७॥
सब मिल गए मंदोदरी पास । ग्रठारह सहस जिहाँ त्रिया उदास ॥
सोगवंत बैठी सब नारि । देख राम नै करै पुकार ॥३८१८॥
नैनन नीर तहै ग्रसराल । रोवै सगली खाइ पछार ॥
तब रघुपति समभावै ताहि । भभीषण वीनवैं गहि बाह ॥३८१९॥
मंदोदरी बोली तब बात । दहन क्रिया कीज्यो भली भांति ॥
साज विमांण पदमसिर गए । चंदन ग्रगर बहु विध लए ॥३८२०॥
पदम सरोवर ग्रंदर ग्रान । चिता संवारी उत्तम थान ॥
बोले तबै श्री रामचन्द्र । कुंभकर्ण इन्द्रजीत हम बन्द ॥३८२१॥

मेघनाद और वदमय । च्यारू अटके मांनइ भये ।।
इनकू अब तुम छोडो जाइ । दरसन करै पिता का आइ ।।३८२२।।

बानर बसी बोले तव राइ । रावण ते वे बल अधिकाइ ।।
जे वह छूटै तो ले वैर । राक्षस बसी मिल उनसों फेर ।।३८२३।।

ग्रैसा बल हम पै है नही । अब कै उनसु जीतै कही ।।
उनकू मारि करो तुम षेह । दूरजन सू अब कैसा नेह ।।३८२४।।

मारि मारि करि लीजे जीव । अव ही उनकी काटो ग्रीव ।।
रामचंद्र चित करूणा आइ । उनका पिता जलै इस ठांइ ।।३८२५।।

अब नही दरसन पावै तात । बहुरि देखेंगे किह भाति ।।
फिर वोले सेना के लोग । ग्रैसानैं किम छोडन जोग ।।३८२६।।

भावमडल कहै छोडो उननै । जे तुम भय राखो नहि मनमे ।।
तुम मति कीज्यौ उनसो राडि । जब वे चतुर ता हम भी च्यार ।।३८२७।।

जो वे फिर भी हमसौ लडैं । तो हम भरोसा नाही करै ।।
भावमडल अनै हनूमांन । सुग्रीव अगद चले बलवान ।।३८२८।।

बे च्यारू है बन के माझि । महादुखी है दिवस न सांझि ।।
लोह पिंजरा चहुघा सूल । ऊभा तिहा दुख का मूल ।।३८२९।।

हाथ हथकडी पाव साकुली । मन मे तोप देह सब जली ।।
मन का छोड्या सब संदेह । राजभोग से तज दिया नेह ।।३८३०।।
अबकै छूटैं तो तप करै । फेर नही भवसागर पडैं ।।
ग्रैसा ऊना किया था घ्यान । भावमंडल तहा पहुच्या आंन ।।३८३१।।

कै रावन झुझ्या सग्राम । तुमनै कोकै लक्ष्मण राम ।।
दरसन करो पिता का आइ । खोलि पिंजरा अपने संग ल्याइ ।।३८३२।।
नीची दृस्टि गैवर की चाल । आवै ते च्यारू भूवाल ।।

कुंभकर्ण एव इन्द्रजीत को छोडना

रामचंद्र प्रति आणे सर्व । गलत भया जोधा का गर्व ।।३८३३।।

कहै राम तोकू द्यू छोडि । जो तुम वैर न करो बहोडि ।।
बोले कुंभकर्ण इन्द्रजीत । हमतो छोडी संसारी रीत ।।३८३४।।

जब छूटै तब दिष्या लेहि । राजभोग जल अंजलि देहि ।।
बेडी काडि छोडिया कुमार । रावण कीरिया करी संवार ।।३८३५।।

बहुता नै उपज्यो वैराग । घर परियण सगला सुख त्याग ।।
बहुता ने माड्यो सन्यास । अन्नपाणी तजि करै उपवास ।।३८३६।।
कोई भए सन्यासी रूप । कोई गए लंका मे भूप ।।
अपणे जाइ कुटुंब वे मिले । घरि घरि कथा राम की चले ।।३८३७।।

अपर मध्य मुनि का संघ सहित आगमन

अपर मध्य मुनि लहर तरग । छपन्न सहस्र मुनिवर ता संग ।।
रिधवत अैसे वे साध । जिहा रहैं तिहां मिटैं उपाधि ।।३८३८।।
वैर भाव सब ही का टरै । कोई नहीं उपद्रव करै ।।
लंका मै वे आया मुनी । च्यार ग्यांन का धारक गुनी ।।३८३९।।
कुसुमादि वन मे धारयो जोग । दरसन कू आया बहुलोग ।।
तपकिरात कंचन सम गात । सब कोई करै मुनीस्वर जात ।।३८४०।।
अैसा मुनि तब करता गौन । तउ रावण ने हुतता कौन ।।
जादे समैं रहै वे जती । तिहा कष्ट नही व्यापै रती ।।३८४१।।

मुनि को केवल ज्ञान की प्राप्ति

सर्व मही है स्वर्ग समान । दोइसै जोजन लौं परवान ।।
सुकलध्यान आतम ल्यो लाइ । केवलग्यान भया मुनिराइ ।।३८४२।।
अनत सत स्वामी अरिहत । भया जनम घातकी भगवत ।।
इन्द्र धरणेन्द्र चहु विध देव । जनम महोछव कीनी सेव ।।३८४३।।
मेरु सुदर्शन पाडु का शिला । श्री जिण का महोछव किया ।।
सहस्र अठोतर कंचन कुंभ । क्षीर समुद्र नीर भरि सुंभ ।।३८४४।।
कलस ढालि जय जय करी । तीन लोक मे महिमा धरी ।।
श्री जिन जी जननी कौं दिये । सुरपति फिर सुरआलय गये ।।३८४५।

धरणेन्द्र का आसन कंपित होना

आसण कप्या तब धरणेन्द्र । अवधि विचार कियो आनद ।।
त्रिकुटाचल लका मे थान । अपर मुनी कूं केवलग्यान ।।३८४६।।
जय जय सब्द देवता करैं । बाजा बाजै देव उच्चरै ।।

राम द्वारा विचार करना

रामचन्द्र बाजे जब सुणे । तब भूपति सोचै मन घणे ।।३८४७।।
अैसा कवण बली इस ठाइ । जिसके बाजा बजैं इह भाइ ।।
रामचन्द्र लक्षमण सुग्रीव । भावमंडल अगद गुण नीव ।।३८४८।।

नलनील कुंभकरण भूप । इन्द्रजीत मेघनाद अनूप ।।
लंका सींव गए सब राय । जय जय धुनि सुणी तहां आइ ।।३८४९।।

राम का मुनि के पास आना

सब मिल समझ्या इम राजान । मुनि नै उपज्या केवल ग्यान ।।
उतर भूप पयादे चले । ले पूजा सामग्री भले ।३८५०।।
दे परदिक्षणा करी डडोत । रघुपति पूछै धरम बहोडि ।।
च्यारू गति भाष्या मुनि भेद । सुभ अर असुभ करम का खेद ।।३८५१।।
उत्तम किरिया सगी जीव । मध्यम अधर अगति की नीव ।।
आरत रौद्र ने नीची गति । सात विसन नरक की थिति ।।३८५२।।
धरम सुकल जीव का आधार । भवसागर तें उतरै पार ।।
इन्द्रजीत मेघनाद जोड दोइ हाथ । हमारा भव कहिए मुनिनाथ ।।३८५३।।
बोले मुनिवर ग्यान विचार । सब जीवो का होइ आधार ।।

मुनि द्वारा पूर्व भवों का वर्णन

जबूद्वीप भरत छह षंड । कोमबी नगरी तस मड ।।३८५४।।

भवदत्त पंच सेठ के बाल । रूप लक्षन गुण अति सुविसाल ।।
सम्यक दृष्टि दोऊ बीर । सकल जीव की जाणै पीर ।।३८५५।।
ग्यान समुद्र मुनि आगम भया । दोऊ बीर दरसन कू गया ।।
पूछि क्रिया सरावग जती । कीया करिकै कहो सब भती ।।३८५६।।
साभल धरम अणुव्रत लिया । मुनि कै पास बैठ तप किया ।।
चद्ररस्मि नगरी भूपाल । दरसन कू आया ततकाल ।।३८५७।।
करि प्रदक्षिणा कहै नमोस्तु । धर्म वृद्धि बोले मुनिरस्तु ।।
नंद सेठ ता नगरी माझ । पूजै जी जिन वासर साझ ।।३८५८।।
लक्ष्मी घणी महा धरमेष्ट । चलै चाल जे सम्यक दृष्टि ।।
इन्द्रमुखी वाकी अस्तरी । जिनवाणी निस्चै मन धरी ।।३८५९।।
सेठ चल्या मुनिवर की जात । हय गय बाहन नाना भाति ।।
बहुत लोग आए सग सेठ । राजा विभव छिपी ता हैठ ।।३८६०।।
पचसम देख अचभा करै । नंद सेठ इतना बल धरै ।।
राजा तै अधिक परताप । भरम्या चित्त बिसारी आप ।।३८६१।।
मेरे तप का एही निदान । पाउ जनम याके घर आन ।।
छोडी देह भया गर्भ आइ । इन्द्रमुखी सुख उपज्या काइ ।।३८६२।।

तप के महातम का परवेस । चन्द्ररस्मि भयानक रेस ।।
गिरे कोट के कांगरा भूमि । कांपी मही भ्राए भूम झूमि ।।३८६३।।
निमित्तग्यानी जोतिसी बुलाइ । इह निमित्त पूछै बलराइ ।।
कहैं जोतिगी जोतिग देखि । नंद पुत्र के ग्रहै विसेष ।।३८६४।।
दोई पुत्र भुगतैंगे राज । असे सकुन भए हैं आजि ।।
राजा सोच करि करै विचार । होणी होइ सकै को टारि ।।३८६५।।
जे उसका है यही निमित्त । तौ क्यों आणों विकलप चित्त ।।
राजा गरभ की चिंता करै । नवमास पूरा अवतरै ।।३८६६।।
रतन वरधन जनमिया कुमार । वदन जोति ससि की उनहारी ।।
पाई बुद्धि अति भए सचेत । राजा सेव करै बहु हेत ।।३८६७।।
रतन वरधन परतापी भया । पृथ्वी जीत अति ऊचा थया ।।
सकल भूपति सेवैं पाइ । कर वदन देवैं सब आय ।।३८६८।।
भवदत्त तीजे स्वर्ग विमान । इन मन मांहि विचारा ग्यान ।।
हम थे पुत्र सेठ के दोइ । पसचम जीव रतनवरधन होइ ।।३८६९।।
राजविभव मे हुवा अध । वाकै नही धरम का बंध ।।
भरमैंगा वह इस ससार । माया फंद मे लहै न पार ।।३८७०।।
तातैं वाहि सम्बोधू जाइ । ज्यू वह भवसागर मे ना भरमाय ।।
असी चित धर आए देव । धारथा रूप दिगंबर भेव ।।३८७१।।
पौलिया जांण न देवै ताहि । रतनवरधन रूप धरचा नरनाह ।।
राजसभा माही सुर गया । पूछै नरपति अचरज भया ।।३८७२।।
सुर समझाव पिछली वात । हम तुम थे दोन्यु भ्रात ।।
तू पसचम हूं हो भवदत्त । माया मोह मे डूबै मत्त ।।३८७३।।
अजहू समझि जिम पावै पार । रतनवरधन कू भई सभार ।।
तजै राज तप साध्या जाइ । नवग्रीवा परि पाई ठाइ ।।३८७४।।
उहा तैं चये ऊरवब नम्र । दोन्यु देवराज के कुंवर ।।
राज भुगत उपज्या वैराग । भए दिगंबर सब धन त्याग ।।३८७५।।
तप करि दसमे स्वर्ग विमान । मंदोदरी गर्भ भए तू मान ।।
पसचम जीव भया इन्द्रजीत । भवदत्त मेघनाद इह रह रीत ।।३८७६।।
इन्द्रमुखी इच्छा इह धरी । ऐसा पुत्र भए सुभ घडी ।।
चन्द्ररसम सेठ अरनंद । भए जती भला गुरुवंदि ।।३८७७।।

तेरे तप का यह फल सही । हमारा बहुरि पुत्र होय कहीं ॥
इन्द्रमुखी मदोदरी भयी । इह विभूत नव पाई नई ॥३८७८॥
साभलि धरम दिगंबर भए । मंदोदरी पछतावा किये ॥
विधवा भयी पुत्र हुवा जती । कुभकरण है इह भती ॥३८७९॥
अब हम दिन कैसे भरै । बारह अनुप्रेष्या चित धरै ॥
मदोदरी सग अठारह हजार । तीस सहस्र राणी परिवार ॥३८८०॥
आरजिका सहस्र अडतालि । दिक्षा ले सुमरचा तिहू लोकपाल ॥
चंद्रनखा आरजिका व्रत लिया । करै तपस्या मन बच कया ॥३८८१॥
आतम ध्यान लगाया जोम । अवर विसारचा सगला सोग ॥३८८२॥

दूहा

सुण्या भवातर पाछला, मन का मिटचा अवसास ॥
राक्षस वसी अतिबली, करै मोक्ष की आस ॥३८८३॥

इति श्री पद्मपुराणे इन्द्रजीत मेघनाद भव निक्रमण विधानकं

७२ वां विधानक

अडिल्ल

राम लक्ष्मण का लका मे प्रवेश

रामचंद्र लक्षमण चलि लका । सकल सेना की मिट गई सका ॥
सेना सकल भई इक ठौर । इन सम वली न दूजा और ॥३८८४॥
पचास लाख हाथी की डोर । हय गय रथ का नाही वोर ॥
हस्ती पर रामचन्द्र लक्ष्मण । सोहै जैसे हैम रतन । ३८८५॥
चक्र सुदर्शन आगै खरै । जिसकी ज्योति तेज रवि हरै ॥
भूपति भूप चले सब सग । सोमैं उनके भले तुरंग ॥३८८६॥
हाट बाजार छाए चउहटै । देखै नारि अटारी अटै ॥
कोई भारि झरोखा तिरी । स्वर्ग लोक की सोभा धरी ॥३८८७॥
जर्क सके समाने वणे । जिहा तिहाँ सु बराबर तणे ॥
बिराधित सुग्रीव हनूमान । रथ बैठा अंगद बलवान ॥३८८८॥
नरपति अवर बहुत ही वणे । नामावली कहा लौं गिणे ॥
रतनवृष्ट करै रामचन्द्र । दरसन देख्या होइ आनंद ॥३८८९॥
पहूचे पोलि लका के कोट । इनकी छवि भानि भया ओट ॥
रत्नावली मू पूछी सीता बात । पुहप करण परवत विख्यात ॥३८९०॥

उह बन मे इह सीता सती । सुप्रीया सेव करैं बहु भती ।।
आवत देख्या श्री रामचन्द्र । रहसी सेवग भयो आनद ।।३८६१।।

जैसे शशि पूनम की ज्योति । एक पति का है अति उद्योत ।।

सीता की दशा

बाह पसार सुप्रिया कहै । श्री रामचंद्र का आगम लहै ।।३८६२।।

देखो सीता दृष्टि उघार । करो दरसन बेग भरतार ।।
सिर सीता के जटा मलीन । दुरबल देह घणी अति खीन ।।३८६३।।

कंत विछोह तज्या सिणगार । बहुत लगी काया सूं छार ।।
जाकै रामचन्द्र का ध्यान । महासती जगमे परधान ।।३८६४।।
पतिव्रता जनक की धिया । अपना मन सब विध दृढ किया ।।
धनि सीता जे पालै सील । पंचइन्द्री विषय राखै कील ।।३८६५।।
अपणा पति नै जाणै सत्य । अवर माता पिता सुत चित्य ।।
सीता सत दिढ राष्या भला । निश्चै तें तब रघुपति मिल्या ।।३८६६।।

राम सीता दर्शन

खोलि दृष्टि देष्यो रघुनाथ । नमस्कार करि जोडे हाथ ।।
ज्यूं जल पीवै सूका खेत । फूलै फलै बहु होइ सचेत ।।३८६७।।

ग्रैसे सुखसो वधै अरीर । विछोहा की भूल्या पीर ।।
भयो समागम देह समार । लक्ष्मण आइ मिल्या तिणवार ।।३८६८।।

सीता कुं मसतक नवाइ । नमा चर्णन कू लक्षमण राइ ।।
असीस दई सीता बहुभांति । बिछोहै की पुछी सब बात ।।३८६६।।

भावमडल बहन सूं मिल्या । सब परियण सुख माण्या भला ।।
विराधित सुग्रीव अवर हनुमान । नलनील अवर अगद आन ।।३६००।।

भूपति सकल करै नमस्कार । दई भेट फूलो के हार ।।
कुंडल कर्ण मोती अति दिपै । जिनकी जोति कान्ति रवि छिपै ।।३६०१।।

राम लक्ष्मण ज्यों सूरज चंद । सोभैं दोन्यु अधिक आनंद ।।
इन्द्र इन्द्राणी की सी जोड । सीता राम सोभै तिह ठौर ।।३६०२।।

चंद्र रोहिणी जोडी बणी । ग्रैसी इनकी महिमा घणी ।।
सुखसो बीतै बासर रयन । सकल प्रथी मे हुआ चयन ।।३६०३।।

अडिल्ल

अशुभ करम सब टाल आइ शुभ करम भले,
दोउधां दल संघार सूरमा अति भले ।।
सीता का सत फला जीत रघुपति भई,
रावण थाट्या कुडज जु कीरत सब गई ।।३६०४।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता राम मिलाप विधानकं

७३ वां विधानक

चौपई

लंका की शोभा

लंका के गढ भ्यतर चले । तिहा चैत्यालय देखे भले ।।
रतन समान लगे पाखांण । तिनकी ज्योति दिपै ज्यों भान ।।३६०५।।

सातिनाथ जिन प्रतिमा तिहा । सहस्र कूट चैत्यालय जिहां ।
दरसन कीया देव जिणंद । सीता के मनमें आनंद ।।३६०६।।

सब नरेस तिहां अस्तुति करैं । जै जै सबद सुणत मन भरै ।।
परिक्रमा दीनी तिहां तीन । ताल पखावज बजावै बीन ।।३६०७।।

घुरे दमामा नै करनाइ । कंसाल भेर वाजै तिहां ठांइ ।।
गुणीयन गावैं जिनपद भले । पढै सतोत्र भूपति सब मिले ।।३६०८।।

सांतिनाथ देवनपति देव । इन्द्र धरणेन्द्र करै सब सेव ।।
देइ मुक्ति तिहां निरभय थान । अजर अमर जिहा पूरण ग्यान ।।३६०९।।

असी बस्तु नही ससार । जिसकी पटंतर कहै बीचार ।।
दरसण अनंत नैं ज्ञान अनंत । बलवीरज का नाही अन्त ।।३६१०।।

तारण तरण सांति जिन भये । भव्य जीव त्यारि मुकति को गये ।।
सब भूपति मिल पूजा करै । सातिनाथ पूजा मन धरै ।।३६११।।

तिहा सुमाली अर माल्यवान । रतनश्रवा नरपति तिह थान ।।
गये भभीषण इनके पास । भूपति वे बैठा उदास ।।३६१२।।

मोह अंध तैं व्याकुल घणे । संसार रूप समझावै इने ।।
चहुगति मांहि अमर नहीं कोइ । जामण मरण सब ही को होइ ।।३६१३।।

इस विध हैं ससारी भोग । जैसे नदी नाव सयोग ।।
उतर गए पार वीछड गये सर्व । पुत्रकालित्र भूमि अर दर्व ।।३६१४।।

जेता विभव तेजा संताप । सूल थोडा बहूली आताप ॥
पीडा चिंता कबही ना मिटै । सोग किये काया बल घटै ॥३९१५॥

कबहू ह्वं पिता कबहू ह्वं पुत्र । कबहूं होइ मित्र कबहूं होइ सत्रु ॥
कबहु भाई कबही ह्वं बहिन । भ्रमं जीव मोह के जतन ॥३९१६॥

ग्यानी सोग तजै इह भांति । इह चिंता छोडो दिन रात ॥
सुख दुख जाणै एक समांन । हिरदै राखै उत्तम ग्यांन ॥३९१७॥

राखै सदा धर्म सो प्रीत । पुण्य पाप की जाणै रीत ॥
चिंता कूं छंडो तुम मात । म्हें सेवा करि हूं बहुभांति ॥३९१८॥

दे प्रतिबोध भ्राणे निज गेह । रसोई करवाई बहु नेह ॥
विदेहा रावण पटघनी । ताकै संग सहेली घनी ॥३९१९॥

बइठे मिदिर साति जिणद । सुमरण करै देव गुरु बंदि ॥
रामचन्द्र लक्षमण नै सिया । विदेहा कुं आदर बहु दीया ॥३९२०॥

छोडो सोग करो चित ठाव । हम सेवा करि हैं बहु भाइ ॥
तुम माता मन राखो चैन । करै वीनती मधुरे बैन ॥३९२१॥

बिभीषण द्वारा राम का स्वागत

तिहा भभीषण आये पहुच । वाकै हिये धरम की रुचि ॥
दोइ कर जोडि वीनवै खरो । चलो प्रभू भोजन बिध करो ॥३९२२॥

बाजा बाजे मन आनन्द । हस्ती परि चढे रामचन्द्र ॥
लक्षमन आदि भूपती सबै । भभीषण हरखै मन मे जबै ॥३९२३॥

मेरा धन्य जनम है आजि । राम आए इतना दल साज ॥
मो परि क्रीपा करी जो आज । मेर इहा आया भोजन काज ॥३९२४॥

महोछव सब नग्र मे किये । सबही आनदा निज हिये ॥
पदमप्रभू निज मदिर गये । दरसन देखि अधिक सुख भए ॥३९२५॥

पूजा रचना बारंवार । सकल नरेस करै नमस्कार ॥
रतन जडित कचन के कलस । उत्तम नीर वास तिहां सरस ॥३९२६॥

उबटणा ल्याए बहुत सुबास । भ्रमर न छोडै उनके पास ॥
हेम रतन की चउकी बणी । रतनजोति विराजै अति घणी ॥३९२७॥

रामचन्द्र लछमन तिहां न्हाइ । मर्दन करै मर्दनयां आइ ॥
सकल भूपति करि करि सनांन । पूजा कीनी श्री भगवांन ॥३९२८॥

विविध व्यंजन

बहु पकवांन अर व्यंजन घने । भात दाल सामग्री मिले ।।
कनकतवाई सोवन थाल । बैठा जिमैं सब भूपाल ।।३६२६।।
निरमल जल सौं झारी भरी । पीवैं भूपति मानैं रली ।।
दूध दही जीमे सब भूप । षट्रस व्यजन वणे अनूप ।।३६३०।।
बीडा माहि लेइ मुख सोधि । चोबा चदन ल्यावै सुगंध ।।
पहिरि झीणे वस्तर सुवास । सीतल पवन बीजणा ब्यार ।।३६३१।।
भभीषण जस प्रगटे भया । सब सेना कु भोजन दिया ।।
मंत्री मंत्र करै सुविचार । राजदेहु अब पट बैठाइ ।।३६३२।।
कोई कहै अजोव्या धनी । तिहा पट्ट बैठा सोभा घणी ।।
कोई कहै लंका बडी ठाम । रावण तीन षड का राव ।।३६३३।।
इणही ठाम दीजिए राज । मनबछित सीझै सब काज ।।
अठोत्तर कलस राम पै ढार । लक्षमण कौ नीका बैठार ।।३६३४।।
दिया राज लंका का सर्व । कचन कोट लहे बहु अर्व ।।
लक्षमण बिसल्या सू करि ब्याह । सब मिल मंगल करै उछाह ।।३६३५।।
एक था दसाग नगर को राव । रूपवती कन्या का नाव ।।
कुबेर ईस बार खिल भूप । कन्या कलसण माल सरूप ।।३६३६।।
उजेणी नगर सिहोदर राव । वज्र किरण राजा तिह ठाइ ।।
भेजी कन्या बहु गुणवत । व्याह लक्षमणा बलवंत ।।३६३७।।
जे थी रामचन्द्र की मांग । कियो विवाह दुख सब त्याग ।।
जे नारी पूरब पुनि कर दई । राम लक्षमण की नारी भई ।।३६३८।।
सुख मे बीत गए बहु वर्ष । सब नगरी मानैं बहु हर्ष ।।

इन्द्रजीत एवं मेघनाद द्वारा निर्वाण प्राप्ति

इन्द्रजीत मेघनाद तप करैं । रिध पाय सब कूं परिहरैं ।।३६३६।।
मेघनाद नें केवलग्यान । इन्द्रजीत धरि आतमध्यान ।।
टूटे चारि घातिया कर्म । उपज्या पचम ग्यांन सुधर्म ।।३६४०।।
विष अरियण तै गए सिवपंथ । मेघबर तीरथ ग्यान समर्थ ।।
तुंगी गिर पर्वत कै थान । जबू माली तप की ध्यान ।।३६४१।।
अहिमदर पायो सुविमाण । सुख विलास मे होइ विहांन ।।
अब कैं चउवीसी तप करैं । एवंव षेत्रइं जिम पद धरैं ।।३६४२।।

अनंतबोध घर प्रथम जिनंद । मुगति रमणी सुख होइ आनद ।।
कुंभकरण तप करै बहुत । नरवदा नदी पर केवल हुंत ।।३६४३।।

सुरपति करै महोछव तिहा । देही छोडि पहु च्या सिव जिहां ।।
मई स्वामी मुनिवर तप करै । पोदनापुर मे ध्यांन दिढ धरै ।।३६४४।।

आकास गामिनी पाई रिध । सब तीरथ फरस्यां उन सिध ।।
तप करि गया पचमे स्वर्ग । भया देव मिटिया उपसर्ग ।।३६४५।।

मारीच मुनी तिहां माधै जोग । करै वंदना सबही लोग ।।
पाई रिध तप कै परसाद । रागद्वेष छंडे सब वाद ।।३६४६।।

सहे बाईष परीसा धीर । असा तप साधैं वलवीर ।।
सीता सम सती नहि कोइ । अब कै भव गणधर पद होइ ।।३६४७।।

रावण होइ देव अरिहन्त । वाणी झालनी सिवपद संत ।।
इहा पूछै श्रेणिक कर जोडि । सीलवत नारी भीऊर ।।३६४८।।

जे नारी उत्तम कुल बडी । पालै सील ऊपमां चढी ।।
जिण ने दोऊ कुल की लाज । ते नही तजै सील का काज ।।३६४९।।

जे विध वे पालै हैं सील । मन गयद नै राखै कील ।।
सीता किण कारण अधिकाइ । गणधर होइ मुकति को जाइ ।।३६५०।।

श्री भगवत तब कहै विचार । सीता महासती है नारि ।।
विपत्ति मैंई फिरि कंत के संग । अगन्या किम ही करी न भग ।।३६५१।।

रावण हरी परीसह सही । अपणां सत टाल्या वह नही ।।
ग्यान अंकुस सौं मन गयंद । वैराग्य भाव सो राख्या बद ।।३६५२।।

वा का सत तै जीत्या राम । मन वांछित सब सीधा काम ।।
जे मन वच पालै इह कोइ । ऊंची गति पावै जिव सोइ ।।३६५३।।

लोक लाज सो राखै सत्त । निसचल रहै न ऊनका चित्त ।।
वे क्यो वाकी सरभर करै । जैसा भाव तइसी गति भरै ।।३६५४।।

जैसी करणी तैंसी ठांव । पालै धरम नी सील सुहाव ।।
पचवंसि राजधान का ग्राम । नौदर विप्र रहै तिस ठांव ।।३६५५।।

अभिमाना वाकी अस्तरी । असे अगनि पवन तैं जरी ।।
द्विज कौ सदा देहि वह दुख । कदे न राखै घर मे सुख ।।३६५६।।

रात दिवस कलह वै करै । ब्राह्मण देखि असी दुख भरै ।।
नौदर बाभण आन्या अन्न । अभिमानां निकस गई वन्न ।।३६५७।।

पोदनापुर का रुद्र नरेस । बामनी उठि गई तिहां देस ।।
पुहुप कर्ण नगर ना नांम । लवण प्रसाद राणि तिह ठाम ।।३६५८।।

हेमकर पंडित तिहां गुणी । राजा कदरप क्रीडा धणी ।।
लग्या पाव राजा के माथ । मनमे सोच करै नरनाथ ।।३६५६।।

भया परभाति काया करि सुध । बैठा पाट विचारी बुध ।।
भूपति बहुति सभा मैं आइ । नमस्कार करि लागे पाइं ।।३६६०।।

पडित गुणी आए परधांन । राजा उनसो पूछै ग्यांन ।।
राजा के माथै ल्यावै चोट । वासौं कहा कीजिये खोट ।।३६६१।।

मत्री बोले सब तिण बार । वाका चर्ण काटो भुपार ।।
हेमंकर द्विज बोल्या करि ग्यान । बेही चरन तुम उत्तम जान ।।३६६२।।

दीजे वाहि भला आभरण । असी बात सुणी उन कर्ण ।।
भये कोप सभा के लोग । इण विध किम भाषी ये फोक ।।३६६३।।

विप्र ने कह्या भेद समझाय । बहुत विभूति दई तबै राइ ।।
मित्र जसा ब्राह्मणी एक । असांक द्विज मुवा घरि टेक ।।३६६४।।

सिघइंद कवर अवर पुत्री । तिहा जटसाल द्विज नै थिति करी ।।
सीखी विद्या भए सुजान । सस्त्र सास्त्र सीखउ परवांन ।।३६६५।।

राजा की पुत्री उन हरी । सिघइद दोड्या तिह घरी ।।
घेरधा द्विज तिहां हुवा जुध । सेना की खोई सब सुध ।।३६६६।।

कन्या जीत गया द्विज गेह । लवण प्रसाद नै छोडी देह ।।
विप्र भया नगरी का राव । सब भूपति मे प्रगटचो नाव ।।३६६७।।

मील वृधि श्रीवृधन सजोग । पोदनपुर का भुगतै भोग ।।
राजा सुकेत वाधरपुर धणी । भूपति सू वा भय व्यापी घणी ।।३६६८।।

सिघोद देवी ता असतरी । श्रीवरधन की सका धरी ।।
रयण समय दपति उठि भगे । पोदनापुर वन जाइ न लगे ।।३६६६।।

तिहा भुयंग डस्यौ सिघ इद । देवी राणी कै हुवा दुद ।।
रोवै पीटै वन मैं वही । तिहा सहाय हुवा कोई नहीं ।।३६७०।।

मधु मुनिद करै तिहां तप । दयाभाव श्री जिनवर जप ।।
मुनि नें सपरस आइ वियार । मृतक विष उतर भई संभार ।।३६७१।।

श्री मुनिवर कू करी डंडोत । पूजा स्तुति करी बहुत ।।
बीती रयण उगीयो भाण । विनयदत्त पहुच्यो तिहां आण ।। ३६७२।।

सुण्या भेद रात का सेठ । अस्तुति करि उनकी ढिग बैठि ।।
श्री वरधन आया भूवाल । सिघ इंद सुं मिल्या तिह काल ।।३६७३।।

सील वृद्ध माया सूं मिली । क्रोध लहर दोनुं की टली ।।
श्रीवर्धन जोड्या दोउ हाथ । मेरा भव भाखो मुनिनाथ ।।३६७४।।

अवधि विचार करै मधु मुनि । सोभापुर नगर प्रथी धणी ।।
भद्रसेन आचारिज तिहा । राजा धर्म सुणैं नित जिहां ।।३६७५।।

एक दिन चाल्या जती कै पास । मारग मे आई खोटी बास ।।
दुर्गंध तै भया जीव बुरा । राजा अपणा घर कुं मुडा ।।३६७६।।

एक नारी को असा दुख । देह वसाई गधावैं मुख ।।
जिहा निकलै ते गली वसाइ । असी नारी बहै तिण ठाइ ।।३६७७।।

मुनि दरसन पाया तिण नारि । गया दुख बहै उतनी बार ।।
अमल राय सुणि अचरज करै । अणुव्रत गुरु पासैं धरै ।।३६७८।।

आठ गाव आठ को राखि । राज विभूति पुत्र को भाषि ।।
दया दान विचारै ग्यान । आउ पोकरि सौधर्म विमान ।।३६७९।।

उहा तै चइ श्रीवरधन भए । सुण्या धम्म चरण कु नए ।।
मित्रजसा पूछै परजाइ । इह माता हू किह भाई ।।३६८०।।

विप्र नै तब दे दिया सराफ । नगरी जलै उदै भयो पाप ।।
बहुते लोग क्रोध कौ पाइ । हुतासन मे दियो विप्र जलाइ ।।३६८१।।

वह द्विज मर करि हुवा वगमन । रसोई करै राजा कै दिन दिन ।।
एक दिन मुनि नृप कै घर आइ । भोजन निमित्त ऊभा मुनिराइ ।।३६८२।।

वगमन मुनि कू विष दिया । देही छोडि सुरपद पाइया ।।
विप्र मरि करि पहुच्या नर्क । लख चौरासी रह्या गर्क ।।३६८३।।

मित्र जसा भई अस्तरी । असोषसरक की हुई पुत्री ।।
राजा पूछै एह संदेह । पुरुष सौं नारी भई क्युं एह ।।३६८४।।

कहै सुनीसुर सुणुं नरेस । अब तुम परतक्ष देखो भेस ।।
राजा सुकात राज मे मुवा । भोजन पुत्र सेठ की अस्तरी हुवा ।।३६८५।।

अभिमाला प्रसाद लवध की असई । करुह की राणी तब थई ।।
मधु मुनि किया अत सन्यास । ईसान स्वर्ग पद पाया वास ।।३६८६।।

जे कोई धरै धरम सूं चित्त । निसचै पावैं पंचम गति ।।
भवजल तिर जाई सिव मध्य । तिहाँ सासती पूरण रिध ।।३६८७।।

दूहा

धरम ध्यांन लव ल्याइ करि, धरै ज संजिम भार ।।
चिहु गति म्यंतर ना रुलै, पावै सुख अपार ।।३९८८।।

इति श्री पद्मपुराणे मधु आख्यान विधानकं

७४ वां विधानक

चौपई

नारद मुनि का अयोध्या मे आगमन

नगर अजोध्या उत्तम थान । भरथ प्रताप तपं ज्यु भान ।।
परजा सुखी दया चित धरणी । इन्द्रलोक की सोभाबरणी ।।३९८९।।
अपराजिता मिंदर सतखणे । पश्चात्ताप करै मन आपणे ।।
मेरी कुख रामचन्द्र भए । जोवन समए वे उठि गये ।।३९९०।।
धरती पर धरने नही पाव । वन वेहड भ्रमै दुख के भाव ।।
पुत्रां ने देखू किण भांति । अपराजिता रोवई मात ।।३९९१।।
अन नारी रोवै ता सग । ज्यो घनहर बरसै बहती गंगा ।।
नारद मुनी आए तिण घरी । नमस्कार असतुत बहु करी ।।३९९२।।
चउका दिया बैठण आण । बहुत कियो आदर सनमान ।।
मौनवत वे नारद मुणी । जटाजूट वाणी करि गुनी । ३९९३।।
कमडल पींछी कर मे लिये । भसम लगाइ तन धोती किये ।।

अपराजिता से प्रश्न

पूछै नारद कहो मो मात । सुकोमल का कुल उत्तम भात ।।३९९४।।
राजा दसरथ की पटधणी । तुम किम हो किम असुमणी ।।
तब बोली अपराजिता माइ । नारद मुनी तुम थे किस ठांइ ।।३९९५।।
रामचन्द्र लक्षमण वनवास । तिम कारण हम रहा उदास ।।
धातकी खंड मे पूर्व विदेह । सुरेन्द्रपुर नगर गया था एह ।।३९९६।।
त्रिलोक ईस जिन का अवतार । मिंदर मेरु सुरपति तिहां वार ।।
न्हाई करी जनम की रीत । ढारि कलस उपजाई प्रीत ।।३९९७।।
इंद्र धरणेन्द्र आरती करै । नर मानुष बहु सेवा करै ।।
आभूषण पहराय कीए सिंगार । माता ने सोप्या तिण बार ।।३९९८।।
तेईस वरस रह्या मैं तिहा । तुमारा भेद कछुअन मैं लह्या ।।

राम कथा

सर्व प्राण हित मुनि पै सुणी । रामचन्द्र की कथा उण भणी ।।३९९९।।
रामचन्द्र लक्षमण अरु सिया । दंडक बन में आश्रम लिया ।।
सीता कूं रावण ले गया । रामचन्द्र लक्षमण नैं दुख भया ।।४०००।।
विराधित सुग्रीव राम सू मिल्या । रावण सुं जुधा किया उनो भला ।।
लक्षमण लाग्या सकती बाण । हुवा मूरछा गए पराण ।।४००१।।
द्रोवणमेघ की बिसल्या धिया । उवैं उपाव लक्षमण का किया ।।
सुणी बात अपराजिता माय । गिर गई भूमि मूर्छा खाइ ।।४००२।।
जे लक्षमण कै मारै सकति । कैसी हुई उनू की गती ।।
सीता का सुषमाल सरीर । बन बेहड तिहा अन्न न नीर ।।४००३।।
बन फल खाइ रहै बन माहिं । बदी बीच महादुख ताहि ।।
जाय पडे समुद्र मझार । कैसे पाऊं उनकी सार ।।४००४।।
नारद मुनि बोले समझाई । लक्षमण जीया करै उपाव ।।
बाध्या कुंभकरण इन्द्रजीत । मेघनाद ने किया भयभीत ।।४००५।।
रावण ने मारी राज वे करै । तुम मनमे चिंता मति धरै ।।
अब मै लंका गढ मे जाइ । राम लक्षमण आणु इस ठांइ ।।४००६।।

नारद का लंका मे आगमन

नारद चाल्यो बैठि विमाण । त्रिकुटाचल कु कियो पयान ।।
पदम सरोवर रावण की चिता । अंगद क्रीडा करै सुख की लता ।।४००७।।
अतहपुर अगद के सग । खेलै राणी मन उछरग ।।
चउकस बैठे चौकीदार । नारद पूछै रावण सार ।।४००८।।
रखवाले कहै सुणि रे अग्यान । तू आकास से बैठा आन ।।
रावण कु मारया लक्षमण ठौर । रामचन्द्र सा बली न और ।।४००९।।
आई किंकर लक्षमण सो कही । अंगद ने तब हासी गही ।।
तपसी कू ल्यावो मो पास । देखैगा राम तब करै उपहास ।।४०१०।।
हस्ती चढ अगद सु नरेन्द्र । नारद कु ले चाले करि बन्द ।।
धकाधकी सूं किंकर गहिलिया । रामचन्द्र आगै कर दिया ।।४०११।।

राम द्वारा नारद का स्वागत

रामचन्द्र नारद कुं देखि । आदर दिया ऋषीस्वर प्रेव ।।
नमसकार करि बैठाया पाट । भूपति सभा जुडी थी ठाट ।।४०१२।।
रामचन्द्र पूछै कुसलात । मुनि जी कहो धरनी की बात ।।

नारद द्वारा अयोध्या वर्णन

नारद कथा अजोध्या कही । अपराजिता केकई सुख नही ।।४०१३।।
तुम कारण झूरै दिन रयण । उनके मन को नाही चयन ।।
जो तुम उनकी सुध ना लेहु । प्राण तजै जाणौं निसदेहु ।।४०१४।।
वेग चलो तुम मेरे संग । सोग वियोग सब होवै भंग ।।
रामचन्द्र लक्षमण सुणि बैन । व्याप्या मोह भरे दोउ नैन ।।४०१५।।
विराधित सुग्रीव अगद हनुमान । इनकी अस्तुति कही बखानि ।।
तुम कीया परमारथ काम । तुमते रही हमारी मांम ।।४०१६।।
परदुख भजन तुम भूपती । तुमसों उर हो हा किम भती ।।
भावमंडल की अस्तुति करै । तुम तै ए सब कारज सरै ।।४०१७।।
बहिन तणी मेटया सब दुख । तुम प्रसाद हुआ सब सुख ।।
भभीषण सु बोले रघुनाथ । जे तुम आनि मिले हम साथ ।।४०१८।।
तो हम जीत्या लका देस । हमारा तुम मान्या उपदेश ।।
अजोध्या को हम करि हैं गौन । तुम उपगार सकै कहि कौन । ४०१९।।
लंका राज हम तोकू दिया । भभीषण बहुरि चरण को नया ।।
मेरी अरज सुणो जगदीस । करो राज तुम बहुत बरीस ।।४०२०।।
हू सेवग विनऊं कर जोडि । माल बुलावो इस ही ठौर ।।
हम पै राज सधै किण भाति । मैं सेवग सेऊं दिन राति ।।४०२१।।
रामचन्द्र बोलै लक्षमणा । जनम भौम देखण वौ मना ।।
फिर बोले भभीषण राइ । सोलह दिवस रहौ इस ठाइ ।।४०२२।।

अयोध्या मे राम द्वारा दूत भेजना

भेज्या दूत अयोध्या नगर । सावधान होवै जन सगर ।।
विद्याधर तिहाँ भेज्या दूत । अपराजिता आवत देखे दूत ।।४०२३।।
आए दूत भरत कै पास । सुणी जीन मन भया हुलास ।।
बहोत दिया दूत को दान । आदर भाव किया सनमान ।।४०२४।।
अपराजिता केकई पै आन । सुणे बचन भया मन आन ।।
पीछे आवत देखी सैन । बहुत हुवा नगरी मे चैन ।।४०२५।।
रतन कंचन बरसे तिह घरी । सब अयोध्या कंचन सू भरी ।।
भरत नृप यह आग्या दई । अयोध्या फेर समारो नई ।।४०२६।।

सकल गेह कंचन के किये । रतनजडित चित्रसाली किये ।।
विद्याधर आये सूत्रधार । ते मंदिर प्रति भले सभार ।।४०२७।।
जे जे द्रव्य हीरा था लोग । तिण का मेटया सब ही सोग ।।
जे कोई नगर गये थे छोडि । उह दुनियां ले आणि बहुरि ।।४०२८।।
बहुत लोग अन्न भी बसे । लंका तैं यह अधिकी दिसै ।।
राजामंदिर सब तै भला । देखत ही सब का मन खुला ।।४०२९।।
बारह जोजन लांबी मही । दस जोजन चोडाई सही ।।
नगरी का कंचन भई कोठ । अन्य सहु मिट गई खउट ।।४०३०।।
श्रीजिन का चैत्याला कियो । आदिनाथ मंदिर तिहां भए ।।
दोई सहस्र थंभ की साल । सहस्र कूट सोभैं सुविसाल ।।४०३१।।
सहस्र थंभ की वेदी बणी । बंदरवाल मोती की बणी ।।
सहस्र एक ध्वजा तिहा लगी । रतन जोति चहुदिस जगी ।।४०३२।।
कमल सरोवर वापिका कूप । सीतल पवन सुहावन रूप ।।
अडतीस जोजन वन चहु पास । फूलै फलैं बहु वृक्ष सुवास ।।४०३३।।
सोलह दिन में संपडा सही । सुर नर देख अचंभैं रही ।।
रामचंद्र इह पाई सुष । चलणे की कीणी तब बुध ।।४०३४।।

दूहा

अजोध्या कंचन की बणी, रतन लग्या बहु भाइ ।।
अमर सुख व छोड करि, मोहे सुरपति आइ ।।४०३५।।

इति श्री पद्मपुराणे साकेत वरणनं विधानकं

७५ वां विधानक

चौपई

राम सीता का अयोध्या गमन

लंका राज भभीषण दिया । अजोध्या कूं पयाणा किया ।।
बइठि चले पुहुपक विमाण । विद्याधर संग हैं बलवान ।।४०३६।।
त्रिकुटाचल लंकागढ छोडि । भाई सोभैं है चिहु ओर ।।

पुष्पक विमान से सीता को मार्ग का परिचय देना

मेरु सुदर्शन देख्यो सिया । पूछैं कवण ए ठाम सोभया ।।४०३७।।
बोले राम सुदर्शन मेरु । महोछा श्रीजिन जनमत वेर ।।
ए है जनम कल्याणक ठाम । इसका सुण्यां पुराणु नांम ।।४०३८।।

दडक वन देख्यावै राम । तुम दसकंध हरी या ठाम ।।
उहा ते आइ देखी बहै नदी । चारण मुनी आए थे जटी ।।४०३९।।
भोजन दान दिया था इने । जटा पखी पूरब भव सुने ।।
जटा पखी इत सेती गह्या । रावण वा के प्राण कुं दह्या ।।४०४०।।
बंसगिर पर्वत देख्या वही । देसभूषण कुलभूषण मही ।।
उनु का जब उपसर्ग निवार । केवल ग्यान लह्या तिण बार ।४०४१।।
बालखिल्य जिहा था भूप । कल्याण माला पुत्री सुम्वरूप ।।
रष्या भूप करै था घणौं । वाकौं माग्या था लक्षमणौं । ४०४२।।
दशाग नगर बज्रकर्ण नरेस । तिहा आय परदेसी भेस ।।
उन दीया था हम प्रतै आहार । वाका दुःख चले थे टार ।।४०४३।।

अयोध्या दर्शन

आए तिहा अजोध्यापुरी । कचन मदिर सोभा अति खरी ।।
सीता पूछै इह नगरी कौण । कनकमय दीसै है जिहा भौन ।।४०४४।।
लका तै दीसै आगरी । बसै सघन उत्तम जन भरी ।।
रामचंद्र बोले समझाइ । अजोध्या जनम भूमि यह ठाइ ।।४०४५।।
विद्याधरै सवारी आन । अैसा कोई अवर न थान ।।
आए जिहाँ बीस देहुरे । रिषभदेव सोभै अति खरे ।।४०४६।।
उतरे भूमि जिनदरस निमित्त । भरत सत्रुघन आए पहुत ।।
देखी सेन्या घणी विभूति । पुहपक विमाण सोभा सजुक्त ।।४०४७।।

राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन मिलन

रामचद्र लखमण कै पाउ । भरथ सत्रुघन लाग्या धरि भाउ ।।
उनु लगाया उननै कंठ । छूटि गइ मन माहिली गंठ ।।४०४८।।
मैगल डोर लाख पचास । अस्व रथ पाइक बहु भास ।।
देखै नारि पुरुष सब लोग । सब नगरी मे मिट गया सोग ।।४०४९।।
पुहपक विमाण परिच्याऊं वीर । सोभैं कनक वरण सरीर ।।
मोती माणक हीरा लाल । डालै रामचंद्र परि उछाल ।।४०५०।।
सीता सती बहु सोभै पास । जैसे पूनम ज्योति प्रकास ।।
विराधित कूं देखि लोग सब कहै । चद्रोदिक सुत इनै सग रहै ।।४०५१।।
जब खरदूषण सूं भई मार । तव विराधित किया उपगार ।।
दडक बन तैं ले गए पाताल । रामलखण पहुचाए हाल ।।४०५२।।

देख्या अंगद सुग्रीव हनूमांन । इन सुग्रीव सेनां सब ग्रांन ।।
रामचन्द्र का कीया काज । राखी रघुबंस की लाज ।।४०५३।।
हनूमांन बल महिमा घणी । इसकी बात आगैं भी सुणीं ।।
भावमंडल जनक का पूत । देव एक कीया वह पत ।।४०५४।।
जनमत ही सुर नैं इह हर्या । विजयार्द्ध गिरिपैं गिर पड्या ।।
पुहुपावती नै पाल्या याहि । पुंन्यवंत पराक्रमी ताहि ।।४०५५।।
जितने राजा सेना साथ । जैसे इन्द्र देव की साथ ।।
बाजंतर बाजै बहु संग । ता सबद सुख पावै अंग ।।४०५६।।
गावैं गुणि जन मधुरे वैंमन । करैं राग होई सुख चैन ।।
बिरदावली जाचक जन कहैं । नगर लोक थकित होइ रहैं ।।४०५७।।
अपराजिता अवर कैंकया । सुप्रभा और सकल सुख भया ।।
सतखिण मिंदर बइठी जाइ । दरसन देखैं पुत्र का आइ ।।४०५८।।
निकट पोल आइया बिवाण । माता पुत्र सू भया मिलाण ।।
चारू माता के पद नए । भरे नयन तब उनके हिये ।।४०५९।।
कंठ लगाय परिग्रसा भेटिया । नए जनम ए अब आइया ।।
असुभ कर्म तै भया वियोग । पुंन्य उदय तैं भया संजोग ।।४०६०।।

अडिल्ल

पुंनि मिलैं कुटुंब और सुख संपति घणी,
वृद्धि होइ परिवार जिसी आवै अणी ।।
करो धरम सुं प्रीत रिध बहू पाइये ।
मध्य लोक सुख देखि मोक्षपुर जाइये ।।४०६१।।

इति श्री पद्मपुराणे श्री रामचन्द्र लक्ष्मण अयोध्या आगमन विधानकं

७६ वां विधानकं

चौपई

अयोध्या वैभव

दोइ कर जोडे श्रेणिक राइ । प्रभु जी कथा कहो समझाइ ।।
केती विभव राम कैं भई । केती पृथ्वी साधी नई ।।४०६२।।
श्री जिन वाणी गहर गंभीर । सुणतैं भाजैं प्राणी की पीर ।।
गौतम स्वामी व्यौरा कहैं । सुणि श्रेणिक मन निश्चै बहै ।।४०६३।।
कनक कोट चतु:साला नाम । तीन कोट अजोध्या ठाम ।।
एक कोट नगर के फेर । दूजा कोट फिर भीतर घेर ।।४०६४।।

तीजा कोट सब ही तें बडा । खातिका तीन निरमल जल भरया ।।
च्यारू पौल बज्र किवाड । हस्ती पौल बनी मझधार ।।४०६५।।
जिन प्रतिमा की महिमा घणी । ढालि कलस अति सोभा बणी ।।
रतनजोति सोभै चिहु ओर । चद्रवा बणे घणे सब ठौर ।।४०६६।।
बणी पूतली जिहा लूबत । सोभै सब ठामै बहु भत ।।
वृक्षावली का बणे कटाव । उनूं को कहा लग बरणाव ।।४०६७।।
सभामडल झरोखा सु अनूप । सुख सेज्या परि पोढे भूप ।।
बहु सुगंध पाटंबर तिहां । मानसथंभ बिराजै जिहां ।।४०६८।।
अइठे पट्ट फिरै सिर छत्र । चमर ढरै गगाजल जत्र ।।
सोलै सहस्र मुकट बंध राई । करै सेव तेव मन वच काई ।।४०६९।।
बैजयंती सभा तिहा जुडी । वर्द्धमान मदिर रिध बढी ।।
अनोपम गदा खडग कनकार । सूर जहां सुसोभै तरवार ।।४०७०।।
बज्रावर्त्त समुद्रावर्त्त । ग्रैसा धनुष बहु सोभा धर्त ।।
उत्तम वस्त्र सोभै सब अंग । जर्क सुबसन बणे पचरग ।।४०७१।।
पंचास लाख गउ को खीर । छपन लाख गउ लक्षमण धीर ।।
सत्तर कोटि नगर में ग्रान । तीन खंड के भूपति जान ।।४०७२।।
सेव करै नित सकल नरेस । नरपति खगपति मानै आदेस ।।
चक्र सुदर्शन जोति अपार । प्रगटै तीनू लोक मझार ।।४०७३।।
च्यारू बीर पट्ट बैठे नित्त । सकल सभा मे उनु का चित्त ।।
वन उपवन के फल अरु फूल । देखि ताहि पथि करि हैं भूल ।।४०७४।।
उछलै जल फिर उतरै भूमि । वृक्षावली तिहा रही झूमि ।।
मदिर बणे सब रोस के भले । तिहां बैठि नृप मानै रले ।।४०७५।।
आस पास पर्वत्त उतग । निर्मल नीर बहै तिहां गंग ।।
गिरवर तै इहै ऊचा कोट । छिपै भानु उह गढ की ग्रोट ।।४०७६।।
सुर्ग सुख तजि मोहे देव । ग्रजोध्या इछै रघुपति सेव ।।
रामचद्र की आगन्या भई । धर्मसाला सब राखो नई ।।४०७७।।
पर्वत परि चैत्याला किये । नगर नगर जिन मदिर भए ।।
अटूट भंडार घटै है नहीं । भोग्य भूमि सब है मही ।।४०७८।।

सीता की नगर में चर्चा

नगर नगर चर्चा इह चली । रामचंद्र कीनी नही भली ।।
सीता कूं रावन ले गया । सीता का सत कैसे रहा ।।४०७९।।

रामचंद्र सा करै ए कर्म । कैसे रहै अन्य का धर्म ।।
जे नारी बाहिर पग देइ । ताहि सुभट कैसे घर मैं लेइ ।।४०८०।।

उत्तम कुल की पूरी लाज । पर घर भर्मै तिन सो नहीं काज ।।
असी चरचा घर घर होइ । असुभ कर्म मति बांधो कोइ ।।४०८१।।

भरत के मन में वैराग्य

भरत तणों मन भया वैराग । सकल रिध सौ मेल्यो लाग ।।
राजभोग विष समझ्या सबै । सब ही विनासी जाणौं अबैं ।।४०८२।।

जोवण जल बुदबुदा समान । जरा व्यापै तब थकैं परान।।
पांचु इन्द्री हुवै क्षीण । पराक्रम थकै देही होइ हीण ।।४०८३।।

तब कैसे पालै चारित्र । चार कषाय जीव के सत्रु ।।
विषय सताइस सहु दुख के मूल । जे अग्यान मोह मे भूल ।।४०८४।।

लोही मुत्र हाड आमिष । ताहि देखि जिय मानैं सुख ।।
काया कूडै काचा पिंड । जिम कुंभार बणावै मंड ।।४०८५।।

एक घडी में होई छार । अंसे सूं कहा करै पियार ।।
मनुष्य जनम किस ही विध लहै । सयम को निश्चय सों गहै ।।४०८६।।

इह विभूति सग्या उणहार । सोभी जात न लागै बार ।।
जैसे दावानल वन दहै । वडे वृक्ष पल मे भस्म करि रहै ।।४०८७।।

सब वन भस्म करै वह आग । तउ न हारै पल पल जाग्य ।।
जेता ईंधन डारै ताहि । तो भी पावक तृपत न नाहि ।।४०८८।।

ऐसे भुगतैं सब जग मही । तो भी तृष्णा मिटती नही ।।
ज्यो समुद्र अति ही गभीर । गंगा नदी मिल्या सब नीर ।।४०८९।।

उमडै मही समुद्र किह भांति । अंसे जीव मोह के नसात ।।
रागद्वेष छोडो करि ग्यांन । सुख दुख समझै एक समान ।।४०९०।।

जैसे गंगाजल के पास । काक धरै आमिष की आस ।।
मृतक परि बैठ चला जल माहि । उठै लहर अगम अथाह ।।४०९१।।

समुद्र मांहि पहुंच्या वह काग । तिहां तैं निकसैं न मारग लाग ।।
देखै उदक चिहुं दिसि ओर । उडने का पावै नही ठौर ।।४०९२।।

ऐसे जीव माया बस पडै । भवसागर में भ्रमता फिरै ।।
जैसे मींडक पंकज रुचि करै । तिहां भुयंग आय पकडै ।।४०९३।।

अैसे लोभ दे जीव नैं दुःख । नर्कां पहुचावें तिहां नही सुख ॥
इह विभूति सपणी उणिहार । अब हू ल्यूं संयम का भार ॥४०६४॥
करैं विचार भरथ भूपती । किण ही प्रकार होस्युं जती ॥
अब जैहूं सयम व्रत धरूं । सकल लोक मुज भाखें बुरूं ॥४०६५॥
अब लू राज अकेले करा । रघु नै देख जैन व्रत धरया ॥
कछु राखिये लोकाचार । कछु कीजिये जीव का आधार ॥४०६६॥
जैसे केहरि पिंजरा माझ । इम भरथ विचारै वासुर सांझ ॥

राम से भरत की प्रार्थना

रामचन्द्र सो बिनवें भरथ । आग्या द्यो तो लेहु चारित्र ॥४०६७॥

राम का उत्तर

रामचद्र समझावें बात । तो कूं राज दिया है तात ॥
हम आग्या देवे कूं कौन । तुमारे मिलन कूं किया था गौन ॥४०६८॥
करो राज परजा सुख देहु । चउथें आश्रम दिष्या लेहु ॥
चक्र सुदर्शन तुम पें रहो । जो कुछ आग्या हमसू कहो ॥४०६६॥
छत्र धरावो अपने सीस । तुम हो सब पृथ्वी के ईस ॥
सत्रुघन चमर ढारैगा खडा । लक्षमण मंत्री सब गुण बडा ॥४१००॥
तीन षड का भुगतो राज । हमनैं नही राज सों काज ॥
करैं वीनती भरत कर जोडि । कीया भोग कछु रही न खोडि ॥४१०१॥
स्वर्ग लोक सुख देखे घणे । तो भी जात न जाणे भले ॥
इह विभूति विनसत नही बार । माया मे भरि भ्रमैं ससारि ॥४१०२॥
ऊंच नीच गति भरमैं जीव । सुभ असुभ की बांधैं नीव ॥
करो दान पालो रतन तीन । च्यार दान विध सो द्यो नित्त ॥४१०३॥
दयाभाव सो राखो चित्त । सुख दुख सम जाने ज्ञानवंत ॥
समझावें मंत्री परवीन ।दया दान राखो मन चित्त ॥४१०४॥
कारिमो दीसै परिवार । कोई न चलै जीव की लार ॥
धरि चारित्र लहूं गति मोक्ष । तिहाँ सासता सुख सतोष ॥४१०५॥
स्यंघासन सौं उतरया भरथ । तब लक्षमण करै है थुति ॥

भरत को पुनः राम के द्वारा समझाना

अब ही तुम मति छांडो राज । जोबन समैं नहीं तप का काज ॥४१०६॥

वैराग भाव हम चित्त धरैं। तुम्हारे संग तुम तप आचरैं ॥
केकइया माता विललाइ । राणी रुदन करै बहु भाय ॥४१०७॥

सीता अबर बिसल्या आइ । सहु परिवार कहैं समझाइ ॥
कोमल काया लघु है वेस । महा कठिन मुनिवर का भेस ॥४१०८॥

षट रितु के दुख कैसे सहो । सज्या भूमि परीसा लहो ॥
नीरस भोजन वन का वास । किम छांडो तुम भोग विलास ॥४१०९॥

स्वर्ग लोक सम है यह रिद्ध । अन्य जनम किए देखी सिद्ध ॥
श्रावक धर्म पालो घरमाहि । परजा दान करो नित चाह ॥४११०॥

वाल समै तप करणा नहीं । चउथे आश्रम दिख्या कही ॥
वेग चलो अब करो सनान । हमारा बचन सुणु दे कान ॥४१११॥

पकडि बांह खैंचै सहु अस्तरी । ल्यावैं उबटणा सुगध अति खरी ॥
झारै जल धोवैं सब अग । भरथ ध्यान छूवा नहीं भंग ॥४११२॥

पूजा करी श्री जिनदेव । सकल अस्तरी करैं उभी सेव ॥
त्रिलोकमंडण छूटो गयद । तोडि बंधण करचा अति दुंद ॥४११३॥

पाडे हाट मदिर अरु पौल । सब नगरी मा माची रौर ॥
छूटै अगन जत्र अरु बांण । गज नहीं मानै कोई काण ॥४११४॥

उन्मत्त हाथी का अकस्मात आगमन

जिहा भरथ करै पूजा ध्यांन । मैंगल आया उनही थान ॥
व्याकुल हुई सब अस्तरी । भरथ भूप भय चित्त न धरी ॥४११५॥

रामचन्द्र लक्षमण इह सुनी । उनकूं देखत हू सब धुनी ॥
डारै फास हस्ती कू घनी । मानै नही क्रोध का धनी ॥४११६॥

देखि भरथ कूं हार्थीनिया । नमस्कार सब बहु बिध किया ॥
भरथ नरेस अचंभै भया । या का मद काहे तै गया ॥४११७॥

जातीं समरण भयो गयंद । पुरब भव का समझ्या बिद ॥
ब्रह्मोत्तर सुरग सुरगति पाई । उहा तैं चइ राजा के आइ ॥४११८॥

दान देह कीया बहु मांन । तातै हस्ती उपज्या आंन ॥
दीजे कछु दया के निमित्त । बइयाव्रत कीजे बहु मत ॥४११९॥

सोरठा

जो कछु दीजे दान, तजो सकल अभिमान कूं ।।
पावइ निरभय थान, दया धरम परभाव सूं ।।४१२०।।

इति श्री पद्मपुराणे त्रिभुवन मडल संक्षोभ विधानकं
७७ वां विधानक

चौपई

भरत का हाथी पर चढना

हाथी खडा धरम के ध्यांन । राम लक्ष्मण ढिग पहुंचे आन ।।
भूचर खेचर नरपति घने । चउथां फेर मनख इम भणे ।।४१२१।।

इह दती सब तै मयमंत । कैसे भाव धरया इन सत ।।
भरत आइ चढे ता पीठ । सीता विसल्या आक्रमो दीठ ।।४१२२।।

एभी संग चढी तिण बार । अपनीं अपनी ठाम विचार ।।
डोली डोला अनै चकडोल । रथ पालखीया बहुत अमोल ।।४१२३।।

सेना बहुत चली ता संग । पहिर आभूषण भले सुरग ।।
कुसुम अमोद नदन उणिहार । तिहाँ आए सगला परिवार ।।४१२४।।

उतर अंतहैपुर सब गये । सगले लोग अचंभै भए ।।
इह गैवर था महाबलीष्ट । ऊभा रह्या मौंन करी दिष्ट ।।४१२५।।

हाथी द्वारा तप साधना

बहु महावत आए पास । मला मलीदा सौंज सुवास ।।
हाथी खावैं न खोलै नयन । सेवग बोले मधुरे बैन ।।४१२६।।

आभूषण डारे सब डारि । गज नही देखै आंखि उघाडि ।'
आया अनै सथानिक खडा । खम्बा सकल सउंज तिहा पडया ।।४१२७।।

जैसे खडा खंभ पाषान । तैसे मंगल ल्याया ध्यान ।।
जन की बात न पावै कोइ । ए अचरज सब कै मन होइ ।।४१२८।।

वैद्यक ग्रंथ संभाले वैद्य । अउषध ल्यावै मन में खेद ।।
विद्याधर जत्र मत्र बहु करैं । कुछ उपाय नही सुसरैं ।।४१२९।।

करैं जोतिगी ग्रह चाल । कोई कहै मारचा है इन बाल ।।
ऐसा गज पृथ्वी पै नही । ए रावण के था पारोधन सही ।।४१३०।।

जो कोई कहै सो करै उपाव । कोई न जाणै उसका भाव ।।
अपनी अपनी सब ही कहैं । भोई वेदन कोई रहै ।।४१३१।।

दूहा

करै जतन सब गुणीजन, वैद्यक ग्रंथ विचार ।।
मन की को जाणै नही, रहे सकल पचि हार ।।४१३२।।

इति श्री पद्मपुराणे त्रिभुवन अलंकार समाधान विधानकं

७८ वां विधानक

चौपई

देश भूषण कुलभूषण मुनि का आगमन

देशभूषण कुलभूषण केवली । अजोध्या आए पूजी रली ।।
महेन्द्र वन अति उत्तम थान । सोभै दोऊ चन्द्र अरु भान ।।४१३३।।

तीन लोक मे प्रगटे मुनी । रामचन्द्र लक्ष्मण यह सुनी ।।
रघुपति मन मे भए उछाह । दरसन हित चाले नरनाह ।।४१३४।

भरथ सत्रुघन चारो बीर । सोहैं कंचन वरण सरीर ।।
त्रिभुवन अलंकार हस्ती पलाण । तिहां बाजै आनंद निसाण ।।४१३५।।

सुग्रीव नील अंगद हनमान । भूपति संग चले बलवान ।।
अपराजिता अर केकईया । सुप्रभा संग चाली बहु त्रिया ।।४१३६।।

सीता आदि चली बहुनारि । आने लोक सकल परिवार ।।
पहुचे वन तब उतरे भूमि । दर्शन पाय चरण कौं भूमि ।।४१३७।।

दई प्रक्रमा करी डंडोत । कहो वाणी धरम उद्योत ।।
कैसी विध धरम जती का होइ । कैसे श्रावग पालै सोइ ।।४१३८।।

केवलग्यानी ज्ञान अपार । कहैं धरम मुनि प्राण अधार ।।
धरम समान सगा नहीं कोइ । धरमही तैं ऊंची गति होइ ।।४१३९।।

धरम सहाय जीव के सग । अन्यवि बरज्या रंग पतंग ।।
ऐसा है ससारी भोग । कबहु साता असाता जोग ।।४१४०।।

धरमहि सेती इन्द्र फणीन्द्र । चक्रवर्त्ति अर देव जिणंद ।।
ऊंची गति बहुरि निरवाण । पावै मोक्ष सासता थान ।।४१४१।।

लक्ष्मण द्वारा हाथी के सम्बन्ध मे जानकारी चाहना

लक्षमण पूछै द्वै कर जोडि । हाथी की कथा कहिये बहोड ।।
किरण कारण इण कीया दुद । समता भई भरत कूं वद ।।४१४२।।

केवल लोचन ग्यान अगाध । पूजत है प्राणी के साध ।।
नगर अजोध्या नाभि नरेस । मरुदेई सरस्वती कै भेस ।।४१४३।।

सरवारथ सिध रिषभ देववाग । छह महिना आगे परकास ।।
भई भौमि कनक सी सरब । रतनवृष्टि वरष्या बहु दर्व ।।४१४४।।

गरभ जनम कल्याणक भए । सुरपति खगपति सब ही नए ।।
बज्रवृषभनाराच सस्थान । प्रथम जिनेन्द्र महा बलवान ।।४१४५।।

लख त्रियासी पूरब राज । पाछै किये धरम का काज ।।
चार महस्र भूपती साथ । आतम ध्यान धरै जिन नाथ ।।४१४६।।

जैसे सुदरसन अटल मेर । असे तप साधै मन घेर ।।
अनि भूप सहि सकै न भूख । लगी त्रिषा मन लाग्या सूख ।।४१४७।।

तब वे मुनि करै विचार । जई फिर जाउं नगर मझारि ।।
मारै भरथ सहु नै ठौर । तातै मत हम थापै और ।।४१४८।।

दरसन च्यारि निराले भए । उनने भेष निराले किये ।।
उनमे भृष्ट भया मारीच । ग्यानामृत तै सब को सीच ।।४१४९।।

सुप्रभा राजा प्रहलना अस्तरी । ते भी बसै अजोध्या पुरी ।।
पुत्र दोइ वाकै गर्भ भए । सूर्य उदै चन्द्र उदै निरभये ।।४१५०।।

जब वे कुंवर जोवन के वैस । मारिच पास सुण्यो उपदेस ।।
सन्यासी का साधै जोग । छोडि दिया ससारी भोग ।।४१५१।।

च्यारूं गति भरम्या वे दोइ । कबहू देव मनुष गति होइ ।।
कबहु कि तिरजंच गति फिरै । तप करि राज पुत्र अवतरै ।।४१५२।।

हस्तनागपुर हरिपति भूप । मनोलता राणी सु स्वरूप ।।
तास गर्भ चन्द्रउदय जीव । कुलकर नाम धरम की नीव ।।४१५३।।

विश्वकर्म विप्र अगनिकुल नारि । सूरज उदय लिया अवतार ।।
सुरति रति नाम पुत्र का धरया । बेद पुराण विद्या सुं भरया ।।४१५४।।

हरपति राजा तपकूं गया । राजभार कुलकर कूं दिया ।।
सुरति रति प्रोहित भूपति हेत । सन्यासी महत शिष्य सो हेत ।।४१५५।।

पंचा अगनि साधै वन मांहि । करै तपस्या बसुार सांझ ।।
नरपति सुणि दरसन कूं चल्या । अभिनदन मुनि देख्या भला ।।४१५६।।

तेरह विध चारित्र का धणी । मति श्रुत ग्यांन अवधि उपनी ।।
मुनि देख्या वाकी ढिग जाय । नमस्कार करि लाग्या पाइ ।।४१५७।।

मुनि बोलै राजा सु बैन । दादा निज देखूं तुम नैन ।।
जिहां तापसी साधै ध्यान । जलै सरप वा लकडे थान ।।४१५८।।

राजा गया ते लकडा निकाल । चीरचा ठूठ निकल्या व्याल ।।
जैन धरम की धरी परतीत । धन्य साध जे इन्द्री जीत ।।४१५६।।

पाखडी जाण्या सब भेष । निश्चै जैन धरम सुं प्रेष ।।
राजा चाहै दिक्षा लेई । सुरति रति प्रोहित तब शिक्षा देइ ।।४१६०।।

तुम वालक अर सतति नाहि । सतति बिन दीक्षा नही काहि ।।
जे बिन सतति तप को धरै । मर करि जीव कुगति मे पडै ।।४१६१।।

जब वह पुत्र सु ईसरथ । सौंपो राज रिध सब गरथ ।।
अपणा कुल का करिये धरम । अनि भेष धरो मति भरम ।।४१६२।।

ज्यो क्षीरकदम का पर्व्वत पुत्र । नारद सुं वाद किया बहुत्त ।।
वसू भूप कों भेज्या नरक । असा प्रोहित बरै जै भडक ।।४१६३।।

श्रीमदाराणी सुणि बात । राजानै समभावै बहुभाति ।।
नृप वाका मानै नही कहा । प्रोहित खोट हिया मे गह्या ।।४१६४।।

राणी सो विप्र कहै समझाय । राजा जैन धरम रुचि ल्याइ ।।
सीख हमारी सुणं न राय । मेरा जजमान हाथ तै जाय ।।४१६५।।

विष देकरि मारै इस घडी । राणी प्रोहित इह चित्त धरी ।।
विष देकरि तब मारचा राव । राणी कु कोट चुवै सब ठाम ।।४१६६।।

प्रोहित सातवा नरक दुख पाय । महा दु:ख सों तिहा विहाइ ।।
राजा चउगं भरम्या जौन । अन समय भए इक भौन ।।४१६७।।

मीडक मूसा मृग नै मोर । कुकर गति दोन्युं इक ठौर ।।
ऊंच नीच गति भरम्या भाइ । प्रोहित जीव हाथी की काय ।।४१६८।।

राजा जीव मीडक जल बीच । हाथी नै रौंध्या तिहां कीच ।।
फिर मीडक उपज्या तिहं ठौर । कोवा खाय गया भी और ।।४१६६।।

मींडक जीव मूंसे गति पाय । हाथी तै बिलाव गति आय ।।
मूसा कु बिलाव किया भक्ष । दोनू उपज्या जल मैं मच्छ ।।४१७०।।

कुकडा मच्छ बिलाव ने मूसा । धीवर ने गह्या जाल मे धस्या ।।
उहा तै मरि वाभण के गेह । राजग्रही नगर विप्र का एह ।।४१७१।।

बहु बाकै सिष जउलका अस्तरी । अतर सौं पुत्र जणे सुभ घडी ।।
प्रथम रमन दूजा बिनोद । मात पिता ले पालै गोद ।।४१७२।।

जोवन समैं विचारैं एह । रमन धरै विद्या सु नेह ।।
कुपढ मनुष पसू तै बुरे । जिन कछु भेद चित्त नही घरे ।।४१७३।।

पशु भला जो उठावै बोझ । मूरख जैसा ज गल रोझ ।।
गुनी होय तो समझै ग्यान । कुपढ कहा जानै पहचान ।।४१७४।।

गुण तै राज सभा मे काण । आदर भाव सदा सनमान ।।
गुण हीणा जैसे बिनु आख । जैसे पखी बिनू पाखि ।।४१७५।।

असी सोच वाणारसी गया । गुरु पै जाय चरण कूं नया ।।
तिहा सिष्य पढै थे घने । सेवा करै उनूं ढिग भणे ।।४१७६।।

वै सिष्य भोजन देवै याहि । रमन पढै मन मे उछाह ।।
च्यारू बेद पढे मन ल्याइ । विद्या कला सीष्या बहु भाइ ।।४१७७।।

गुरु पै विदा होय करि चल्या । राजग्रही वन देख्या भला ।।
बर्षा भई घनहर घनघोर । बरषा भई बन नाच्या मोर ।।४१७८।।

भीजत चल्या रमण तिण बार । देख मढी इक वस्त्र उतार ।।
वस्त्र निचोड वह सूतो तिहा । स्यामा भावज आई जिहा ।।४१७९।।

विनोद त्रिया असोग दत्त सू नेह । उनै कीया वचन जष्य कै गेह ।।
जब उठ स्यामा वन कू गई । विनोद विप्र तरवार नागी लई ।।४१८०।।

त्रीया पाछै चाल्या लाग । असोगदत्त अग्रै आवै था जाग ।।
कोटवाल कै आया हाथ । बाध मसक वह ले गया साथ ।।४१८१।।

गई वाभणी मड के बीच । रमन सोवै था लागी मीच ।।
विनोद जाणै यह इस का जार । खडग काढि तसु सीस उतार ।।४१८२।।

देह छांडि भैमा भया अंध । दोनूं जले वयर सनमंध ।।
भये भील मृग गति पाइ । वनमैं रहै वापै भए काइ ।।४१८३।।

नगर कपिला राजा स्वयंभूत । विमलनाथ दरसन हित जुत ॥
बे दोनु मृग आ लडे राय । जिन मंदिर राखे तिहां जाय ॥४१८४॥

अनपांणी घास तिहां हरया । सेवा करै जतन सुं खरा ॥
समाधिमरण मे त्यागी देह । विनोद जीव सेठ के भया गेह ॥४१८५॥

नाम धनदत्त लखमी गेह अपार । बाइस कोडि जुडें दीनार ॥
रमन जीव लहि स्वर्ग विमांन । भए पुत्र धनदत्त के आन ॥४१८६॥

वारुणी नाम सेठ की घरणी । याणी जाकै पुत्र थिति वरणी ॥
निमित्तग्यानी पंडित बुलाइ । जनमपत्री लई लखाइ ॥४१८७॥

घडी मूहर्त्त उत्तम बार । उपज्या वैराग तजे घर बार ॥
इतनी सुणी दंपती वात । पुत्र नै बरजें बाहर जात ॥४१८८॥

वन उपवन मंदिर सवराइ । खाणा पीवणा सेवा सार ॥
फूल पान उवटणा सनान । आभूषण दे बहुला आण ॥४१८९॥

अंसी जुगत दिन बीते घणे । प्रभात समय सुपना मे सुणे ॥
अगले भव हम थे दोइ भ्रात । अब कै भए पुत्र अने तात ॥४१९०॥

भानुं उदै बाजैंतर होई । जै जै सबद करै सब कोइ ॥
श्रीधर मुंनि कौं केवल ग्यान । अंसी भूप नै सुणी कान ॥४१९१॥

पच भूमि तै देखी भीर । पहुच्या चाहै मुनिवर नीर ॥
तबै उतरै था साहू का कुमार । डस्या भुयगम खाइ पछाड ॥४१९२॥

मर करि स्वर्ग मा देवता भया । मनबांछित सुख भुगतै नया ॥
चंद्रातपुर प्रकास यस भूप । माधई राणी महा सरूप ॥४१९३॥

उहा तै चया भया जगदूत । पाई सरोध जोवन संजूत ॥
प्रकास जस नै दिक्षा लई । राज बिभूत जग दूत ने दई ॥४१९४॥

भोग मगन मे बीतै काल । दुर्जन दुष्ट तणी सिर साल ॥
राजा कूं उपज्या वैराग । राज भोग कू चाहै त्याग ॥४१९५॥

मंत्री समझावै राजनीत । सतति बिना नही होय प्रतीत ॥
जब होइ पुत्र तब छंडो राज । पालो प्रजा धर्म सुं काज ॥४१९६॥
राजा कूं लागै बुरा सब कर्म । अणूव्रत पालै जिणवर धर्म ॥
राजभोग मे छंडया प्राण । ईसान स्वर्ग पाया सुभ थान ॥४१९७॥
जंबू द्वीप क्षेत्र विदेह । अचल छत्री वालहरनी सूं नेह ॥
रतन संचय नगरी का नाम । ईसान स्वर्ग तै चया तिह थांन ॥४१९८॥

अभीराम पुत्र जनमीया कुमार । छहुं षंड रहसी या संसार ।।
जनम समये दीया बहु दान । और बजे आनद नीसान ।।४१९९।।

दिन दिन कुमर बढै जिम चंद । देख रूप सुख होइ आनद ।।
जोवन समय विवाही नारि । राजसुता वरी तीन हजार ।।४२००।।

भोम माहि बरतै दिन रयन । कुमर बिचारै मनमे जयन ।।
स्वर्ग लोक सुख देखे घणे । तैभी जात न जाणे गिणे ।।४२०१।।

इह विभूति ससारी जरजरी । मगन हुवा पावै गति बुरी ।।
वैठा पट्ट तिहा रणवास । ग्यांन उदय हुवा परकास ।।४२०२।।

ए सुख समझै जहर समान । जो कोई भखै ताहि जहर समान ।।
विष खाइ एक जु बार । विषय लपटी भ्रमै संसार ।।४२०३।।

जोबन जात न लागै वार । पडै जीव माया के आधार ।।
पुण्य पापनै जाणै एक । जाके राखै मन मे टेक ।।४२०४।।

ऊच नीच गति डोलै हम । उत्तम मध्यम पाए हस ।।
पुण्य उदय पावै बहु सुख । जब बिहडै तब मानै दुःख।।४२०५।।

रोग सोग चिन्त आरत धरै । फिरि फिरि जोनी सकट परै ।।
अब मैं सयम व्रत कू धरू । जैन धरम निश्चय सू करू ।।४२०६।।

राणी सुणकर भई अडोल । अंसे सुणे कत के बोल ।।
पालै व्रत तब राजिकुमार । एक अतर लेइ अहार ।।४२०७।।

पाख महीनें करै पारणा । मदिर देखै जिहा सतघणा ।।
उभा जोग लगावै ध्यान । देही दुर्बल कीनी जान ।।४२०८।।

काल अनंत इन्द्रिया ने पोष । भरम्या जीव बिना सतोष ।।
तातै देह डसौं इस भाति । सहू परीसा अपना गात ।।४२०९।।

चउसठ सहस्र वर्ष तप किया । ब्रह्मोत्तर स्वर्ग पर बासा लिया ।।
धनदत्त सेठ काल को पाइ । लख चौरासी भरम्या जाइ ।।४२१०।।

पोदनांपुर सकनाकं द्विज । महिणी नारि धर की द्विज ।।
ता घरि अवतरया धनदत्त आइ । जोवन समये कर्म कमाइ ।।४२११।।

जूवा खेलै सेवै सात विसन । सातै विध लेस्या अर किसन ।।
ब्राह्मण नैं सहू को दीये गाल । उनु जब बेटा दियो निकाल ।।४२१२।।

मृदवत निकल्या देसांतर गया । गुरुसंगत विद्यारथी भया ।।
बसंत नगर मे विद्या पाइ । बहुर पोदनापुर में आइ ।।४२१३।।

ग्रीष्म रित त्रिषा अति लगी । विप्र गेह माता थी सगी ।।
तिहाँ आइकै मागै नीर । महिनी ब्राह्मणी आई तीर ।।४२१४।।

भरि झारी पाया जल ताइ । अवर चला नयनुं परिवाह ।।
तब परदेसी पूछै बयन । तै का माता भरे जल नैन ।।४२१५।।

कहे बभणी मेरे था पूत । बाहिर नीकल्या दुःख बहुत ।।
जैं तै देख्या हूँ तो कही । तो मोकुं समझावो सही ।।४२१६।।

जब वह बोल्या मैं हू तेरा पूत । अब हूं विद्या पढे बहूत ।।
सकताकं पिता महिणी माय । मिल्या पुत्र कठ लगाय ।।४२१७।।

जिहां तिहा आदर होइ । जोतिग वैद्यक पूछै सब कोइ ।।
बहुत दिना सुभमारग चले । अत फेर खोटं मति गये ।।४२१८।।

सात विसन सेव्या दिन रात । धर्म छाडि कुहावै कुजात ।।
वसत अंगना बेस्या रित भया । वा सगति सगला गुण गया ।।४२१९।।

मात पिता का खोया दर्व । वाको बुरा कहै हैं सर्व ।।
लज्यावंत होय देस ही तज्या । ससाक नग्र गया वह भज्या ।।४२२०।।

नदवर्धन रामा के भडार । चोरी निमित्त गए तिह बार ।।
भूप मता राणी सू करै । प्रभात समय हम दिष्या धरै ।।४२२१।।

अंसी चोवर साभली बात । समझि ग्यान कंप्या बहु गात ।।
इतनी बिभव राय ने त्याग । मनम्या धरा बहुत वैराग ।।४२२२।।

मैं जन्म्या मात पिता कै जाय । भिक्षा करि करि पोषी काय ।।
खोटे करम कमाये घणे । अब प्रायश्चित कहा लुं गिणे ।।४२२३।।

मदमत्त गया ससाक मुनि पास । दिक्षा लई सुगति की आस ।।
गग गिर पै परीसै सहै । गुण निधान मुनिवर तिहां रहै ।।४२२४।।

विद्या पटि समकित चित धरघा । गुणनिधान केवल तप फुरघा ।।
सुरपति नरपति पूजा करी । देखि विप्र जिन दिष्या धरी ।।४२२५।।

आचिरज भया सबा कै चित्त । कईसी भयाकै मन थिति ।।
मास उपवासी ल्यावै ध्यान । ब्रह्मोत्तर पाया सु विमाण ।।४२२६।।

इन्द्र समा इनका प्रताप । सुख मा मूल गए संताप ।।
मदमत देव गए आर्वल पूर । सुख मे भया दु'ख का मूर ।।४२२७।।

भरत के पूर्व भव

हा हा कार करैं बहू भांति । ए सुख छोडि अवै कहा जात ।।
माया माझि चया लोक मध्य । समेद सिखर थानक है सिध्य ।।४२२८।।

हाथी उपज्या अति मयमत । सहश्र जूथ मांहै गरजंत ।।
जइसै समुद्र गरजना करैं । इह विध मंगल वन मे फिरैं ।।४२२६।।

जिहा सरवर देखै वह भले । क्रीडा करै कमल तिहा खिले ।।
गगातट पर पावै पीर । डरै मकल देखै इस वीर ।।४२३०।।

महा भयानक दीसै रूप । या सनमुख नही आवै भूप ।।
जैसा बादल सजल बडा स्याम । अैसा दती सोहै उस ठाम ।।४२३१।।

पर्वत पर चूवै झरना झरै । भ्रमर गुंजार तिहा अति करै ।।
तब रावण आया था जिहा । हाथी सब दल मारे तिहा ।।४२३२।।

रावण ने पकड्या उस बार । त्रिलोक मडल मा नही संसार ।।
रामचन्द्र लक्षमण की जीत । रावण झुझ्या हाथी भयभीत ।।४२३३।।

त्रिलोक कंटक त्रिलोक मडल नाम । अइरापति सम इसका भाव ।।
भरथ तणै मन भया वैराग । तव धाए वा सनमुख लाग ।।४२३४।।

जाती समरण उपज्या चित्त । गहै मौन होइ रहै अनित्त ।।
अभिराम देव स्वर्ग तै चया । दसरथ के या सुत भया ।।४२३५।।

सोरठा

सुणि पिछला सनबध, सकल सभा चक्रित भई ।।
समझै भेद अनत, पूरव भव सब आपणे ।।४२३६।।

इति श्री पद्मपुराणे भरत त्रिलोक अलकर भवकीर्त्तन विधानकं

७६ वां विधानक

चौपई

भरत द्वारा वैराग्य लेना

भये अचभय सगला लाग । रहै थकित जैसे साधै जोग ।।
जाण्या सकल कर्म का बध । बहुतै तज्या मोह का फद ।।४२३७।।

भरत भूपती हूँ कर जोडि । नमस्कार कीया तबै बहोडि ।।
जीव भ्रम्यौं चिरकाल अनत । हीडत हीडत नहीं पायो अंत ।।४२३८।।
थके बहुत न लहे विसराम । ज्यौ पथिक भ्रमै गामों गाम ।।
शीतल छांह ढूंढै वन मांही । वाको कही पाइये नांहि ।।२३९।।
चहुंगति भ्रमत लह्यो नहीं पथ । सुण्या नहीं जिणवाणी ग्रन्थ ।।
मिथ्या धर्म तैं लहीय न ठोडि । प्रभू बिन सरणा नाही और ।।४२४०।।
भवसागर अति अगम अथाह । सद्गुरु पकडै बूडत बांह ।।
अजर अमर तहां पावै सौख्य । गुरु सगत तैं लहीए मोष्य ।।४२४०।।
आभूषण सब दीने डार । कुंडल सोभैं जोति अपार ।।
सहु उतारि कर लुचे केस । मुनिवर भए दिगंबर भेस ।।४२४२।।
राजा सहस्र दीक्ष्या लई सग । केकई नयन बहैं जिम गग ।।

केकयी का विलाप

हाइ पुत्र तैं कीनी बुरी । मेरी दया हू हिय नही धरी ।।४२४३।।
जोबन समे तजे भरतार । पुत्र लिया सयम का भार ।।
ए दुःख मैं कैसे करि महूं । पुत्र बिना हू कैसे रहूं ।।४२४४।।
मूर्च्छावंत भई कंकईया । वैद्य उपाव घणा ही किया ।।
भई सचेत बहुरि बिललाइ । रामलखण बोले समझाय ।।४२४५।।
माता मति करो तुम विलाप । हम सेवा तुम करिहैं आप ।।
भरथ जु कुल उधारण भए । सुभट बरत जिण रुचिसौं लए ।।४२४६।।

केकयी का वैराग

पहले ही मन था वैराग । अब इन करचा सकल ही त्याग ।।
केकईया मन आण्यां ग्यांन । धरम विचार किया सुभ ध्यान ।।४२४७।।
प्रथीमती आरजिका कै पास । दिक्ष्या लही मुकति की आस ।।
तीन सै सग अनि असतरी । सत्य सील संयम सुं भरी ।।४२४८।।
आतम ध्यान लगाया जोग । छंडया सब ससारी भोग ।।
दया भाव सगला पर नित्य । समकित सु भया निश्चल चित्त ।।४२४९।।

दूहा

धरचो ध्यान भगवंत सुं, आतम सुं धरि प्रीत ।।
भरथ भूप हौ बहुबली, करी धरम की रीत ।।४२५०।।

इति श्री पद्मपुराणे भरत केकइया निःक्रमण विधानकं
८० वां विधानक

चौपई

श्रेणिक राय करै प्रसन्न । कौण कौण सगति हुवा मौन ॥
कैसी कैसी पाई ठाम । तिणका व्यवर सुणावो नाम ॥४२५१॥

वाणी एक तसु भेद अनेक । प्राणी करै व्याख्यान अनेक ॥
सिद्धार्थ रतनवरधन राय । अबुवाहन जंबुनद धरि भाव ॥४२५२॥

सुमीमा नन्द आनदकद । सुमति महा विधि सेती चद ॥
जनवल्लभ इद्रध्वज सतवाहन । हरि सुमित्र धर्म बलवांन ॥४२५३॥

सपूरन नद सुदन सात । सहम स्वेतांबर भये इह भात ॥
केई गये पंचमी गति । केई स्वर्ग लोक की थिति ॥४२५४॥

रामचन्द्र लक्ष्मण द्वारा दुःख प्रकट करना

रामचंद्र लखमण बिललाइ । भरत बिना कछु चित्त न सुहाइ ॥
हा हा कार भए चिहुंओर । आभूषण सब डारे तोडि ॥४२५५॥

रुदन करै फाडै सब चीर । रुदन करै बहु घलै जल नीर ॥
हाय भरथ हम आए क्यू । हम भी तो संग दिख्या ल्यू ॥४२५६॥

तुम बिन कैसे जीवै बीर । तुम विछुडे बहु पावै पीर ॥
तब मंत्री समझावै बैन । सुणौ बात चित राखो चैन ॥४२५७॥

भरथ ने कीये उत्तम कर्म । रघुबसी कुल उपज्या धर्म ॥
सव परिवार चढाई रती । आप करी मुकती की गती ॥४३५८॥

राम का राज्याभिषेक

करो राज अब ढालो कलस । परजा सुख पावै ज्यु सरस ॥
राम करै राज का काज । लक्षमण राज करो महाराज ॥४२५९॥

सब नरपति लक्षमण पै गये । नमसकार करि गढे भए ॥
प्रभुजी चलो करो तुम राज । पटाभिषेक करो तुम आजि ॥४२६०॥

लक्षमण चले सभा संयुक्त । बाजंतर बाजैया बहुत ॥
आए रामचन्द्र के पास । दोऊ भ्राता मन उल्लास ॥४२६१॥

पट ऊपर बैठे दोउ वीर । रतन कनक कलस भरि नीर ॥
ढारे कलस एक सो आठ । पदम नरायण राज का पाट ॥४२६२॥

मुकुट छत्र पुहपन की माल । सोभै मुगताहल अनै लाल ।।
आभूषण पहरैंण अनूप । तीन खंड का सेवैं भूप ।।४२६३।।
जै जै सबद करै सब लोग । करै कोतुहल अरि अति भोग ।।
सकल नारि सीता पै गई । पट गैठाणि बधाई दई ।।४२६४।।
विसल्या कूं पटराणी किया । किंषधपुर सुग्रीव ने लिया ।।
अनि नगर नल नील कुं दिया अवर राजा मागै सोइ दिया ।।४२६५।।
लक्षमण विशल्या राम कै सिदा । इनसौं बडी अवर न को तिया ।।
करै राज इम भ्राता दोइ । नगर मे हर्ष मानै सब कोइ ।।४२६६।।
लका राज बिभीषण दिया । ककणपुर सुग्रीव ने लिया ।।
श्रीपुर नगर दिया हनुमान । किंनर नगर रत्नजटी मान ।।४२६७।।
भावमडल रथनूपुर देस । भौमी अपनी लही दरेस ।।
जेते राजा थे उन पास । त्या त्या की सब पुगी आस ।।४२६८।।

दूहा

असुभ करम को टाल करि, मिले कुटुंब सरेस ।।
मनवंछित सब सुख भए, पाया बहुला देस ।।४२६९।।

इति श्री पद्मपुराणे रामचंद्र लक्षमण पट्टाभिषेक विधानकं

८१ वां विधानक

चौपई

शत्रुघन को राज देने की इच्छा

राम शत्रुघन लिये बुलाइ । कहैं वचन प्रभुजी समझाइ ।।
अरध राज प्रथवी का लेहु । देस भोग मनुष्य करेहु ।।४२७०।।
आनि देस के वंछउ दरेस । तिहाँ तिहां थाप कऊं महेस ।।
आणई मनमे करो विचार । जे मागो ज के द्यु इणबार ।।४२७१।।

दूहा

पोदनापुर राजग्रही, पुरपट्टण बहु ठाम ।।
जो मन इच्छो सत्रुघन, कहो तिहा का नाम ।।४२७२।।

चौपई

सत्रुघन द्वारा मथुरा का राज्य चाहना

दूं कर जोडि सत्रुघन कहै । मथुरा नगर मेरे मन रहै ।।
रामचंद्र कहले तिह बार । मथुरापति का है बल अपार ।।४२७३।।

रावण नगरौं जमाई वनी । वार्प बरछी कहिए भली ।।
एक चउट सूं हणै सहस्र । अनि भले हैं वार्प सस्त्र ।।४२७४।।

बरछी कर की करमे रहै । ऐसे गुण गरब तन गहै ।।
तुम वासो मति माडो युद्ध । अवर देस मागो तुम सुष ।।४२७५।।

सत्रघन कहई सुनो रघुनाथ । कोई मति आवो मो साथ ।।
मेरी भुजा आवध समान । दशरथ पुत्र महा बलवान ।।४२७६।।

जो तीडी दल अति संघट्ट । गरुड चलै सब जाई अहट्ट ।।
अैसा दल बल वाकै जुड्या । मारू घेर वाहि ठा खरा ।।४२७७।।

रामचद्र मनमे बहु दिया । मधुराय विगार नह कीया ।।
बिन अवगुन कैसे दुख देह । सबसो राखै धरम सनेह ।।४२७८।।

सत्रुघन सुन वीनती करै । आग्या प्रभू इन मन नही धरै ।।
अैसा मधु है कहा वराक । जाकी मानु इतनी धाक ।।४२७९।।

जैसे मधु बडा सहेत । वार न लागै उसको गहेत ।।
घेर लेउ इस विधि तुरंत । तो मैं सत्रुघन महंत ।।४२८०।।

राम लक्षमण इह आग्या दई । सेनौं साथ घनी कर लई ।।
समुद्रावर्त्त धनुष कौ लिया । वाजतर सबद बहु किया ।।४२८१।।

माता सुप्रभा पै गया । नमस्कार करि टाढा भया ।।
आग्या द्यो माता जी मोहि । जीतु दुर्जन पाउं सोइ ।।४२८२।।

माता दीये आसिरवाद । होज्यो जीत भगवंत प्रसाद ।।

शत्रुघन द्वारा मथुरा पर चढाई

चले सत्रुघन सेना जोडि । पहुचे आय मथुरा की ठोर ।।४२८३।।

चहुधा घेरि दमामा दिया । जईसै पंछी पिंजरा किया ।।
इह विध घेरी च्यारूं ओर । सहु नगरी मा माची रोर ।।४२८४।।

मधुराजा सोचै मन माहि । मो सम बली अवर कोउ नाहि ।।
घेरया मोहि सत्रुघन आइ । मत्री मत्र करै उन पाय ।।४२८५।।

अचाणक घेरे मधुराई । करई विचार वईठतण ठाई ।।
जे उमडे दल मथुरा धणी । या कूं सजा लगावैं घणी ।।४२८६।।

कोई कहै रावण सा बली । रामचन्द्र सो कछु ना चली ।।
रावण मारि जीते सहु देस । इन समान कोई नहीं नरेस ।।४२८७।।

रामचन्द्र का छोटा वीर । याकों कौण सके करि धीर ।।
जे सुख फेरि रामचन्द्र चढै । एक एक का मुंड बहु उडे ।।४२८८।।

के ते लकरें अपनें बार । जल नवका महा गुंण सार ।।
जीतैं सत्रुघन के हार । असी उनूं कहीं गवार ।।४२८९।।

सत्रुघन भेजिया बसीठ । ठाम ठाम दोडिया बीठ ।।
दूत गए वे नगर मझार । जिहां सहर मथुरा का दरबार ।।४२९०।।

सत्रुघन पैं आए दूत । पूछै नरपति भेद बहुत ।।
कुबेरछद वन पूरब ओर । मधु भूपति अब है वा ठौर ।।४२९१।।

क्रीडा करत बीते दिन षष्ठ । वे सुख देखि भूले कष्ठ ।।
अंसा मैं घेरा वा ठांव । अवसर चूका बणै न दाव ।।४२९२।।

सत्रुघन धाया तोडि किवाड । वन वेहड घेरया सब बाट ।।
तोडि बंध बेडी दई खोलि । दे असीस बोले सहु बोल ।।४२९३।।

तेरी जीत करैं जगदीस । सब मिल आणि नमावै सीस ।।
अर्ध रात्र घेरचा सहु देस । कोटि ढाहि कीया परवेस ।।४२९४।।

राजा मधु की भई सभार । बरछी रही गेहे मझार ।।
मोची राजा मण आपनैं । धीरज भी छोडचा नही बणै ।।४२९५।।

सेना मधु साथै जब जुरी । दोउवा मार बाण की पडी ।।
गोला गोली बरषै ज्यु मेह । घाव लगै सुभट की देह ।।४२९६।।

दूहा

हाथी सूं हाथी लरैं, रथ घोडे पाइक्क ।।
मुह फेरै नही सूरमा, पाछा हटै नही मग्ग ।।४२९७।।

पडी लोथ परवत जिसी, बाजै लाल सुरग ।।
कायर भाजै देख रण, हीसै खडे तुरंग ।।४२९८।।

लौनारण मधू सुत बली, धस्या मृगराज समान ।।
धनुष गह्या कर आपणैं, सत्रुघन मारचा तान ।।४२९९।।

मल्लयुद्ध

गिरचा सत्रुघन रथ थकी, दूजा रथै सभार ।।
मारी गदा कुमार कै, रथ टूटचा तिण बार ।।४३००।।

फिर संभाल दोन्यू लडै, जैसे लडैं जु मल्ल ।।
कोई हार न मानई, जोवन वंत अटल्ल ।।४३०१।।

लीना रण विद्या बान गहि, तोडे भुजा का दंड ।।
सत्रुघन खडग सभाल करि, लिए प्रान जब छंड ।।४३०२।।

चौपई

भुभा कुमार मधु सु'दर तणा । पुत्र मोह तब व्याप्या घणां ।।
चढे कोप सनमुख ए आइ । सत्रूघन बोलिया रिसाइ ।।४३०३।।

मधु राजा जो तेता नाम । करो वेग तुम सनमुख काम ।।
तो मैं बल है तो तु आव । जममंदिर तोहि भेजों राव ।।४३०४।।

दोनो दल मे माची रार । कायर सवहु पडे पुकार ।।
विद्यावान सु छाया भानु । असे जुध महा भयवान ।।४३०५।।

महासुभट भूझै पडि व्यार । कातर भाज गये तिणवार ।।
मधु सूदन सोचै मन मांहि । सत छड्या पति रहनी नांहि ।।४३०६।।

एक दिन मरणा सही निदान । काल रहै नहीं किस ही मयान ।।
तातैं सनमुख भूभा जाई । कोप्या भूप साभटी आई ।।४३०७।।

गदा खडग करि गहे सभार । वान छुटै ज्यौं घनहर धार ।।

मधु राजा द्वारा युद्ध भूमि मे वैराग्य

सत्रुघन मारी तरवार । मधुराजा घुमैं तिह बार ।।४३०८।।

आतमध्यान सु हिये विचार । भरमत फिरया जीव संसार ।।
समकित कबहि न आया चित्त । मिथ्या मोह भ्रम्या चहु गति ।।४३०९।।

मनुष्य जनम धरि धर्म न किया । जनम अकारथ खोइ कर गया ।।
पुत्र कलित्र हय गय भडार । इणमे यू ही राच्या निरधार ।।४३१०।।

अष्ट मदो मे माता फिरया । सात विसन सू परचा करया ।।
सजम व्रत सू करया न नेह । विष अभिलाष सु पोषी देह ।।४३११।।

अचानक मरण भए है आज । अब कैसे होइ जीव का काज ।।
अन्न पान तजि लियो सन्यास । राज भोग की छोडी आस ।।४३१२।।

आरत रौद्र राग अनैं द्वेष । धरम ध्यान मन मैं करि पेष ।।
उत्तम छिमा दसौं विध धर्म । दया भाव का जाण्या मर्म ।।४३१३।।

कायोत्सर्ग धरयो न जोग । आभूषण अरु छोडे संजोग ।।
सत्रुघन आदि सकल भूपती । ऊभा देख्या मधुसूदन जती ।।४३१४।।

हस्ती सूं उतरा तिह घडी । नमस्कार बहु स्तुति करी ।।
जै जै सबद करैं सुर आइ । वरषैं पुहप तहां मुनिराय ।।४३१५।।

देही छोडि गये सनत्कुमार । भया देव मधुवतमीवार ।।
मथुरा के पट सत्रुघन बैंठि । पूजा दान जिन मंदिर पैठि ।।४३१६।।

नगर लोग भए सब सुखी । तिहां न दीसै कोउ दुखी ।।४३१७।।

दूहा

मधुसूदन नृपति बली, धरया धरम दिढ चित्त ।।
संयम का परसाद तैं, भई स्वर्ग मां थित्त ।।४३१८।।

इति श्री पद्मपुराणे मधुसूदन विधानकं

८२ वां विधानक

चौपई

सत्रुघन राज मथुरा का करै । सहु पिरजा सुखस्यो दिन टरै ।।
विद्या सूल देव की सगि । उडि गई देव के आनै भाग ।।४३१९।।

सत्रुघन राज मथुरा का करै । सहू परिजा सुखस्यौ दिन टरै ।।
सुर के आगै करै बखान । सत्रुघन हरे मधुसुदन प्राण ।।४३२०।।

राज लए मथुरा का छीन । वा आगैं मो गुन भए हीन ।।

मधु राजा के मित्रों द्वारा आक्रमण

सुण्यां देव मित्र मोहनां । वा समय मित्र कोप्या घनां ।।४३२१।।
असा कहा मानुष्य बलवत । जिनें मारया मेरया मित्त ।।
तल की धरती ऊपर उलट । लेस्युं बैर मित्र का पलट ।।४३२२।।

ह्वा तै चित गया पाताल । व्यतर देव बुलाए तिह काल ।।
सेन्यां जोडि चल्या तब देव । धरणेन्द्र नें पूछया तब भेव ।।४३२३।।

कहो चमर सुर अपनी बात । सेना जोडि कहा तुम जात ।।
चमर इन्द्र कहै समझाइ । मेरा मित्र मारया सत्रुघन राइ ।।
बैर लेण चाल्या इण घरी । वा निमित्त ए सेना जुडी ।।४३२४।।

धरणेन्द्र द्वारा समझाना

सुणि वचन बोल्या धरणेन्द्र । सत्रुघन लक्षमण रामचन्द्र ।।
तीन लोक के हैं जगदीस । इनसैं कुंण करि सकैं है रीस ।।४३२५।।

इम रावण कुं दीये बांण । समती उन आगे भई असगति ।।
लक्षमण तणी विसल्या नारि । वा आगें सब मानें हार ।।४३२६।।

उसका गंधउदक लागै कोइ । सब की विद्या निर्फल होइ ॥
दोन्यूं देव व्यंतरी और । वाहि देखि भाजी घर छोडि ॥४३२७॥

वाकै अंग पवन लगि चलै । सब निरोगी होइ पवन मे मिलैं ॥
हमारी विद्या वासूं भई छीण । वे हैं महाबली परवीण ॥४३२८॥

जइ कउपसै राम लखमण । बाधै मोहि करैं बेजतन ॥
तै मन माहि विचारी बुरी । अंसी जीव मे इच्छा धरी ॥४३२९॥

तब सूर बोलै मैं हां देव । कहा मानुष जा का करैं भेव ॥
बाधु सागर अति गंभोर । सत्रुधन कहा अंसा बलवीर ॥४३३०॥

मध्य लोग मे ल्याया सेन । विचारैं देव धरणेंद्र के बंन ॥
भूमिगोचरी हैं बलवान । या की परजा मानै आण ॥४३३१॥

परजा नै ऊपर नही किया । सब ही का फूटा हिया ॥

प्रजा को दुख देना

पहली दुख प्रजा कु द्यु । मधुसुदन का बैर हू ल्यू ॥४३३२॥

जुरि ताप पीडा फैलाइ । उछलै कउवा जम आगै बिललाइ ॥
मरै लोग मिट गया भोग । व्याप्या दुरण सोग विजोग ॥४३३३॥

सत्रुधन करै बहुत उपाव । कछुवन चलै काल सौ दाव ॥
छोडि नगर अजोध्या गया । भाई मिले महा सुख भया ॥४३३४॥

सुप्रभा माता कै सनमुख । पुत्र विछोहा मिल्या भूले दुख ॥
श्रीजिन भुवन इक समराइया । करी सातक दान बहु दिया ॥४३३५॥

मनवाछित दान भला सनमान । बजे तिहा आनंद निसान ॥
सुणी जीत घरि घरि आनद । सत्रुधन के मनमें दुखदुंद ॥४३३६॥

मे मथुरा पाई थी भली । कवण करम तैं मोहि न मिली ॥
सपति मिल कर होय बिछोह । जाका हुवै घणा अदोह ॥४३३७॥

घर अंगणै न सुहावै ताहि । रात दिवस मथुरा की दाह ॥
मथुरा नगरी उत्तम खेत । इसकुं वंछै सुर करि हेत ॥४३३८॥

इन्द्रपुरी तै मथुरा सुभ ठौर । वा पटतर नगरी नही और ॥
पुंनि तैं लहीए अंसा थांन । मथुरा इन्द्र के लोक समान ॥४३३९॥

दूहा

मथुरा नगर सुहावना, अंसा अन्य न कोइ ।।
जिना बहु पूरव पुंण्य कीए, ताहि परापति होइ ।।४३४०।।

इति श्री पद्मपुराणे मथुरा उपसर्ग विधानकं

८३ वां विधानक

चोपई

श्रेणिक राय करै प्रसन्न । मथुरा सू बहु ल्यागा मन ।।
नगर अन्य बडे हैं अनेक । सत्रुघन किरिया क्यो अति टेक ।।४३४१।।

इतरा किम राखै वह सनेह । कहो प्रभु मो भाजै संदेह ।।
श्री जिनराय पिछला भव कहे । काहू मन मंसा नही रहै ।।४३४२।।

मथुरा मे जनमे देवकुमार । गदहा लादै मांटी भार ।।
काल पाय याछउ करा । लागी अगनि तिहा जल मरया ।।४३४३।।

उहा तै मरि मैमा अवतरया । वहै बारमैं महिष पद धरया ।।
सातवे भव विप्र कै गेह । कुलधर नाम उत्तम गति देह ।।४३४४।।

अरिचा चरिचा मगत साध । क्रीया घणी सील विण वाद ।।
असकति राजा मथुरा धणी । ललिता राणी स्यौं जोडी बणी ।।४३४५।।

राजा गये साधने देस । ब्राह्मण खोलै नंदी केस ।।
राणी देखै झरोखा द्वार । वाभण देख्या रूप अपार ।।४३४६।।

टेर लीया ऊपरि वडि बोर । भोगे मनमानी निह ठोर ।।
घणा दिवस बीता इस भाति । मंदिर पै आया नृप राति ।।४३४७।।

राणी प्रछन राख्यो द्विज । राय लख्यो मनमे अचिरज ।।
कहो राणी इह नर है कौण । किस विध आया मेरे भौन ।।४३४८।

राणी त्रिया चरित्र विचार । राजा सौं कहै तिण बार ।।
इह भाज्या था बदीवान । आइ घुस्या मंदिर कै थान ।।४३४९।।
याके पीछै दौडे सुभट । इतनी काण मु रहे अटूट ।।
इह बोल्या जे छूंटू आजि । तो दीषित होउ मुनिराज ।।४३५०।।
मै या प्रति छिपाया राज । छोडो याहि दिष्या ले जाय ।।
भूपति सुणि कीयो नमस्कार । छोडे विप्र उसही बार ।।४३५१।।

वैराग्य भावना

विप्र के मनमे आयो साच । अब हू जीतू इन्द्री पाच ।।
इन्द्रिय विषय किये बहु स्वाद । संयम बिना जनम गयो बाद ।।४३५२।।

तृष्णा लोभ कदे घाटै नाहि । भरमत फिरया चिहुं गति माहि ।।
साध नाम सु उबरे प्रान । करू तपस्या प्रातम ध्यांन ।।४३५३।।

कल्याण मुनीसुर के ढिग गया । केस उतारि मुनीस्वर भया ।।
सहै परीसा बीस ग्रनै दोइ । तप प्रसाद ऊंची गति होइ ।।४३५४।।

स्वर्ग तीसरे रतन विमान । करै भोग तिहा सुख निधान ।।
मथुरा पति तिहा चन्द्राभद्र । सुधा राणी महा विचित्र ।।४३५५।।

सूरज ग्रबद राणी का भ्रात । मउखात पुत्र भए ग्राठ ।।
कनक प्रभा राणी दूसरी । रूप लच्छन गुण लावन्य भरी ।।४३५६।।

कुलधर का जीव ग्राए ता कुख । जन्म्या पुत्र भए धन सुख ।।
रूपवंत रवि जेम प्रताप । रहसे दोनूं माय ग्रने बाप ।।४३५७।

जनम समै दीया बहु दान । सब ही का राख्या सनमान ।।
दिन दिन कुंवर बढै पल घडी । देखत नयन रली ग्रति खरी ।।४३५८।।

सावथी नगरी का नाव । कल्पद्विज बसै तिह ठाव ।।
ग्र गक त्रिया विप्र कै गेह । दंपति करै सदा सुख सनेह ।।४३५९।।

ग्रचल पुत्र ताकै गरभ भया । जोवनवत सोमै बहु कया ।।
भूख माहि सुत दीना काढि । तिलक वन माहि विप्रसुत ताढि ।।४३६०।।

ग्रचलकुवर के ग्राठो वीर । तीनू मामा के मन पीर ।।
इह तो एक ही दीसै बलवत । निसचै राज लहैगा ग्रंत ।।४३६१।।

टाके चाहै हण्या परान । कनक प्रभा सुणी इह कान ।।
ग्रचल पुत्र वइरी के साथ । मारया चाहै पुत्र ग्रनाथ ।।४३६२।।

जाहि पुत्र देसांतर लेह । करो जाइ काहू की सेव ।।
दुरजन के सग फिरणा बुरा । तोहि उपदेस दिया मैं खरा ।।४३६३।।

इतनी सुणत भाजिया कुमार । वन मे रुदन करै हा हा कार ।।
माप सोच करै द्विज तिहा धणी । कै कोई देव कै पडित गुणी ।।४३६४।।

कै भूपति कै बगपति राय । पूछै कुमर विप्र जू ग्राय ।।
कहो कुमर तूं ग्रपणा नाम । किह कारण ग्राए इस ठाम ।।४३६५।।

बोलै बचन तब ग्रचलकुमार । मोकू वन मे दिया निकाल ।।
ता कारण रुदन करू वन माझ । कैसी बितई इण ठा सांझ ।।४३६६।।

करै विप्र बात इह भाई । कोसंबी नगरी इद्रदत्त राई ॥
मनोग कला वाके पटवरणी । इन्द्रदत्ता पुत्री बहु गुरणी ॥४३६७॥
विद्या गुरण अति ही प्रवीरण । और सकल जाइगा नही हीरण ॥
जो वाहि जीतै ताहि वा वरै । नमती कहा अचल बसि करै ॥४३६८॥
विसाल पंडित राजा कै द्वार । विद्या सीखै राजकुमार ॥
अचल है राव पडित बसक । राजकुमारी जीती अरसिक ॥४३६९॥
सुख मैं दिन कछु बीते ताहि । अचल हुवा तिहा नर नाह ॥
आस पास जीते सब देस । मथुरा आइ कियो परवेस ॥४३७०॥
वाजतर चद्रभद्र ने सुरणे । सब सामत अगाऊ बरणे ॥
राजा सुरणी पुत्र की सुध । भए आनंद बिचारी बुध ॥४३७१॥
चद्रभद्र दिगम्बर भया । मथुरा राज अचल कू दिया ॥
आठौं भाई मामा तीन । ए सब जाइ भये आधीन ॥४३७२॥
आप वाभरण आवी तब द्वार । पोल्या अटक करै तिह वार ॥
राज सभा मे नाचैं नट । विप्र सो करै पौजिया हठ ॥४३७३॥
राजा दृष्टि वाभरण पर पडी । आयो बुलावो वाही घडी ॥
आभूषरण नीका पहराइ । आप बराबरि राखै राय ॥४३७४॥
हय गय विभव दीने बहुदेस । बहुतमया नित करै नरेस ॥
सुखसों राज बहु अनें किया । सावथी नगर विप्रकू दिया ॥४३७५॥
जय समुद्र मुनिवर पै गये । साभलि धरम दिगबर भये ॥
तेरह विध सौ चारित्र धरधा । दया अग दस विध तप करधा ॥४३४६॥
आतम चित्त लगाया ध्यान । महेन्द्र स्वर्ग पाइया विमान ॥
चउथै स्वर्ग देवता भए । पूररण आव तिहा तै चए ॥४३७७॥
अचल जीव सत्रुघन जान । आप कतात वक्र भया आन ॥
सेनापति सत्रुघन बली । जानै धरम करम की गली ॥४३७८॥
कई जनम मथुरा मे पाइ । मथुरा कू चाहैं इह भाइ ॥
पुण्यवत पूरब तप किया । ऊची गति बहूतै भव लिया ॥४३७९॥

सोरठा

पूरब भव का नेह, तातै मोह किया घरणा ॥
रूपवत बल देह, फेर राज मथुरा वण्या ॥४३८०॥

इति श्री पद्मपुराणे सत्रुघन पूर्व भव विधानकं
८४ वां विधानक

चौपई

मथुरा मे सात मुनियों का आगमन

मथुरा आए मुनिवर सात । चारण मुनि ग्यानी विख्यात ।।
सुरमन श्रीमन श्रीनव जाणि । सरव सुंदर जोवानव जाणि ।।४३८१।।

विनयलाल अवर जयमित्र । अष्ट करम जीते उन सत्रु ।।
श्रीनदा राणी सुंदरी । जाके पुत्र भए सुभ घडी ।।४३८२।।

प्रीत कर मुनि केवलज्ञान । जै जै करै देवता आन ।।
श्रीनदराज धरम कुं सुण्या । पुत्र सहित दिगम्बर बन्या ।।४३८३।।

रय देह पुत्र बालक मास एक । थापे राज काज की टेक ।।
श्री नदमुनि केवली भया । धरम प्रकास मुकति कौ गया ।।४३८४।।

धैसा तु तप करैइ बहुत । सहै परिस्या बहु रुत्त ।।
इनकौ उपजी चारण रिघ । पोदनापुर गये वै सातुं सिध ४३८५।।

ह्वा ते आये अजोध्या देस । अरहदत्त देखे मुनि भेस ।।
देखै सेठ मन करै विचार । रति चउमासै किया विहार ।।४३८६।।

ए काहे का है ए मुनी । चउमासा मांडै उलै दुंनी ।।
वे मुनिसोव्रत जिन भौन । दरसन हेत किये थे गोन ।।४३८७।।

पडित नई देखै चारण जती । आदर भाव किये वहु भती ।।
अष्टाग मना सेठ अरहदत्त । सुपो मुंनीसर थकत ।।४३८८।।

असे साध आए मो गेह । मैं उनसौं कीया न सनेह ।।
अपणी निंदा बहुतै करी । मेरे मनकूं आई बुरी ।।४३८९।।

कठिन पाप आपकौ किया । गदगद बोलै उमडै हिया ।।
वे मुनिवर थ चारण जती । हिंसा करम न लागै रती ।।४३९०।।

धरती तै अधर रहै चरण । दरसन कीया ह्वै दुख हरण ।।
मैं माधा की निंदा करी । मोहि कुछ न भई सुध तिह घडी ।।४३९१।।

पर निंदा है पाप का मूल । उपजी कुमति गई सुध भूल ।।
अण जाण्या नर करै जे पाप । मनकूं समझि करै पश्चाताप ।।४३९२।।

पाप छोड करै उपवास । तुटै पाप पुन्य की आस ।।
जहा साध सोइ उत्तम ठाम । उनकूं देख धरै मन भाम ।।४३९३।।

मेरे घर तईं मुनिवर फिरैं । आदर भाव सभी बीसरैं ॥
दानांतराय भई कुबुधि । तत्त्व रूप की करी न सुध ॥४३६४॥

दूहा

कोटि मिथ्याती दान दे, एक संजमी न समांन ॥
अणुव्रती तार्थे बडा, महाव्रती परमान ॥४३६५॥

तीर्थंकर सम को नही, जा घर लेइं आहार ॥
धन्य भाग उस जीव का. सब ही करैं मनुहार ॥४३६६॥

चौपई

इस विध च्यार मास पिछताई । करैं पाप खयऊ समझाई ॥
दान देण की इच्छा नित्त । धरमध्यान सो एकै चित्त ॥४३६७॥

कातिग सुदि सातैं सुभवार । मुनिवर आये वनह मझार ॥
छह रुति के फल फूले घणे । भरे सरोवर निर्मल भरे ॥४३६८॥

अरहदत्त सुणि आया जिहा । बहुत लोग सग पहूचे तिहा ॥
अस्वगयद का नाही वोर । करैं महोछव जै जै सोर ॥४३६९॥

रामचद्र लक्षमरण सत्रुघन । भये आनंद सबन कै मन ॥
दरसन कू आए तिण बार । नमस्कार करैं बारंबार ॥४४००॥

स्वामी हम परि कीपा करो । भोजन लेइ पुन्य विस्तरो ॥

आहार विधि

मुनिवर बोले सुनो नरेस । जती न कहै भोजन उपदेस ॥४४०१॥

जे मुनि अपनी भोजन कहै । पाप खोट अपने सिर गहैं ॥
मुनिवर उठै आहार निमित्त । फासु भोजन लेय तुरत ॥४४०२॥

छह रस का समझै नही स्वाद । ऊच नीच देखैं रह प्रसाद ॥
कर पात्र करि भोजन लेह । फिरि जोग वन ही मैं धरेह ॥४४०३॥

धरि धरि लोग नित करैं रसोइ । द्वारापेषण ढाढा होइ ॥
सत्रुघन पूछं जोडे हाथ । कहो धर्म मोसुं मुनिनाथ ॥४४०४॥

धरम जिनेस्वर कब लौं चलै । आगम कहौ सुणौ हम भले ॥

पचम काल का प्रभाव

कहै मुणीस्वर सुणौ नरीद । पचम काल उपजै न जिणंद ॥४४०५॥

अतिसय की हीवैगी हांण । देव सहाइ होसी नही आंण ।।
उत्तम जन सेवई मिथ्यान । कुगुरु कुदेव की मानै जात ।।४४०६।।

उत्तम कुल न करंगा राज । नीच लोग भुगतैंगे राज ।।
जैन धर्म की होगैगी हांण । मन वच काय सुनै न बखाण ।।४४०७।।

माया धारी ह्वैंगा जती । ते पावैंगा खोटी मती ।।
श्रावक होइगे निंदक धर्म । देव सास्त्र गुरु लहे न मर्म ।।४४०८।।

खोटा मत पोखैंगे घणे । मिथ्यावेद निसचैं सों सुणैं ।।
पुत्र पिता मे होइ विरोध । भाई भाई करि करैंगे क्रोध ।।४४०६।।

एक मूखा एक भुगतैं सुख । कोई न पूछै दुखिया दुख ।।
जई भाई कू देइ उधार । दुरजन होइ लहै तिन बार ।।४४१०।।

क्रोध कषायी होइ हैं मुनी । श्रावग सेवा न करि हैं घनी ।।
जैन धर्म की हीवै विछत्त । मिथ्यादृष्टी श्रावक चित्त ।।४४११।।

कुगुरु कुदेव की महिमा होइ । खोटा वेद सुणैं सब कोइ ।।
बहोत लोग होइंगा दुखी । को को होइ है सुखी ।।४४१२।।

सत्रुघन बोलै सुणो मुनीन्द्र । तुम कृपा तैं होई आनन्द ।।
तुम से साधक आवै मो गेह । करघा क्रितारथ मिटै सदेह ।।४४१३।।

आशीर्वाद

सप्त मुनिस्वर बोलै बैन । मथुरा राज करो सुख चैन ।।
घर घर पूजो प्रतिमा भगवंत । चैत्यालय कीज्यो बहुमन ।।४४१४।।

पूजा अरिचा सूं मन ल्याइ । दुख सताप सब जाइ विलाय ।।
मुनिवर गए अउर ही थान । नरपति आए अपणै जान ।।४४१५।।

रामचन्द्र की आगन्या पाइ । मथुरा चले सत्रुघन राइ ।।
मुनि थांनक वदे मुनिराइ । रामचन्द्र कै पहुचे आन ।।४४१६।।

द्वारा पेषण कीए नरेस । चरणोदक लाए सुभ पेय ।।
विनयवत होइ दीए दान । उत्तम भोजन करि सनमान ।।४४१७।।

अक्षय दान मुनि बोले बोल । घरि घरि चरचे रतन अमोल ।।
सत्रुघन मथुरा पहुच्या वली । सकल प्रजा अति मानी रली ।।४४१८।।

जिनवर भुवन किया उच्चंत । पंडित सेव करै बहुभंत ।।
बेद सास्त्र होगै दिन राति । सुणैं लोग सुख मानै गात ।।४४१६।।

घरि घरि पूजैं प्रतिमा लोग । रोग कष्ट भागियो वियोग ।।
सप्त रिष प्रतिमा चिहुं वोर । काहू कौं नही लागै खोडि ।।४४२०।।

नव जोजन मथुरा लबाइ । जोजन तीन बसै चौडाइ ।।
सर्व सुखि कोई नही हीण । पंडित सुघड बसै परवीण ।।४४२१।।

स्वर्गपुरी तैं मथुरा भली । महा सुगंध विराजै गली ।।
राजा राज विचारै नीत । सर्व सु राखैं उत्तम प्रीत ।।४४२२।।

इन्द्र समान सत्रुघन राइ । बहुले भुपति सेवै पाइ ।।
जिसका है रवि जेम प्रताप । भाजि गए सव दुख सताप ।।४४२३।।

दोहा

मथुरा नगर सुहावना, देवलोक समवास ।।
सर्व सुखी निवसै तिहा, मानै भोग विलास ।।४४२४।।

इति श्री पद्मपुराणे मथुरा उपसर्ग निवारण विधानक
८५ वां विधानक

चौपई

दक्षिण वोड विजयारध मेर । रत्नपुर नगर बसै बहू फेर ।।
रतन असफदन खेचर भूप । पूरणातन राणी सु सुरूप ।।४४२५।।

मनोरमा पुत्री ता गेह । रूपवत कचन सी देह ।।
हरिमन पुत्र भये वलवंत । सेवा करै बहूत सावत ।।४४२६।।

कन्या जोवनवंती भई । नरपति सोच विचारै मही ।।
मंत्रीया सेतो बोलै वयन । ढूंढो नरपति देखो नयन ।।४४२७।।

उत्तम कुल लक्षण संजुक्त । कन्या ते होइ गुण बहूत ।।
मूरिख पंडित देखि विचार । उत्तम कुल जो होइ कुमार ।।४४२८।।

अति पंडित बैरागी होइ । दिष्या लेई उहैं वेगी सोय ।।
महामूरिख होइ दुःख की खान । कारज करै जांण पिछाण ।।४४२९।।

देस देस कूं भेजा दूत । नारिद रिष तिहां आइ पहूत ।।
सब मिल उठि चर्णा कू नए । दरसण कीया कृतारथ भए ।।४४३०।।

कण्ड नग्र किया था गौन । भाखो बात तजो मुख मौन ।।
बोलै नारद सुणो नरेस । देखे पुर पट्टण अरु देस ।।४४३१।।

साधा का वरसन निमित्त । दीप अढाई मांहि भ्रमत ।।
नृप पूछै नारद सू बात । तुम देस देखे भली भाति ।।४४३२।।

राजकुमार कोई देख्यो आप । तास कन्या देहु मिटै सताप ।।
नारद रिष बोले तिह बार । नगर अजोध्या स्वर्ग उनहार ।।४४३२।।

रामचद्र का लक्षमण बीर । रूप लष्पण कचन सुसरीर ।।
बल पौरिष चक्र उन पास । तिहु खड का भोग विलास ।।४४३४।।

भू खेचर सहु सेवै ताहि । उन सम बली अवर कोई नाहि ।।
सगाई करो लक्षमण सु राइ । उत्तम कुल रघुपति के भाई ।।४४३५।।

इतनी सुणि कोपिया नरेन्द्र । हमारा मारया है वन भाई बध ।।
रावण उन मारया है ठौर । लकागढ ढाह्या है तोडि ।।४४३३।।

उन कु मारा तवै हम जाई । अपणा जनम तब जाणा भाई ।।
वैरी सु कैसा सनबध । क्रोध चढे राजा मनि अंध ।।४४२७।।

धक्का दे नारद नै दिया काढि । मान भंग रिख चिता बाढि ।।
लिखया लेख पट मनोरमा पेखि । दीये हाथ लक्षमण कू देखि ।।४४३८।।

देव रूप नारायण कहै । इहै पट रूप सैदरूप कहाँ है ।।
कै किनर कै खेचर सुता । देखत उपजै कान की लता ।।४४३६।।

इद्राणी कै पदमावती । भोमि गउचरी नही इस भती ।।
बोलै नारिद गिर बैताढि । रत्नपुर नगर सबही तैं वाढि ।।४४४०।।

रतन असफदन खेचर राय । हरिमन पुत्र क्रोध कै भाय ।।
मनोरमा पुत्री है गुणवत । वे नरेस चित्त बैर धरन ।।४४४१।।

लीजे जुध करण का साज । मारो दुर्जन ज्यो सीझै काज ।।
विराधित कहे प्रभू तुम सुणौ । सेना जोडि दोऊ को हणौ ।।४४४२।।

वे विद्याधर हैगे घणे । उनु सं जुध अकेले न बणे ।।
देश देश का तेडो नरेस । राम लछमन चले रत्नपुर देस ।।४४४३।।

वेरया नग्र सुण्यौ रत्नरथ । हरिमन पुत्र बली समरत्थ ।।
जिहा लौ थे विद्याधर राव । एकठें भए महा क्रोध के भाव ।।४४४४।।

हम धाया चाहै थे सही । भूमिगोचरी आए आप ही ।।
अब हम राखै अपनी टेक । करो जुध सेना होइ एक ।।४४४५।।

राखै पति पर्वत की आज । उन जीतैं लागै कुल लाज ॥
दोउ धां सैना भई सभार । सर बरसै ज्युं घनहर धार ॥४४४६॥

गोलो गोला अनै हथनाल । सिला पडै ज्युं परलै काल ॥
मारि मारि दोउधां होइ । किन्नर देव देखइ सब कोइ ॥४४४७॥

हाथी घोडा पैदल लडैं । बहुत लोग दोउधां भिडैं ॥
मारैं गदा बज्र की घात । बरछी खडग प्राण ले जांत ॥४४४८॥

पडी लोथ परवत सी जान । सोनत बहै नदी तिहां असमांन ॥
पडै लोथ गिरध उनांहि खाइ । ऊपर चगी चील मडलाइ ॥४४४९॥

दूहा

भई जीत लक्षमण तणी, हारे विद्याधर भूप ॥
नारद रहैस्या वा समैं, देख जुध का रूप ॥४४५०॥

चौपई

विद्याधर भागे रण छोडि । वे भागै ये मारैं दोडि ॥
नारद हसि हंसि ताली देहि । सब मिल नीची मूंड करेय ॥४४५१॥

भागण कू रही नही ठोडि । फेर संभाल करैं बे फोडि ॥
ज्यों केहरि तैं सारग डरैं । इम लक्षमण तै डर करि मरैं ॥४४५२॥

मनोरमा तिहा जुध को देख । मनमे धारयो ग्यान विसेष ॥
मेरे कारण इतने मुए । पसचाताप मन माही किये ॥४४५३॥

बैठि विमाण लखमण ढिग आय । फूलमाल घाली गल जाइ ॥
लखमण कूं हुआ सतोष । मिटया जूध भया मन पोष ॥४४५४॥

दंपति आई बनकी ठोर । सुणियो राय सुता का सोर ॥
मनोरमा लखमण सुं मिली । सब मिल कहि यह हुइ भली ॥४४५५॥

हम ढढोला बहुला देस । लखमण महाबली भुवनेस ॥
मन की इच्छा पूरण भई । सबही की चिंता बुझ गई ॥४४५६॥

रत्नरथ नृप सहो परिवार । लक्षमण पास आए तिह बार ॥
सबही मिले भया समबंध । तूटा असुभ करम का बंध ॥४४५७॥

रत्नरथ सेती नारद कहैं । तो मैं गुण पराक्रम ना रहे ॥
तूं कहै था वचन असार । अब काहे तैं मानी हार ॥४४५८॥

रत्न असफद न बउले राई । तुम तो कोप्या रिष खाई ।।
मान भंग साध का किया । तो इह दुःख हमैं पाइया ।।४४५६।।

तुम कलपै हम भया दुख । अब तुम कीया दोउ दला सुख ।।
करै महोछव पुर मे गए । मनोरमा वीवाही सुख भए ।।४४६०।।

भोग मगन मे करै उछाह । मनोरमा लछमन सा नाह ।।
पुंन्य प्रसाद नै जीडी भई । ते सुख सोभा जाई न गिणी ।।४४६१।।

वहो पकवान भोजन करे । कंचन थाल भरि अग्रे घरे ।।
षटरस व्यंजन कीए घणे । सब भूपति मिलि जीमे भणे ।।४४६२।।

बीडा दिया हाथ ही हाथ । जितने लोग राम के साथ ।।
रहेसे सकल किया आनद । बाजंतर बाजे सुख कंद ।।४४६३।।

अडिल्ल

पुण्य तणै परसाद जीत सब ठां हुई ।।
साध्या सगला देस सवद जै जै हुई ।।
मानै भूपति आणि सुजस प्रगटचा घण्यां ।।
रामचंद्र गुण अगम अपार जाइ किस पै गणा ।।४४६४।।

इति श्री पद्मपुराणे मनोरमा विवाह लाभ विधानकं

८६ वां विधानक

चौपई

रतनपुर सुख भुगत्या सब साथ । बहुत देस जीत्या रघुनाथ ।।
रवि नभ वीचि सोभित पुरी । मेघ स्वाम सिव मघ नगरी ।।४४६५।।

गंधर्ववति अमरपुर देस । लिषमीधर तसु नगर नरेस ।।
किंनर गीत अमरपुर देस । लक्षमीधर तसु नगर नरेस ।।४४६६।।

श्रीगहभा सत्रुत अरंजय जोतपुर । अवरघणां तिहा साध्या नगर ।।
ससिघा गंधारमल देश । घनसिध सुथान मनोभद्र नरेस ।।४४६७।।

श्री विजैकांतिपुर तिलक सथान । बहुत भूप साधे बलवान ।।
विजयार्ध साध मनाई आण । राम लखमण अनि राजान ।।४४६८।।

इहा श्रेणिक पूछै परसन्न । लवनाकुस की कहो उतपन्न ।।
राम लक्षमण कै केतीं असतरी । केता पुत्र कुल वृद्धत करी ।।४४६६।।

राम लक्ष्मण का परिवार

जिनवांणी सु' सयय जाय । कहै भेद गोतम मुनि राइ ।।
सत्र सहैश्र लक्ष्मण कै नारि । रूपवत ससि की उणिहार ।।४४७०।।

तामें आठ पाठ की वणी । गुण लष्यण अति सोभा बणी ।।
विसल्या मेघद्रवण की सुता । प्रथम पटराणी सुख की लता ।।४४७१।।

रूपवत अवर बनमाल । कल्याण माला अनै रतनमाल ।।
जितपदमा मुखश्री मनोरमा । गुणलष्यण सब ही सो क्षमा ।।४४७२।।

अष्ट सहस्र राम के भोम । सोभै च्यारि पट्ट की धाम ।।
प्रथम सीता अनै पदमावती । रतिप्रभा श्रीदामा सोभावती ।।४४७३।।

लक्ष्मण कैं पुत्र दोइ सै पचास । सात रत्न की पुंगी आस ।।
चक्र सुदर्शन छत्र अनै गदा । धनुष खड्ग अरु बरछीक धुजा ।।४४७४।।

श्रीधर विसल्या कै गर्भ लह्या । प्रथवी तिलक रूपवंत जनमिया ।।
मगल कल्याण माला का पूत । विमलप्रभू पदमावती सयुक्त ।।४४७५।।

वनमाला का अरजन वृष्य । जयवती कै सुत कीर्तरव्य ।।
मनोरमा सपूरण कीर्त्त । रतिमाला कै श्रीकेस उतपत्ति ।।४४७६।।

अन्य कुमार कहा लागि गिणो । नामावली कहा लौं भणौं ।।
ड्योढ कोडि उत्तम कुमार । च्यार वीर का वध्या परिवार ।।४४७७।।

पुन्य उदै ते बाधै वृष्य । करै राज निकटक रिध्य ।।
मान दिवस सुख मे विहाइ । भोग मुगति मानै तिहा राइ ।।४४७८।।

सोरठा

उदय भए जब पुन्य, सुख सपति बाधी घनी ।।
अधिक प्रतापी अहन, जीत्या सब दुरजन अनी ।।४४७९।।

इति श्री पद्मपुराणे राम लक्ष्मण विभव विधानकं

८७ वां विधानक

चौपई

राजमहल

अति ऊचे मंदिर रमणीक । कंचन रतन सहित रमणीक ।।
भले भले समराये चित्त । सीज्या तिण ठां बणी पवित्र ।।४४८०।।

सीता द्वारा स्वप्न दर्शन

कंचन पलंग पाट सु वण्यां । रतन जोति सू सोभै घणां ।।
पुहुप बिछाया पटबर तलै । केसर भरया गीदवा भलै ।।४४८१।।

स्वेत बिसन तिस परै बिछाइ । महा सुगंध भ्रमर लोभाइ ।।
छिडके कुंमकुम मा समारी ठोर । चंदन किवाड लग्या ता पोल ।।४४८२।।
तणे चंद्रवा मोती झालरी । अनेक प्रकार तिहा सोभै खरी ।।
तिण वस्त्रां की जीति अपार । सीता करै सोलह सिंगार ४४८३।।

आभरण चीर मोती का हार । सग सहेली रुण झणकार ।
पान फूल का डबा भरि धरै । सीता सुपनां देखं खरे ।।४४८४।

रात पाछली घटिका च्यार । सुपिना निध पाई तिह बार ।।
दोई केहरि गर्जत देखे । सायर निर्मल प्रेखे ।।४४८५।।

देव विमाण आवता जाणि । जाणु सुख मैं धसै आण ।।
भए प्रात जागण की वेर । गावै गुणीजन मधुरी टेर ।।४४८६।।

पच सबद बाजै तिह घडी । सीता जागी करै मनरली ।।
करि सनान सुमिरे जिननाथ । बहुत सखी उन लीनी साथ ।।४४८७।।

पति सौं जाइ वीनती करी । सुपनां फल भाखो मन भरी ।।
सुणि रघुपति समझावै बात । पुत्र दोइ होसी ससिकांत ।।४४८८।।
देव दोई तेरे गर्भ चए । निसचै समझि आपणै हिये ।।
सीता कै मन भए आनंद । पंचनाम सुमरया जिणंद ।।४४८९।।
रित बसंत दपति सो प्रीत । घर घर गुणीयण गावै गीत ।।
मजरि अंब सकल वनराइ । कोकिल वचन अति चित्त सुहाइ ।।४४९०।।
पछी सवद सुहावन वोलै । कामी तिहां अति करै किलोल ।।
दिन दिन बाधै धरम पुनीत । उत्तम वसन परि डालै चित्त ।।४४९१।।
पुंन्य पाप का इनै विचार । पापी दलिद्री का इह विकार ।।
गर्भ विषै लप्यण को चिह्न । जाणौं ते पंडित परवीन ।।४४९२।।
पापी जीव गर्भ मे पडै । क्रोध प्रमाद देह दुख भरै ।।
खावै ठीकरी माटी मांस । पुण्य हीण का इह प्रकास ।।४४९३।।

सीता का दोहिला

पुन्यवंत के लप्यण जाण । उत्तम वस्त खावै नित पाण ।।
सब सो राखै अधिक सनेह । दिन दिन जोति दिपै अति देह ।।४४९४।।

धरमध्यान सु सुणै पुराण । नित उठि देई सुपात्रां दान ।।
सीता दुर्बल देखी राम । पूछी कहो चित्त का नाम ।।४४६५।।

सीता कहै मेरे मन इही । पूजा रचना करउ सब मही ।।
जिहा लग तीर्थ भने केवली । जिन मंदिर पूजा विध भली ।।४४६६।।

रामचन्द्र इम लक्ष्मण सुणी । देस देस कूं चिठी बणी ।।
जिहा लौं जिणथानक किवलास । संमेद सिखर चंपापुर वास ।।४४६७।।

कपिला अवर वाणारसी नगर । जिनमंदिर समराउं सगर ।।
महेन्द्र वन नदन वन साथ । मुनिसुव्रत मदिर जिन नाथ ।।४४६८।।

सहस्त्रकूट चैत्यालय तिहां । फेर संवारया कंचन सो जिहां ।।
इक इक सहस खभ चिहु फेर । वेदी माफ वणी बहु घेर ।।४४६९।।

राम लखमण कुटुंब समेत । गए महेन्द्रपुर पूजा हेत ।।
तिहा सरोवर निरमल नीर । छाया सीतल विहगम तीर ।।४५००।।

हंस चकोर सारस बहु जीव । सबद पपीहा बोलै पीव ।।
बमनर उतारि करई सनान । अष्ट दरब सु पूज्या भगवान ।।४५०१।।

दूध दही रस घृत की धार । श्री जिन के गल घाले हार ।।
करी भारती हवण कराइ । बाजा बाजे गुणि गण गाइ ।।४५०२।।

दूहा

पूजा करि भगवंत की, देय सुपात्रां दान ।।
निसचै पावै परमपद, पहुचै मोक्ष सुथान ।।४५०३।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता दोहिला विधानकं

८८ वां विधानक

चौपई

पूजा करि फिर आये गेह । वहुत दान सनमान्या देह ।।
सुख में बीत गये दिन घणें । इंह आगमा कारण इक बणे ।।४५०४।।

सीता का नेत्र फडकना

दध्यण आंखि फड़कै सिया । पश्चाताप मनमें करै सिया ।।
करम उदै वन बेहड फिरी । वन माहैं ते रावण अपहरी ।।४५०५।।

सोग भुसुख मे तब बहु पडी । बरस बरस सम बीती घडी ।।
वे दुख भुगत अब भया था चैन । क्यों फरकै अब दष्यन नैन ।।४५०६।।

अनमन देखी कहै वीचार । असुभ करम को सकै न टार ॥
सुभ असुभ संगि लागा कर्म । आदि अनादि जीव कै भर्म ॥४५०७॥

जइसै ससी का बधै प्रताप । पूनम ताईं पूरण आप ॥
अइसैं करमन का उहै हुवै । जैसैं ग्रहनैं ग्रहै कुवै ॥४५०८॥

पडिवा सेती कला हुवै हीण । असुभ कर्म करै आधीन ॥
दुख सुख लग्या जीव कै संग । तुम मति करो अपना मन भंग ॥४५०९॥

गुणमाला वोली गुणवंत । वेद पुराण सुणो मन मंत ॥
सीता मन चिंता मा करो । एता सोच कहा चित धरो ॥४५१०॥

तुम सबतै पटराणी बडी । राम तुमनैं छाडैं नही घडी ॥
रामचन्द्र जीवो चिरकाल । तुमको भय है किसका हाल ॥४५११॥

करो पूजा पुंनि सातिक । पाप करम की मेटो लीक ॥
पुंनि दान तप काटै व्याध । वैयावृत्त कीजिये साध ॥४५१२॥

दुख कलेस सब जाइ विलाइ । ढील न कीजे देहु मगाइ ॥
भद्रकलस सीता प्रधान । सब विध जाणी पूजा दान ॥४५१३॥

तहि बुलाए आज्ञा इह दई । उत्तम वसत मगाओ पई ॥
जो मन इच्छै ताकूं देइ । पूजा प्रतिष्ठा बहुत करेइ ॥४५१४॥

रोग कल्पना हो गई दूर । बढै पुनि रिध भरि पूर ॥
सुणी बात मन हुवा हुलास । आनि सोज राखी उन पास ॥४५१५॥

जैसा कोई चाहै त्याग । तइसा दे जइसा को मांग ॥
सातिक प्रतिष्ठा होइ दिन रयण । पंडित पढै सुहावने वैन ॥४५१६॥

वेद पुराण सब ही ठा होइ । बहोत पुनि खाटै सब कोइ ॥
राम लक्षमण वैठा पट आइ । बहोत लोग मिले तह ठाइ ॥४५१७॥

सोलह सहस मुकट बंध राइ । नमस्कार करि लाग्या पाइ ॥
पौंण छत्तीस ठाढी भई । ते सब नृप द्वार अग्रं षडी ॥४५१८॥

रघुपति चितवै प्रजा दसी । नीच लोग मिल मिल करि हसी ॥
रामचन्द्र ने लिया बुलाइ । अपने अपने दुख कहो समझाइ ॥४५१९॥

विजय सूरज मध्य परवीन । वसकासव पीगल तीन ॥
राज सभा मे ठाढे आइ । करि डंडोत नवण करि भाइ ॥४५२०॥

राम द्वारा प्रश्न पूछना

पूछैं राम कहो तुम सांच । किह कारण आये सब पंच ॥
सब मिल थकित रहे तिहां लोग । जिन पाषाण ध्यान धरि जोग ॥४५२१॥

निष्ट वचण कैसे करि कहैं । भय चित घणा मूक होय रहैं ॥
राम कहैं चिंता मति करौ । कहो निसंक सब भय परिहरो ॥४५२१॥

प्रतिनिधियों का उत्तर

विजय सूरज बोलै कर जोडि । प्रभा भणी लागी इह खोडि ॥
रूपवत जोवन भरी नारि । निकसै ग्राम्या बिन भरतारि ॥४५२३॥

जिहा मन होवै तिहा वह जाइ । वे कछु कत कहैं तो रिसाइ ॥
तब उत्तर बोलै प्रसतरी । सीता रावण की हरी ॥४५२४॥

ते सीता रामचद्र नै आणि । ता का सब बिध राखै मान ॥
असे हैं वे त्रिभुवन पती । तिणी मन मे न आणी रती ॥४५२५॥

सीता को वे बोडा कहै । जे मुख निकसै सो ही कहै ॥
सीता सती पतिव्रता प्रसतरी । सील सयम सो सब विध खरी ॥४५२६॥

रावण सीलव्रत लीया । उनका सत सब विध राखीया ॥
सत्त सील इह विध रह्या सबै । उनकी रीत करै ए सबै ॥४५२७॥

असा हमे बतावो ग्यान । तासो रहै सबां की वान ॥
देस देस मे हूवा इह सूल । परजा भई सर्व सुख भूल ॥४५२८॥

जिह विध बसै होइ सुख चैन । तैसे समभावो प्रभु बैन ॥
रामचन्द्र सोचै मन माहि । मेरे साथि देखै दुख याहि ॥४५२९॥

राम की व्यथा

रावण दडक वन मे आइ । सीता कु ले गया चुराइ ॥
बानर बसी भए सहाइ । उनकी संगति पहूचे तिन ठांइ ॥४५३०॥

मारचा रावण सेना घणी । सीता ले आए आपणी ॥
अब तो भई सुख की बार । कैसे घरि तैं देहुं निकार ॥४५३१॥

तजूं राज वन मे करू बास । तो भी होइ महा उपहास ॥
उत्तम कुल को चढै कलक । किस विध तजैं मन की संक ॥४४३२॥

पराया मन की जाणै कौन । बुरा कहै छत्तीसो पौण ॥
नारी महा दुःख की खांनि । अपकीरत हो इनकै जान ॥४५३३॥

प्रतक्ष जानौं कुगति कामनी । असे चित्त विचारो घनी ॥
मोही चित चुरा ले जाहि । लख चौरासी जौनि भरमाइ ॥४५३४॥

सर पडस्या मरै एक बार । नारी बिस मरै बारबार ।।
जै ले नीकलिया त्रिय संग । तो अब भया मान का भग ।।४५३५।।

बिभचारिणी करै कुकर्म । कुल की लाजइए कुंण धर्म ।।
सीता कूं ले आया ग्रहै । निर्मे वा कीना सु कहैं ।।४५३६।।

किस किस के मै मूंदू मुख । मोकूं आइ वण्या है दुख ।।
मेरे राज प्रजा सुख भरो । सीता राख्या अपजस धरो ।।४५३७।।

मै जाणू हूं सीता सती । इसकू दोष न लागै रती ।।
राख्या चाहैं लोकाचार । दोई विध है निश्चै व्योहार ।।४५३८।।

राजा छोडै धरम की रीत । घटै मरजाद वधै बिपरीत ।।
राजा मुंह देखी प्रजा करै । सब का पाप अपने सिर धरै ।।४५३९।।

धरम विचार कोजिये न्याव । अपणा पराया जाणै समभाव ।।
बहु बिध सोच करै रामचद्र । कहा बिचार कीजिये दुद ।।४५४०।।

दूहा

राजनीति रघुपति करी, कछुयन आण्या मोह ।।
प्रजानै उन कारणई, त्रियास्यु किया बिछोह ।।४५४१।।

इति श्री पद्मपुराणे रामचन्द्र प्रजारिष्या विधानक

८९ वां बिधानक

चौपई

राम का कथन

रामचन्द्र बैठा पट आइ । निसकत सो कह्या बुलाइ ।।
बेग जाइ लखमण कु लाव । गया दूत नारायण ठांव ।।४५४२।।
नमस्कार करि ठाढा भया । राम वचन हरि सौं भाषिया ।।
लखमण उठि आया तिण साथ । बैठा निकट तिहा रघुनाथ ।।४५४३।।
रामचन्द्र भाष्या विरतात । प्रजानै सकल भाष्यो विरतांत ।।
घरि घरि नारि कुमारग गह्या । मनमे कुछ सका नवि रह्या ।।४५४४।।
सासु सुसरा कत की जाण । कबहू न मानैं उनूं की आंण ।।
वे पोछा सीता का लेह । विन सवारथ कलक मे देह ।।४५४५।।
जिसमे कुल को लागै लाज । तिसकुं राख्या बणै न काज ।।
अब लौं कुल को लग्या न दोष । पुरुषारथ करि पहुचे मोष्य ।।४५४६।।

कोई न हमारै पापी हुआ । ए दूषण अब लाग्या नवा ।।
जे रावण ने सीता कू हरी । तो इह विपत्ति हमको पडी ।।४५४७।।

सीता सत राख्या आपणा । परजा दोष लगावै घणा ।।

लक्ष्मण का कोध

इतना लखमण सुणिया बैन । बढ्या कोध राते करि नयन ।।४५४८।।
कैसी परजा कहा बरांक । वे तुमसे बोलै इह वाक ।।
सब कुं मारि मैं परलय करूं । जीभ काढि खाल भुस भरू ।।४५४६।।

सीता सती कू इम विध्र कहैं । उनके मन संका नहीं रहै ।।
नृप की चरचा परजा करैं । ताकूं हाथ लगाउं खरै ।।४५५०।।

अपना चित्त समझै नही आप । राज कथा को बोलैं पाप ।।
सबकूं घेरि निकटै दहै । फेंर न असी मुख तैं कहै ।।४५५१।।

रामचन्द्र तब कहै समझाइ । परजा सुख चाहिए राइ ।।
परजा ते राजा सोभत । बिण परजा कुण राय कहत ।।४५५२।।

जिह विध दुख परजा का जाय । तैसा करिए भरत उपाइ ।।
बोले लक्षमण सुंण हो भ्रात । महासती है सीता मात ।।४५५३।।

वे है दुःख देष्या हम संग । सुख की बेर करो ग्रह भंग ।।
परिजा है कूरडो समान । हस्ती नैं जू भोंके स्वान ।।४५५४।।
हस्ती मन न आणै ताहि । उनका कह्या असा नर नाह ।।
जे कोइ शशि पर नाखै धूल । वाही के सिर पडै अमूल ।।४५५५।।
अग्यानी बोलै अग्यांन । उनका वचन कहा परमान ।।
सीता दयावंत बहुत । कोमल देह रूप संजुत ।।४५५६।।
गर्भवती किम दीजे काढि । दोई जीव सौं पावै दुख वाढि ।।
रामचन्द्र बोलै जगदीस । या कौं ले गया था दस सीस ।।४५५७।।

राम का निर्णय

ता कारन असी कहै न लोग । थिर नहीं इह संसारी भोग ।।
अपणी कीर्त्त को इह समार । जैं अपकीत्ति हुवै अपार ।।४५५८।।

हम तुम सा अपकीरत करै । प्रथ्वी पर जस को फिर धरै ।।
जैसी परजा तैसा राजा जिसी । जुग जुग चलैं हमारी हसी ।।४५५६।।

धरमनीत करूं हू सही । मेरै बात मुह देखी नही ।।
कृतांतवक्र तब लिये हंकार । रथि परि चढि दौडे असवार ।।४५६०।।

सेना घणी तास के साथ । देखै लोग घुणे सब माथ ।।
किस पर कोप्या रघुपति आज । कृतातवक्र आया दल साज ।।४५६१।।
नमस्कार करि ठाढा भया । रघुपति बचन मानि कर लिया ।।
सिंघनाद बन भयानक घणा । तिहां मानुष्य न कोई जणा ।।४५६२।।
सीता को करि जात्रा भाव । तिहा छोडि फिर ल्यावो मति ना ।।
कृतातवक्र तब गया सीता द्वार । माता तीर्थ चलो मोहि लार ।।४५६३।।

सीता को यात्रा के बहाने से ले जाना

समेदशिखर तीरथ निर्वाण । पूजा करो जिनेस्वर थान ।।
जैसा कर्म उदै होवै आय । तैसी तैसी देखै ठाइ ।।४५६४।।
रहस रली सू सीता चली । सब कुटब सू तब ही मिली ।।
रथ परि चढि चली समेद । देखै सकुन विचारै भेद ।।४५६५।।
सूका वृक्ष परि बैठे काग । चुंच मूडपरि पटकण लाग ।।
देखे बुढिया मारग माहि । बाल खसोटै बैसे छाह ।।४५६६।।
सकुन विचारई सीता तलै । हम तीरथ कारण कौ चलैं ।।
कहा सकुन करैगा मोहि । कछुवन मन धरचा न रंच ।।४५६७।।
अग्रे देखै पर्वत झरई । मानूं रुदन सब कोइ करई ।।
कहि खलखलाट जल बहै । देखि रूख तिहा आश्रम गहै ।।४५६८।।
महा गग तिहा अगम अथाह । जलचर जीव सुखी बन माहि ।।
तटपरि ऊचे सोभै रूख । सीतल पवन तैं भाजै दुःख ।।४५६९।।
वनफल उत्तम लागै घणे । निरमल नीर सोभा अति बणे ।।
गडगडाट मूं उछलै नीर । देखत ताहि रहै नही धीर ।।४५७०।।
स्पघ नाद गंगा पार अर्ण । तिहा नाहि काहू की सर्ण ।।
एक नाम भगवंत सहाइ । और न कोई है इस ठाइ ।।४५७१।।
कृतात वक्र तिहा रोवै आन । हाथ मुड धरि सोचै ग्यान ।।
सीता माता अति धर्मेष्ट । इनकौं फिरै उदै हुवा कष्ट ।।४५७२।।
असी महा भयानक ठौर । वन का जीव करै तिहा सौर ।।
मैंने आग्या प्रभुजी की पाइ । सीता कूं ल्याया इस ठाइ ।।४५७३।।
कृतातवक्र सौ सीता कहै । सूर वीर धीरज कौं धरै ।।
जई तुं ढाढस डारै तोडि । तो हम मन दिढता रहैं छोडि ।।४५७४।।

कृतांतवक्र का रहस्य खोलना

कृतातवक्र तब विनती करै । सत्य वचन मुख तै उच्चरै ।।
प्रजा पुकारी रघुपति पास । हमारा नही नगर मे बास ।।४५७५।।

घरि घरि नारि करै विभचार । छोड्या सब लज्जा का भार ।।
जब वउलै घर का भरतार । उत्तर देहं सकल वे नार ।।४५७६।।

सीता रावण कै घर रही । रामचन्द्र कुछ बात न कही ।।
फेरि आणि पटराणी करी । तुम काय हमने भाखो बुरी ।।४५७७।।

ऐसे पुरुष जे अग्रीकर्त्त । तुम तो ढूंढो हमारा चरित्र ।।
रामचंद्र सुंणि प्रजा वईन । मन मे सोच भया कुचईन ।।४५७८।।

लखमण रह्या बहुत समझाय । उसका कह्या न मान्या राइ ।।
मोहि बुलाइ आग्या इह दई । तब मोकू चिता इह भई ।।४५७९।।

कैसे छोडू बन मे सिया । कहैत सुणता फाटै हिया ।।
उनसूं उत्तर कह्या न जाइ । तातै तुमनें आणी इस ठाइ ।।४५८०।।

सीता का सन्देशा

बोलै सीता गदगद बोल । प्रजा रघुपति करो किलोल ।।
हमा ऊनूं की इहां लागि प्रीति । धन्य जीव जे होइ अनीत ।।४५८१।।

बहु सुख भुगते राज प्रसाद । यू ही जनम गमायो सब वाद ।।
धरम न चेत्या सुख की वेर । मानुष जनम कहा लहीए फेर ।।४५८२।।

जैसे कोई रतन को पाइ । फेरि समुद्र मे दिया वुहाइ ।।
वेर वेर कहा पावै रतन । जे कोई करै कोटि जतन ।।४५८३।।

असा रतन मानुष्य अवतार । तामे भले मूढ गमार ।।
करो धरम भवसागह तिरो । बहुरि न मोह फद मे पडो ।।४५८४।।

आई मूर्छा खाई पछाड । बडी बार मे भई सभार ।।
फिर बोली सीता महासती । रामचन्द्र सू कहज्यो वीनती ।।४५८५।।

परिजा नै थे दुखि मत करो । दया समकित चित्त मे धरो ।।
पूजा दान करो दिन रात । तुमारे समरण में इह भाति ।।४५८६।।

कृतातवक्र तब रोवै पुकार । अपने सिर लिया मै भार ।।
सेवक का है जनम अकयथ । अपने बल होवै समरथ ।।४५८७।।

तो अपणें मन मानी करै । पाप अने पुंनि समझि चित्त धरै ।।
पराधीन कछु बोल न सकै । जिहां भेजै तिहां पल नहि टिकै ।।४५८८।।

जैसी आग्या सोई होय । ताको वरज सकै नही कोइ ।।
जे मै पराया भया आधीन । तो भ्रं करम कमाया आधीन ।।४५८९।।

सीता का बन में अकेलोपना

अपणी निंदा कीनी घणी । सकल बात सीता नैं सुणी ।।
सीता कहै पुत्र तू जांहि । तेरा दोस इसमे कछु नाहि ।।४५९०।।

रथ तैं पाव सीता तिहा धरया । कृतात वक्र अयोध्या कु फिरया ।।
बहुत सोच सीता मन करं । धीरज मनमे कैसे धरं ।।४५९१।।

महा भयानक वन की ठाव । तिहा नही माणस का नाव ।।
सिंघ गयद तिहा अजगर घणे पसु पंछी बोलत जब सुणे ।।४५९२।।

पग धरणें कूं नाही ठौर । भाखरण सूल कटक और ।।
वे मंदिर पाटबर सोज । रतनजोति सुख देखे चोज ।।४५९३।।

पान फूल सुगध फुलेल । चोबा चदन सो करता खेल ।।
आठ सहस्र मेरे थी साथ । पटराणी थापी थी रघुनाथ ।।४५९४।।

हमारी आग्या मानै थी सर्व । तीन खड की लक्ष्मी दर्व ।।
असा कर्म उदय हुआ आय । वे सुख खोसि भेजी इस ठाँय ।।४५९५।।

कै मैं वच्छ विछोही गाय । कै मैं बाल विछोही माइ ।।
कै सरवर नैं बिछोहा हस । कै पर यो नीका राख्या प्रस ।।४५९६।।

कै जिन भक्ति करी न मन ल्याय । कै जिनवानी चित्त न सुहाइ ।।
मुनीस्वर सेवा कही नह खरी । साधां की निंदा चित्त धरी ।।४५९७।।

अणछाण्या जल पीया जाइ । कंद मूल भषे अथाह ।।
ओछा तप कर लिया अवतार । मोहि बिछोह भया भरतार ।।४५९८।।

कुगुरु कुदेव कुसास्त्र पर चित्त । तार्थं आइ भई इह थित्त ।।
पछी दिया पिंजरा माहि । तार्थं हुवा इह दुख दाहि ।।४५९९।।

हाइ राम लक्ष्मण कहा किया । मोकूं देस निकाला दिया ।।
हाइ जनक भावमंडल वीर । या समै कोई ना राखै धीर ।।४६००।।

वज्रजंघ द्वारा सीता का विलाप सुनना

वज्रजध पु डरीक का धणी । वाकै संग सेन्या है घणी ।।
हस्ती कारण बन मे आइ । पकडया गज बाजत्र बजाइ ।।४६०१।।

सुण्या सबद सीता का रोज । भया अचमैं देखै खोज ।।
इह वन इसा भयानक रूप । देखै सबद सुणैं बहु भूप ।।४६०२।।

कं इंद्राणी कं पदमावती । कं किंनर कं विद्यावतती ।।
सब सेन्या कर गहै हथियार । तिहां नागी चिमकै तरवार ।।४६०३।।

हय गय रथ किंकर ता संग । महाबली राजा बज्रजंघ ।।
असा वन भयानक प्रति घोर । मानुष्य नै प्राइ सकै कोई ग्रोर ।।४६०४।।

दूहा

सुभ असुभ दोऊ करम, अपणी चली तिहां चाल ।।
भूपति नै भिक्षु करै, रंक नैं करै निहाल ।।४६०५।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता वनवास बिलाप बज्रजंघ समागम विधानकं

६० वां विधानक

चौपई

सेना थकित रही वा ठाव । प्रागैं कोई धरै न पांव ।।
सूर सुभट अग्रे होइ चलै । धर्म कर्म समकित्ती भलै ।।४६०६।।

उतरे भूमि सीता कू देख । माता कहो तुम अपना भेष ।।
तुम हो कवरण असे वनमांहि । ऐसा दुःख करो तूम कांहि ।।४६०७।।

सस्त्र देखि सीता भय करै । भीड देखि मन मे प्रति डरै ।।
अरे वीर मब देहु डारि । आभूषण एही तू उतारी ।४६०८।।

मेरे नाम राम की प्रास । लेहु सकल छोडो मो पास ।।
बोलै सुभट तुम मति करो । बज्रजघ इहां नरपति खरो ।।४६०९।।

हाथी पकडन प्राया भूप । सम्यक्‌दृष्टी दया स्वरूप ।।
तीन रतन है वाके चित्त । जती भाव राखै है नित्त ।।४६१०।।

यु ही आया बज्रजघ भूपती । बहुत लोग राजा के सगती ।।
सीता नै पूछियो नरेस । माता कहो आपना भेस ।।४६११।।

महागगा तिहा बहै अपार । ताहि उतर कैसे भए पार ।।
ए वन महा भयानक बुरा । कारज कवरण पयाणा करा ।।४६१२।।

अपणा कहो सकल बिरतात । सांची बात सुणावो मात ।।
पिछली बात कहो समझाइ । जनक सुता हू मै इस ठाँय ।।४६१३।।

सीता द्वारा अपना परिचय देना

भावमंडल है मेरा भ्रात । विदेहा राणी है मुझ बात ।।
दसरथ है अजोध्या का राइ । च्यार पुत्र ताके अधिकार ।।४६१४।।
रामचन्द्र की मैं पटधनी । सुखपाई ग्रैसी गति बणी ।।
केइकेइ कुंवर दशरथ दिया । राम लखन वासा लिया ।।४६१५।।
भरथ सत्रुघन पाया राज । बहु बिध प्रजा का सारै काज ।।
हू भी फिरी राम के साथ । दडक बन मे श्री रघुनाथ ।।४६१६।।
तिहा मारघा संबूक कुमार । खरदूषण लडिया तिण बार ।।
रावण नें तिहा मोकू हरी । वाकै सील की थी ग्राखडी ।।४६१७।।
ग्रनतवीरज पासै लिया सील । गया लक लागी नही ढील ।।
बिराधित सुग्रीव हनूमान । वानर वंसी ग्रति बलवान ।।४६१८।।
राम लक्षमरण है विमान बैठाइ । लका मे पहुचे सब जाइ ।।
रावण मारे लका तोडि । तब मिलीया रघुनाथ बहोडि ।।४६१९।।
उहां ते ग्राया ग्रयोध्यापुरी । परजा ने चरचा इह करी ।।
रामचन्द्र ने इह चतुराई करी । फेरपट दिया सीता ग्रमतरी ४६२०।।
मीता कुं रावण ले गया । ईना फेर घर बासा कीया ।।
उहा ग्रैसी चरचा मांहि । भरथ वैराग भयो मनमांहि ।।४६२१।।
दिक्ष्या ले पाया निरवाण । बीते मोह दिन गर्भ का जान ।।
भए दोहला इछा यही । तीर्थ पंचकल्याणक सही ।।४६२२।।
करूं जात्रा पूजा घणी । सब सामग्री उत्तम बणी ।।
महेन्द्रवन पूज्या भगवत । मुनिसोव्रत स्वामी ग्ररिहन्त ।।४६२३।।
कैलास जात्रा पूजण जोग । पचमेरु बदना निवोग ।।
पुहपक बिमाण कीया संजुत्त । परजा तिरण त्रा ग्राय पहूत ।।४६२४।।
करी पुकार राम पैं जाय । नारद विगडै है सब ठाइ ।।
सब प्रताप सीता का कहै । कैसे हम नगरी मे रहैं ।।४६२५।।
वज्रजंघ समझावै ग्यान । तुम समझो हो वेद पुराण ।।
ग्रारत ध्यान तुम करो दूर । बारह ग्रनुप्रेक्षा समझो मूर ।।४६२६।।
च्यारुं गति माहि डोल्या हंस । कही नीच कहीं उत्तम बंस ।।
रोग सोग ग्रारत मै रह्या । भ्रमत भ्रमत बिसराम न गह्या ।।४६२७।।

चारों गतियों के दुःख

सुभ नैं असुभ कर्म देउ साथ । सुख दुख देखे नाना भांति ॥
देव हुआ सुख त्रिपता नहीं । छह महिना आव जब रही ॥४६२८॥

सब सुख भूल्या चिंता बीच । बहुत भ्रम्यां गति उत्तम नीच ॥
मानुष्य जनम भुगते बहु भोग । तिहां भया कुटब का सोग ॥४६२९॥

रोगी रहै कहै नहीं सुख । पीडा चिंता व्यापै दुःख ।
पाई गति पसू तिरजंच । तामें सुख पाया नहीं रंच ॥४६३०॥

खूंटै बाध्या है संताप । मरै भूष तिस करै सताप ॥
माछर देस देह कूं लगैं । लद्या फिरै निस बासर जगे ॥४६३१॥

नरक गति दुख की तिहा खानि ।छेदन भेदन सहै परांन ॥
सहै दुख यह बारंबार । भवसागर तें तिरया न पार ॥४६३२॥

जनम जरामृत आसा डोरि । इनसो कदे न भया विछोर ॥

वज्रजंघ का परिचय

इद्रवसी दूरि नवाह नरेस । भुगतै पुंडरीक का देस ॥४६३३॥

संबोधमती वाकै पटनारि । तासु गर्भ लीया अवतार ॥
बज्रजंघ है मेरा नाव । धरम वहन का राखो भाव ॥४६३४॥

महा पुनि पूरव भव किये । रामचंद्र से प्रभु तुम हिए ॥
असुभ कर्म तैं डोले घने । ते सहु बाकि मोनुं सुने ॥४६३५॥

अब रघुपति आवैगे आप । तुमारा मेटैगा संताप ॥
तेरा गर्भ मे जीव सुपुनीत । धरम उदें जाणी इह रीत ॥४६३६॥

तीरथ नाम करि तुम कूं काढि । रामचन्द्र मन चिंता बाढि ॥
तुम कूं हुवा धरम सहाइ । गज निमित्त मैं पहुच्या आइ ॥४६३७॥

चलो बहन तुम मेरे ग्रेह । दूरि करो मन का संदेह ॥
भावमडल सम मोकूं जानि । सीता बैठाइ लई सु विमान ॥४६३८॥

दूहा

वज्रजंघ भूपति बल धरया, धरम का वह्यो भाव ॥
सीता कुं वन मांहि तैं, बहिन कहि ले आव ॥४६३९॥

इति श्री पद्मपुराणे सीता समास्वास्त विधानकं

९१ वां विधानक

चौपई

सीता के साथ बज्रजंघ का आगमन

रतनजडित सोहै सुखपाल । मणि माणिक लागे बहु लाल ।।
पाटवणे पाटंबर बिछे । छत्री कलस मोती के गुथे ।।४६४०।।

सोहइ मुखमल तणे गलेस । जणे पंचरग के भेस ।।
तामे बईठ सो सीता चली । डोला डोला ता सग चिली ।।४६४१।।

बहुत सखी वा पाछै हुई । ढिग ढिग गाव सब हरियल मही ।।
देस देस के नृपति श्राइ । नमस्कार करि ठाढे राइ ।।४६४२।।

पुंडरीक सुराष्ट देस तिहा । सहु कोई सुखिया जिहा ।।
धर्मेष्ट सर्व बसै तिहा लोग । पानफूल सौं धाके भोग ।।४६४३।।

नगर बसै स्वर्ग अनुहार । जिसका बहुत बडा विसतार ।।
बन उपवन वापिका कूप । सोभा कमलां तणी अनूंप ।।४६४४।।

हाट बाजार छाए सब ठोर । कचन कलस धरे सिर पोर ।।
छाटी गलियो नीर सुबास । देखै नारि चढी आवास ।।४६४५।।

सीता आई नगर मझार । मंदिर मे पहुची तिस बार ।।
बज्रजघ की राणी आइ । लागी सहु सीना के पाय ।।४६४६।।

बज्रजघ बहु स्तुति करै । आजि भाग धनि म्हारा करै ।।
सीता बहन आई हम द्वारि । सब मिल करो नणद की सार ।।४६४७।।

ज्यौं पीहर मे रहै पूतरी । असे रहे सीता तिह पुरी ।।
मुख सौं बीतै बासर रैन । पूजा दान करै मन चैन ।।४६४८।।

कृतांतवक्र की व्यथा

कृतांतवक्र मारग के माझ । रोवत ताहि पड गई सांझ ।।
हाइ हाइ करि रोवै रोज । सीता का पाऊ कित खोज ।।४६४९।।

महा भयानक वन भयभीत । छोडी तिहा महा विपरीत ।।
किण पसुव सीता कू भख्या । वा बन मे को करि है रिष्या ।।४६५०।।

आया रामचन्द्र कै पास । नीचो मुंडी खडा उदास ।।
नैना नीर बहै असराल । मानू चुवै मेघ की धार ।।४६५१।।

कठिन कठिन करि निकसै बात । वन मे छोडी सीता मात ।।
महासती दई तुम निकारि । राजनीति करी नहीं विचार ।।४६५१।।

वन है भयानक गंगा पार । अजगर तिहां बडा विसतार ।।
रहै ग्यघ तिहां खोह मझार । अरना भैसा माड सीयार ।।४६५३।।

हसती भर्म रीछ बाराह । पडै धूप पावैं नही छांह ।।
वे दुख कैसे सीता सहै । वहै तुमारे सर्णं में रहै ।।४६५४।।

राम लक्ष्मण का रुदन

रामचन्द्र लखमण सुंणि बैन । मूर्छा खाई पडे कुचैन ।।
हाइ हाय करि धरणी पडे । भोई बैदि जतन बहु करे ।।४६५५।।
तुम देख्यां बिन कैसां जीवां । बिन अपराध दु:ख दिया नवां ।।
अब तोकूं कहां पाऊं सिया । महासती जनक की धिया ।।४६५६।।
वे दुख देखि लहे थे सुख । अब फिर पाए ऐसा दु:ख ।।
कोमल वर्णन कोमल देह । दुख पशु का है तिहां गेह ।।४६५७।।
कंटक घणे मारग नही चलै । तिहा भीता जीवत क्यो मिलै ।।
वन मे दौ लगी है घणी । असी कठिन तिहां उनकौं बणी ।।४६५८।।
कै कोई पसु के डसै वीयाल । कै कोई भील ले गये बीयाल ।।
असा दुख सौं प्राणी सिया । अब मैं देस नीकाला दिया ।।४६५९।।
कहां पाऊ मैं सीता सती । मैं तो बुधि करी दुरमती ।।
रतनजटी जब तो सुध दई । हनूमान तै चिंता गई ।।४६६०।।
अब किसकौं भेजौ वन माहि । ल्यावै खबर मिटै दुखदाह ।।
कृतांतवक्र तुम बोलो साच । किण विध सहै दुख की आच ।।४६६१।।
सीता छोडी है कि नही । सत्य बचन भाखो तुम सही ।।
जैसे कह्या क्रोध के भाइ । तै ले छोडी वन मे जाइ ।।४६६२।।
सीता बिन हूं तजूं परान । बेग मिलाको मोकूं आन ।।
ज्यौं ज्यौं लहर हिया मैं उठाइ । त्यों त्यों रघुपति दुख अधिकाइ ।।४६६३।।
वस्त्र फाडि पघडी मुंड डारि । महीपति खाई तबै पछाडि ।।
लखमण खागया मूरछाकंत । मानुं भए प्रान का अंत ।।४३६४।।
करै वैद सीतल उपचार । तबे उनुह कुं भई संभारि ।।
हा हा कर नित करत विहाइ । परजा सकल दु:ख कै भाइ ।।४६६५।।
घरि घरि रोवइ पीटइ लोग । घरि घरि करइ सीता का सोग ।।
नौ महीना सोग में गये । लखमण समझावै विनती किए ।।४६६६।।
सीता सीलवंत सु पुनीत । ता थैं राखै मननैं चित ।।
सील सहाई होय सब ठौर । पुन्य बराबर सगा नही और ।।४६३७।।
जल थल महियल सील सहाइ । वन बेहड जिहां लागै लाइ ।।
परवत समुद्र विषम जो होइ । परम सहाई कहैं सब कोइ ।।४६६८।।

मैं जाणु सीता नैं मुई । करो पुनि चिंता कछु नहीं ।।
भद्रकलस तब लिया बुलाइ । देह दान सब को मन भाइ ।।४६६६।।
रामचंद्र राजसभा सभालि । मन तै टरै न सीता सालि ।।
बहुत दिवस में भूले दुख । राज भोग मे मानै सुख ।।४६७०।।

दूहा

प्रीतम बिछुडे दुख घणा, भूलैं नही दिन रयन ।।
सीता नै वनवास दे, कैसे मानै चैन ।।४६७१।।

इति श्री पद्मपुराणे राम विलाप विधानकं

६२ वां विधानक

सीता के पुत्र जन्म

चौपई

पूरण गर्भ भया नव मास । श्रावण सुदि पून्यूं परगास ।।
श्रवण नक्षत्र उत्तम शुभवार । जुगल पुत्र जन्म्या तिह बार ।।४६७२।।
लवनांकुस मदनांकुस और । तातै अधिक विराजै ठौर ।।
जोतिगी पंडित जोतिग साध । भले मुहूर्त्त गुनां अगाध ।।४६७३।।
इन सम बली न होइ है ग्रान । महापुनीत धरम की खान ।।
बज्रजंघ ग्ररु सब रणवास । सकल लोक ग्रति करै हुलास ।।४६७४।।
दान मान सब ही कूं दिया । घर घर रली बधावा किया ।।
परियण की ग्राई सब नारि । सब मिल गावै मगलाचार ।।४६७५।।
करैं नृत्य गुनीजन सब ग्राइ । गावै ताल मृदग बजाइ ।।
ढोल दमामा करनाइ । वीण बासुरी ग्रनै सहनाइ ।।४६७६।।
भाति भाति के बाजा बजै । सुनत सबद मन सुख ऊपजै ।।
बहुत नारि सीता कै संगि । करैं सेव सुख पावै ग्रंग ।।४६७७।।

बालक्रीडा

निस बासर ग्राग्या मे चलै । दोनु बालक शसी मे पलै ।।
तेल उबटना ग्ररु ग्रसनान । सोमैं दोन्यूं चद्र ग्ररु भान ।।४६७८।।
पल पल घटिया बधै कुमार । बदन जोति शशि की उणहार ।।
निकस्या दत तारा की ज्योति । नख करात की सोभा होत ।।३६७९।।
बालक लीला सीता देखि । भूल्यौ सोग इनौंनै प्रेषि ।।
कबहु हंसै कबहु करैं रोज । चलै गुढलियां उपजै चोज ।।४६८०।।
उठै लागि ग्रगुली गहि चलै । गिरै भूमि तैं सोमैं भलै ।।
कबहू जननी गोदी लिये । लपटै कंठ महा सुख दिये ।।४६८१।।

पाले पोसे हुए सबेल । सब मिलि करै उनौं सों हेत ॥
सिद्धारथ मुनि आगम हुआ । राजद्वार प्रवेस जदि हुवा ॥४६८२॥
सीता द्वारा पेषण करचा । नमस्कार करचा तिहां खड़ा ॥
धरम वृद्धि मुनि बोले बोल । पट बैठा तिहां रत्न अमोल ॥४६८३॥
लेई महार उठ्या मुनि ईस । अखैदान बोलै आसीस ॥
सीता सु पुछया विरतात । सुण्या भेद कांपे सब गात ॥४६८४॥
वे दुख सुणि उपजी मन दया । धरम उपदेस सीता कूं दिया ॥
दोउ पुत्र आये तिह बार । दरसन पाय कियो नमस्कार ॥४६८५॥
दोउ रूपवंत गुणवंत । सुंदर देह महा बलवंत ॥
कोमल चरण नख जोति अपार । खंड पयोधर सीलै इकसार ॥४६८६॥
कटि केहरि हिरदा बिसतार । भुजा अनोपम जोति अपार ॥
कर कोमल नख असेत । कंध ग्रीवा बज्र सहेत ॥४६८७॥
उष्ट कपोली हीरा से दंत । मुंह कवाण दे सोभावंत ॥
बदन जोति सोभै सिर केस । स्याम वर्ण सु बिराजै भेस ॥४६८८॥
महा अटल सुदर्शन मेर । गुणगंभीर सागर के फेर ॥
इनके गुण इनही ते बणे । तो मुख गोचर जाहि न गिणे ॥४६८९॥
जई सरस्वती आपण मुख कहै । सीता सुत गुण पार न लहै ॥
ऐसे बालक देखे उन मुनी । विद्या पढाइ किये बहु गुणी ॥४६९०॥

अध्ययन

एक बार गुरु देहि बताइ । वे फिरि पढि सुणावै समझाइ ॥
विद्या पढि पारंगति भए । रवि सा तेज ससी किर्ण सम थए ॥४६९१॥
जिहा लौं थे राजा अरु रंक । इनछुं सुणि मानै सब संक ॥
बज्रजघ कुं मिले सब आइ । करै सेव सब मस्तक नाइ ॥४६९२॥
जिहा निकलै दोऊ कुमार । देख रूप मोहैं सब नारि ॥
इनकै चित्त धर्म का ध्यान । पाप न गहै मन अपनैं जान ॥४६९३॥
बेद पुराण सुनइ मन लाइ । मिथ्या मारग चित्त न सुहाइ ॥
सम्यक दर्शन सम्यक ग्यांन । चारित्र भेद के करै बखान ॥४६९४॥
सब परि छांह धरम की करै । राजनीति विध समझैं खरैं ॥
सस्त्र विद्या धनुष टंकार । बांण विद्या सीखे बहु सार ॥४६९५॥
दोउ वीर सब गुण सयुक्त । महासती सीतां के पुत्र ॥
सोहई मुकट वस्त्र बणे अंग । बहुत कुमर करै सेवा संग ॥४६९६॥

सीता देखि करै मन आणंद । जाणे दोऊ सूरज चंद ।।
पुण्यवंत ए दोऊ वीर । कंचन वरण सब बणे सरीर ।।४६९७।।
बज्रजघ मन भया हुलास । मनोबांछित मन पुंगी आस ।।
सब भूपति मे कीरति बढी । दिन दिन कला अति ही चढी ।।४६९८।।
निरभय राज करै आपणा । पूजा दान मन लाया घणां ।।
दया अंग विधि पालै भली । करैं राज मन में अति रली ।।४६९९

अडिल्ल

पुण्यवत जित जाइ तिहां रिध ह्वै घणी
सुख संपति अधिकार जीत पावै अणी ।।
रहै धरम सु प्रीत कला दिन दिन बधै ।
लवनाकुस सुपुनीत क्राति पल पल चढै ।।४७००।।

इति श्री पद्मपुराणे लवनांकुस उदय भव विधानकं

९३ वां विधानक

चौपई

लवनाकुस भए जोवन भेस । बज्रजघ चितवै नरेस ।।
लक्ष्मीदेई राणी सुर ग्यान । ससी चला पुत्री गुणखान ।।४७०१।।
कन्या बत्तीस उनू की साथ । लव कू विवाह दई नरनाथ ।।
रहस रली सूं बीतै द्योस । कुस कारण विचारै अब होस ।।४७०२।।
किस राजा पै भेजा दूत । ताकै पुत्री रूप संजूक्त ।।
माने वचन ढील न करई । मेरा कह्या वेग सिर धरई ।।४७०३।।

कुस के लिये पृथ्वीधर के पास दूत भेजना

पृथ्वीवती नगरी का नाम । पृथ्वीधर है जिण ठा राव ।।
अमृतवती राणी सुन्दरी । कनकमाला वाकै पुत्तरी ।।४७०४।।
असी कन्या किसको बरै । भेजो दूत कारज इह सरै ।।
पठए दूत प्रथवीधर पास । गए बसीठ कन्या की आस ।।४७०५।।
नमस्कार सभा पइठ । निरमै वाक कहै अति दीठ ।।
बज्रजंघ घर भाणज दोइ । रघुवसी जाणैं सब कोइ ।।४७०६।।
लव को पुत्री दई आपणी । बत्तीस अवर राजा की घणी ।।
कनकमाला तुम कुस कू देइ । मेरा वाकि हिए धरि लेहि ।।४७०७।।
भूपति सुणि कोपे तिण बार । अरे मूढ कहो बात संभारि ।।
बन बन फिरती आणी वहन । अवर वा कुं धार्ग के चिह्न ।।४७०८।।

पृथ्वी धर का कुपित होना

उसके जरणे भारणजे किये । जाति कुलीन विचारी हिए ।।
यूं ही कन्या दीन्ही ताहि । असा मूरख मैं तो नांहि ।।४७०६।।
तेरा दोस कबहू नही दूत । प्रभू के वाक्य कहै संयुक्त ।।
बर के जब इतना गुरण होइ । तब कन्या पावै वर सोइ ।।४७१०।।
उत्तम कुल उत्तम ही जात । सीलवंत धन होइ विख्यात ।।
रूपवंत अवर बेस परमांन । बल जोवन वैस सुभ थान ।।४७११।।
विद्या गुरण लष्यरण तिह जात । महासुभट सारं परकाज ।।
ताकूं दीजे कन्या सही । कर्मकलकी नै देरणी नहीं ।।४७१२।।
बोलं दूत राजा सो फेर । रामचद्र सुत जाण्यो सुमेर ।।
सीता तरणे गर्भ तै भए । रघुवंसी सम अन्य न थए ।।४७१३।।
निरभय मन राख्यो आपरणो । कन्या दे सुख पावो घरणो ।।
क्रोधवंत बोलं भूपती । तो मैं बुधि नही है रती ।।४७१४।।
राज सभा बोलजे सोच । बिन विवेक तेरा ह्वं लोच ।।
धका दिलाइ दीना है काढि । वंध्या दूत पडी थी गाढ ।।४७१५।।
बज्रजंघ नै सुरणाया भेद । भूपति के मन उपज्या खेद ।।
मे तो मुखतै वचन निकाल । मान्या नही प्रथवीधर भूपाल ।।४७१६।।
अन्य वचरण सुनाया भेद । होई दोख अपरणां लगांउलवेद ।।
सबके मन आवं सदेह । किर कारण उन करया न नेह ।।४७१७।।
लागं खोड सगाई फिरं । अब हूं जाइ समभाउ खिरं ।।
बज्रजंघ पृथ्वी ऊपर चढ्या । प्रथवीधर राजा सौं मिल्या ।।४७१८।।
भगनी सुत मेरं इह बली । रामचंद्र की कीरत है भली ।।
कन्या देहु विलम्ब मति करो । मेरा बचन सत्य चित मे धरो ।।४७१९।।
बोलं प्रथईधर समभाइ । सीता मे होता गुरण राइ ।।
तो रामचद्र क्यूं दई निकाल । तो मे अकल नही भूपाल ।।४७२०।।
पहलीं भेज्या था तें दूत । अब तुम ही आए पहुत ।।
बिन विवेक तू है अग्यान । अपरणी आप घटावं कांन ।।४७२१।।

बज्रजंघ एव पृथ्वीधर में युद्ध

मान भंग हुवा बज्रजंघ । निकल्या कोप ज्यूं केहरी स्यघ ।।
लूटया नगर मचाई रोर । देस परगने मारे रोर ।।४७२२।।

बिजयारथ था बाणेदार । सनमुख ग्रान करी उन मार ।।
झूझ बिजयारथ धरणी पड्या । ग्रैसा सबद प्रथीधर सुण खरा ।।४७२३।।

देस देस के बुलाए मित्त । सेनाँ जोडी जुध की रीत ।।
बज्रजघ के पुत्र सुणी । उण भी सेना जोडी घणी ।।४७२४।।

लवकुश का युद्ध के लिये प्रस्थान

दोन्यु कुमर रहसि मन भया । करै ग्राज साका हम नया ।।
एते बने काहु कूं लोग । हम दोनू उस सेना जोग । ४७२५।।

सीता कहै तुम हो लघु बैस । रण मे कैसे करो प्रवेस ।।
कहैं कुंवर हम स्यंघ समान । हस्ती भाजै ग्रति बलवांन ।।४७२६।।

ए कीटक कहा सरभर करै । सत्री रण मे ते क्यूं डरै ।।
करि सनान पूजे जिनदेव । भोजन भक्ति करी गुरु सेव ।।४७४७।।

बागा पहरि बांधे हथियार । पच नाम पढि बारंबार ।।
रथ परि चढे ग्राप ग्रापणे । ग्रायुध सग लीने तहा घने ।।४७२८।।

बहुते मग चले सामत । उततैं प्रथवीधर बलवंत ।।
बज्रजंघ प्रथईधर लडै । दोउधा बहोत सूरमा पडे ।।४७२९।।

बज्रजघ दीए हराइ । लवनाकुस तब ग्राए धाइ ।।
जैसे स्यघ सारग कुं गहै । भाजे पसु सुधि न रहै ।।४७३०।।

जैसे रूई ग्राक की उडै । प्रथईधर की सेना मुडै ।।
पग धरणे कू रही न ठौर । पडी लोथ भागै रण छोडि ।।४७३१।।

प्रथईधर का कपै गात । पोछैं दौडे दोनू भ्रात ।।
तब लवनांकुस बोलै बोल । चेत वचन ग्रव का करै भोल ।।४७३२।।

हमारा नाम धरै था भंड । ग्रब काई छोडै क्षत्री भुंड ।।
क्षत्रीकुल ह्वै पीठ न देइ । तू कलक ग्रपने सिर लेइ ।।४७३३।।

सनमुख ग्राइ भुझ काइ न करै । गर्व वयण ग्रब का बीसरै ।।
प्रथिवीधर छोडे हथियार । हाथ जोड ठाढा तिण बार ।।४७३४।।

तुम हो रामचद्र के पूत । तुम प्राकर्म कोई न सकै पुहुत ।।
मो परि क्रिपा करो कुमार । तुमसा बली न इण संसार ।।४७३५।।

दोइ कर जोडि करै वीनती । बज्रजंघ मिलिया मूपती ।।
कनकमाला मदनांकुस को दई । मन की खुटक सगली मिट गयी ।।४७३६।।

लवकुश की विजय

बहुत विघन प्रथवी घर आन । देई भेंट राख्या सनमान ।।
भुगति भोग बीते बहु द्यौस । बिदा भए चाले मन हौंस ।।४७३७।।

एक सहस्र राजा ने साथ । विजय देस सौं भूपति बांधि ।।
पोदनापुर और बहु नग्र । राजा आरिण मिले तिहां सग्र ।।४७३८।।

गिर कैलास उतारी सैन । नदचारजीत भए सुख चैन ।
महागग तें उतरे पार । बहुत तनें कीया निरधार ।।४७३६।।

देश परगना अने बहु गाम । साध्या घणा राजा के नाम ।।
उहां ते चले देस आपणे । नरपति साथ लिए निज घणे ।।४७४०।।

पु डरीकनी रहि कोस सात । सतखणे बेठि सीता मात ।।
उडी धूल छाये आकास । पूछे सीता सखी जन पास ।।४७४१।।

वे कहै कोई नरपति आइ । तातै रज उडै वहु भाइ ।।
वज्रजंघ ने पहुची खबर । लवनाकुस मारे अति गबर ।।४७४२।।

जीत्या देस परगने घणे । बहुतराय सेना संग बणे ।।
सीता सुणी पुत्र की बात । उपज्या सुख अर हरषित गात ।।४७४३।।

बज्रजंघ आग्या इह दई । हाट बाजार छावो सब नई ।।
गली गली हूवा छिडकाव । कीया महोछव राख्या भाव ।।४७४४।।

सीता कूं किया नमस्कार । बज्रजघ मिलिया तिरण बार ।।
घरि घरि हुवा अति आनन्द । ए प्रतापी हैं ज्यो सूरज चद ।।४७४५।।

निरभय करै निकंटक राज । भई जीत मनबांछित काज ।।
बज्रजघ का प्रगटचा प्रताप । सुख माही मूल्या दुख सताप ।।४७४६।।

सीता रहैसी पुत्रां नै देखि । मन सतोष्या लख्यण गुण प्रेषि ।।
सकल लोक परिजा अति सुखी । तिहपुर कोई है नहीं दुखी ।।४७४७।।

दूहा

पुण्य बडो तिहु लोक मे, धरम भाव धरि चित्त ।।
सततैं कीरत आगली, धरमै सुख अनंत ।।४७४८।।

इति श्री पद्मपुराणे लवनांकुस दिग्विजय विधानकं

६४ वां विधानक

चौपई

राम लखमण चित आणी सिया । मोह उदय वे व्याकुल भया ।।
कृतांतवक्र को दे उपदेस । सीता सुध लेहु फिरो तुं प्रदेस ।।४७४६।।

कृतांतवक्र ए आज्ञा पाई । सिंहनाद वन हेरथा जाई ।।
पर्वत गुफा जोई सब ठाम । तिहा न कोई मानुष्य नाम ।।४७५०।।

नारद मुनि का आगमन

नारद मुनि आया पुंडरीक । सहु जगत मे हैं पूजिनीक ।।
बज्रजंघ लवनांकुस तिहा । नारद मुनि बैठा था जिहां ।।४७५१।।

देखा मुनि उठि ठाढा भए । नमस्कार करि आदर बहु दिये ।।
पट बैठाये नारद मुनि । सीलवंत नारद अति गुनी ।।४७५२।।

आगम करि कृतारथ किये । कवरण कवरण तीरथ मे गए ।।
नारद मुनि कही सहु बात । जिंह जिंह कीनी तीरथ जात ।।४७५३।।

धरम सुणाया पढया श्लोक । वर्ण समझाए तीनूं लोक ।।
वाणी सुणि सब करै डडोत । आसीरवाद मुनि कहे बहोड ।।४७५४।।

रामचद्र लक्षमण सा तेज । सदा बिराजो सुख की सेज ।।
दिन दिन कला तुम्हारी जोर । तो सम बली न दूजा और ।।४७५५।।

लवनाकुस बोलीया कुमार । असे है कुण बली अपार ।।
इस विध हमनै असीस तुम दई । कवरण बस उत्पन्न ते भई ।।४७५६।।

विवरा सुं समझावो मोहि । हम यह वाते पूछ्न तोहि ।।
नारद कहै सुरणउ विरतात । सुमेर अत पहूचै किह भाति ।।४७५७।।

रसना सहस्र होइ इकबार । राम लखमण गुण लहु न पार ।।
जैसे सायर अगम अथाह । बालक कर पसारै बाह ।।४७५८।।

वह समुद्र सकै को पेर । रामचद्र गुण असे फेर ।।
तीन लोक के वह जगदीस । सुर नर सकल नवावै सीस ।।४७५९।।

राम नाम तै तूटै पाप । रोग विजोग मिटै सताप ।।
इष्वाक वंस कुल उत्तम आदि । धरम क्रिया सब ही तै बाधि ।।४७६०।।

दसरथ नृप प्रतापी खरा । च्यार पुत्र गुण लष्यण भरा ।।
रामचन्द्र प्रथम भी और । उनसो सकल विराजै ठौर ।।४७६१।।

लखमण से ती है बहु प्रीत । भरथ सत्रुघन हैं महा पुनीत ।।
कैकया कुंवर दसरथ दीया । अयोध्या नाथ भरथ कुं कीया ।।४७६२।।

सूरजहास लखमण तिहा पाइ । खरदूखण सुत मारा तिंह ठाय ।।
अन चीते सुं कीनी चोट । सबुक हण्या विवेकी बोट ।।४७६३।।

रामलखण कूं दीये बनबास । सीता संग रही रनवास ॥
दंडक वन में आश्रम लिया । संबक कुंवर तिहां तप किया ॥४७६४॥

पसचाताप करैं मन मांह । विन अवगुण हत्या विवेकी छांह ॥
बार बार रघुपति पछितांहि । हौणहार मिटे किह भाइ ॥४७६५॥

खरदूषण मुणि कीनां जुध । रावण करी हरण की बुध ॥
सीता कूं रावण ले जाय । रावण मारि सीता ले आइ ॥४७६६॥

अजोध्या आए जीती सब मही । इन समान नरपति को नहीं ॥
करम सदै हुवा तिहा आंण । सीता काढि दई वन जांण ॥४७६७॥

मदनांकुस बोलै तिह बार । किण अवगुण पर दई निकार ॥
नारद कहै सीता की कथा । आठ सहस्र मैं सीता समरथा ॥४७६८॥

जनक सुता सत सील की खान । सीता सम कोई सती न आण ॥
परजा दोख लगाया आइ । सुणी बात जब रघुपति राइ ॥४७६९॥

टा कारण वे दीनी काढि । परजा कै सिर दोष इह बाढ ॥
इसा पाप तें कहा निसतार । परजा गह्या पाप का भार ॥४७७०॥

दूहा

विन अवगुण जे दोस दे, तेई मूढ अयान ॥
अंतकाल दुख भुगत करि, पावैं नरक निदांन ॥४७७१॥

चौपई

लवकुश की प्रतिक्रिया

मदनांकुस बोलीया कुमार । राम लछमण जे बुध अपार ॥
उनहैं करी न न्याव की रीत । तो इह वणाइ है विपरीत ॥४७७२॥

अपणे घरका करचा न न्याव । उनके घर का है खोटा भाव ॥
जिनकौं दई हमकौ असीस । बिन विवेक तूं है रिष ईस ॥४७७३॥

बोल्या नारद सभा मझार । रामचंद्र इह किया विचार ॥
परजा दोष लगाया घणां । बहुत भांति रघुपति नैं सुण्यां ॥४७७४॥

नारद का पुनः आगमन

निश्चै सीता का सत रह्या । लोकां झूठ वचन इह कह्या ॥
जे नही राखुं लोकाचार । तो अपकीरत होय संसार ॥४७७५॥

जुग जुग कथा हमारी चलैं । मोह कियो कोइ कहैं नहि भलै ॥
जे पृथ्वीपति महै कलक । अवर कुमारग कहै निःसंक ॥४७७६॥

एक दिवस है मरण निदांन । तातैं बुधि करीजै जांन ॥
उन सम दूजा नहीं है और । रामचन्द्र लछमण की जोर ॥४७२७॥

चक्र सुदर्शन उनूं के साथ । तीन लोक मे इहै नरनाथ ॥
उहा तैं उठि सीता के ग्रेह । नारद मुंनी दिगम्बर देह ॥४७७८॥

दरसन देख कियौ नमस्कार । सिधार्थ बैठा तिह बार ॥
पूछी सीता नारद सूं बात । किण किण तीरथ कीनी जात ॥४७७९॥

नारद बोलै तीरथ कथा । तब फिर बोलै सिधारथा ॥
अरे नारद तुं कहि है मुनी । कलह करम करता फिरैं घणि ॥४७८०॥

आपस मे भिडावै जाइ । तो कूं बहुत कलह सुहाइ ॥
नारद कहै हम क्या किया । सहज सुभाव उपद्रव किया ॥४७८१॥

मो कु दूखण लागै कहा । सीता रोवै नयन जल वुहा ॥
लवनांकुस सीता पैं गये । देख्या रुदन सोच मे भए ॥४७८२॥

माता कहो तुम साचे वयन । कारण कवन भरे तुम नयन ॥
जो कोई तुमसे बोलै वुरे । ताकु हाथ लगाउ खरे ॥४७८३॥

जीभ निकासु हतो पराण । जे कोई कहै कुवचन आन ॥
सीता कहै पुत्र तुम सुणो । कंत विजोग दुःख उपज्यो घणो ॥४७८४॥

पूछैं कुंवर कहो तुम मात । हमारा कहाँ वसैं है तात ॥
विवरा सकल कहो समझाय । तो हमारा विकलप मिट जाय ॥४७८५॥

पिछली कथा कही तब सिया । बहोत भांति उडै है हीया ॥
जैसी कथा नारद पैं सुनी । तैसी बात सीता सब भणी ॥४७८६॥

लवकुश द्वारा अयोध्या पर आक्रमण करने के लिये प्रस्थान

तवै उठ्या कुंवर रिस खाय । रामचंद्र चित दया न आय ॥
गर्भवती कू दई निकाल । अबै बैर लेहु पिता पैं जाइ ॥४७८७॥

घेर अजोध्या माडू जुध । अब उनकी खोउ सब सुध ॥
सेन्या जोडि अजोध्या चले । सूर सुभट संग लीने भले ॥४७८८॥

एक सो स्याठ जोजन का अंत । भले भले निकसे सावंत ॥
अयोध्या सीम पहुते आन । लूटे नगर बहुतेरा थान ॥४७८९॥

डेरा दीया नदी के पार । रघुपति ने पहुचाई सार ॥
कोई आया बली नरेस । लूटैं आस पास के देस ॥४७९०॥

लवकुश द्वारा युद्ध

जुध निमित्त उतरथा है आइ । वाका दल बल कह्या न जाइ ।।
रामचन्द्र लखमण नैं सुण्यां । मनमें सोच किया अति घणां ।।४७६१।।

असा कुण भूपति बलवंत । जिसका दल कहिए नहिं अंत ।।
वे चढि आए अजोध्यापुरी । ल्याई उणु मरण की घडी ।।४७६२।।

देस देस कौ लेख पठाइ । भूचर खेचर लिया बुलाइ ।।
नारद लिया भावमंडल पै गया । सकल भेद व्योरा सूं कह्या ।।४७६३।।

भावमंडल सुंण सीता विजोग । मनमे बहुतें व्याप्या सोग ।।
लवनांकुस का सुण्यां प्राक्रम । बहुता तणौं गुमायो भर्म ।।४७६४।।

नरपति घणां उना के संग । अजोध्या पति किया मान भंग ।।
भावमंडल मन हरष अति किया । चढि विमान पुंहता जिहा सिया
।।४७६५।।

पुंडरीक नगरी मां जाइ । बहन भाई मिलिया सुख पाइ ।।
सगली बात कही समझाइ । कछु हर्ष कछु विसमै राइ ।।४७६६।।

सीता कौ बैठाइ विमान । गगन मार्ग पहुंचाई आंन ।।
सुर नर देखें कौतिक आइ । दुहुं ठा सेन्या ठाडी जाइ ।।४७६७।।

दूहा

राम लखमन सुभट, सत्रुघन बलवान ।।
भूचर खेचर प्रथीपति, चढे बजाइ निसान ।।४७६८।।

चौपई

विराधित हिरन केस सुग्रीव । नल नील अलक धुज मीघ ।।
महीपति निकस्या उनुं साथ । सिंघ गरुड बाहन रघुनाथ ।।४७६९।।

वज्रजंघ अरु भूपति घणे । बाने बारी अग्रे बणे ।।
पडी मार चक्र अब बांन । रथतें गिरे आप भगवान ।।४८००।।

फिर संभालि रथ ऊपरि चढे । महा क्रोधवंत मन बढे ।।
गोली सर ज्यों बरसहरं धार । दोउंवा सेन्या होइ संघार ।।४८०१।।

हाथी घोडे रथ सुखपाल । पडी लोथ झूझैं भूपाल ।।
पग धरणे कूं रही न ठौर । श्रोणत सों रण भरया बहोरि ।।४८०२।।

अडिल्ल

पडी लोथ परि लोथ गिरध चूंटं घने ।।
कांपैं कातर लोग नाम भुझ का सुंणें ।।
लडै क्षत्री लोग जाहि कुल लाज है ।
स्वामी धरम का चिंत करैं वे काज है ।।४८०३।।

चौपई

कही घायल घूमैं हैं घणे । कही सुभट भूझे है बणे ।।
धड सिर पडै देह तें छूटि । लुटहा लोग करैं हैं लूट ।।४८०४।।

ग्यारहै सहस्र राम के उमराव । लवनांकुस सो धरि भाव ।।
पवन वेगि मिले हणवत । अवर गए बहुते बलवत ।।४८०५।।

सोरठा

देखो कलुका भाव, जीत्या सुं सब ही मिलै ।।
मित्र बिछडा सव जाइ, हारि जागि बिछुडै सवै ।।४८०६।।

इति श्री पद्मपुराणे लवनांकुस जुध विधानक

६६ वां विधानक

चौपई

युद्ध वर्णन

रामचद्र लवनांकुस लडे । मदनांकुस लछमन सु भिडे ।।
कृतातवक्र लडै बज्रजघ । लाग्या घाव विराधित सग ।।४८०७।।

तबै रघुपति समुझावै ताहि । क्षत्री रण छोडै किंहु नांहि ।।
मेरे रथ का हुवै सारथी । धावै बेग रचै भारथी ।।४८०८।।

विराधित रामचद्र रथ बैठि । धाए मारि मारि करि बइठि ।।
बज्रावर्त्त समुद्रावर्त्त । छोडै ज्युं घनहर वरषत ।।४८०९।।

उततै छोडै गोली बाण । प्रकास चक्र लखमण कर तांण ।।
उन सर छोड करी तब मार । उडचा फिरै चक्र तिंह बार ।।४८१०।।

चक्र सुदर्शन फेरि संभार । तामैं उठै अगनि की झाल ।।
गडगडाठ दामनी उद्योत । दसौं दिसा सबकों भय होत ।।४८११।।

गहे धनुष कुमर निज हाथ । छूटैं बाण ज्यो एकै साथ ।।
चक्र जाइ प्रकमा दई । पुन्यवत को भय नही हुई ।।४८१२।।

फिर आया लछमन कर चक्र । मनमे सोचैं लछमन सक्र ।।
अनंतवीरज स्वामी ने कह्या । कोटि सिला उठावै जो इह्या ।।४८१३।।

हूं नारायण त्रिखंडी ईस । मेरी कवण सकै करि रीस ।।
भूचर खेचर दानव देव । सब मिलि करि हैं मेरी सेव ।।४८१४।।

उनका वचन न झूठा पडै । चक्रवर्त्ति कोई अवतरै ।।
तातै चक्र करै नही घाव । अब हू कहा करू उपाव ।।४८१५।।

नारद द्वारा लवकुश का रहस्य खोलन

नारद सिधारथ दोउ आय । राम लक्षमण सु कहै समझाय ।।
ए दोन्युं सीता का पूत । बलपौरिष दोउ संयुक्त ।।४८१६।।

जब तुम सीता दई निकाल । बज्रजंघ आया भूपाल ।।
धरम बहिन करि वह ले गया । नगरी का लोग हरषित भया ।।४८१७।।

प्रसुति भई तिहा पुत्र दोइ जण्या । जनम महोछव कीने घणा ।।
लवनाकुस दोनुं बलवत । इन सम अवर नही सावत ।।४८१८।।

रामचन्द्र लछमन ने सुणी । अपणी निंदा कीनी घणी ।।
हमकूं उपजी महा कुबुद्धि । करी न कछु न्याव की सुधि ।।४८१९।।

सीता कू सत हुवा सहाइ । वह पाप भया हमकू आय ।।
सीता प्रतैं निकाला दिया । तो मान भग हमारा भया ।।४८२०।।

एक दोख चुक्या था नही । दूजा पाप अब हुवा सही ।।
जे झूझ थे ऐसे पूत । तो दुख होता हमैं बहूत ।।४८२१।।

ए थे देव कला के सिसु । गोत घावतई हुवा न सुख ।।
उतरे रथ ते सनमुख चले । दोन्यु पुत्र आइ कै मिले ।।४८२२।।

लव कुश द्वारा पिता की वंदना

लगे चरण रघुपति के पुत्र । कठां विलवन लेय विचित्र ।।
धन्य दिवस आज की घडी । पिता पुत्र मिल्या हुडी हुंडी ।।४८२३।।

विमाण चढी सीता इह देखि । मनमे आनन्द भए विसेष ।।
जाण्यां पुत्र महा सपूत । अपणै मन हरखित बहुत ।।३८२४।।

दूहा

पुत्र प्राकर्म कुं देख करि, सीता चित्त हुलास ।।
पुंडरीक फिर कै गई, पुंगी मन की आस ।।४८२५।।

चौपई

लवकुस का अयोध्या आगमन

बजरजंघ की अस्तुति करै । वाका गुरण रघुपति विसतरे ।।
दयावंत धरम का अंस । तुमते रहै हमारा वंस ।।४८२६।।
जे तुम आय बन के मांझ । सीता कु भय व्याप्या नांहि ।।
सीता की तुम कीनी सेव । उनका सत्त रह्या इन भेव ।।४८२७।।
बइठे चढि पुहपक विमांण । रामचंद्र लखमण बलवान ।।
लवनाकुस आगै आरूढ । रूपवंत लष्यण गुण गूढ ।।४८२८।।
छाया नगर गली सब झाडि । छिडक्या नीर गली सब बाडि ।।
घरि घरि बाधी बंदरवाल । घर घर देखण समही नारि ।।४८२९।।
बाल वृध्य सव आये लोग । देख रूप भूले सब सोग ।।
कोई नारि सराहै रूप । इन पटतर कोई नाही भूप ।।४८३०।।
धन्य सीता जाके गर्भ ए भए । दोनू स्वर्ग लोक तै चए ।।
कोई देख रही मुरझाइ । सिथल भई बहु ताकी काइ ।।४८३१।।
सिरतै पडै भूमि पर चीर । रही न ऊनू की सुधि सरीर ।।
छूटी लटि कटि ऊपर आइ । मानू लगे भुयगम सिराइ ।।४८३२।।
स्याम केस अति सोभा बणी । खुले हीए दोडी तहा घणी ।।
वे अपने मन निरमै जाहि । देखै लोग हसै सब ताहि ।।४८३३।।
सब के मन कुमरो का ध्यान । भूलि गई सब ही अवमान ।।
हारह मेल मोती के छडे । तेभी टूटि भौमि परि पडे ।।४८३४।।
आभरण की सव सुधि बीसरी । व्याकुल भई पुर की अस्तरी ।।
उनू के मन कुछ आवै नही । सगली नारि थकित होय रही ।।४८३५।।
ज्यो पतंग पीपक सूं नेह । देखे लोइ होमैं सव देह ।।
दीपक कै कछु नाही राग । जलै पतग ता सेती लाग ।।४८३६।।
रतनवृष्टि अति करै कुमार । आनद भयो सगले संसार ।।
रहस रली सु दिवस बिहाइ । पूजा करै जिनेस्वर राइ ।।४८३७।।

दूहा

पिता पुत्र सो जब मिले, हुआ अधिक हुल्लास ।।
चैन भयो सब नगर मे, पूजी मन की आस ।।४८३८।।

इति श्री पद्मपुराणे लवनांकुस अयोध्या आगमन विधानकं

९७ वां विधानक

चौपई

राज सभा बैठिया नरेस । मंत्री कहै समऊं उपदेस ।।
लवनांकुस तो मिल्या कुमार । सीता नै आणो इंह बार ।।४८३९।।

राम का चिंतन

रामचद्र चितवैं तिण बार । सीता सती गुण लच्छण सार ।।
परिजा यु ही दूषण दिया । ता कारण हम काढी सिया ।।४८४०।।
अब जे सीता आंणौ फेर । कहैं लोग ऐसे भी टेर ।।
तो होवै फिर नई उपाधि । कीजे कारज मन विच साधि ।।४८४१।।
जे फेर प्रजा को होवैं दुःख । कारन कवण हमारा सुख ।।
चद्रउदर विराधित हणुमान । सुग्रीव नल नील प्रधान ।।४८४२।।
रतनजटी आदिक भूपती । तिनूं विचारी उज्ज्वल मती ।।
देस देस कूं लेख पठाइ । भूचर खेचर लेहों बुलाइ ।।४८४३।।
करों प्रतिस्टा श्री जिनदेव । दानमान जिन गुरु की सेव ।।
सकल मिष्ट कौं द्यो जिमणार । सीता भी आणउ तिह बार ।।४८४४।।
सब सुं पूछैं मत्र विचार । सीता सत प्रगटै ससार ।।
तब सीता कू आंणो ग्रेह । सब के मन का मिटै सदेह ।।४८४५।।
भेज्या दूत सकल ही ठाइ । चीठी देखि चले सब राइ ।।
नरपति तब वहा आए घणे । सहु परिवार मनोहर बणे ।।४८४६।।
उतरे निकट अजोध्या आइ । सगली भूमि हुई छिडकाव ।।
सब को भोजन दे रघुपति । कीए सनान बहोत तिह भती ।।४८४७।।
पचामृता जीमवै भूप । मोखा तंबोल बहुत अनूप ।।
उत्तम गंगा जी का नीर । प्रासुख संवार कलस भरि नीर ।।४८४८।।
कनक कटोरे पिवै नरिंद । बैठी सभा तिहां पंकति बंद ।।
भावमडल विराधित हनुबल । भभीषण सुग्रीव सामत ।।४८४९।।

सीता को लेने के लिये भेजना

नल नील चन्द्रउदर राइ । रतनजटी रघुपति राइ ।।
पुहपक विमाण दिया इन संग । अन्य भूप भेज्या वज्रजंघ ।।४८५०।।
पुंडरीक में पहुंचे जाइ । सीता कै सब लागे पाइ ।।
ईनानै देख सीता गद्भरी । विद्याधर बहु अस्तुति करी ।।४८५१।।
चलो माता तुम हमारे साथ । तुम कारण भेज्या रघुनाथ ।।
सीता कहै परजा हौ सुखी । हम कारण मति होवो दुखी ।।४८५२।।

उन प्रसाद हम सुख में रहै । उनुके लोग बुरे सब कहै ।।
तायै रहै हम याही ठाइ । सुख सो राज करो रघुराइ ।।४८५३।।

फिर बोले विद्याधर बैन । करै प्रतिष्ठा पूजा जैन ।।
ता कारण आए सब लोग । चलो बेग श्री जिन जोग ।।४८५४।।

सीता का आगमन

सीता चढी पहुपक विमांन । आई अजोध्या जब लोप्या भान ।।
भई रयण तब आश्रम लिया । महेन्द्र वन मे वासा किया ।।४८५५।।

बीती निस रवि कीयो प्रकास । देखी अजोध्या सुख का बास ।।
सीता संग सहैली घणी । झोला डोली बहु विध वणी ।।४८५६।।

रथ पालकी अवर चकडोल । गज मयमत चले झकझोरि ।।
बाजे तिहां आनद निसान । तास सबद सुख उपजत कान ।।४८५७।।

बभन बहुत बेद धनि करै । भाट बिरद सुंगा के मन हरै ।।
सब त्रिय आई दरस निमित्त । भई भीड गलिये बहुमत ।।४८५८।।

नमस्कार करै सब कोइ । जै जै सबद दसो दिस होइ ।।
सुर नर किंनर जय जय करै । पुहप वृष्टि प्रथिवी पर परै ।।४८५९।।

रतन वृष्टि करैं सीता सती । पहुची तिहा बैठे रघुपती ।।
सब मिल उठ करी डडोत । लोगा अस्तुति करी बहोत ।।४८६०।।

रामचद्र की भ्रकुटी कठोर । स्यंघनाद वन आये छोर ।।
तिह वन देखि डरैं सब कोइ । निमचै मरणा वईठा होइ ।।४८३१।।

ए तूह वनते जीवत फिरी । असे बन दिष्या नही धरी ।।
जं मै याही भेजी बुलाइ । याकै चित्त अमर खन आइ ।।४८६२।।

उठी दौडि उन ही के संग । परजा मे होवै मान भग ।।
सीता सो वोलैं रामचन्द्र । जे हम करी रावण सो दुद ।।४८६३।।

तेरे कारण किया सग्राम । रावण ने पहुचाया जम धाम ।।
जै मैं जाणता असी वात । प्रजा दोष कहै इह भाति ।।४८६४।।

तो क्यों करता पाप की छाप । इतना दोष लिया मैं आप ।।
रण मे मारे इतने लोग । घर घर व्याप्या सोग विजोग ।।४८६५।।

जितनै दोहु था भुझ्या जीव । असा दोष लीया मे ग्रीव ।।
असा दुख सो आंणी सिया जाइ । जग मे यह चरचा चली इंह भाइ
।।४८६६।।

तो हम तोकूं दई नीकाल । मेरे मन उपज्या इह साल ॥
सीता कहै सुणुं पति प्रान । मेरे सदा तुम्हारा ध्यान ॥४८६७॥

तुम हो तीन षंड का पती । न्याव नु कीया एक इक रती ॥
जई घर का कर सको नहीं न्याव । औरें का करिहो किहू भाव ॥४८६८॥

गरभवती काढी वनवास । आरत ध्यान मे जीव का नास ॥
मरकरि भ्रमती नीची गती । तुम को होती पाप की थिति ॥४८६९॥

तीन जीव का होता दुख । तुम को होती नही गति मोक्ष ॥
बिन विवेक तुम असी करी । जीव दया चित्त नहीं धरी ॥४८७०॥

फिर कर बोलै रघुपति बैन । लेहु दिव्य हम देखै नैन ॥
जो मे तेरा सांच पती जू । परजा देखै तदि मे नहिं खिजूं ॥४८७१॥

अग्नि परीक्षा

सीता कहै लेहू दिव्य पांच । अब तुम देखो मेरा सांच ॥
खाऊं हलाहल ताता लोह । तराजू बीच तिष्ठावो मोह ॥४८७२॥

मो मैं सत तो मैं सरभर रहूं । देखो प्रत्यक्ष सील जस लहूं ॥
रचो चिता दावानल देहु । ता मैं मेरा परचा लेहु ॥४८७३॥

जो मैं सती न व्यापै आग । जो कछु दोष तो प्राण ही त्याग ॥
रघुपति कहै चिता हु रचो । जौवत हु पेरं जाणौं सचो ॥४८७४॥

सुणै लोग कंपे बहु भाइ । रामचन्द्र तै कछु न बसाइ ॥
जे अंगारा तन कै छुवई । दाझै तुरंत प्राणनि गवई ॥४८७५॥

महा भयानक ज्वाला वूरी । जिनमां बचै न एको घडी ॥
अगन माहि भस्म होइ जाइ । असी कहि कर सब पछताइ ॥४८७६॥

सिद्धार्थ बोलियो नरिन्द्र । म्हारी बात सुणौं रामचन्द्र ॥
मै तप किया वर्ष बहु सहस । पंचमेर तीरथ जिन अंस ॥४८७७॥

अकृतम चैत्यालय जिन गेह । करी तपस्या मन वच देह ॥
जे कछु हुवै सीता मे कलंक । ए सब जाणि निर्मूल निसंक ॥४८७८॥

असी नारद नै भी कही । रामचन्द्र मन बैठी नहीं ॥
सीता का सत्त महा अटल । जैसे है सुमेर अचल ॥४८७९॥

जे सुमेर धसि जाइ पाताल । सीता का सत खोटी चाल ॥
रवि का तेज भी होई हीन । सीता का सत होई नही खीन ॥४८८०॥

रामचन्द्र ते डाए थोड । खोदो बन मे तुम होडा होड ।।
राम हुकम ले वन मे गए । खोदं धरती मन अचिरज भए ।।४८८१।।

राजनि हठ को मेटै कोण । बरज सकै को चलली पौन ।।
अगनि कुंड कौं खोदै भूमि । सब नगरी मे माची धूम ।।४८८२।।

महेन्द्र उदय वन मे मुनि एक । सरव भूषन सुधरम की टेक ।।
तीन रतन हैं वाकै सत्य । आतमध्यांन दया सुचित्त ।।४८८३।।

दस लच्यरण गुण ताकै सत्य । मास उपवास पारण थित्ति ।।
बिद्युतवतक व्यतरौ आइ । मुनि कू दुख दिया बहु भाइ ।।४८८४।।

इहा श्रेणिक नैं प्रश्न किया । किम उपसर्ग जच्यणी नै दिया ।।
श्री जिनवाणी अगम अथाह । मिटै सकल हिरदा की दाह ।।४८८५।।

पूरव दिसा गुंज पुर नग्र । सिंघ वक्रम राजा बल अगर ।।
श्री देई अस्तरी सम्यक दृिष्ट । धरम करम करि महा श्रेष्ठ ।।४८८६।।

सरव भूषण तार्थे उत्पन्न । रूपवन्त सोहै लच्यन्त ।।
जोवन समै ते कुमार । आठ सहस्र बिबाही उत्तम नारि ।।४८८७।।

कर्ण मंडला पट की धणी । रूप लच्यरण गुण लावन्य वणी ।।
संगि सहेली बइठी पासि । देख्या चित्र सिराहई तासि ।।४८८८।।

कर मे पट चित्र का गहै । वारंबार सराहना कहै ।
हम सिखर का था लिख्यारूप । सबतैं पुरुष है वह अनूप ।।४८८९।।

एक सखी ऐसा विध हसी । तेरैं मन ए ही जुरत बसी ।।
हैम सिखर सौं संगम करि जांहि । असी सुणि राणी मुसकाइ ।।४८९०।।

राजा कानि पडी इह बात । क्रोधवंत हुवा बहु भांत ।।
खोटी चरचा एक मे करै । पर पुरुष की इच्छा धरै ।।४८९१।।

विभचारिणी समझी मनमांहि । गह्या खडग सौं मारूं जांहि ।।
त्रिय परि कहा उठाऊ हाथ । स्वारथा रूपी हैं सब साथ ।।४८९२।।

झूंठे सुख में राच्या जीव । इह कुटंब सब दुख की सींव ।।
राजि कुटंब विभव सब त्याग । सरव भूषण उपज्या वैराग ।।४८९३।।

लौंचे केस दिगम्बर भेस । हुवा जती गुरु के उपदेस ।।
वा इह विध तप आतम जोइ । क्रिया चौरासी इह विध होइ ।।४८९४।।

करि विहार अजोध्या आइ । करैं तपस्या मन वच काइ ।।
करण मंडला राणी सुख थाइ । रोवै पीटै बहुत रिसाइ ।।४८९५।।

मैं उनकी कछु करी न खोड । उनौं विचारी मन मैं और ।।
अब मै वा परि तजौं पराण । भारत रुद्र धरयो उन ध्यान ।।४८९६।।

मन पांसी विष छोडी देह । भई यक्षिणी वन कै वेह ।।
तब मन मांही अवधि विचार । सर्व भूषण की मैं थी नारि ।।४८९७।।

जिन अवगुण मुझ दूषण ल्याइ । वह तप करैं अजोध्या जाइ ।।
अब मैं उनसौं साधूं बैर । बंधन बेडी बांध्या मुनि पैर ।।४८९८।।

यक्षिणी द्वारा मुनि पर उपसर्ग

जब मुनि चाल्या लेण अहार । बंधण छूट गए तिण बार ।।
जक्षणी कुं तब उपज्या क्रोध । ल्याई अगनि तिहां बणी न सोध ।।४८९९।।

अंतराइ मुनि फिर करि चल्या । मास उपवासी पारणा टल्या ।।
बहुरि उठ्या आहार निमित्त । आंधी चली मारये थकित्त ।।४९००।।

कांटे मारग मांहि बिछाइ । पग धरणें कूं नांही ठांहि ।।
वाही ठांम थाप्या मुनि जोग । नगर मांहि तैं आवैं लोग ।।४९०१।।

व्यंतरी गई सेठ भंडार । अद्वेडा दे थैली तिहा डारि ।।
प्रभात भया तब खोजै सेठ । थैली पडी साध पग हेठ ।।४९०२।।

आए सकल अचंभै होइ । भली बात भाखै नहीं कोइ ।।
कोई कहै जो होता चोर । तो क्यूं ठाडा रहै इस ठौर ।।४९०३।।

ध्यानारूढ खडा मुनिराज । कुतो बांध्यो गलां सुं आय ।।
भविजन आवै मुनिवर जात । टालि उपसर्ग पखाल्या गात ।।४९०४।।

पूजा करी भोजन जिमाइ । वनमे मुनि मे गए पहुंचाय ।।
व्यतरी रतन हार चुराइ । मुनि कैं गले गयी पहराय ।।४९०५।।

राजा सुणी राज की मार । देख्या साध कैं गले मझार ।।
इसकौं देखि यह चरचा करैं । जती के भेष यह चोर फिरै ।।४९०६।।

आवैं फोडे थे सेठ भंडार । अब इनै हरया रतन का हार ।।
तबी मंत्री समझावै बैन । इनतो बरत धरया है जैन ।।४९०७।।

जे इच्छा चोरी की करैं । तो क्यूं प्रत्यक्ष राखैं गलैं ।।
समझ वचन अपने घर गए । व्यंतरी चिहन करैं नए नए ।।४९०८।।

करि शृंगार आभूषण भले । हाव भाव मुक्ताहल गलै ।।
ताल मृदग बजावें बीरण । नयन चपलाई जीतै मईन ।।४६०६।।

गावै सरस प्राण हर लेइ । आतमध्यान न चित्त डुलेइ ।।
नाचै गावै मधुरी तान । सुनत बचन हर लेई प्रान ।।४६१०।।

मन वच काया खडा अडोल । व्यापै नही हिया मैं बोल ।।
नब वह जष्यणी नागी भई । करैं आलिंगन बहु विध भई ।।४६११।।

अपणा ध्यान न छोडै जती । विलषी भई यक्षिणी पती ।।
मुख भयानक रूप विकराल । अपामारग देह की लाल ।।४६१२।।

केई अजगर केई सांप । लपट दोडि देही सताप ।।
केई रूप व्याघ्र का करै । गज का रूप महा भय धरै ।।४६१३।।

निसौंकित किया व्रत दृढ गात । व्यतरी दिया उपसग बहु भाति ।।
महामुनीस्वर आतम ध्यान । तब ही उपज्या केवल ग्यान ।।४६१४।।

जै जै सबद दसौं दिस मोर । सुरपति नरपति आए कर जोडि ।।
छाये रहे विमाण आकास । देख्या इन्द्र अगनि धूम प्रगास ।।४६१५।।

ताकै ढिग है सीता खडी । अगनि काय निकसै तिहा बुरी ।।
ईसान इन्द्र पूछै विरतात । इह अचिरज देख्या इस भाति ।।४६१६।।

देखैई कुंड देवता खरे । तिहा कोई धीरज नही धरै ।।
एह याकी ढिग ठाढी कौन । भाखो बात तो मुख मौन ।।४६१७।।

सौधर्म इन्द्र कहै समझाइ । इह सीता पटराणी रघुराइ ।।
सत की महिमा सुरपति करै । बाहि विपत्ति अैसी विध परै ।।४६१८।।

इह सीता सतवंती खरी । असुभ करम तै विपत इहै पडी ।।
इसके भाव तार्ण केवली । पूछै जाइ समझ विध भली ।।४६१९।।

दूहा

सुर नर खग सब आइया, अगनि कुंड जिह थान ।।
देखि ताहि सोचत सबै, मुनि कौं पूछै आंन ।।४६२०।।

इति श्री पद्मपुराणे सर्वभूषण केवल उत्पन्न विधानकं

६८ वां विधानक

चौपई

राम द्वारा पश्चाताप करना

रामचन्द्र नैं देखी चिता । सीता जलै तो लागैं हत्या ।।
पंछी आदि तिहां सूक्ष्म जीव । भया धूम पाप की नींव ।।४६२१।।

खोटी बात मुख तें मैं कही । ग्रैसी कदे हुई थी नहीं ।।
कठिन पइजमै बाधी आज । जे परमेसुर राखै लाज ।।४६२२।।

दोइ वेर यह बिछड़ी सिया । बहुरि मिलाप विधाता किया ।।
अब यह जलै चिता मे जाइ । फेरि लहूं सीता किह भाइ ।।४६२३।।

पहिलै पडूं चिता मे आप । मोपै सह्या न जाय विलाप ।।
ज्वाला कठिन जोजन कै फेर । सीता खडी ज्यो परबत मेर ।।४६२४।।

पचनाम हिरदै संभाल । जिन बीसौं सुमरे तिहकाल ।।
सरव भूषण को करी नमस्कार । मन वच काय मन रहैं हमार ।।४६२५।।

अग्नि परीक्षा में सफलता

अगनि मांझ तैं जो ऊवरूं । झूंठ कहूँ तो त्रिण परि जलूं ।।
पचनाम पढि चिता मे पडी । सीतल भई अगनि तिह घडी ।।४६२६।।

उमड्या जल धरती पै फिरै । बहैं लोग धीरज नही धरैं ।।
विद्याधर गमया आकाश । चहुयां लोग बहै बहु त्रास ।।४६२७।।

सीता का गुण सुमरै लोग । हम सीता कुं किया वियोग ।।
झूठे वचन लगाया दोष । कैसे हम पावाँ सतोष ।।४६२८।।

सीता सुमरण चित्त में आन । उवरैं सकल सीता कै ध्यान ।।
निघट्या नीर भया सुख चैन । कहैं सकल अस्तुति के वैन ।।४६२६।।

जिहा थी आग निकुंड की ठौर । वण्या सरोवर बैठक और ।।
फूले कमल भंवर गुंजाहिं । भले विरख तिहां सीतल छांह ।।४६३०।।

कचन पाल सरोवर बणी । हंस चकोर तिहा सारस घणी ।।
जलचर जीव पंखी हैं तिहां । रतन स्यंघासन सीता जिहा ।।४६३१।।

जै जैं सबद देवता करै । पुहपवृष्टि बहुत हीं पडै ।।
लवनांकुस सरवर मे धंसे । मन आनंद दोनूं हंसै ।।४६३२।।

नया जनम माता का भया । जल के बीच गए जिहा सिया ।।
नमस्कार करि लागे पाय । सीता भेटी हिए लगाय ।।४६३३।।

सीता कौं जल तै बाहिर आंन । दई बिठाइ स्यघासन थान ।।
सत की कांति छवि सोभा घणी । कनक सलाक अगनि मे बणी ।।४६३४।।

सब ही का संसय मिट गया । जै जै सबद सब ही ने किया ।।
रामचन्द्र बहु अस्तुति करैं । धन्य सीता असा सत धरैं ।।४६३५।।

तेरी सार न जाणी मूढ । तुमको देस दिया अगूढ ।।
तुमारे गुण की लही न सार । तुमनैं धरि तै दई निकार ।।४६३६।।

असुभ करम जब उदै हुआ । सुख मे दु.ख इक ब्याप्या सिया ।।
अब अपणा मन राखो ठौर । तुमने दु ख न होइ बहोरि ।।४६३७।।

आठ सहस्र मे सीता बडी । तुमारे सत की कीरत बढी ।।
सब मिल सेव तुमारी करैं । चालो ग्रह मन ससा टरैं ।।४६३८।।

मेर सुदरसन तीरथ जात । विजयारध पर्बत बहुत भात ।।
गिरि सम्मेद कपिलापुरी । चपापुर वाणारस नगरी ।।४६३६।।

जिन जिन बन विपत्ति मे फिरे । अब वे सुख मे देखुं खरे ।।
लका देखो अबर सब द्वीप । बसे नगर जे समुद्र समीप ।।४६४०।।

हमने दुख तुमको बहु दिया । षिमा करो हम पर तुम सिया ।।
राज भोग भुगतो सब सुख । अब सब टल्या तुमारा दु ख ।।४६४१।।

सीता का उत्तर

सीता कहै धिग यह संसार । धिग जाणौं त्रिया अवतार ।।
राज सुख धिग अर्थ भडार । करू तपस्या ज्यूं पाऊं पार ।।४६४२।।

त्रिया जनम फेर नहीं होइ । करू ध्यान आतमा सुध होइ ।।
लोच केस वसतर दीना डारि । प्रथीमती आरजका लार ।।४६४३।।

सकलभूषण का दरसन पाइ । करै तपस्या मन बच काइ ।।
रामचन्द्र ने खाइ पछाड । भई मूर्छा घणी भई संभार ।।४६४४।।

औषध वैद जतन बहु करैं । सीतली बीजणां ऊपर फिरैं ।।
बावन चंदन सु छाटे काइ । बडी बेर मे चेत्या राइ ।।४६४५।।

हाइ हाइ रोवैं रघुराइ । गए सकल भूषण की ठाइ ।।
देई प्रदच्छणा करि नमोस्तु । धर्म बृध्य कही मुनि अस्तु ।।४६४६।।

ज्यों सुदरसन मेरु कै पास । जबु वृक्ष सोहै अति उचास ।।
तैसे रामचन्द्र तिहा बणे । बारह सभा लोग तिहा घणे ।।४६४७।।

लखमण सत्रुघन बैठा तिहां । लवणांकुस मदनांकुस जिहां ।।
प्रणम्य निर्वांन जोरे हाथ । प्रकासो धर्म श्री मुनिनाथ ।।४६४८।।

सप्त तत्त्व के सूक्ष्म भेद । सब संसय का होवै छेद ।।
सद्गुरु वचन सुणें मन ल्याइ । ते निश्चै पंचम गति जाय ।।४६४९।।

सोरठा

मुनिवर ग्यान अनन्त, दरसन ग्यांन चारित्र सो ।।
कहत न आवैं अन्त, वांणी भेद समझावणी ।।४६५०।।

सायर अगम अथाह, ताहि कवण विध तिर सकै ।।
ज्यू अंजुलि भरि वाह, ताही किम सरभर करै ।।४६५१।।

चौपई

दरसन ग्यांन चारित्र सजुक्त । प्रतक्ष वात कहणे की सक्ति ।।
श्रुतग्यानी कहै वेद विचार । ते कहा जाणै कहैं निरधार ।।४६५२।।

मे मति थोडा करू बखाण । अणुमात्र मैं भाखु ग्यांन ।।
जीव तत्त्व सब सीज अनूप । एक सिध एक ससारी रूप ।।४६५३।।

अजर अमर सिद्धालैं सिध । भ्रमैं जीव ससारी त्रिविध ।।
स्वरग मध्य पातालैं वास । चहूंगति भ्रम्या न पुंजी आस ।।४६५४।।

क्षेत्र काल भाव तप होइ । समकित सो दिढ राखै कोइ ।।
संगति साध लहैं तब ग्यान । ते जीव पावैं निरवांन ।।४६५५।।

करै धरम पावै गति देव । मध्यलोक मानुष्य सुख एव ।।
तिरजंच जोनि मे दुख धरा मूल । पापै लहैं नर्क अमूल ।।४६५६।।

नरको के दुख वर्णन

सप्त विसन का सेवण हार । सात नरक दुःख सहैं अपार ।।
रत्न शर्करा बालुक पंक अरु धूम । तम महातम ए सातौं भूमि ।।४६५७।।

हुंडक देह काया बहु बडी । भूख पियास सीत उसन बडी ।।
मुख का छिद्र हैं सूई समान । दुख का अंत न जानु सयान ।।४६५८।।

ज्वारी चोर का काटैं हाथ । परदारा ताती फुतली साथ ।।
सुरा पांन कुं तातो रांग । आखेटक का काटैं आंग ।।४६५९।।

वैतरणी ताता है तिहां । डासै पकडै जनु नैं जिहां ।।
मांस अहारी मुख ताता प्यांड । छेदन भेदन कीजिए खंडो खड ।।४६६०।।

केई ऊपर मारा धरै । चीरै देह टूक दोइ करें ।।
बहुरि हुवै देह की देह । मारैं मुदगर कीजे खेह ।।४६६१।।
पारा जिम समटै खंड फेर । पाप्या नै राखई बेर ।।
जिहि जीव का खाया मास । तिण कारण वे पावैं त्रास ।।४६६२।।
निस भोजन अणगालो नीर । उहा न जाणै कैसी पीर ।।
मिथ्याती कु ं असी गती । जिनवाणी कु ं न धारैं चिती ।।४६६३।।
देवसास्त्र गुरु निसचै नही । ताहि नरक गति आवै सही ।।
जे दुख मैं वरणो समझाइ । ताका पार न पाया जाइ ।।४६६४।।

दूहा

उपसम वेदक खाइका, समकित विध है तीन ।।
जे मनमे निसचै धरै, ते जाणौं परवीन ।।४६६५।।

चौपई

जाकै है समकित दिढ चित्त । ते गति खोटी भ्रमैं न नित ।।
लहै मुकति समकित परसाद । समकित बिना करणी सब वाद
।।४६६६।।
अडज पोतज गर्भ उतपत्ति । स्वेतज सनमूर्छन उपजत्त ।।
पुदगल लानु ए विध धीर । अहारक तेजस कारमन सरीर ।।४६६७।।
संख्यात परदेसी अवर असख्यात । अनत प्रदेसी जीव की जाति ।।
अष्ट अंग ग्यांन का भेद । पच खरे तीन खोटे रेद ।।४६६८।।
मतिश्रुत अवधि मनपरजय भली । पचम ग्यान कह्यो केवली ।।
चक्षु अचक्षु अवधि ए ग्यान । दरसन मन परजय केवल प्रमान ।।४६६९।।
कुमति कुश्रुति खोटी अवधी । करै दुर आतमा कुं सोधि ।।
मध्यलोक मे अढाई द्वीप । अवर समुद्रह इहै समीप ।।४६७०।।

द्वीप समुद्र वर्णन

जबुद्वीप जोजन इक लाख । लवण उदधि चउर्धा पाख ।।
जिह मे बडा सुदर्शन मेर । षट् कुलाचल ढिग बहु फेर ।।४६७१।।
हिमवन महा हिमवन नील । विजयारध परवत असथूल अमील ।।
सीता नदी सीतोदा और । चउदह नदी निकसी गिरि फोड ।।४६७२।।
क्षेत्र भरत अैरावत होइ । इस विध क्षेत्र दसों दिस सोइ ।।
घटै बढैं तिहां व्यापै काल । एक सो साठ खेत्र सुविसाल ।।४६७३।।

सदा सासता हैं बहु खेत । दीप अढाई मांहि समेत ॥
धातकी पुष्करार्ध दुमणां जांण । मानुखोत्र लगि पुरुष प्रमांन ॥४६७४॥

तामैं व्यंतर किन्नर बसै । किंपुरुष महागंधर्वइ दिसैं ॥
यक्ष राक्षस भूत पिचास । जोति पटल जोतीस्वर सांस ॥४६७५॥

नवग्रह नक्षत्र सतावीस । सोलह स्वर्ग सागर बाईस ॥
सौधर्म ईसान सानत्कुमार । महिंद्र ब्रह्म ब्रह्मोत्तर सार ॥४६७६॥

लांतव कापिष्ट शुक्र महाशुक्र । सतार सहस्रार सह सुक्र ॥
आनत प्रानत आरन अच्युत्त । सोलग स्वर्ग कह गये भगवंत ॥४६७७॥

ताके ऊपर नव नवोत्तरे । उस परि पांचि अणुत्तरे ॥
विजय विजयंती जयत । अपराजित सरवारथ सिद्धि निवसंत ॥४६७८॥

मुगति क्षेत्र है ताके अंत । तिरण ठा पहुचा सिद्ध अणंत ॥
रामचन्द्र कीया परसन्न । मुगति भेद समझावो भिन्न ॥४६७६॥

मिटै संदेह संसय को पीर । अजर अमर नहीं व्यापै ईर ॥
दरसन ग्यान का नाही बोह । सदा सरवदा नहि है विछोह ॥४६८०॥

ससारी कुं कदे न सुख । सुभ असुभ तै सुख अनैं दुःख ॥
सुभ संजोग तै सुख का मूल । माया मोह मे रहिया भूल ॥४६८१॥

भया विछोह सब सुख विसरघा । रोग सोग आरत मे मरघा ॥
ए सुख जाणौ दुःख समान । मोक्ष सुख का अंत न आन ॥४६८२॥

सुख की तरतमता

सबतैं सुखी जानौ प्रथीपति । उनतैं सुखिया है चक्रवति ॥
किन्नर देव है इनतै सुखी । जोतगी के सुख बहुतैं बकी ॥४६८३॥

इन्द्र धरणेन्द्र सब ही तै बाधि । सरवारथसिध सुख अगाध ॥
सबतैं बडा मोक्ष का सुख । तिहां न व्यापै कबही दुःख ॥४६८४॥

ते सुख किस पै बरणे जाहि । अैसी वसतु मही पर नांहि ॥
रामचन्द्र कीया नमस्कार । मोक्ष पंथ किम उतरे पार ॥४६८५॥

सरवभूषण वोल्या केवली । जिन धरम वाणी सबतैं भली ॥

तत्त्व वर्णन

सप्त तत्त्व षट द्रव्य बखांन । नो पदार्थ नै दरसन ग्यांन ॥४६८६॥

पचकाय लेस्या हैं षष्ट । द्वादश अनुप्रेष्या जु अैष्ठ ॥
दयाधरम दस विध स्यौं करै । सोलह कारण का व्रत धरै ॥४६८७॥

सम्यक्त सु पाली चारित्र । ते मुनि कहिए सदा पवित्र ।।
जोतै जोति मिलैं जब श्राइ । तब वह भया निरंजन राई ।।४६८८।।

सम्यक बिना करै इह तपैं । ग्यान कहैं कै सुमरै बहु जपैं ।।
मिथ्या सौ ल्यावैं वे चित्त । उनको होवै नरक की थित्ति ।।४६८६।।

श्रातम ग्यान दीपक की जोइ । पावैं मुगति सिघ तब होइ ।।
करम सकल हो जावैं दूरि । रहै ग्यान नित प्रति भरि पूरि ।।४६६०।।

दूहा

जे जीव दृढ समकित धरैं, मिथ्या धरम निवार ।।
निसचै पावैं परमपद, मुगतैं सुख श्रपार ।।४६६१।।

चोपई

जीव तत्त्व संसारी दोइ । भव्य श्रभव्य उभय विध होइ ।।
श्रभव्य तपस्या करैं श्रनेक । काया कष्ट बिना विवेक ।।४६६२।।

जै पावैं नवग्रीवक थान । बहुरि भ्रमैं भवसायर श्रान ।।
मुकति न जाय पावई निगोद । श्रभव्य न सीझै पचरहै श्रमोद ।।४६६३।।

भव्य जीव समकित दिढ धरै । ले चारित्र भवसायर तिरै ।।
लहै मुक तिहां सुख निधान । दरसन तहां श्रनंत बल ज्ञान ।।४६६४।।

पुदगल है वीजा तत्त्व । कामन मध्य होइ सब थिति ।।
दया भाव पूजा संजुत्त । मानव देह विना न होइ मुक्ति ।।४६६५।।

श्राश्रव होइ करम इह भांति । ज्यौं सरवर में नीर बहात ।।
बाधै पाल बचै तिहां नीर । वरसै घनहर गहर गभीर ।।४६६६।।

सवर पचम तत्त्व का भेद । पालई फोडि करैइ जब छेद ।।
वघता नीर सकल बह जाइ । जो कछु पहिलै रहै ता ठांइ ।।४६६७।।

निर्जरा तत्त्व षष्ठमां जान । सुकै नीर जब भान तपैं श्रान ।।
यं सें करम निर्जरा होइ । मोख तत्त्व सातवां सोइ ।।४६६८।।

रामचन्द्र सुणि बोलै वैन । सबतैं उत्तम समझो जैंन ।।
सकल बात को मिटयो संदेह । झूंठी माया जाणी एह ।।४६६६।।

जीव का सगा न संगी कोइ । धर्म सहाई जीव कौं होइ ।।
राज विभूति तजौं सब नारि । मोया लछमन मोह श्रपार ।।५०००।।

जिसकी माया न छूटै घडी । कैसे दिख्या पालौं करी ॥
सकल भूषण बोले मुनिधार । तुम हो मुकितगामी अवतार ॥५००१॥
कोई दिन तुम भुगतो राज । पाछै करो आतम काज ॥
उपजै केवल पावै मुकति । सुर नर सकल करैंगे भगति ॥५००२॥
इतनी सबकै निसचैं भई । सेवा रामचंद्र मन दई ॥
सब काहु जाण्यां जगदीस । सुर नर सकल करैं गे भगति ॥५००३॥

अडिल्ल

श्री रामचंद्र मुनि धरम महिमां करी
जैन धरम सुं चित्त रहै पल पल घडी ॥
करई सैव सब लोग श्री रघुनाथ की
आर्या तप वन मांहि सुता जनक राय की ॥५००४॥

इति श्री पद्मपुराणे सीता दिख्या राम धरम श्रवण विधानकं

६६ वां विधानक

चौपई

विभीषण द्वारा प्रश्न

भभीषण बोलै दोई कर जोडि । कहो धरम बाणी जब होडि ॥
मेरे मनका मिटै सदेह । राम लखमरण कू घणा सनेह ॥५००५॥
किण कारण पाया वनवास । दडक बनमे रहै निरास ॥
रावण पाई विद्या घनी । चार वेद ग्यांनी अर गुनी ॥५००६॥
विद्याधर सेवैं सब आइ । तीन खड के रावण राइ ॥
जा सनमुख जीत्या नही कोइ । चद्र आदि मान भग होइ ॥५००७॥
ज्ञानवत जाणै राजनीत । परनारी परि डोल्या चित्त ॥
सीता कौं हरि लका गया । तासैं बहुत उपद्रव भया ॥५००८॥
लछमण के करि रावण मुआ । पहिला बंध बांध्या नवा ॥
सीता पतिव्रता असतरी । इह कौं सदा विपति मैं परी ॥५००९॥
किह कारण बरचा करी लोग । राजि भोग मै भए विजोग ॥
इनके भव भाखो समझाइ । मेरै मनका संसय जाइ ॥५०१०॥

सर्वभूषण द्वारा विस्तृत वर्णन

सर्वभूषण बोले भगवान । बारह सभा सुणैं दे कान ॥
जंबूद्वीप मई क्षेत्रवि भरत । दक्षण वीड नगरी सकित ॥५०११॥

मेंरदत्त सेठ बसै तस मधि   सुनदा अस्तरी महा सुबुधि ।।
ताकै गरभ भए दो पूत । रूप लख्यरण सोभा बहुत ।।५०१२।।

प्रथम धनदत्त दूजा वसुदत्त । जगबल एक प्रोहित सोहत ।।
सागरदत्त वरिणक तिहां बसै । कनकप्रभा कामिनी संग रसै ।।५०१३।।

गुरणवती ताकै पुत्तरी । रूपवत लावण्य गुरणभरी ।।
जोबनवती गुरणवती भई । पिता जाइ धनदत्त नै दई ।।५०१४।।

तिलक करि श्रीफल दे गोद । दोउवां भयो हरख प्रमोद ।।
श्रीकात नाम वरिणक तिहा वसै । जाकै दीनार बारह कोडि लसै ।।५०१५।।

उनकै मन तब बैठी बुरी । धनदत्त सु सगाई क्यु ं करी ।।
ग्रैसी नारि सोभै मो गेह । माता सु रिण पुत्र को नेह ।।५०१६।।

धीरज मो समभावै बात । चिंता सो बहु हुवै दुखी गात ।।
अब मैं जाइ करि करू ं उपाव । राखि पुत्र अपरणा मन ठाव ।।५०१७।।

माता वचन सुरिण छोडघा सोच । सागरदत्त घरि आय पहुत ।।
कनकप्रभा सु ं जाइ करि मिली । मनकी बात प्रगासी भली ।।५०१८।।

कहा नयदत्त कहा धनदत्त । वाका घर आया तुम चित्त ।।
कन्या दीज्यै इसा नै जाइ । मेरै लखमी की अधिकाइ ।।५०१९।।

द्वादस कोडि दीनार घर माहि । मेरी सरभर कोई नाहि ।।
फेर सगाई अपनी लेह । मेरा पुत्र नैं कन्या देहु ।।५०२०।।

रतनप्रभा सुरिण मन ललचाइ । कहैं कंत नैं ग्रौर ही दिढाइ ।।
श्रीकात है महा बलवंत । रूप लष्यरण महा सोभावंत ।।५०२१।।

सब तैं सुखी लक्ष्मी का धरणी । वाहि देहु कन्या आपणी ।।
धनदत्त सेती लेहु छुडाइ । बोली ग्रैसे घरणी इह भाइ ।।५०२२।।

वसुदत्त सु ंरिण कोप्या बहु भात । क्रोध चढै मसलै दोउ हाथ ।।
श्रीकांत खोटी बुधि लाग । चाहै धनदत्त की माग ।।५०२३।।

जगबल सेती मता बिचार । गह्या खडग छिज्या तिह बार ।।
अरध समय ग्रंधियारी रयन । वसुदत्त चल्या कपि राते नैंन ।।५०२४।।

नील वरण के वसतर साझि । जतन किया वैरी कैं काज ।।
श्रीकात की पहुच्या पौल । सोवत लह्या बगीचै ठौरि ।।५०२५।।

वसुदत्त नैं तब सोच्या ग्यान । अरणचित्या का हणु ं परान ।।
श्रीकांति सौं जणाई सार । तो मैं बल अधिक तो संभार ।।५०२६।।

मो सुं सूं करि जुध अपार । श्री कांति कर गही तरवार ।।
दोनुं भुझ्या एकण ठांव । भए मृग बध्याचल भाव ।।५०२७।।

सागरदत्त सुंणि इह बात । रत्नप्रभा समझाई इह भांत ।।
इह कन्या धनदत्त कूं दई । तेहै उपाधि उठाई नई ।।५०२८।।

ता कारण तैं इतनी करी । वाके प्राण गए इह घरी ।।
धनदत्त कौ दे कन्या विवाह । कीए मगलाचार उछाह ।।५०२९।।

लिख्या लगन साधी सुभ घडी । विवाहि दई गुणावंती तिह घडी ।।
बीता दिन बहूतै इंह भेस । चरचा करैं लोग इह देस ।।५०३०।।

इनका विवाह अभाग्या भया । वसुदत्त जीव एण कारण गया ।।
असी चरचा सुणी धनदत्त । वैराग भाव धरयो उन चित्त ।।५०३१।।
धिग विवाह धिग यह असतरी । ता कारण विपत्ति मोहि पडी ।।
तज्या देस वन मारग गह्यो । वन मे रहै का या दुख सह्यो ।।५०३२।।

गुणवंती छोडी घर माझ । कत विना झुरं दिन साझ ।।
मिथ्या धरम निसचैं मन धरै । जैन धरम की निंदा करै । ५०३३।।

मरि करि भ्रमै मृगनी जाइ । बिंध्याचल मे पाई ठाइ ।।
जिहा थे मृग दोन्युं इस मेर । हिरनी देष लई धना घेर ।।५०३४।।

दूजा मृग दउड्या पाछै ताहि । दोनूं मरि करि हुवा बाराहि ।।
उहा तै मरि हाथी दोई भए । भैसे साड की पीचीता थए ।।५०३५।।

बहुर सीयाल भ्रमैं जौंन । बैर बंध लाग्या इह गौंन ।।
वह धनदत्त फिरै वन बीच । बिना नीर तीरषा भए मीच ।।५०३६।।

भई रयण तिहा देख्या साध । गहै मौंन जिन धरम आराध ।।
उनके कमंडल परिदिष्टि करी । जल पीवण की इछा की धरी ।।५०३७।।
मुनिवर अवधि विचारैं ग्यांन । इह है भवि जीव इस थांन ।।
या कौं दीजे दया सबोध । पुरण भाव पुजैं इहै श्रोध ।।५०३८।।
मौन छोडि बोलैं तब जती । निस भोजन तैं खोटी गती ।।
जल पीवत होवई पाप । बहुं गति मैं सहै संताप ।।५०३९।।
अपणै हाथ हम जलनं देह । तेरा मन इच्छै सो लेहु ।।
धनदत्त कै मन निसचै भई । अनपांणी निस आखडी लई ।।५०४०।।
देहि छांडि सौधर्म विमाण । महा रिधवंत सब मैं प्रवांन ।।
सुगति आव श्रेष्ठपूर नगर । बैर सेठ बांमी सरगर ।।५०४१।।

धारणी नाम थी पटवणी । सीलवत सोभासु वणी ॥
पदमपुत्र जसके गरभ भया । देव जीव सुख दाई थया ॥५०४२॥

निसतर छाया धरमेष्ट । श्री दत्ताराणी सम्यग्दृष्टि ॥
प्रजा सुखी दुखी कोई नाहिं । सघन गेह तिहा शीतल छाह ॥८०४३॥

पदमरुचि हुवा असवार । वृषभ देख्या वनमे तिह बार ॥
मृत वांडवै थी पड्या बिललाइ । वाहि देखि उपजी दया आइ ॥५०४४॥

उत्तर भूमि वाकै ढिग गया । पाच नाम श्रवण मे दिया ॥
श्रीदत्ता गर्भ उपज्यो सो आइ । वृषभध्वज पुत्र कंचन सम काइ ॥५०४५॥

जनम समै दीया बहु दान । सब ही का राख्या सनमान ॥
दिन दिन कुमर वधै सुख माहि । सात बरस का हुवा नरनाह ॥५०४६॥

जिह बन मे मुवा था वहैल । वा वन निकस्या करण सहल ॥
देखि भूमि भव सुमरण लई । उतरा तिहा पिछली सुध थई ॥५०४७॥

हु था वृषभ मरचा था परचा । पचनाम किण ही कह्या खरा ॥
वहै प्रसाद राजा सुत भया । भव सुमरण चित मे थया ॥५०४८॥

जेहुं मरता यू ही परा । असा जनम कहा तै धरचा ॥
अब जे उमकू देखू आजि । देहिं सकल वाहि कू राज ॥५०४९॥

राज कुवर इहै आज्ञा दई । चैत्यालय नींव दिवावो सही ॥
कोस एकलो देहुरा करचा । तिहां चितराम बहुत विध धरचा ॥५०५०॥

भाति भाति के चित्र सवारि । वेद पुराण लिखाए तिह बार ॥
जिन चौईसौं बिंब कराइ । वृषभ की सूरत पौलि लिलवाइ ॥५०५१॥

तिहा रखवाले राखे घणे । दुष्ट मिथ्यादृष्टि कूं हणे ॥
पदमरुचि सेठ आया देहुरे । महस्रकूट ध्वजा फर हरे ॥५०५२॥

देखी पौलि वृषभ का रूप । पिछली सूरत सभालि स्वरूप ॥
ध्यान लगाइ रह्या तिहा सेठ । किंकर गया राजा के दिठ ॥५०५३॥

कही बात व्योरा सु जाइ । आया कुवर जिण मंदिर ठाइ ॥
पदमरुचि देख्या राजकुमार । रहे थकित होइ इतनी बार ॥५०५४॥

तब पूछै वृषभध्वज राइ । तू कहा देख रह्या रिझाइ ॥
कहै सेठ पिछला विरतांत । सुनकरि आनंदा बहु भाति ॥५०५५॥

धन्य पदम रुचि तेरी बुद्धि । तातै पाई मैं वह रिद्ध ॥
तुम प्रसाद मैं यह गति लही । जो मन इच्छं सो द्यों सही ॥५०५६॥

निसतब्धा नै दिक्षा लई । राजविभूति वृषभध्वज नै दई ॥
वृषभध्वज पदम रुचि । भुगतैं राज कर मन सुचि ॥५०५७॥

पहली करी धरम की साइ । सुख भुगतैं सब मन भाइ ॥
वृषभध्वज राज करया बहु वर्ष । समाधिमरण कीयों बहु हर्ष ॥५०५८॥

ईसान स्वर्ग परि हुवा देव । भुगतैं सुख किंनर करैं सेव ॥
पदमरुचि धरम के ध्यान । ईसान स्वर्ग मे पाया विमान ॥५०५९॥

विजयारध पच्छिम विदेह । नदावत नगरी उत्तम गेह ॥
नदीस्वर तिहा भूपती । कमलप्रभा राणी सुभ मती ॥५०६०॥

पदमरुचि जीव गरभ अवतरया । नयणानद नाम तिहां धरया ॥
नदीस्वर परि संयम भार । नयनानंद नैं राज दिया तिंह बार ॥५०६१॥

बहुत दिवस उन कियो राज । तप करि आप संभारचा काज ॥
महेन्द्र स्वर्ग पाया सुख ठाम । उहा तैं चया खेमाकर गांम ॥५०६२॥

मेरु सुदरमन विमल वाहन धूप । पदमावती राणी सस्वरूप ॥
श्रीचन्द्र जनमिया कुमार । पिता नैं सौंप्या सब ससार ॥५०६३॥

विमलवाहन लिया सयम योग । श्रीचद तिहा भोगवै भोग ॥
समाधिगुपति मुनि आगम भया । ताकै समि सिष्य तप किया ॥५०६४॥

वनमे करैं तपस्या घणी । इनकी सूरत नगर मे सुणी ॥
चले लोग बहु मुनि की जात । बाजतर बाजैं बहु भाति ॥५०६५॥

राजा जब बाजंतर सुण्या । मनमे सोच किया तब घणा ॥
नही कोई तीरथ नहीं कोइ परब । तिहा चली परजा यह सरब ॥५०६६॥

किंकिर आइ जणाई सार । मुनिवर आए वन है मझार ॥
दरसन कौं परजा इह चली । भूपति सुणि उपजी मन रली ॥५०६७॥

मुनि के पास जाना

उतरि स्यंघासण करी डंडोत । नरपति चल्या तब लोग बहोत ॥
दरसन पाइ परदक्षना दई । नमस्कार करि पूजा भई ॥५०६८॥

पूछैं धरम जोडि दोइ हाथ । वांणी कहो श्री मुनिनाथ ॥
मुनि समाधि कहै बखान । च्यार बेद के उत्तम ग्यान ॥५०६९॥

प्रथमांनुजोग प्रथमही जांन । करणानजोग दूसरा वखांण ॥
चरणांनजोग द्रव्यानजोग । इणके भेद सुणैं सब लोग ॥५०७०॥

नव विध है दृगां का भेद । प्रक्षेपनी प्रच्छिनपनी गुंन भेद ॥
निक्षेपनी निक्षेप का संवेदनी । संसारनिवेद निरवेदनी ॥५०७१॥
पुंन भोगबै राग कारनी । जती सरावग विध सब भणी ॥
राजा सुणत भयो वैराग । राज विभूत कुटब सब त्याग ॥५०७२॥
धुरतकाल पुत्र को राज । आप किया दिगंबर साज ॥
समाधिगुपत मुनिवर ढिग जाई । दिक्षा लइ मन बच काइ ॥५०७३॥

तपस्वी जीवन

दया भाव आतम सु चित्त । सूक्षम बादर त्रस थावर चित ॥
सब जीव जाणैं आप समान । क्रोध लोभ तजि माया मान ॥५०७४॥
मास उपवास पारणा एक । कबही च्यार मास की टेक ॥
दान अदत्ता मूल न लेइ । उदह बिहार इह विध सो करेइ ॥५०७५॥
कायोत्सर्ग पदमासन जोग । पूजा करैं सकल तिहा लोग ॥
रहै मौनि निसवासर तिहा । धरम हेत कबही कछु कहा ॥५०७६॥
मुनि वाणी जीव का आधार । भव्य सुणै ते उतरै पार ॥
मिथ्यादृष्टी कै हिये न माच । सेवै विषइद्री सब पांच ॥५०७७॥
सकल विषय छडी मुनिराज । संसारी सुख मन न सुहात ॥
आप तिरैं त्यारैं बहु जीव । अैसा साधु धरम की नींव ॥५०७८॥
सहस अठारहै अंग समेत । सील व्रत पालैं करि हेत ॥
त्रिण समान परिग्रह है नहीं । दमौं दिसा अंबर है सही ॥५०७९॥
सुमति पांच अरु तीन गुपति सही । बारह व्रत विध सुं पालै वही ॥
सहै परीसा बीस अनै दोइ । बारह अभ्यंतर तप जोइ ॥५०८०॥
चउरासी किरिया कौं करै । अठाईस मूल गुन धरै ॥
समकित सो निश्चै है । चित्त अनुप्रेक्षा सु विचारै नित्त ॥५०८१॥
सीयालै सरवर की पाल । पडै सीत तिहा महा विकराल ॥
ऊनालै परवत पर जोग । छोडे सकल जाति का भोग ॥५०८२॥
वरखा काल वृष्य तल खरे । तिहा तैं च्यार मास नही टरैं ॥
मछर डास अति डसैं बयाल । निरभय निश्चित मन की चाल ॥५०८३॥
देही छोडि ब्रह्म सु विमान । भया इन्द्र महा बलवान ॥
दस सागर की पूरण आय । ते सुख किस पै वरण्या जाईं ॥५०८४॥
मृनाल कुंड नगर का नांव । विजयसेन राजा तिह ठाव ॥
रतनचूला ताकैं असतरी । वज्रकुमर जनम्या सुभ घडी ॥५०८५॥

हेमवती परनाई नारि । स्वयभ पुत्र जनमीया कुमार ॥
श्रीभर्त्त पुरोहित दयावंत । स्वस्तमती सत्री महागुनवंत ॥५०८६॥

मृगनी जीव भ्रमी बहु जौनि । भई हथनी गंगातट गौन ॥
कर्दम माहि हथनी थकी । उहा तैं बाहर निकल नहीं सकी ॥५०८७॥

व्याकुल भई मरण के भाव । तरगवेग विद्याधर नाम ॥
आकासगामनी गया था जात । याहि देखि करुणां भई गात ॥५०८८॥

उतरि भूमि पढ़ै नवकार । सरणां दए च्यार परकार ॥
हथनी मरि प्रोहित कै ग्रेह । पुत्री भई सकोमल देह ॥५०८९॥

हुई वृध भई सभाल । मुनीस्वर देखि हसो वह बाल ॥
पिता कहे उसनै समझाइ । ए मुनीस्वर ममता नहीं काए ॥५०९०॥

इनकूं हस्या होय बहु पाप । भव भव सहै दुःख सताप ॥
भांमी सुणी पिता की बात । मनमे ग्यान धरचा बहु भांत ॥५०९१॥

सुण्या धरम जिन मारग गह्या । दिढ सेती समकित वह लह्या ॥
कन्या भई विवाहन जोग । रच्या स्वयवर आए लोग ॥५०९२॥

स्वयंभु कुवर इह इछा धरै । जे कन्या मुझ कौं ही बरै ॥
प्रोहित कहै कन्या जाकु देव । सम्यक्त करै जिणेस्वर सेव ॥५०९३॥

सभ कुंवर मिथ्याती घणा । प्रोहित सोचै चित्त आपणा ॥
इह राजा मैं सरणैं बसू । जे इह कन्या अवरै देस्यूं ॥५०९४॥

या सेती मुझ बाधै बैर । अब छिन माहि करूं कछु फेर ॥
मडप दूरि करचा तिह बार । सब कुंवर मन बैर अपार ॥५०९५॥

इक दिन मारचा प्रोहित श्रीभूत । छोडे प्राण सम्यक्त संजुत्त ॥
ब्रह्मोत्तर पाइया बिमाण । उह सम सुखी न दूजा जान ॥५०९६॥

वेदावती प्रोहित की सुता । व्यापी ताहि काम की लता ॥
वेदावती करै तब सोच । संभकुमर सौ वांछै रुचि ॥५०९७॥

सुपनां मे भुगतै वह भोग । जागी तबै उसे व्याप्या सोग ॥
धिग धिग ए पाँच इन्द्री के सुख । क्षण क्ष्यंतर फिर होवै दुःख ॥५०९८॥

मो कुं तो उपजी थी कुबुधि । विषया मिलाय डगाया चित्त ॥
अपणां मन बहुत ही भिष्ट । धरो ध्यान जिन समकित दिष्ट ॥५०९९॥

आरजका हरिकांता के पास । दिक्ष्या लई मुगति की आस ॥
करैं तपस्या वन मे जाइ । मास उपवास पारणा कुं आइ ॥५१००॥

तपकरि देह जोजरी करी । समाधि मरण कीया तिह घडी ॥
पहुची ब्रह्मोत्तर कैं थान । देवगना भई सुजांन ॥५१०१॥

संभु कुवर सुण करैं विजोग । बेगवती का व्याप्या सोग ॥
अंत समझ करि सोच्या ग्यान । दिष्या लई जती ढिग आन ॥५१०२॥

स्वयंजे को कीया सरब का राव । प्रभासकुंद भया तिहा नाउ ॥
प्रभासकुंद कौं दीया राज । पिता किया दिगबर साज ॥५१०३॥

प्रभासकुद राजा अति बली । प्रजा सुखी मानैं सब रली ॥
एक दिन विचित्र सेन मुनि पास । सुणियो धरम कुगति को नास ॥५१०४॥

जोडया राज भोग ससार । दिक्षा लई सयम का भार ॥
तेरह विध सौं चारित्र धरया । छठै मास पारणा करया ॥५१०५॥

इह विध सौ करैं तपस्या आप । जनम जनम का टूटैं पाप ॥
राग दोष तजि आतमध्यान । ग्रीषम रुति परवत पर आन ॥५१०६॥

सिला हैठै ऊपर तपैं सूर । चार मास तपैं इह विध पूर ॥
बरखा काल रूख तल जाइ । तीन काल तप सौ मन ल्याइ ॥५१०७॥

माछर चूंटैं देही दहै । बेलि लपट देही से रहैं ॥
सीयालैं हेमाचल ठौर । गगातट सीत को जोर ॥५१०८॥

बहुत वरख ऐसा तप किया । कनक प्रभा खेचर आइया ॥
समेद सिखर जावैं था जात । ताहि देख चित्या इह भांत ॥५१०६॥

धन्य इन्है खेचर गमन आयास । जो मन चलै ता पुरैं आस ॥
जहा मन करैं तिहा इह जाइ । धन्य है विद्याधर एह राइ ॥५११०॥

मेरे तप का एह फल होइ । मो सा बली न दूजा कोइ ॥
तीन खड का पाऊ राज । विद्या फेरैं करो मन काज ॥५१११॥

देही छोडि शांति कुमार । रतनश्रवा घर लियो अवतार ॥
केकसी गरभ दसानन भया । पाछैं रावण नाम इह थया ॥५११२॥

धनदत्त जीव भयो रामचन्द्र । बसुदत्त लछमन वली अनंद ॥
बृसभध्वज भया सूग्रीव । जगवली ते भभीषण जीव ॥५११३॥

विभीषण का पुनः प्रश्न करना

गुणवान भामंडल देह । गुनवती भई जनक के गेह ।।५११४।।
भभीषण बोलै द्वं कर जोडि । बालि तणा भव भणो बहोडि ।।५११५।।

किम रावण सो थयो विरुद्ध । करी तपस्या उन विन ही जुध ।।
क्यूं रावण उठाया कैलास । तिण ठा भया मान का नास ।।५११६।।

उनका भव व्यवरा सुं कहो । इह मो मन का संसय दहो ।।
विदारण वन मे एकेक मृग । इह माहि सदा उपसर्ग ।।५११७।।

सामायिक करै था एक मुंनी । उन मृगनै धरम निसचै सुनी ।।
देही तजि अंरावत क्षेत्र । बृहत राजा सिव ती मोहत्र ।।५११८।।

मेघदत्त है मृग का जीव । भया पुत्र धरम की नीव ।।
विरध होय करि भया सचेत । जिनवाणी सूं ल्याया हेत ।।५११९।।

अणुव्रत पालैं वे घर माहि । रागद्वेष मनमे कछु नाहि ।।
समाधिमरण सो छोडी देह । ईसान स्वर्ग देव के ग्रेह ।।५१२०।।

पुरव विदेह विजयवती देस । कोकिला नयर कात सौम नरेस ।।
रतनाखी राणी गरभ आई । ईसान स्वर्ग से चये तिह ठाइ ।।५१२१।।

सुप्रभ नामक भया कुमार । रूप लक्षण सुख महा अपार ।।
जोवनवत भए जु कुमार । पिता ने राज दयो तिह बार ।।५१२२।।

आप तात दिप्या लई जाइ । करैं राज ते सुप्रभ राइ ।।
एक दिवस मुनि पासैं गया । सुण्या धरम सयम व्रत लिया ।।५१२३।।

तेरह विध पालैं चारित्र । रागदोष जीते दोइ सत्र ।।
बाईस परीस्या सहे बहु बरस । आतमध्यान धरचा बहु रहस ।।५१२४।।

तप करि गया सरवारथसिद्ध । तिहा ग्यान की पूरी रिध ।।
चरचा माहि तिहा बीतैं घडी । सकल ग्यान रिध पूरण जुरी ।।५१२५।।

उहा तै चया किपद सै ग्रेह । बालि पुत्र कचन सम देह ।।
तिसकै सदा निरजन ध्यान । चित माहै कछु न आवैं आन ।।५१२६।।

रावन सो तब हुवा वाद । दया निमित्त छोडे विष वाद ।।
गिरि कैलास कियो तप जाइ । रावण तिण थाणक सूं आइ ।।५१२७।।

थक्या विमाण क्रोध के भाइ । कैलास परबत लिया उठाइ ।।
मुनिवर समझ्या ग्यान सौ देखि । दयाभाव अंतरगति पेखि ।।५१२८।।

बहुत साध गिर ऊपर रहे । इह पापी सगला नैं दहैं ।।
चैत्यालय ते श्री जिनदेव । उनकी दया बिचारैं भेव ।।५१२९।।

पदम अंगुष्ट झेती गिरदाव । धरयो मेर पातालै जावि ।।
दशानन चिघारयो तिहां । सकल साथ सौं रुदन करै जिहां ।।५१३०।।

मुनिवर कै मन आई दया । पग उठाइ ऊचा कर लिया ।।
रावण मान भंग तब भया । नमस्कार बालि कुं किया ।।५१३१।।

मन वैराग भया तिह बार । उभा छोड्या सब परिवार ।।
तब धरणेन्द्र बिचारै ग्यांन । यह प्रतिनारायण उपज्या ग्रान ।।५१३२।।

इनका है अैसा नियोग । भुगतै तीन खड का भोग ।।
जे इह दिक्ष्या ले धरि ध्यान । त्रेसठ सिलाका होवै दान ।।५१३३।।

धरणेन्द्र तब समोध्या ताहि । सक्ती वांण दे दीया ताहि ।।
ताहि समोधि दीया सक्ती । फेर सभाल्या भुगत्या जुक्ती ।।५१३४।।

तीन षंड जीत्या सब देस । लका राज करै सुग्रसेस ।।
करम उदै ते भूमिगोचरी । उनैं आई लंका स्थिति करी ।।५१३५।।

मारघा रावन लीया बैर । जीत्या तीन षंड सब गैर ।।
सतपुर नगर पुनरबसु राइ । भूमिगोचरी बली अधिकाइ ।।५१३६।।

चक्रवर्ति की सुता विवाही । विद्याधर ले भाज्या ताही ।।
उन नारी तप बहु दिन किया । क्षातपुर पति पुनर्वसु की त्रिया ।।५१३७।।

पुनर्वसु कुं भये बहु सोग । राज जोड करि लीया जोग ।।
करी तपस्या आतम ध्यान । अंत समय बाध्या निदान ।।५१३८।।

मैं बलहीन तो त्रिया ले गया । वा कारण बहुतैं दुख भया ।।
मेरे तप का इह फल होइ । मो सा बली न दूजा कोइ ।।५१३९।।

पुनर्वसु का जीव लक्ष्मण हुआ । या के करसैं रावण मुवा ।।
बेगवती मुनि निंदा करी । झूठा वचन कह्या तिन घडी । ५१४०।।

मुनि नैं कही सील भंग किया । मिथ्याती यूं मनमे धारिया ।।
उदय भया वह करम अपूठ । समकित ये माना सब झूठ ।।५१४१।।

बेगवती अैसी अग्यान । मुनि को दोस लगाया जान ।।
पाछैं समझि बिचरी चित्त । पसचाताप करै नह नित्त ।।५१४२।।

मैं क्यूं मुनि नैं लगाया दोष । कुमति ग्यांन का हुवा पोष ।।
अब इह पाप टरै किह भांति । मैं यूं ही दूःख दिया मुनि नाथ ।।५१४३।।

रिष निंदा है सब तैं बुरी । पाप पोट अपणें सिर धरी ।।
कठिन करम मैं किया अथाह । असा दोष मिटै किह भाइ ।।५१४४।।

समझि जैन की दिष्या लई । तप करि फिर उत्तम गति भई ।।
पूरब करम उदय भया आइ । पाया कष्ट असुभ के भाइ ।।५१४५।।

सीता सती दिढ राख्या सत्त । फिर पावैगी पंचम गत्ति ।।५१४६।।

कवित्त

पर निंदा नही करै साध जस ही कुं जाणै ही ।।
मिथ्या वचन नही जुगै, ताहि उत्तम जन मानही ।।५१४७।।

सील संयम दिढह्व धरै, दया करै मन ल्याइ ।।
परकारज परमारथी, मोक्ष पंथ सो लहाइ ।।५१४८।।

इति श्री पद्मपुराणे सरवार रामचंद्र पूरब भव वरननं विधानकं

१०० वां विधानक

अडिल्ल

सकल सभा मुनि पास भवांतर सब सुने ।
जनम जनम के भेद, सकल भूषण भने ।।
वैराग्य भाव भया लोग, नांम किहां लौ गिनई ।
रवि का होत उद्योत, अंधकारैं हनैं ।।५१४९।।

तिमिर जु गया सब भाजि, किरण रवि की जगी ।
घर वाहर उद्योत, अंधकार कहीं है नही ।।
तम जु गया सब भाजि, किरण रवि सी जगी ।
घर बाहर उद्योत, सबै सोभण लगी ।।५१५०।।

जे दिष्टांत प्रवीण तिनहं जाणैं भली ।
परिहाजे जे अघासुति हीण उनौं कै चित मिली ।।५१५१।।

कृतांत वक्र भवांतर बूझि । व्योरा सुणि अंतरगति सूझि ।।
मन वैराग धरा बहु भाति । रामचंद्र सौं जोडे हाथ ।।५१५२।।

जीव भ्रम्या चहुगति मे आदि । समकित बिना जनम सब बाद ।।
भ्रमत भ्रमत नही पायी अंत । अब हुं थक्या सकती नहीं हुंत ।।५१५३।।

धरम वृक्ष की पाई छाह । तिह ठा बैठि मिटाऊ दाह ।।
दिष्या लेहू रिषी के पास । गुरु सगति पूजे मन आस ।।५१५४।।

रामचंद्र बोलै समझाइ । तू सुखिया कोमल है काइ ।।
सेज पटतर फूलां भरी । भूमि पांव कबहु नही धरी ।।५१५५।।

पचामृत लेता हो अहार । इस गोरस बहु सौंज सबार ।।
पल पल होई तुम्हारी सार । कैसे लेहू सजम भार ।।५१५६।।

जैन धरम की क्रिया कठिन । कैसे पलै तुमारा जतन ।।
भूमि सोवणा निरस अहार । बाईस परीसह दु ख अपार ।।५१५७।।

घरि घरि भोजन लेहु उडड । राव रक कबहु भेद न मड ।।
हम भी दिखा ले हैं जाइ । हमारे सग होज्यो रिखराइ ।।५१५८।।

कृतातवक्र बोलै भूपती । एही बार मे होउ जती ।।
फिर बोले आपण रघुनाथ । रुक जावो तब हमारे साथ ।।५१५६।।

लहै देवगति किसही सुरग । सभाल कीजियो मितर वरग ।।
जे मै माया माहि भुलाव । तुम सबोध ज्यो मित्र सुभाव ।।५१६०।।

तब दिक्षा ले मैं भी तिरू । बहुरि न भवसागर मै पडू ।।
कृतातवक्र कौ आग्या दई । सब ममता मन ते मिट गई ।।५१६१।।

दूहा

कृतात वक्र तब सोरसोग, वतक्र सुविक्रम निक्रात ।।
बहुतो ने दिष्या धरी, ग्यान वंत विष्यात ।।५१६२।।

चौपई

सीता के सगी आरजिका घनी, अधिक प्रताप विराजै वणी ।।
सत अनै दत्त दिपै सब देह । रामचंद्र मन उपजा नेह ।।५१६३।।

रहे ध्यान धरि करै विचार । मो सग डोली सब ससार ।।
लोगा कारण मैं दई निकार । तिह तै हुवा दु ख अपार ।।५१६४।।

अति कोमल सीता की देह । वनमे जोग लिया तजि गेह ।।
वै अई उत्तम सिज्या छोडि । पाट पटंबर सिज्या सोडि ।।५१६५।।

पान फूल कोमल आहार । सखी सहेली करती सार ।।
राग रंग पखावज बीन । कथा कहानी कहै प्रवीण ।।५१६६।।

पूर्व कथा

तब सउवती थी सीता तहा । तब ग्राईसा बन मे तप गह्या ।।
वन मे सिंह गरजना करै । हसती चिघाडै सब ही डरै ।।५१६७।।

सरस निरस मास कै पाख । पर घर भोजन मुखतैं नही भाख ।।
वे दुख कैसे सीता सहै । वेर वेर रघुपति इम कहै ।।५१६८।।

सरप सियाल भयानक घणे । अैसे सबद जब सीता सुणै ।।
कैसे जीवैगी उस ठौर । चउदहै ग्राठ परीसह सहै ग्रोर ।।५१६९।।

ससार स्वरूप का किया विचार । रामचन्द्र समझे तिह बार ।।
धन्य सीता अैसा तप धरया । नमसकार दरसन को करया ।५१७०।।

लखमण किया चरण कौ ग्राई । सीता गुण बरणबै सुभाई ।।
धन्य सीता राख्या दिढ सत्त । अपवाद ग्राया लोकां कै चित्त ।।५१७१।।

जे जब लेता दिव्या जाई । रहता संदेह हर कै मन राई ।।
ग्रगनि कुंडतै जलहर भया । सब के मन का संसय गया ।।५१७२।।

दोनु कुल की राखी लाज । ग्राप किया ग्रातम का काज ।।
पूरब भव पूज्या जिन देव । तो निसचै कीनी जिन सेव ।।५१७३।।

एक भवतर पाछै मोक्ष । वहुरि लगैगा देवता सुख ।।
लवनांकुस करै नमस्कार । दई प्रक्रमा बारबार ।।५१७४।।

भूपति सकल करै डडोत । ग्रसतुति वोलै लोग बहुत ।।
सब ही फैर नगर को चले । हय गय रथ पायक वहु मिले ।।५१७५।।

नर नारी देखै बहु भाइ । बहुत सखी अैसे समुझाइ ।।
अैसी विभव सीता गई छोडि । सहै परीसह वन की वोडि ।।६१९६।।

जैन धरम का दुरधर जोग । स्वरग लोक सम छाडे भोग ।।
कोई कहै धन्य रामचन्द्र । परजा कारण सह्या सब दुद ।।५१७७।।

मोह तजि सीता दई काढि । विछोहा तन सह्या है वाढि ।।
कोई कहै सीता करी बुरी । पुत्र जणती ममता नै करी ।।५१७८।।

मन मे धरया न उनका मोह । पल मे सब ही का किया बिछोह ।।
ए बालक उपजे उस कुख । खीर पिलाई पुत्र नै पोखि ।।५१७९।।

ते माया दई सबै विसारि । बैंठी वन मैं तिहां उजाडि ।।
कोई कहै इह लौ सनमध । घर परियण सब जाण्यां धंध ।।५१८०।।

तातैं धरि दिक्षा का भेष । बारहै विध तप करं असेष ।।
भव जल तिर तैं आई मोक्ष । जनम जरा के टूटै दोख ।।५१८१।।

रामचन्द्र मन्दिर मां गए । राजसभा मे बैठत भए ।।
राणी सब अंतहपुर आइ । पूजा दान करै बहु भाइ ।।५१८२।।

सोरठा

ल्याए आतम ध्यान, मोह माया सब परिहरी ।।
सीता सत प्रवांन, सुरनर सब महिमा करी ।।५१८३।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता प्रव्रज्या विधानकं

१०१ वां विधानक

चौपई

सीता की पूर्व कथा

श्रेणिक नृप कर जोडे हाथ । फेर धरम सुणावो नाथ ।।
लवनांकुस गरभ स्थिति करी । ते मुझ सकल सुणावो चरी ।।५१८४।।

स्यघनाद बन भय की ठोर । तिहा सीता कु आए छोडि ।।
महा विलाप सीता नै किया । कवण करम ते ए दुख भया ।।५१८५।।

सिद्धारथतै बहुत हित हुवा । कै पहिला के मनबन्ध नवा ।।
सिद्धारथ बहु विद्या पढाई । ते सब कहिए ससंय जाई ।।५१८६।।

श्री जिन की बानी तब हुई । भव आताप सगली बुझ गई ।।
गोतम स्वामी निरणय भणै । सभा मध्य श्रेणिक भी सुणै ।।५१८७।।

जंबुद्वीप मे क्षेत्र विदेह । फिकदा नगर बसै बहु गेह ।।
रतिवरधन राजा सुपुनीत । सुदरसना रांणि सुपुनीत ।।५१८८।।

वाकै गरभ पुत्र दोई भए । प्रीतकर हीतकर सुख किए ।।
दिन दिन बढै सयाने होई । कुल मडण बालक ए होई ।।५१८९।।

सरव गुपति राजा मतरी । राज विभूति तिहां अति जुडी ।।
बीजावल प्रधान की तिरी । उसकै मन उपजी मति बुरी ।।५१९०।।

रतिबरधन सूं संगम करौं । अपणौं जनम तब जाणउं खरौ ।।
राजा वन क्रीडा कौं चला । सरव गुपति मंदिर हितां भला ।।५१९१।।

ता मंदिर तलै बैठा आइ । बीजावली उझकी झरोखै जाइ ।।
दोन्हुं की हुई दिष्टि च्यार । मुख सो बोली पाप व्यौहार ।।५१९२।।

सीता की पूर्व कथा

राजा सुनि समझावै वईन । परजा कुं देखु भरि नैन ।।
जैसे पिता देखै पुत्तरी । असी दिष्ट राख जे खरी ।।५१६३।।

जे राजा ह्वै करै अधरम । कुल कलंक लगावै बहु जनम ।।
तुम्हारा सेवक की नारि । मुख सो कहिए बात संभारि ।।५१६४।।

बीजावली मनमे पिछताइ । मै कांइ बचन कह्या इहं भाइ ।।
मान भग हुवा इह घडी । अपणे मन बहु चिता करी ।।५१६५।।

सरवगुपति अपर्णे घरि जाई । त्रिया बचन बोलै समझाई ।।
मै ने आज सुणी हैं इक बात । तेरा काम भ्रस्ट होगा परभात ।।५१६६।।

राजा तो परि कोप्या घणा । असा दुख तोकु आइकै बण्या ।।
सुणि प्रधान अति करै विलाप । मन मे चिता अति ही व्याप ।।५१६७।।

राजमदिर मे देहु आगि । चहुधा जलै न छुटै भागि ।।
रयण समै वे कीनां दहन । राजा जाग्या देखी अगनि ।।५१६८।।

निकस्या भूप सुरग दुवार । दोनूं लीना संग कुमार ।।
सुदरसना राणी अगनि मे जली । भाजण को नही रही गली ।।५१६९।।

रतनवरधन कासी मैं गया । सरवगुपति राजा तिहां भया ।।
कासिप राय कासी का धनी । बल पौरिष ग्यानी गुन गनी ।।५२००।।

सरवगुपति नै भेजा दूत । मेरी आगन्या मानि बहुत ।।
इतनी सुणि तब कोप्या राव । रतनवरधन उन मारधा ठांव ।।५२०१।।

जो सेवक ठाकुर को हणै । एह अनीत कहो कैसे बनै ।।
अब जू इन्है लगाऊ हाथ । फेर न बिगारै काहु साथ ।।५२०२।।

कहा बराक सरबगुपति । जिह की आगन्या आणा निती ।।
जीवत पकडी हणुं पराण । धका दिवाया दूत है जांण ।।५२०३।।

दूत गया सरवगुपती पास । कासी बचन कहै सब भास ।।
असी सुणि सेन्या कू जोडि । कासी राय पै कीनी दौडि ।।५२०४।।

घेरधा नगरी नीसान बजाय । सुणे सबद तिहा कासिप राइ ।।
उन भी सेना लई हकार । सूर सुभट धाए तिह बार ।।५२०५।।

दडबरधन रतनबरधन को देखि । कासिपराय कह्या परेखि ।।
सुणि राजा मन भयो आनन्द । देख्या प्रत्यख चरणन कुं बंदि ।।५२०६।।

पूर्व कथा

अस्तुति करि सेवा बहु भांति । भयो कौन नगरी मा स्रांति ।।
सबै सुण्या रतनबरधन बली । मिले सकल पुजी मन रली ।।५२०७।।

सरवगुपति बाध्या तिह घरी । आया राय किंकदा पुरी ।।
पट बैठाइ रहे सब लोग । सुखसौ रहइ भूल्या सब लोग ।।५२०८।।

राजा करुणा चित्त बिचार । सरवगुपति छोडया तिह बार ।।
सेवा सौं तब कीया दूरि । पापी पाप कमाया भर पुरि ।।५२०९।।

भविदत्त मुनि दरसन पाई । सुण्या धरम रति बरधन राई ।।
प्रीतकर हितंकर कौं दीया राज । आप लिया दिगबर साज ।।५२१०।।

सरवगुपति भी दिक्षा लई । बीजाबली मुई राध्यसी भई ।।
मनमे कुबुधि बिचारी नई । वैर भाव उपजावै सही ।।५२११।।

राय कीया मेरा मान भग । सरवगुपति तप करै वा सग ।।
दोनु मुनि पर किया विरोध । आधी मेह दु ख का श्रोध ।।५२१२।।

बहु उपसर्ग दोन्यू मुनि सह्या । केवलग्यान वा समै लह्या ।।
गए मुकति जै जै ध्वनि हुई । पंचमगति पाई मुनि दुई ।।५२१३।।

सुदरसनां जल मुंइ तिह बार । पुत्र मोह की करी सभार ।।
वे दोन्युं मेरे गरभ भए । दुह विरया ले बिछुड क्यो गए ।।५२१४।।

एक वेर मिलज्यो फिर आन । अ त समय राख्या इह ध्यान ।।
प्रीतकर हेमंकर भूप । विमल मुनीस्वर देख स्वरूप ।।५२१५।।

नमस्कार करि पूछ्या धरम । दोन्यु भए जती कै करम ।।
करै तपस्या बारह विध । चारित्र साधैं तेरह मन सुध ।।५२१६।।

बीस दोइ परीसा सहैं । नवग्रीवेक पाई उनि जहै ।।
कासिप देस वामदेव नरेस । गुणा अस्तरी धरम कै भेस ।।५२१७।।

वसुदेव वासद पुत्र दोइ भए । जोवन समय विवाह करि दए ।।
वसुदेव कैं विस्वा असतरी । वासिट कै प्रीयागणा गुण भरी ।।५२१८।।

श्रीदत्त मुनी कू दिया अहार । पाया भोग भूमि अवतार ।।
तीन पल्य की भुगती आव । इसान स्वर्ग परि पाया ठांव ।।५२१९।।

उहा तै चए रतन बरधन के ग्रेह प्रीतंकर हितंकर एह ।।
वे पहूच्या नवग्रेवक विमान । उहा तै चया सीता गरभ आय ।।५२२०।।

पूरव भव छोडी थी माई । वातैं दुख पाया गरम आई ।।
मात बिछोहा तो इहां भया । वह बंध अंक इहां ऊ गया ।।५२२१।।

सुदर्शना जीव भ्रमी बहुगति । सदा धरम ध्यांन सुं हिति ।।
तपकरि अस्त्री लिंग कीना भंग । करि करणी सुगुरु गुरु सग ।।५२२२।।

उसका जीव सिधारथ भया । वह सनबंध इन सूं थया ।।
ए ही करम का सरबंध । निसचै सेवै देव जिनंद ।।५२२३।।

सोरठा

भव भव किया जु पुन्य, समकित सो मन दिढ रह्या ।।
लवनांकुस बलवन्त, रघुवंसी जग मे तिलक ।।५२२४।।

इति श्री पद्मपुराणे लवनांकुस पूरवभव विधानकं

१०२ वां विधानक

चौपई

सकल भूषण कीरत सब देस । सुरनर पूजा करै नरेस ।।
बहुजन भए जती के भाव । जपैं घणा जिण जी का नाव ।।५२२५।।

किणही सरावक का व्रत लिया । सरव जीवां की पालै दया ।।
पूजा दान करैं सब कोइ । घरि घरि कथा सीता की होई ।।५२२६।।

धनि सीता अइसा तप करै । मोह माया सब सुख परिहरै ।।
आठ दिवस कबही इक मास । राग दोष का कीया नास ।।५२२७।।

ऊच नीच लखं नही गेह । सरस निरस भोजन कूं लेह ।।
लोही मांस गया सब सूख । क्रोध लोभ साधी तिस भूख ।।५२२८।।

तप की जोति दिपै सब गात । जैसे ससि पूनम की काति ।।
जरजरा भई मुरझाई बदन । जैसे काष्ट फुतली के तन ।।५२२६।

बासठ बरस तपस्या करी । तेंतीस दिन तपस्या मे टरी ।।
छोडि काय लह्या अच्युत विमांन । भया प्रति इंद्र लह्या सुख थान ।।५२३०।।

बीस दोइ सागर की ठांव । तप करि पाई एती आव ।।
राम कथा सब पूरण भई । श्रीजिन कथा कहैं इहां नई ।।५२३१।।

स्वर्ग सोलह प्रद्युमन अरु संबु । कृष्ण गेह उपज्या कुल थंभ ।।
बाईस सागर चउसठ सहस्र । उपजे सुगति आव हरिवंस ।।५२३२।।

श्रेणिक पूछै द्वं कर जोडि । जिनवांणी का नांही बोड ।।
जितने भेद सुणे धरि कांन । तिरपत न हुवे सुणे पुराण ।।५२३३।।

एक एक तैं वाणी सरस । जे सुणिए बहुतेरा बरस ।।
तउव न जावै जीव अघाइ । प्रद्युम्न सबु के कहै परजाइ ।।५२३४।।

प्रद्युम्न सबुकुमार के पूर्व भव

सालिग्राम नित्योदय राइ । सोमदेव बांभण तिह ठाइ ।।
अगनिला कै भए दोइ पुत्र । अगनिभूत दूजा वायभूत ।।५२३५।।

विद्या पढि भए परवीन । इन अग्रे पंडित सब हीन ।।
बेद पुराण कहैं मुख पाठ । राखै घणी गर्भ की गाठ ।।५२३६।।

इन समान न पडित और । असा देस देस मे सोर ।।
नदिवरधन मुनिवर महा मुंनी । वाकै सग शिष्य बहु सुनी ।।५२३७।।

वन मे जोग लिया उन आय । आगम सुण्या नित्योदय राइ ।।
उतर स्यघासन वाही दिसा । करि डडोत मनमा बहु हूंसा ।।५२३८।।

सकल लोग सगति बहु चल्या । बाजतर जिहा बाजै भला ।।
भई भीड वे द्विज के बाल । इनके मन संसय का साल ।।५२३९।।

नांही पर्व नाहीं त्यौहार । इतना कहां जांहि इकधार ।।
सुणी बात वण आये जती । दरसण कूं चाल्या भूपती ।।५२४०।।

सकल लोग जावै वा निमित्त । जोग ध्यांन तिहां महा महंत ।।
इतनी सुणि वे उठे रिसाइ । वे क्या हैं हम सू अधिकाइ ।।५२४१।।

हम सूं कवण है पूजनीक । मूरख चलैं हैं गडरिया लीक ।।
अब हम करि हैं उनि सो वाद । जे हम से जीतैं वे बाद ।।५२४२।।

तो हम जांणैं उनका ग्यांन । नातर ए सब लोग अग्यांन ।।
दोनू विप्र गए बन माहि । ध्यानारूढ दिखे तिण ठाहि ।।५२४३।।

संबूकुमर मुनीस्वर एक । जिसके हीए जिनेस्वर टेक ।।
मुनि की ढिग दोउ विप्र जाइ । कहि कहा ते भाए इस ठांइ ।।५२४४।।

बोलै जती सहज के भाइ । आय पहुंचे याही ठाइ ।।
पूछै मुनी तुम कहां ते आए । आगम कहो सकल समझाइ ।।५२४५।।

दोन्युं हसे विप्र के पुत्र । अई अई बुधि महा विचित्र ।।
देखि प्रत्यक्ष होइ अग्यान । सालिग्राम हमारा थांन ।।५२४६।।

मुनिवर बोले अपनो गति कहो । कवण परजाइ तैं इह गति लहो ।।
असी सुणि भए चिक होइ । गति अगति की जाणैं नहीं कोइ ।।५२४७।।

वेद पुराण मे की होइ बात । कहैं सकल वांको बिरतांत ।।
हमको अवधिग्यान एह नाहिं । गति आगति समभावै ताहि ।।५२४८।।

मुनिवर बोले मोपै तुम सुणौं । तुमके भव सब ही मे भणौं ।।
मगध देस सालिग्राम समीप । भरत क्षेत्र तिहा जबूद्वीप ।।५२४६।।

कर्म करि हैं बाह्य करि सांन । जो तिण गया धरती बन थान ।।
घडी च्यार सेती घर आइ । भोजन किया दिवस मे जाइ ।।५२५०।।

तिहा घनरह वरखा घनघोर । सात दिना वन माडया जोर ।।
भूखे सियाल थे तिहा दोइ । सात दिवस भूखे दुखी होइ ।।५२५१।।

व्रत चांम की भीजी तिहा । भखी श्रृंगाल मरण ते लहा ।।
उठी सूल दोन्यु मर गये । सोमदेव के सुत दोउ भए ।।५२५२।।

उन किसाण तिहा सुष लहो । देख व्रत मन विस्मय भई ।।
देखे मुए दोई सियाल । लिये उठाइ उचेडी खाल ।।५२५३।।

वांह द्विज सुवा पाइ कै काल । पिता पुत्र के उपज्या बाल ।।
अष्ट वर्ष का हुवा पुत्र । देखो खाल स्याल संजुक्त ।।५२५४।।

भव सुमरण विप्र कुं भई । मेरी प्रसूति पुत्र घर भई ।।
कैसे कहू पुत्र कूं तात । बहु सो किंह विघ कहिए मात ।।५२५५।।

ऐसी समझि रह्या दोउ मूक । मुख तै वचन न बोलै चूक ।।
अगनिभूत वायुभूत दोऊ बीर । गये तुरन्त सरकै तीर ।।५२५६।।

देखी खाल टकी तिह ठाव । समझि साच हीए धरि भाव ।।
गू गे से सब कही मन की बात । मिटै भेद सब ही इह भात ।।५२५७।।

उठि प्रमुखि साध पै गया । नमस्कार करि ठाढा भया ।।
मुनिवर सकल कही समझाय । अपने मन मे मति पिछताइ ।।५२५८।।

आदि अनादि चिहु गति बीच । कबहीं उत्तम कबही नीच ।।
नटवा भेष धरया बहु जौन । लख चौरासी मे कीया गौन ।।५२५६।।

पिता होइ पुत्र का पुत्र । माता होइ घरणी सजुक्त ।।
नारी तै जननी उतपन्न । कब ही होई भाई बहन ।।५२६०।।

कबही ग्ररि ग्ररु कब ही मित्र । कबही माता होइ कलित्र ।।
कबही राजा कबही रंक । कबही ठाकुर सेव निसंक ।।५२६१।।

कबही धारैं देव स्वरूप । कबही दुखिया महा कुरूप ।।
कबही कामदेव उणिहार । कबही कुष्टी रोग अपार ।।५२६२।।

जैसे फिरै रहठ की घडी । कबही रीती कबही भरी ।।
ग्रैसी सुणि सब ससय गया । ग्रष्टांग नमस्कार तब किया ।।५२६३।।

प्रभुजी मोकू' दिष्या देहु । बांह पकडि हूं व्रत ग्रह लेहू ।।
मुनिवर कहैं फेरि घरि जाइ । ग्रागन्या मांगि कुटंब पैं ग्राइ ।।५२६४।।

तबैं दिष्या देनी तुम्हे सही । विन ग्रागन्या तपस्या नही कही ।।
प्रभुजी ग्राए ग्रापनै गेह । सकल सभा का मिटया सदेह ।।५२६५।।

केई समझि धरै चारित्र । किनही लीया श्रावक व्रत ।।
जिहा तिहा कथा इहै चलै । दोन्यु' विप्र मनमे जलैं ।।५२६६।।

स्याल जोनि तैं वे विप्र भए । ग्रकाम निर्जरा पडित थए ।।
इतनी जात कहा है देव । जाणै नही धरम का भेव ।।५२६७।।

ब्राह्मण देव कहा ग्रौर स्वरूप । ग्रगनि देव कहे नर भूप ।।
कैसे भए देब एह जीव । करैं कर्म पाप की नीव ।।५२६८ ।

ब्रह्म सो परमातम चिह्न । सयम क्रिया की विध किह्न ।।
ए पापी होमैं ग्रगिणत जोव । करै वृत्त पाप की नींव ।।५२६९।।

कद मूल फल लेह ग्रहार । पुंन्य पाप कौ नही विचार ।।
निस भोजन ग्रण छाण्यो नीर । दया भेद जाणैं नहीं पीर ।।५२७० ।

सर्प देव कैसें करि होइ । जिसके डस्या न जीवै कोइ ।।
ग्रगनि दया करैं नहीं काई । जो कछु पडै भस्म होइ जाई ।।५२७१।।

मूरख पुरुष नैं देवता कहै । ग्यांन भाव का भेद न लहैं ।।
विप्र वही जो पालै दया । धन्य साध जो इह विध तप किया ।।५२७२।।

पूरव भव की जाणैं वात । उनतै ग्रवर न उत्तिम जात ।।
राजा रंक सकल ही लोग । ग्रसतुति करैं जे साधै जोग ।।५२७३।।

विप्र के मन भया विरोध । निस ग्राए धरि चित्त विरोध ।।
काढि खड्ग दोनू इक बार । बहुरि करैं धरम बिचार ।।५२७४।।

प्रद्युम्न एवं संबुकुमार के पूर्व भव

विप्र संन्यासी तपेसुरी । अतीत अनागत लघु अस्तरी ।।
इनकै मारयां उपजै पाप । भव भव सहैं दुःख संताप ।।५२७५।।
जइ तेरा मनमें है बैर । पहिलै तु हमकूं मारि करि ढेर ।।
दऊ न डरैं न मारे जाहि । दोनुं तानइ खड्ग सब बांहि ।।५२७६।।
बांध्या यक्ष दोनुं वाका हाथ । उभा द्विज बैठा मुनिनाथ ।।
प्रभात समै आये सब सेठ । लघु वृद्ध बदना चाल्या वेठ ।।५२७७।।
नमस्कार करि पूरा करी । वा मुनि पैं सब ही की विष्ठ पड़ी ।।
अगनभूत वायुभूत विप्र । हाथ जोडि कर नायेस पुत्र ।।५२७८।।
ऊंचे कर दोन्युं का बंध । उभा इम दोन्यु द्विज अंध ।।
सती जती बैठा सुप्रडोल । गहि मौन बोलै नहिं बोल ।।५२७९।।
जे आवै ते गारी देह । रे पापी कीन्ही कहा एह ।।
मुनिवर बैठे वन मे आनि । इनकै चित्त निरजन ध्यान ।।५२८०।।
किसही सु नहिं करते नोख । सब ही नैं दई मारग मोष्य ।।
मुनिवर कूं तुम दीना दुख । तैसा अब देखउ परतष्य ।।५२८१।।
बहुत लजाए बांभरण दोइ । धिग धिग कहै जगत सब कोइ ।।
सोमदेव अगनला माईं । मुनिवर कैं वे लाग्या पाईं ।।५२८२।।
स्वामि नमुं हूं दोउ कर जोडि । हमनैं बिलगाँ थी इनहैं छोडि ।।
पुत्र भीख दीजै करि मया । तुम प्रभु पालो हो अति दया ।।५२८३।।
मुनि बोलैं दंपति सो बात । हमारै नहीं क्रोध की जात ।।
विनती करै जष्य सौं धणी । अतिरिगति जष्य ऐसी सुणी ।।५२८४।।
कहै जष्य ए पापी दुष्ट । इना दीया है साधनइ दुःख ।।
जैंसा सुं बोलै तैसा सुरणै । जैसा बावै तैसा लुरणै ।।५२८५।।
ज्यौ दरपण मा देखै कोइ । जैसा चितै तैसा होइ ।।
जे मुख को टेढा करि देखैं । तैसा ही तामैं दरसन लेखै ।।५२८६।।
जे देखई सुधा करि बदन । तैसा तामे हैं दरसन ।।
ए है पापी महा अग्यान । इनै न छोडूं अपने जान ।।५२८७।।
मुनिवर बात जष्य सू कहैं । सुष्यम बादर करुणा चित गहैं ।।
ए दोन्यूं पंचेन्द्रिय जीव । छोडो वेगि इनकी ग्रीव ।।५२८८।।
जीव दया कारण व्रत करैं । हिंसा तैं निस वासर डरैं ।।
वनमें रहैं परीसह सहैं । ते कैसें जीवां नै दहैं ।।५२८९।।

अतिरिक्त छोडो तुम यक्ष । इन दोन्युं सो न करो कुक्ष ॥
विप्र छोडि दिया तिण बार । उनौं विप्र कुं कराया नमस्कार ॥५२६०॥

तबै अणुव्रत विप्र कू दिया । जैनधर्म निसचै सूं किया ॥
धरम पुराण कहैं मन ल्याइ । खोटी क्रिया विप्र दई बिहाइ ॥५२६१॥

जीव दया के पालै भेद । असुभ करम का कीया छेद ॥
सोमदेव अगनिला व्रत गह्या । उनपै व्रत न जावै सह्या ॥५२६२॥

मरि करि भ्रम्या बहुत ससार । दोन्यु विप्र स्वरग तिह बार ॥
मुगति आव अजोध्यापुरी । सुभदर दत्त राजा रिध जुरी ॥५२६३॥

धारणी राणी कै गरभ आइ । पूरणप्रभ मानभद्र जाइ ॥
पाई वृद्ध सयाणें भए । राजा कै इहै उपजी हिए ॥५२६४॥

उन दोन्यू कौ दीयो राज । आपण किया धरम का काज ॥
बहुत दिना भुगते सब देस । मुनिवर बल किया प्रवेस ॥५२६५॥

मुनि नरेन्द्र दरसन कु चले । चिंडाल पास कुकरी गले ॥
उनकौ देख अपना नेह । भेटया चाहैं उनसो देह ॥५२६६॥

मन मे सोच करै बहु भाइ । चलै पूछिये मुनिवर जाइ ॥
गये साध पै करि डडोत । राजा पूछी बात बहुत ॥५२६७॥

स्वामी एक अचभा सुणौ । इनहै देखि मोह ऊपन्यो घणुं ॥
कवणएकवण हम जात । ए प्रतष्य चिंडालहै पांति ॥५२६८॥

जिह के छिया लीजिए सुचि । तासु होय मिलण की रुचि ॥
बोले ईह सोमदेव विप्र । अगनिलाए ए मुनी अगिप्र ॥५२६९॥

पूरव भव का माता पिता । ता कारण मोह की लता ॥
एक मास रही है आव । चडाल कूकरी संन्यास तिह आव ॥५३००॥

काल पाइ नदीसुर द्वीप । दोन्या भए देव सु समीप ॥
दोई भूपति नई धरमणा । जैन धरम विध पालै घणा ॥५३०१॥

देही छोडि सौधरम विमाण । तिहा तैं चए अयोध्या आन ॥
हैमनाभ राजा कई गेह । अमरावती राणी रूप की देह ॥५३०२॥

ताकै जा अति प्रतापी भए । हैमप्रभ संयम व्रत लिए ॥
राजभार मधु कीट नै दिया । आप गुरु ढिंग सयम लिया ॥५३०३॥

राजा मधु अति प्रतापी भए । नाम सुंगत अरि उठि गए ।।
सर्व नृपति मानैं तिह आण । ए भुविपरि रविचंद्र समाण ।।५३०४।।

राजा भीम न मानैं संक । जसकै गढ अति विकट विहंक ।।
तिह कारण राजा मधु चला । वीरसेन मारग में मिल्या ।।५३०५।।

निग्रोध नगर में करि सनमान । बहुत भेट आगैं धरी आंन ।।
चन्द्राभा वीरसेन की अस्तरी । रूपवंत लावण्य गुण भरी ।।५३०६।।

उझकी आइ झरोखै द्वारि । झांई देखी भीर मंझारि ।।
राजा भया मूरछावंत । जाणौं भए प्राण का अंत ।।५३०७।।

चेत्यो राजा करै विचार । फिरतां आई करूं उपचार ।।
भीम राजा से मांडया खेत । बांध्या तुरंत जुध के हेत ।।५३०८।।

आया तुरंत अजोध्या देस । चंद्राभा मन खुटक नरेस ।।
देस देस को लेख पठाइ । सब कुटब तब नृपति बुलाय ।।५३०९।।

आए सकल देस के भूप । जीमया दीया महा अनूप ।।
काहूं कुं अस्व रथ दिया सिरपाव । किहु कू गज परगने गांव ।।५३१०।।

सबको दिया जिस्या परवांन । सो कूटुंब का राख्या मांन ।।
वीरसेन सो ऐसी कही । तुम भी जावो अपनी मही ।।५३११।।

कछु आभरण सवरैगा अभी । बिदा करस्यां चंद्राभा तभी ।।
बीरसेन नैं किया पयांन । मधु राजा चन्द्राभा आन ।।५३१२।।

अंतहपुर पटराणी थापि । राजा मनमे विचारया पाप ।।
भोग भुगति सौं वीतै काल । राजा तजी धरम की लाज ।।५३१३।।

जे रखवाला चन्द्रा पास । ते सब भाजे होइ निरास ।।
बीरसेन कूं इह सुध भई । चन्द्राभा छीन उनुं नैं लई ।।५३१४।।

वीरसेन बहुत विललाइ । बलवत सो कछु न बसाइ ।।
इह प्रथवीपति जाकै है देस । इह प्रबीन इह बडा नरेश ।।५३१५।।

छांडी राज फिरै विकराल । व्याप्या हीए नारी का साल ।।
वनमे फिरै अधिक विललाइ । याकै चित्त कबहु न बसाइ ।।५३१६।।

करैं पुकार गिर गिर फिरै भूमि । ऐसी महा मचावै धूमि ।।
चन्द्राभा ऊंचा सूं देखि । कंत फिरै इहै ऐसे भेस ।।५३१७।।

बेर बेर राणी पिछताइ । मांहरै दुःख फिरै इन भांइ ।।
राज भिष्ट हो डोलै मही । इसकै कोई सहाई नहीं ।।५३१८।।

मो कारण मं की मति फिरै । पिछतावै राणी हिए भरै ॥
भ्रमत फिरैं कारज सरैं नांहि । मं जिन प्रिय विष्ट परचा कांहि
॥५३१९॥

नमस्कार करि पूछै धरम । सुणे भेद खावै बिन मरम ॥
दिष्या लई संन्यासी पास । पंचाग्नि साधै बनवास ॥५३२०॥

देही छांडि लही गति देव । इह राजा सुख विलसै एव ॥
झरोखै बैठा राजा आइ । कोटवाल आया तिह ठाइ ॥५३२१॥

एक मरद पकरचा परनारि । हाथ बांध आण्या तिह बार ॥
राजा सुणी किया इह न्याव । इह को हणौं चोर कीं ठांव ॥५३२२॥

फिर श्रैसा न करै कोई कांम । खोवै धरम लजावै गांव ॥
तबै राणी चंद्राभा कह्या । राजा जी तुम भेद न लह्या ॥५३२३॥

इमुं कहा सबै विगार । जिनौं को मारि करो हो छार ॥
इनको बहुत दीजिये दान । निरभै करो ज्युं मनमान ॥५३२४॥

इनौं की पूजा करणां न्याइ । कहा चूक भई इनतें राय ॥
राजा कहै सुण राणी बात । तेरी मति भिष्ट भई इह भांति ॥५३२५॥

अन्याई की तू पूजा कहै । दान दिलावै भेद न लहै ॥
अन्यायी है यह महा पापिष्ट । इनको दीजे महान कष्ट ॥५३२६॥

जितना हुवै पुन्य विसतार । भूलि न करै कोई बिगार ॥
चन्द्राभा समझावै बैंन । अपना वचन परिखो करि नैन ॥५३२७॥

कहां तैं मो करि श्रांनी ब्याह । मुझ बिन व्याकुल है मेरो नाह ॥
जो राजा खोटा हुवै आप । तिसकी प्रजा करै अति पाप ॥५३२८॥

त्रिया बचन सुणि भई संभालि । सत्य वचन समझे भूपाल ॥
हाइ हाइ कर मीडै आप । मैने कियो प्रथी को पाप ॥५३२९॥

मो सरिखा करम ए करै । पृथिवी परि को अपजस धरै ॥
उज्जल कुल लागो कालौंस । अब हूं धोऊं कइसी रोस ॥५३३०॥

मो कूं भई पाप की बुधि । भूली राजनीति की सुधि ॥
कठिन पाप कैसे होवै दूरि । ताहि न होवै ऊषध मूल ॥५३३१॥

मन वैराग धरचौ अति सोच । राज भोग सो छोडी रोचि ॥
सहस्र अव बन उत्तम मही । सिद्ध पदम मुनि आए सही ॥५३३२॥

राजा सुनि मुनिवर ढिग गया । नमस्कार करि ठाढा भया ।।
करै बीनती मस्तक नाय । पाप करम मैं किया अथाह ।।५३३३।।

कैसे टरै पाप का दोष । गुरु संगति से लहिन मोष्य ।।
मुनिवर कहैं ग्यान बहु भाइ । राजा भेद सुणें मन लाइ ।।५३३४।।

कुलवर्धन कूं राजा किया । प्राप भाइ संयम व्रत लिया ।।
कीटभ नैं भी दीक्षा धरी । करैं तपस्या दोउ मिल खरी ।।३५३५।।

सूरज तपैं परबत की सिला । काया तपैं पसीना चल्या ।।
बहैं पाप देह तै छंड । ग्यानामृत की पीवैं घूंटि ।।५३३६।।

वर्षा में तरु तलि खरै । मूसलधार मेह की पड़ै ।।
माछर डांस तनमैं लगैं । बयाल प्राइ प्राइ कै लगैं ।।५३३७।।

सीयालै सरवर की पाल । पडै तुसार चलै बहु ब्यार ।।
षटरित मांहि परीस्या सहैं । बाईस विध कही है त्युं तन दहैं ।।५३३८।।

असा तप करि करी है देह । प्रच्युत स्वर्ग इन्द्र पद एह ।।
इनकी प्रति इन्द्र सीता जीव । तहकाल थिर सुख कीं नीव ।।५३३६।।

मधुकीटभ प्रच्युत विमांन । तिहां तैं चए द्वारामती थान ।।
दोऊ भए कृष्ण घरि प्राय । रूपवत बल सोमैं काय ।।५३४०।।

मधु का जीव भया पद्मन । रुकमण नै गर्भ पाईज उंन ।।
कीटभ हुआ संबु कुमार । जांबवती उर लिया अवतार ।।५३४१।।

दूहा

कथा कही परदुमन की, श्री जिनवर समझाइ ।।
श्री गौतम विधि सो भणी, सुणी जु श्रेणिक राइ ।।५३४२।।

जो सुणैं हैं एह पुरांण, ते निसचै समकित गहैं ।।
पावै अमर बिमाण, दया अंग मनमां रहै ।।५३४३।।

इति श्री पद्मपुराणे मधु कीटक भव विधानकं

१०३ वां विधानक

चौपई

कंचनपुर तिहां कंचन रथ । सुरेन्द्र इन्द्र गुंन करि समरस्थ ।।
दोइ कन्यां ताकै घर सुता । रूप लछ्यण गुंण करि सोभिता ।।५३४४।।

स्वयंवर रच्या बुलाये राइ । देस प्रदेस बसीठ पठाइ ।।
नृपति आये कांचन पुरी । सहु भूपति की सौभा जुरी ।।५३४५।।

रथ परि बैठी दोन्युं पुत्तरी । जगतिपति कंचुकी मति खरी ।।
सबइन का नाम कंचुकी कहै । कन्या इष्ट न कोई लहै ।।५३४६।।

विद्याधर देखिया नरेस । भूमिगोचरिया दिस कियो प्रवेस ।।
राजा सकल अचंभा करैं । अब इस कन्या किस कुं वरै ।।५३४७।।

कन्या के विनां हि आवै कोइ । मान भंग सब भूपति होइ ।।
लवनांकुस देखिया कुमार । फूलमाल गल डारे हार ।।५३४८।।

जैं जैं कार करैं सहु लोग । लखमरण के सुत मान्या सोग ।।
आठ पुत्र त्रिरण सैं पचास । भए कोप मन धरै उदास ।।५३४६।।

लवनांकुस हम तै क्या भले । घाली माल इनां के गले ।।
हम मांडैगे इनसे राडि । भूपति सब मिल करै बिभाड ।।५३५०।।

इनके हीए गाठ यह पडी । कैसे छूटै इह यस घडी ।।
आठ भूप की कन्या आठ । वे माला ले वहठी दे गांठ ।।५३५१।।

आठुं के गले घाली माल । इनके मनतैं मिटै न साल ।।
मंदाअगनि लवन नै व्याहि । ससांकचक्रा मदनांकुस नांहि ।।५३५२।।

आठ व्याह आठुं कुं भए । अधिक सुख उपज्या उंन हीए ।।
लवनांकुस कौ आठों देखि । बहुरि मनमां करैं परेखि ।।५३५३।।

हम तो है नारायण पुत्र । तीन षंड मां रह्यो न सत्रु ।।
रावण मारघा हमारे पिता । जीत्या सकल देस पुर जिता ।।५३५४।।

तीन सैं अठावन हम वीर । महाबली अर सांहस धीर ।।
जो कछु है सो हमारा दल । हम समान किसका है बल ।।५३३५।।

मान भंग हमारा किया । उनै व्याह लवनाकुस लिया ।।
जे ए हमसैं मांडै युध । मार गुमांवां इनकी सुध ।।५३५६।।

रूपमती सुत कहैं विचार । तुमारी हांसी हुवै संसार ।।
तुम तीनसैं अठावन वीर । ए कन्या थी दो सरीर ।।५३५७।।

कैसे होता तुम सो काज । कैसी रहै तुमां कुल लाज ।।
राम लखमरण है बहु प्रीत । दुख सुख भुगतैं एकै रीत ।।५३५८।।

जैसे तुम तैसे ये भ्रात । छंडो कोध करो मन सांत ।।
सुख संसार सदा नही थिर । सागर बंध रहै नहीं थिर ।।५३५६।।

एकरण दिवस होई विनास । ता थै करो मुकति की आस ।।
मुकति बधु सुख सदा अचल । श्री जिनवारणी रहैं अटल ।।५३६०।।

समकित सौं निश्चै तप करो । वेग जाई अमर पद धरो ।।
बहुत भांत समझायो ग्यान । सबकों भयो धरम सौं ध्यान ।।५३६१।।

लखमरण की आग्या कुं भए । हाथ जोडि थाडे दोउ भए ।।
आदि अनादि भ्रम्यु सहुं तित । समकित बिना न पाई गति ।।५३६२।।

भ्रम्यौं लख चौरासी जौनि । चिहुंगति माही कीनु गौन ।।
रोग सोग आरत मां फिरधा । श्री जिन वाक्य न चित मां धरधा
।।५३६३।।

अब दिख्या ले साधै जोग । जनम जरा का मेटै रोग ।।
लखमरण बोलै सुरण हो कुमार । जैन धरम खांडे की धार ।।५३६४।।

तुम बालक भरि जोवन वैस । कैसे सधै जती का भेस ।।
भुगत्या नहीं सुख ससार । नऊल तुम ब्याही है नारि ।।५३६५।।

उनहि छोडि जई दिष्या लेहु । उनके सूल तुम कहा करेहु ।।
जई तुम उनका गहो सताप । तो तुमको होवई बहु पाप ।।५३६६।।

इह है भोग भुगत की बेर । चउथै आश्रम संयम फेर ।।
ए सुख छांडि लीजिए न जोग । जोवन समय भोगवो भोग ।।५३६७।।

अणुव्रत सरावग का लेहू । पूजा दान सुपात्रां देहु ।।
च्यारू विध के दीजे दान । वैयाबरत सब का सनमांन ।।५३६८।।

वोलै कुमर सुणुं तुम तात । भ्रमे लक्ष चउरासी जात ।।
संपय बिभव बहुत परवार । भव भव बीझ लहे नहि पार ।।५३६९।।

जम की पासि पडै जब हंस । होइ सहाई धरम का अंस ।।
स्वारथ रूपौं सब संसार । पुद्गल आदि न कोई लार ।।५३७०।।

पुन्य पापनैं एकै कर जान । इनतैं फिर भुगतैं इह थान ।।
तप करि कै पावै निरवान । भ्रमै नहीं भवसागर आन ।।५३७१।।

महाबल मुनिवर ढिग जाइ । दिख्या लही मन बच काइ ।।
आतमध्यान लगाया जोग । छोड दिये संसारी भोग ।।५३७२।।

दूहा

धरयो ध्यान चिद्रूप सौं, दया भाव करि चित्त ।।
लखमण के सुत अतिबली, कियो धरम सु हित्त ।।५३७३।।

इति श्री पद्मपुराणे लक्ष्मण पुत्र निष्क्रमण विधानकं

१०४ वां विधानक

चौपई

भावमडल नें चेत्या धरम । सकल जनम बाधिया कुकर्म ।।
जब रावण सु कियो संग्राम । बहुत लोग मारे तिह ठाम ।।५३७४।।

अवर देस कूं बाधे घणे । दुरजन दुष्ट बहुत ही हणे ।।
पांचु इन्द्री सुख कियो अथाह । मानुष जनम दियो यू ही गमाइ ।।५३७५।।

आतम काज समार न सक्या । मोह कध माया बस थक्या ।।
अब जे छोडुं राज विभूत । हय गय वाहण विभव संयुक्त ।।५३७६।।

ए नारी किन्नर उणिसार । कोमल अंग कमल सुकुमार ।।
सदा सुख सो बीतै घडी । मो बिन छह रित जाइ बुरी ।।५३७७।।

बारह मास किम सह सताप । मुझ बिन मरै करै विललाप ।।
इना की कल्पना लागै माहि । किस विध इनसूं करूं बिछोह ।।५३७८।।

कोई कोई भूपति बलवान । मानै नही हमारी आंन ।।
साधूं सबकूं संसा करि दूर । तबै दिक्षा लेहूं भर पूर ।।५३७९।।

असी विध मन सोचै घनी । इह जागै इक कारण बण्या ।।
सोवै था सत खणे आवास । बिजली पडी प्राण का नास ।।५३८०।।

मन मा चितवै था कछु और । अण चित्या हुवा इण ठौर ।।
जिण नही ढील धरम की करी । तिसका मन की पुंजी रली ।।५३८१।।

धरम करण कौ करै विचार । सोचि सोचि जे राखै टारि ।।
जनम अकारथ यूंही खोइ । अवसर चूकैं कबहुं न होइ ।।५३८२।।

धरम काज कीजिए तुरत । पावै सुख अरु मोष्य लहंत ।।
सोच करंत जे व्यापै काल । फेर पडै माया के जाल ।।५३८३।।

चित चेतन सो ल्यावै प्रीत । धन्य धन्य पुरुष प्रतीत ।।
आप तिरै अवरां नैं त्यार । फेर न बहुरि भरमै संसार ।।५३८४।।

दूहा

धरम बिलंब न कीजिए. करिये पहुंच समांन ।।
मन बांछित सुख भोगवै, बहुरि लहै निरवांन ।।५३८५।।

इति श्री पद्मपुराणे भावमंडल परलोक गमन विधानकं

१०५ वां विधानकं

चौपई

हनुमान की तपस्या वर्णन

लखमण सम अन्य न कोई भूप । बल पौरिख अरु महा स्वरूप ।।
रामचन्द्र सेती अति प्रीत । जाणै सकल धरम की रीत ।।५३८६।।

उनालै भुगतै सुख घणे । सीतल मनोहर जल सु बणे ।।
ऊंचा मंदिर अति उत्तग । महा सुगंध फूल सुरग ।।५३८७।।

झरनां तै तिहा निकलै नीर । उछलै जल सुख हुवै सरीर ।।
गोभर ढांढी छाई छान । ई माफिक सुख भुगतै हनुमान ।।५३८८।।

बहुरि विचार करै मनमाहि । यह ससार भरयो दुख मांहि ।।
पुत्र कलित्र सब लिये बुलाई । उनसौं बात कही समझाइ ।।५३८९।।
इह संसार बिजली उद्योत । फिर छिन मे अंधियारा होत ।।
हम तुमसौं ईहा लग थी प्रीत । अब हम जाइ हो इहां अनीत ।।५३९०।।

इनका चित्त निहचल थंभ । रोवै परिजन लोग कुटंब ।।
चढि सुखपाल चैति बन गए । राजा प्रजा परियण संग थए ।।५३९१।।

सेना सकल भई उठि सग । बाजा बाजैं ताल मृदंग ।।
धरम रतन मुनिवर पै जाइ । नमस्कार करि बोलै राइ ।।५३९२।।

स्वामी मोकूं दिष्या देहु । बांह पकडि अपनी संग लेहु ।।
बिद्युतगति सुत नै दे राज । सौंपी सब परियण की लाज ।।५३९३।।

मुकट उतारि सबै भृंगार । बसतरि फाडि किए तिह डालि ।।
लोचे केस दिगंबर रूप । सात सै पंचास अवर संगि भूप ।।५३९४।।

करैं तपस्या मन वच काइ । आतमध्यान धरै मन लाइ ।।
तेरह बिध सौं चारित्र धरया । बारह अंग द्वादस तप करया ।।५३९५।।

समकित अष्ट अग संयुक्त । अष्ट अंग धरि ग्यान बहुत ।।
अनप्रेंष्या का प्रेष्यन करै । ग्यान सहज करमें ले धरै ।।५३९६।।

दस लक्षण गुंण चक्र संभार । सब प्रावध तिहा दिए डारि ॥
अष्ट करम से मांडे युध । सहैं परीसा बाईस सुध ॥५३६७॥

छठे महीने लेई आहार । मन बच काई दृढ अपार ॥
आतम चिदानंद सों ध्यान । केवल ग्यान लहै हनुमान ॥५३६८॥

करि बिहार फिरे बहु देस । भव्य जीव कूं दे उपदेस ॥
श्रीमती लक्ष्मी अरु घणी । बंधमती आरजिका सु भणी ॥५३६६॥

दिष्या देहु हम कू आजि । हम भी करैं आतमा काज ॥
सब ही मिले सयम व्रत लिया । निश्चल ध्यान निरंजन किया ॥५४००॥

देही तैं ममता राखी नही । जिनके चित्त समकित है सही ॥
हनोमान प्रतिबोधे घणे । अष्ट करम अरि सब हणे ॥५४०१॥

हनूमान पचम गति लही । जोति मा जोति समाही सही ॥
मुकति वध सुख उत्तम थान । दरसन बल वीरज बहु ग्यान ॥५४०२॥

दूहा

कथा सुनैं हणुमान की, करै दया सुं प्रांन ॥
देवलोक सुख भुगति करि, पावै ते निरवांण ॥५४०३॥

इति श्री पद्मपुराणे हनुमांन निर्वाण विधानकं

१०६ वां विधानक

चौपई

रामचंद्र जब अैसो सुणी । हनूमांन छोडी सब दुनी ॥
भया मुनी दिगंबर भेस । करैं अति काया कलेस ॥५४०४॥

अबर चेती कुवरां की बात । रघुबर सोचैं इह विरतात ॥
रे रे भई मूरख छोडैं राज । काया कष्ट सहै बिन काज ॥५४०५॥

देषत असुम करम का भाव । राज छोडि भिक्षा सैं चाव ॥
ए सुख छाडि परीसा सहै । अैसे बहुरि कहां सुख लहैं ॥५४०६॥

मूरिख लंघण करि करि मरैं । पूरव पापन के कहां टरैं ॥
निंदा करी इणुं की घणी । इन्द्रलोक मे चरचा इह वणी ॥५४०७॥

सौधर्म इन्द्र की सभा तिहां जुडी । सकल विभूत तिहां सोमैं खरी ॥
पुरांण कहै इन्द्र जिहां सौधर्म । सिद्धांत बाणी समझावैं धर्म ॥५४०८॥

सप्त तत्व षट् द्रव्य बखान । नव पदारथ कहैं सुर ग्यांन ।।
सुर्णं देव सब अस्तुति करैं । प्रभु ए भेद कब कवरण पै पड़ै ।।५४०६।।

मनुष्य बिना न तपस्या होइ । देव धरम करि सकै न कोइ ।।
पूजा देव करण समरथ । जैन धरम बिन सबै अकथ ।।५४१०।।

अरिहंत देव सम अन्य न देव । और धरम जनम का भेव ।।
मिथ्याती सास्त्र जे कहै । उसके वचन न चित्त मे गहै ।।५४११।।

वकता सरोता नरकै जाइ । तिहाँ को नाहिं दया सु भाव ।।
श्री जिनवाणी जीवन मूल । समकित कौं छोडो जिन मूल ।।५४१२।।

देव एक बुलाइ सभाइ । मध्यलोक मे जनमैं जाइ ।।
तिहां माया मे होइ अचेत । कैसे पलै धरम सो हेत ।।५४१३।।

राम लखमरण ब्रह्मलोक ते चए । ते माया मे मयमत्त भए ।।
रामचन्द्र लखमण सो प्रीत । पल नही बिछडै असी रीत ।।५४१४।।

मोह के बसि दोनूं हैं घणे । एक च अष्ट करम कु हनै ।।
प्रीति न छोडै किस ही भांति । यूं ही उनकी आव विहात ।।५४१५।।

दूहा

भोग भुगत मानै रली, दियो धरम बिसराइ ।।
दया विहूंणा मानवी, किंन न पावै भव पार ।।५४१६।।

इति श्री पद्मपुराणे संकर सुर संकर कथा विधानकं
१०७ वां विधानक

चौपई

रतन चूल अर तमचूल । दोनूं देव अणाष का मूल ।।
एता कह्या उना का मोह । पल नहीं होवै उनका विछोह ।।५४१७।।

इन्द्र बात नैं आणी हिये । दोन्यूं याहैं परचा लिये ।।
मध्य लोक आया दोउ देव । कहै इक देखै इनका भेव ।।५४१८।।

रामचन्दर कै मन्दिर गए । जुगल देवता परपंच किये ।।
मायामई एक परपंच रच्या । मंदिर में रुदन मचाया सचा ।।५४१९।।

राम राम करि रोवै नारि । पीटै सिर मां डारै छारि ।।
पोलिये रुदन सुण्यां तिह बार । दौड़्या आया लखमण द्वार ।।५४२०।।

मंत्री आगै पीटै सीस । रामचद्र मुवा जगदीस ।।
मत्री नै खाई पछाड । रीवै पीटै सब ससार ।।५४२१।।

लखमण आगै पटकी पाग । रामचंद्र सुणी देही त्याग ।।
सुण लखमण का फाटा हीया । हाइ हाइ करिने मृतक भया ।।५४२२।।

राम बिना मैं कैसे जीउं । हा हा करि प्राण दे देहु ।।
धाइ करि उठ्या देखूं हूं राम । पडया मूरछा हुई तिह ठाम ।।५४२३।।

मत्री रोवै ढोलई वाव । गए परान जीव का न नाव ।।
सत्रहसै सहस्र रोवै अस्तरी । हाइ हाइ करि धरणी पडी ।।५४२४।।

कोई पकडि उठावै बाह । कोई इक सबद सुणावो नाह ।।
कोई लपट दई कठ लगाइ । कोई करै बीजणा वाइ ।।५४२५।।

कोई पग हलावै आइ । कोई देखै मुख की रताइ ।।
मृतक देखि सकल बिललाइ । तब वे दोई देव बिलषाइ ।।५४२६।।

हम उपाया नउतन पाप । ए ता जीव करै बिललाप ।।
नारायण की हत्या लई । हम एह उपाधि इनको मुई ।।५४२७।।

हासी करता हुवा नास । लखमण नै उपजी अति त्रास ।।
हम सै हुई महा कुबुधि । इतना किया आंणि विरुध ।।५४२८।।

असा पाप टरैगा किसै । दोन्यां देवा कै दुष मन बसै ।।
इन्द्र वचन उन किया प्रतीत । पाप पोट निज सिर धरीत ।।५४२९।।

रामचन्द्र सुणी इह वात । लखमण मुवा तुमारा भ्रात ।।
हाइ हाइ रुदन करै श्रीराम । राणी रुदन करै ले नाम ।।५४३०।।

मदिर मे पडी देखी लोथ । वासो लपटे वोथा बोथ ।।
पग देखै अर सीले हाथ । ग्रीव न टिकै ढरै तिहा माथ ।।५४३१।।

पगडी पटकी बस्तर फाडि । भ्राता भ्राता करै पुकार ।।
मोह उदय तें हुवा अन्ध । बोलो वेग ज्यौ जीउ मैं बंध ।।५४३२।।

खाइ पछाडि मेलै सिर धूल । रुदन सू पीटै सुध सब भूल ।।
बडी बेर चित पाया ग्यान । हम मोह माया मे डुब्या जान ।।५४३४।।

मोह माहि भ्रमे चिहु गति । करै तपस्या पावैं स्थिति ।।
रामचद्र पै आग्या मागि । महेन्द्र वन के मारग लागि ।।५४३५।।

अमृतस्वर मुनिवर पै जाइ । नमस्कार करि लागे पाइ ।।
स्वामी हम परि क्रिपा करो । भव सागर से हम है ले तिरो ।।५४३६।।

दिष्या ले बैठे गुरु पासि । पूजैं तिहां मनोरथ ग्रास ।।
रामचंद्र थे बडा श्रेष्ठ । सीता भामंडल कुमर ग्रष्ट ।।५४३७।।
हनुमान लखमरण ग्रब मुवे । बिछडे सकल ग्रचंभे भए ।।
वह विभूति इन्द्र सम भई । एक दिवस मे सब खिर गई ।।५४३८।।
इह संसार जु रंग पतंग । सब र गिये महा सुरंग ।।
उतरतां बार न लागै ताहि । तब इसका कहा पतियाय ।।५४३९।।
तासूं बहुत लगावै रुचि । भूलि गई ग्रगली सब सुचि ।।५४४०।।

दूहा

राज किया तिहु षड का, भुगत्या सुख ग्रपार ।।
पुन्य विभव सब खिरगई, जात न लागी बार ।।५४४१।।

इति श्री पद्मपुराणे लवनांकुस दीक्षा विधानक

१०८ वां विधानक

चौपई

लक्ष्मण की मृत्यु पर राम का विलाप

रामचंद्र देखै निरताइ । पीत बरण देखै सब काइ ।।
किह कारण रूठा इह भ्रात । मुख सो कबहु न बोलै बात ।।५४४२।।
ग्रन्य दिवस मोहि ग्रावत देखि । ग्रादर करता पटाभिषेक ।।
मेरे साथ बहुत दुख सहे । दडक वन मांही जब हम रहे ।।५४४३।।
रावण मारे मेरे काज । रघुबसी की राषी लाज ।।
तुम बिना कैसे जीउं ग्राप । कैसे इह मेटो संताप ।।५४४४।।
सुकोमल देह टटोलै राम । सीता मोह व्याप्या इस ठाम ।।
बचन न बोलै होइ रह्या मूक । मोसो कहा भई ग्रब चूक ।।५४४५।।
उठि लखमण तु लेह संभालि । लवनाकुस वन गये कुमार ।।
दिक्षा कारण वन मे गये । फेरो उनकूं जती न भए ।।५४४६।।
जब वह ग्राय कर लेसी जोग । तब हुवैगा मन कूं सोग ।।
वे बालक बहु कोमल ग्रंग । कैसे पालैं दिष्या गुरु संग ।।५४४७।।
उनां की वय है भोग विलास । रहई उनों वन मांहि ग्रावास ।।
ग्रब तुम उठ करि ल्यावौ फेरि । रामचंद्र बोले बहु बेरि ।।५४४८।।
उडिगया हंस वह मृतक पडे । राम विवेकी म ाह मा नडे ।।
मुवा मानुष कैसे बोलै बोल । माया के बसि हुवा भोल ।।५४४९।।

भई रयरण सिज्या बिछवाइ । लखमरण कूं तब लिया उठाइ ॥
सिज्या परि पोढाए जाय । सोवै अपने कंठ लगाय ॥५४५०॥

काहू कूं निकट न आव न देहि । बहुतैं राम करै सनेह ॥
इह सेज्या न्यारी है ठौर । तिहा आई सकै नही और ॥५४५१॥

मो से कहो मनका सब भेद । तो होवै ससय का छेद ॥
ऐसी विधि बीती सर्वरी । भया प्रभात पाछिली छरी ॥५४५२॥

पाच नाम कहि उठो सवारि । भूपति खडे तुम्हारे द्वार ॥
पहराए सब वस्त्र सभारि । राजा सकल करै नमस्कार ॥५४५३॥

तेरे ऊपर जांउ उठो वीर । तुम बिन जलै है मेरा सरीर ॥
रामचन्द्र सोचै बहु भांत । पीतबरण दीसै किरात ॥५४५४॥

उठै मोह बहुत बिललाइ । पहिले मैं मरता तजि काइ ॥
तेरा दुख हू कैसे सहू । बिना लषमरण कहो कैसे रहूं ॥५४५५॥

दूहा

बाल सघाती चीछडें, उठै अगन की झाल ॥
मोह माया के उदय तै, मिटै नहीं जग जाल ॥५४५६॥

इति श्री पद्मपुराणे लछमरण मृत रामचंद्र विलाप विधानकं

१०६ वां विधानक

चौपई

विद्याधर लखमरण मरत सुणी । सब ही नै तब मुंडी धुणी ॥
हा हा कार हुवै सब ठौर । देस देस मे माची रोड ॥५४५७॥

भभीषरण आदि सकल नरेस । सुग्रीव ससाक वतक्ष दुष के भेस ॥
जिंह लग छे विद्याधर भूप । अजोध्या गए रुदन के रूप ॥५४५८॥

रामचंद्र कूं करै नमस्कार । रोवैं पीटैं खाइ पछाड ॥
पगडी पटकै फाडै चीर । सबके हिए लखमरण की पीर ॥५४५६॥

रामचन्द्र रोवैं करै पुकार । रोवै पीटै खाइ पछाड ॥
उठो बीर इनसूं तुम बोल । मन की घुंडी बेग तुम खोल ॥५४६०॥

जै मुझतैं कुछ हुआ विगाड । छिमा करो तुम अब की बार ॥
तब राजा समझावै घने । एता मोह कीए नहीं बने ॥५४६१॥

जीव जाइ पावै गति और । तुम क्या करो रोग सौं सोर ॥
रुदन किये लछमरण जो फिरैं । सब मिल यतन बहु बिध करैं ॥५४६२॥

दहन किया तुम करो याहि । इहै न जीवैं किस ही उपाय ।।
श्रैसी सुणि कोप्यो रघुईस । अब ही काटूं सब के शीस ।।५४६३।।
मोसौं लखमण मुंहैं रूठ । याहि मुंवा कहैं बोलैं भूंठ ।।
भभीषण बोलैं समभाइ । ए मूरिष कहा जानैं राइ ।।५४६४।।
लखमण पड्या मूरछावंत । तासों कहैं प्राण भए अंत ।।
याकुं श्रोषधि करि हूं भली । ऐसी सुण मन चिंता दली ।।५४६५।।
घटे विरोध भया सत भाव । भभीषण बोलैं तब राव ।।
चारूं गति में एह सुभाव । काल न छोडे किस ही ठाव ।।५४६६।।
तीर्थंकर अनै चक्रवत्ति । नारायण प्रतिनारायण सत्ति ।।
बलभद्र अनई कामदेव । रुद्र काल बसि हुवई एव ।।५४६७।।
सागर बंध सुरों की श्राव । व्याप्यै काल न छोडे ठांव ।।
मनुष्य पसू नरक गति दलै । काल चक्र सब ही पै चलै ।।५४६८।।
काहू की न दया चित ग्राइ । बालक वृद्ध तरुण को खाइ ।।
सोवत रोवत जागत खात । गावत नाचत चित्त से कात ।।५४६९।।
जल परवत गुफा मुंए रहै । इन्द्रह की सरणागति गहै ।।
तोउ न छोडै काल श्रटल । सकल खडा देखें तिहा दल ।।५४७०।।
मात पिता सज्जन नैं कुटुंब । कोई न सकै काल को थंभ ।।
पुरुष थे सा कठै गए । समय पाइ काल बस थए ।।५४७१।।
इहै कछू नई भई है नाहि । कीजे एती मोह की दाह ।।
मोह करम बैरी बलबान । धन्य साध जिन जीत्या जान ।।५५७२।।
भरमै जीव मोह के काज । कबही रंक कबही होवै राज ।।
बिन समकित जो कुगति ही घणी । श्रादि अनादि जाइ न भणी ।।५४७३।।
कवण कवण गति का परिवार । छोडे बहुत न पाया पार ।।
ज्यों बुदबुद जल उपजै थमै । श्रैसे सब जीव गति भ्रमै ।।५४७४।
जब लग हंस तब लग प्रीत । जीव बिना पुदगल भय भीत ।।
वासुं कहा कीजिए नेह । कीजिए सदा सरन सुं गेह ।।५४७५।।
धरम जीव का करै श्राधार । मोष नगर पहुचावन हार ।।
लखमण काया कीजिये दहन । या का सकल मृतक है चिहन ।।५४७६।।
इतनी सुण्या फिर कोप्या राम । बैरी मित्र न होइ निदान ।।
भाई का अब साधु बैर । रांवण का बदला लहैं फेर ।।५४७७।।

जीवै लखमण मेरा भ्रात । इसका कहै जलावो गात ।।
दुरजन वचन क्यु मानु आज । माहि नही काहु सू काल ।।५४७८।।

अब बोलै तुम छोडो क्रोध । तुमारा देखिया मैं समोध ।।
लखमण कूं तुम मृतक कहो । मोह राम रमन कछु लहो ।।५४७९।।

दूहा

जाणि बूझि सुध वीसरी, मोह करम कै भाव ।।
मुंवा कूं जीवत कहैं, लिया फिरै इस ठाव ।।५४८०।।

इति श्री पद्मपुराणे भभीषण संसार परिष्या विधानकं

११० वां विधानक

चौपई

राम का तीव्र मोह

सुग्रीव आइ करी वीनती । मृतक देह मे जीव न रत्ती ।।
माया मे ज्यु रहे भुलाइ । वहो ज्यु चिता सवारे जाइ ।।५४८१।।

दहन क्रिया लखमण की करो । राज विभूत फिर सभरो ।।
असा सुणि कोप्या रामचद्र । दहन करो तुमारो कुटुंब ।।५४८२।।

मेरा भाई रूसि कै रह्या । तासु मुवा सब मिल कै कह्या ।।
लखमण उठो सुणुं दे कान । कैसा बोल बोलै अग्यान ।।५४८३।।

चलो कही रहिए वनमाहि । हमसो तब कोई कहै कछु नाहि ।।
खोटा वचन कहै सब लोग । मन कु कछु उपजावै विजोग ।।५४८४।।

बाधि पोट काधा परि डारि । मारग गहियो तहा उजाडि ।।
मनमे किया अति उपाव । सनान करो तुम लखमण राव ।।५४८५।।

दूहा

चउका ऊपरि बैठाण करि, किया उबटणा गात ।।
सनान कराया मृतक कु, रघुपति अपनै हाथ ।।५४८६।।

चौपई

वस्त्र पहराए उज्जल वरण । अवर भले साजे आभरण ।।
पचामृत सै थाल भराइ । विनय करि बोलै रघुराइ ।।५४८७।।

करै ग्राम लखमण मुख देइ । वह सुतक कैसे करि लेह ।।
मुख परिषालै विनवै घणा । लखमण मानौ मेरा भणा ।।५४८८।।

तुम बिन अन पांणी नही खावजे । मेरा वचन किम नहीं मानजे ।।
भले भले गंधर्व बुलावजे । ताल मृदग बासरी बजावजे ।।५४८९।।

सब मिल गावैं एक ही वार । जे लखमरण सुर्णं संभार ।।
गावै गुणी जन बाजैं जंत्र । कैसै बोलं मृतक तंत्र ।।५४९०।।

बहुरि लिवा कांधा परि आप । षष्ट मास अति सहैं संताप ।।
षेचर भूचर डोलैं चिहु पास । राम न छोडै लखमरण आस ।।५४९१।।

खरदूषण का सबुकुमार । च्यार रतन सुत बली अपार ।।
बज्रमाली राष्यस वस । लखमरण का जान्या उड गई हंस ।।५४९२।।

रामचंद्र कुं व्याकुल सुन्यां । इनु सबु खडदूषण हण्या ।।
काढि दिये थे अलका आइ । विराधित नै पहुचाए जाइ ।।५४९३।।

रावरण सा इनु मारघा बली । सबकी मानै मरदन गली ।।
आया अबै हमारा दाव । अजोध्या जाइ विठावै नाव ।।५४९४।।

च्यार रतन और माली बज्र । सेन्या ले सब धाए सस्त्र ।।
घेरी अजोध्या मारू बजाइ । चेत्या सुभट संभाल्या राइ ।।५४९५।।

अयोध्या पर आक्रमरण

रामचद्र सो जणाई सार । दुरजन चढि आये तुम द्वार ।।
तुम पट बैठो हम करि है जुध । रामचंद्र कुं आई सुध ।।५४९६।।

कधा भोली लखमरण कुं लीए । जुध उपाव बहु विध किये ।।
बज्रावर्त्त गह्या टकार । हल और सस्त्र लीये सभार ।।५४९७।।

दोउ घा माड्या सुभटा षेत । भूझै स्वामि धरम के हेत ।।
दारुण जुध दोउधा हुवा । पीछै पाव धरै नही कुवा ।।५४९८।।

जटा पखी स्वर्ग विमान । उन मन मांहि विचारघा ग्यान ।।
मेरा प्रभु राम लखमरण । उनु की आय बनी है कठिन ।।५४९९।।

अब इस बिरिया करूं सहाय । कृतांतवक्र जीव तिंह ठाइ ।।
जटा देव सो पूछी बात । अब तुम मध्य लोक कूं जात ।।५५००।।

देव रूप जटायु द्वारा सहायता

जटा देव पिछली कही कथा । दोनूं अवधि बिचारी जथा ।।
रामप्रसाद भुगत्यां बहु सुख । व्याप्या अंत मोह का दुख ।।५५०१।।

जाइ संबोधे इतनी बार । दोन्युं देव आए रणह मझार ।।
जटा देव सेन्यां मे दोडि । दुरजन के दल मांची रोर ।।५५०२।।

जिहां तिहां परवत दिखलाइ । भाज न पावैं सबै डराइ ।।
पाथर पडैं जिम बरसै मेह । सुध न रही दुष्टां की देह ।।५५०३।।

निकसण कूं पावै नहीं गली । महा संकट सैन्यां तिह मिली ।।
ग्रैसा दल कही देख्या नांहि । रामचन्द्र गति का नहीं थाह ।।५५०४।।

हमारी महा हीन है बुधि । रामचंद्र सौं माडया जुध ।।
भभीषण मनै करै था हमैं । बिन ग्राग्या ग्रभी मानैं रमैं ।।५५०५।।

ए ईश्वर इनकी बडी कला । हमारा इनसौं कबहु न चला ।।
ग्रब जे निकसण पावैं ग्राज । दिष्या ले साधैं धरम का काज ।।५५०६।।

जटा देव दया मन ग्राव । धरम द्वार देखैं छडै राइ ।।
चार रत्न बज्रमाली नरेस । दोन्यु भए दिगम्बर भेस ।।५५०७।।

रतनवेग मुनिवर पैं जाइ । दिक्षा लई करि मन बच काइ ।।
सहे परीस्या बीस ग्रर दोइ । महा मुनीस्वर जिह विध होइ ।।५५०८।।

जटा देव साध्यां कु देखि । नमस्कार उन किया परेख ।।
धन्य जती जे साधैं जोग । तजै सकल माया का भोग ।।५५०९।।

कृतांतवक द्वारा राम को समझाने के लिये माया रचना

कृतात सुर ग्रन्य जटा देव । इनु रच्या माया का भेव ।।
मारग माहि कछू सूकी डाल । क्यारी रची ग्रति ही सुविसाल ।।५५१०।।

कुवा उलीचै सीचैं नीर । बाडि बनावै वाकै तीर ।।
रखवाली करै बहु भांति । बरजै सब कूं भीतर जात ।।५५११।।

रामचद्र देख्या यह सूल । रे मूरख तुम काहे भूल ।।
सूकी लकडी किम ह्वै षडी । ते एती क्यु करी जषडी ।।५५१२।।

बिन कारज एता दुख सहै । सूकी डाल ए फल कहा गहै ।।
तबै माली नै उत्तर दिया । तुम का मृतक कांधै लिया ।।५५१३।।

इह जीवै तो इह उपजै सही । सूकी डाल ए भी फल गही ।।
इतनी सुण कोप्या रामचन्द्र । वन मे भी हम कूं दुख दुंद ।।५५१४।।

ता कारण बसती कुं त्याग । इहा भी हमकू कुबचन लाग ।।
कहा मारूं माली सिर चोट । ग्रैसा बचन कह्या इन खोट ।।५५१५।।

मेरा वीर रुठ कै रह्या । मृतक कहै इन भेद न लह्या ।।
हो लखमण सुणौं इह बात । माली बचन कहैं इह भांति ।।५५१६।।

उठो बेगि लगाऊ हाथ । ग्रैसी कहैं न काहू साथ ।।
तउ मैं क्यारी सब ढाहि । ग्रगै चल्या रघुपति राइ ।।५५१७।।

अन्य जु देख्या तेली एक । पीलें रेत न करै विवेक ।।
राम पूछे तेली सूं भेद । काहे करै रेती सूं खेद ।।५५१८।।

रेत मांझ तेल क्यूं लहै । आप पचो र बैलकूं दहै ।।
बोला तेली सुणुं तुम राम । जै जीवै यह मृतक इस ठांम ।।५५१६।।

रेत माझ भी निकसै तेल । मृतक जीवै तो सही ए पेल ।।
असी सुणि बोले रघुनाथ । ई गंवार तेली तु कुजाति ५५२०।।

रूठे कू कहै तू है मुवां । अपने जीव का डर नहिं हुवा ।।
कहा मारूं तेली पर षडग । कई लूं तोडि किया उपसरग ।।५५२१।।

अग्रे देख्या कोतक अवर । मटकी नीर बिलौवै तिह ठोर ।।
गुवाल थीं बोलै रघुनाथ । जल मे माखण निकसै किह साथ ।।५५२२।।

कहै अहीर मृतक जे जीयई मुवा । तो जल मौंहि घडि सनहुवै ।।
कहै किमाण जे जीवै मुवा । तो इह कमल हुवै नवा ।।५५२३।।

क्रोधवत तब होइ कै चल्या । जटा देव कौतिक किया भल. ।।
मृतक एक लीया धरि कंध । रुदन करै मोह मे अंध ।।५५२४।।

रामचन्द्र नै दिख्या ताहि । समभावै वाकूं नरनाह ।।
एतो मोह करै किम मूढ । मुवा न जीवै महा अगूढ ।।५५२५।।

जैं लखमण भी पावै प्राण । इह फिर जीवै तेरा जांन ।।
जें राजा जीवावै मुवा । तो ए भी जीव पावैगा नवा । ५५२६।।

छह महिने वाकूं गए बीत । ज्यो लखमण त्यो या की रीत ।।

राम को वास्तविक ज्ञान प्राप्त होना

असी सुण चेत्या रामचन्द्र । तोड्या तुरत मोह का फंद ।।५५२७।।

ज्यौ असोग वृक्ष कूं पाय । जोग बिजोग सकल बह जाइ ।।
त्रिषा सै व्याप्या पीवै नीर । मिटै सकल त्रिषा की पीर ।।५५२८।।

जैसे श्री जिनवाणी सुणें । भव्य जीव पावै सुख घणें ।।
ज्यो वटोही को बन मांहि । सीतल पावै वृक्ष की छांह ।।५५२६।।

जैसे तपसी पावै मोष्य । जनम जरा के छूटै दोष ।।
मोह दगध सबही बुझ गई । उपज्या ग्यान चेतना भई ।।५५३०।।

किहुं भ्रमावै जीव बहु जौंन । थिरन रह्या किया तिह गोन ।।
मात पिता सुजन परिवार । कीया भव में मोह अपार ।।५५३१।।

कोई नही जीव का सगा । सुभ अरु असुभ कर्म संग लग्या ॥
सुभ साता तैं पावै सुख । असुख उदय तैं पावै दुख ॥५५३२॥

मुवा न जीवै किस ही भांति । मैं क्यूं दुख किया दिन रात ॥
विकलप चुकया भया संतोष । ग्यांन लहर सूं काया पोष ॥५५३३॥

तिहा देव करी बादली । पवन सुवास चली तिहा भली ॥
नानी बूंद मेह की चुवै । देवागना चरणन कूं नवैं ॥५५३४॥

गावै गीत सुहावना बोल । ताल मृदग बजावैं ढोल ॥
रामचन्द्र गुण गावैं आन । महा सुकठ सुहावना तान ॥५५३५॥

दोनू सुर तिहा अस्तुति करै । तबै रघुनाथ पूछै उन खरै ॥
तुम हो कवण कहो साची बात । रूप अरुप बिराजै काति ॥५५३६॥

कहै देव हम तुम्हारे भगत । जटा पखी मैं पाई सुर गति ॥
जब रावण नै सीता हरी । तव मे अपणी बल बहू करी ॥५५३७॥

उन मुन नै डारियां रोड । तुम ही सुनाए पचनाम बहोडि ॥
तुम प्रसाद मैं हुवा देव । सुख मे कबहुं जाण्यां भेव ॥५५३८॥

सीता की सुध वीसर गया । तुम कारिज मै कवहु न किया ॥
तुम व्याकुल लखमण कैं काज । तव मुझ आसण काप्यो आज ॥५५३९॥

इह कृतांतवक्र का जीव । सकल भूषण पैं सुनी धरम की नींव ॥
तुम वचन कीया था एह । जे तुम लहो देव की देह ॥५५४०॥

हम माया मे रहै भुलाइ । वा समै हमे समोधियो आइ ॥
जटा देव जब तुम पै चल्या । तब हम सौ मारग मे मिल्या ॥५५४१॥

हम भी सुणि आये तुम पास । अब तुम करो मुगति की आस ॥
विद्याधर अनै भूमिगोचरी । सगली सभा राम ढिग जुडी ॥५५४२॥

सत्रुघन सुं बोलै राम । मध्य लोग की भुगतो ठाम ॥
राज विभूति दई सब तोहि । उत्तम षिमा कीजिए मोहि ॥५५४३॥

सत्रुघन विनवै तिण बार । तुम प्रसाद भुगत्या ससार ॥
राज भोग मैं किया अथाह । तुम कौं छोडि कहा हम जाय ॥५५४४॥

हम थी करै तपस्या संग । राज भोग जिन रंग पतग ॥
तप करि साधै आतम ग्यांन । बहुरि न भ्रमैं भवसायर आंन ॥५५४५॥

राम सत्रुघन चिंता इह धरी । सकल सभा मिल अस्तुति करी ॥
धन्य राम त्रिभुवन पति राइ । धरम ध्यान यूं मन दिढ ल्याई ॥५५४६॥

सोरठा

मन मे धरइ बैराग, राज रिध सब परिहरी ।।
दया भाव सू राग, धर्म प्रीत राखो खरी ।।५४४७।।

इति श्री पद्मपुराणे लछमरण संस्कार मित्र देव आगमन विधानकं

१११ वां विधानक

चौपई

सत्रुघन के सांभलि बैन । रामचन्द्र सुख हुवा चैन ।।
धन्य सत्रुघन तेरी बुधि । समकित सु तै राखी सुधि ।।५५४८।।

अनग लवन लवन का पूत । दीधी सगली राज विभूति ।।
पट बिठाइ करि ढाले कलस । अनंग लवन सबही मे सरस ।।५५४९।।

परजा की रक्षा बहु करै । दया दान चित बहु विध धरै ।।
दुरजन दुष्ट सबै छिप गये । मित्रा के सुख उपज्यो हिये ।।५५५०।।

भरथ चक्र ने छडचा राज । अैसा रामचन्द्र ने किए काज ।।
समूषरण भभीषरण का पूत । दीयो लंका राज विभूत ।।५५५१।।

राजनीति सब जाणै भली । प्रजा सुखी मन मानै रली ।।
मदगम सुत अगद का बली । सुग्रीव राज सौंप्या विध भली ।।५५५२।।

वेईराग भाव तब भयो नरेस । चाहै भया दिगंबर भेस ।।
अरहैदास सेठ पै गए । सेठ महोत्सव बहु विध किए ।।५५५३।।

पूछै सेठ मे रावजी बात । गरु बतावो उत्तम जात ।।
सेठ कहै सुव्रत हैं मुनी । चारण रिध ताहि ऊपनी ।।५५५४।।

मुनिसुव्रत स्वामी का बंस । महामुनी धरम का अंस ।।
अैसी सुणि मुनिवर पैं चले । अष्ट द्रव्य जे उत्तम भले ।।५५५५।।

पूजा कारण चले भूपाल । सेनां सकल चली तिह काल ।।
वन पै मुनी का दरसन पाइ । उतरे भूमि सरब ही राइ ।।५५५६।।

करि डंडोत चरण कू नए । देइ परिक्रमा ठाढे भए ।।
अस्तुति करि बोलियो नरेन्द्र । ठाढे भए साध को वृन्द ।।५५५७।।

स्वामी हम कू देहु चारित्र । जीतें मोह कर्म के सत्र ।।
राजा सहस सोलह संग और । सत्ताईस सहस्र त्रिय संग और ।।५५५८।।

राम द्वारा मुनी दीक्षा होना

मुनिवर का पाया उपदेस । रघुपति भए दिगंबर भेस ।।
राज दोष तजि साधै जोग । छाडे सकल जाति का भोग ।।५५५६।।

श्रीमती पास ग्रजिका भई । बाईस विष सौं परिस्या सही ।।
ग्रवधिग्यान रघुपति को भया । धर्म उपदेस घणा नै दिया ।।५५६०।।

सो बरषा लगि रहे कुमार । तीन सै बरस पिता की लार ।।
चारि सहस्र वरष मुवि साथ। ग्यारह सहस्र पाच सो ग्रडसठि बाधि ।।५५६१।।

इतना राज करया मन ल्याइ । पचीस वरष मे केवल उपाइ ।।
एक सहस्र नै बारह वरष । करी तपस्या मन मे हरष ।।५५६२।।

खोटा खरा समभि तन भेद । मिथ्यातम का किया विछेद ।।
धरमरीत समझावै ग्यान । मिथ्या मानै जे ग्रग्यान ।।५५६३।।

जैन धरम की निंदा करै । ते मिथ्याती नरका पडै ।।
बहु तूनै समकित पद गह्या । प्रानी का ससा नही रह्या ।।५५६४।।

सोरठा

सरब ग्राउषो सत्रहै हजार, ग्रनै पाच वरष ।।
रामचद्र जगदीश, प्रतिबोधे भविजन घणे ।।
धरचा ध्यान इह ईस, ते महिमा कहा लग गिणे ।।५५६५।।

इति श्री पद्मपुराणे श्रीराम निःक्रमण विधानकं

११२ वां विधानक

चौपई

राम की तपस्या

ग्रातम ध्यान करै रामचन्द्र । वाणी सुणत होई ग्रानंद ।।
इनके गुण ग्रति ग्रगम ग्रपार । राम नाम त्रिभुवन ग्राधार ।।५५६६।।

रसना कोटिक करै बखान । उनके गुण का ग्रंत न ग्रान ।।
इन्द्र धरणेन्द्र जे ग्रस्तुति करै । ते नही वोड ग्रंत निखरै ।।५५६७।।

छठै महिने निमित्त ग्राहार । नदसतल नगरी के मझार ।।
रवि की जोतिन का परताप । महा मुनीस्वर सोमैं ग्राप ।।५५६८।।

ईर्ज्या समिति सौं गजगति चाल । मान्नौं मेर सुदरसन हाल ।।
सोमै कचन वरण सरीर । उमडे लोग भई ग्रति भीर ।।५५६९।।

देखैं रूप सराहै बुनी । इनकी महिमा जाइ न गिनी ॥
कै सुरपति कै कोई देव । ग्यांनवंत ते समझैं जीव ॥५५७०॥

श्री रामचंद्र आए मुनिराइ । अहार निमित्त पहूंचे इस ठांइ ॥
घर घर द्वारा पेषण होइ । खेत्र सुध करैं सब कोइ ॥५५७१॥

उत्तम वस्तु र सोधैं सुध । सब कै दान देण की बुध ॥
सब ही वंछै असा भाव । धन्य वहै जीमैं जिह ठाम ॥५५७२॥

नग्री मे हुवा बहु सोर । छूटा हाथी बधन तोडि ॥
दाहे फोडे हाट पट्टण ठांइ । घोडा छूटा तोडि हिणहिणाइ ॥५३७३॥

कोलाहल सुणि प्रतिनदी भूप । निकस झरोखा देखैं भूप ॥
मुनि कौं देखि कहै दश भाइ । भेज्या किंकर लेहु बुलाय ॥५५७४॥

दोरा घणा आए मुनि पास । नमस्कार करि विनती भास ॥
दोइ कर जोडि बीनबै खरे । हम पर प्रभुजी क्रिपा जो करैं ॥५५७५॥

हमारा राजा पासि तुम चलो । भोजन लेहु धरम मे मिलो ॥
उना नै जाण्या मुनी का भेद । अंतराय भया मुनी कु खेद ॥५५७६॥

फिर आया वन मे धारचा जोग । पसचाताप करै सब लोग ॥
अब कै बे मुनि आवै फेरि । विध सौं भोजन द्या इह बेर ॥५५७७॥

मुनि कू भई अंतराइ, भूपति विधि समझै नही ॥
फिर आए वन ठाइ, लिव ल्याए चिद्रूप सौं ॥५५७८॥

इति श्री पद्मपुराणे गोधुरसौं छोभ विधानकं

११३ वां विधानक

चौपई

राम की तपस्या

षष्टमास अर गह्यो सन्यास । एक वरष पीछैं ए आस ॥
जे वन मे पाऊं आहार । भोजन कूं इछो तिह बार ॥५५७९॥

नगर मांहि नैं कबहु जांहि । असा मन राख्या उछाह ॥
प्रतिनंद राई प्रभावती अस्तरी । उनुं सोच असी विध करी ॥५५८०॥

जवउ दड आवै इहा मुनी । दान देय करि सेवा घनी ॥
नदन बहुरि सरोवर वन मांझ । दपति गए क्रीडा कुं सांझि ॥५५८१॥

करी रसोई उत्तम भली । बहु पकवान सौंज बहु मिली ।।
महासुगंध मनोहर वने । हरिष हरिष बडे कीए घने ।।५५८२।।

षटरस व्यंजन प्रासुक नीर । भात दाल और उजली खीर ।।
रामचन्द्र उठिया मुनीन्द्र । राजा राणी भयो आनद ।।५५८३।।

विधि सौं द्वारा पेषण किया । चरण धोइ गधोदक लिया ।।
वैयावृत्त सौं दीया दान । मुखसौ बोल्या सुभ भगवांन ।।५५८४।।

भई दुदुभी किनर गीत । रतनवृष्टि पुहुपन की रीत ।।
जै जै कार देवता करैं । धन्य धन्य वचन मुख ही धरैं ।।५५८५।।

वनमे फिर कर लाग्या ध्यान । राजा कै चित समकित आन ।।
बहुता नै समकित व्रत लिवा । । सब ही कै मन आई दया ।।५५८६।।

दान सुपात्रह दीजे सही । अरचा चरचा पूज करेइ ।।
बहुतो नैं छडया मिथ्यात । मुनिसुव्रत सेवैं दिन रात ।।५५८७।।

रामचद्र दें धरम उपदेस । मानै राव रक उपदेस ।।
अमृत वचन प्राण आधार । उतरैं भवसागर तै पार ।।५५८८।।

मुनिवर ग्यान गंभीर, कहै धरम समझाइ करि ।।
पावैं है पर पीर, रामचद्र मुनिवर बली ।।५५८९।।

चौपई

नासा दृष्टि आतम ध्यान । बारह तप द्वादस व्रत जानि ।।
तेरह विध सौ चारित्र धरा । समकित सौं दिढ राखै खरा ।।५५९०।।

सच महाव्रत पाच सुमति । मन वच काया तीनुं गुपति ।।
मका रहित रह्या वन माझ । करैं सामायिक वासर साझि ।।५५९१।।

चउदह आठ परीसा सहै । राग द्वेष सु परहा रहै ।।
च्यार कषाइ करी सब दूर । क्रोध मान माया कूं चूर ।।५५९२।।

अठाईस मूल गुण पाल । तोडया मोह करम का जाल ।।
पंचइन्द्री की रोकी चाल । छाडि दिया माया जजाल ।।५५९३।।

आरत रुद्र दुई ध्यान है बुरे । ते प्रभु नै सब परिहरे ।।
धरम सुकल सो ल्याया चित्त । सुकल ध्यान की जांणी थित्त ।।५५९४।।

षट लेस्या का करया विचार । कृस्न नील कापोतैं टारि ।।
पल पल महाध्यान चित चढ्या । शुक्ल ध्यांन बहु विध चित पढ्या
।।५५६५।।

छह रुति सहैं परीसा घणी । धरम सुणावैं संबोधि गुणी ।।
करि बिहार फिरे बहु देस । बहुतां नैं दियो धरम उपदेस ।।५५६६।।

भूचर खेचर दानव देव । निस दिन करैं राम की सेव ।।
कोटिसिला पहुंचे रामचन्द्र । नमस्कार करि ताकूं बंदि ।।५५६७।।

सिध सुमरण करि बैठे तिहां । धरम ध्यान आतम गुण लिहां ।।
क्षिपक श्रेण आतमगुण लहांन । अैसी विधि सौ ल्याया ध्यांन ।।५५६८।।
स्वयप्रभू अच्युत विमांन । उनै अवधि धरि समझ्या ग्यांन ।।
पूरब भव का किया विचार । मैं थी सीता स्त्री अवतार ।।५५६९।।
रामचन्द्र लछमण दोउ वीर । नारायण बलभद्र सरीर ।।

सीता के जीव सीतेन्द्र का राम के पास आगमन

मैं पटराणी राम भरतार । दुख सुख देख्या लारैं लार ।।५६००।।

लछमण मुवा अधोगति गया । रामचन्द्र व्याकुल अतिभया ।।
समझि जैन की दिष्या लई । राज बिभूति सब तै तजि दई ।।५६०१।।

द्वादस गुणस्थान करी स्थिति । अबै डुलाउं उसका चित्त ।।
ए थे भाई दोन्यूं बली । रामचद्र बांधी स्थिति भली ।।५६०२।।

इहु ले मोष्य वहु भुगतै नरग । उहां भोगमैं महा उपसरग ।।
इननै जान्यां ससार स्वरूप । दिक्षा धरी दिगवर रूप ।।५६०३।।

जई तै पटालुं करूं असत । भुगताउं संसारी वसत ।।
नंदीस्वर की कराउं जात । लछमण नै काढू किंह भात ।।५६०४।।

अैसी समझि उतरया सीतेन्द्र । कोटिसिला जठै रामचन्द्र ।।
बहुत देव आए ता संग । बरखै अति ही फूल सुरग ।।५६०५।।

मदा पवन पटल जल घणाई । झमकै मेह दगध कूं हणेइ ।।
छह रितु के फूले फूल । सीतल छांह सुख का मूल ।।५६०६।।
पछी सगला करैं किलोल । सबद सुहावन मधुरे बोल ।।
मोरइ आव कोइल धुनि करैं । सुवा पढै जिनवाणी खरैं ।।५६०७।।

सुर सीतां का रूप बणाइ । हंस गमन सोभा बहु पाइ ।।
रामचंद्र के उनमुख आइ । कहैक बोलो रघुपति राइ ।।५६०८।।

तुम कूं सब बन ढूढत फिरी । अब हम भई महा सुभ घडी ।।
मैं दरसन अब तुम्हारा लह्या । चरण छडि अब जाऊं किहा ।।५६०६।।

मैं मान्या नहीं तुम्हारा वचन । करी तपस्या वन मैं कठिन ।।
मो परि प्रभू होइ क्रिपावंत । अजोध्या चलि सुख करो अनत ।।५६१०।।

तुम्हारी आग्या राखू सीस । छडो तप भुगतो सुख ईस ।।
करो राज भोग समार । तपके किए देह सब छार ।।५६११।।

छीजै काया घटै स्वरूप । हम सीता नारी अन्य नै स्वरूप ।।
चालो गेह भोग सब साज । काया सै कष्ट सहो बेकाज ।।५६१२।।

मैं वन मे साधै थी तप । श्री जिन ध्यान करै थी जप ।।
विद्याधर की कन्या आइ । मोसू कही बात समझाइ ।।५६१३।।

जोवनवत क्यूं दीक्षा लेइ । पच इन्द्री नैं क्यूं दुख देइ ।।
आतम कष्ट किया बहु दोष । जोवन वैस कीजिए पोष ।।५६१४।।

वृद्ध अवस्था कीजिए जोग । अब घर चालि कीजिए भोग ।।
तू फिर आवै राम के पास । हम हैं कन्या इह मन आस ।।५६१५।।

तुम पटराणी हम सेवा करै । रामचन्द्र सो सब सुख भरै ।।
वे भी तुम पै आवैं अस्तरी । तब साची जाणु गे खरी ।।५६१६।।

देवागना एक सहस्र । बालक बैस रूप की हस ।।
सोलह सबै कीए शृ गार । आभरण सबै सोभै इकसार ।।५६१७।।

रूणाभरणाट उतरी अपछरा । सबद सुहावन रस सु भरया ।।
कोकिल कठ कहै मुख वैन । रूपवंत अति दीरघ नैन ।।५६१८।।

बहुराग छतीस रागनी । सोलह कला संपूरन बनी ।।
ताल मृदग बजावै बीन । करै नृत्य बोलै आधीन ।।५६१९।।

राजभोग तजि बैठे आन । ए सुख छडि कहा होइ अग्यान ।।
चलो प्रभू हमारे सग । सुख भुगतो दुख का करो अत ।।५६२०।।

इन्द्री मोस्या होइ है पाप । ए सुख छोडि सहो सताप ।।
इह है भोग भुगत की वैस । मानूं तुम हमारा उपदेस ।।५६२१।।

बहुतै भाव दिखावैं खरी । नाचै सरस महा गुण भरी ।।
बाह सठावै जभाई लेह । पग अ गुष्ठ भूमि परि देह ।।५६२२।।

उछल पडी गहै द्रु म डोर । तोडै फूल सोभै र ग सार ।।
सिर तै वस्त्र धरित परि पडै । गावैं नाचैं भय नहीं धरैं ।।५६२३।।

मीठा वचन ठठोलु हास । उनकू नहीं संसारी भास ।।
सुकुल ध्यान सू ल्याया चित्त । अनुप्रेष्या कू परखै नित्त ।।५६२४।।

ग्याठ तीन तोडी परकित । च्यार करम सू छुटचा हित्त ।।
महा सुदि पिछली निस रही । दोइ घडी तैं अधिकी नही ।।५६२५।।

केवलग्यान लबधि तिह बार । दसो दिसा भयो जय जय कार ।।
निरमल दीसै दस हुं दिसा । दरसन किया मिटै है ससा ।।५६२६।।

इन्द्र आसण कंप्या तिह घडी । अवधि विचार वनती करी ।।
उतरी हेठै डडवत किया । धनदत्त कुमार कू आग्या दिया ।।५६२७।।

कचन मढी रची तिह ठौर । जै जै कार करी सुर और ५६२८।।

दूहा

इन्द्र धरणेन्द्र किन्नर सहित किया महोत्सव आइ ।।
अष्ट द्रव्य सूं पूज करि, बारह सभा रचाइ ।।५६२९।।

व्यंतर देव सेवा करइ नरपति खगपति और ।
वाणी सुणि सब सुख लहै, पाप बध का छोर ।।५६३०।।

चौपई

सीत इन्द्र अवर सब देव । बिनवै सकल दीनता भेव ।।
हमने महा उपाया पाप । तुमकूं छल बल दए संताप ।।५६३१।।

तुमारा चित्त सुदर्शन मेर । असा कवण सकै तिह फेर ।।
हम परि क्षमा करहु जगदीस । बारबार नवावै सीस ।।५६३२।।

केवल वाणी अगम अथाह । उपजै पुन्नि मिटै सब दाह ।।
मनकू संसय होवै दूर । प्राणी का है जीवन सूर ।।५६३३।।

रवि कै उदै तिमिर मिट जाइ । वाणी सुणत मिथ्यात पलाइ ।।
उपजी बुध धरम कै सुनै । निहचै अष्ट करम कूं हनै ।।५१३४।।

केवलि वचन अपार, वानी सुनि निहचै धरै ।।
सुख भुगतै संसार, बहुरि जाइ मुक्ति बरै ।।५६३५।।

इति श्री पद्मपुराणे पदमस्य केवलज्ञान प्राप्ति विधानकं

१९४ वां विधानक

चौपई

सीतेन्द्र लखमरण चित आन । वह राखै था मेरा मान ॥
सेव हमारी कीनी घरणी । उसकी महिमा जाइ न गिरणी ।।५६३६।।

नरक बालुका भूमि तीसरी । ताकी गति असी स्थिति पडी ॥
अब मैं वाकूं काढूं जाइ । असे देव विचारूं भाइ ।।५६३७।।

मानुषोत्र पर्वत कै निकट । तिहा बहुते मारग निकट ।।
धरया देव बालुका ठाव । राष्य सरूप है सबुक नाम ।।५६३८।।

लखमरण कू देवै बहु त्रास । मारै मुदगर बाण का नास ॥
फिर कर बिषर होइ इह देह । पल पल मारि करैं इह खेद ।।५६३६।।

पारा ज्यूं बिखरै फिर जुडै । मार मार सबद बहु करै ॥
जे जुझे थे रावरण सग । आरत रुद्र मे तज्या था अ ग ।।५६४०।।

ते थी सकल भया इक ठौर । भुगतै दुख करै अति घोर ।।
छेदन भेदन मुदगर मार । सहै बेदना अगम अपार ।।५६४१।।

भोजन रयरण मास जो खाई । मद मधु सुरापान ज्यु अचाइ ।।
उबर नै कठ बर भखै । ताता घड लोह दे फकै ।।५६४२।।

होट चीर ठोसै है प्यड । ऊपर तै ठोकै है डड ॥
तातो राग डालै सुख माहि । सुरा पान का ए फल आंहि ।।५६४३।।

करै आखेट हनै बहु जीब । सुला रोप्य दुख की नीव ।।
छेदन भेदन बारंबार । ज्वारी चोर का काटै हाथ ।।५६४४।।

परनारि बेस्या सु रत्त । लोह फूतली कीजे जफत ॥
जोर मिडावे देही जुडै । सात विसन का ए दुख भरै ।।५६४५।।

वैतरणी मैं दीजे डारि । मच्छ कछ लें काया फाडि ।।
कोई रूप सिंघ कोई स्वान । भखैं देह दुख पावैं प्रान ।।५६४६।।

जिसका था तिसको कुछ वरै । देह परीस्या उनकूं धरै ॥
सीतेन्द्र लखमरण कु जानि । सबुक ने समझाया ग्यान ।।५६४७।।

आरत रुद्र सेती इह गत्ति । अजहु मूढ न चेत्यो चित्त ।।
देख नारकी भय चिक करेइ । इहतो देव काति बहु लहेइ ।।५६४८।।

सुरनै देख हूं गए सात । पुछै संबुक देव कु बात ।।
अवर छोडि आए तिहा घरणे । राखो देव सरण आपणे ।।५६४६।।

पूर्व कथा

सीतेन्द्र बोलै समझाई । हू सीता हू लखमरण राई ।।
रामचंद्र की थी पटघरणी । दंडक वन की प्रापति बनी ।।५६५०।।
तिहां तप साधै सबुक कुमार । लखमरण ने मारिया अचुकार ।।
भया जुध खडदूषरण साथ । मोहि हरी लंका के नाथ ।।५६५१।।
रामचंद्र लखमरण सुधपाई । संग्राम किया रावरण सुं आई ।।
रावरण मारया मोहि आणी जीत । उदय भई करम की रीत ।।५६५२।।
घरतै मोहि दई निकास । भय दिव्य दीया जीवन की आस ।।
तप करि अच्युत स्वर्ग विमान । जैन धरम की मांनी आनि ।।५६५३।।
जैन बिना नही लहिए मुक्ति । लखमरण भया मोह की शक्ति ।।
कारण पाइ तिहा थी मरचा । छह मासा लग राम लिये फिरा ।।५६५४।।
कृतांतवक्र अनै सुर जटा । उनही सबोध्या मोह तब घटा ।।

बालुका पृथ्वी में रावरण, लक्ष्मरण एवं संबुकुमार की दशा

रामचंद्र नै दिष्या लई । केवल लबधि ग्यांन की भई ।।५६५५।।
असी सुरणत अचभा भया । दया भाव कै मन भया ।।
रावरण लखमरण सबुकुमार । तीनुं बालुका भूंम मझार ।।५६५६।।
इनसुं देव कहैं समझाइ । तुम दुख दूर करो ले जाइ ।।
लखमरण कूं जब लिया उठाइ । देही बिखर गई तिह ठाइ ।।५६६७।।
बहु विध जतन किया तिह ठाई । पावै नही उनु का जीव उपाई ।।
ज्यो दरपरण मे झाँई देखि । हाथ न आवै किस ही भेष ।।५६५८।।
अंसी भाति नारकी देह । दीसै प्रतिछ ऊपजै सनेह ।।
हाथ लगाया बिखरी पड़ै । नरक माहि परस्पर भिड़ै ।।५६५६।।
बेर बेर दुख पावै घरणां । रावरण लखमरण इह विध भरणा ।।
हम तो बाध्या करम अथाइ । भुगत्या बिन न छूटा जाई ।।५६६०।।
अब कै करम भुगत्या ही बरणै । असी तुम पासै हम सुणै ।।
बहुरिन आवै असी गति । इहा सुंणी कब लहैं मुगति ।।५६६१।।
देव कहै समकित मन धरो । भुगति करम इक भव ते करउ ।।
तप करि पहुंचोगे निरवारण । बहुरि न भ्रमैं चतुरगति आन ।।५६६२।।
समकित बिन वीत्यो बहुकाल । कबहु न चूका माया जाल ।।
बिन निसर्ग डोल्या बहु जौनि । च्यारूं गति में कीयो गौंन ।।५६६३।।

रोग सोग बहु पीडा सही । जैन धर्म सौ प्रीत न गही ।।
जे बहु करै दान तप जाप । समकित बिना न टूटै पाप ।।५६६४।।

अब राखो निमचल दिढ चित्त । केवल बाणी मानौं नित्त ।।
ग्रैसी सुणि वे अस्तुति करी । धन्य सीतेन्द्र दया चित धरी ।।५६६५।।

हम तो समोध्या दया निमित्त । निसचल रख्या इक समकित्त ।।
बैठि विमाण चल्या श्राकास । अच्युत स्वर्ग जिहां था बास ।।५६६६।।

नरक देखि भया भयभीत । हीयो धदकै कांपै चित्त ।।
ग्रैसे दुख भुगते कई बार । हीडत जीव न पायो पार ।।५६६७।।

राम केवली राम के पास आगमन

श्री रामचन्द्र कू' केवलज्ञान । चले अमर सुणि धरम बखान ।।
तारन तरन श्री रामचन्द्र । दरसन देखत होइ आनन्द ।।५६६८।।

सीतेन्द्र के सग सुर घने । किनर गधर्व बहुतै बने ।।
कसाल ताल बाजै बासुरी । बीण मृदग की सोभा खरी ।।५६६६।।

करै नृत्य गावै बहु गीत । रामचन्द्र गुण सुमरण चित ।।
आये देव महोच्छा कारण । समोसरण देख्या दुख हरण ।।५६७०।।

समवसरण

बारह सभा बैठी तिहु ठौर । निरमल दीसै च्यारू' ओर ।।
बन की सोभा अति रमणीक । फूले फलै दे दीसैं नीक ।।५६७१।।

जाणौ भूमि रत्न मणि खरी । ग्रैसी जुगति देवता करी ।।
देई प्रक्रमा सिष्टाचार । अस्तुति पढै वे बारबार ।।५६७२।।

तुम सम राम अबर नहीं बली । मोह करम की प्रगति दली ।।
ग्यान खडग सो करम बस किये । उत्तम ध्यान विचारया हिये ।।५६७३।।

परिसह पवन तै पाप उडाइ । ग्रैसे तप साध्या मुनिराइ ।।
सुकल ध्यान सो केवल पाइ । भव जल पडे लगे ढिग श्राइ ।।५६७४।।

जो तुम पाया मारग मोष्य । हमपै मगि अपणौ द्यो सोष्य ।।
हमारी थी तुम परि बहु मया । पहुंचाओ मुक्ति करो अब दया ।।५६७५।।

रामचद्र इमि वाणी कहै । जिनवाणी जे मन बच गहैं ।।
तब कोई पावै सरग मुक्ति । तेरह बिध सौं धरै चारित्र ।।५६७६।।

जब लग क्रोध रु माया मान । लोभ काम तै भ्रमै अग्यान ।।
पाथर को हीया तल राखि । जलपै तिरघा चाहै धरि काषि ।।५६७७।।

ऐसी हैं ये च्यार कषाय । ज्यों पाषाण सौं तिरयो न जाइ ।।
पाथर संग तिरथा है कोइ । तारण समकित रथ ना होइ ।।५६७८।।

तजि कषाय तिरै संसार । छोडि देई सिर तै सब भार ।।५६७९।।

लखरण गुरण के मारग जोइ । राग दोष छोडैं ए सोइ ।।
पच महाव्रत समिति पाच । मन वच काया निसचै सांच ।।५६८०।।

छह रुति सहै परीसहा अंग । समकित नै दिढ राखै संग ।।
सम्यक दरसन ग्यान चरित्र । इह विध होवै जीव पवित्र ।।५६८१।।

प्रश्न करना

भव जल पडै जाइ सिव मध्य । जोति ही जोति मिलिया विध्य ।।
सीता इन्द्र किया परसन्न । इह सदेह है मेरे मन्न ।।५६८२।।

राजा दसरथ जनक नै कनक । अपराजिता केकसी प्रभा बनक ।।
लवनाकुस का सबै वृतात । इनकी गति भई किरण भाति ।।५६८३।।

भावमंडल कैसी गति लही । इह चिंता मेरे चित रही ।।

राम की वाणी

श्री रामचंद्र की वाणी हुई । भव्य जीव सुणै सब कोई ।।५६८४।।

राजा दसरथ आरणत विमारण । जनक कनक भी वाही ठारण ।।
अपराजिता केकसी कैकइया । सुप्रभास वै देवगति पया ।।५६८५।।

व्हा तै अपरणी आर्गल पुर । एका भव मुकति मै जुरि ।।
भावमडल तरणी सुंरण कथा । भोग भूमि तरणां नै दीपता ।।५६८६।।

भोग भूमि का भोगतै सुख । उनकू ए करती नही दुःख ।।
सीतेन्द्र पूछै वे कर जोडि । भावमडल की कहो बहोडि ।।५६८७।।

कुर भोग भूमि कवरण पुन्य लही । उनै तपस्या कीनी नही ।।
रामचन्द्र बोलै भगवान । भावमडल का कहै बखान ।।५६८८।।

नगर अजोध्या सेठ कुभपति । मकरी त्रिया सेती बहु हित ।।
काम वज्रांक दोन्यु पुत्र । ज्युं शशि की अति कान्ति ।।५६८९।।

भोग मुगति दिन बीता घणे । भया वैराग कुभपति मणे ।।
अमृतसोग मुनिवर ढिग आइ । दिक्षा लई मन वच करि काइ ।।५६९०।।

मकरी सुन कै तब वैराग । इन भी सकल परिग्रह त्याग ।।
अरथ द्रव्य पुत्रा नै दिया । इन भी जाइ जैन व्रत लिया ।।५६९१।।

असोग तिलक वन मै धरि जोग । छोडि दिया संसारी भोग ।।
वे दोनूं जे सेठ के पूत । सुख मैं थे लखमी संजुक्त ।।५६९२।।

इक दिन मात पिता चित ग्रान । दोनु गए तिहां उद्यान ।।
ग्रमृतसोग मुनि कौं देख । नमस्कार करि पूछै भेख ।।५६६३।।

हमारे मात पिता कित ठाव । कहौ प्रभू तिह है हम जाव ।।
मुनिवर नै वे दिये बताइ । ये भी भए दिगम्बर राइ ।।५६६४।।

करैं तपस्या ग्रातम ध्यान । गुरु ग्राउषो पूरी जान ।।
नवग्रीव पाइया विमान । सिखउ किया ता मकर का ध्यांन ।।५६६५।।

पचास जोजन रेत की मही । तिहा मनुष काई दीसै नही ।।
पडै धूप धरती बहु तपै । रूख नही तिहा छाया छिपै ।।५६६६।।

ग्रैसे मारग निकते साध । देष्या वृक्ष घेर सु बांध ।।
वाकी छाया बइठे जाइ । भावमंडल वहा निकस्या ग्राइ ।।५६६७।।

देख जती तिहा थंवया विमाण । उतरि भूमि पग लाग्या ग्रान ।।
मुनिवर कूं दीया ग्राहार । मारग सगला भला सवार ।।५६६८।।

वइयाव्रत किया बहु भांति । मुनिवर गये जिनेस्वर जात ।।
भावमडल ग्रंतहपुर जाइ । मान भालिनी गुणहराइ ।।५६६९।।

सोवै थे सप्त खणै ग्रेह । दामनी घात सो छोडी देह ।।
दपति जीव दस्यनी ग्रोड । भोग भूमि की पाई ठोड ।।५७००।।

तीन पल्य की ग्राव प्रमाण । तीन के साका कीया जाण ।।
ग्रावला सम तै लेइ ग्रहार । बहुर सुरगगति लेइ ग्रवतार ।।५७०१।।

उहा तै चए फेरि तप करै । तब दोनूं सिव मग पग धरै ।।
सुपात्र दान फल हुवा सहाइ । ताते दान देहु मन ल्याइ ।।५७०२।।

लवनाकुस पंचम गति लहै । प्रानी का संसा नही रहै ।।
सीता देव पूछै कर जोडि । रावण लक्षमण की कहो बहोडि ।।५७०३।।

किस विध इनका कारज सरै । वे कद भव सायर तै तिरै ।।
रामचन्द्र कहैं केवल बचन । बालुका भूमि रावण लछमन ।।५७०४।।

सागर सात भुगतैगे राज । उहां तै निकसि पूरव षेत्र की ठाव ।।
हरिक्षेत्र विजयावती नगर । सुनदा सेठ घरम का ग्रगर ।।५७०५।।

रोहिणी नाम साह की ग्रस्तरी । सील संयम सो सोभै खरी ।।
दोनूं उसकै लें ग्रवतार । ग्ररहदास तसु प्रथम कुमार ।।५७०६।।

रिषभवास दूआ हुवै पुत्र । दोनुं गुण लष्यण संजुक्त ॥
अणुव्रत पालैं बे दिन रात । सीलवंत सोभा की कान्ति ॥५७०७॥

सुख सेती तिहा आव विहाइ । सुर सौधरम अमर की काय ॥
सागर एक आयु बल पूर । या ही देस चवैं दोऊ सूर ॥५७०८॥

कुमार कीरति तिहा भूपती । लषमी राणी के गरभ थिति ॥
जयकीरति जय प्रभु औ होइ । रूप कान्ति करि सोमैं दोइ ॥५७०९॥

अणौव्रत करि धरम सो ध्यान । ह्वा तै पावै लांतव सुर थांन ॥
स्वर्ग लोक के मुगतैं भोग । भूलि गये पिछला सब सोग ॥५७१०॥

सीतेन्द्र अजोध्या मे चवैं । चक्रवर्त्त छह षंड भोगवैं ॥
दोनुं देवपुत्र हुए आइ । इन्द्ररथ अंभोदरथ राइ ॥५७११॥

सर्वरतन रथ दिष्या लेइ । राज भार पुत्र को देई ॥
तपकरि पावैं विजयवंत वास । इन्द्र अंभोद दिक्षा गुरु पास ॥५७१२॥

सोलह कारण का व्रत पाल । विजय अंत पहुंचैं तिह बार ॥
उहा तैं चय रावण को जीव । ह्वं अर्हंन भरत जबूद्वीप ॥५७१३॥

सरबरतन गणधर होइ । धरम उपदेस सुणैं सब कोइ ॥
जाइ मुकति तिहा सुख अनत । फिर पूछै सीतेन्द्र महत ॥५७१४॥

लक्ष्मण के प्रति जिज्ञासा

कहां उपजैं लखमण महान । पुष्करार्द्ध द्वीप चवै आन ॥
सद भूपति पुत्र नगर कैं ग्रेंह । दोई पदइ याइ धरि देह ॥५७१५॥

चक्रवर्त्ति हुवै अरिहत । पावै भव सागर का अंत ॥
सात वरष बीतै जब जाइ । हम भी लहैं मुगति पद ठाइ ॥५७१६॥

सीतेन्द्र कीया नमसकार । गये फेर सुर अपने द्वार ॥
ह्वाते फिर आये सब देव । कुरु भोग भूमि का देख्या भेव ॥५७१७॥

भामडल ते बहु सुर मिल्या । पिछला सनबंध सुणा था भला ॥
देव गया फिर अपनै थान । रामचन्द्र सिद्धउ कै ध्यान ॥५७१८॥

पचीस बरस लौं सुमरे सिध । पहुंचे प्रभु मुगति की रिध ॥
चतुरनिकाय आये सब देव । जय जय सबद दुंदुभी भेव ॥५७१९॥

पुष्प वृष्टि भई तिहा घणी । निर्वाण कल्याणक सोभा बणी ॥
अष्टद्रव्य सूं पूजा करी । पढे मत्र जिनवाणी खरी ॥५७२०॥

सोतोदेन्द्र सुमरै धरि चित्त । गुणावाद सो ल्याये हित्त ।।
पूजा करि पहुचे सुर लोक । अस्तुति भई तीनूं लोक ।।५७२१।।

पद्मपुराण के स्वाध्याय का महात्म्य

रामचंद्र गुण समुद्र गभीर । सुमरण किया मिटै सब पीर ।।
अनुमात्रक किया बखान । रामचन्द्र का पदमपुराण ।।५७२२।।

जे कोई सुणैं उठि परभात । सुखसेती बीतै दिन रात ।।
पत्री होई सुणैं बलवान । जिहा तिहा कहिये जयवान ।।५७२३।।

दुरजन दुष्ट लगै सब पाइ । कोई न सनमुख जीतै आइ ।।
सब परि उसकी होवै जीत । जाणै सकल जुध की रीत ।।५७२४।।

जे कोई सुणै धरम के काज । पावै तीन लोक का राज ।।
धरम ध्यान सु पाप न रहै । केवल ग्यान जीव वह लहै ।।५७२५।।

धरम प्रकाम जिहा जाइ निरवाण । भ्रमैं नही भवसागर आन ।।
दुखी दलिद्री नर जे सुणैं । बढै लछि सुख पावै घणे ।।५७२६।।

नारि विहुणा जे नर होइ । मन बांछित फल पावै सोइ ।।
पुत्र हेत जो सुणैं पुराण । सुख सम्पति पावै असमान ।।५७२७।।

प्रथवी परि प्रगटै जस घणा । रोग कलेस जाइ सब हण्या ।।
करम उदै ते व्यापै दुख । राम सुमरि पावैं सब सुख ।।५७२८।।

जे पापी सुणि निंदा करै । ते जीव घोर नरक मे पडै ।।
मिथ्याती प्रतीत नै चित्त । सरधा नही धरम सु हित ।।५७२९।।

जे समकिती सुणैं पुराण । पावै गति देव निरवाण ।।
श्रेणिक नृप साभलि इह भेद । सब ससय का हुवा छेद ।।५७३०।।

सकल सभा मन भयो सतोष । बहुत प्राणी या पाई मोष्य ।।
श्री जिनवाणी का नाही अंत । वचन एक भेद बहु मत ।।५७३१।।

गौतम स्वामी कह्यौ अरथाई । अमृत वानी सबै सुहाइ ।।
सरव सूत सुणि हिये विचार । अवधि ग्यानी समझै निरधार ।।५७३२।।

जगसेन सूरति केवली । मुख पाठ उन भाखी भली ।।
क्रितातसेन ने लिख्या इह ग्रंथ । कोडि सिलोक सपूरण अर्थ ।।५७३३।।

अवरानै पुराण लिख पढै । जिसके सुणै धरम हित बढै ।।
उनका सिष्य सबदन मुनि भया । इन्द्रसेन मुनि नै पट दिया ।।५७३४।।

अरहसेन भये सु मुनिंद । लक्ष्मनसेन ज्यो प्रथिवी चंद ।।
जिन जोड्या श्लोक सहस्र ज्यौ स्पाठ । वरण्यो बहु तिहां पूजा पाठ
।।५७३५।।

रवि षेणाचार्य द्वारा पद्मपुराण की रचना

रविषेन किया अठारह सहस्र । सुणै भव्य जीव सौ बाचे बस ।।
होई पुन्य उत्तम गति लहैं । भव भव दुख दालिद्र न रहै ।।५७३६।।

अथवा लहै अमर पद थान । कारण पाइ लहै निरवाण ।।
मिथ्याती जे धरम का दुष्ट । उनकुं सदा रहै बहु कष्ट ।।५७३७।।

जिनवाणी तैं भाजै दूरि । तिण नैं होवै दुख भर पूरि ।।
दालिद्र सदा न छोडै मग्य । इष्ट वियोग अनिष्टै अग्य ।।५७३८।।

मन की इछा कदे न होइ । आदर भाव करै नही कोइ ।।
तिसकुं कोई न महिमा होइ । जिहा तिहा महिमा जलभा लेइ ।।५७३९।।

कलह करम सौं बीतै घडी । खोटी बुधि नही वीसरी ।।
रात दिवस मे आरत ध्यान । पावै अंत नरक गति थान ।।५७४०।।

भव्य जीव सुणैं धरि रुचि । सदा हुवै उत्तम गति सुचि ।।
सीलव्रत पालै बहु भाइ । काटि करम ऊंची गति जाइ ।।५७४१।।

अैसी जाणि चलै मग सुधि । धरम होइ बाढे अति बुधि ।।
कुमति कलेस सकल मिट जाइ । राम नाम तसु होइ सहाइ ।।५७४२।।

सहस्र एक अरु दोईसैं बरस । छह महोने बीते कछु सरस ।।
महावीर निरवाण कल्याण । इह अंतर है रच्या पुराण ।।५७४३।।

रविषेण नाम मुनिवर निरग्रन्थ । पदमपुराण रच्या सुभ ग्रन्थ ।।
तिसके सुण्या होइ बहु रिध । कारण पाइ पद पावै सिद्ध ।।५७४४।।

चर्मै देस नाम जो लेइ । ताको मनवंछित फल देइ ।।
जैसे रवि का होइ प्रकास । होवै अंधकार का नास ।।५७४५।।

पद्मपुराण पढने की महिमा

अंसा है यह पदम चरित्र । मिथ्या मोह मिटै सब सत्र ।।
पढैं पढावैं कहैं बषान । पावैं स्वर्गं देव विमान ।।५७४६।।

सुमकित सेती पढ़ै अर सुणै। निहचै भ्रष्ट करम कुं हणै॥
केवलग्यान होइ उतपत्ति। पावै निश्चै पचम गति॥५७४७॥

जिस समै वर्णन होइ पुराण। सुखै बिलास और सदा कल्याण॥
मनवांछित फल पावै घणे। ते प्रानी सब निसचै सुणे॥५७४८॥

दूहा

पदमपुराण कुं जे पढ़ै, बांच सुणावै औरं॥
तिहूं लोक का सुख लहैं, पावै निरभय ठौर॥५७४६॥

११५ वां विधानक

चौपई

काष्ठा संघ पट्टावली

काष्ठा संघी माथुर गच्छ। पहुकर गण मे निरमल पछ॥
महा निरग्रथ आचारज लोह। छाडया सकल जाति का मोह॥५७५०॥

तेरह विध चारित्र का धणी। काम क्रोध नहीं माया मणी॥
महा तपस्वी आतम ध्यान। दयावत बहु निरमल ग्यान॥५७५१॥

जिहा है उत्तम क्षिमा आदि। छोडै पाच इन्द्री का स्वाद॥
रूप निरजन ल्याया चित्त। अठाईस मूल गुण नित्त॥५७५२॥

चौरसी क्रिया सजुक्ति। जे क्षाइक समकित सौ रत्ति॥
कहै ग्यान के सूक्षम भेद। वाणी सुणत मिथ्यात का छेद॥५७५३॥

अग्रोहे निकट प्रभु ठाढे जोग। करै ब दना सब ही लोग॥
अग्रवाल श्रावक प्रतिबोध। त्रेपन क्रिया बताई सोध॥५७५४॥

पच अणुव्रत सिख्या च्यारि। गुणव्रत तीन कहे उर धरि॥
बारह व्रत बारह तप कहे। भवि जीव सुणि चित मे गहे॥५७५५॥

मिथ्या धरम कियौ तिरा दूरि। जैन धरम प्रकास्या पूरि॥
विध सौं दान देइ सब कोई। सासत्र भेद सु णि समकित होइ॥५७५६॥

दस लाष्यणी बताया धरम। तीन रत्न का जाण्या मरम॥
व्रत विधान समझाई रीत। पूजा रचना करैं सुचित॥५७५७॥

श्री जिन के कीए देहुरे । चउबीस बिंब रचना सुं खरे ।।
चउविध दांन दे चित्त समांन । चउथकीया अणथमी प्रमांन ।।५७५८।।

जीव दया पालै बहुभांति । भोजन नीर विवरजित राति ।।
दीपग गयांन आन्य सब लिए । बहुत संबोधि श्रावग काये ।।५७५९।।

दिल्ली मंडल का मुनिराय । जिसके पट्ट भया बहु ठाइ ।।
धरम उपदेस घणां कुं भया । पूजा प्रतिष्ठा जामैं नया ।।५७६०।।

पंडित पटधारी मुनि भए । ग्यांनवंत करुणा उर थए ।
मलयकीर्त्ति मुनिवर गुणवंत । तिनकै हिए ध्यांन भगवंत ।।५७६१।।

गुणकीर्त्ति अर गुणभद्रसेन । गुंणावाद प्रकासैं जैन ।।
भान कीरति महिमां अति घणी । विद्यावंत तपस्वी मुनि ।।५७६२।।

कुंवरसेन भट्टारक जती । क्रिया श्रेष्ठ है उज्जल मती ।।
उनकै पट सुभचन्द्र सुसेन । धरमवखांन सुणावै बैंन ।।५७६३।।

मूल संघ भट्टारक प्रशस्ति

श्री मूलसंघ सरस्वती गछ । रतनकीरत मुनि धरम का पछ ।।
तारण तरण ग्यान गंभीर । जाणै सहु प्राणी की पीर ।।५७६४।।

तप सयम तै आतमध्यान । धर्म जिनेस्वर कहैं बखान ।।
छूटै मिथ्या उपजै ग्यान । जे निसचै धरि मनमे आंन ।।५७६५।।

गुरु के वचन सुणि निसचै धरै । ते जीव भवसागर तिरैं ।।
श्री रत्नकीर्त्ति तज्या संसार । पहुचे स्वर्गलोक तिहं बार ।।५७६६।।

उनकै पट्ट रामचन्द्र मुनी । आचारिज पंडित बहु गुनी ।।
कहैं ग्यांन के सूक्ष्म अंग । ई बुद्धि उनके प्रसंग ।।५७६७।।

महा मुनीस्वर उत्तम बुधि । कहैं धरम जिन वाणी सुधि ।।
जिसकै हिए होइ समकित । सरधा करै धरम मे नित्त ।।५७६८।।

श्री रामचन्द्र का सुणैं पुराण । सुख सपति पावैं कल्यांण ।।
धरम दया पालै मन लाइ । ते जीव मोक्ष पुरी मां जाइ ।।५७६९।।

दूहा

पदम पुराण पूरन भया, रिविषेनां की बुधि ।।
जे निहसचै धरिकै सुणैं, पावैं समकित सुधि ।।५७७०।।

इति श्री पद्मपुराणे सभाचंद्र कृत सपूरनंम् ।। संवत १८ से ५६ आषाढ बदि १४ वार सोमवासरे लिखितं पडित मोतीराम लिखायतं साह जी गंगाराम जी की बहू जाति दोरायां माडलगढ का उतराय अठाई का व्रत मे पडित मोतीरामेन दीये। ग्रंथ सख्या हजार ११ रुपया ७ दीया निजरानां का। शुभ भवतु

नामानुक्रमणिका

(पद्मपुराण मे प्रमुख महापुरुषो के नाम पचासो बार आये है—जिनमे राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, सुग्रीव, रावण, विभीषण, मदोदरी आदि के नाम उल्लेखनीय है इसलिए ऐसे नामो के यहा पूरे पृष्ठ अकित नही किये हैं)।

आ, इ, उ

क, ख, ग

च, छ, ज

त, थ, द, ध, न

प, ब, भ, म

य, र, ल, व

स ष श ह

शुद्धाशुद्धि-पत्र

पृष्ठ सख्या	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ	विशेष
७७	—	षष्ठ संधि	विधानक समाप्ति पर जोड़े
१००	नवम विधानक	अष्टम विधानक	
१०६	दसम ,,	नवम ,,	
११३	नारन पर उपवर्ग	नारद पर उपसर्ग	
१२६	१३ वा विधानक	११ वा विधानक	
१३१	१४ वां ,,	१२ वा ,,	
१३७	१५ वा ,,	१३ वा ,,	
१४६	१६ वा ,,	१४ वा ,,	
१५६	१७ वा ,,	१५ वा ,,	
१६१	१८ वा ,,	१६ वाँ ,,	
१६४	१९ वा ,,	१७ वा ,,	
१७४	२० वा ,,	१८ वा ,,	
१८०	२१ वा ,,	१९ वा ,,	
१८१	२२ वा ,	२० वा ,,	
१८४	२३ वा ,,	२१ वा ,,	
२६९	सुप्रीव ,,	सुग्रीव ,,	
२३१	२६२४	३६२४	
३५१	दलन	मिलन	
४००	कनथ	कथन	

लेखक एवं सम्पादक का परिचय

नाम— कस्तूरचन्द कासलीवाल

जन्म स्थान— सैथल–तहसील दौसा, जिला जयपुर (राजस्थान)

जन्म तिथि— ८ अगस्त १९२०, भाद्रपद संवत् १९७७.

पिता— श्री गैंदीलाल जी । माता— श्रीमती गेन्दाबाई

भाई— श्री चिरंजीलाल जी (ज्येष्ठ भ्राता) वैद्य प्रभुदयाल जी भिषगाचार्य (कनिष्ठ भ्राता)। बहिन— श्रीमती गुलाब देवी

पत्नी— श्रीमती तारा देवी

पुत्र— निर्मल कुमार, नरेन्द्र कुमार

पुत्रिया— निर्मला, शशिकला एव सरोज

पौत्र पौत्री— अविनाश, आलोक एव अमृता

शिक्षा— एम. ए. (वर्ष १९४६ आगरा विश्वविद्यालय) शास्त्री (जयपुर)
पी-एच. डी. (राज विश्वविद्यालय–सन् १९६१)
विषय—Jain Grantha Bhandars in Rajasthan

प्रमुख गुरु— प चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ

व्यवसाय— केन्द्रीय सेवा (सन् १९४९ से १९७८ तक)
साहित्यिक सेवा—सन् १९४७ से अद्यावधि

लेखन एव सम्पादन—

I १–५ राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची (पांच भागो मे) (६) प्रशस्ति सग्रह, (७) प्रद्युम्न चरित, (८) जिणदत्त चरित, (९) हिन्दी पद सग्रह, (१०) राजस्थान के जैन सन्त–व्यक्तित्व एव कृतित्व, (११) महाकवि दौलतराम कासलीवाल–व्यक्तित्व एवं कृतित्व, (१२) चम्पा शतक, (१३) शाकम्भरी प्रदेश के विकास मे जैनो का योगदान, (१४) Jain Grantha Bhandars in Rajasthan, (१५) वीर शासन के प्रभावक आचार्य, (१६) महाकवि ब्रह्म रायमल—व्यक्तित्व एवं कृतित्व, (१७) कविवर बूचराज एवं उनके समकालीन कवि, (१८) भट्टारक रत्नकीर्ति एवं कुमुदचन्द्र, (१९) आचार्य सोमकीर्त्ति एवं ब्रह्म यशोधर, (२०) बुलाखीचन्द, बुलाकीदास एव हेमराज, (२१) बाई अजीतमति एवं उसके समकालीन कवि, (२२) मुलतान जैन समाज–इतिहास के आलोक मे, (२३) मुनि सभाचन्द एवं उनका पद्मपुराण, ३० से भी अधिक ग्रन्थ ।

II. दश से अधिक अभिनन्दन ग्रन्थ, स्मृति ग्रन्थ एवं स्मारिकाओं के सम्पादक के प्रमुख रूप मे सहयोग,

III. नाटक–परित्यक्ता, लड़की, नयी दिशा, तपस्विनी, घर की लाज, धरम करम आदि, सभी मंचित ।

IV. २०० से भी अधिक लेख—विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ मे—Illustrated Weekly, कादम्बिनी, सप्तसिन्धु, परिषद् पत्रिका, सम्मेलन पत्रिका, राजस्थान पत्रिका, राष्ट्रदूत, नवभारत टाइम्स, वीरवाणी, सन्मतिवाणी, तीर्थंकर आदि ।

V. सम्पादक— वीरवाणी (पाक्षिक) जयपुर,

VI सस्थापक—श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी, महिला जाग्रति संघ,

VII. अध्यक्ष—राज. जैन साहित्य परिषद्, ज्ञान विद्यालय,

VIII. सम्मानित वीर निर्वाण भारती मेरठ, अ. विश्व जैन मिशन अलीगज, महिला जाग्रति सघ जयपुर, भ. महावीर २५०० वा परिनिर्वाण समिति, दि. जैन समाज निवाई आदि ।

IX. सक्रिय सदस्य—अ. भा. दि. जैन विद्वत् परिषद्, शास्त्री परिषद्, अ भा. दि. जैन परिषद्, दि. जैन महासमिति, दि. जैन महासभा आदि, सयुक्त मंत्री दि. जैन आचार्य सस्कृत महाविद्यालय जयपुर,

X सन् १६६१ से लेकर सन् ८४ तक आरा, गयाजी, वाराणसी, नागपुर, अहमदाबाद, सागर, इन्दौर, उज्जैन, देहली, जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर, पाली, ब्यावर, कोल्हापुर, यादवपुर, कलकत्ता, जबलपुर, कोटा, अजमेर, बम्बई, सोलापुर, आदि नगरो मे आयोजित ७० से भी अधिक सेमिनारो एव संगोष्ठियों मे निबन्ध वाचन

XI. साहित्यिक खोज शोध के अन्तर्गत अब तक सैकडो कृतियो एव उनके कवियो की प्रथम बार खोज,

XII. १५ से भी अधिक बार आकाशवाणी जयपुर एव देहली द्वारा दर्शन, साहित्य, इतिहास एव सस्कृति पर वार्ताओ का प्रसारण

XIII. वर्तमान गतिविधि—जैन साहित्य की खोज एव शोध, समाज सेवा, शोधार्थियो को मार्ग निर्देशन आदि ।

पता .—867, अमृत कलश, बरकत नगर, किसान मार्ग, टोक फाटक, जयपुर–15